

आदिब्रह्मपुराण भाषा

जिसमें

ब्रह्माजीसे लेकर सम्पूर्ण सृष्टिके उत्पत्तिका वृत्त-राजा पृथुका चरित्र, मन्वन्तरकीर्त्तन, आदित्य उत्पत्ति, सूर्य वंश व चन्द्रवंश कथन, राजा ययातिचरित्र, कृष्ण वंश कीर्त्तन, वृष्णिवंशकीर्त्तन, भुवनकोष व नरक स्वर्गादि कीर्त्तन सविस्तर वर्णितहै

जिसको

श्रीरोहतक प्रदेशान्तर्गत बेरीग्रामनिवासि पण्डित रविदत्तजी ने श्रीमान् मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) की आज्ञानुसार संस्कृतसे देश भाषामें प्रतिश्लोक का भाषानुवाद किया॥

बाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से

प्रथम बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

जनवरी सन् १८९१ ई० ॥

इस मतबे में जो भाषापुराण छपे हैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखे हैं ॥

भविष्यपुराण भाषा ॥

श्रीपण्डित दुर्गाप्रसादकृत उल्था इसमें पौराणिकइतिहास, चारोंवर्णोंके धर्म, स्त्री शिक्षा और परीक्षा, राजा और सर्व पुरुषे के लक्षण व्रतोंके उद्यापन और उनकी कथा सर्पोंका वर्णन और उनकी चिकित्सा, स्वप्नों का वर्णन, प्रासाद और प्रतिमाओं के लक्षण, शाकद्वीपीय ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति, भूगोलवर्णन, होनेवाले राजाओंका राज्य समय, संसारके दोष पातक नरकादि वर्णन, गर्भिणीके धर्म्म, धेनुदान विधान, जलाशय, देवालय बनाने वृक्ष लगाने का फल, सर्व प्रकार के दानों के माहात्म्य आदि वर्ण किये गये हैं ॥

बामनपुराण भाषा ॥

जिसको बेरीग्राम निवासि रविदत्तवैद्यजी ने संस्कृतसे सर भाषामें अनुवादित किया जिसमें कपालमोचन आख्यान; दक्षय-बिनाश; महादेवका कालरूप धारण; कामदेवदहन; प्रह्लाद नार यणयुद्ध; देवासुरसंग्राम; सूर्यकीकथा; भुवनकोशवर्णन; काम्यव्र आख्यान; दुर्गाचरित्र; पार्वतीजन्म; तपस्या एवम् विवाह वर्णन गौरीउपाख्यान; कुमार; जाबालि; बलि; लक्ष्मी; त्रिविक्रमचरित्र मरुतजन्मकथा; प्रेतउपाख्यान; ब्रह्माकृतस्तव एवम् श्रीवाम भगवान्की अनेक उत्तमोत्तम कथा सरल भाषामें वर्णित हैं ॥

स्कन्दपुराणका सेतुमाहात्म्य खण्ड ॥

पण्डित दुर्गाप्रसादजीकृत भाषा इसमें सेतुबन्धका माहात्म्य वहांके सबतीर्थोंकावैभव महालयश्राद्धका विस्तारपूर्वकमाहात्म्य, नरकोंका वर्णन, रामेश्वर महादेवका विस्तारसे वर्णन और अनेक मनोहर कथा जिनसे पुण्यहोकर और चित्त आनन्द पाता है वर्णन कीगई हैं जो कि यह पुस्तक बहुत अपूर्व थी इससे हमने इसका उल्था करादिया ॥

आदिब्रह्मपुराण भाषा का सूचीपत्र ॥

इति॥

आदिब्रह्मपुराण भाषा का विज्ञापन ॥

श्रीभगवान् वेदव्यासजीने संसारीजीवों को संसार सागर से उत्तीर्णहोनेकेलिये नौकारूपी अष्टादशपुराण व बहुत से उपपुराण विरचितकिये—उनमेंसे एक यह आदिब्रह्मपुराण भी है ॥

इसपुराण में ब्रह्मासे लेकर सम्पूर्ण सुर, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतङ्गादि चौरासीयोनियों की उत्पत्ति व सम्पूर्ण अण्डकोशान्तर्गत नदी, नद, पर्वत, वन, उपवनादिकों का विस्तार वर्णनकियागया है जिसेपढ़कर मनुष्य इस विधाता की अपरम्पार सृष्टि का वृत्त सहजमें समझने लगता है ॥

ऐसा लाभकारीग्रन्थ अबतक संस्कृतमें होनेके कारणसे भाषामात्रके पठन पाठनकर्त्ता पुरुष अच्छेप्रकार इसके अभ्यन्तर को न जानसक्के थे इसलिये सम्पूर्ण भारतेतिहासाकांक्षि पुरुषोंके अवलोकनार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण श्रीमान् मुन्शीनवलकिशोरजी ने बहुतसाधन व्ययकरके रोहतक प्रदेशान्तर्गत बेरी ग्रामनिवासि पण्डित रविदत्तजीकेद्वारा संस्कृतसे भाषा में प्रतिश्लोक का उल्थाकराकर स्वयंत्रालय में मुद्रित कराय प्रकाशितकिया-आशाहै कि जो महात्मा विद्वान् इसका अवलोकन करेंगे प्रसन्नता पूर्वक ग्रहणकरेंगे॥

इसके सिवाय इस छापेखानेमें और भी बहुत विषय की पुस्तकें संस्कृत से भाषामें उल्थाहोकर मुद्रित

हुई हैं वह निम्नलिखित हैं जिन महाशयों को उनके लेनेकी रुचि हो खत भेजकर कीमतका निर्णय करलें और मूल्य भेजकर मँगालें ॥

पुराणों में—श्रीमद्भागवत बारहोंस्कन्ध, श्रीमहाभारत अठारहोंपर्व्व—विष्णुपुराण, भविष्यपुराण, लिंगपुराण, नृसिंहपुराण, वामनपुराण, शिवपुराण, स्कन्दपुराण का सेतुबन्दखण्ड, मार्कण्डेयपुराण, गणेशपुराण, जैमिनि पुराणादि और कईएक पुराण उलथाहोरहेहैं वहभी शीघ्रही मुद्रित होकर दृष्टिगोचरहोंगे ॥

काव्यमें—रघुवंश, कुमारसम्भव संस्कृत मूल भाषा टीका और व्याकरण में सारस्वत पूर्व्वार्द्ध टिप्पणिका सहित ॥

वैद्यकमें—निघण्टरत्नाकर, भैषज्यरत्नावली, भावप्रकाश, रसरत्नाकर व सुश्रुतादि अदृश्य व अपूर्वग्रन्थ ब्रजभाषामें उलथाकराके मुद्रितकियेगये हैं ॥

धर्मशास्त्रमें—श्रीमद्भगवद्गीता शङ्करभाष्य तिलकसहित मिताक्षरा व मनुस्मृति आदि संस्कृतमूल व भाषा व्याख्या सहित मुद्रित हुये हैं आशाहै कि जो विद्वज्जन देखेंगे अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक ग्रहणकरेंगे ॥

द० मैनेजर अवध अखबार
लखनऊ मुहल्ला हज़रतगंज



अथ आदिब्रह्मपुराण भाषा ॥

पहिला अध्याय ॥

नारायणजी और नरोंमेंउत्तम नरजी और देवीजी और सरस्वतीजी और व्यासजी इन्होंको प्रणामकर ग्रन्थकावर्णनकरूंहूं १ और जिन्होंसे प्रपंचरहित यह सम्पूर्ण मायारूपी जगत् उत्पन्न होताहै और जिन्हों में स्थित रहता है और जहां अन्तमें लीन होता है और जिन्हों के ध्यान से मुनिजन प्रपञ्चरहित मोक्षको प्राप्त होते हैं और जो अमल अर्थात् मलोंसे रहितहै और नित्यहै औरसमर्थहै और निष्कलहै ऐसेपुरुषोत्तमईश्वर को मैं प्रणाम करताहूं २ और समाधि समयमें जिसको बुधजन शुद्ध और आकाश के सदृश और नित्यानन्द मय और प्रसन्न और अमल और सर्वेश्वर और निर्गुण और व्यक्ताव्यक्त से परे और प्रपञ्चरहित और ध्यानैकगम्य अर्थात् ध्यानसे प्राप्त होनेकेयोग्य और प्रभु ऐसे नामों से ध्यावते हैं इसवास्ते संसार के विनाश

का हेतु और अजर और हरि और मुक्तिद अर्थात् मुक्तिका देनेवाला ऐसेईश्वरको प्रणामकरताहूं ३ पुण्य रूप और पवित्र और मनोहर और नानाप्रकार के मुनियोंसे आकीर्ण और नानाप्रकारके पुष्पोंसे शोभित ४ और सरल, अमलतास, पनस, धव, खैर, आंब, जामुन, कैथ, बड़, देवदारु ५ पीपल, पारिजात, चंदन, अगर, पाटला, सातला, पुन्नाग, नागकेसर ६ शाल, ताल, तमाल, नालिकेर, अर्ज्जुन और अन्य चम्पक आदि बहुतसे वृक्ष इन्होंकरके शोभित ७ और अनेक प्रकारके पक्षियोंसे शब्दित और मनोहर और नानाप्रकारके मृगसमूहों से युत और नानाप्रकारके जलाशय और बावलीआदि से अलंकृत ८ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अन्यजाति इन्हों करके और वानप्रस्थ गृहस्थ यति ब्रह्मचारी ९ ऋद्धिसहित गोधन इन्होंकरके सब जगहसे अलंकृत और यव गेहूं चना उड़द मूंग तिल ईख इन्हों करके १० और चावल और मेध्य अर्थात् पवित्रपदार्थ और नानाप्रकार के अन्न इन्होंकरके शोभित ऐसे नैमिषारण्यक्षेत्रमें तहां प्रकाशित अग्निमें आहुति होतेहुये ११ नैमिषारण्य वासियोंके द्वादश वार्षिक अर्थात् बारहवर्षसे होतेहुये तिस महायज्ञमें मुनि और अन्यभी ब्राह्मण आगमन करते भये १२ तब नैमिषारण्य वासिजन तिन आयेहुये मुनि और ब्राह्मणों की यथायोग्य पूजा करते भये तब ऋत्विकों सहित सब आसनों पर स्थित

होगये १३ पीछे तहां मतिमान् और लोमहर्षणनाम से विख्यात ऐसे सूतजीभी आते भये तिसको देख कर आनन्दित हुये सब मुनि पूजनेलगे १४ तब सूतजीभी सबोंकी पूजाको ग्रहणकर उत्तम आसन पै स्थित हुये तब वे मुनि सूतजी के सङ्ग आपस में कथा कहनेलगे १५ पीछे कथाके अन्तमें ऋत्विक् और सभापतियों सहित वे दीक्षितहुये मुनि आनन्द से व्यासजीके शिष्य सूतजीसे संशय पूछनेलगे १६ मुनियोंने पूछा–हेसत्तम आप पुराण आगमशास्त्र इतिहास और देवता दैत्यों के चरित जन्म कर्म्म इन्हों को जानते हैं १७ और हे महामते वेदशास्त्र भारत पुराण मोक्षशास्त्र इन्होंमें आपको अविदित नहीं जाना हुआ कुछभी नहींहै इसवास्ते आप सर्वज्ञ हैं १८ सो जैसे देवता, दैत्य, गन्धर्व, यक्ष, सर्प्प, राक्षस इन आदि चराचर जगत् उत्पन्नहुआहै १९ तैसे हे सूतजी सुनने की हम इच्छा करते हैं सो जैसे यह सबजगत् उपजा है तैसे आप वर्णनकरो और हे महाभाग जो यह जगत् होताभया और फिर होवेगा २० और जिससे यह सब जगत् चराचर उत्पन्न हुआहै और जिसमें यह लीन होताभया अथवा होगा सो सब आपकहो २१ लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो–विकारोंसे रहित और शुद्ध और नित्य और परमात्मा और सदा एकरूप और विष्णु और सर्वविष्णु अर्थात् सबोंमें व्याप्त होनेवाले ऐसे देवको नमस्कारहै २२ और हिरण्यगर्भ और हरि

और शंकर और वासुदेव और तार अर्थात् भक्तों को तारनेवाले और सृष्टिस्थिति अन्त इन्होंके कर्त्ता २३ औरएकानेक स्वरूप और स्थूल सूक्ष्म आत्मावाले ऐसेईश्वरको नमस्कारहै और अव्यक्त व्यक्तभूत और विष्णु और मुक्तिकेहेतु २४ और सृष्टि स्थिति विनाश इन्हों के हेतु और जगन्मय अर्थात् संसार में व्याप्त और मूलरूपी और परमात्मा ऐसे विष्णुको नमस्कार है २५ विश्वका आधारभूत और सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म और सर्वभूतोंमें स्थित और अच्युत और पुरुषोत्तम २६ और ज्ञानस्वरूप और अन्तसे रहित और परमार्थसे निर्मल और अर्थ स्वरूप और भ्रान्तिके दर्शन से स्थित २७ और विश्वको ग्रसनेवाले और सृष्टि स्थिति करनेवाले और समर्थ आद्य और अतिसूक्ष्म और विश्वमें स्थित ऐसे विष्णुको और ब्रह्मा आदि देवों को प्रणामकर २८ और इतिहास पुराण को जाननेवाले और वेद वेदाङ्ग के पारको गत हुये और सर्व शास्त्रार्थ के तत्त्वको जाननेवाले और प्रभु पराशरके पुत्र २९ ऐसे गुरुको प्रणामकर वेद सम्मित पुराण को कहताहूं जैसे पहले दक्षआदि मुनि सत्तमों से ३० पूछेहुये ब्रह्माजी कहतेभये तैसेही सो आप सुनो पापों से छुटानेवाली कथाको मैं कहताहूं ३१ और मुझसेकथ्यमान और विचित्र और बहुत अर्थोंवाली और वेदमें संमत अर्थात् मानीहुई ऐसी इस कथाको जो नित्यप्रति धारेगा अथवा बारंबार सुनेगा ३२ वह

अपने वंशको धारणकर स्वर्गलोकमें पूजाको प्राप्तहो-
वेगा और जो नित्य और सत् असत् आत्मक ३३
और प्रधान और पुरुष ऐसे ईश्वर इस जगत् को
रचतेभये तिस ईश्वरको हे मुनिजनो ब्रह्मजानो ३४
सो सब भूतों को रचनेवाला और पवित्र और परा-
यण ऐसा वह ब्रह्म है तिससे महान्तत्त्व उत्पन्नहुआ
और महत्तत्त्वसे अहंकार उत्पन्न हुआ और अहंकार
से पंचभूत उत्पन्न हुये ३५ और तिन पंचभूतोंसे भूत
भेद उत्पन्न हुये ऐसे सनातन सर्ग कहा है और मैंने
अपनी बुद्धिके अनुसार जैसे सुना है तैसे ३६ चिर-
कालतक कीर्त्तिवाले और पवित्र कर्मोवाले ऐसों का
चरित कहदिया और पीछे नानाप्रकारकी प्रजाको रच-
नेकी इच्छा करनेवाले वे ईश्वर ३७ आदिमें जल को
रचतेभये और तिसमेंबीजकोरचतेभये और नार नाम
जलकाहै ३८ तिसमें प्रथम स्थान होनेसे ब्रह्मको ना-
रायण कहते हैं पीछे तिस ईश्वर की नाभिसे हिरण्य-
मय अंडा उपजा ३९ तहां स्वयंभूनाम से विख्यात
ब्रह्माजीउत्पन्नहुये ऐसे हमलोगोंनेसुनाहै तहां हिरण्य-
गर्भ भगवान् सो वर्षोंतक वासकर ४० पीछे तिस
अंडाके दो टुकड़े करतेभये तब एक स्वर्ग और एक
पृथिवी हुई ४१ और जलमें डूबीहुई पृथिवीको और
दशदिशाओंको धारणकरते भये पीछे काल मन बाणी
काम क्रोध रति ४२ और तद्रूप सृष्टि इन्हों को रचते
भये पीछे ब्रह्माजी प्रजापतियों के रचनेकी इच्छा करते

भये ४३ तब मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ इननामोंवाले सात ऋषियों को ब्रह्माजी अपने मनसे रचते भये ४४ ऐसे सात ब्राह्मण पुराण में निश्चयको प्राप्त हुयेहैं ४५ परंतु इनसातों ब्रह्मर्षियोंसे पहले ब्रह्माजी अपने रोषयुक्त आत्मासे महादेव को रचते भये ४६ और पूर्वजोंसे भी पूर्वज और विभु ऐसे सनत्कुमार को भी रचतेभये पीछे तिन सप्तर्षियों से प्रजा उपजतीभई ४७ पीछे महादेव और सनत्कुमार ये दोनों अपने २ तेजको विस्तृतकर स्थित हुये तिन्होंके दिव्य और देवगणोंसेअन्वित ऐसेसात महावंश होतेभये ४८ पीछे क्रियावाले और प्रजावाले और महर्षियोंसे अलंकृत ऐसे हुये अर्थात् बिजली वज्र इन्द्रका धनुष ये उत्पन्न हुये ४९ और आदि में ब्रह्माजी जल और मेघोंको रचकर पीछे ऋग्वेद सामवेद यजुर्वेद निगम इन्होंको ज्ञानसिद्धिके लिये रचते भये ५० पीछे स्वाध्याय देवता इन सबको रचते भये ऐसे सुना है पीछे सबप्राणी तिन ब्रह्माजीके गोत्रोंसेजन्मते भये ५१ पीछे प्रजा रचनेकी इच्छावाले ब्रह्माजी अपनी देह के दो भागकर एकभाग से पुरुषबनाय ५२ पीछे एकभागसे नारी बनाकर नानाप्रकारकी प्रजाको रचतेभये पीछे आकाश और पृथिवीको अपनी महिमा से व्याप्तहोकेस्थितहुये ५३ और विष्णु विराट्को रचते भये और विराट् पुरुषकोरचतेभये और तिसपुरुषको मनुजानो जिसका यह मन्वन्तर कहाहै ५४ और मान-

सरूपी मनुका यह दूसरा अन्तर कहाजाताहै तब वह पुरुष इसप्रजाको रचताभया ५५ इस आदि सृष्टिको जानने से आयुवाला और कीर्त्तिवाला और पवित्ररूपी सन्तानवाला ऐसा मनुष्य होकर वांछितगतिको प्राप्तहोता है ५६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांआदिसर्गवर्णनं नामप्रथमोध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो–ऐसे वह आप व संज्ञकप्रजापति इसप्रजाको रचनेकी इच्छाकरयोनि से नहीं उत्पन्न हुई शतरूपा नामसे विख्यात ऐसी भार्याको प्राप्तहुआ १ । २ सो आप व मनुकी महिमा स्वर्गको व्याप्तहो स्थितहुई और हे द्विजश्रेष्ठो शतरूपाभी धर्मसे उत्पन्न होतीभई ३ पीछे दशहजार वर्षों तक अतिउग्र और परम ऐसे तपको तपकर पीछेदीप्त तपवाले तिसभर्त्ता को प्राप्तभई ४ हे विप्रो यह पुरुष स्वायंभुवमनु कहाताहै सो एकसप्तति अर्थात् इकहत्तर युग पर्यन्त मन्वन्तर कहाजाता है ५ तिस विराट्से शतरूपामें वीर उत्पन्नहुआ वीरसे काम्यास्त्रीमें प्रियव्रत, उत्तानपाद ऐसे दोपुत्रउपजे ६ और काम्यारानी कर्दम प्रजापतिकी पुत्रीहुई और काम्यामें सम्राट् कुक्षिराट् प्रियव्रत उत्तानपाद ऐसे४पुत्रहुये ७ उत्तानपादको अत्रि प्रजापति ग्रहणकरताभया उत्तानपादसे सूनृता

वर्हि भगवान् प्रजापतिहुये हे मुनिश्रेष्ठ जिस हविर्द्धान से यह प्रजा बढ़ाई है ३२ इसने यज्ञों में पूर्वकी तरफ अग्रभागवाली कुशा बिछाई है और यह प्राचीनवर्हिभगवान् पृथिवीतल चारीहुआ ३३ यह प्राचीनवर्हि समुद्र की पुत्री को बिवाहताभया बहुत दिनों में तिस सवर्णानागवाली भार्या में प्राचीनवर्हि ३४ प्रचेतानाम से विख्यात और धनुर्वेद के पारको जाननेवाले ऐसे दशपुत्रों को उपजाताभया ३५ ये दशों सहित धर्म्म के जल में दशहजार बर्षोंतक घोरतप करतेभये ३६ इन्होंके तपकरतेहुये नहीं रक्षा किये वृक्ष पृथिवीको दबातेभये तब प्रजाका क्षयहोता भया ३७ और वृक्षोंसे आकाश आच्छादितहुआ तब पवनभी चलनेको समर्थ नहींहुआ ३८ और दशहजार बर्षोंतक प्रजा चेष्टा करनेकोभी समर्थ नहीं हुई तिनको तपसेयुक्त सब प्रचेता सुनकर ३९ क्रोधको प्राप्तहो मुखोंसे बायु और अग्निको रचतेभये सो बायु तिन बृक्षोंको जड़सहित उखाड़कर सुखानेलगा ४० पीछे तिन वृक्षोंको अग्नि जलाने लगा ऐसे वृक्षों के नाशको देख और कछुक वृक्ष शेषरहे तब ४१ सोम राजा तिन प्रजापतियोंके पास जाकर कहनेलगा कि आप सब प्राचीनवर्हिहो इसलिये कोपको त्यागो ४२ और वृक्षोंसे रहित पृथिवी होगई है इसवास्ते अग्नि और पवनको शान्तकरो व वृक्षोंकी रत्नरूपी और वरवर्णिनी ४३ ऐसी कन्या भविष्यको जाननेवाले मैंने

गर्भमें धारणकरी है सो मारिषानाम से विख्यात यह कन्यावृक्षोंकी रचीहै४४सो सोमवंशको बढ़ानेवाली यह कन्या तुम्हारी भार्य्या होगी और आपके आधेतेजसे और मेरे आधे तेजसे ४५ इस कन्यामें विद्वान् और दक्षनाम से विख्यात ऐसा प्रजापति उत्पन्न होवेगा सो आपके तेजसे दग्धहुई इसपृथिवीपर ४६ अग्नि सोम मय होकर फिर प्रजाको बढ़ावेगा इसतरह सोमकेवचन सुन तिस कन्याको वे प्रचेता ग्रहण करतेभये ४७ तब वृक्षोंसे कोपको हटाय मारिषानामवाली पत्नीमें धर्म्मसे प्रजापति संज्ञक ४८ और महातेजवाला दक्ष सोम के अंश से जन्मा पीछे चर और अचर द्विपद और चतुष्पद ४९ इन्हों को दक्ष मन से रचकर पीछे स्त्रियों को रचताभया तब दशकन्याओंको धर्मकेलिये देताभया और तेरह कन्याओं को कश्यपजी के लिये देताभया ५० और शेषरही नक्षत्ररूपी कन्याओं को चंद्रमा के लिये देता भया तिन सब कन्याओं में देवता पक्षी गाय दैत्य दानव ५१ गंधर्व अप्सरा इन आदि अन्य जातिभी उपजतीभई तब से लगायत यह प्रजा मैथुनसे संभव हुई है ५२ और पहिले दर्शन स्पर्शन संकल्प इन्हों से प्रजा उत्पन्न हुआ करतीथी ५३ मुनियों ने पूछा हे सूतजी—देवता दानव गंधर्व सर्प राक्षस इन्होंका संभव और महात्मादक्ष का सम्भव कहो ५४ और यहभी सुना है कि ब्रह्मा के दाहिने अंगुष्ठसे दक्ष उपजा और बायें अंगुष्ठसे तिसकी पत्नी

उपजी ५५ और चन्द्रमाका दौहित्र दक्ष फिर कैसे श्वशुरभाव को प्राप्तहुआ और कैसे दक्षप्रजापति प्रचेताओंके पुत्रभावको प्राप्तहुआ ५६ सो हे सूतजी यह हमलोगों को अतिसंदेहहै इसके व्याख्यानकरने को आप समर्थ हैं ५७ लोमहर्षणजी बोले–हे द्विजो प्राणियोंमें उत्पत्ति और लय नित्यही होतीरहती हैं सो इसमें विद्वान् ऋषिजन मोहित नहीं होते ५८ क्योंकि युगयुगमें दक्षआदि राजा उपजतेहैं और लयहोजाते हैं इसवास्ते यहां विद्वानोंको मोहित नहीं होनाचाहिये ५९ और पहिले बड़ापन और छोटापन नहीं होता था किंतु तपही बड़ा होताथा क्योंकि प्रभावही कारण है ६० इस दक्षकी चराचर सृष्टिको जो मनुष्य जानेगा वह प्रजावाला और पूर्णआयुवाला होकर स्वर्गमें पूजित होवेगा ६१ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांसृष्टिकथनंनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय ॥

मुनियोंने कहा हे सूतजी–देवता दानव गंधर्व सर्प्प राक्षस इन्होंकी उत्पत्तिको विस्तारसे वर्णनकरो १ लोमहर्षणजी बोले–हे ब्राह्मणो ब्रह्माजी ने जैसे प्रजा को रचनेके लिये प्रेरित किया व दक्ष जैसे प्रजाको रचता भया तैसे सुनो २ प्रथम मनसे भूतोंको रचताभया पीछे ऋषि देव गन्धर्व असुर राक्षस ३ यक्ष भूत पिशाच पक्षी पशु सर्प्प इन्होंको मनसे रचताभया और

जब इसकी मानसी प्रजा नहीं बढ़ी ४ तब प्रजाके हेतु यह धर्मात्मा चिंताकरके मैथुन धर्मसे प्रजारचने की इच्छा करताभया ५ पश्चात् तपसेयुक्त सती लोकोंको धारनेवाली ऐसी वीरण प्रजापति की असिक्नीकन्या को बिवाहकर ६ तिसबिषे दक्षप्रजापति पांचहजारपुत्र उत्पन्न करताभया ७ प्रजारचनेकी इच्छाकरतेहुये तिस महाभागको देखकर देवर्षि नारदमुनि यह प्रिय संबाद कहतेभये ८ तिसके नाशके वास्ते और अपने शापके वास्ते जिस नारदको परमेष्ठीकश्यप उत्पन्नकरताभया ९ सो दक्षके शापसे पहिलेही ब्रह्माने दक्षकीपुत्री से नारदमुनिको उत्पन्नकरदिया १० और फिर ब्रह्मा असिक्नीमें तिसको उत्पन्न करताभया ११ तिस नारदने दक्षकेपुत्र हर्य्यश्व को नष्टकिया १२ पश्चात् दक्ष तिसके मारनेमें उद्यम करनेलगा और ब्रह्मा ब्रह्मर्षियों को लेकर याचना करनेलगा १३ जब ब्रह्माको शामिल करके दक्ष कहनेलगा कि महाराज इसमेरी कन्याबिषे आपका पुत्रहो १४ ऐसे कह दक्षने अपनी पुत्री दई और दक्षके शापसे तिसके नारदमुनि होता भया १५ मुनियोंने पूछा—हे भगवन् प्रजापति के पुत्रोंको महर्षि नारदने कैसे नष्ट किया सो तत्त्वसे सुननेकीइच्छा हम लोग करते हैं १६ लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो— महावीर्य्यवाले और प्रजाको रचनेकी इच्छावाले और हर्य्यश्वनामसे विख्यात ऐसे दक्ष के पुत्रोंसे नारदमुनि कहता भया १७ हे दक्षके पुत्रो तुम मूर्ख होकर प्रजा

रचनेकी इच्छा करते हो और इस पृथिवी का प्रमाण जानते नहींहो १८ व ऊपर-नीचेका अन्तर जानते नहीं तो कैसे प्रजारचोगे वे संपूर्ण इन बचनोंको सुनकर दिशाओंको चलेगये १९ और अबतकभी नहीं निवृत्त होते हैं जैसे समुद्रसे नदी जब ये हर्य्यश्व नष्टहोगये तब प्रचेताकापुत्र दक्षप्रजापति २० वैरिणी स्त्रीबिषे हजार पुत्रोंको रचताभया वे शवलाश्व संज्ञक पुत्र प्रजाबढ़ानेकी इच्छा करते भये २१ पश्चात् नारदमुनि के प्रेरे हुये परस्परमें बचन कहने लगे कि नारद ठीककहता है इसवास्ते २२ भ्राताओं की पदवी को जाना योग्य है इसमें सन्देह नहीं और पृथिवीका प्रमाण जानकर सुखपूर्व्वक प्रजारचेंगे २३ यह संपूर्ण एकाग्रचित्तकरके स्वस्थ मनसे यथावत् बिचार वेभी संपूर्ण दिशाओंको गमन करतेभये २४ लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो-जब शवलाश्वभी नष्ट होगये तब दक्ष क्रोध करके बचन कहता भया २५ कि हे नारद तू नाशको प्राप्त होजाय और गर्भवास में बस-लोमहर्षणजी बोले-हे मुनिजनो तिस दिनसे लेके भ्राता जोहैं भ्राताको ढूंढ़ने नहीं जाय २६ और जाय तो नाशको प्राप्तहोजाता है ऐसे दक्ष तिन पुत्रोंको नष्ट जानकर २७ फिर वैरिणी स्त्रीके बिषे साठ कन्याओंको उत्पन्न करता भया ऐसा सुनते हैं तिन्होंमें से कुछ भार्य्या धर्मसे समर्थ कश्यपमुनि २८ और कुछ सोमधर्म से समर्थ महर्षि ग्रहण करतेभये दक्षप्रजापति दशकन्या धर्मको देताभया

और तेरहकश्यपको २९ सत्ताईस सोम अर्थात् चंद्रमा को और चार अरिष्टनेमिको और दो बहुपुत्र को दो अंगिराको ३० और दो बुद्धिमान् कृशाश्वको ऐसेदेता भया हे मुनिजनो तिन कन्याओंके नामसुनो अरुंधती बसु यामी लंबा भानु मरुत्वती ३१ संकल्पा मुहूर्त्ता साध्या विश्वा हे मुनिजनो ये दश धर्मकी पत्नी होती भई अब तिन्होंकी संततिको सुनो ३२ विश्वासे विश्वेदेवा और साध्यासे साध्य व मरुत्वतीसे मरुत्वान्, बसुसे बस व भानुसे मनुष्य, मुहूर्त्तासे मुहूर्त्त, लंबासे घोष,यामिसे नागबीथी ३३।३४ अरुंधतीसे पृथिवीके सब बिषय उत्पन्न होतेभये और संकल्पासे सर्वसंकल्प होताभया ३५ और नागबीथी जामिनी इन्होंसे वृषल होताभया और हे मुनिजनो जो प्रचेताके पुत्र दक्षसोम को कन्यादेता भया३६ सो संपूर्ण नक्षत्र नामवाली ज्योतिषमें कही हैं और संपूर्ण ज्योति पुरोगमासे आदि लेकर आप बिख्यातहैं ३७ और बसु आठ कहेहैं अब तिन्होंकाबिस्तारकहतेहैंआयु,ध्रुव,सोम,धर,बायु,अग्नि ३८प्रत्यूष,प्रभास ये आठ बसु कहे हैं तिन्होंमें आयुके पुत्र वैतंड्य श्रम शांत मुनि ये होतेभये ३९ और ध्रुव का पुत्र लोकों के प्रेरनेवाला काल होताभया और सोमका पुत्र बर्चा जिससे मनुष्य बर्चस्वी अर्थात् तेजवाला होजाताहै ४० सो होताभया और धरकापुत्र द्रविण और हुतहव्य वह हुये और मनोहरासे शिशिर प्राणरमण ये पुत्र होतेभये ४१ और अनिलकी भार्य्या

शिवा से मनोजव और अविज्ञातगति दो पुत्र होते भये ४२ और अग्निके कुमार पुत्र होताभया सो शोभा करके युक्त शरके झुण्डमें प्राप्तकिया है और तिससे शाष और बिशाष नैगमेय ये होते भये ४३ और कृत्तिकाओंकी संतान होनेसे कार्त्तिकेय कहाये और स्कंद सनत्कुमार इन्होंको चौथेभागके तेज से रचतेभये ४४ और प्रत्यूषके पुत्र देवलनाम ऋषिहोते भये और देवलके क्षमावाले और तपस्वी दो पुत्रहोते भये ४५ और श्रेष्ठस्त्री ब्रह्मको जाननेवाली योग से सिद्ध संपूर्ण जगत् में आसक्त बृहस्पतिजीकी भगिनी ४६ यहआठयें बसुप्रभासकी भार्य्याहोतीभई तिसबिषे महाभाग प्रजापति बिश्वकर्मा हुआ ४७ जो बिश्वकर्मा हजारहा शिल्पों को करनेवाले और देवताओं के तक्षक अर्थात् मिस्त्री और संपूर्ण भूषणोंके करनेवाले शिल्पकर्मवालोंमेंश्रेष्ठ ४८ और संपूर्ण बिमानोंके रचने वाले होतेभये और जिस बिश्वकर्मा महात्माकी शिल्प बिद्या में मनुष्य आजीवन करते हैं ४९ और महादेव जीकी प्रसन्नतासे तपसेसिद्धहुई सुरभी कश्यपसे एकादशरुद्रोंको रचतीभई ५० अजैकपाद अहिर्बुध्न त्वष्टा रुद्र ये होतेभये और त्वष्टा से बड़े यशवाला श्रीमान् बिश्वरूप पुत्र होताभया ५१ और हर बहुरूप त्र्यंबक अपराजित बृषा कपि शंभु कपर्दी रैवत ५२ मृग ब्याध सर्प कपाली हे राजन् ये त्रिभुवनों के ईश्वर एकादश रुद्र कहे हैं५३ हे मुनिश्रेष्ठो अमित हैं पराक्रम जिन्होंके

ऐसे १०० रुद्र पुराणों में कहे हैं जिन्होंकरके चराचर लोकव्याप्तहोतेभये ५४ अब कश्यपकावंशसुनो अदिति,दिति,दनु,अरिष्टा,सुरसा,खसा ५५ सुरभि,विनता, ताम्रा,क्रोधवशा,इरा,कद्रु हे मुनिजनो ये कश्यपकी स्त्री होतीभई अब इन्होंकी संततिसुनो५६ और हे मुनिजनो पूर्व पूर्व मन्वन्तर वैवस्वत में तुषितनाम बारह देवता होतेभये सो आपसमें कहतेभये ५७ कि हे देवताओ यशवाले चाक्षुष मन्वंतरमें संपूर्ण लोकोंके हितकेवास्ते ५८ शीघ्र आवो अदितिमें प्रवेश होकर जन्मलेवो जिससे हमारा कल्याण होवे ५६ लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो वे संपूर्ण देवता ऐसे कहकर चाक्षुष मन्वंतरमें मरीचि के पुत्र कश्यपजी करके दक्षकी कन्या अदितिसे उत्पन्न होते भये ६० और हेमुनिजनो तहां फिर इन्द्र और विष्णु जन्म लेतेभये और अर्य्यमा, धाता,त्वष्टा, पूषा ६१ विवस्वान्,सविता, मित्र, वरुण अति तेजवाला अंश भग और बारह आदित्य ये भी संपूर्ण उत्पन्न होतेभये ६२ और चाक्षुष मन्वंतरमें जो पहले तुषित होते भये सो वैवस्वत मन्वंतर में बारह आदित्यकहेहैं ६३ औरजो पतिव्रता सत्ताईस सोमकी स्त्री होतीभई तिन प्रकाशितोंके दीप्त संतान होतीभई ६४ और अरिष्टनेमिकी स्त्रियोंके सोलह संतान होती भई और बहुपुत्र विद्वानके चार तड़ित होतीभई ६५ और प्रत्यंगिरामें ऋषियोंसे सत्कार कीहुई श्रेष्ठऋचा होती भई व कृशाश्व देवर्षिसे देवप्रहरण पुत्र होतेभये

६६ ये संपूर्ण युगसहस्रके अंतमें बारम्बार जन्मते हैं और तहां तंतीस देवता कामसे उत्पन्न होतेहैं ६७ और हे मुनिजनो तिन्होंकीभी यहांनिरोध और उत्पत्ति कहते हैं जैसे यहां आकाशमें सूर्य्यका उदय और अस्त होता है ६८ ऐसे देवसमूह युगयुगमें होतेहैं और भी कश्यपसे दितिके दो पुत्रहोतेभये ६९ हिरण्याक्ष और वीर्यवान् हिरण्यकशिपु और सिंहिकानाम कन्या होती भई सो विप्रचितिकी स्त्री होती भई ७० तिसके पुत्र बड़े बलवान् सैंहिकेय गणों करके सहित दश हजार कहेहैं ७१ और हे मुनिजनो तिन्होंकेपुत्र पौत्र सैकड़ों और हजारों हुये हैं जिनकी गिन्ती नहीं है महाबाहो अर्थात् लंबीभुजाओं वाले अब हिरण्यकशिपुका बंश सुनो ७२ बिख्यातहै वीर्य्य जिसका ऐसे हिरण्यकशिपु के चारपुत्र अनुह्लाद, ह्लाद, प्रह्लाद, संह्लाद ये होतेभये ७३ और ह्लादके पुत्र ह्रद हुआ और संह्लादके सुंद, निसुंद दो पुत्र होतेभये ७४ और ह्रदके पुत्र आयु, शिवि,काल ये होते भये और प्रह्लादके पुत्र विरोचन होताभया तिसके राजाबलि हुआ ७५ हे मुनिजनो बलिके सौ पुत्र होतेभये तिन में बाणासुर बड़ा होता भया धृतराष्ट्र, सूर्य्य, चन्द्रमा, इन्द्रतापन ७६ कुंभनाभ, गर्दभाक्ष, कुक्षि इन्होंसे आदिलेकर होते भये और महाबलवाला इन्होंमें बड़ा बाणासुर महादेवजी को अतिप्रिय होताभया ७७ जो बाणासुर पहले कल्प में महादेवजी को प्रसन्नकर यह बरदान मांग-

ता भया कि आप सम्पूर्ण कालमें मेरे समीप रहैं ७८ और हे मुनिजनो तिस बाणासुर के लोहिनी भार्य्या से इन्द्रदमन पुत्र होताभया और सौ हजार राक्षसों से समूह होते भये ७९ और हिरण्याक्ष के बड़े बलवाले पुत्र ऊर्जर, शकुनि, भूतसंतापन ८० महानाभ, विक्रांत, कालनाभ ये होतेभये और तपस्वी बहुतपराक्रमवाले महावीर्य्यवान् ऐसे सौ पुत्र दनुके होतेभये ८१ तिन्होंमें से प्रधानोंको कहते हैं सुनो द्विमूर्द्धा, शकुनि, शंकुशिरा ८२ शंकुकर्ण, विरोधग, वेष्टी, दुंदुभि, अयोमुख, शंबर, कपिल, वामन ८३ मरीचि, मघवान्, इरा, गर्गशिरा, वृक, विक्षोभण, केतुवीर्य्य, शतह्रद ८४ इन्द्राजित्, सर्वजित्, वज्रनाभ, महानाभ, विक्रीत, कालनाभ ८५ एकचक्र, महाबाहु, नारक, वैश्वानर, पुलोमा, विद्रावण, महाशिरा ८६ स्वर्भानु, वृषपर्व्वा, तुंगगंड, सूक्ष्म, निचंद्र, ऊर्णनाभ, महागिरि ८७ असिलोमा, केशी, शठ, वलक, मद, गगन, मूर्द्धा, कुंभनाभ ८८ प्रमद, मय, कुपथ, हयग्रीव, वैसृप, विरूपाक्ष, सुपथ, हराहर ८९ हिरण्यकशिपु, शतमाय, शंवर, शरभ शलभ, विप्रचिति ९० बड़े वीर्य्यवान् ये दनुके पुत्र संपूर्ण कश्यपसे उत्पन्न होते भये विप्रचिति है प्रधान जिन्होंमें ऐसे महाबलवान् ये दानव होते भये ९१ और हे मुनिजनो जो इनकी संतान पुत्र पौत्र हैं तिनकी संख्या करने को मैं समर्थ नहीं ९२ और स्वर्भानुके प्रभानाम कन्या होतीभई और पुलोमाके उप-

दानवी तीन कन्या हुई हयशिरा, शर्मिष्ठा, वार्षपर्वणी ६३ और वैश्वानरके पुलोमा, कालिका दो पुत्री होती भई इनदोनों को मरीचिकेपुत्र कश्यपजी बिवाहतेभये ६४ तिन दोनोंसे साठिहज़ार दानवोंको उत्पन्न करते भये और चौदहसौ दानवोंको कालीसे उत्पन्न करते भये ६५ और पौलोम और कालकेय ये दानव हिरण्य-पुरबासी बड़ेबलवान् ६६ ब्रह्माजीके तपकरके देवता-ओं से अबध्य अर्थात् नहीं मरसकैं ऐसे होते भये और पश्चात् अर्जुन इन्हों को मारता भया ६७ और हे मुनिजनो प्रभा से नहुष होताभया और शची से सृंजय शर्मिष्ठा पुरुको जनती भई और उपदानवी दुष्मंत को ६८ तिससे अनन्तर सिंहिकाके पुत्र विप्र-चिति से बड़े बीर्य्यवाले अति दारुण दैत्य दानव संयोगसे बहुत पराक्रमवाले सैंहिकेय नामसे विख्या-त ऐसे ये तेरह पुत्र होते भये ६९ त्र्यंशशल्य, बलि, नभ, महाबल, वातापि, नमुचि, इल्वल, खसृम १०० आंजिक, नरक, काल, नाभ, राहु इन्होंमेंबड़ा और शूर, बीर चन्द्रमा सूर्य्यको मर्दनकरनेवाला ऐसा राहु होता भया १०१ और शुक, पोतरण, वज्रनाभ होते भये मूक, तुहुंड ये दोनों ह्रदके पुत्र और सुंदकापुत्र मारीच ताड़काबिषे होता भया ये संपूर्ण दानव दनुके बंशको वढ़ातेभये १०२ और तिन्होंके पुत्रपौत्र सैकड़ों हज़ारों होतेभये और संह्राद दैत्यके कुल में निवातकवच संज्ञक १०३ वड़े तपस्वी तीन किरोड़ पुत्र मणिमतीमें

होतेभये १०४ सोभी स्वर्ग निवासी देवताओंसे अब-
ध्य होतेभये पश्चात् ये सब अर्जुन को मारे हैं और
बड़े पराक्रमवाली छः कन्या १०५ काकी, श्येनी, भासी,
सुग्रीवी, शुचि, गृध्रिका ये ताम्रासे उत्पन्न होती भईं
तिन्होंमें काकी काकोंको जनती भई और उलूकी उ-
ल्लुओं को १०६ श्येनी सिकरों को भासी भास पक्षि-
यों को गृध्रिका गृध्रोंको शुची जल जीव और पक्षियों
को और हे मुनिजनो सुग्रीवी १०७ अश्व और गर्द-
भों को उत्पन्न करती भई ऐसे ताम्राका वंश कहाहै
और हे मुनिजनो विनताके अरुण और गरुड़ दो पुत्र
होते भये १०८ यह गरुड़ सुंदर पंखोंवाला पक्षियोंमें
श्रेष्ठ अपने कर्म करके दारुण होताभया और अपरि-
मित पराक्रम वाले एक हज़ार सर्प सुरसा के होतेभये
१०९ और हे मुनिजनो सर्प अनेक शिर वाले होते
भये और कद्रूके बड़े बलवाले हज़ार पुत्र होते भये
११० और ये सम्पूर्ण अनेक शिरवाले नाग होतेभये
सो सम्पूर्ण गरुड़ के बश होतेभये और शेष वासुकि
तक्षक ये इन्होंमें प्रधान होतेभये १११ ऐरावत, महा-
पद्म, कंबल, अश्वतर, एलापत्र, शंख, कर्कोटक, धनं-
जय, महानील, महाकर्ण, धृतराष्ट्र, बलाहक, कुहर, पु-
ष्पदंत, दुर्मुख, सुमुख ११२ शंख, शंखपाल, कपिल,
वामन, नहुष, शंखरोमा, मणि, इन्हों से आदि लेकर
बहुत नाग होतेभये ११३ और तिन क्रूररूपी चौ-
दह हज़ार पुत्र पौत्रोंको गरुड़ मारता भया नहीं तो

बहुत बढ़जाते ११४ और हे मुनिजनो इन सर्पों का गण क्रोधकेवश जानो और जल स्थलके जीव और पक्षी धराके उत्पन्न होते भये ११५ और सुरभि गाय भैंस को जनती भई और वृक्ष वेलि संपूर्ण स्थाणु जाति इन्होंको इराजनतीभई ११६ और यक्ष,रक्ष,मुनि,अप्सरा, इन्होंको श्वसा जनती भई और बड़े पराक्रम वाले गंधर्वों को अरिष्टा जनती भई ११७ हे मुनिजनो ये स्थावर जंगम कश्यपके वंशमें कहे हैं और तिन्हों के पुत्र पौत्र सैकड़ों हजारों होतेभये ११८ यह सृष्टि स्वारोचिषमन्वंतर में कही है और वैवस्वत मन्वन्तरमें विस्तृत वरुणके यज्ञमें ११९ आहुति देतेहुये ब्रह्माकी सृष्टिकहीहै पहिलेजो सात ब्रह्मर्षि भये तिन्होंको मनसे १२० ब्रह्मा पुत्रभाव कल्पना करताभया पश्चात् हेमुनिजनो देवता और दैत्योंका विरोध हुआ १२१ जिसमें दितिके सम्पूर्ण पुत्र नष्ट करदियेगये तब दिति दुःखित हुई और आराधनसे कश्यपजीको प्रसन्न करतीभई १२२ कश्यपजी इसको बरसे लुभाते भये तब इसने कहा महाराज यह बर दीजिये कि बड़े पराक्रमवाला समर्थ इन्द्रको मारै ऐसा पुत्र हो १२३ ये आराधित किये तपस्वी यह बरदेतेभये पश्चात् बरदेके और अव्यग्रचित्त हुये कश्यपजी दितिसे कहनेलगे १२४ कि हे प्यारी जो इस व्रतको शुद्ध होकर धारण करेगी तो इन्द्रको तेरा पुत्र मारेगा व सौ वर्ष गर्भ धारण करेगी १२५ और महातपा कश्यपजी दितिसे कहने लगे

कि जो तू पवित्र होके व्रतको धारण करेगी तो निश्चय गर्भको धारेगी तब अंगीकारकर और पवित्र होके गर्भ धारण करती भई १२६ पश्चात् अमित पराक्रम-वाले कश्यपजी देवसमूह को प्रकाश करते हुये देवता-ओं से अबध्य १२७ दुर्द्धर्षतेजको दितिमें स्थापनकर तपकी इच्छा करके पर्वत में गमन करतेभये पश्चात् इन्द्र अवकाश देखता हुआ ठहरताभया १२८ जब सौ वर्षमें एक वर्ष रहा तब दिति भूलिके बिनापैरधोये शयन करतीभई १२९ यह अवसर इन्द्र देखि सूक्ष्म शरीर धारणकर बज्रले दितिके गर्भमें प्रवेशकर गर्भ के सातटुकड़े बनाताभया १३० जबयह खंडित किया गर्भ रोताभया तब इन्द्र ने फिर बज्रसे एकएकके सात सात टुकड़े बनादिये हे मुनिजनो वे मरुत्नाम उञ्चास देवता होतेभये १३१ तिनको प्राणी और देवताओं के समूह को प्रकाश करतेहुये हरि ब्रह्माको देतेभये १३२ हे मुनिजनो हरिही पुरुष है वीर है जिष्णु है प्रजापतिहै १३३ वही मेघरूपहै अग्निरूपहै और यह संपूर्ण जगत् तिसने रचा है १३४ और जो पुरुष मरुतों केजन्मको सुनते हैं तिन्होंको इसलोकमें और परलोकमें किसी प्रकारका भय नहीं रहता १३५ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांदेवासुराणामुत्पत्तिर्नाम तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

—— ❋ ——

चौथा अध्याय ॥

लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो ब्रह्माजी आदि में वेनके पुत्र पृथुका राज्याभिषेक करके और पश्चात्क्रम से राज्याभिषेक करते भये १ ब्राह्मण बेलि नक्षत्र ग्रह यज्ञ तप इन्हों का राजा चन्द्रमाको किया २ औरजलों का राजा वरुणको व राजाओंका प्रभु कुबेरको और अंगिराके पुत्र वृहस्पतिजीको विश्वेदेवोंका राजाकरते भये ३ और भृगुओंकाराजा शुक्रको किया और आदित्योंका राजा विष्णुको किया और वसुओंका राजा अग्निको ४ और प्रजापतियोंका राजा दक्षको व मारुतोंका राजा वासव अर्थात् इन्द्रको और दैत्य दानवोंका राजा प्रह्लादको ५ व पितरोंका राजा धर्म्मराज को किया और यक्ष राक्षस ६ संपूर्ण भूत और पिशाच इन्होंका राजा महादेवजीको और पर्व्वतोंका राजा हिमाचल को व नदियों का राजा सागरको ७ और साध्यों का राजा नारायणको व रुद्रोंका राजावृषभध्वज अर्थात् महादेवको दानवोंका राजा विप्रचित्तिको ८ और गंधमारुत भूत अशरीरी शब्द आकाश इन्हों का राजा वायुको करते भये ९ और सागर नद मेघ वर्षाहुआ जल गन्धर्व्व इन्होंका राजा चित्ररथको करते भये १० और नागोंका राजा वासुकिको, सर्प्पोंका राजा तक्षक को सम्पूर्ण जावड़ालोंका राजा शेष को ११ और हस्तियों का राजा ऐरावतको घोड़ोंका राजा उच्चैःश्रवा को, पक्षियोंका राजा गरुड़को, १२ मृगोंका

का राजाशार्दूलको गौओंका राजावृषको बनस्पतियों
का राजापिलखनको १३ गंधर्व और अप्सराओंका
राजाकामदेवको और ऋतु, मास, दिन १४ पक्ष, रात्रि,
मुहूर्त्त, तिथि, पर्ब, घटी, पल, प्रमाण, ऋतुओंका अ-
यन १५ गिन्ती, योग इन्होंकाराजा संवत्सरको करते
भये हे मुनिजनो ब्रह्मा क्रमसे ऐसे राज्य बांटकर १६
दिशापालोंको स्थापन करतेभये पूर्वदिशामें बैराज-
प्रजापतिकेपुत्र सुधन्वाको १७ दिशापाल करतेभये
और दक्षिण दिशा का राजा कर्दमप्रजापतिकेपुत्र १८
शंखपदको करतेभये और पश्चिमदिशामें रजसकेपुत्र
१९ महात्मा केतुमान्को राजा करतेभये तैसेही उत्तर
दिशामें पर्जन्यप्रजापतिकेपुत्र२० हिरण्यरोमाको राजा
करतेभये हे मुनिजनो वे संपूर्ण अबभी सप्तद्वीप और
पतन और देश इन्हीं सहित पृथ्वीकी धर्मसे पालना
करते हैं २१ और ये संपूर्ण राजा राजसूय यज्ञकरके
और वेदबिधिकरके पृथुको राजाओं का राजाकर २२
तिसकेपश्चात् बड़ातेजवाला चाक्षुषमन्वन्तर व्यतीत
होत संते २३ ब्रह्मा बैवस्वतमनुको राज्य देतेभये हे
मुनिजनो अब विस्तारसे बैवस्वतमनुको आपलोगोंके
आगे कहूँगा २४ आनुकूल्य होने से क्योंकि जिससे
आप सबोंको सुननेकी बांछा है सो यह चरित्र पुराणों
में मानाहुआहै २५ और धन, आयु, यश इन्होंको
बढ़ाताहै और स्वर्गमेंबासकराताहै शुभकादेनेवालाहै
२६ इतना सुन मुनिजनोंनेकहा कि हे भगवन् लोम-

हर्षणजी पृथुकाजन्म विस्तारसेकहो और तिस महा-
त्मासे जैसे पृथ्वीहुई सो चरित्रभी कहो २७ और हे
भगवन् लोमहर्षणजी जैसे पितर, देवता, ऋषि, दैत्य,
नाग, यक्ष, वृक्ष २८ पर्वत, पिशाच, गंधर्व, ब्राह्मण,
शूर, बीर, राक्षस ये संपूर्ण पृथ्वी को दुहतेभये २९
सोभी कहो और हे मुने इन्हों के पात्र और वत्स वि-
शेषकरके वर्णनकरो और क्रमसे दूध विशेष और
दुहनेवालेभी कहो ३० और हे लोमहर्षणजी जिस
कारण से क्रोधित महर्षियों ने बेनका हाथ मथा सो
कारणभी वर्णनकरो ३१ ऐसेसुन लोमहर्षणजीने कहा
कि हे मुनिजनो बड़ेआनन्दकीबार्त्ताहै बेनकेपुत्र पृथुके
चरित्र विस्तारसे आप सबोंकेआगे कहूँगा आपसाव-
धानहोके एकाग्र चित्तसे श्रवणकरो ३२ और हेमुनि-
जनो अपवित्र, तुच्छमनवाला, अशिष्य, अव्रत, कृतघ्न,
अहित इन्होंके आगे ३३ स्वर्ग, यश, आयु, धन इन्हों
के देनेवाले और ऋषियों के कहे हुये ये चरित्र नहीं
कहिये हे मुनिजनो तुम्हारेआगे यथावत् कहताहूँ ३४
जोपुरुष बेनकेपुत्र पृथुके चरित्र नित्य ब्राह्मणों को
नमस्कारकरके कहताहै तिसको किसी प्रकारका दुःख
नहीं होता ३५ लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो पहले
अत्रिके बंशमें उत्पन्नहुआ और अत्रिके समान प्रभु
धर्मकी रक्षाकरनेवाला ऐसा अंगनाम प्रजापति होता
भया ३६ और तिस मृत्युकी पुत्री सुनीथा के बिषे
नहीं धर्मका जाननेवाला प्रजापतिबेन होताभया ३७

यह कालात्मजाकापुत्र नानाप्रकारके दोषोंकरके अपने धर्मोंको छोड़कर और काम लोभोंमें बर्त्तताभया ३८ और यह राजाबेन अधर्म युक्त मर्य्यादा स्थापन करता भया और वेद धर्मोंको छोड़कर अधर्म में मग्न रहता भया ३९ और बेनके राज्य में वेदों का पढ़ना, देवताओंका पूजन नहीं होताभया और यज्ञों में होमाहुआ देवताओं को अमृतभी नहीं मिलता भया ४० क्योंकि तिस बेनका काल समीप आने से यह खोटी प्रतिज्ञा होतीभई कि कोई देवताओंका यज्ञ मतकरो हवन मतकरो ४१ हे मुनिजनो ऐसे बेन कहताभया कि मेराही यज्ञकरना उचित है और यज्ञ करनेवाला भी मैंहूं और यज्ञरूपीभी मैंहींहूं इसवास्ते मेरेही विषे यज्ञ हवन करना उचितहै ४२ ऐसी लंघित मर्य्यादा को ग्रहण करतेहुये बेन को बहुत दिनों में मरीचिसे आदिलेकर महर्षि कहतेभये ४३ हे बेन बहुत वर्षोंतक हम दीक्षा करेंगे इससे यह अधर्म मतकर और यह सनातनधर्म्मनहीं है ४४ और तू अत्रिके बंशमें जन्मा है प्रजाओंका पतिहै और तैंने प्रतिज्ञाभी करलीहै कि मैं प्रजाओंको पालूंगा ४५ हे मुनिजनो ऐसे कहतेहुये सम्पूर्ण ऋषियोंके अर्थको अनर्थ जाननेवाला दुर्बुद्धि बेन हँसके वचन कहताभया ४६ कि हे ऋषियो तुम मूर्खहो और निश्चय करके मुझको जानते नहीं हो मुझ से अन्य धर्म्म का जाननेवाला कौन है और मैं किसका क्या सुनूं क्योंकि श्रुत, वीर्य्य, तप,

सत्य इन्हों करके मेरे समान पृथ्वीपर कौन है ४७ सम्पूर्ण प्राणी और धर्म इन्होंको मैं उत्पन्न करनेवाला हूं ४८ और जो मैं इच्छाकरूं तो पृथ्वीको दग्ध करदूं और जलसे डुबोदूं और पृथ्वी समुद्रको रोकदूं इसमें संदेह नहीं ४९ हे मुनिजनो जब राजाबेन मोह और गर्बसे नहीं नम्रहोताभया तब महात्मा महर्षि क्रोधकर ५० और फुरतीसे इसमहाबलवान्कोपकड़ क्रोधयुक्त ऋषि इसकी जंघाको मथने लगे ५१ तब मथतेहुये राजाकी जंघासे बहुतछोटा दृढ़ अंगवाला बहुतकाला ऐसा पुरुष होताभया ५२ हे मुनिजनो वह पुरुष डर के और अंजलिबांधके स्थित होताभया तब अत्रिजी इसको विह्वल देखकर रेनिषीद अर्थात् ठहर ऐसे कहते भये ५३ इसवास्ते वह पुरुष निषाद वंशका करने-वाला होताभया और बेनके पांयसे उत्पन्नभये धीवरों कोभी रचताभया ५४ और विन्ध्याचलमें रहनेवाले जो अधर्म्म रुचि तुषार और तुंबुरु इन संपूर्णों को बेनसे उत्पन्नहुये जानो ५५ पश्चात् महात्मा ऋषि क्रोधकर और अरणी की तरह बेनके दहने हाथ को मथतेभये ५६ तिसहाथसे जलताहुआ साक्षात् अग्नि कीसी कान्तिवाला ५७ और धनुष कवच धारणकिये बड़े यशवाला और बड़े शब्दवाला अजगव धनुष धारणकिये ५८ और रक्षाकेवास्ते दिव्यशरोंको धारण किये उत्तम कान्तिवाला कवच धारणकिये ऐसा पृथु राजा उत्पन्न होताभया ५९ तिसके उत्पन्न होतेही

सम्पूर्ण भूत प्रसन्नहोकर आवतेभये ६० और हे मुनि-
जनो तिस महात्मा सत्पुत्रके जन्मसे पुन्नाम नरक से
रक्षाकियाहुआ बेन स्वर्गको प्राप्त होताभया ६१ और
तिसके अभिषेकके वास्ते सम्पूर्ण समुद्र नदीरत्न और
जललेकर चारोंतरफसे प्राप्तहोतेभये ६२ और संपूर्ण
देवता और आंगिरसोंकरकेसहितभगवान्ब्रह्माजी६३
और सम्पूर्ण स्थावर जंगम प्राणी ये आकर बेन के
पुत्रप्रजाको पालनेवाले उत्तम कान्तिवाले ऐसे पृथुको
राज्य तिलकदेतेभये ६४ और धर्म के जाननेवाले रा-
जाओंसे आदित्य राज्यविषे अभिषेक कियाहुआ और
महातेजवाला प्रतापवान् ६५ ऐसा बेनका पुत्र पृथु
राजा पितासे दुःखितकरी प्रजाको अनुरंजित अर्थात्
सुखीकरता भया ६६ इस वास्ते अनुरागसे तिसका
राजा नाम होताभया और तिसराजाके समुद्रकी तरफ
जातेहुये जल थँभ गया ६७ और पर्वत इस पृथु
राजाको मार्ग देते भये और इसकी ध्वजा कभी नहीं
टूटतीभई और तिसकालमें बिना बोये अन्न उपजते
भये और अन्य चिन्ताकरकेही सिद्धहोतेभये ६८ और
गौ कामदुघाहोतीभई और पुटक में मधु होताभया
और इसी कालमें शोभन ब्रह्माके यज्ञमें ६९ सौत्य
दिनविषे बड़ी बुद्धिवाले सूतजी सूतिनाममाता से होते
भये और तिसीमहायज्ञविषे बुद्धिमान् मागध भी
उत्पन्नहोताभया ७० और इनदोनोंको सुरर्षियोंने पृथु
राजाकी स्तुतिके वास्ते बुलाया और तिन्होंसे सम्पूर्ण

ऋषि कहतेभयेकि इसकेकर्मोंके अनुरूपस्तुतिकरो ७१ ऐसे सुनकर सूत और मागध संपूर्ण ऋषियों से कहते भये ७२ हे मुनिजनो हम तो अपने कर्मोंकरके देवता और ऋषियोंको प्रसन्नकरते हैं हे द्विजो इसतेजस्वी राजाके कर्म लक्षण और यश हम नहीं जानते ७३ जिससे स्तुतिकरें ऐसे वचन सुन ऋषि कहनेलगे कि भविष्य अर्थात् होनेवाले इसके कर्मोंकरके स्तुतिकरो ७४ पश्चात् महाबल सत्य बोलनेवाला दानकरने के स्वभाव वाला सत्यसंध नरों का ईश्वर ७५ श्रीमान् शत्रुओंको जीतनेवाला क्षमा शील धर्मज्ञ कृतज्ञ दया-वान् प्रियभाषण ७६ करनेवाला मान्यको माननेवाला यज्ञोंका करनेवाला सत्यसंगर मनको रोकनेवाला शांत रत व्यवहार में स्थित ७७ ऐसा राजा पृथु जो जो कर्म करता भया तिससे आदिलेकर हे मुनिजनो सूत मागधबंदिजनोंने तिन आशीर्वादोंकरके जानोकिस्तुति करीहै ७८ और हे मुनिजनो स्तुतिके अन्तमें प्रजाके ईश्वर राजा पृथु तिन्होंपर प्रसन्न होकर सूतको अनूप देशदेतेभये और मागधको मगधदेश देतेभये ७९ और हे मुनिजनो तिसराजापृथुको देखकर परम प्रसन्नहुये ऋषिप्रजाओंसे कहनेलगे कि हे प्रजो तुम्हारीवृत्तिका देनेवाला यह राजा होवेगा ८० तिसके अनन्तर हे मुनिजनो सम्पूर्णप्रजा पृथुसे प्राप्तहोकर कहतीभई कि हे राजन् आप हमारी वृत्तिदो ऐसे प्रजाके वचन को सुन ८१ और महर्षियोंके वचनसे प्रजाके हित करने

की इच्छाकरके प्रार्थना किया राजा पृथु धनुष और
बाणलेकर पृथ्वीको मर्द्दन करनेलगा ८२ तब पृथुके
भयसे व्याकुलहुई पृथ्वी गमनकर भागतीभई राजा
पृथुभी धनुषलेकर इसके पीछे दौड़ते भये ८३ यह
पृथुके भयसे ब्रह्मलोक आदिलोकोंको दौड़ती भई
परन्तुआगे धनुषलिये पृथुको देखतीभई ८४ पश्चात्
जब यह अपनी शरणकहीं नहींदेखतीभई तब त्रिलो-
कपूज्या यह पृथ्वी अंजली बांधकर प्रकाशित तीक्ष्ण
बाणों करके दीप्त तेजवाले और सावधान महा योग
वाले महात्मा देवताओं से अजीत ८५ ऐसे पृथुको-
ही प्राप्तहोकर वचन कहतीभई ८६ कि हे राजन् स्त्री
का बधयह अधर्म आपकरने के योग्य नहीं हो और
हे राजन् मेरे बिना पृथ्वी को कैसे धारण करोगे ८७
क्योंकि मेरेही बिषे ये लोक स्थित हैं और यह जगत्
भी मैंने धारण किया है सो हे राजन् जब मेरा नाश
होजायगा तब प्रजाकाभी नाश होजायगा इसमें संदेह
नहीं ८८ हे राजन् जो आपप्रजाके कल्याणकी इच्छा
करते हो तो मुझको मारनेके योग्य नहीं हो और हे
राजन् मेरे वचन सुनो ८९ उपायसे प्रारंभ कियेसंपू-
र्ण कार्यसिद्ध होतेहैं सो हेराजन् उपायको देख जिससे
पृथ्वी को धारण करै ९० और मुझको मारकेभी हे
राजन् प्रजाधारणकरने में समर्थ न होवेगा और हे
महाराज कोपको त्याग मैं तुझको अनुभूत हूंगी ९१
और हे राजन् पशु आदि योनियोंमें भी प्राप्त हुई स्त्री

मारनी योग्यनहीं इसवास्ते धर्म्म त्यागकरने के योग्य नहीं हो ९२ हे मुनिजनो उदारचित्त राजा पृथु ऐसे बहुत प्रकार के पृथ्वी के वचन सुन और धर्म्मात्मा राजा पृथु क्रोधको रोक पृथ्वीके प्रति यह वचन कहताभया ९३ कि हे भद्रे जो पुरुष एक अपने लिये अथवा दूसरे के लिये बहुत अथवा एक प्राणी को मारता है तिसको पाप लगता है ९४ और जिस एकके मारनेमें बहुत सुखीहोवें तिसके मारने में पातकनहीं और उपपातक भी नहीं ९५ और जहां एक खलके मारने से बहुतों को आनन्दहोवे सो बधपुण्य का देनेवाला होताहै ९६ इसवास्ते जगत् का हित करनेवाला मेरावचन नहीं करेगी तो प्रजाके निमित्त तुझको मारूंगा ९७ और हे पृथ्वी मेरी शिक्षाको नहींमानेगी तो अब तुझको बाणसे मारके प्रजाधारण करनेवाला अपने आत्माको विख्यातकरूंगा ९८ इसवास्ते धर्म जाननेवालों में श्रेष्ठ जो तूहै सो मेरी शिक्षा मानके इस प्रजाको जिवा क्योंकि जिससे प्रजा धारण करनेमें तू समर्थहै ९९ और तेरेमें मैं पुत्रीभाव करूंगा और पश्चात् घोर दर्शन तेरे मारनेवास्ते जो यहबाणहै तिसको त्यागदूंगा १०० हे मुनिजनो ऐसे पृथुराजाके वचन सुन पृथ्वीने कहा हे शूरवीर यह संपूर्ण मैं धारण करूंगी इसमें संदेहनहीं परंतु संपूर्ण कार्य उपायसे किये सिद्ध होतेहैं १०१ हे राजन् ऐसे उपायको देख जिससे प्रजाओंको धारण करे मेराऐसा

बछड़ा देख तिससे मैं प्रसन्नहुई दुहीजाऊं १०२ और हे धर्मजाननेवालों में श्रेष्ठ सबजगह मुझको एकसार करजिससे झराहुआ मेरादूध संपूर्णको भिगोदेवे १०३ लोमहर्षणजीने कहा हे मुनिजनो तब यहराजा धनुष करके सैकड़ों हजारों पर्वतोंको उखाड़ताभया १०४ और पृथ्वीको बराबर करता भया और मन्वंतर व्यतीतहोते यह विषमहोती भई १०५ क्योंकि स्वभाव सेही इसके सम विषमहै और पहले चाक्षुष मन्वंतर में समहोती भई १०६ और हे मुनिजनो पहले सर्गमें पृथ्वीके विषमहोनेसे पुर और ग्रामोंका विभागभीनहीं होताभया १०७ औरखेती, गोरक्षा, वणिकपथ अर्थात् व्यवहार, सत्य, असत्य, लोभ, मत्सरता १०८ ये भी संपूर्ण वस्तु पृथुसेही आदि लेकर होते भये १०९ और जहां जहां पृथ्वी बराबर होतीभई वहां वहां प्रजाको बसाताभया ११० और बड़े कष्टसे प्रजाओंका आहार मूल फलहोता भया ऐसाहमने सुना है १११ पश्चात् यह प्रतापवान् पृथुस्वायंभुव मनुको बछड़ाबना कर अपने हाथसे पृथ्वीको दुहताभया ११२ तिससेये संपूर्ण खेती उत्पन्न होतीभई और तिसही अन्नसे अब भी संपूर्णमनुष्य जीतेहैं ११३ पश्चात् हे मुनिजनोंयह ऋषियोंकी दुहीहै तबचन्द्रमा बछड़ाकिया और अंगिरा केपुत्र बृहस्पतिजी दुहनेवालेहुये ११४ और देवपात्र बनाया और नित्य ब्रह्मरूपी दूधको दुहतेभये ११५ पश्चात् इन्द्र आदि देवता दुहतेभये तिन्होंने सुवर्णका

पात्र बनाया ११६ और इन्द्रबछड़ा और सविताप्रभु दुहनेवाला किया और ऊर्जेअर्थात् बलकोकरनेवाला अमृत दुहतेभये ११७ पश्चात् यह पितरोंकी दुही है तिन्होंनेचांदीका पात्रकिया ११८ औरप्रतापवान् वैवस्वतयम बछड़ाकिया और स्वधारूपीदूधको दुहतेभये औरलोकोंका प्रेरणेवाला काल अंतक दुहनेवालाहोता भया११९पश्चात् नाग दुहतेभये तिन्होंने तक्षक बछड़ाकिया और तूंबी पात्रकिया और बिषदूध दुहतेभये १२०और हे मुनिजनो नागोंमें और सर्पों में श्रेष्ठ प्रतापवान् ऐसे ऐरावत और धृतराष्ट्र दुहनेवालेहोतेभये १२१ तिस बिषसेही महाकाय और तीव्र बिषवाले ऐसे नाग और सर्पजीवते हैं और इन्होंके तिसवीर्यकाही पराक्रम है और तिसीके आश्रय हैं १२२ पश्चात् हे मुनिजनो यह असुरोंकी दुहीहै तिन्होंने लोहेका पात्र किया १२३ और प्रह्लादजी के पुत्र बिरोचनको बछड़ा कियाऔर शत्रुओंके नाशकरनेवाली मायाको दुहतेभये और दैत्योंमें श्रेष्ठ द्विमूर्द्धा और मधु ये बलवान् दुहने वाले होतेभये १२४ हेमुनिजनो तिसीमायाकरके अबभी मायावी असुरजीते हैं और तिसमायासेही बलि बुद्धिमान् है १२५ पश्चात् यक्षोंने पृथ्वी दुहीहै तिन्हों ने कच्चा पात्रकिया १२६ और कुबेर बछड़ाकिया और तीन शिरोंवाला तपस्वी तेजस्वी ऐसामाणिनका पिता रजतनाम दुहनेवाला होताभया१२७और हेमुनिजनो अन्तर्द्धान अर्थात् छिपना विद्याको दुहते भये १२८

पश्चात् राक्षस और पिशाचोंनेयहदुहीहै तिन्होंने मुरदे का कपाल पात्रकिया १२९ और रजतनाम दुहनेवाला होताभया और सुमालीबछड़ा होताभया और रुधिर दूधदुहतेभये १३० पश्चात्हेमुनिजनो गंधर्व औरअप्स-रादुहतीभई तिन्होंने कमलपात्रकिया और चित्ररथ ब-छड़ाकिया और सुन्दरगंधको दुहतेभये १३१ और तहां सूर्य्यके समान महात्मा अतिबलवान् गंधर्वों के राजा ऐसे सुरुचि दुहनेवाले होतेभये १३२ पश्चात् इसको पर्व्वत दुहते भये १३३ तिन्होंने हिमवान् बछड़ा कि-या और महागिरि सुमेरु दुहनेवाला और पर्व्वतही पात्र किया १३४ और अनेक प्रकारके औषध और रत्नोंको दुहते भये तिसी करके हे मुनिजनो ये पर्वत स्थित हैं पश्चात् इसको वनस्पती दुहतीभई १३५ तिन्होंने पत्तोंका पात्रकिया पिलखन बछड़ाकिया और भूलाहुआशाल दुहनेवाला किया और कटाहुआजला हुआ का फिर जामनाको दुहतेभये १३६ हे मुनिजनो सो यह पृथ्वी धात्री और विधात्री चराचर जीवोंकी योनिजीवोंका स्थानरूपी संपूर्ण कामोंको दुहनेवाली और सम्पूर्ण खेतियों को उत्पन्न करनेवाली १३७ समुद्रपर्यंत ऐसी पृथ्वी होती भई और मेदिनी ऐसी विख्यातभई और मधुकैटभके मेदसे व्याप्तहोने से १३८ इसको ब्रह्मवादी मेदिनी कहते हैं और हे मुनि-जनो राजापृथुके योगसे यह पुत्रीभावको प्राप्तहोतीभ-ई १३९ तबसेही इसको देवी और पृथ्वी कहतेहैं

औरहे मुनिजनो पृथुसे शोधीहुई और बांटी हुई १४०
इसपृथ्वीमें बहुतसी खेतियां और खानि होती भई
और बढ़ती भई और पुर शहर ग्राम बहुतसे बसते
भये हेमुनिजनो ऐसेप्रभाववाला और राजाओंमें श्रेष्ठ
पृथुराजा होताभया १४१ हे मुनिजनो जीव समूहों
से यहराजा पृथुही नमस्कारके योग्य है और पूजने
के योग्य है और वेदवेदांगके जाननेवाले महाभाग
ब्राह्मणोंसे भी यहीपूज्य है १४२ क्योंकि जिससेसना-
तन ब्रह्मयोनि है और राजापनाकी इच्छाकरते हुये
महाभाग १४३ राजाओंसेभी यह महा प्रतापवान्
आदिराजावेनका पुत्र ऐसा पृथुही पूजने के योग्य है
और युद्धमें जीतनेकी बांछावाले योद्धाओंसे भी यह
पृथुहीपूज्य है १४४ क्योंकि योद्धाओं में आदि योद्धा
होनेसे जो योद्धापृथुके गुणोंका कीर्त्तनकरके युद्ध में
जाता है १४५ सो घोर युद्धको तिरके उत्तम कीर्त्तिको
प्राप्तहोता है और हे मुनिजनो दूकानकी वृत्तियां वाले
द्रव्य युक्त वैश्यों को भीयह वृत्तिका देनेवाला १४६
और बड़े यशवाला पृथुही पूज्यहै और हे मुनिजनो
त्रिवर्णकी शुश्रूषाकरनेवालेशूद्रोंसे भी उत्तम कीर्त्तिके
वास्ते यही सेव्य है १४७ हे मुनिजनो बछड़े और
दुहनेवाले और दूध और पात्रये संपूर्णमैंने आपसबों
के प्रतिकहे हैं और क्या कहूं १४८ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांपृथूपाख्यानं
नामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

ऋषियों ने कहा, हे महामते सब मन्वन्तर और पूर्वसृष्टि इनको विस्तार से वर्णनकरो १ और हे लोम हर्षणजी जितनेमनु और जितने काल और मन्वन्तर हुये हैं तिनको तत्त्वसे सुननेकी इच्छाकरताहूं २ लोम-हर्षणजी बोले हे मुनिजनो विस्तारसे मन्वन्तरों का वर्णन सौ वर्ष में भी करने को मैं समर्थ नहीं परन्तु संक्षेपसे कहताहूं श्रवण करो ३ स्वायंभुव स्वारोचिष औत्तामि तामस रैवत चाक्षुष ४ वैवस्वत यह मनुअब वर्त्तताहै सावर्णि सौत्य रौच्य ५ मेरु सावर्णि ऐसेचार मनुकहे हैं हे मुनिजनो ये व्यतीत हुये और वर्त्तमान और आनेवाले संपूर्ण मनु आपसबों से कहेहैं ६ अब इनके ऋषि और पुत्र और देव समूह इन्होंको वर्णन करताहूं श्रवण करो ७ मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, वशिष्ठ, ये सातब्रह्माके पुत्र ८ उत्तर दिशामें सप्तर्षि और पामानाम देवता ये संपूर्ण स्वायं-भुव मनुमें होते भये ९ और आग्नीध्र, अग्निबाहु, मेधा, मेधातिथि, वसु, ज्योतिष्मान्, द्युतिमान् , हव्य, सवन, पुत्र १० ये स्वायम्भुव मनु के बड़े पराक्रमी दश पुत्र होतेभये यह तुम्हारेप्रति प्रथम मन्वन्तर कहाहै ११ और वशिष्ठका पुत्र और्व,स्तंब,काश्यप,प्राण, बृहस्पति, दक्ष, निश्च्यवन १२ ये महाव्रतमहर्षि और तुषितनाम देवता स्वारोचिष मन्वन्तरमें होतेभये १३

१३ और हविघ्न, सुकृति, ज्योति, आप, मूर्त्ति, अयस्मय, प्रथित, नभस्य, नभ, ऊर्ज १४ ये महावीर्य्य पराक्रम वाले और महात्मा स्वारोचिषमनुके पुत्र कहे हैं १५ यह दूसरा मन्वन्तर कहा है अब तीसरा मन्वन्तर कहा जाता है तिसको सुनो और वशिष्ठजीके वाशिष्ठनाम से विख्यात सात पुत्र हुये और हिरण्य गर्भके ऊर्जनामसे विख्यात १६ ये औत्तमिके मनोरम पुत्र हैं १७ ईष, ऊर्ज, तनूर्ज, मधु, माधव, शुचि, शुक्र, सह, नभस्य, नभ १८ भानव ये दशपुत्रहुयेहैं अब चौथा मन्वन्तर कहते हैं सुनो १९ काव्य, पृथु, अग्नि, जन्यु, धामा, कपीवान्, ये सम्पूर्ण ऋषि २० और पुराणोंमें पुत्र पौत्रभी कहे हैं और सत्य देवगण ये तामस मन्वन्तरमें होतेभये २१ अब इसके पुत्र कहते हैं द्युति, तपस्य, सुतपा, तपोमूल, तपोशन २२ तपोरति, अकल्माष, धन्वी, तन्वी, परन्तप ये महाबलवान् तामसके दशपुत्र होते भये २३ पवन देवताने ये कहे हैं अब पांचवां मन्वन्तर कहते हैं देवबाहु, यदुध्र, वेदशिरा २४ हिरण्यरोमा, पर्जन्य, सोमसे उत्पन्नहुआ ऊर्ध्वबाहु सत्यवादी आत्रेय ये सप्तर्षि २५ और अभूत रजस्वभाव, पारिप्लव, रैभ्य देवता पांचवें मन्वन्तर में होतेभये २६ अब रैवतके पुत्र कहते हैं धृतिमान्, अव्यय, युक्त, तत्त्वदर्शी, निरुत्सक २७ अरण्य, प्रकाश, निर्मोह, सत्यवान्, कृती ये रैवतके पुत्र हैं यह पांचवां मन्वन्तर कहाहै २८ अब छठां मन्वन्तरकहते

हैं भृगु, नभ, विवस्वान्, सुधामा, विरजा २९ अतिनामा, सहिष्णु ये सप्तर्षि चाक्षुष मन्वंतरमें होतेभये ३० और आप्य, प्रभूत, ऋभु, पृथु लेखा इन नामोंवाले पांच देवताओं के समूह होतेभये ३१ और अंगिरा ऋषिके पुत्र महात्मा महा तेजवाले नड्वला के पुत्र ऊरूसे आदि लेकर दश होतेभये ३२ यहछठां मन्वंतर कहाहै और अत्रि, वशिष्ठ, कश्यप ३३ गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, ऋचीकके पुत्र ३४ जमदग्नि ये सप्तर्षि और साध्यरुद्र, विश्वदेवा, वसु, मरुत ३५ आदित्य, अश्विनीकुमार ये देवता वैवस्वतमें अब वर्त्तते हैं ३६ और इक्ष्वाकुसे आदि लेकर दशपुत्र ये संपूर्ण वैवस्वत मनुमें होतेभये ३७ इनसात महर्षियों के पुत्र और पौत्र संपूर्ण मन्वंतरोंमें और संपूर्ण दिशाओं में ३८ लोक व्यवस्थाके वास्ते और लोककी रक्षाके वास्ते स्थितहोते हैं और जब मन्वंतर व्यतीत होजाताहै ३९ तब ये कार्य करके स्वर्गमें चलेजाते हैं और तिन्हों से अन्य तपकरके युक्त इन्हों के स्थानपर आजाते हैं ४० ऐसे व्यतीत हुये और वर्त्तमान सात मनुक्रमसे तुम्हारे आगेकहेहैं ४१ अब आनेवाले छःमनु कहते हैं तिन्होंमें पांच सावर्णि संज्ञक मनु जानो ४२ और एक वैवस्वत तिन्होंमें चार ब्रह्मा के पुत्र सावर्णि ताको प्राप्तहुयेहैं ४३ ये चारों दक्षके दौहित्र और प्रियाके पुत्रहोते भयेये बड़े तेजवाले ऋषि मेरु पर्वतमें तपकरते भये ४४ और रुचि प्रजापतिके

पुत्र रौच्यमनु होतेभये और भूतिनाम स्त्रीके बिषेरु-
चिका पुत्र भौत्यमनु होताभया ४५ अब सावर्णि मनु
को कहतेहैं ४६ परशुराम, व्यास, अत्रिका पुत्र द्रोणा-
चार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कौशिक, गालव, ऊर्व,
कश्यप येसातों ब्रह्माकेसदृश और धन्य४७।४८ और
जातितप मंत्र व्याकरण इन्होंसे ब्रह्मलोकमें प्रतिष्ठित
४९ भूतभव्य भव इन्होंकोजानतपसेप्रसिद्ध और चिं-
तक ५० और इन्होंको ऐश्वर्य्यके द्वाराजानके गृहस्थी
प्रणाम करतेहैं ५१ और सात गुणों करके युक्त और
दीर्घ आयुवाले और दीर्घनेत्रोंवाले ५२ बुद्धि करके
प्रत्यक्ष धर्मोंवाले और कृतआदि युगोंमें ५३ गोत्रों
को प्रावृत करनेवाले और वर्णाश्रमको प्रवर्त्तनेवाले
और सत्यधर्ममें परायण ५४ और दूसरोंको वर देने-
वाले ऐसे भविष्य सप्तर्षि कहेहैं ५५ ऐसे सप्तर्षियोंका
आख्यानकहा अब सावर्णि मनुके भविष्य पुत्रोंको सु-
नो५६ वरीयान्,अंबरीष,संमत,धृतिमान्, वसु,चरिष्णु
आर्य्य,धृष्णु,वाज,सुमति ५७ हे राजन् ये सावर्णिमनु
के पुत्रकहेहैं अब मेरु सावर्णिकोकहतेहैं सुनो ५८ मे-
धातिथि, पौलस्त्य, बसु, काश्यप, भार्गव, अंगिरा ५९
वाशिष्ठ, पौलह ये सप्तर्षिनाम रोहित मन्वंतरमें हुयेहैं
६० और दक्षकेपुत्र रोहितके देवताओंके तीनगण ६१
और धृष्टकेतु, पंचहोत्र, निराकृती, पृथुश्रवा, भूरिधामा,
अर्वाक, अष्टहत, गय ६२ येप्रथम सावर्णिके तेजस्वी
नवपुत्रहोतेभये अब दशवांमनुकहते हैं ६३ हविष्मान्

पौलह, सुकृति, भार्गव, आयुमूर्त्ति, आत्रेय, वाशिष्ठ
६४ और पौलस्त्य, प्रामति, नभोग, काश्यप, अंगिरा,
नभस, सत्य ये परमार्षि होतेभये ६५ और ऋषियोंके
मंत्र देवताओंके गण होतेभये और उत्तम कुनिषंज
६६ शतानीक, निरामित्र, वृषसेन, जयद्रथ, भूरिद्युम्न,
सुवर्चा ये दशपुत्र होतेभये ६७ और ग्यारहवें मन्वं-
तरमें जोसप्तर्षि कहेहैं तिन्होंकोसुन ६८ काश्यप, भार्ग
और आत्रेय, अंगिरा, पौलस्त्य, निश्चर ६९ पुलह
ये सप्तर्षि और ब्रह्माके पुत्र तीन देवताओं के समूह
होतेभये ७० और संवर्त्तग, सुशर्मा, देवानीक, पुरूवह,
क्षेमधन्वा, दृढायुध, आदर्श, पंडक, मनु ये नवपुत्र होते
भये ७१ और चतुर्थ स्वरवर्णमें द्युति, सुतपा, अंगिरा,
काश्यप, पौलस्त्य, पौलह, पौरवि ७२ भार्ग ये सप्तर्षि
होतेभये और ब्रह्माकेपुत्र पांच देवताओंके समूहहोते
भये ७३ और देव, वायु, अहर, देवश्रेष्ठ, विदूरथ, मि-
त्रवान्, मित्रदेव, मित्रसेन, मित्रकृत ७४ मित्रवाहु,
सुवर्चा ये बारहपुत्र होतेभये और तेरहवें मनुमें ७५
अंगिरा, पौलस्त्य, पौलह, भार्गव ७६ निष्प्रकंप, कश्यप
वाशिष्ठ, ये सप्तर्षि ७७ तीन देवताओंके गण होतेभये
और ये तेरह रुचिके पुत्र होतेभये ७८ चित्रसेन, वि-
श्वामित्र, नय, धर्मभृत, धृत, सुनेत्र, क्षत्रवृद्धि, सुतपा,
निर्भय, दृढ ७९ और चौदहवें भौत्यमनुमें आग्नीध्र,
काश्यप, पौलस्त्य, भार्गव, शुचिर, अंगिरा, वाशिष्ठ,
शुक्र ये सप्तर्षि होतेभये ८० ऐसे ये मन्वंतर तुम सबों

से कहे हैं ८१ इन्होंको पुरुष प्रातःकाल कीर्त्तनकरे तो सुख आयुयश इन्होंको प्राप्तहोताहै ८२ और ऋषियों के स्मरणसेभी ऐसाही फल होता है और भौत्यमनु में पांच देवताओं के समूह होतेभये ८३ और तरंग, भीरु, वप्र, तरस्मानुग्र, अभिमानी, प्रवीण, जिष्णु, संक्रंदन ८४ तेजस्वी, सबल ये भौत्यमनुके पुत्र होते भये ८५ इन नामों से मनु आप सबोंके आगे वर्णन करे हैं ८६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांमन्वंतरकीर्त्तनं नामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो दक्षकी पुत्रीविषे कश्यपजीसे बिवस्वान् होतेभये और तिस बिवस्वान्के त्वष्टाकीपुत्री १ रेणुनाम भार्या होतीभई पश्चात् सुंदर तप और तेजसे संयुक्त और रूप यौबनवाली २ भर्त्ताके रूपसे नहीं प्रसन्न होती हुई और संज्ञानाम से विख्यात ऐसी भार्य्याहुई है ३ और उस आदित्यमंडलके तेजकारूप गात्रोंमें परिदग्धहुआ अतिक्रांतकी तरहनहीं होताभया ४ तब स्नेहसे यह कहतीभई यह अंडस्थ मरानहीं इसवास्ते मार्तंडनाम होताभया ५ और बिवस्वान् अधिक तेजस्वीहोने से तीनोंलोकोंको तापकरताभया६ और यह आदित्य तिससंज्ञामें एकक-

न्या और दोपुत्र उत्पन्न करतेभये७तिन्होंमें विवस्वान् का पुत्र श्राद्धदेव होताभया और यमुना और यम ये उत्पन्न होतेभये ८ पश्चात् विवस्वान्का श्यामवर्ण देखकर यह संज्ञा तिसकोनहीं सहतीहुई अपनी छाया सवर्णा को रचती भई ९ पश्चात् यह मायावतीछाया अंजलिबांधके संज्ञाकेआगे स्थितहोकर १० कहने लगी कि हे भामिनि मुझकोआज्ञादो मैं वैसेहीकरूंगी संज्ञा कहनेलगी कि हे छाये तेरा कल्याण हो मैं अपने पिताके भवनमें जातीहूं और तू विकारसे रहित होके मेरे भवनमें बस ११ ये दोनों मेरेपुत्र और यह कन्या तुझे रक्षाकरनी योग्य है और भगवान् सूर्यके आगे यह वृत्तांत कहना नहीं १२ यहसुन छाया कहने लगी हे देवि तू सुखपूर्वक जा जबतक मेरेकेशों को ग्रहण नहींकरेगा और शाप नहींदेगा तबतक मैं नहीं कहूंगी १३ तब लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो ऐसे सुन संज्ञा कहनेलगी कि अच्छा ठीकहै पश्चात् यह तपस्विनी लज्जितसीहोकर त्वष्टा पिताकेस्थानमेंजाती भई १४ तब यह पिताके समीपगई तब पिताने झड़क दिया और कहा तू अपने भर्त्ताके पासजा १५ तब यह घोड़ीका रूपधारणकर और उत्तरमें कुरुदेशोंमें जाके वहां तृणचरती भई १६ और यहां आदित्य इसको संज्ञाही जानताहुआ इसमें आत्माके समान पुत्र पैदा करताभया १७ और पूर्वजमनुके समान उत्पन्नभया सोही सावर्णिमनुहोताभया १८ और दूसरापुत्र शनै-

श्वर होताभया सो हेमुनिजनो यह संज्ञाके पुत्रोंसे १९ अपने पुत्रों में अधिक स्नेह करती भई तिसको मनु सहताभया और यम नहीं सहता भया २० पश्चात् यह कोप होकर भाविके बलसे और बालभावसे पैर करके तिसको ताड़न करताभया २१ और यह छाया दुःखित होकर अरे तेरा चरण टूटजावे ऐसे शापदेती भई २२ पश्चात् यह यम छाया के वाक्यों से कांपता हुआ और शापसे उद्विग्नहुआ पिताकेआगे अंजलि बांध सम्पूर्ण कहताभया २३ कि यह मेराशापदूरकरो और माताको सम्पूर्ण पुत्रों में बराबर बर्तना उचित है २४ सो यह हमको छोड़कर और छोटोंपर मोह करतीहै सो क्रोधकर बालभाव से और मोह से इसके लात मारने को मैं तैयारहुआ परन्तु मारा नहीं २५ यह मेरा अपराध क्षमा करो क्योंकि जिससे पूज- नीया का मैंने तिरस्कार किया इस वास्ते यह चरण निःसन्देह पड़ेगा २६ सो हे लोकेश माता ने मुझको शापदिया है सो आप यह दयाकरो कि कृपा से यह चरण नहीं पड़े २७ इतना सुन बिवस्वान् कहता भया कि यह तो निश्चय ऐसेही होगा क्योंकि जिस से धर्म्मज्ञ और सत्यवादी ऐसे तेरे में क्रोध उत्पन्न होता भया २८ क्योंकि और तेरी माताके वचन को अन्यथा करने को भी मैं समर्थ नहीं इस वास्ते कृमि तेरे पैरसे मांस लेलेकर पृथ्वीमें प्राप्तहोवेंगे २९ और तिसके पीछे तू सुखको प्राप्त होगा ऐसे तेरी माताका

वचन सत्य होवेगा ३० और शाप के परिहार करके तू भी रक्षित होवेगा ऐसे यम से कह पश्चात् सूर्य्य भगवान् छाया से कहते भये कि हे प्रिये तुल्यपुत्रों में तू न्यून अधिक स्नेह क्यों करती है ३१ ऐसे छाया सुन तिस वार्त्ताको गुप्त करती कुछ उत्तर नहीं देती भई ३२ पश्चात् बिवस्वान् आत्माको टेककर योग समाधिसे सत्य देखते भये पश्चात् तिसका नाशकरने को तैयार हुये ३३ और केश पकड़ लिये तब सम्पूर्ण वृत्तांत छाया कहती भई ३४ पश्चात् बिवस्वान् ऐसे सुन क्रोध युक्त होकर दग्ध करने की इच्छा करके त्वष्टा के पास जाते भये यह त्वष्टा इसका विधिसे पूजनकर ३५ क्रोधको शांतकर ऐसा वचन कहताभया त्वष्टा कहने लगा कि आपका अत्यंत तेजसे यहरूप शोभा को प्राप्त नहीं होता सो आपके तेजको नहीं सहती हुई संज्ञा घोड़ी बनकर हरियाली में चरती है ३६ और शुभचारिणी नित्य तप करनेवाली और घोड़ी का रूप धारण करे ३७ पत्तों का भोजन करनेवाली कृश और दीन जटा को धारण किये ब्रह्मचारिणी और हाथीकी सूंड़से व्याकुल करी पद्मिनी के समान अति व्याकुल ३८ और श्लाघाके योग्य और योग बलसे संयुक्त ऐसी स्त्री को तू आज देखेगा और हे देवेश सूर्य्य जो मेरे मतको आप योग्य जानो तो ३९ आपके भी रूप को मैं निवृत्त करदेऊं तब तिरछे और ऊंचेरूप से संयुक्त सूर्य्य हुआ ४० त्वष्टा प्रजापति के वचन को

अच्छीतरह मानताभया ४१ और रूपकी सिद्धि के वास्ते त्वष्टा को आज्ञा देताभया तब समीपमें त्वष्टा प्राप्तहो ४२ भ्रामण यन्त्रके द्वारा सूर्य्य के रूपको अर्थात् तेजको सूक्ष्मरूप सुन्दर करताभया पीछे तेजकी अल्पतासे तिसका निर्भासित रूपहुआ ४३ तब कांत सेभी अधिक कांत ऐसा रूप पहलेसे भी अधिक शोभित होताभया ४४ और तब से लगायत सूर्य्य का लोहितरूप मुख हुआ है और तिस रूप को धारण करनेवाला सूर्य्य ४५ और सूर्य्य के मुखके प्रथम च्युत रूप तेजसे बारह आदित्य उपजते भये इसवास्ते सब आदित्यों की उत्पत्ति सूर्य्यके मुखसे मानी गई है ४६ और धाता १ अर्यमा २ मित्र ३ वरुण ४ अंश ५ भग ६ । ४७ इन्द्र ७ बिवस्वान् ८ पूषा ९ पर्जन्य १० त्वष्टा ११ विष्णु १२ । ४८ ये उपजनेवालों के नामहैं इन आदित्यों को अपने देहसे उपजे हुये देख सूर्य्य अति आनन्दको प्राप्तहोतेभये और गंध पुष्प आभूषण रत्नोंसे जटित मुकुट ४९ इन्हों करके सबों को पूजते भये तब त्वष्टा कहने लगा हे देव उत्तर कुरुके देशमें ५० घोड़ीके रूपको प्राप्त हुई और हरित दूब से संयुक्त देशमें बिचरती ऐसी अपनीभार्य्याके समीप गमन करो ५१ तब अपनी भार्य्या के रूपकी लीला कर अर्थात् आपभी अश्वके रूपको धारणकर और योगको प्राप्तहो ५२ सबोंके तेज और नियमोंसे अति तेज और नियमवाली अपनी भार्य्याको देखतेभये ५३

तब अश्वही के रूप में सूर्य्य मैथुन के लिये चेष्टा करते हुये उस अपनी भार्य्याके मुखमें समागम करते भये ५४ तब वह घोड़ी परपुरुषकी शंकाकर सूर्य्यके वीर्य्यको अपनी नासिकाकेद्वारा बाहरकाढ़नेलगी ५५ तबवैद्योंमेंउत्तम और दिव्यरूपवाले ऐसेअश्विनीकुमार उपजतेभये पीछे नासत्य और दस्र इसनामसे बिख्यात हुये ५६ ऐसे आठवें प्रजापति सूर्य्य के ये दोनोंपुत्र हुये हैं पीछे दिव्यरूपसे सूर्य्य अपनी भार्य्याको देखते भये ५७ हे मुनिजनो तब भार्य्या आनंदित होनेलगी पीछे इसकर्मसे अतिपीड़ित मनवाला धर्म्मराज ५८ इस प्रजाको धर्मसे पालनेलगा अर्थात् धर्मही के आश्रय हुआ सो इसधर्मके प्रतापसे अतिकीर्त्तिवाला धर्मराज ५९ पितरोंका राजापन और लोकपालता को प्राप्तहुआ और सूर्य्य का पुत्र सावर्णिमनु ६० भावीरूप सावर्णिके अंतर में प्रकाशित होगा जोअब भी मेरुपर्व्वतके पृष्ठभागमें घोरतपकररहाहै ६१ और तिसके तेजसे त्वष्टाने युद्धमें नहीं प्रतिहत होनेवाला ऐसा बिष्णुका चक्र दैत्योंके नाशवास्ते प्रकाशित किया है ६२ और सावर्णिमनु और धर्मराज इनदोनोंसेछोटी और अति यशवाली ६३ और नदियों में श्रेष्ठ और लोकको सुख देनेवाली और यमुना नामसे बिख्यात नदी होती भई ६४ और इस सावर्णिमनुका दूसरा भ्राता शनैश्चर सब लोकके पूजनेयोग्य ग्रहभाव को प्राप्तहुआ ६५ जो देवताओं के इस जन्मको श्रवण

करै और धारणकरै वह मनुष्य दुःखोंसे रहितहोके अति यशको प्राप्तहोताहै ६६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांआदित्योत्पत्ति कथनंनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो—वैवस्वतमनु के इक्ष्वाकु १ नाभाग २ धृष्णु ३ शर्य्याति ४ । १ नरिष्य ५ प्रांशु ६ नाभागारिष्ट ७ करुष ८ पृषध्र ९ ऐसे नामोंवाले नव पुत्र उपजतेभये २ परंतु इन पुत्रों की उत्पत्ति से पहले हे मुनिजनो पुत्रकी कामनावाला मनु मित्राबरुण की यज्ञ करताभया ३ तब मनु मित्रा बरुणके अंश से अग्निमें बहुतसी आहुतीदेताभया ४ तब ऐसे आहुती देनेसे देवता गन्धर्व्व मनुष्य तपोधनवाले मुनि ये सब तृप्त होते भये ५ तब दिव्य वस्त्रोंको धारणकरे और दिव्य आभूषणों से आभूषित और दिव्यरूपवाली ऐसी इलानामसे विख्यात कन्या उपजतीभई ६ ऐसे सुना है तब दण्डको धारण करने वाला मनु इला से कहनेलगा पुत्रि तू मेरे संग स्थान पै चल ७ तब पुत्रकी कामनावाले मनुजी से धर्मयुक्त बचन इला कहनेलगी ८ हे कहनेवालों में श्रेष्ठ मैं मित्राबरुण के अंशमें जन्मीहूं इसवास्ते तिन्हों के सकाश जाऊंगी ९ क्योंकि हत किया धर्म मुझ को

मत मारो ऐसे मनुजीसे कह मित्रावरुणके समीप में जाके इला अंजली बांध कहनेलगी १० हे देवताओ तुम दोनोंके अंशमें से मैं उपजी हूं इसवास्ते मुझ को तुम्हारा क्या करनाचाहिये और मनुजीने ऐसे कहा कि तू मेरी पुत्री है ११ पीछे ऐसे कहनेवाली और धर्म्म में परायण ऐसी इलाकेलिये मित्र और वरुण जैसे कहते भये तैसे सुन १२ हे सुन्दर कटिवाली वरवर्णि- नी इस तेरे धर्म और सत्य और नम्रता और शांति और सतसे हम दोनों प्रसन्न हुये १३ और हे महा- भागे तू हमारी पुत्री है ऐसे संसार में विख्यात होवेगी और बंशको उत्पन्न करनेवाला पुत्र तूही मनुजी के होगी १४ अर्थात् हे शोभने जगत् को प्रिय और मनु के बंश को बढ़ाने वाला और तीन लोक में सुद्युम्न इस नाम से विख्यात ऐसा पुत्र होवेग १५ पीछे ऐसे सुन पिता के समीप में गमन करती हुई इसी अंतरमें चंद्रमाकेपुत्र बुधने मैथुनके लिये याचना करी १६ तब चन्द्रमाके पुत्र बुधसे ।तिस इलामें पुरू- रवा जन्म लेताभया ऐसे पुत्रको उत्पन्नकर पीछे इला सुद्युम्न होता भया १७ और हे मुनिजनो सुद्युम्न के परमधार्मिक और उत्कल, गय, विनताश्व इन नामों से विख्यात तीनपुत्र होतेभये १८ और उत्कल के उ- त्कला और विनताश्व के दिक्पाश्चिमा और गय के गया ऐसी श्रेष्ठ पुरी होतीभई १९ और हे अरिंदम जब मनुजी सूर्य्य में प्रवेश करते भये तब दशमनुके

पुत्र इस पृथ्वीका बिभाग कर ग्रहण करतेभये मध्य देशका राजा इक्ष्वाकु हुआ २० और तिस समय में कन्याभाव से इस गुणको सुद्युम्न नहीं प्राप्तहुआ २१ और वशिष्ठजी के वचनसे महात्मा पुरुषोंके समान प्रतिष्ठा को सुद्युम्न प्राप्तहोके पीछे प्रयागके समीप में राज्यको प्राप्तहुआ २२ और हे मुनिजनो उसपुरूरवा के लिये राज्य देताभया २३ और उसी राज्यस्थान को धृष्टक अंबरीष दंड ऐसेनामोंवाले तीन पुत्र हुये २४ तिन्हों में महात्मा दंडकराजा तपस्वियों के योग्य उत्तम दण्डकारण्य नामसे विख्यात और लोकमें विख्यात ऐसे वनको रचताभया २५ तिसमें प्रवेश करने सेही मनुष्यपापोंसे छूटजाताहै और हे मुनिजनो पीछे पुरूरवा पुत्रको उत्पन्नकर सुद्युम्न स्वर्ग में प्राप्त होते भये २६ और नरिष्यन् के शकजातिवाले राजा पुत्र हुये और नाभागके राजाओं में उत्तम अंबरीष पुत्र हुआ २७ और धृष्णुके युद्धमें धृष्टरूप ऐसा धार्ष्टक-क्षत्र हुआ और शर्याती के आनर्त्त नामवाला २८ पुत्र और सुकन्या नाम से विख्यात जोकि च्यवन मुनिकी भार्या हुई ऐसी पुत्री हुई २९ इस भांति मिथुन उपजाहै और आनर्त्तके महाद्युतिवाला रेवतनामवाला पुत्र उपजा३० जिसका आनर्त्तदेशमें राज्यहुआ और कुशस्थली अर्थात् द्वारका राजधानी हुई ३१ और रेवतके ककुद्मीनामवाला और धार्मिक और रैवतनाम सेभी विख्यात ऐसाएक ज्येष्ठपुत्रहुआ ३२ बाकीअन्य

भी १०० पुत्रहुये तिन्होंमेंसे रैवत पुत्र १ अपनीकन्या को ग्रहणकर ब्रह्मलोक में गमन करताभया ३३ तहा एक मुहूर्त्त के समान बहुत से युगों को बीते हुये सुन जवानअवस्थामें स्थितहुआयादवोंसेआवृत ३४ और द्वारवती नामसेप्रसिद्ध और बहुतद्वारोंवाली और बहुत सुन्दर और श्रीकृष्ण हैं अग्रणी जिन्होंके ऐसे भोज वृष्णि अंधक ३५ इन कुलोंसे रक्षित ऐसी अपनीपुरी में आके प्राप्तहुआ पीछे सब यथार्त्थ तत्त्वसुन रैवत राजा अपनी रेवती पुत्रीको बलदेवजीके लिये विवाह के ३६ मेरुपर्वतके शिखरपै आपतप करनेवास्ते जाताभया और बलदेवजीभी सुखपूर्वक रेवती के संग रमणकरते भये ३७ मुनिजनोंने कहा हे सूतजी बहुत साकाल व्यतीत होगया परन्तु रेवती और रैवतराजा को वृद्धता कैसेनहीं प्राप्तहुई ३८ और मेरुको गये शर्याति राजाकी संतति इससमयमेंभी कैसे पृथिवीमें स्थितरही सोतत्त्वसे श्रवण करनेकी इच्छाकरूंहूं ३९ लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो वृद्धता क्षुधा तृषा मृत्यु ऋतु चक्र येसब ब्रह्मलोकमें नहींउपजतेहैं ४० और जबरैवत राजा ब्रह्मलोकमें चलेगये तब कुशस्थली यक्ष और राक्षसोंने ग्रहणकरी ४१ और इसराजा के १०० भ्राता राक्षसों से पीड़ित सब दिशाओं में चले गये ४२ औरहे मुनिजनो जब सबभ्राताभाजगये तब अन्य क्षत्रियभी भयभीत होके जहां तहां भाजने लगे ४३ ऐसे समूहके समूह इकट्ठे होकर शर्य्याति इसनाम

से विख्यात क्षत्रिय होतेभये ४४ और हे मुनिजनोप- वेतोंमें प्रवेश करनेलगे ४५ और नाभागारिष्टके वैश्य जातिवाले दो पुत्र ब्राह्मणताको प्राप्तहुये और करूष के युद्धमें कुशल और कारूष इसनामसेविख्यात ऐसे क्षत्रिय उत्पन्नहुये ४६ । ४७ और पृषध्रराजा गुरुकी गायकेमरजानेसे हे मुनिजनो शापसे शूद्रहोगया ऐसे नव वैवस्वत मनुजीके पुत्रोंका वर्णनकिया है ४८ और मनुजीकी छींकसे इक्ष्वाकु उपजा ४९ और इक्ष्वाकुके बहुतसी दक्षिणादेनेवाले १०० पुत्रउपजे तिन्हींमें ज्येष्ठ पुत्र विकुक्षिहुआ वह युद्धकरनेमें समर्थनहीं हुआ ५० और अयोध्यापुरीका स्वामी भी हुआ और विकुक्षिके उत्तमरूप और शकुनि नाम १० मुख्य हैं ५१ जिन्हों में ऐसे ५० पुत्र उत्तर के देश में राज्यको प्राप्तहो प्रजाकी पालना करते भये ५२ और बशातिनाम है मुख्य जिन्हों में और प्रजाकी पालना करनेवाले ऐसे ५३ विकुक्षिकेपुत्र दक्षिण दिशामें बसतेभये ५४ और एकसमयमें इक्ष्वाकु राजा पर्वत कालमें विकुक्षि से कहनेलगा हे महाबल श्राद्धकेलिये मृगको मार मांस ला ५५ तब पिताके बचन को नहीं मान और श्राद्ध का निरादरकर ५६ और शशाके मांसकोखाके शशाद पुत्र शिकार खेलनेको चलागया तब बशिष्ठजीके बचन से इक्ष्वाकु राजाने विकुक्षिका परित्यागकिया ५७ तब इक्ष्वाकुके समीपमें शशाद पुत्र बसतारहा पीछे शशाद के अति वीर्य्यवाला ककुत्स्थपुत्र उपजा ५८ एक समय

में वृषरूपहुये इन्द्रकेपीछे यही सब राक्षसोंको जीतता भया ५९ ककुत्स्थके अनेना पुत्र हुआ अनेनाके पृथु पुत्रहुआ पीछेपृथुके विष्टराश्वपुत्रहुआ विष्टराश्वकेआर्द्र पुत्रहुआ ६० आर्द्र के युवनाश्व पुत्रहुआ युवनाश्व के श्राव पुत्रहुआ श्रावके श्रावस्त पुत्रहुआ जिसने श्रावस्ती नाम पुरीरची ६१ श्रावस्तके बृहदश्व पुत्र हुआ बृहदश्वके परमधार्मिक कुबलाश्व पुत्रहुआ ६२ और इसीको धुंधु दैत्य के मारने से धुंधुमारभी कहते हैं६३ मुनिजन पूछते हैं अब धुंधुदैत्यके मारनेका आख्यान तत्त्वसे सुननेकी इच्छाकरते हैं जिसकारणसे कुबलाश्व का नाम धुंधुमारहुआ ६४ तब लोमहर्षणजी कहते हैं कुबलाश्वके उत्तम धनुर्विद्यावाले और सब विद्याओं में कुशल ६५ और बलवन्त और सुन्दर ऐसे १०० पुत्र उपजतेभये पीछे बृहदश्व पिता कुबलाश्व पुत्रको राज्य स्थानपर प्राप्तकर ६६ आप बनमें गया तब उत्तङ्क ऋषि उसराजाके गमनको निवारण करतेभये ६७ और उत्तंक मुनिने कहा आप इस लोककी रक्षा करनेयोग्यहो और हेपार्थिव निरुद्विग्नहोके तप करने को समर्थ नहींहो ६८ क्योंकि मेरे आश्रमके समीप में मरुधन्वा देशमें बालुकासे पूर्ण उज्जानक विख्यात है ६९ तिसमें देवताओं से अवध्य और बड़े शरीर वाला और अतिबलवाला और पृथिवीके भीतर प्रवेशकरे और बालुरेत से अन्तर्हित ७० और मधु राक्षसका पुत्र ऐसा धुंधुनामवाला महाराक्षस तप को

कर लोकको नाशनेकेलिये शयन करता है ७१ और एक वर्षके अन्त में जब जब वह राक्षस श्वासको छोड़ता है तब तब पर्वत बन आदिसे संयुक्त पृथिवी कांपती है ७२ और पीछे तिसके श्वाससे उपजेबातसे अतिरज उड़ता है और सूर्य्य के मार्ग्ग को आंधीसे आच्छादित कर ७ दिनोंतक पृथिवीकांपतीही रहतीहै ७३ और धूमासे संयुक्त अग्निके किनके प्रकाशित रहते हैं इस वास्ते हे राजन् मैं अपने आश्रममें ठहरने को समर्थ नहीं होता ७४ इसलिये लोकके हितकी कामनाकर इस बड़े शरीरवाले राक्षसको मारो और जब आप इसको मारोगे तब स्वस्थरूपी लोक होजावेंगे ७५ और हेपृथ्वीपते तिसको मारनेवास्ते आपही समर्थ हैं और हे अनघ पूर्वयुगमें विष्णु भगवान् ने मुझको वरदिया है ७६ कि जो इस महाबली राक्षस को मारेगा तिसके तेजको तुम बढ़ावोगे ऐसे मुझसे कहा है ७७ और अल्प तेज से महा तेजवाला यह राक्षस दिव्यशत वर्षोंमें भी दग्धहोने को समर्थनहीं होसकेगा ७८ क्योंकि तिस राक्षसमें ऐसा बल है कि देवताओंकी भी सामर्थ्य नहीं है ऐसे उत्तंक मुनिने राजा से वचन कहे ७९ तब वृहदश्व राजा अपने कुबलाश्व पुत्रको धुंधुदैत्यके मारनेवास्ते देताभया ८० और वृहदश्व कहनेलगा हे भगवन् मैंने शस्त्रों का त्याग करदिया है और हे द्विजश्रेष्ठ यह मेरा पुत्र धुंधु राक्षसको मारेगा इसमें संशयनहीं ८१ ऐसे पुत्र को

आज्ञा देकर राजर्षि तपके लिये पर्वतको गमन करता भया ८२ पीछे कुवलाश्व राजा अपने १०० पुत्रों को संगले धुंधुराक्षस के मारनेवास्ते उत्तंक मुनिके साथ चला ८३ तिससमय में कुवलाश्वराजा के शरीर में उत्तंककी आज्ञासे और संसारके हितके वास्ते विष्णु भगवान् अपने तेजसे प्रवेश करते भये ८४ औरजब राजाने गमन किया तब आकाशमें महाशब्द होनेलगा कि यह श्रीमान् राजा अवध्य है और धुंधुराक्षस को मारेगा ८५ पीछे दिव्यपुष्पोंकी वर्षा राजाके चारोंतरफ देवता करनेलगे और हे मुनिजनो देवताओं में नगारे बजनेलगे ८६ पीछे अपने १०० पुत्रोंसहित राजा बालूरेतसे पूरित समुद्र को खुदावताभया ८७ तब नारायणके तेजसे पुष्टकिया राजा फिर बलवाला होताभया ८८ जब राजाके पुत्रोंने अति खोदन किया तब धुंधुराक्षस पश्चिमदिशाको प्राप्तहो खड़ाहुआ ८९ तब मुखसे उपजे अग्नि कर क्रोधसे लोकोंको उद्वर्त्तन करने की तरह वेगसे पानी झिरता भया जैसे चन्द्रमाके उदयमें समुद्र ९० पीछे उस राक्षसने राजाके सबपुत्र दग्धकरदिये केवल तीनशेषरहे ९१ पीछे तिस अति बलवाले राक्षसके सन्मुख अतितेजवाला राजा प्राप्तहो ९२ राक्षसके जलमयवेगको योगविद्यासे पानकर पीछे जलसे अग्निको शांतकरता भया ९३ पीछे राक्षसको मार उत्तंकमुनिको दिखाता भया ९४ तब उत्तंकमुनिने राजाके लिये वरदिया कि हे राजन् अ-

क्षय्यरूप द्रव्य तेरेपास होवेगा और किसी कालमेंभी शत्रुओंसे पराजय नहींहोगा ९५ और धर्म में रति और अक्षय कालतक स्वर्गमें बासहोगा और जोराक्षसने तेरेपुत्र मारदियेहैं तिन्होंकोभी अक्षयलोक प्राप्त होवेगा ९६ लोमहर्षणजीबोले हे मुनिजनो—तिसकुबलाश्वराजाके ३ पुत्र शेषरहे तिन्होंमें ज्येष्ठपुत्र दृढ़ाश्व हुआ और चंद्राश्व कपिलाश्व येदोनों छोटेपुत्रहुये ९७ दृढ़ाश्वके हर्य्यश्व पुत्रहुआ हर्य्यश्वके निकुम्भ पुत्रहुआ ९८ निकुम्भके युद्धमें विशारद संहताश्व पुत्रहुआ अकृशाश्व और कृशाश्व ऐसेनामोंवाले दो पुत्र संहताश्वके हुये ९९ और सत् पुरुषोंकी माता और तीन लोकमें दृषद्वती नामसे विख्यात ऐसी हैमवती कन्या उपजी हैमवतीके प्रसेनजित् पुत्रहुआ १०० और गौरीनाम वाली पतिव्रता भार्याको प्राप्तहुआ पतिके शापसे वही गौरी बाहुदानदी होतीभई १०१ बाहुदा नदीमें युवनाश्व राजा उत्पन्नहुआ युवनाश्वके त्रिलोकीको जीतनेवाला मांधाताराजा पुत्रहुआ १०२ तिसने शशबिंदुराजाकीपुत्री और चैत्ररथीनामसे विख्यात १०३ और साध्वी और बिंदुमती नामसे विख्यात और अति रूपवाली और पतिव्रता और दशहजार भ्राताओंसे बड़ी १०४ ऐसीस्त्रीको बिवाहकर तिसमें पुरुकुत्स और मुचकुन्द ऐसे नामोंवाले दो पुत्रउपजे १०५ पुरुकुत्सके त्रसद्दस्यु पुत्रउपजा त्रसद्दस्यु के नर्मदानदीमें संभूत पुत्रहुआ संभूतके सुधन्वा राजा

पुत्रहुआ १०६ सुधन्वाके त्रिधन्वा पुत्रहुआ त्रिधन्वाके त्रय्यारुणपुत्रहुआ १०७ त्रय्यारुणके अतिबलवाला सत्यव्रत पुत्रहुआ यही सत्यव्रत सबों के विवाहों में विघ्नकरनेलगा १०८ जिसने प्रथम अन्यसे विवाहित करी भार्याको आप ग्रहणकिया बालकपने व काम व मोह व आनन्द व चपलतासे किसी पुरवासीकी कन्या को हरताभया १०९ ऐसे अधर्म्म करने से त्रय्यारुण राजा इसपुत्रको त्यागताभया ११० तब त्यागाहुआपुत्र पितासे बारम्बार कहनेलगा मैं कहां गमनकरूं १११ तब उसीको पिता कहनेलगा हे दुष्ट तू चांडालों के कुलमेंमिलजा और तेरेकरके मैं पुत्रवालानहींहूं ११२ ऐसे पिता के बचनसुन नगर से निकसताभया और वशिष्ठजीभी तिसको नहीं रोकतेभये ११३ तब सत्यव्रत पुत्र चांडालोंमें बसनेलगा और त्रय्यारुण पिता भी बनमें चलागया ११४ तब तिस राज्यमण्डल में बारहबर्षोंतक हे मुनिजनो तिसपापसे इन्द्रने बर्षा नहीं करी ११५ और तिसराजाके विषयमें अपनी भार्य्या को स्थापितकर विश्वामित्र मुनि विपुल तप करनेलगे ११६ पीछेविश्वामित्रकीस्त्री अपने मध्यम औरसपुत्रको गलेमें बांध कुटुम्बकी पालनावास्ते१०० गायों के मूल्यमें बेचने को नगरमें चली ११७ तब हे मुनिजनो उस गलेमें बँधेहुये महर्षि पुत्रको धर्मात्मा वही सत्यव्रत छुटाताभया ११८ और सब कुटुम्ब की पालना करनेलगा दया करके और विश्वामित्र की

प्रसन्नता के लिये ११९ पीछे गले में बांधने से वह विश्वामित्रका पुत्र गालव नामसे विख्यात हुआ जिस गालवजीको सत्यव्रत बीरने छुड़ाया है १२० ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांसूर्यवंशकथनोनाम सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजीबोले हे मुनिजनो—पीछे वही सत्यव्रत दया व प्रतिज्ञासे विश्वामित्रकी स्त्रियों को विनयमें स्थितहो पोषताभया १ और मृग शूकर भैंसे बनके पशू इन्हों को मार मांसको विश्वामित्रके आश्रम में वृक्षपर बांधताभया २ और उपांसुव्रत अर्थात् अन्य कोई नहीं जानसकै ऐसे नियमको अंगीकारकर और बारहबर्षकी दीक्षाकोप्राप्तहो पिताकीआज्ञाको पालता हुआ राजाके बनबासकेपीछेभी पूर्वोक्तस्थानमेंही सत्यव्रतबसतारहा ३ तब अयोध्यापुरीको और सबराज्यको उपाध्यायके सम्बन्धसे वशिष्ठजी रक्षाकरतेभये ४ पीछे बालकपने व भावीसे सत्यव्रत बशिष्ठजीमें नित्यप्रति क्रोधको धारण करताभया ५ क्योंकि जबपिताने सत्यव्रतपुत्रको त्यागा तब बशिष्ठजी किसीकारणसे नहीं बर्जतेभये ६ क्योंकि यह सत्यव्रत अपराधी है कितनेक कालतक प्रायश्चित्तकरो ७ और वशिष्ठजी यह भी बिचारनेलगे कि जो इसने पापाकिये हैं तिन्होंकी निवृत्तिबारहबर्षकी दीक्षा में होजावेगी ८ तब इसका

अभिषेक कियाजावेगा अथवा इसके पुत्रका अभिषेक किया जावेगा ९ और इस अभिप्राय को नहीं जानने वाला सत्यव्रत वशिष्ठजी से वैर रखनेलगा १० और इस पिता पुत्रके ऐसे कारणहोने में इन्द्र बारहवर्ष तक नहीं वर्षता भया ११ पीछे एक समय में वह सत्यव्रत दीक्षाको धारण करे हुये जहां तहां गया परन्तु कहीं भी मांस नहीं मिला तब वशिष्ठजी की कामधेनु गायको देख क्रोधसे व मोहसे व परिश्रमसे संयुक्त और क्षुधासे पीड़ित १२ और मत १ श्रमत २ उन्मत्त ३ श्रांत ४ बिभुक्षित ५ त्वरमाण ६ भीरु ७ लुब्ध ८ क्रुद्ध ९ कामी १० इन दशधर्मोंवाला होके १३ वह राजपुत्र उस गायको मार मांसले विश्वामित्रके पुत्रोंको खवाके पीछे आप खाताभया १४ तब इस आख्यान को वशिष्ठजी सुन इसपै क्रोध करने लगे १५ और क्रुद्धहुये वशिष्ठजी इस राजपुत्रके लिये ऐसे कहनेलगे १६ हे क्रूर तेरे पूर्वोक्त अपराध को मैं दूर करदूंगा परन्तु तैंने तीन अपराध अर्थात् एकतो पिताका अपरितोष दूसरा गायका मारना और तीसरा अभोक्षित गायके मांसको खाना ये तीनअपराधकिये हैं १७ इसवास्ते तैंने त्रिशंकु अर्थात् तीन अपराध किये हैं इसलिये तुझको त्रिशंकु सब कहेंगे १८ पीछे समयमें विश्वामित्रजी आके अपने कुटुंबकी पालना करनेवाला देख तिस राजपुत्रसे कहने लगे कि वरमांग १९ तब तो राजपुत्रने कहा मैं अपने इस शरीर सहित स्वर्ग-

लोकमें जाऊं ऐसा वरमांगा २० पीछे जब बारहवर्ष के पश्चात् अनावृष्टिके भय शांत होगये तब इसराजपुत्रको पिताके राज्यपर प्राप्तकर विश्वामित्रजी यज्ञ कराने लगे २१ तब देवतों और वशिष्ठजी के देखते हुये विश्वामित्रजी शरीर सहित इस राजपुत्रको स्वर्ग में प्राप्तकरते भये २२ और इस सत्यव्रतके कैकयवंश की सत्यरथारानी दिव्यरूपवाले हरिश्चंद्र पुत्रको उपजाती भई २३ सो यह हरिश्चंद्र राजा त्रिशंकुका पुत्र हुआ और इसने राजसूययज्ञकरी और चक्रवर्ती राजा हुआ२४हरिश्चंद्रके वीर्यवाला रोहित पुत्रहुआ जिसने देशकी सिद्धिके लिये रोहितपुर रचा २५ यह राजर्षि राज्यकर और प्रजाकी पालना कर और संसार को असाररूप जान इसरोहितपुरको ब्राह्मणोंके लिये देता भया२६रोहितके हरितपुत्रहुआ हरितके चंचुपुत्रहुआ चंचुके विजय और सुदेव इन नामोंवाले दो पुत्र हुये २७ इन्होंने बिजयमें सब क्षत्रिय जीतलिये इसवास्ते यह बिजय कहाया बिजयके धर्म अर्थको जाननेवाला रूरुक पुत्रहुआ २८ रूरुकके वृक पुत्रहुआ वृकके बाहु पुत्र हुआ इसराजाको शक यवन कांबोज पारद पह्लव २९ हैहय तालजंघ ऐसे नामोंवाले मनुष्यराज्य से अलग करते भये और यह राजा अतिधार्मिक भी नहीं हुआ ३० इस बाहुके सकाशसे औरवसीमें बिष से संयुक्त सगर पुत्रहुआ तिसको भृगुवंशमें होनेवाले और्वमुनि पालते भये ३१ इसी मुनिसे सगर राजा

आग्नेय अस्त्रको सीख पीछे तालजंघ हैहय इनको मार और सब पृथिवीको जीत शक पह्लव पारद इन क्षत्रियों के धर्मों को छुड़ाताभया ३२ । ३३ और मुनिजन पूछते हैं विषसे सहित सगर राजा जन्मता भया और किस वास्ते शक आदि क्षत्रियों के ३४ कुलोचित धर्मों का क्रुद्धरूप राजा होके छुड़ाता भया और हे लोमहर्षणजी यह सब बिस्तारसे हमारेप्रति कहो ३५ तब लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो ब्यसन वाले बाहुका राज्य जब हैहय तालजंघ शक इनआदि-योंने हरलिया ३६ तब राजा बनको गया और वह दुःखित राजा बन में जाके मरगया ३७ और इस राजाकी गर्भिणी स्त्री को प्रथम दूसरी रानीने बिष दे दिया था ३८ सो बिष संयुक्त बालकको धारण किये बाहुकी रानी भी संग गई जब पतिके प्राणांत होगये तब चिताबना बनमें पतिके संग गर्भवती रानी जलने लगी ३९ तब दयाभावसे और्वमुनि जलने से वर्जते भये ४० पीछे और्वमुनिके आश्रम में विषसहित बा-लक जन्मा ४१ तब मुनि उस बालकके जातकर्मादि करा पीछे सबवेदों का अध्ययन करा ४२ पीछे अस्त्र देताभया पीछे देवताओं को भीदुःसह ऐसे आग्नेय-अस्त्र को सीख और सेना इकट्ठीकर ४३ हैहय संज्ञक क्षत्रियों को मारताभया जैसे क्रुद्धहुआ रुद्र पशुओं को और संसारमें कीर्त्ति बढ़ाने लगा ४४ पीछे शक यवन कांबोज पारद पह्लव इन सबों को मारनेलगा ४५

तब हा हा पुकारते हुये सब वशिष्ठजी की शरण गये ४६ तब नियम करा वशिष्ठजी सगर को वर्जते भये और शक आदि क्षत्रियोंको अभय देतेभये ४७ तब सगरराजा अपनीप्रतिज्ञा और वशिष्ठजीके बचन कोसुन तिन क्षत्रियोंके धर्मोंको नाशताभया ४८ पीछे शकजातिके क्षत्रियोंके आधेशिरको मुँड़ा छोड़ताभया पीछे यवन और कांबोज क्षत्रियोंके सम्पूर्ण शिरको मुँड़ा छोड़ताभया ४९ पीछे पारदक्षत्रियोंको छुटेहुये बालोंवाले बना छोड़ताभया पीछे पह्लवक्षत्रियोंको श्मश्रू अर्थात् डाढ़ी धारणकरनेवाले बना छोड़ताभया ऐसे येसब स्वाध्याय वषट्कारसे रहित सगरनेकरदिये ५० और शकयवन कांबोज पारद पह्लव कोलि सर्प महिष दार्व चौल केरल ५१ इन सबक्षत्रियों के धर्मोंका नाश करदिया और बशिष्ठजीके बचनसे ५२ खस तुखार चोल मद्र किष्किन्धिक कोंतलवङ्ग शाल्व कोंकण ५३ इनदेशोंके राजाओंकोभी धर्मसे रहित करताभया ऐसे पृथिवीको जीत धर्मको जाननेवाला सगरराजा अश्वमेध यज्ञकेलिये दीक्षितहो अश्वको चलानेलगा ५४ पीछे चलता हुआ अश्व पूर्व दक्षिणके समुद्रके समीप में अपहृत हुआ पृथिवीमें प्रवेश करताभया ५५ तब राजा उस देशको अपने पुत्रोंके द्वारा खुदाताभया तब उस जगह को खोदते हुये ५६ आदिदेव कृष्ण हरि प्रजापति बिष्णु इन नामोंवाले कपिलमुनिजीकोशयन करतेहुये खेदतेभये ५७ तब जागने से कपिलमुनिजी

के नेत्रोंके तेजसे सगरके सबपुत्र दग्ध होगये परन्तु वर्हकेतु सुकेतु धर्मरथ पंचजन इन नामोंवाले चारपुत्र अवशेषरहे५८और इन्होंहीसेवंशबढ़ेगा पीछे सगरको कपिलमुनिजीने बरदानदिया कि इक्ष्वाकुका अक्षयवंश रहेगा और तेरी सुन्दर कीर्त्ति बढ़ेगी ५९ और समुद्र पुत्र होवेगा और अक्षय स्वर्गबासहोगा ६० और मेरे नेत्रोंकेतेजसे जो पुत्रदग्धहोगयेहैं तिन्होंको अक्षयलोक प्राप्तहोवेगा ६१ पीछे समुद्र अर्घ्यग्रहणकर तिससगर राजाको प्रणाम करताभया और तिस कर्मसे समुद्रको सागर कहते हैं ६२ ऐसेसमुद्रसे उसअश्वको ग्रहणकर १०० अश्वमेध यज्ञकरताभया ६३ और सगरराजा के ६०००० पुत्रहुये ऐसे हमने सुनाहै ६४ मुनिजनोंने प्रश्न किया कि हे लोमहर्षण जी तिस महात्मा सगर राजाके ६०००० पुत्र कैसे जन्मे ६५ तब लोमहर्षणजी कहने लगे सगरराजा के दो भार्य्या हुईं वे दोनों तप से पापोंको दग्धकरती भईं तिन्हों में बिदर्भकी पुत्री और केशिनी नामसे विख्यात ऐसी बड़ी भार्य्या हुई ६६ और अरिष्टनेमिकी पुत्री स्वरूप से पृथ्वीभर में अति सुंदर और महती नाम से विख्यात ऐसी छोटी भार्य्या हुई ६७ हे मुनिजनो और्व्वमुनि तिन दोनोंको बरदेनेलगे एकभार्य्या ६०००० पुत्रोंको जन्मेगी ६८ और एकभार्य्या के वंशको धारण करनेवाला एक पुत्र उपजेगा सो तुम दोनों इच्छापूर्वक ऐसे वरको ग्रहण करो ६९ तब एकभार्य्या लोभको प्राप्तहो शरवीर

रूपी ६०००० पुत्रों को मांगती भई और एक भार्य्या वंशको चलानेवाले एकपुत्रको मांगतीभई ऐसेही मुनि वरदान देतेभये ७० तब केशिनी भार्य्या के असमं-जानामवाला पुत्र उपजा यहसमयपाके महाबल पंच-जन नाम राजाहुआ ७१ और दूसरी रानी बीजों से सम्पूर्ण तूंबी उपजाती भई तिसमें ६०००० काल के अनुसार उपज बढ़ते भये ७२ तिन्होंको सगर राजा घृतसे पूर्णकुंभ में प्राप्त करनेलगा और जितने गर्भथे उतनीही राजाने धायें पोषणकेवास्ते प्राप्तकरीं ७३ पीछे दशवें महीनेमें क्रमसे सगरकी प्रीतिको बढ़ानेवाले ७४ काल के अनुसार ६०००० बालक उपजते भये ऐसे हे पृथिवीपते तूंबीमें से पुत्र उपजे हैं ७५ पंचजन के अंशुमान् पुत्रहुआ और अंशुमान्के दिलीप पुत्र हुआ दिलीपके खट्वांग पुत्रहुआ ७६ जिसने स्वर्ग से फिर इसलोक में आगमनकर एकमुहूर्त्तभर जीवके सत्यसे और बुद्धि से तीनोंलोक अनुसंधित करदिये ७७ दिलीपके भगीरथ पुत्रहुआ जिसने ये श्रीगंगाजी इसलोकमें प्राप्तकरी ७८ और समुद्रमेंमिला पुत्रीभाव से मानता भया ७९ इसवास्ते वंशचिंतक गंगा को भागीरथी कहते हैं भगीरथ के श्रुत पुत्रहुआ श्रुत के नाभागपुत्रहुआ नाभागके अंबरीषपुत्रहुआ अंबरीष के सिंधुद्वीप पुत्रहुआ ८० सिंधुद्वीप के आयुताजित् पुत्र हुआ आयुताजित्के महायशवाला ऋतुपर्ण पुत्र हुआ ८१ यहराजा पांसोंकेखेलने में अतिचतुर और

नलराजाकामित्र होताभया ऋतुपर्णके आर्त्तपर्णि पुत्र हुआ ८२ आर्त्तपर्णिके सुदासपुत्र हुआ यह राजा इन्द्र कापुत्रहोताभया सुदासकापुत्र सौदास हुआ ८३ इसी को कल्माषपाद और मित्रसहभी कहते हैं कल्माष पादके सर्वकर्मा पुत्रहुआ ८४ सर्वकर्मा के अनरण्य पुत्रहुआ अनरण्यके निघ्न पुत्रहुआ निघ्नके ८५ अन-मित्र और रघु ऐसे नामोंवाले दो पुत्र हुये अनमित्र के दुलिदुह पुत्रहुआ ८६ दुलिदुहके दिलीप पुत्रहुआ यह रामचंद्रजीका पितामहलगा दिलीपके दीर्घबाहु-ओंवाला रघु पुत्रहुआ ८७ यह अयोध्यापुरी में महा बली होताभया रघुके अज पुत्रहुआ अजके दशरथ पुत्रहुआ ८८ दशरथ के धर्मात्मा और महा यश वाले ऐसे रामचंद्रजी पुत्रहुये रामचंद्रके कुशपुत्रहुआ ८९ कुशके अतिथि पुत्रहुआ अतिथिके निषध पुत्र हुआ निषधके नल पुत्रहुआ नलके नभ पुत्रहुआ ९० नभके पुंडरीक पुत्रहुआ पुंडरीकके क्षेमधन्वा पुत्रहुआ क्षेमधन्वाके प्रतापवाला देवानीक पुत्रहुआ ९१ देवा-नीकके अहिनगु पुत्रहुआ अहिनगुके सुधन्वा पुत्र हुआ ९२ सुधन्वाके नल पुत्रहुआ नलके उकथ पुत्र हुआ ९३ उकथके बज्रनाभ पुत्रहुआ बज्रनाभके शंख पुत्रहुआ शंखके ब्युषिताश्व पुत्रहुआ ९४ ब्युषिताश्वके पुष्य पुत्रहुआ पुष्यके अर्थसिद्धि पुत्रहुआ अर्थसिद्धि के सुदर्शन पुत्रहुआ सुदर्शनके अग्निबर्ण पुत्रहुआ ९५ अग्निबर्णके शीघ्र पुत्रहुआ शीघ्रके मरु पुत्रहुआ

मरुयोगकोप्राप्त कलापद्वीपको प्राप्तहुआ ९६ मरु
के विश्रुतवत् पुत्रहुआ विश्रुतवत्के बृहद्बल पुत्रहुआ
और हे मुनिजनो २ नल राजेपुराणोंमें विख्यातहैं ९७
एक बीरसेनकापुत्र और दूसरा इक्ष्वाकु बंशमें होने
वाला ऐसेजानो और इक्ष्वाकुबंशके राजे प्रधानता से
यहां कह दियेगये ९८ अर्थात् यहसब सूर्य्यबंशीराजों
का बंशहै इस श्राद्ध देवरूपी सूर्यबंश के आख्यानको
पठनकरनेसे ९९ संततिवाला और पापों से रहित
और अति आयुवाला ऐसा मनुष्य होजाताहै १००
और सूर्यलोकके बासका अधिकारीहोजाताहै १०१ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांआदित्यबंशानु-
कीर्त्तनंनामअष्टमोध्यायः ८॥

नवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजीबोले हे मुनिजनो प्रजाको रचनेकी इच्छाकरनेवाले ब्रह्माजी के मनसे चंद्रमाका पिता अत्रिऋषि उपजा १ यह अत्रि कर्म मन बाणी इन्हों से सब मनुष्योंके कल्याण के लिये शुभकर्मोंका आचरण करनेलगा २ सब प्राणियों में दया रखनेवाला और धर्मात्मा और उग्रव्रतोंको धारण करनेवाला और काष्ठ भीत पत्थर इन्हों के समान शरीरको धारण करनेवाला और आकाश के सामने दोनों भुजाओंको उठाके धारण करनेवाला ३ और महा तेजवाला ऐसा अत्रिऋषि सब इन्द्रियोंका निग्रह करनेवाला मौनको

प्राप्तहो ४ तीनहज़ार दिव्यबर्षोंतक उग्रतपको करनेल-
गाऐसेहमनेसुनाहै५ पीछे महापराक्रमवाले और ऊर्ध्व-
गत वीर्य्यको धारण करनेवाले ऐसे अत्रिऋषि के श-
रीरके ऊर्ध्वभाग में अमृत उपजा ६ तब दोनों नेत्रोंके
द्वारा दशोंदिशाओंको प्रकाशित करताहुआ ७ पानी
झिरनेलगा तिस तेजसंयुक्त पानीरूपी गर्भको प्रफु-
ल्लितहुई दशोंदिशा मिलके धारण करनेलगीं परंतु
धारण करनेमें समर्थ नहीं हुईं ८ जब उन्होंसे धारण
नहीं किया गया तब वह तेजरूपी गर्भ पृथ्वीमें पड़ने
लगा ९ तब पड़ते हुये उस अमृतरूपी गर्भको सबके
बड़े ब्रह्माजी देखके लोकोंके कल्याणकेलिये रथमेंस्था-
पित करतेभये १० अब रथका स्वरूप वर्णनाकिया जा-
ताहै हे मुनिजनो काष्ठकीतरह वेदोंसे रचाहुआ और
धर्मरूपी और सत्यरूपी ब्रह्मका संग्रह और सफेद
रंगवाले हज़ारों वेदकेमंत्ररूपी घोड़ोंसेसंयुक्त ऐसारथ
कास्वरूप हमनेसुनाहै ११ और जब चंद्रमारूपीतेज
पृथ्वीमेंपड़नेलगा तब ब्रह्माकेमनसे उपजे सातपुत्र १२
और अंगिरा और अंगिराके पुत्र भृगु और भृगुके
पुत्र ऋग्वेद और यजुर्वेदकेद्वारा चंद्रमा की स्तुति
करनेलगे१३तब चंद्रमाकातेज बढ़के सबलोकोंको पुष्ट
करताहुआ त्रिलोकीको प्रकाशित करनेलगा १४ और
उस उत्तम रथमें बैठके समुद्रों पर्य्यन्त संपूर्णपृथ्वीकी
इक्कीसपरिक्रमा चंद्रमानेकरीं १५ और जो रथकेबेगसे
चंद्रमाका तेज पृथ्वीमें प्राप्तहुआ उससे सब ओषधियां

उपजनेलगीं १६ इसीवास्ते चन्द्रमाके तेजसे सब अन्न आदि ओषधियां प्रफुल्लित होतीहैं औ इन अन्नआदि ओषधियोंके प्रतापसे अंडज स्वेदज जरायुज उद्भिज ऐसे चारप्रकारकी प्रजा जीवती है ऐसे हे मुनिजनो सब जगत्को पुष्टकरनेवाला चन्द्रमा कहाहै १७ पीछे उत्तम कर्मोंसे उत्तम तेजको प्राप्तहो एकहज़ार पद्मसंख्यावाले बर्षोंतक तपकरता भया १८ इसीवास्ते जो सुवर्णके समान बर्णवाली देवी इसजगत् को धारणकर रहीहै अर्थात् सबप्रकारके जलोंका स्वामी चन्द्रमा कियागया १९ और यही चन्द्रमा सबप्रकारके वीज और ओषधी और ब्राह्मण और जल इनसबों का स्वामी बनाया गया २० ऐसे उत्तम राज्यपै प्राप्तहोचंद्रमा सबलोक लोकान्तरों को अपने तेजसे प्रकाशित करताहै २१ पीछे दक्ष प्रजापति अपनी अश्विनीआदि और रेवती पर्य्यंत जो सत्ताईस नक्षत्र हैं इन पुत्रियोंको चन्द्रमाके लिये बिवाहताभया २२ पीछे चन्द्रमा उत्तमराज्यको प्राप्तहो राजसूय यज्ञका आरंभ करनेलगा तिसमें जहांएक अशरफी व एकगाय की दक्षिणाथी उसजगह लाख लाख अशरफी और लाख लाख गौकादान करता भया २३ और उसयज्ञ में अत्रि मुनि होताबनते भये और भृगुमुनि अध्वर्य्यु बनतेभये और अंगिरा मुनिउद्गाता बनतेभये और साक्षात् ब्रह्माजी ब्रह्मा बनतेभये २४ अथवा वशिष्ठजी ब्रह्माबनतेभये और साक्षात् नारायण सनत्कुमारआदि

ब्रह्मर्षियोंसे संयुक्तहो सभापति बनतेभये २५ और हे मुनिजनो मैंने ऐसासुनाहै यज्ञके अंतमें मुनिजनों के लिये चन्द्रमा ने त्रिलोकीका दानकर दिया २६ और सिनी वाली कुहू अर्थात् अमावस्या और द्युति,पुष्टि, प्रभावसु और कीर्त्ति, धृति, लक्ष्मी येभी देवी चन्द्रमा को सेवनेलगीं २७ ऐसे यज्ञको पूर्ण करदेवता और मुनिजनोंसे पूजित किया सबराजाओंसे प्रधान ऐसा चन्द्रमाहोके दशोंदिशाओंको भासित करताहुआ आप प्रकाशितहोता भया २८ परंतु हे मुनिजनो ऐसे उत्तम ऐश्वर्य्यकोप्राप्तहो और मदसे भ्रमतेहुये चंद्रमाकी अनी तिसे बुद्धि भ्रष्टहोनेलगी २९ तबवह चन्द्रमा अतियश वाली और तारा नामवाली बृहस्पतिकी भार्य्या को हरताभया ३० तब देवता और राजर्षियोंने अत्यन्त समझायाभी परन्तु उसतारा नामवाली स्त्रीको नहीं छोड़ताभया ३१ तब चन्द्रमाके संग बृहस्पतिजी युद्ध करने को तय्यारभये तब चन्द्रमाकी तरफ मददेने वाले दैत्योंके गुरु शुक्राचार्य्यजी हुये ३२ और एक समयमें बृहस्पतिजी अपने पितासे पहले महादेवजी से पठन करतेभये उस स्नेहसे महादेवजी ३३ अज- गव नामवाले धनुषको धारणकर बृहस्पतिजीकी तरफ मददेनेवाले हुये और उसीसमय दैत्योंके नाशकरने वास्ते महादेवजीने ब्रह्मशिरनामवाला उग्र अस्त्रच- लिया ३४ जिसकरके दैत्योंका यशनाशको प्राप्तहुआ तब देवता और दैत्योंका आपसमें लोकके क्षय करने-

वाला और तारकामय नामसे विख्यात ३५ ऐसा युद्ध होनेलगा तब बहुतसे दैत्य और बहुतसे देवता नाश को प्राप्तहोगये पीछे तिस युद्धसे बचेहुये तुषित संज्ञा-वाले देवता आदिदेव और सनातन ऐसे ब्रह्माजी के शरणमें जाके प्राप्तहुये ३६ तब आप ब्रह्माजी आके शुक्राचार्य्य और महादेवजीको निवारणकर ३७ तारा स्त्रीको चन्द्रमासे खोसबृहस्पतिजीको देतेभये तब उस गर्भवती ताराको देख बृहस्पतिजी कहनेलगे ३८ मेरे स्थानमें गर्भ को धारण मतकरे एकान्त स्थानमें इस गर्भको त्याग ३९ तब एकान्तस्थानमें वह तारा उस गर्भ को त्यागनेलगी तब जन्मलेतेही वह दिव्यरूप वाला गर्भ देवताओं के रूपों से भी अधिक रूपको धारण करताभया ४० तब सब देवता संशयको प्राप्त हो तारासे कहनेलगे हे कल्याणी तू सत्यकह यह बा-लक चन्द्रमाका पुत्रहै या बृहस्पतिजी का ४१ ऐसे प्रकार देवताओंने पूछाभी परन्तु वहतारा कुछभी नहीं बोलतीभई तब तिसताराको वह बालक शापदेने को तय्यारभया ४२ तबउस बालकको बर्ज ब्रह्माजी तारा से पूछनेलगे हे देवी यह किसका पुत्रहै सो तू सत्य बर्णनकर ४३ तब दोनों हाथोंको जोड़ वरके देनेवाले ब्रह्माजीसे कहनेलगी हे स्वामिन् दस्युजनों को दुःख देनेवाला यह बालक चन्द्रमा का पुत्र है ४४ तब चं-द्रमा उस बालकके मस्तकको सूंघ अपने पुत्रका बुध ऐसा नाम धरताभया ४५ परन्तु यह बुध आकाश

में प्रतिकूलपनेसे उदयहोता है और वैराजमनुके इला नामपुत्री उपजी ४६ तिसमें यह बुध पुरूरवा नाम वाले पुत्रको उपजाताभया इस पुरूरवाके उर्वशी में सातपुत्रउपजे ४७ और राजयक्ष्मा रोगने चन्द्रमा को ग्रसलिया तिससे चन्द्रमाकामंडल क्षीणहोनेलगा ४८ तब चन्द्रमा अत्रिमुनिकी शरणमें गया तब महातप वाले अत्रि मुनि तिस पापरोगकी शांतिकरतेभये ४९ तब राजयक्ष्मासे छूटके उत्तम शोभाको प्राप्तहो चारों तरफसे चन्द्रमा प्रकाश करनेलगा ऐसे कीर्त्तिको बढ़ाने वाले चन्द्रमाका जन्म वर्णन किया है ५० और इसके उपरान्त सोम वंशका श्रवणकर और धन्यरूप आरोग्य और आयुका देनेवाला और पवित्र और मनोवांछितदेनेवाला ५१ ऐसे चन्द्रमाके जन्मको सुनने से मनुष्यके सब पापदूर होजाते हैं ५२ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांसोमोत्पत्ति वर्णनंनामनवमोध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी बोले हेमुनिजनो बुधके अति विद्वान् और तेजस्वी और दान शील और यज्ञ करनेवाला और अतिदक्षिणादेनेवाला १ ब्रह्मवादी और शत्रुओं को युद्धमें जीतनेवाला और अग्निहोत्र आदियज्ञोंका करनेवाला और पृथ्वी का पति २ और सत्यवादी और पवित्र बुद्धिवाला और त्रिलोकीमें सबके यशोंसे उत्तम

यशको धारण करनेवाला ऐसा पुरूरवा राजाहुआ ३ ब्रह्मवादी और शान्त स्वरूप और धर्म्म को जानने वाला और सत्यवादी ऐसे इसपुरूरवाराजाको उर्वशी बरती भई ४ तिसउर्वशीके संग चैत्ररथ बनमें दशवर्ष और मंदाकिनी नदीके तटपै पांच वर्ष ५ और अलका पुरी में पांच वर्ष और बदरी पुरी में छः वर्ष और नंदन बनमें सात वर्ष ६ और उत्तर कुरुओंके देशमें आठ वर्ष और गंधमादन पर्व्वतमें दश बर्ष और सुमेरु पर्व्वत में आठ वर्ष ७ ऐसे इन अनेक बनों में उर्वशीके संग राजा भोग भोगने लगा ८ और इस पुरूरवा राजाकी प्रयागमें राजधानी हुई ९ और इस पुरूरवा राजाके सकाशसे उर्वशीमें महात्मारूप और आयु, अमावसु १० विश्वायु, श्रुतायु, दृढ़ायु, बनायु, शतायु इननामोंवाले सातपुत्र स्वर्गमेंउपजे ११ अमावसु के भीम और नग्नजित् ये दो पुत्र हुये भीम के श्रीमान्कांचनप्रभ पुत्रहुआ १२ कांचनप्रभ के विद्वान् और महाबलवाला सुहोत्रपुत्र हुआ सुहोत्रके केशनी रानीमें जह्नुपुत्रहुआ १३ जिसने सर्वमेध और महामख इस नामवाला महायज्ञकिया और पतिके लोभसे जिसको गंगाप्राप्तहोतीभई १४ तब वह गंगाकीइच्छा नहीं करनेलगा तब गंगाजी ने सब यज्ञस्थान जलसे डुबोदिये १५ तब क्रोधको प्राप्तहो जह्नुराजा कहनेलगा किहे गंगे तैंने बहुतबुराकामकियाहै इसवास्तेतेरेजलको पानकरूंहूं १६ तू अपने अभिमान के फलको तत्काल

प्राप्त होगी ऐसे कहके राजर्षि जह्नु गंगा के जल को पीनेलगा १७ तब पीहुईगंगाकोदेख महर्षिजन जह्नु राजाकीपुत्री बनाते हुये पीछे युवनाश्व राजा की पुत्री कावेरीको जह्नु राजाबिवाहताभया १८ और युवनाश्वके शापसे पहिलेही गंगाने अपने आधे भाग से कावेरी रचदी है १९ पीछे जह्नु राजा कावेरी रानीमें परमधार्मिक सुनह नामवाले पुत्रको उत्पन्न करता भया पीछे कुशके देव समान तेजवाले और कुशिक, कुशनाभ, कुशांब, मूर्त्तिमान् २० इन नामोंवाले चार पुत्र हुये वनचारी पह्लओंके संग बढ़ाहुआ कुशिक राजा तप करने लगा और यह चाहने लगा कि इन्द्र के समान पुत्रोंको प्राप्तहूं २१ ऐसे हज़ारों बर्षों के ब्यतीत होनेके बाद इन्द्र अति तप करने वाले उस कुशिक राजाको देख २२ अपनेही अंशको उसराजा के पुत्र उपजाता भया २३ तब गाधि नामवाला और कुशिक का पुत्र और साक्षात् २४ इन्द्रका अंश ऐसा गाधिपौर कुत्सीरानी में उपजा गाधि के महाभाग्य वाली और सत्यवती नामसे विख्यात ऐसी पुत्री उपजी २५ इसको ऋचीक नाम वाले भृगु पुत्रके लिये गाधि देताभया पीछे प्रसन्न हुआ ऋचीक मुनि २६ अपने और गाधिके पुत्रहोनेके लिये चरुबनाके अपनी स्त्री से कहनेलगा २७ हे प्रिये ये दो चरु के डौने हैं इन्होंमें से एक यह तेरी माताके खानेकेवास्तेहै इसके प्रतापसे तेरीमाता अतितेज वाला २८ और क्षत्रियों

में उत्तम और इस संसारके क्षत्रियोंसे नहीं जीतने में आनेवाला और बलवंत क्षत्रियोंको मारनेवाला ऐसे पुत्रकोजन्मेगी इसलिये यहचरुका डौना अपनीमाता केलियेदेना और हे कल्याणी यहदूसरा चरुका डौना तुझको देताहूं इसके खाने से धीर्य्यवाला और तप करनेवाला २६ और शांतस्वरूप और ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ ऐसे पुत्रको तू जनेगी ऐसे ऋचीक मुनि सत्यवती भार्य्यासे कहके ३० तप करनेकेलिये बनमें प्रवेश करता भया पीछे अपनी भार्य्याकरके सहित गाधि ३१ तीर्थ यात्राके प्रसंगसे पुत्रीको देखनेवास्ते ऋचीकमुनि के आश्रममें प्राप्तहुआ ३२ तब दोनों चरुके डौनोंको ग्रहणकर सत्यवती माताको देतीभई और सब वृत्तांत कहतीभई ३३ परन्तु दैवयोगसे माता बिपरीत भाव से अपने चरुके डौनेको पुत्रीके लिये देके ३४ और पुत्रीके डौनेको आप अंगीकार करतीभई पीछे क्षत्रियोंके अंतकरने वाले गर्भको सत्यवती धारती भई ३५ तब ऋचीकमुनि देखके और योगविद्यासे बिचार ३६ अपनी स्त्रीसे कहनेलगे हे भद्रे चरुके डौनोंके बदलने से माताने तुझे ठगलिया ३७ इसवास्ते क्रूरकर्म करनेवाला और अतिदारुण ऐसेपुत्रको तू जनेगी और ब्रह्मस्वरूप और उग्रतपको करनेवाला ऐसे भ्राताको तेरी माता जनेगी ३८ क्योंकि जिस डौनेमें तप करके मैंने ब्रह्म अर्प्पण करदियाथा वह डौनातेरी माताने अंगीकार किया है ऐसे पतिके बचनको सुन ३६ पति

को मनानेलगी कि ऐसे पुत्रको मैंनहीं चाहती तब मु-
नि कहनेलगे ४० कि हेभद्रे यहतेरा संकल्प पूर्णहोना
मुश्किल है और पिता माताके कारणसे उग्रकर्मापुत्र
होगा ४१ फिर सत्यवती कहनेलगी हे मुने जो इच्छा
करो तो आप संसारको भी रचसक्ते हो और पुत्रके रचने
की तो क्या कथा है ४२ इसलिये शांतस्वरूप और
कोमलभाव वाला ऐसापुत्र देने को योग्यहो और हे
द्विजोत्तम अगर अन्यथानहीं करने की आपकी बांछा
है तो क्षत्रियों के नाशकरने वाला और उग्ररूप ऐसा
मेरे पौत्रहोना चाहिये ४३ तब सत्यवतीपै प्रसन्नहो के
४४ मुनि कहनेलगे हे भद्रे पुत्र और पौत्रमें बिशेष
नहींहै इसवास्ते तेरी बांछा पूरीहोगी ४५ तब सत्यव-
ती तपको करनेवाला और इन्द्रियोंको जीतनेवाला
और शांतस्वरूप और जमदग्नि नामसे बिख्यात
ऐसे पुत्रको जनतीभई ४६ और पीछेसत्य और धर्म
में परायण और पवित्र ऐसी यही सत्यवती कौशिकी
नामसे बिख्यात महानदी होतीभई ४७ और इक्ष्वाकु
बंशसे होनेवाला रेणुनाम राजाहुआ तिसकी रेणुका
नाम पुत्रीके संग जमदग्निका बिवाह हुआ ४८ पीछे
जमदग्निके सकाशसे रेणुका स्त्रीमें अतिदारुण और
सब विद्याके अंतको जाननेवाला ४९ और धनुर्वेद
केपारको प्राप्त और क्षत्रियोंको नाशनेवाला और अ-
ग्निके समान दीप्तरूप और परशुरामनामसे विख्यात
ऐसा पुत्रहोता भया ५० ऐसे हे मुनिजनो सत्यवतीमें

जमदग्निऋषि उपजेहैं ५१ और कुशिकका पुत्र गाधि राजाके ऋचीक मुनिके चरुके प्रतापसे अति तपस्वी और अतिविद्यावान् और शांतस्वरूप ऐसा विश्वामित्र पुत्र उपजा ५२ यह अपनेकर्त्तव्यसे ब्रह्मर्षियोंके समानहो के सप्तऋषियोंमें प्राप्तहुआ ५३ और पहिले यह विश्वामित्र गाधिराजाके विश्वरथनामसे विख्यात पुत्र हुआ ५४ पीछे विश्वामित्रके देवरात आदिनामोंसे त्रिलोकीमें विख्यात ऐसे पुत्रहुये तिन्होंके नाम श्रवण कर ५५ देव, श्रवा और कति और जिस कतिसे कात्यायन नामसे विख्यात पुरुषकहाये और शालावती स्त्रीमें हिरण्याक्ष पुत्रहुआ और रेणुनाम वालीस्त्री मेंरेणुमान् ५६ और सांकृति और गालव और मुद्गल और मधुछंद और जयऔर देवल येपुत्रउपजे ५७ और दृषद्वतीरानीमें अष्टक और कच्छप और हारित ये तीनपुत्र उपजे ऐसे विश्वामित्र के पुत्रहुये हैं तिन कौशिकों के गोत्र संसारमें अनेक विख्यात हैं ५८ पीछे पाणिन, वभ्रव, ध्यान, जप्य, पार्थिव, देवरात, शालकं, अपन, वाष्कल ५९ लोहित, पामदूत, कारीष ये बारहदेवकेपुत्रहुये अर्थात् विश्वामित्रजी के पौत्रहुये और हे मुनिजनो सैंधवायन आदि नामोंसे विख्यात सुश्रुतके पुत्रहुये और विश्वामित्रके पौत्रकहाये ६० और याज्ञवल्क्य और अघमर्षण और औदुम्बर और अभिस्नात और तारकायन और चुंचुल ६१ इननामोंवाले छः पुत्र हिरण्याक्षके उपजे येभी

विश्वामित्रके पुत्रकहाये और सांकृत्य और गालव ये रेणुमान्के पुत्रहुये अर्थात् विश्वामित्रके पौत्रकहाये और नारायण और नरये दोनों विश्वामित्रके पुत्रहुये ६२ पीछे ये सब प्रवरभेदकरके विवाह करनेलगे ऐसे ब्रह्मर्षि विश्वामित्रके वंशमें जन्मेहुये मनुष्योंका ६३ इसवंशमें संबंध होनेलगा और विश्वामित्रके पुत्रों में शुनःशेफनामवाला प्रथम पुत्र हुआ ६४ यह भृगुवंश में उपजनेवाला होके कौशिकवंश में हुआ ६५ क्योंकि एकसमयमें हरिश्चन्द्र राजाकी यज्ञमें यह शुनःशेफ पशुकी जगह नियुक्त कियागया तब देवताओंने विश्वामित्रके लिये अर्पणकिया ६६ इसवास्ते यह देवरात नामसे विख्यातहुआ ऐसे देवरातआदि सातपुत्र विश्वामित्र के हुये हैं ६७ और अष्टकके लौहि पुत्र हुआ ऐसे जह्नुगण प्रकाशित कियागयाहै ६८ अब इसके उपरान्त महात्मा रूपआयु राजाका बंश बर्णन कियाजावेगा ६९ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांअमावसोर्वंशानुकीर्त्तनं नामदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो—आयुराजाके राहु की पुत्री प्रभामें महारथ और वीर १ और नहुष और वृद्धशर्मा और रम्भ औररजी और अनेना इननामों वाले और त्रिलोकीमें विख्यात ऐसे पांचपुत्र उपजे २

इन्हों में से रजी राजा के पांचसौ पुत्र उपजे जिन्होंके प्रताप से इन्द्र को भय देनेवाला और राजेयनामसे विख्यात ऐसा क्षत्रहुआ ३ पीछे एकसमयमें देवता और दैत्यों के युद्धका आरम्भ होनेलगा तब देवता और दैत्य ब्रह्माजीके पासजाके कहनेलगे ४ हे भगवन् हम दोनोंमेंसे किसकीजीतहोवेगी आप बर्णन कीजिये क्योंकि तुम्हारे बचनको हम श्रवणकरनेकी इच्छा करते हैं ५ तब ब्रह्माजी कहनेलगे जिन्होंकी मददमें अति सामर्थ्यवाला रजी राजा शस्त्रोंको धारणकर युद्धकरेगा तब वे तीनलोकोंको भी जीतेंगे इसमें संशयनहींहै ६ और जहां रजी राजा होवेगा वहीं धैर्य्यता होवेगी और जहां धैर्य्यहोगा तहां लक्ष्मी होवेगी और जहां लक्ष्मी होवेगी वहीं धर्म होवेगा और जहां धर्महोगा तहां जयहोगा ७ इसमें संशयनहीं है तब ब्रह्माजीके बचनको सुन देवता और दैत्य रजीके आधीन जयको जान और अपनीअपनी जयको चाहनेवाले उस रजी राजा को वरने के वास्ते गये ८ तब राहुका दौहित्र और परमतेजस्वी और चन्द्रमाके बंशको बढ़ानेवाला ९ ऐसा रजी राजा प्रसन्नहुये देवता और दैत्यों के प्रयोजनको जाननेवाला और अपने यशको प्रकाश करनेवाला ऐसा रजी राजाकहनेलगा १०।११ जो सब दैत्य गणों को अपने वीर्य्यसे जीतके धर्म्मसे इन्द्रकी पदवीको प्राप्तहूं अर्थात् इन्द्रहोजाऊं तो युद्धकरूंगा १२ तब सब देवता प्रसन्न होके कहनेलगे हे नृपते

आपका मनोरथ सिद्धहोवेगा ऐसे कहके देवता चले गये पीछे रजी राजा जैसे देवताओंसे पूछताभया तैसे दैत्योंसे पूछनेलगा कि अपने वीर्यसे सब देवताओंको जीतलेऊं तो तुम्हाराभी इन्द्रबनूं १३ तब गर्वसेपूरित हुये दैत्य अपने प्रयोजनको जान अभिमान सहित वचन कहनेलगे १४ कि हमारा इन्द्र प्रह्लादहै जिसके लिये देवताओं को जीतने की इच्छा हम करते हैं हे राजन् जो हमारे इन्द्र होनेकी इच्छा आपकरते हैं तो आपयहीं ठहरिये १५ तब रजीराजाने कहा ठीक है पीछे देवताओंने आके कहा हे राजन् इन दैत्यों को जीतके आपहमारे इन्द्र होवेंगे इसवास्ते आप युद्धमें सहायताकरो १६ तब उस युद्धमें जो इन्द्रसे नहींमर-सकतेथे उन सब दैत्योंकोमार १७ बहुत दिनोंसे गई हुई देवताओंकी शोभाको दैत्योंसे ग्रहणकरताभया १८ पीछे महावीर्यवाले रजी राजाके लिये देवतों सहित इन्द्रकहनेलगा कि मैं रजीराजाकापुत्रहूंगा इसलिये हे राजन् आप सब देवताओं के इन्द्र हैं इसमें संशय नहीं १९ अर्थात् कर्मोंसेमैं रजीराजाकापुत्र ऐसीख्याति-को प्राप्तहूंगा ऐसे इन्द्रके वचनको श्रवणकर इन्द्र की मायासे मोहितहुआ राजा २० प्रसन्न होके इन्द्रसे कहनेलगा कि आपका मनोरथ पूर्ण होगा जब देव-ताओं के समान राजा स्वर्ग्गलोक में इन्द्रकी पदवी को प्राप्तहुआ २१ तब राजा के ५०० पुत्र इन्द्र के सकाशसे सबपदार्थोंको ग्रहणकर स्वर्ग्गलोकमें राज्य

करनेलगे २२ पीछे बहुत दिनोंके व्यतीत होजाने पै राज्यभ्रष्ट और भागभ्रष्ट इन्द्र २३ अतिबलवालेवृह-स्पतिजी से कहनेलगा हे ब्रह्मर्षे बड़ बेरी के फल के समान यज्ञभागको मुझेदियाकरो जिसके प्रतापसे मैं तृप्तहुआस्थितरहूं २४ और हे वृहस्पतिजी कृश और दुःखितमनवाला और राज्यभ्रष्टऔर यज्ञभागसेरहित पराक्रम और बलसे रहित और मूढ़ ऐसा मुझे रजी राजा के पुत्रोंने करदिया है २५ तब वृहस्पतिजी कह-ने लगे हे इन्द्र जो आपकी ऐसी बांछा है तो संशय मतकरो और मैं तेरेप्यारकेलिये अकर्त्तव्य नहींकरता भया २६ परन्तु हे देवेंद्र अब मैं ऐसा उपाय करूंगा कि जिसके प्रतापसे आप तत्कालही यज्ञभाग और अपने राज्यको प्राप्तहोगे २७ हे पुत्र तेरा मन ग्लानि को मत प्राप्तहो पीछे वृहस्पतिजीने ऐसा कर्म कराया कि इन्द्रका तेज बढ़ने लगा २८ और रजी राजा के पुत्रोंकी बुद्धि में मोह उपजनेलगा अर्थात् बाद प्रति-बाद प्रयोजनसे संयुक्त और धर्म का बैरी २९ और अति तर्कोंसे संयुक्त ऐसा अधर्मरूपी शास्त्र बना के अल्पबुद्धीवाले रजी राजाके पुत्रों को पढ़ानेलगा ३० इस शास्त्रकोपढ़के वे सब धर्म्मशास्त्रोंके बैरीहोगये ३१ और न्याय से रहित कर्मोंको करनेलगे और तिसबुरे मतको अंगीकार करते भये तिस अधर्म के प्रतापसे वे सब राजाके पुत्र नाशको प्राप्त होगये ३२ तबअति दुर्लभ त्रिलोकीके राज्यको वृहस्पतिजीके प्रतापसे इन्द्र

प्राप्त होगया ३३ पीछे राग द्वेषआदि से उन्मत्त हुये और ब्राह्मणोंके बैरी वीर्य्य और पराक्रमसे रहित काम क्रोधसे युक्त ऐसे मोहितरूपवाले रजी राजाके पुत्रोंको मारके अपने सिंहासन पै इन्द्र बैठा ३४ जो मनुष्य इस आख्यानको सुनै व धारण करै वह दुःखको नहीं प्राप्तहोता है अर्थात् उसका अन्तःकरण नहीं बिगड़ता है ३५ लोमहर्षणजी बोले कि हे मुनिजनो रंभ राजाके बंश, चला नहीं इसवास्ते अनेनाके बंश को कहते हैं अनेनाके अतियशवाला प्रतिक्षत्रपुत्रहुआ३६ प्रतिक्षत्रके सृंजय पुत्रहुआ सृंजयके जय पुत्र हुआ जयके बिजय पुत्र हुआ ३७ बिजयके कृती पुत्रहुआ कृतीके हर्य्यश्व पुत्र हुआ हर्य्यश्वके प्रतापवाला सहदेव पुत्र हुआ ३८ सहदेवके धर्मात्मा नदीन पुत्रहुआ नदीनके जयत्सेन पुत्र हुआ जयत्सेनके संकृती पुत्रहुआ ३९ संकृतीके अति यश वाला क्षत्रधर्मा पुत्रहुआ ऐसे अनेना राजा का बंश प्रकाशित किया अब क्षत्रवृद्धके बंशको श्रवण कर ४० क्षत्रवृद्धके सुनहोत्रपुत्र हुआ सुनहोत्रके परम धार्मिक और काश शल गृत्स मद इन नामोंवाले तीन पुत्र हुये गृत्समद के शुनक पुत्रहुआ शुनकके शौनक नामसे विख्यात ४१ ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्य शूद्र ये जन्मे और शल राजाके आर्ष्टिषेण पुत्र हुआ आर्ष्टिषेणके काश्य पुत्र हुआ ४२ काश्यके काश्यप पुत्र हुआ काश्यप के दीर्घतपा पुत्र हुआ दीर्घतपाके धन्व पुत्र हुआ धन्वके धन्वंतरि

पुत्र हुआ ४३ अर्थात् बहुत तप करने से फिर धन्वंतरि देवता मनुष्यों में जन्मलेता भया ४४ मुनि जनोंने पूछा हे सूतजी धन्वंतरि देवता मनुष्यों में कैसे जन्मा यह जानने की इच्छा है इस वास्तेहमारे लियेबिस्तारसे कहो ४५ तब लोमहर्षण जी बोले हे मुनिजनो धन्वंतरि की उत्पत्तिसुनो जैसे समुद्रको मथ अमृत निकासने के समय ४६ प्रथम एक कलशा निकसा तिस कलशे में अत्यंत शोभासे संयुक्त एक पुरुष निकस बिष्णुको देख वहीं स्थितरहा ४७ तब बिष्णुने कहा कि अप नाम जलसे तू उपजा है इसवास्ते तेरानाम अब्जधरा तब वह अब्ज विष्णु से कहनेलगा हेप्रभो मैं आपका पुत्रहूं ४८ इसवास्ते हे लोकस्वामिन् मुझको यज्ञभाग और स्थानदीजिये ऐसे कहनेसे बिष्णु भगबान् सत्य बचनकहनेलगे ४९ कि यज्ञका बिभाग और अग्निहोत्र आदि मैंने देवतों और मुनियोंके लिये बांटादिये हैं ५० इस वास्ते तेरे लिये यज्ञभाग आदि नहीं रहा है इससे अब तू देवताओंका प्रिय रहेगा ५१ और दूसरे जन्मसे संसार में ख्यातिको प्राप्तहोवेगा और जबतू गर्भ में प्राप्तहोवेगा तब अणिमादिक अष्टसिद्धि तुझको प्राप्तहोवेंगी ५२।५३ और तिसहीशरीरसे देवतापनेको प्राप्तहोवेगा और हेप्रिय चरु मंत्र ब्रतजप इनआदिसे ब्राह्मण क्षत्री बैश्य तुझको पूजेंगे ५४ और तू आयुर्वेद के आठ विभाग करेगा इस अवश्य भावीको ब्रह्माजी

जानते हैं ५५ इसलिये द्वापरयुगमें दूसरे शरीरको प्राप्तहोवेगा इसमें संशयनहीं ऐसे बरदान देके विष्णु भगवान् अंतर्द्धान होगये ५६ जब द्वापरयुग आके प्राप्तहुआ तब काशीका राजा धन्वनामसे विख्यात और पुत्रकी कामनासे उग्रतप करनेलगा ५७ और यह ध्यान करनेलगा कि जो देवता मुझको पुत्रदेगा तिसकी मैं शरणहुआ हूं अर्थात् समुद्र मथनेकेसमय जो अब्जनाम वाला देवताहुआहै तिसकी आराधना करता भया ५८ तब प्रसन्नहोके वही देवराजासे कहनेलगा कि जो तेरी इच्छा है सो बरमांग वही मैं हे राजन् तुझको दूंगा ५९ तब राजा कहनेलगा हे भगवन्‌जो आप मेरे पर प्रसन्नहुयेहैं तो आपही मेरे त्रहोके संसारमें विख्यात होजाओ तब वह देवबोला के ऐसेही होगा ऐसेकहकर वहीं अन्तर्द्धान होगया ६० तब तिस राजाकी रानी में धन्वंतरि नामसे विख्यात साक्षात् देव काशीका राजा और सब जीवों के रोगोंके नाशनेवाला ६१ ऐसा पुत्र हुआ पीछे यही धन्वंतरिकर्त्तव्य सहित आयुर्वेदको भरद्वाज ऋषिसेपढ़ के फिर विस्तारपूर्वक बना आठ प्रकारके शिष्यों के लिये प्रकाशित करताभया ६२ धन्वंतरि के केतुमान् पुत्र हुआ केतुमान् के भीमरथ पुत्र हुआ ६३ भीमरथ के दिवोदास पुत्र हुआ यही धर्मात्मा काशीका स्वामी हुआ ६४ इसीकालमें शून्यरूप काशीपुरी में क्षेमकनामराक्षस प्रबेशकरताभया ६५ क्योंकि बुद्धिमान्

निकुंभमुनिने काशीपुरीको शापदिया कि हजारबर्ष तक काशीपुरी शून्य रहेगी इसमें संशयनहीं ६६ जब काशीपुरीके लिये शापदेदिया तब दिवोदास राजा ने गोमती नदी के तटपै सब काशी बासियों को बसाके पुरी रचलई ६७ जिसपुरी में पहले भद्रश्रेण्य राजा का राज्यथा पीछे दिवोदास राजाने भद्रश्रेण्यके उत्तम धनुष धारण करनेवाले १०० पुत्रों का ६८ नाशकर अपने बलसे उस पुरी में अपना राज्य करलिया ६९ तब मुनिजनोंनेपूछा हे सूतजीकाशी पुरीको निकुंभमुनि किसवास्ते शाप देतेभये और जो सिद्धक्षेत्रको शापित करताभया ७० ऐसा निकुंभमुनि कौन था लोमहर्षण जी बोले कि हे मुनिजनो दिवोदास राजाप्रकाशित रूप काशीपुरी में बसकर राज्य करनेलगा ७१ इसी कालमें पार्वती सहित महादेवजी पार्वतीजीकी प्रीति करने के वास्ते हिमालयके समीपमें बसने लगे ७२ और महादेवजीकी आज्ञासे सब तपस्वी पार्षद पूर्वोक्त उपदेशों करके पार्वतीजीको प्रसन्न करनेलगे ७३ तब पार्वतीजी प्रसन्नहोती भई परन्तु पार्वतीकी माता मैना नहीं प्रसन्नहुई और बारंबार पार्वतीजी और महादेवजीकी निंदा करनेलगी ७४ और कहने लगी हे पुत्री पार्षदों सहित यह तेराभर्त्ता महादेव सबकालमें दरिद्रीही बनार है और इसके शीलता बिलकुल नहीं ७५ ऐसे माताके वचनको सुन स्त्री स्वभावसे क्रोधको प्राप्तहो और आश्चर्य्यमान महादेवके समीप ७६ मुखके

वर्णकोबिगाड़ पार्बतीजी महादेवजीसेकहनेलगीं हे देव
मैं इसजगह नहीं बसूंगी जहां आपका स्थान है ७७
उसजगह मुझको प्राप्तकरो तब महादेवजी त्रिलोकीके
स्थानोंको देखके पृथ्वी मंडल में सिद्धक्षेत्र काशीपुरी
को बसनेयोग्य बिचारतेभये ७८ परंतु दिवोदासराजा
के राज्यसेयुक्त उस काशीपुरीको बिचारसमीपमें स्थित
हुये निकुंभपार्षदसे कहनेलगे हे राक्षसेश अभी गमन
कर काशीपुरीको शून्यबनादे ७६ कोमल उपायसे
क्योंकि काशीपुरीका दिवोदासराजा अति बीर्य्यवाला
है तब निकुंभपार्षदजाके काशीपुरी में ८० कंडूकनाम
नापितको स्वप्न में दर्शनदेताभया और कहताभया हे
अनघ तू मेरास्थानरच मैं तेराकल्याण करूंगा८१ अ-
र्थात् मेरेरूपकी प्रतिमाबना काशीपुरीमें स्थापित करदे
तब स्वप्नकेपीछे इसी बिधिसे वह नापित मूर्त्तिको स्था-
पित करताभया ८२ और राजाको जनाके पुरीकेद्वार
पै उस मूर्त्तिकेलिये बहुतसी पूजा नित्यप्रतिकरताभया
८३ पीछे गंधधूप फूलोंकीमाला अनेक प्रकारकी बली
अन्नपान इन आदिसे अत्यंत पूजाहोनेलगी ८४ ऐसे
वह निकुंभपार्षद नित्यपूजाको प्राप्तहोनेलगा तब काशी
बासियों के लिये पुत्र द्रब्य आयु सब कामना आदि
हज़ारहां प्रकारके बरदेने लगा ८५ तब एक समयमें
सुयशानाम वाली काशी के राजाकी रानी और राजा
की भेजीहुई८६और सुन्दर स्वभाववाली और दिब्य
रूपवाली ऐसी उसमूर्त्ति स्थानके समीपमें आके नाना-

प्रकारकी पूजाकर एक पुत्र मांगनेलगी ८७ ऐसे बारंबार रोजके रोज पुत्रकी प्राप्तिके लिये पूजा करनेलगी परन्तु वह निकुंभ पार्षद पुत्र नहीं देताभया ८८ क्योंकि इस कारणसे कि मुझपै राजा क्रोधकरे तो कार्य्यकी सिद्धिहोवे पीछे बहुतकालमें राजाको क्रोध व्याप्तहुआ ८९ तो राजा कहनेलगा कि देखो यहमहाद्वार पै एक भूत नगरके मनुष्योंपै प्रसन्नहुआ सैकड़ों बरदेता है औरमुझको क्योंनहीं देता और मेरेमित्र इस नगरीमें अनेक प्रकारसे इसको पूजते भी हैं ९० तथापुत्रकी प्राप्तिके वास्ते मैंने अपनी रानीभी इसकी पूजाकेवास्ते बारंबार भेजी परन्तु यह देव मेरेलिये पुत्रनहीं देता इसवास्ते किसी कारणकरके कृतघ्नी है अबसे अगाड़ी मेरे सकाशसे विशेषकर सत्कारको प्राप्तनहीं होगा ९१ और इसीवास्ते मैं इस दुष्टदेवके स्थान को फोड़ के पृथ्वीमें मिलाऊंगा ऐसे निश्चय करके दुरात्मा काशी का राजा ९२ उस निकुम्भ नामवाले महादेवजी के पार्षदके स्थानको नाशकरताभया तब गिरेहुयेमकानको देखके वह गण राजाको शापदेताभया ९३ कि बिना अपराधके जो मेरास्थान गिरादिया है इसवास्ते आपही आप शून्यरूप तेरी पुरीहोजावेगी ९४ तिस शाप करके काशीपुरी शून्यहोगई ऐसे निकुम्भ पुरीको शाप देके महादेवजीके समीपको जाताभया ९५ तब आपही आप चारों तरफसे पुरी खालीहोगई तब तिसपुरी में अपना स्थान बना ९६ पार्वती के संग महादेवजी

बसनेलगे और कहा कि मैं इसस्थान को छोड़ अन्य
स्थानमें नहीं जाऊंगा तू इसीगृहको गमनकर ९७ जब
हँसके महादेवजीने अपनीबाणीसे यह कहदिया कि मैं
काशीबासको नहीं छोडूंगा ९८ इसीवास्ते सर्वदेव नम-
स्कृत महादेवजी सबकाल काशीपुरीमेंबसतेरहतेहैं ९९
और कृतयुग त्रेतायुग द्वापर इन तीनोंयुगोंमें साक्षात्
पार्वतीके संग महादेवजी काशी में बसतेरहे हैं १००
और कलियुगमें वह काशीमें महादेवजीका पुर दीखता
नहींहै १०१ और काशीपुरी तो बसतीही रहैहै ऐसे
काशीके वास्ते शापदियाहै १०२ और भद्रश्रेण्य राजा
के दुर्दर्भ पुत्रहुआ इसे दिवोदास राजाने बालक जान
दयासे छोड़दिया अर्थात् मारानहीं पीछे समयपाके
इस दुर्दर्भ ने दिवोदास राजाके सकाशसे सब पदार्थ
छीनलिये हैं १०३ दिवोदासके दृषद्वतीरानीमें प्रतर्द्दन
पुत्रहुआ प्रतर्द्दनके वत्सभार्ग इन नामोंवाले दो पुत्र
उपजे १०४ वत्सके अलर्क पुत्रहुआ अलर्कके सन्नती
पुत्रहुआ१०५और यह अलर्क काशीका राजा ब्रह्मण्य
और सत्यवादी हुआ और ऐसाभी सुनाहै १०६ कि
छांछठ हजारबर्षतक जवानरूपसे सम्पन्न यहराजारहा
है१०७और लोपामुद्राके प्रतापसे इसराजाको यह उमर
मिली है १०८ और इसीने शापकेअंतमें क्षेमकराक्षस
को मार फिर काशीपुरी बसाई है १०९सन्नतीके सुनीथ
नामवाला पुत्रहुआ सुनीथ के अतियशवाला क्षेम्य
नाम पुत्रहुआ ११० क्षेम्यके केतुमानवाला पुत्र हुआ

केतुमान् के सुकेतु पुत्रहुआ सुकेतुके धर्मकेतु पुत्रहुआ १११ धर्मकेतुके महारथी सत्यकेतु पुत्र हुआ सत्य-केतुके विभु पुत्र हुआ ११२ विभुके सुविभु पुत्र हुआ सुविभुके सुकुमार पुत्र हुआ सुकुमारके धर्मात्मा धृष्ट-केतु पुत्र हुआ ११३ धृष्टकेतुके वेणुहोत्र पुत्र हुआ वेणुहोत्रके भर्गनामपुत्रहुआ ११४ और पूर्वोक्त वत्सके वत्सभूमि पुत्रहुआ और भार्गवके भृगु पुत्रहुआ ११५ ऐसे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इन बंशोंमें हज़ारों काशके बंश में उपजे हैं अब नहुषके वंशको मेरेसे जान ११६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांसोमवंशेक्षत्रियप्रसूति नामएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजीबोले कि हे मुनिजनो विरजानामवाली पितृकन्यामें इन्द्रकेसमानतेजवाले १ और यति ययाति संयाति आयाति यांचिक सुयाति इननामोंवाले छःपुत्र नहुषकेहुये २ और इन्होंमें ययाति राजाहुआ तिन्होंमें यति बड़ा पुत्र हुआ और ब्रह्मभूत मुनि होके मोक्षको प्राप्तहुआ ३ और ययाति ककुत्स्थ कन्या और गौ नाम वाली तिसको प्राप्त हुआ ४ और यही ययाति पांचों भाइयों की पृथ्वीकोजीत ५ पीछे शुक्राचार्य्य की पुत्री देवयानीको और वृषपर्वा राक्षसकीपुत्री शर्मिष्ठाको बि-वाहताभया पीछे यदु तुर्वसु ये दोनोंपुत्र देवयानीकेउपजे और द्रुह्यु अणु परु ये तीनपुत्र शर्मिष्ठाके उपजे ६।७

और इसी ययाति राजाके लिये प्रसन्न हुआ इन्द्रमनके वेगकेसमान वेगवाले सफेदरंगके ८ दिव्य घोड़ोंसे संयुक्त परमप्रकाशरूप सुवर्णसे बनाहुआ रथदेताभया ९ जिसकरकेछः रात्रिमें संपूर्ण पृथ्वीको और इन्द्र सहित सब देवताओंको युद्धमें जीतताभया १० और यही रथ इन्होंके वंशमें सबके पासरहा ११ परन्तु कुरुके पौत्र जनमेजयके वक्तमें गर्गमुनिके पुत्रके शापसे १२ रथनाश को प्राप्तहुआ क्योंकि वह जनमेजय राजा १३ वाक्क्रूर नामवाले गर्गमुनिके पुत्रको मारताभया तब ब्रह्महत्या को प्राप्तहुआ लोहूकी गन्धसे संयुक्तराजा जहांतहां जाताभया १४ परन्तु पुरवासी मनुष्योंने त्याग दिया तब कहींभी सुखको प्राप्त न हुआ १५ तब इन्द्रोत्तनामवाले शौनकके शरणमें जाकेरहा तबयह शौनकमुनि इसजनमेजयके हाथसे अश्वमेधयज्ञ करावताभया तब इसराजाके शरीर से लोहूका गन्धदूरहुआ १६ तिस समयमें प्रसन्नहुये इन्द्रसे यही दिव्यरथ वसुनामवाले चंदेरीके राजानेलेलिया और वसुसे बृहद्रथनामवाले राजाने लिया १७ यहीरथ बृहद्रथसे जरासंधने लिया जरासंधकोमार यहीरथ भीमसेनने लिया १८ हे मुनिजनो भीमसेनने प्रीतिसे यहीरथ कृष्णमहाराजकोदिया और सात द्वीपोंसे संयुक्त इससंपूर्ण पृथ्वीकोजीत १९ ययातिराजा अपने पुत्रोंके लिये पांचभागकरताभया दक्षिण पूर्वकी दिशा अर्थात् अग्निकोण में तुर्वसुको राज्यदिया २० और पश्चिम दिशामें द्रुह्युको राज्य

दियाऔर उत्तरदिशामें अणुकोराज्यदिया और ईशान दिशामें यदुको राज्य दिया २१ और मध्यदेशमें पुरु को राज्य दिया ऐसे सातद्वीपों पर्य्यंतकी पृथ्वीकोयया-तिराजा अपने पुत्रोंके लिये विभाग कर २२ सबराज्य भार पुत्रोंकोदेके वृद्धअवस्थाको धारण करताभया२३ तब शस्त्रोंको त्याग पृथिवीको देख ययातिराजा प्रसन्न होके २४ यदुसे बोला हे पुत्र मेरी वृद्धावस्थाको तू ग्र-हणकर और तेरेरूपसे जवानहुआ मैं इस पृथिवीमें २५ तेरेविषे अपनी वृद्धअवस्थाको स्थापित करके विचरूंगा तबयदुकहने लगा मैंने अबतक कछु सुकृत नहीं कियाहै २६ और पानभोजन आदिसे उपजेबहु-तसेदोषवृद्ध अवस्थामें पीड़ादेतेहैं इसवास्ते हेराजन् तेरी वृद्धअवस्थाको मैं ग्रहणनहीं करसकता २७ और हे नृप मुझसे अति प्रियतेरे बहुतसे पुत्रहैं हे धर्मज्ञ तिन्होंमेंसे एककिसीको वृद्धअवस्था देनेका वरले तब कोपको प्राप्तहो ययातिराजा पुत्रकी निन्दाकरताहुआ कहनेलगा २८ हे दुर्बुद्धे मेराअनादर करके ऐसाकौन आश्रम व कौनधर्महै जिसका तू आचरण करेगा २९ ऐसे कहकर क्रोधमें प्राप्तहो यदुके लिये शापदेनेलगा कि हे मूढ़तेरी संतानको राज्यपदवी नहीं मिलेगी३० पीछे ययातिराजा तुर्वसु द्रुह्यु अणु इन तीन पुत्रोंसेवही पूर्वोक्त वृत्तांत कहनेलगा तबइन्होंनेभी राजाकाकहना नहींमाना३१ तब इन्होंके लिये भी शापदे के जो शाप पहले विस्तारपूर्वक कहचुकेहैं३२ वे सेहीचारों पुत्रोंको

शापितकर पीछे राजा पुरुसे कहनेलगा हेपुत्र तू मेरी वृद्धअवस्थाको ग्रहणकर और मैं तेरी तरुणअवस्था से पृथ्वी में विचरूंगा जो तू माने तब प्रतापवाला पुरु ३३ पिताकी वृद्धअवस्थाको ग्रहणकरताभया और पुरुकी तरुणअवस्थाको ययातिराजा ग्रहणकर पृथ्वी भरमें विचरताभया ३४ तब कामोंकेअंतको विचारता हुआ अपनी विश्वाचीरानीके संग चैत्ररथ बन में रमणकरने लगा ३५ परन्तु कामोंके भोगसे तृप्त नहीं हुआ तब अपने पुरुपुत्रसे वृद्धअवस्थाको ग्रहणकर ३६ तरुणअवस्था उलटी देताभया तिसी समय में हे मुनिजनो ययाति राजाने गाथागाई है तिसकोसुनो तिसके सुनने से मनुष्यकामदेवसे संकुचित होजाता है जैसे कछुआ अपने अंगोंको संकोचता है तैसे ३७ कभीभी कामों के उपभोगकरके कामशांतनहीं होताहै जैसे घृतसेअग्नि ३८ और जो इसपृथ्वी में अन्न सुवर्ण पशु स्त्री ये सबभी एक मनुष्य के वास्ते बहुत नहीं हैं इसवास्ते मनुष्यको प्रथमही शांतहोजाना चाहिये ३९ और जबसब प्राणियों में कर्मसे मनसे वाणी से पापका आचरण नहीं करता है तब ब्रह्मको प्राप्तहोता है ४० और जब अन्योंसे आप नहीं डरे है और न अन्यों को आप डरावे है और न आपइच्छाकरे है और न वैरकरता है तब ब्रह्मको प्राप्तहोता है ४१ और जो दुर्मति मनुष्योंसे त्यागी नहींजाती और जो वृद्धअवस्थाके संगवृद्ध नहीं होती ऐसी प्राणोंको नाशनेवाले

रोगके समान जो तृष्णा है तिसको त्यागने में सुख होताहै४२और वृद्धअवस्थाकेसंग केशभी वृद्धअर्थात् जीर्ण होजाते हैं और दांतभी जीर्ण होजाते हैं परन्तु धनकीआशा और जीवनेकी आशाजीर्ण नहीं होती ४३ और जो कामसुख है और स्वर्गादिक जो सुख है यह सब तृष्णाक्षयरूप सुखसे १६ सोलहवें हिस्सेभी नहीं है ४४ ऐसेभार्य्यासहित ययातिराजा कहकेबनमें वसा और बहुत कालतक उग्रतपको करनेलगा ४५ पीछे भृगुतुंगपै तपकरके भोजन आदिको छोड़देहको त्यागकर अपनी भार्य्या सहित स्वर्गमें प्राप्तहुआ ४६ तिसके वंशमें जो पांच ५ पुत्र हुये हैं तिन्होंके वंशोंसे यह संपूर्ण पृथ्वी व्याप्त हो रही है जैसे सूर्य्यकी किरणों से ४७ हे मुनिजनो प्रथम राजर्षियोंके माने यदुके वंशको सुनो जहां वृष्णिकुल में साक्षात् नारायणजन्म लेते भये ४८ इस पवित्ररूप ययातिके चरित्रकोपठन और श्रवण करने से स्वस्थ और सन्तानवाला और आयुवाला और कीर्तिवाला ऐसापुरुष होजाताहै४९॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांययातिचरितं नामद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवांअध्याय ॥

लोमहर्षणजी बोले–हे मुनिजनो पुरुके वंशको विस्तारसे सुनो १ सो प्रथम पुरुके वंशको कहताहूं पीछे द्रुह्यु अणु यदु तुर्वसु इन्होंके वंशोंको कहूंगा २

पुरुके महावीर्य्यवाला जनमेजय राजा पुत्रहुआ और जनमेजयके प्रचिन्वान् पुत्रहुआ यह पूर्व दिशा के राजाओंकोजीतताभया ३ प्रचिन्वान्के प्रवीरपुत्रहुआ प्रवीरके मनस्यु पुत्रहुआ मनस्युके अभयद पुत्रहुआ ४ अभयदके सुधन्वा पुत्रहुआ सुधन्वाके बहुगवपुत्र हुआ बहुगवके संयाति पुत्रहुआ ५ संयातिके अहंयाति पुत्रहुआ अहंयातिके रौद्राश्व पुत्रहुआ रौद्राश्व के घृताचीनामवाली अप्सरामें ६ ऋचेयु कृकणेयु कक्षेयु स्थंडिलेयु सन्नतेयु ७ दशार्णेयु जलेयु स्थलेयु महाबल वननित्य वनेयु इन नामोंवाले दशपुत्रहुये ८ और रुद्रा १ शूद्रा २ भद्रा ३ मलदा ४ शलदा ५ बलदा ६ सुरखा ७ खला ८ चला ९ गोचपला १० इन नामों वाली अप्सराओंके रूपोंसे उत्तम रूपोंवाली दशपुत्री हुईं ९ और इनदशोंको अत्रिवंशमेंउपजा और प्रभाकर नाम वाला विवाहता भया १० रुद्रामें इसी के सकाशसे यशवाला सोमपुत्र उपजा जब राहुने सूर्य्य हत करदिया तब आकाश से पृथ्वी में सूर्य्य पड़ने लगा ११ तब अंधेरेसे युक्त लोकमें इसीने प्रकाशकिया है तब पड़ते हुये सूर्य्यसे कहा तेरा कल्याणहो १२ उसी वक्त उसमुनिके वचनसे सूर्य्य पृथ्वीमें नहींपड़ा और इसीतपस्वीने अत्रिके बहुतसे गोत्र आत्रेयनामसे विख्यात प्रकाशितकिये पुत्रिकाधर्मवाली उन दशकन्याओंमें अतितपस्वी दशपुत्रोंकोउपजाता भया पीछे वेद कोजाननेवाले और गोत्रकोबढ़ानेवाले १३।१५ और

स्वस्त्यात्रेयनामसे विख्यात और धनसेवर्जित ऐसेमुनि होते भयेऔर पूर्वोक्त कक्षेयुके महारथी सभानर चाक्षुष परमंथुइननामोंवाले तीनपुत्रहुये सभानरके विद्वानूरूप कालानल पुत्रहुआ १८।१९कालानलके धर्मको जानने वाला सृंजय पुत्रहुआ सृंजयके वीर पुरंजयपुत्र हुआ २० पुरंजयके जनमेजय पुत्र हुआ जनमेजय के महाशाल पुत्र हुआ २१ महाशालके देवोंमें विख्यात और अति प्रतिष्ठावाला और उदारचित्त वाला ऐसा महामना पुत्रहुआ २२ महामनाके उशीनर और तितिक्षु इन नामोंवाले दो पुत्र हुये २३ और उशीनरके राजर्षिवंशज और नृगा कृम्या नवा दर्वा दृषद्वती २४ इन नामोंवाली पांच रानियों में पांच पुत्र उपजे पीछे उशीनरके नृगारानी में नृग पुत्र हुआ और कृम्या रानीमें कृमी पुत्रहुआ २५ और नवारानी में नव पुत्र हुआ और दर्वारानी में सुव्रत पुत्रहुआ और दृषद्वतीरानी में शिविपुत्र हुआ २६ ऐसे पांच पुत्रहुये शिविके शिवपनामसे विख्यातपुत्रहुये और नृगके यौधेय पुत्रहुये और शिविकेलोकमें विश्रुत २७।२८ और वृषदर्भ कैकेय मद्रक इन नामोंसेविख्यात चारपुत्रहुये तिन्होंके नामसे कैकेय मद्रक २९ वृषदर्भ सुवीर ऐसे देश विख्यात हुये हैं अब तितिक्षुके वंशको सुनो तितिक्षुके पूर्व दिशामें ३० उषद्रथनामवाला राजा पुत्र हुआ उषद्रथ के फेनपुत्रहुआ फेनके सुतपा पुत्रहुआ ३१ सुतपाके सुवर्णके तरकसवाला और महायोगी

ऐसा मनुष्य देहमें बली राजा पुत्र हुआ ३२ बली के अंग बंग सुह्म ३३ पुंड्र कलिंग इन नामोंवाले पांच पुत्र हुये और इसीवास्ते बालेयनामसे क्षत्रवंश विख्यात हुआ और इसी बलीके बंशमें ब्राह्मण भी पुत्र हुये ३४ प्रसन्नहुये ब्रह्माजीने इस बली के लिये वरदानकिया कि हे राजन् तू महायोगी होगा और कल्प के प्रमाण तेरा आयुहोगा ३५ और संग्राममें तुझको कोई जीत न सकेगा और धर्ममें प्रधानता तेरीरहेगी और त्रिलोकीमें तेरे पुत्रोंकी ख्यातिरहेगी ३६ और बलमें तेरे समान कोई नहीं रहेगा और धर्म्मतत्त्वको तू देखनेवाला होगा और चारोंवर्णोंके स्थापन करनेवाला तू होगा ३७ ऐसे ब्रह्माजीके वचनको सुन राजा बलीशान्तस्वरूपहुआ और इसीराजाकी सुदेष्णानाम वाली स्त्रियों में ३८ मुनियों में श्रेष्ठ दीर्घतपा मुनिके सकाशसे क्षेत्रज संज्ञावाले जो पूर्वोक्त पांचपुत्र हुये हैं ३९ तिन्हों को राज्यपै स्थापितकर कृतार्थ हुआ और योगात्मा ऐसाबली राजा ज्ञान को प्राप्तहो काल के अनुसार विचरता हुआ ४० बहुतसे कालमें अपने स्थानको प्राप्तहुआ और तिसके पांचों पुत्रोंके नामों से अंग बंग सुह्मक ४१ कलिंग पुंड्र इन नामोंवाले देश विख्यात हो रहे हैं अब मुझसे अंगके वंश को सुनो अंगके राजाओं का राजा दधिवाहन पुत्र हुआ ४२ दधिवाहनके दिविरथ पुत्रहुआ दिविरथके इन्द्रके समान पराक्रमवाला ४३ और विद्वान् ऐसा धर्मरथ

पुत्रहुआ पीछे धर्मरथके चित्ररथ पुत्रहुआ इसी धर्म-
रथमे विष्णुपद पर्वतमें ४४ यज्ञके समय इन्द्रके संग
अमृतका पानकिया चित्ररथके दशरथ पुत्रहुआ ४५
यही लोमपादनामसे विख्यातहुआ और इसीके शांता
नाम पुत्री हुई और इसी के ऋष्यशृङ्गमुनिकी कृपासे
चतुरङ्ग पुत्रहुआ४६चतुरंगके पृथुलाक्ष पुत्रहुआ ४७
पृथुलाक्षके चंप पुत्रहुआ इसने मालिनी पुरीका नाम
चंपाधरादिया४८चंपके पूर्णभद्रमुनिके प्रसादसे हर्य्यंग
पुत्रहुआ और इसराजाकेसमयमें ४९ ऋष्य शृंगमुनि
इन्द्रके ऐरावत हस्तीको अपने मंत्रोंके बलसे पृथ्वीमें
उतारताभया ५० हर्य्यंगके भद्ररथ पुत्र हुआ भद्ररथ
के बृहत्कर्मा पुत्रहुआ बृहत्कर्म्मा के बृहद्दर्भपुत्र हुआ
बृहद्दर्भके बृहन्मना पुत्र हुआ ५१ बृहन्मनाके जयद्रथ
पुत्रहुआ जयद्रथके दृढ़रथ पुत्रहुआ ५२ दृढ़रथके
विश्वजित पुत्र हुआ विश्वजित्के कर्णपुत्रहुआ कर्णके
विकर्ण पुत्र हुआ ५३ विकर्णके कुलको बढ़ानेवाले
१०० सौ पुत्र हुये और बृहद्दर्भका पुत्र बृहन्मनाराजा
पूर्वकहा है तिसके यशोदेवी और सत्यानामवाली
दो रानी हुईं ५४ सो यशोदेवीमें जयद्रथ उपजा और
सत्यारानी में ब्राह्मणों से शांतिमें श्रेष्ठ और क्षत्रियोंसे
शूरबीरता में श्रेष्ठ ऐसा विजयनाम वाला पुत्र हुआ
५५ विजयके धृति पुत्र हुआ धृतिके धृतव्रत पुत्र हुआ
धृतव्रतके सत्यकर्मा पुत्रहुआ ५६ सत्यकर्माके अधि-
रथ नामसे विख्यात सूतपुत्र हुआ यही अधिरथ नदी

में बहतेहुये कर्णको ग्रहणकर अपना पुत्र बनाताहुआ इसी वास्ते सूतका पुत्र कर्णकहाया ५७ यह संपूर्ण आपको प्रकाशित किया कर्णके वृषसेन पुत्रहुआ वृष-सेनके वृष पुत्र हुआ ५८ ऐसे सत्यव्रत और महात्मा और प्रजावाले और महारथी इसबंशमेंराजा प्रकाशित किये ५९ हे मुनिजनो जिसबंशमें जनमेजय राजा उपजा है उसबंश में रौद्राश्वके पुत्र ऋचेयुके वंशको सुनो ६० लोमहर्षणजीबोले कि हे मुनिजनो सबराजा-ओं से अन्त धृष्य और सब पृथ्वीमंडलमें एकराजा ऐसा ऋचेयु हुआ ६१ इसने तक्षक सर्प की ज्वलना नाम पुत्री में मतिनार पुत्र पैदा किया मतिनार के परमधार्मिक ६२ तंसु, प्रतिरथ, सुबाहु इन नामोंवाले तीन पुत्र और गौरीनाम से विख्यात और मांधाता की माता ऐसी एक कन्याहुई ६३ ये तीनों पुत्र वेद को जाननेवाले और ब्रह्मण्य और सत्यबादी और अस्त्र विद्यामें कुशल और बलवाले युद्ध में निपुण ऐसे होतेभये ६४ प्रतिरथके कण्व नाम पुत्र हुआ कण्वके मेधातिथि पुत्र हुआ और इसीसे कण्व द्विजहुआ६५ मेधातिथि के ब्रह्मवादिनी इलिनीनामवाली ऐसी कन्या उपजी तिसको तंसु विवाहता भया ६६ तंसुके धर्मकानेताऔर प्रतापवाला और ब्रह्मवादीऐसासुरोध पुत्र हुआ इस सुरोधके उपजानकीनाम वाली भार्य्या हुई ६७ और यहीभार्य्या दुष्मंत, सुष्मंत,प्रवीर, अ-नघ ६८ इननामोंवाले चारपुत्रोंको प्राप्तहुई पीछेदुष्-

मंतके शकुंतला भार्य्यामें सबजीवोंको दमन करनेवाला और दशहजार हाथियोंके बलको धारण करनेवाला ६९ और चक्रवर्त्ती और भरतनामसे विख्यात ऐसा पुत्रहुआ जिसके नामसे इसवंशमें सब भारत कहाये हैं ७० और एक समयमें जब दुष्मंत राजाने शकुंतला रानीको ग्रहण नहींकिया तब दुष्मंत राजाकेप्रति आकाशवाणी कहनेलगी माता तो भस्त्रा अर्थात् लोहारकी फुकनीके समान होतीहै और जिससे उपजा है उसीपिताका पुत्रकहावेहै ७१ इसवास्ते हे दुष्मंत राजन्पुत्रकी पालनाकर और शकुंतलाकाअपमान मत करै और अपने वीर्य्यसे उपजेपुत्रको उत्तम लोकमें ले जाया करता है ७२ और यह बालक तेरेसे उपजा है ऐसे शकुंतला ठीककहती है पीछे राजा भरतके पुत्र माताओंके कोपसे नष्टहोगये ७३ हे मुनिजनो यह मैं तुम्हारे प्रति कहताहूं मरुत देवताओंने ७४ बृहस्पतिकेपुत्र भरद्वाजको भरतका पुत्र बनाया और यही भरद्वाजके आख्यानको कहताहूं और भरद्वाजमुनिमरुत् यज्ञकरता भया ७५ तब भरद्वाजके वितथनाम पुत्रहुआ ७६ जब वितथका जन्म होताभया तबभरत राजा स्वर्गलोकको प्राप्त हुआ पीछे वितथको राज्यपै स्थापितकर भरद्वाज बनको गया ७७ वितथके सुहोत्र, सुहोता, गय, गर्ग, कपिल इननामोंवालेपांचपुत्रहुये ७८ सुहोत्र के काशिक और गृत्समती इननामों वाले दो पुत्रहुये ७९ गृत्समतीके ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ऐसेबहुत

से पुत्रहुये अब अजमीढके वंशको सुनो ८० अजमीढके नलिनी रानीमें सुशान्ति पुत्रहुआ सुशान्ति के पुरुजाती पुत्रहुआ पुरुजातीके बाह्याश्व पुत्रहुआ ८१ बाह्याश्वके देवताओं के समान उपमावाले और मुद्गल, सृंजय, बृहदिषु ८२ यवीनर, कृमिलाश्व इन नामोंवाले पांचपुत्रहुये इन्होंने बहुतसे देशोंकी पालना करी ८३ इसीवास्ते पंचालनामसे विख्यात हुये ८४ मुद्गलके अतियशवाला मौद्गल्य पुत्र हुआ ८५ मौद्गल्य के सुमहायशा ब्रह्मर्षि पुत्र हुआ ८६ और जिसके सकाशसे इन्द्रसेना वध्रस्वनामवालेपुत्रकोप्राप्त हुई पीछे वध्रस्वके मेनकारानी में ८७ दिवोदास राजा और अहल्या कन्या ये दोनों जन्मते भये पीछे अहल्याभार्य्या में शरद्वान् अर्थात् गौतमसे ८८ ऋषियों में श्रेष्ठ शतानंद पुत्र हुआ पीछे शतानंदके धनुर्वेद के पारको जाननेवाला सत्यधृति पुत्र हुआ ८९ पीछे एक समयमें अप्सराको देखके इसी सत्यधृतिका वीर्य्य शरोंके वनमें स्खलित होगया तब उस वीर्य्य से एक लड़का और एक लड़कीपैदा होतीभई ९० पीछे शांतनुराजा वनमें शिकार के वास्ते गया तहां उस लड़का लड़की को देख कृपा से ग्रहण करलिया था इसीवास्ते उस लड़काका नाम कृप और लड़की का नाम कृपी धरादिया गया ९१ ऐसे गौतमोंका वंश प्रकाशित किया गयाहै अब दिवोदास के बंशको वर्णन करते हैं ९२ दिवोदासके ब्रह्मर्षिरूप मित्रयु पुत्रहुआ

मित्रयु के सोम पुत्र हुआ ऐसे मैत्रेयनामवालों का भी वंश प्रकाशितकिया ९३ औरमहात्मारूप सृंजय के पंचजन पुत्र हुआ ९४ पंचजनके सोमदत्त पुत्र हुआ सोमदत्तके सहदेव पुत्र हुआ ९५ सहदेवकेसो-मक पुत्र हुआ ९६ सोमकके जतु पुत्र हुआ जतु के सौ पुत्रहुये तिन्हों में युवापुत्र पृषत् नाम से विख्यात द्रुपद का पिता हुआ ९७ पृषत् के द्रुपद हुआ द्रुपद के धृष्टद्युम्न पुत्रहुआ धृष्टद्युम्नके धृष्टकेतु पुत्र हुआ ऐसे सोमक वंशभी प्रकाशित कियागया ९८ और एक समयमें धूमनीनामवाली अजमीढ राजाकी रानी व्रत आदिसे समन्वित होके ९९ पुत्रकी प्राप्तिके अर्थ दश हजार वर्षोंतक उग्रतप करती भई और अग्नि में हवन करके पवित्र और परिमित भोजन करनेलगी १०० तब एक समय में अग्निहोत्रकी कुशाओं पे हे मुनिजनो शयन करतीभई तब उस धूमनीरानीके संग अजमीढराजा विषय करताभया १०१ तब धूम्र वर्ण-वाला और सुन्दरदर्शनवाला ऋक्षनाम से विख्यात ऐसापुत्र उपजा पीछे ऋक्षके संवरण पुत्र हुआ पीछे संवरणके कुरुपुत्र हुआ१०२इसीकुरुनेप्रयागमें आके पवित्र और रमणीय और महात्माजनोंसे सेवित ऐसा कुरुक्षेत्र विख्यातकरदिया १०३ और इसका वंश भी अतिबड़ा हुआहै जिसमें सबमनुष्य कौरवनामसे विख्यात होतेभये कुरुके सुधन्वा, सुधनु, परीक्षित, अरिमेजय इननामोंवाले चारपुत्रहुये १०४ सुधन्वा के

सुहोत्रपुत्रहुआ १०५ सुहोत्रके धर्मार्थका जाननेवाला च्यवनपुत्र हुआ च्यवनके कृतयज्ञपुत्र हुआ यही कृतयज्ञ यज्ञों के द्वारा धर्मों को जाननेवाला १०६ चैद्यारानी में इन्द्रके समान आकाशचारी और वीर और वसुनाम से विख्यात ऐसा पुत्र उपजाताभया १०७ वसुके गिरिकारानीमें महारथ,मगधराट्,वृहद्रथ १०८ कुश,मारुत्,यदु,मत्स्य,काली ऐसे नामोंवाले सात पुत्र हुये १०९ वृहद्रथके कुशाग्रपुत्रहुआ कुशाग्र के वृषभपुत्र हुआ ११० वृषभके पुष्पवान् पुत्र हुआ पुष्पवान् के सत्यहित पुत्रहुआ सत्यहितके धर्म को जाननेवालाऊर्जपुत्रहुआ १११ ऊर्जके शरीरसेदोभाग अलग २ पैदाहुये जराराक्षसीने दोनों भाग जोड़दिये इसवास्ते जरासंधनामवाला पुत्रहुआ ११२ इसनेसब क्षत्रियजीते और यह अतिबलवालाहुआ पीछे जरासंधके प्रतापवाला सहदेव पुत्र हुआ ११३ सहदेव के उदायु पुत्रहुआ उदायु के परम धार्मिक ११४ श्रुतशर्मा पुत्रहुआ यह मगधदेश में वासकरताभया और पूर्वोक्त परीक्षित के धार्मिक जनमेजय पुत्रहुआ ११५ जनमेजय के श्रुतसेन, उग्रसेन, भीमसेन इन नामोंवाले महारथी तीन पुत्र हुये ११६ और जनमेजय के सुरथ और मतिमान् इन नामोंवाले दो पुत्र अन्यभी हुये ११७ सुरथ के विदूरथ पुत्रहुआ पीछे विदूरथ के महारथी ऋक्षपुत्रहुआ ११८ और जनमेजय के वंशमें दो ऋक्षराजा हुये हैं और दो

परीक्षित हुये हैं ११९ और तीन भीमसेन और दो जनमेजय ऐसेहुये हैं दूसरे ऋक्षके भीमसेन पुत्रहुआ १२० भीमसेनके प्रतीपपुत्र हुआ पीछे प्रतीपके महारथी शांतनु, देवापि, वाह्लीक इननामोंवाले तीनपुत्र हुये १२१ शांतनुका बंश यह है जिस में आप उपजे और वाह्लीक का सप्तरत्नोंको बढ़ानेवाला राज्य हुआ १२२ वाह्लीक के महायशवाला सोमदत्त पुत्रहुआ सोमदत्तके भूरि, भूरिश्रवा, शल इन नामोंवाले तीन पुत्रहुये १२३ और पूर्वोक्त देवापि राजा देवताओं का उपाध्यायहुआ और च्यवनके कृतनामवाले पुत्रकेसंग इसकी मित्रताहुई १२४ यह शांतनुराजा कौरवों में प्रतापीहुआ अब शांतनुके बंशको कहते हैं जहां जनमेजय राजा जन्माहै १२५ शांतनुके गंगा रानीमें देवव्रत नामसे विख्यात पुत्रहुआ पीछे यहीदेवव्रत कौरवों का पितामह भीष्म नामसे ख्यातिको प्राप्तहुआ १२६ शांतनु राजासे कालीरानी में धर्मात्मा विचित्रवीर्य्य पुत्रहुआ १२७ वेदव्यासजी विचित्रवीर्य्य की रानियों में धृतराष्ट्र, पांडु, विदुर इन्होंको उपजाते भये १२८ धृतराष्ट्र गांधारीरानी में सौ पुत्रोंको उपजाता भया तिन्हों में ज्येष्ठपुत्र दुर्योधन राजाहुआ १२९ और पांडु के अर्जुन पुत्रहुआ अर्जुन के अभिमन्यु हुआ अभिमन्युके परीक्षित पुत्रहुआ परीक्षितके जनमेजय पुत्रहुआ १३० ऐसे कौरवबंश प्रकाशित कियागया अब तुर्वसु, द्रुह्यु, अनु, यदु, इन्हों के बंश कहेजाते हैं

१३१ तुर्वसुके वह्नि पुत्रहुआ वह्निके गोभानु पुत्रहुआ गोभानुके त्रैसानु पुत्रहुआ १३२ त्रैसानुके करंधमपुत्र हुआ करंधमके मरुत् पुत्रहुआ १३३ इस राजा ने यज्ञ बहुतकरी परंतु पुत्रकी संतान नहीं हुई किन्तु सम्मता नामवाली एक पुत्रीहुई १३४ दक्षिणा की जगह संवर्त्तके लिये दीगई तब तिस पुत्रीमें दुष्मन्त पुत्रहुआ है १३५ ऐसे ययाति राजाके शापसे तुर्वसु का बंश पौरव बंशमें मिलगया है १३६ दुष्मन्त के करुत्थाम पुत्रहुआ करुत्थामके अथाक्रीड़ पुत्रहुआ १३७ अथाक्रीड़के पांड्य,केरल, कोल, चोल इननामों वाले चारपुत्रहुये जिन्होंके नामसे पांड्य, चोल, केरल, कोल ऐसे देश विख्यातहुये हैं १३८ और द्रुह्यु के बभ्रु और सेतु इन नामोंवाले दो पुत्रहुये सेतु के अंगार पुत्रहुआ यहमरुतों का पतिहुआ १३९ इसके संग यौवनाश्व राजाका चौदह महीनेतक युद्धरहा परन्तु अति कष्टसे यौवनाश्वने इसे मारदिया १४० अंगारके गांधारपुत्र हुआ जिसके नामसे गांधारदेश विख्यात है १४१ और गांधारदेश में अति उत्तम अश्वउपजते हैं और अनुके धर्मपुत्रहुआ धर्म के धृत पुत्रहुआ १४२ धृतके दुदुहपुत्रहुआ दुदुहके प्रचेता पुत्रहुआ प्रचेताके सुचेतापुत्रहुआ ऐसे अनुकाबंशभी प्रकाशितकिया १४३ अब मैं ज्येष्ठ और उत्तमतेजवाले यदुकाबंश बिस्तारसे कहताहूं आपसुनो १४४ लोमहर्षणजीबोले कि हे मुनिजनो यदुके देवपुत्रों के समान

सहस्रद, पयोद, क्रोष्टा, नील, अंजिक इन नामोंवाले पांच पुत्र हुये १४५ सहस्रदके परम धार्मिक हैहय, हय, वेणुहथ इननामोंवाले तीन पुत्र हुये १४६ हैहयके धर्म्मनेत्र पुत्र हुआ पीछे धर्म्मनेत्र के कार्त्त पुत्र हुआ कार्त्तके साहंज पुत्र हुआ १४७ जिसने साहंजनीनाम पुरी रची साहंजके महिष्मान् पुत्र हुआ १४८ जिसने माहिष्मतीपुरी रची महिष्मान् के भद्रश्रेण्य पुत्र हुआ १४९ यह काशीका राजा हुआ पहले कहचुकेहैं भद्रश्रेण्यके दुर्दमनामपुत्रहुआ १५० दुर्दमके कनक पुत्र हुआ कनकके लोकमें विख्यात १५१ और कृतवीर्य, कृतौजा, कृतकर्मा, कृताग्नि इन नामोंवाले चार पुत्र हुये कृतवीर्य के अर्ज्जुन पुत्र हुआ १५२ जिसने हजार बाहुओंके प्रताप से सात द्वीपोंमें राज्यकिया यह सूर्य्यके समान तेजवाले रथसे अकेला पृथ्वीको जीतता भया १५३ और यहीदश हजार बर्षोंतक उग्र तपकरके अत्रिकेपुत्र दत्तात्रेय जी की पूजा करताभया तब दत्तात्रेयजीने चारबर दिये तिन्होंमें अर्जुनने कहा किमेरे हजारभुजा होजावें प्रथम यह बरमांगा १५४ पीछेकहा कि अधर्ममें प्राप्तहुये मुझको सत्पुरुष निवारण करें यह दूसरा बरमांगा पीछे उग्र कर्त्तव्यसे पृथ्वीको जीत धर्म्म करके प्रसन्न करूं ऐसे तीसराबरमांगा १५५ पीछे बहुतसे संग्रामों को जीत और हजारहा शत्रुओंको मार उग्रसंग्राम में मुझसे अधिक पुरुषके हाथ मेरीमृत्यु होवे यह चौथा

अर्जुन राजाके युद्धके समय हजारबाहु प्रकटहुये १५७ और इस राजाने सातद्वीप,पर्वत,समुद्र और नगरों संयुक्त संपूर्ण पृथ्वी जीती १५८ फिर इस ने सातों द्वीपों में सातयज्ञ किये १५९ और सब यज्ञोंमें एक दक्षिणाके बदले लक्ष दक्षिणादी और सबयज्ञोंमेंसुबर्ण के यज्ञस्तंभ और सुबर्णकीही बेदी बनाई १६० उस की सब यज्ञोंमें बिमानों पर स्थित और भूषणों से भूषित देवते गन्धर्ब और अप्सरा नित्यप्रति समीप उपस्थित थीं १६१ और उसकी यज्ञ में महिमा से बिस्मित बरीदासकेपुत्र नारद नामसे बिख्यात गंधर्ब ने यह गाथागाई १६२ नारद कहने लगे कि यज्ञ, दान,तप,पराक्रम और श्रुत में इस सहस्राबाहु अर्जुन राजाकीगतिको कोईराजा न प्राप्तहोवेंगे १६३ यहराजा ढाल,तलबार,धनुष,बाण को धारण कर और रथ में स्थितहो सातोंद्वीपोंमें बिचरताहुआ योगी मनुष्योंकी दृष्टिमें आताहै १६४ और अपने प्रभावसे प्रजा की रक्षा करनेमें इसका द्रब्य कभी नाशनहीं होता और न इसेकभी शोक व बिभ्रम उपजताहै १६५ पचासीहजार बर्षांतक इस चक्रवर्त्ती राजाने राज्यकिया १६६ यही पशुओं और क्षेत्रोंकी रक्षाकरता रहा १६७ और यही योगके प्रतापसे मेघरूप होके वर्षाभी करतारहा १६८ यहीशरदऋतुमेंसूर्यकी किरणोंके समानहजार बाहुओं से शोभित भया १६९ और इसीराजा ने कर्कोटक सर्प के पुत्रों को जीतकर माहिष्मती पुरीमें मनुष्यों के

बीच में सर्पोंको बसाया १७० इसी राजा ने बर्षाकाल में समुद्रके बेगकेलिये क्रीड़ाकरतेहुये अपनी बाहुओंसे समुद्रके बहुतसे अलग अलग स्रोतकिये १७१ और इसी राजा के क्रीड़ाके समय संकित हुई नर्मदा नदी सन्मुख आई १७२ जब इस राजाने हजार बाहुओंसे समुद्रको क्षोभित किया तबचेष्टासे रहित पातालबासी महाराक्षस भी भयभीत भये १७३ जब वह उस समुद्र को जिसमें उसने लहरें चूर्णित करदीं मच्छ और महा मच्छ चलायमान करदिये और तीव्रपवन के बेग के समान झागोंके समूह उपजादिये १७४ पूर्वोक्त समुद्र मथनकी तरह क्षोभित करनेलगा १७५ तबउसराजा को देख के महासर्प भी भयभीत भये इसी राजा ने पांचबाणोंसे सेनासहित लंकाकेपति रावणको मोहित कर १७६ और अपने पराक्रमसे जीत पकड़ के माहिष्मती पुरीमें बांधाथा १७७ पर अर्जुन के स्थानमें बँधेहुये रावणको सुनके १७८ पुलस्त्यऋषिने अर्जुन के समीप जाके रावणको छुटाया १७९ प्रलयके मेघों के समान जिसके बाहुओं का शब्द हुआकरता था १८० अति आश्चर्य है कि परशुरामजीने उसी राजा के हजार बाहू तालबनके समान काटदिये १८१ एक समय इस राजा के समीप आ अग्निने भिक्षा मांगी तब इसने सातो द्वीपों पर्यंत भिक्षा देदी १८२ तब अग्निपुर,ग्राम और देशोंको जलानेलगा और इसी राजाके प्रभावसे सब पर्वत और बन अग्निने जला-

ये १८३ बरुण के पुत्र का शून्य और रमणीक आश्रम को भी अर्जुनकीही सहायतासे अग्निने जलाया १८४ तब बरुणका पुत्र आपव नाम मुनि क्रोधसे अर्जुनको शापदेके कहनेलगा कि हे राजन्! तूने मेरेआश्रमकी रक्षा नहीं की इसलिये जमदग्नि का पुत्र परशुराम तपस्वी तेरे हजार बाहुओं को काटके और वेग से मथके तुझको मारेगा १८५ लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो! यही वर पहले इस राजाने दत्तात्रेयसे भी लियाथा इसलिये मुनिके शापसे परशुरामजीने राजा को मारा १८६ और इस राजाके सौ पुत्रोंमें से युद्धमें केवल पांचपुत्र शेष बचे १८७ जिनके शूरसेन, शूर, धृष्णोक्त, कृष्ण और जयध्वजनाम थे इनमें से जयध्वज अवन्तीपुरीका राजा हुआ १८८ जयध्वजके महाबल वाला तालजंघ पुत्र हुआ और तालजंघ के सौ पुत्र हुये उनके वंशमें १८९ बीतिहोत्र, सुजात, भोज, आवंती, तौंडिकेर, भरत, सुजात्य, इननामोंसे विख्यात तालजंघ उपजे १९० जो बिस्तारके भयसे यहां नहीं गिनायेगये केवल वृषआदि यादवगिनायेजाते हैं १९१ वृषके मधुपुत्र हुआ और मधुके १०० पुत्रहुये तिनसे वृषणका बंशचला १९२ इसीलिये वृषणके बंशके सब लोग वृष्णीकहाये; मधुके सब संतान माधव कहाये और यदुके यादव कहाये १९३ जो मनुष्य नित्यप्रति इसकार्त्तवीर्यार्जुनके जन्मका वर्णनकरेगा तिसके द्रव्य का नाश न होगा और नहीं हुआ द्रव्यभी फिर मिल-

जावेगा १९४ ऐसे ययातिराजा के पांचों पुत्रोंके बंश बर्णन करे जो पंच महाभूतों के सदृश संसारको धारण कररहे हैं १९५ और इन पांचों बंशोंको सुनने से धर्म अर्थको जानने वाला राजा आत्मज पंचकको बशमें करता है १९६ और संसार में दुर्लभ रूप पांचबरों को प्राप्त होताहै १९७ अर्थात् आयु, कीर्त्ति, पुत्र, ऐश्वर्य्य और पृथ्वी को पाता है १९८ हे मुनियो! अब यदुके पुत्रक्रोष्ठा के बंशको सुनो जिसके श्रवण करनेसे सब पापों का नाश होजाता है और जिस बंश में साक्षात् विष्णु भगवान् ने जन्मलिया १९९॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांययातिबंशकीर्त्तनं नामत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

चौदहवां अध्याय॥

लोमहर्षणजी बोले कि हे मुनिजनो! क्रोष्टुके गांधारी और माद्री दोभार्याथीं गांधारी में महाबलवाला अनमित्र पुत्र उपजा १ और माद्रीरानी में युधाजित् और देवमीढुष नामक दो पुत्रहुये इन्हीं तीनों से तीन प्रकार का बंशचला २ फिर वृष्णी और अन्धक नामक दो पुत्र और हुये वृष्णी के स्वफल्क और चित्रक नामक दो पुत्रहुये ३ और हे मुनिजनो! यह धर्मात्मा स्वफल्क जिसदेशमेंबसै तिसदेशमेंव्याधि और अनावृष्टि का भय नहीं होता ४ एक समय काशिराज के राज्यमें तीन बरसतक इन्द्रने वर्षा न की ५

और जब उस राज्यमें यही स्वफल्क बसायागया तब इन्द्र ने बर्षाकरी ६ तब काशिराज ने स्वफल्क को गांजनी नामवाली पुत्रीदी यह गांजनी रानी ब्राह्मणों के लिये नित्यप्रति गौवोंकादान कियाकरतीथी ७ क्योंकि जब यह अपनी माताके पेटमें स्थित बहुत बर्षोंतक न जन्मी तब इसका पिता कहनेलगा ८ कि, हे गर्भ ! तू जल्द जन्म को प्राप्तहो; तुझको सुखप्राप्तहोगा तू उदरमें किसवास्ते स्थितहै ? तबगर्भ स्थित यह कन्या कहनेलगी कि, नित्यप्रति मैं गौवोंकादान कियाकरूंगी ९ जो आप इसकहने को मानो तो मैं जन्मलूं और जब इसके बचन सुन पिताने नित्यप्रति गौका देना अंगीकार किया तब यह जन्मी १० स्वफल्कके दाता और यज्ञ करनेवाला अक्रूर नामक पुत्रहुआ और उपमद्गु, मद्गु, नुदर, अरिमेजय, अविक्षिप, उपेक्षु, शत्रुघ्न, अरिमर्द्दन ११ धर्मधृक्, यतिधर्मा; गृध्न, नोजा, अंतक, आवाह, प्रतिवाह पन्द्रहपुत्र और एक सुन्दरी नामक कन्या १२ भी स्वफल्ककी रानीसे उपजी अक्रूरके उग्रसेना रानीमें देवताके तेजको धारण किये प्रसेन और उपदेव नामक दो २ पुत्र हुये १३ और पूर्वोक्त चित्रक के पृथु, विपृथु, अश्वग्रीव, अश्वबाहु, सुपार्श्वक, गवेषण, १४ अरिष्टनेमि, अश्व, सुधर्मा, धर्मभृत्, सुबाहु, बहुबाहु नामक पुत्र और श्रविष्ठा और श्रवण नामिनी दो कन्या पैदा हुई १५ पूर्वोक्त देवमीढुषके अश्मकी रानीमें शूर पुत्र हुआ और शूरके भोज्यारानी में दश

पुत्र हुये १६ तिनमेंसे वसुदेवके जन्मके समय आकाश में नक्कारे बजे १७ और शूरके स्थानमें फूलोंकी वर्षा होनेलगी १८ वसुदेवके समान मनुष्यलोकमें कोईभी रूपमणि नहीं हुआ और वह चन्द्रमाके समान कांति हुआ १९ वसुदेवके जन्मके पीछे देवभाग, देवश्रवा, अनाधृष्टि, कनवक, वत्सबान्, गृंजिम २० श्याम, शमीक और गंडूष नामक नौपुत्र शूरके और उपजे और पृथुकीर्त्ति, पृथा, श्रुतदेवा, श्रुतश्रवा २१ राजाधिदेवी नामिनी पांच पुत्री भी शूरसेनके हुईं पृथाको मातामह कुंति भोजराजाने मांगा २२ तब शूरराजाने कुंतिभोजके लिये पृथाको दिया इसलिये कुंतिभोजकी पुत्री पृथा का नाम कुंति हुआ २३ अन्त्य राजाके श्रुतदेवामें जगृहु पुत्र हुआ और चैद्यके श्रुतश्रवारानीमें २४ पूर्व जन्ममें हिरण्यकशिपु नामसे विख्यात दैत्यराज और महाबल वाला शिशुपाल पुत्र हुआ २५ वृद्धशर्मा के पृथुकीर्त्ति रानीमें करूषदेशका पति और बीर २६ और अति बलवाला दन्तवक्त्र पुत्र हुआ कुंतिभोजकी पुत्री कुंतीका बिवाह पांडुराजासे भया २७ जिसमें धर्मराज के सकाशसे धर्मोंका जाननेवाला युधिष्ठिर पुत्र उपजा वायुके सकाशसे भीमसेन पुत्र हुआ; इन्द्रके सकाशसे मनुष्यलोकमें जिसके समान कोई भी योद्धा नहींहै और इन्द्रके समान पराक्रम वाला अर्जुन पुत्र हुआ २८ पूर्वोक्त वृष्णिवंशमेंके अनमित्र राजाके शिनि पुत्रहुआ २९ शिनिके सत्यक पुत्र हुआ; सत्यकके सात्यकि पुत्र

हुआ ३० सात्यकिके भूमिपुत्र हुआ और भूमिके युगन्धर पुत्र हुआ ३१ अनाधृष्टिके अश्मकी रानीमें अतियश वाला निनर्त्तशत्रु पुत्र हुआ ३२ और देवश्रवाके शत्रुघ्न पुत्र हुआ जन्मसेही इसकी निषादों ने रक्षा करी थी ३३ और उन्हीं में यह रहाथा इसलिये यह एक लव्य नामसे विख्यात भील कहाया ३४ बसावान् के कोई संतान नहीं हुई तब वसुदेवने अपने कौशिक नामक पुत्रको उसे दिया ३५ और जब गंडूषके सन्तान न हुई तब श्रीकृष्णने चारुदेष्ण, सुचारु, पंचाल और कृतलक्षण नामक चारपुत्र उसको दिये ३६ जो संग्राम से कभीभी निवृत्त नहीं और जो रुक्मिणी में उपजा छोटा पुत्र ३७ जिसके चलते समय हजारोंकाग पीछे पीछे चला करतेथे और उसीके दियेहुये मिष्ट पदार्थों को भोजन किया करतेथे ३८ ऐसा चारुदेष्ण हुआ पूर्वोक्त कनवकके तंद्रिज और तंद्रिपाल नामक दोपुत्रहुये ३९ गृंजिमके बीर और अश्वहनु नामक दो पुत्र हुये और श्यामके शर्मीक पुत्र हुआ ४० यह भोजसंज्ञा वाला होनेसे अपने को निंदित माननेलगा पर राजा के उत्तम राज्यको प्राप्त हुआ शमीकके जातशत्रु पुत्र हुआ ४१ अब वसुदेवके पुत्रोंका वंशकहाजाता है तिसको सुनो ऐसे बहुत शाखावाला ४२ और तीनप्रकार से संयुक्त वृष्णीके वंशको धारण करनेसे अनर्थभागी मनुष्य नहीं होताहै ४३ लोमहर्षणजी बोले कि हेमुनिजनो! वसुदेवके ४४ पौरवी,रोहिणी, मदिरा,धरा,४५

वैशाखी, भद्रा, सनात्री, सहदेवा, शांतिदेवा, संदेवा, देवरक्षिता, वृकदेवी ४६ उपदेवी औरदेवकी १४ भार्य्याथीं जिनमेंसे अंतकी दो तो भोगपत्नीथीं ४७ और पौरवी औररोहिणी जोबाह्लीककी पुत्रीथी सोवसुदेवजीकी बड़ी पटरानी हुई ४८ इस रोहिणीमें वसुदेवजीके सकाशसे राम, सारण, शठ, दुर्द्दम, दमन, श्वाभ्र, पिंडारक, उशीनर नामक आठ पुत्र ४९ और चित्रा और सुभद्रानामिनी दो पुत्री हुईं ५० वसुदेवजीसे देवकी रानीमें अति यशवाले श्रीकृष्णजी जन्मे रामसे रेवतीमें निशठ पुत्र हुआ ५१ सुभद्रामें अर्जुनसे अभिमन्यु पुत्र हुआ और अक्रूरसे काशी कन्या रानीमें सत्यकेतु पुत्र हुआ ५२ वसुदेवकी और सातरानियोंमें जो पुत्र उपजे तिनको सुनो ५३ शांतिदेवा रानीके भोज और विजय नामक दो पुत्र हुये; सुदेवारानीके वृकदेव और गदनामक दो पुत्र हुये ५४ और वृकदेवी रानी में अवगाह पुत्र हुआ ५५ एक समय देवकराजाके पुरोहित गार्ग्यमुनि के पौरुषकी परीक्षाके लिये यादवपक्षमें रहनेवाले कोई पुरोहितने ५६ उक्त मुनिके लिंगको छुआ पर गार्ग्य मुनिका बीर्य स्खलित न हुआ और न लिंगका उत्थान नही हुआ ५७ तब उस पुरोहितने यादवोंकी सभामें गार्ग्यमुनि को नपुंसक बताया तब सब यादव हँसने लगे और मुनिभी इस हालको सुनके क्रोधकर ५८ काले लोहेके समान होगये फिर बारहवें बर्ष में कोप की शांति होनेसे गोपोंकी स्त्रियोंके वेषको धारण करने

वाली गोपाली नाम अप्सराके संग भोग करताभया ५९ तब गार्ग्यके सकाशसे और महादेवजीकी कृपा से उस मनुष्यरूप गार्ग्यकी भार्यामें गर्भ ठहरा ६० और अति बलवाला कालयवन नामसे विख्यात बालक जन्मा ६१ इसको रणमें बैलके पूर्वार्द्ध शरीरके समान शरीरवाले अश्व लेचलतेथे और पीछे सन्तान से रहित यवन राजाके स्थानमें वृद्धिको प्राप्तहुआ इस कारणइसको कालयवन कहतेहैं ६२ यह युद्धकी कामना कर ब्राह्मणोंसे पूछनेलगा६३ और नारदमुनिने वृष्णियोंका कुल युद्ध करनेके वास्ते बताया तब वह एक अक्षौहिणी सेना लेके मथुरापुरीके समीप गया और ६४ वृष्णिकुलमें अपने दूतको भेजा तब वृष्ण्यंधक वंशके सब मनुष्य श्रीकृष्णके आश्रय होके ६५ कालयवन के भयसे इकट्ठेहो विचार करनेलगे और सबोंकी बुद्धिमें यही निश्चय हुआ कि यहांसे भागनाही उत्तम है ६६ निदान सब रमणीय मथुरापुरीको त्यागके कालयवन को शिवरूप मानतेहुये द्वारकापुरी में प्रवेश करनेकी इच्छा करनेलगे ६७ जो मनुष्य इस कृष्णके जन्मको पर्वकालमें पवित्र व जितेंद्रियहोके श्रवणकरे व करावेगा वह सब प्रकारके ऋणोंसे मुक्त होके सुखको प्राप्त होगा ६८ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांकृष्णवंशानुचरितं नामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

लोमहर्षणजी बोले, हे मुनिजनो! क्रोष्टुके अति यश वाला वृजनीवान् पुत्र हुआ और वृजनीवान्के स्वाही और स्वाहा कृतांबर नामक दो पुत्र हुये १ स्वाही के उषद्र पुत्र हुआ जिसने बहुत दक्षिणाओंसे संयुक्त अनेक प्रकारके यज्ञकरे २ और उनके प्रतापसे चित्ररथ पुत्र हुआ ३ चित्ररथके बीर; यज्ञ करनेवाला और बिपुल दक्षिणादेनेवाला राजर्षि शशबिंदु पुत्र हुआ ४ शशबिंदुके अति यशवाला पृथुश्रवा पुत्र हुआ ५ पृथुश्रवाके उतर और सुयज्ञ नामक दो पुत्र हुये और सुयज्ञके ऊखन पुत्र हुआ। ऊखनके स्नेयु पुत्रहुआ ६ स्नेयुके मरुत् पुत्र हुआ और मरुत्के कंबल बर्हिष पुत्र हुआ। इस कंबलबर्हिषने बिपुलधर्म किया ७। ८ और उसके शतप्रसूतिपुत्रहुआ। शतप्रसूतिकेरुक्मकवचपुत्र हुआ ९ जो अच्छे धनुष और अच्छे कवचवाले सौ राजाओंको पैने बाणोंसे मारके उत्तम शोभाको प्राप्त हुआ १० व रुक्मकवचके बीरों को मारनेवाला पराजित् पुत्र हुआ और पराजित्के अति बीर्य्यवाले ११ रुक्मेषु, पृथुरुक्म, ज्यामघ, पालित औरहरिनामक पांच पुत्र हुये और पराजित्ने पालित और हरिनामक दो पुत्रोंको बिदेहोंके लिये दिया १२ पृथुरुक्मके आश्रय से रुक्मेषु राजा हुआ और इन दोनोंने अपने भाई ज्यामघको निकास दिया तब वह एक आश्रममें जा

बसा १३ जहां उसे प्रशांत व अप्रशांत नामक ब्राह्मणों ने बोध कराया। तब धनुषको धारणकर और रथमें सवारहो १४ नर्मदाके किनारे पर बिचरताहुआ मेकला मृतिकावति और ऋक्षवान् पर्वतोंको बिजयकर शुक्तिमतीपुरी में जाबसा १५ फिर राजा ज्यामघके सैव्या नामनी और सती रानीहुई। यद्यपि इस राजाके संतान नहींहुई परन्तु इसने अन्य भार्य्याकी इच्छा नकी १६ निदान एक समय इस राजाने युद्धमें बिजय पाया और एक कन्या प्राप्तहुई उसे ग्रहणकर अपनी रानीसे कहने लगा कि यह तेरे पुत्रकी बधूहै १७ यह सुन रानी कहनेलगी कि मेरे तो पुत्रही नहीं उपजा तो तू इसे बधू कैसे मानताहै? १८ तब राजा कहनेलगा फिर इसीकन्याके तपसे वृद्धरूप वाली तेरे सकाशसे बिदर्भ पुत्र होगा और उसकी यह बधू होगी। इसप्रकार राजाके कहनेसे ऐसही बिदर्भ हुआ १९ व बिदर्भ के इसी बधूमें और शूरबीर और युद्धमें बिशारद कृथ और कौशिक नामक दो पुत्र २० और भीमनामक तीसरा पुत्र हुआ। भीमके कुंती पुत्र हुआ २१ कुंतीके धृष्ट पुत्रहुआ और धृष्टके परमधार्मिक २२ आवंत, दशार्ह और बिषहर नामक तीन पुत्रहुये। दशार्हके व्योमा पुत्रहुआ; व्योमाके जीमूत पुत्रहुआ २३ जीमूतके वृकती पुत्रहुआ; वृकतीके भीमरथ पुत्रहुआ; भीमरथके नवरथ पुत्रहुआ २४ नवरथके दशरथ पुत्रहुआ; दशरथके शकुनी पुत्र हुआ; शकुनीके करम्भ पुत्र हुआ; करम्भके देवरात पुत्र

हुआ २५ देवरातके देवक्षत्र पुत्र हुआ और देवक्षत्र के देवोंके समूहके समान अति यशवाला देवक्षत्र पुत्र हुआ। देवक्षत्रके २६ मीठी बाणीवाला मधु पुत्र हुआ; मधुके वैदर्भीरानीमें पुरुद्वान् पुत्रहुआ और २७ पुरुद्वान्के ऐक्ष्वाकीभार्य्यामें सबगुणोंसेसंयुक्त और सात्वकोंकी कीर्त्तिको बढ़ानेवाला सत्वान् पुत्र हुआ २८ ऐसे ज्यामघ राजाके वंशको जानने से व कीर्त्तन करने से प्रजावाला पुरुष होके परम प्रीतिको प्राप्त होताहै २९ लोमहर्षणजी बोले,हेमुनिजनो!सत्वसे संयुक्त, भजिन, भजमान, दिव्य, देवावृध, अंधक, वृष्णि नामक ३० सात्वत पुत्रोंको कौशल्या रानीने जना ३१ भजमानके बाह्यक और उपबाह्यक नाम्नि दो भार्य्याथीं बाह्यक भार्य्यामें ३२ कृमि,क्रमण, धृष्ण, शूर और पुरंजय नामक पांच पुत्र हुये और उपबाह्यक रानी में ३३ अयुताजित्, सहस्राजित्, शताजित् और दासक चार पुत्र हुये ३४ पूर्वोक्त देवावृध राजा उत्तम पुत्रकी प्राप्ति के लिये उग्र तपको करनेलगा ३५ और आत्माका ध्यान कर सदैव पर्णाशानदीके जलको छूनेलगा तब पर्णाशा नदीने इस राजाको देख प्रीतिकी ३६ और बिचारने लगी कि, जैसे पुत्रकी राजा बांछाकरताहै तैसा पुत्र इस रानीमें न होगा ३७ यह विचार पर्णाशा नदीने परम रूपसे संयुक्त कुमारी कन्याके रूपको धारण कर राजाके साथ बिवाह करनेकी इच्छा प्रकटकी ३८ और राजा ने भी उसे अंगीकार किया ३९ निदान उसमें अति तेज-

वाला गर्भ ठहरा और वह नदीरूपी रानीने दशवें महीने ४० सब गुणोंसे संयुक्त और बभ्रु नामसे विख्यात पुत्रकोजना। इसवंशको पुराणके जाननेवालोंसेभी ४१ मैंनेसुनाहै कि,देवावृधकेगुणोंको जैसे सन्मुखकहाकरते हैं तैसेही दूरसे भी कहा करते हैं ४२। फिर मनुष्योंमें श्रेष्ठ बभ्रु और देवताओंके समानदेवावृध और सात हजार छाछठ पुरुष ४३ ये सब अमृतको प्राप्तहुये और यज्ञका करनेवाला; दानका देनेवाला; विद्वान् और ब्रह्मण्य बभ्रुका वंश हुआ ४४ जिसमें मार्त्तिवत् आदि भोज हुये। अंधकके काश्यकी पुत्रीसे ४५ कुकुर,भजमान,शर्मकम्बल और बर्हिषनामक चारपुत्रहुये; कुकुर के धृष्णु पुत्र हुआ;धृष्णुके४६ कपोतरोमापुत्र हुआ;कपोतरोमाके तैतिरि पुत्र हुआ;तैतिरिके पुनर्बसु पुत्रहुआ, पुनर्बसुके अभिजित् पुत्र हुआ ४७ अभिजित्के आहुक पुत्र और आहुकी पुत्री ये दो संतानहुई ४८ आहुकके बिषयमें ऐसा बर्णन करतेहैं कि वह शुद्ध परिवार युक्त और किशोरके समान उपमावाला ४९ जब गमन करता तब पुत्रोंवाले,उदार चित्त; हजारों शस्त्रोंवाले, ५० शुद्धकर्मवाले और यज्ञ करनेवाले लोग राजा के चारोंतरफ गमनकिया करते। उसके पूर्वदिशामें ध्वजा वाले दशहजार हाथी ५१ और मेघके समान शब्द करनेवाले दशहजार रथ चला करते थे ५२ और उत्तर दिशामें भी इक्कीसहजार हाथी और इक्कीसहजार रथ चला करते५३ वे अंधक फिर आहुकी नामवाली

अपनी बहनको अवंतियों के लिये देतेभये ५४ और आहुकके काश्यारानीमें देव गर्भोंके समान देवक और उग्रसेन दो पुत्र हुये। देवकके देवताओंके समान ५५ देववान्, उपदेव, संदेव, देवरक्षित नामक चारपुत्र ५६ और देवकी, शांतिदेवा, संदेवा, देवरक्षिता ५७वृकदेवी, उपदेवी और सुनाम्नी सात पुत्रीहुईं। ये सातों वसुदेव को बिवाहीगईं ५८ उग्रसेनके कंस, न्यग्रोध, सुनामा कंक, शंकु, सुभूषण ५९ राष्ट्रपाल, सुतनु और अनाधृष्टि नामक नवपुत्र६० और कंसा, कंसवती, सुतनु, राष्ट्रपाली और कंका पांचपुत्रीहुईं६१ऐसे इनसंतानोंसेसंयुक्त कुकुरके वंशमेंउत्पन्न उग्रसेन बिख्यात हुआ। इन अमित बलवाले ६२ कुकुरोंके वंशको धारण करने से उत्तम बंश और उत्तम प्रजाको मनुष्य प्राप्तहोता है ६३ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांवृष्णिवंशकीर्त्तन न्नामपंचादशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

लोमहर्षणजी बोले; हे मुनिजनो! पूर्वोक्त भजमानके विदूरथ पुत्रहुआ, विदूरथके राजाधिदेय पुत्रहुआ और १राजाधिदेयके अतिबलवाले दत्त, अतिदत्त, शोणाश्व, श्वेतबाहन २ समी, दत्तशर्मा, दत्तशत्रु और शत्रुजित् नामक पुत्र और श्रवणा और श्रविष्ठा दोपुत्री हुईं ३ समीके प्रतिक्षत्र पुत्रहुआ; प्रतिक्षत्र के स्वयंभोज पुत्र हुआ; स्वयंभोजके हार्दिकपुत्र हुआ और ४ हार्दिक के

अति पराक्रमवाले कृतबर्मा; शतधन्वा ५ भिषग्;बैत-
रण; सुहृद और अतिदत्त नामक पुत्र और कामदा
और कामदात्तिका नाम्नी ६ दापत्री हुई। कंबलबर्हिष
केअस्मोजा और नाशमोजा नामक दोपुत्रहुये७ और
जब अस्मोजा के संतान नहीं हुई तब राजा अन्धकने
सुदंष्ट्र,सचारु और कृष्ण नामक अपने तीन पुत्रों को
उन्हेंदिया ८ पूर्वोक्त क्रोष्टु से गान्धारीमें अनमित्र पुत्र
उपजा ९ और माद्रीमें युधाजित्पुत्र उपजा यहपहले
कहचुकेहैं १० तिसी अनमित्रके निघ्न पुत्रहुआ; निघ्न
के प्रसेन और सत्राजित् दोपुत्रहुये ११ सत्राजित्द्वार-
कापुरीमें जाबसा और स्यमन्तकमणिको समुद्रसेपाया
यही सत्राजित् सूर्यका मित्रहुआ एक समय प्रभात
को वह रथ में बैठ १२ समुद्रमें स्नान करने व सूर्य
का ध्यान करने के लिये गया १३ और सूर्य के लिये
उपस्थान करने लगा १४ और जब स्पष्ट मूर्त्ति-
मान और तेजसे संयुक्त मंडलवाले सूर्य भगवान्
सामने स्थित प्रतीत हुये १५ तब सत्राजित् राजा
कहने लगा कि हे देव! जैसे तेजसे संयुक्त मैं आपको
आकाशमार्गमें देखता हूँ तैसेही अब मेरे सामने भी
तेजसे संयुक्त प्रतीत होतेहो १६ इसलिये आपकेसंग
मेरी मित्रता में क्या विशेष हुआ? यह सुनके सूर्य ने
स्यमन्तक नामवाले मणि रत्नको १७ अपने कंठ से
उतार एकांतमें स्थापितकरदिया तब राजाने अतितेज
रहित सूर्यको देखा १८ और प्रीतिसे संयुक्तहो दोघड़ी

तक कथा वार्त्ता करता रहा। जब सूर्यनारायण चलने लगे १९ तब राजा कहनेलगे, हेभगवन्! जिसमणिसे आप लोकोंको प्रकाशित करतेहो वह मणिरत्न मुझ को देना उचित है २० यह सुन सूर्यने उस स्यमन्तक मणिको सत्राजित् के लिये देदिया और वह उस मणि को कंठमें बांध द्वारकामेंप्रवेशकरनेलगा २१ तबचारोंतरफसे द्वारकाबासी मनुष्यदौड़े कि, यहसूर्य आताहै। द्वारकामें ऐसाआश्चर्य दिखाके राजाअपनेस्थानमेंचला गया २२ औरफिरउस दिव्यरूप स्यमन्तकनामवाली मणिको प्रेमसहितअपनेभाई प्रसेनजित्को भेंटदी २३ वहमणि नित्यप्रति सुबर्णको दियाकरतीथी और जहां वह मणि रहती थी तहां समयपर बर्षा होतीथी और ब्याधि का भय न होताथा २४ निदान इतनेगुण उस मणिमें बिख्यात होने लगे कि, उस मणिको प्रसेनसे श्रीकृष्ण ने लेनाचाहा २५ परन्तु प्रसेनने नदी और सामर्थ्य वाले श्रीकृष्णजीने भी फिरउस मणिको हरने की इच्छा नकी २६ निदान एक समय उस मणिको धारण कर प्रसेन शिकार खेलने के लिये बनमें गया और बनमें बिचरनेवाला एक सिंह उसेमार २७ और उसमणिको लेकर वहीं दौड़नेलगा तब अतिबलवाले जाम्बवान् ऋक्षराजने उससिंहकोमार मणिरत्नको ले लिया और अपने बिल में प्रवेश गया २८ प्रसेनके मरजाने और स्यमन्तक मणिमें कृष्ण की लालसा रहने का वृत्तांत सुन सब द्वारका बासी शंकित होने

लगे २९ अर्थात् यह विचारनेलगे कि, प्रसेनके मारने में श्रीकृष्ण शामिलहैं। तब मिथ्यादोषसे दोषित धर्मात्मा श्रीकृष्ण कहने लगे कि; मणिको मैं लाऊंगा। ऐसी प्रतिज्ञाकर सखन सहित वे वनको गये ३० और वहां जाके जिस जगहसे प्रसेन शिकार खेलनेलगा था घोड़ाके पैरोंके चिह्नोंके द्वारा खोजतेहुये ३१ ऋक्षवान् और विंध्य पर्वतोंमें ढूंढ़ते ढूंढ़ते थकगये तब एकस्थान में अश्व सहित प्रसेनको प्राणोंसे रहित पृथ्वीमें पड़ा हुआ देखा परन्तु मणि उसकेपास नहींथी। निदान अगाड़ी जाके ऋक्षराजका माराहुआ सिंह देखा३२ और ऋक्षराजके पैरोंके चिह्नोंके अनुसार जाम्बवान् ऋक्ष की गुहाके समीप जापहुंचे ३३ तो उस बिलसे स्त्री का शब्द सुना जो जाम्बवान्के पुत्रको मणिसे खिला रहीथी और यह कहती थी कि; हे बालक! मतरो ३४ वह धाय यह भी कहतीथी कि, प्रसेन को सिंहने मारा और सिंहको जाम्बवान् ऋक्षराजने मारा तब यह स्यमन्तकमणि मिली है इसलिये हे बालक! रो मत यह मणि तेरी है ३५ ऐसे प्रकट शब्द सुन भगवान् श्रीकृष्णने बिलके द्वारपर ३६ बलदेवजी सहित बहुतसे यादवोंको स्थापितकर उसमें प्रवेश किया ३७ भीतर जाके श्रीकृष्णने जाम्बवान् को देखा और ३८ जाम्बवान्भी श्रीकृष्णको देखके दौड़ा और बाहुयुद्ध करने लगा। निदान जब बाहुयुद्ध करतेकरते इक्कीसदिन बीत गये ३९ और श्रीकृष्ण बिलसे न निकले तब बलदेव

जी आदि सब द्वारकामें आके कहनेलगे कि; श्रीकृष्ण मारेगये इसमें संशय नहीं ४० इधर श्रीकृष्णजी बल वाले ऋक्षराज जाम्बवान्को जीत, जाम्बवान्की जाम्बवती कन्याके संग बिवाह कर ४१ और अपने कलंकके दूर करनेके निमित्त स्यमन्तकमणिकोभी ग्रहण कर व ऋक्षराजसे आज्ञा लेकर बिलसे निकल ४२ भार्य्या सहित द्वारकापुरीमें आये। ऐसे अपने कलंक को दूरकर ४३ श्रीकृष्णने सब यादवों की सभा में वह स्यमन्तकमणि सत्राजित्को दी ४४ सत्राजित्के दश भार्य्याथीं तिनमें सौ पुत्र हुये ४५ और उनमें से भंगकार, व्रातपति और उपस्वावान् ४६ नामक तीन पुत्र विख्यात हुये और स्त्रियोंमें उत्तम व विख्यात सत्यभामा; दृढ़व्रता ४७ और प्रस्वापिनी तीनपुत्री हुईं। इन तीनों पुत्रियोंको सत्राजित्ने श्रीकृष्ण को बिवाह दिया ४८ भंगकारके गुणों में सम्पन्न और सम्पत्से बिश्रुत सभाक्ष भंगुकार नामक दो पुत्र हुये ४९ ऐसे श्रीकृष्णके इस मिथ्याभिशापको जो मनुष्य श्रवणकरै उसको मिथ्याभिशाप अर्थात् मिथ्या दोष कभी नहीं लगते ५० ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्यमन्तकप्रत्यानयनं षोड़शोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय॥

लोमहर्षणजी बोले, हे मुनिजनो ! जिस स्यमन्तक

मणि रत्न को श्रीकृष्ण ने सत्राजित् को दिया उसकी प्राप्तिमें जो अनर्थ हुआ वह सुनो १ पहले इस सत्य- भामा और स्यमन्तकमणिको ग्रहण करने की अक्रूर को चाहनाहुई २ एकसमय द्वारकामें कृष्ण नहीं थे तब महा बलवाले शतधन्वाने रात्रिमें सत्राजित्को मार और स्यमन्तकमणिको ग्रहणकर अक्रूरको सौंपदी ३ तब उस मणिरत्नको पा अक्रूर शतधन्वासे कहनेलगा कि, यह वृत्तांत किसी से न कहना कि, अक्रूरके पास मणिहै ४ यदि श्रीकृष्ण तुझसे कुछ कहेंगे तो हम तेरी सहायता करेंगे और ये सब द्वारकाबासी मेरे बश हैं इसमें संशय नहीं ५ निदान जब सत्राजित् मारागया तब दुःखसे पीड़ितहो सत्यभामाने रथमें बैठ वारणावत नगर को गमन किया ६ और श्रीकृष्ण के समीप जा शतधन्वा के हाथ से सत्राजित् की मृत्युको प्रकट कर और पार्श्व की तरफ बैठ रोने लगी ७ तब श्रीकृष्ण दग्धहुये पांडवों की जलक्रिया कर और अन्य कर्मोंके लिये सात्यकी को नियुक्तकर ८ जल्द द्वारकामें आके बलदेवजी से कहनेलगे ९ कि, प्रसेनको सिंहने मार- डाला और शतधन्वाने सत्राजित् को मारडाला इस- लिये हे प्रभो! अब स्यमन्तक मणिका स्वामी मैं हूँ अर्थात् मणि मुझको मिलनी चाहिये १० और रथमें स्थितहो जल्द शतधन्वा को मारने से स्यमन्तक मणि हमारा होसक्ताहै ११ निदान शतधन्वा और श्रीकृष्ण का आपस में घोरयुद्ध होनेलगा तब शतधन्वा अक्रूर

को सब दिशाओं में देखने लगा १२ परंतु जब युद्ध में प्रवृत्त शतधन्वा और श्रीकृष्ण को देख सामर्थ्य वाला अक्रूर शतधन्वा की सहाय को न आया १३ तब भयसे पीड़ित शतधन्वाने भागने का विचार किया और चारसौ कोश से भी अधिक चलने वाली १४ हृदया नामसे विख्यात घोड़ी पर जो कि उसके पासथी सवारहो श्रीकृष्णसे युद्ध करताही करता भागा १५।१६ तब रथमें स्थित हो बलदेव और श्रीकृष्ण भी उसके पीछेलगे परन्तु जब चारसौकोशपर पहुँचके शतधन्वा की घोड़ी का परिश्रम और खेदसे प्राणान्त होनेलगा तब श्रीकृष्ण बलदेवजीसे कहने लगे १७ कि, हे महाबाहो! आप यहीं स्थित रहोमैं पैदल जाकर मणिरत्नको ले आऊँगा १८ निदान श्रीकृष्णने परमास्त्रके प्रताप से मिथिला पुरी के समीप शतधन्वा को मारा १९ परन्तु शतधन्वा के पास स्यमन्तक मणि नहीं मिली तब श्रीकृष्ण बलदेव जीके पास लौटआये और बलदेवजी कहने लगे कि, मणिरत्न मुझको सौंप दो २० श्रीकृष्ण कहनेलगे कि, शतधन्वा के पास मणितो नहीं निकसी। इस वचनको सुन क्रोधसे युक्तहुये बलदेवजी श्रीकृष्ण को बारम्बार धिक् धिक् कहनेलगे २१ और फिरबोले कि,हे कृष्ण! "भ्रातृवश मैंने तेरा यहकर्त्तव्य सहा अच्छा तेरा कल्याण हो मैं जाताहूँ न द्वारकामें मेरा कुछ कर्त्तव्य है; न वृष्णियों के संगमेरा कर्त्तव्य है और न तेरे संग मेरा कर्त्तव्य है" २२ ऐसे कह के जब

बलदेवजी ने मिथिलापुरी में प्रवेश किया तब सब कामनाओं से मिथिलापुरी के राजा ने बलदेव जी की पूजाकी २३ और इसीकालमें बुद्धिमानों मेंश्रेष्ठ अक्रूर ने नानाप्रकार के यज्ञ किये २४ और स्यमन्तक की रक्षा के निमित्त दीक्षामय कवचभी धारण किया २५ फिर नानाप्रकारके रत्न और धनोंको यज्ञोंमें साठवर्षों तकनियुक्त कर २६ बहुत अन्न और दक्षिणा वाले और सब कामोंको देनेवाले अक्रूर यज्ञ विख्यात हुये २७ जब मिथिलापुरीमें बलदेवजी रहनेलगे तब राजादुर्यो-धन मिथिलापुरी में जाके दिव्यरूपी गदाशिक्षा को बलदेव जीसे सीखनेलगा २८ इधर वृष्णयन्धक वंश केपुरुषोंकेसाथ अक्रूर द्वारकासे निकस गया २९।३० तब ज्ञातिभेदके भयसे श्रीकृष्णने अक्रूरको त्यागदिया जब अक्रूर चलागया तब द्वारका में इन्द्र ने वर्षा न की ३१ और अनावृष्टि के भयसे देशदुःखित होनेल-गा।।निदान जब कुकुर,अन्धक आदि वंशोंमें होनेवाले द्वारका बासियोंने अक्रूर को मनाके ३२ द्वारकापुरी में फिर बसाया तबइन्द्रने वर्षाकी ३३ शील संयुक्त स्वसारा नामसे विख्यात कन्याको अक्रूर ने श्रीकृष्णको प्रसन्न करने के लिये दिया ३४ पर योगबलसे श्रीकृष्ण अ-क्रूर के पास मणिको जान सभाके मध्यमेंस्थित अक्रूर से कहनेलगे कि, हे प्रिय! जो स्यमन्तकमणि आपके पासहै वह मुझको देनीयोग्यहै ३५।३६ मुझमें जो मणि सम्बन्धी क्रोधथा वह अब शांत हुआ है क्योंकि उस

कालको साठबर्ष व्यतीत होगये ३७ श्रीकृष्णके ऐसे वचनों को महा मतिवाले अक्रूर ने सुनके वहमणि श्री कृष्ण को देदी ३८ पर श्रीकृष्णने प्रसन्नहो फिर उसे अक्रूर को लौटालदिया ३९ तब कृष्णके हाथसे स्यमन्तकमणि को ग्रहण कर और कंठमें बांध अक्रूर सूर्य के समान प्रकाशित हुये ४० ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्यमन्तकमण्युपाख्यानसहित सोमवंशकथनन्नामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

मुनियोंने कहा, हे सूतजी! आपने भरतों और सब राजाओं का महत् आख्यान १ और देवता, दानव, गन्धर्व, सर्प, राक्षस, दैत्य, गुह्य और सिद्धों इन्होंके २ अति अद्भुत कर्म, बिक्रम और धर्म निश्चय एवम् नानाप्रकारकी दिव्य कथा और उत्तम जन्म चरित्र कहे ३ और सब प्रजापतियों; गुह्यकों और अप्सराओं की सृष्टि ४ और स्थावर जंगम नानाप्रकार का जगत्भी कहा और हमनेसुना ५ जो मनुष्योंको पुण्य फलों और कानों को सुखका देनेवाला और अमृतके समान तृप्त करनेवाला पुराणरूपी यह आख्यान है ६ परन्तु अब इस पृथ्वीके सम्पूर्ण मण्डलका बर्णन श्रवण करने की हमारी इच्छाहै। हे धर्मज्ञ! यह हमको जाति आश्चर्यहै और आप कहनेके योग्यहैं ७ इसलिये जितने समुद्र, द्वीप, बर्ष, पर्वत, वन और पवित्र नदियां हैं ८ और

जितने प्रमाण वाला; जिस आधार वाला और जितना आत्मत्व वाला इस जगत् का संस्थान है तिसे आप यथा योग्य कहो ६ लोमहर्षणजी बोले, हे मुनि-जनो! मैंने यह वृत्तांत संक्षेपसे कहाहै इसविषयका विस्तारपूर्वक वर्णन सौबर्षोंमेंभी नहींहोसक्ता १० हेद्विजो! जंबूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप नामक सातद्वीपहैं ११ और ये सातों द्वीप क्रमसे क्षारसमुद्र, ईखके समुद्र, मदिरा के समुद्र, घृतके समुद्र, दही के समुद्र, दूधके समुद्र, जलके समुद्र से वेष्टित हैं १२ इन सातोंद्वीपों के बीच में जंबूद्वीप स्थितहै और जंबूद्वीपके मध्यमें सुवर्ण का मेरुपर्वत स्थितहै १३ मेरुपर्वत चौरासी हजार योजन ऊँचा; सोलह हजार योजन पृथ्वी के भीतर विस्तृत, बत्तीस हजार योजन मस्तकमें विस्तृत १४ और सोलह हजार योजन मूलमें विस्तृतहै और कमल विशेषवृक्ष की तरह स्थित होरहाहै १५ उसके दक्षिण भागमें हिमवान्, हेमकूट और निषध नामकतीन पर्वत स्थित हैं और उत्तरमें नील, श्वेत और शृंगवान् नामकतीन पर्वत स्थितहैं १६ और ये सब दो हजार योजन ऊंचे और दोहजार योजन विस्तृतहैं १७ मेरुके दक्षिण ओर भारत वर्ष, किम्पुरुषवर्ष और हरिवर्ष हैं १८ उत्तरओर रम्यक-वर्ष, हिरण्मयवर्ष और उत्तर कुरुवर्ष स्थित कहेहैं १९ ये सब अलग अलग नौ नौ हजार योजनके विस्तारके हैं २० मेरुके पूर्वओरमन्दराचल; दक्षिण ओर गन्धमादन

पर्वत;पश्चिमके तरफ बिपुलपर्वत और उत्तरके तरफ सुपार्श्व पर्वत स्थितहै२१और इन चारों पर्वतोंमें क्रम से कदम्ब,जामुन, पीपल और बटके ग्यारहसौ योजन विस्तृत ध्वजारूपी वृक्ष स्थितहैं २२उन पर्वतोंमें महा-गजके समान प्रमाणवाले और बहुत सुन्दरफल चारों तरफ बिखरते रहतेहैं २३ और उन फलोंके स्वच्छरस से यमुनानदी प्रवृत्त होरही है। वहांके बसनेवाले उस रसको पीते हैं २४ और उस रसके पान करनेवालों के पसीनामें दुर्गन्ध, बुढ़ापा, इन्द्रियदोष, ग्लानि आदिका लेशमात्रभी नहीं उपजता है २५ तिस नदीके उत्तर तीर पर उत्तम वायु चलता है और वहां जांबूनदाख्य और सिद्धोंका भूषण सुवर्ण स्थित है २६ मेरुपर्वत के पूर्व भद्राश्ववर्षहै;पश्चिममें केतुमालवर्षहै और इनदोनों के मध्यमें इलावृतवर्षहै २७ मेरुके पूर्व चैत्ररथ बनहै; दक्षिणमें गन्धमादनहै; पश्चिमके तरफ बैभ्राजहै और उत्तरकी ओर नन्दनबन और २८ अरुणोद,महाभद्र, सुशीतोदक और मानस नामक चारकुंडहैं २९ शीतांत, चक्रमुंज, कुररी और माल्यवान् यह चार पर्वत मेरुसे पूर्वकी ओर स्थितहैं ३० त्रिकूट, शिखर,पतंग, रुचक, निषध आदिपर्वत दक्षिणमें स्थितहैं ३१ और शंखकूट, ऋषभ, हंस,नाग,कांतार आदिपर्वत उत्तरकीओर स्थि-तहैं३२ चौदहहजार योजन विस्तृत महापुरी मेरुपर्वत पर स्थितहै ३३ और हे विप्रेंद्रो उस पर्वतके ऊपर आठों दिशा और बिदिशाओंमें इन्द्र आदि लोकपालों

के पुर बसते हैं ३४ और विष्णुके पैरसे निकसी और इन्दुमण्डलको प्लवन करती हुई ब्रह्माकी पुरीके चारों ओर आकाशसे गंगाकी धारा पड़ती है ३५ और चारों दिशाओंमें प्राप्त होती है जहां सीता अलकनन्दा रक्षु और भद्रा नामसे विख्यातहैं ३६ सीता नामवाली गंगा पर्वतसे पूर्वकी ओर भद्राश्वखण्डमें जाके पवित्र करती है ३७ अलकनन्दा नामवाली गंगा दक्षिण की ओर भारतखण्डमें जाके समुद्रमें प्राप्त होती है ३८ रक्षुनाम वाली गंगा पश्चिमदिशाके पर्वतोंसे होकर तुमालबर्ष में जाकर समुद्रमें मिलती है ३९ और भद्रानामवाली गंगा उत्तरके पर्वतों और कुरुदेशोंमें होकर उत्तरके समुद्रमें मिलती है ४० माल्यवान् और गन्धमादन पर्वतों के मध्य में कमल की कर्णिकाके समान मेरुपर्वत स्थितहै ४१ और भारत केतुमाल भद्राश्व और कुरु ये चारोंलोकरूपी कमलके पत्र कहे हैं ४२ जठर और देवकूट ये दोनों पर्वत मर्य्यादा कहेजाते हैं और ये दोनों दक्षिणोत्तर अग्रभागवाले हैं नील निषध इनदोनों पर्वतों तक विस्तृत हैं ४३ और गन्धमादन और कैलास पूर्वकी ओर अस्सीयोजन विस्तारसे व्यवस्थितहैं ४४ निषध और पारिपात्र ये दोनों मर्यादा पर्वत कहाते हैं और दक्षिणोत्तरकी ओर विस्तृत हुये नील और निषधतक व्यवस्थित होरहे हैं ४५ त्रिश्रृंग और जारुचि ये दोनों बर्ष पर्वतहैं और पूर्वकी ओर विस्तृत होकर समुद्र तक व्यवस्थित हैं ४६ हे द्विजो यह मैंने मर्यादा

पर्वत कहे हैं जो मेरुपर्वतके चारों दिशाओंमें दोदो प-
र्वत स्थितहैं ४७ और ये सब मेरुके चारोंदिशाओं में
केसर पर्वतहैं ४८ और इन पर्वतोंकी सिद्ध चारणों से
सेवित अन्तर्द्रोणी है तहां लक्ष्मी विष्णु इन्द्र सूर्य्य
आदि देवतोंके ४९ रमणीक और सुन्दर पुरहैं जो किं-
करोंसे रक्षित अनेक प्रकारके स्थान कहे हैं ५० और
उन पर्वतोंकी सुन्दर गुफाओंमें गन्धर्व यक्ष राक्षस दैत्य
दानव दिनरात्रि क्रीड़ा करते रहते हैं ५१ स्वर्गके प्राप्त
होने योग्य मनुष्य वहां जासक्ते हैं पर पापी मनुष्य सै-
कड़ों जन्मों में भी नहीं जासक्ते हैं ५२ और हे द्विजो
भद्राश्ववर्षमें हयशिरा नामसे प्रसिद्ध विष्णु स्थित हैं
केतुमालबर्ष में बाराह नामसे प्रसिद्ध विष्णु स्थित हैं
भारतवर्षमें कूर्म और मत्स्यरूपधारनेवाले विष्णु स्थित
हैं ५३ उत्तर कुरुदेशमें गोविंद और जनार्द्दन नामोंसे
प्रसिद्ध विष्णु स्थित हैं और विश्वरूप तथा सर्वेश्वर
हरिनामोंसे प्रसिद्ध विष्णु सब जगह स्थितहैं ५४ और
सबोंके आधारभूतभी विष्णुही हैं इन पूर्व्वोक्त स्थानों
में अनेक तरहके आनन्द हैं यहां शोक परिश्रम उद्वेग
क्षुद्भय आदिका लेशभी नहींहै और स्वस्थ और दुःखों
औरचिंतासेरहितप्रजा बसतीहै ५५।५६ वहांदशहजार
अथवा बारहहजार बर्षोंकी मनुष्यों की आयु होती है
५७ और इन्द्र बर्षा नहीं करता है किन्तु चन्द्रमा की
किरणोंसे अमृतरूप जल बर्षताहै वहां कृतयुग आदि
चौकड़ियोंकी भी संस्था नहीं है ५८ इन सब बर्षों में

भी सात २ पर्वत स्थित हैं हे द्विजोत्तमो उन पर्वतों से सैकड़ों निकसीहुई नदियां बहती हैं ५९ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांभुवनकोषवर्णनं
नामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी बोले हे द्विजो जैसे क्षीरसमुद्रसे यह जम्बूद्वीप वेष्टितहै तैसेही प्लक्षद्वीप ईखकेरसके समुद्र से वेष्टितहै १ जम्बूद्वीपका विस्तार एकलक्षयोजनहै और इससे द्विगुणा विस्तारवाला प्लक्षद्वीप है २ प्लक्षद्वीपमें शान्तभय शिखर सुखद आनन्द शिर क्षेमक ध्रुव ३ नामक सातमर्यादा पर्वत हैं और गोमेद चन्द्रनारद दुन्दुभि सोमक सुमना और वैभ्राजनामक सातवर्षपर्वत हैं ४। ५ इनवर्ष पर्वतों में देवतों और गन्धर्वों सहित निरन्तर प्रजाबसतीहै ६ वहां अनेक पवित्रदेशहैं जहां चिरकालमें मृत्युहोती है ७ और आधिव्याधि नहींहैं पर सबप्रकार के कामसुखहैं तिन पर्वतोंसे निकसीहुई और समुद्रमें मिलनेवाली सातनदियांभी हैं ८ तिनके नाम श्रवण करने से पापोंकानाशहोता है उननदियोंके नाम अनुतप्ता शिखी विपाशा त्रिदिवाक्रमा ९ अमृता और सुकृता हैं और हे द्विजो ये पर्वत और नदियां प्रधानतासे गिनाई हैं १० बाकी क्षुद्रनदियां और पर्वत तो वहां हजारों स्थित हैं ११ वहां के बसनेवाले सब कालमें उननदियोंका जलपीतेहैं १२ और वहां विशेष

कर विकल्पादिकभी नहीं होते १३ उनपर्वतोंके स्थानों में युगोंकी कल्पना भी नहीं है और हे द्विजोत्तमो वहां सदात्रेतायुग के समान कालबीतता है १४ और प्लक्ष और शाकद्वीपादि में नीरोग मनुष्य पांचहज़ार वर्षतक जीतेरहतेहैं १५ और तहां वर्णाश्रम विभागसे उपजाचार प्रकारका धर्म और चारहीवर्ण प्रचलित हैं तिनको मैं तुम से कहता हूँ १६ वहां आर्य और कुरुलोग तथा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सब अच्छी रीतिसे बसते हैं १७ जैसे जम्बूद्वीपमें जामुनकावृक्ष है तिसी के समान प्लक्षद्वीपमें पिलषणकावृक्ष है १८ वहां इनवर्णों सहित सोमरूपी जगत् के स्रष्टा और सर्व्वेश्वर विष्णुप्रसिद्ध हैं १९ जितना प्लक्षद्वीप है उतनेही प्रमाणसे दूधके समुद्रसे वेष्टित है २० और प्लक्षादि द्वीपोंके बाहर चारों ओर पूर्वोक्त पदार्थों के समुद्र यथायोग्य वेष्टित हैं २१ यह सब संक्षेप से कहा है अब शाल्मलद्वीप का वर्णन सुनो शाल्मलद्वीपका स्वामी बीरहै और शरीर से उसके पुत्रस्थित हैं २२ जिनकेनामोंसे सातवर्ष प्रसिद्ध हैं और श्वेत हरित जीमूत हारित २३ वैद्युत् मानस सुप्रभ उनके नामहैं इसशाल्मलद्वीपके चारोंओर ईख के रसका समुद्र वेष्टितहै २४ और यह द्वीपभी पहिले द्वीपसे विस्तारमें द्विगुणा है इसमें रत्नोंके योनिरूप सातपर्वत कहे हैं २५ और वे सातोंपर्वत उनवर्षों को प्रकट करते हैं उनके नाम कुमुद उन्नत बलाहकद्रोण जहां महौषधियां उपजती हैं २६ कर्ण महिष और क-

कुह्वान्हैं २७ वहां सातनदियांभी हैं जिनके नाम योनि तोया निहष्टा चन्द्रा शुक्का विमोचिनी और निवृति हैं २८ और वे पापोंको शांतकरती हैं २९ श्वेतादि सात वर्ष जो इसद्वीप में पहिले कहआये हैं उनमें चारोंवर्ण बसते हैं ३० हे द्विजोत्तमो शाल्मलद्वीपमें जो वर्ण बसते हैं वे लाल पीत और कृष्णरंगोंवाले और दयावान् हैं ३१ और वहां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र चारों वर्ण आत्मा और अव्यय विष्णुको पूजतेहैं ३२ बहुत से यज्ञोंकेहोनेसे देवताओंका वहां निरन्तर बासरहता है और अति आनन्द होताहै ३३ इसशाल्मलद्वीपके मध्यमें शाल्मलिनामवाला एक वृक्ष स्थित है इससे आगे इससे द्विगुण विस्तारित ३४ और मदिराके समुद्रसे वेष्टित कुशद्वीपहै ३५ और उसद्वीप में ज्योतिष्मान् नामवाले स्वामीके ३६ उद्भिज वेणुमान् व सुरथ वामन धृति प्रभाकर कपिलनामक सातपुत्रोंके नामसे सातवर्ष विख्यातहैं ३७ उनवर्षोंमें मनुष्य दैत्य दानव देव गन्धर्व यक्ष किम्पुरुष इत्यादि बसते हैं ३८ और अपने २ अनुष्ठानों में तत्पर ३९ और यथोक्त कर्म्मों को करने वाले अपने २ अधिकारों में समर्थ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र बसतेहैं ४० उसद्वीप में ब्रह्मरूप जनार्दन भगवान्की पूजासे उत्तम फलकी प्राप्तिहोतीहै ४१ और वहां विद्रुम हेमशैल द्युतिमान् पुष्टिमान् कुशेशय हरि मन्दराचल ४२ नामक सातवर्ष पर्वत और धूतपापा शिरा पवित्रा विद्युदम्भा ४३ नामक चारनदियां

हैं जो सब प्रकार के पापों को हरती हैं ४४ वहां अन्य भी हज़ारहा क्षुद्रनदियां और क्षुद्रपर्वत स्थित हैं और कुशद्वीपका नाम संज्ञासे कुशद्वीप कहाता है ४५ और घृत के समुद्र से आवृत है वह घृत का समुद्र क्रौंच-द्वीप से संवृत है ४६ जो कुशद्वीपके विस्तारसे द्विगुणा है ४७ क्रौंचद्वीपमें द्युतिमान्‌के पुत्र स्थितहैं ४८ जो सोमदग उष्ण कुशल बांध काहुक पीवरमुनि दुंदुभि अंधकारक ४९ दिवावृत पुण्डरीकवान् महाशैल नामसे प्रसिद्धहैं और सब आपसमें द्विगुणा विस्तारवाले हैं ५० इनमें चिंतासे रहित आनंदित और पवित्र द्विजोत्तम ५१ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र क्रमसे बसते हैं ५२। ५३ वहां सातप्रधान नदियां हैं और क्षुद्रनदियां तो सैकड़ों हैं जिनकाजल वहांके निवासी पान करतेहैं ५४ गौरी ककुद्वती संध्या रात्रि मनोजरा क्षांति पुण्डरीका यह सातप्रधान नदियां सातों बर्षोंमें स्थित हैं ५५ वहां जनार्दन योगी और रुद्रनामोंसे प्रसिद्ध ईश्वरकी पूजा होतीहै और अनेकप्रकारके यज्ञ होतेहैं ५६ और यह द्वीप दहीके समुद्रसे वेष्टितहै वह दहीका समुद्र शाकद्वीपसे आवृतहै ५७ और शाकद्वीपकेस्वामी के सातपुत्रहैं ५८ वेही वर्ष कहाते हैं और जनक कुमार सुकुमार मरीचक आदि नामोंसे प्रसिद्ध हैं ५९ हे द्विजो इसद्वीपमें उदयगिरि जलाधार रैवतक श्याम अंभोगिरि ६० रम्य और केशरीनामक सात पर्वतहैं और सिद्ध और गंधर्वोंसे सेवित शाकनाम वृक्षहै ६१ जहां बायुकेस्पर्श

से परमआनन्द की प्राप्तिहोती है वहां पवित्ररूप और चार बर्णोंसे अन्वित देश बसताहै ६२ जहां अति पवित्र और सबपापोंके भयोंको नाशनेवाली नदियां हैं जिनमें प्रधान सुकुमारी कुमारी नलिनी अव्यया ६३ इक्षु धेनुका और गभस्ती नामक सात नदियां हैं और क्षुद्र नदियां तो हज़ारों बहतीहैं ६४ और छोटे २ पर्वत भी हज़ारों स्थितहैं वहांके बसनेवाले मनुष्य उन नदियोंके जलोंको पानकरतेहैं६५ और उनको स्वर्गकेसमान आनन्दहै व धर्मकीहानि भी नहींहै ६६ उन सातोंबर्षों में मर्यादासे युक्त मग मागध मानस और मंदगनामोंसे प्रसिद्ध प्रजाबसतीहै६७मग संज्ञकमें विशेषकरब्राह्मण होतेहैं मागध संज्ञकमें विशेषकर क्षत्रिय होतेहैं मानस संज्ञकमें विशेषकर बैश्यहोतेहैं और मंदगसंज्ञकमें विशेष कर शूद्रहोतेहैं ६८इसद्वीपमें सूर्य्यकेरूप को धारणकरने वाले विष्णुकी नियतात्मावाले नरपूजाकरतेहैं ६९ और यह द्वीप अपने प्रमाणके समान दूधकेसमुद्रसे चारोंतरफ वेष्टितहै७०वह दूधका समुद्र पुष्करद्वीपसेवेष्टितहै औरपुष्करद्वीप शाकद्वीपसे द्विगुणहै७१पुष्करद्वीपमें लवणके महाबीत और धातकीनाम दो पुत्रहुये तिनसे देव ऋषि संज्ञावाले ७२ महाबीत और बातकी दो वर्षहैं उनमें से एक वर्ष तो पर्वतनामसे विख्यात ७३ मानसोत्तर संज्ञक मध्यमें गोल पचासहज़ार योजन ऊपर को ऊँचा ७४ और इतनेही योजन प्रमाणसे विस्तृत चारोंतरफसे परिमण्डलरूप पुष्करद्वीप बलयको मध्य-

भागसे विभाग करताहुआ ७५ स्थित है दूसरा पर्वत भी ऐसेही स्थित है यह भी बलयके आकारका है इन दोनों के मध्यमें महापर्वत है ७६ जहां मनुष्य दशहज़ारवर्ष जीवते हैं और रोग शोक राग द्वेषसे बर्जित रहतेहैं ७७ वहां अधम और उत्तम संज्ञा नहीं है और ईर्षा असूया भय क्रोध दोष लोभ इत्यादि भी नहीं होते ७८ तिन दोषों वर्षोंमें देव दैत्य इत्यादि महात्मा बसते हैं ७९ पुष्करद्वीपमें सत्य झूठ नदियां पर्वत नहीं हैं८० वहां मनुष्य और देवता एकरूपवालेहैं और वर्णाश्रमका आचार नहीं है वहां सब पापआदिसे बर्जित हैं और बाणिज्य दण्डनीति शुश्रूषाका भी अभाव है ८१ यह दोनों वर्ष स्वर्ग और भौमनामसे विख्यात हैं वहां दुःख और सुखसमान बर्तताहै और वृद्धतारूप रोगनहीं है८२ऐसे पुष्कर द्वीपांतर्गत महाबीत और बातकीखण्ड दोनों बर्षोंकी व्यवस्था कहीहै८३ पुष्करद्वीपमें एकबटका वृक्षहै जो ब्रह्मस्थान कहाताहै और तहां देवता और दैत्योंसे पूजित ब्रह्माजी बसते हैं ८४ शुद्ध और मिष्ट जलसे यह द्वीप वेष्टितहै ऐसेही सातोद्वीप सातसमुद्रों से वेष्टितहैं ८५ और द्वीप और समुद्र आपसमें पूर्वोक्त प्रकारसे स्थितहैं इन सब समुद्रोंमें सब प्रकारसे जल समानहै ८६ और इनकी न्यूनता किसी कालमें नहीं होती है परन्तु हे मुनि श्रेष्ठो समुद्रोंके जल घटते और बढ़ते रहते हैं ८७ अर्थात् चन्द्रमाके उदय और अस्त में वा शुक्लपक्ष और कृष्णपक्षमें पांचसौदश अंगुलके

प्रमाण ८८ समुद्रोंकी वृद्धि और क्षय होती है हे द्वि-जोत्तमो पुष्करद्वीपमें आपसेआप छःओं प्रकारके रसों से युक्त सब काल में भोजन उत्पन्न होते हैं ८९ । ९० उस स्वादुजलके अगाड़ी दुगुनी काञ्चनी की भूमिहै जो सब जन्तुमात्र से वर्जित है ९१ उससे अगाड़ी लोकालोक पर्वत दशहज़ार योजन विस्तृतहै ९२ और इतनेही प्रमाणसे ऊंचा और अंडकटाहसे चारोंतरफ परिवेष्टितहै ९३ पचास कोटि योजन ऐसी पृथ्वीहै ९४ और ऐसेही सब द्वीपों और सब पर्वतों सहितहै ९५ यह धात्री विशेष करके जगत् को धारण करनेवाली और सब भूतों के गुणों से अधिक और जगत् की आधाररूप है ९६ ॥

श्रीआदिब्रह्मपु० भा० समुद्रद्वीपवणर्नन्नामैकोनविंशोऽध्यायः १९

बीसवां अध्याय ॥

लोमहर्षण जी बोले हे मुनि सत्तमो यह तो हमने पृथिवी का विस्तार कहा इस के सिवाय अतल वितल रसातल तलातल महातल १ सुतल पाताल ऐसे सात लोक नीचेहैं जहां सुन्दर स्थानोंसे शोभित और कृष्ण अरुण श्वेता शवर्णा शैल कांचना २ पृथिवी स्थितहै और उन स्थानोंमें दैत्य दानवों से उपजे हज़ारों जीव बसतेहैं ३ हे द्विजोत्तमो वहां महासर्पोंकी भी बहुतसी जाति बसती हैं और स्वर्गसे भी पाताल रमणीकहै ४ नारदमुनिने एक बेर पातालसे स्वर्गमें जाकर पाताल

की बड़ी उपमाकी कि जहां स्वच्छ मणियोंके समूहोंसे पाताल अतिसुन्दर है ५ और सर्पोंकी मणियों से प्रकाशित और दैत्य दानवोंकी कन्याओंसे शोभित सातवां पाताल लोक है ६ मुक्तहुये मनुष्यको भी पाताल में बसनेकी कांक्षाहोतीहै जहां दिनमें सूर्य्यकी किरणों के समान प्रकाशरहता है और घामकीचमक भी नहीं है ७ रात्रियों में जहां चन्द्रमाके समान प्रकाश रहता है और भक्ष्य भोज्य महापान और मधुसेमत्तहुये सर्पों से ८ दैत्य दानव गतकालको नहीं जाना वहां अनेक रमणीक बगीचे और कमलोंसे युक्ततालाबहैं ९ पुरुष रूप कोकिलोंकेविलापहोतेहैं औरमनोहर औररमणीक भूषण और गन्ध आदिसे सुशोभितहैं १० वहां बीणा बांसुरी और मृदंगों के शब्द सबकालमें होते हैं और अन्यभी दानवोंके अनेक रमणीकभोग्यहैं ११ पाताल में रहनेवाले दैत्य और सर्प अनेक प्रकारके पदार्थ भोगतेहैं बिष्णुका तामसी शरीर पातालमें स्थितहै १२ जिसको शेषनागकहते हैं और जिसके गुणोंका आख्यान करनेको दैत्य और दानव भी समर्थ नहीं हैं सिद्धों और देवताओं द्वारा वह देवर्षि पूजित अनंत कहाजाताहै १३ वह हज़ार शिरोंवाला व्यक्त और कल्याण रूप अमल कुंडलों और मुकुटको धारणकिये सुन्दर स्वरवाला और अग्नि संयुक्त श्वेतपर्वत के समान १४ नीलवस्त्रोंसे भूषित मदसे उत्सिक्त और श्वेतहारसे उपशोभित कैलासपर्वत के समान शरीर

वाला १५ हलरूपी शस्त्रसे आसक्त हाथोंवाला और उत्तममूशलवाला वारुणी नामवाली कन्याओंसे उपास्यमान १६ और जिसके मुखोंसे कल्पके अन्तमें अति लयवाला अग्नि निकलता है रुद्ररूपी संकर्षण देव निकलकर तीनों जगतों को भक्षण करलेता है १७ वह चित्ररूप शिखरोंवाला सब देवताओं से पूजित और पातालमूलवाला देव समस्त पृथिवीमंडल को धारणकर रहाहै १८ उसके वीर्य्य प्रभाव और स्वरूप को वर्णन करने और जानने को देवता भी समर्थ नहीं हैं १९ जिसके फणपर यह समस्त पृथिवी सूक्ष्म पुष्प की तरह स्थित होरही है ऐसे देव के वीर्य्य को कौन कहसक्ता है २० विघूर्णित नेत्रोंवाला यह देव जब जँभाईलेता है तब पर्वत बनआदि सहित पृथिवी कांपतीहै २१ उसके गुणोंके अंतको गंधर्व अप्सरा सिद्ध किन्नर सर्प्प और राक्षस नहींप्राप्तहोसक्ते इसलिये वह अनंत कहाताहै २२ हारेचंदनमें रमणकरनेके समय जिसका हस्त पुष्ट हाथियों को मारता है जिसके मुखों से निकसेहुये श्वासपवनरूप होकर प्रकटहोते हैं २३ और जिसका आराधन करने से पुराने मुनि ज्योतिष शास्त्र और उसके निमित्त और फलको विस्तारसे यथार्थ जानते हैं२४ उसने अपने वीर्यसे शिरपर यह पृथिवी धारणकरीहै जो लोकोंके देवता दैत्य मनुष्यरूपीमाला को धारण कररही है २५॥

श्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांपातालवर्णनन्नामाविंशोऽध्यायः२०॥

इक्कीसवां अध्याय॥

लोमहर्षणजी बोले हे विप्रो जहां पाप करनेवाले प्राणी पड़ते हैं अब वह नरक कहे जाते हैं १ रौरव शौकर बोध विषशन महाज्वाल तप्तकुम्भ महामोह विमोहन २ रुधिरान्ध वैतरणी कृमिश कृमि भोजन असिपत्रवन कृष्णनानाभक्षदारुण ३ पूयबहा पापवह्नि ज्वालअधः शिरसंदंश कृमिसूत्र तमआरिषि ४श्वभोजन अप्रतिष्ठ हारीतआदि अनेकदारुण नरककहे हैं५ जो घोररूप और शास्त्र अग्नि बिषसे संयुक्त हैं और जिनमें पापकर्म्मकारी मनुष्य पड़ते हैं ६ झूठी साक्षी देनेवाला पक्षपात करनेवाला झूठबोलनेवाला मनुष्य रौरव नरकमें प्राप्त होताहै७गर्भ वपुरीको नाशनेवाला गायोंको मारनेवाला कुसीखका देनेवाला मनुष्य बोध संज्ञक रौरवनरक में प्राप्तहोता है ८ मदिरापीनेवाला ब्रह्महत्या काकरनेवाला सुवर्णकीचोरी करनेवाला और इन तीनपाप करनेवालोंके संग बसनेवाला मनुष्य शौकरनरकमें प्राप्तहोताहै ९ राज्य अपराध करनेवाला गुरुकीशय्यापरस्थितहोनेवाला पुत्रकीबधूसेभोगकरनेवाला और राजाके भृत्यों को मारनेवाला मनुष्य तप्तकुम्भनरकमें प्राप्तहोताहै १० साध्वी स्त्री व रसको बेंचनेवालाऔर अपने भक्तको त्यागनेवाला मनुष्य तप्तलोह नरकमें प्राप्तहोताहै ११ पुत्रकीबधू और पुत्रीमें कुछ भेद नहीं होता इसलिये इन दोनोंसे भोग करनेवाला

मनुष्यमहाज्वाल नरकमें प्राप्तहोताहै गुरुको न मानने वाला नीच १२ वेदोंमें दोषलगानेवाला वेदोंको बेंचने वाला अगम्या स्त्री से भोगकरनेवाला १३ और चोर मनुष्य बिमोह नरकमें प्राप्त होता है मर्य्यादा दूषक और देव द्विज पिता और ज्येष्ठ भ्रातामें दोष लगाने वाला १४ और कृमियों को दुःख देनेवाला कृमिभक्ष नरकमेंपड़ताहै पितर और अतिथियोंका निरादरकर-नेवाला और अधम १५ मनुष्य उग्रसंज्ञक नानाभक्ष नरकमें प्राप्तहोताहै और शर अर्थात् तीरोंको बनाने वाला मनुष्य वेधक नरकमें प्राप्तहोता है निन्दा करने वाला और तलवार आदि शस्त्रोंको रचनेवाला १६ दारुणरूप विषशन नरकमें प्राप्तहोताहै और झूठेही प्रतिग्रहण करनेवाला मनुष्य अधोमुख नरकमें प्राप्त होताहै १७ यज्ञकरनेके अयोग्यको यज्ञ करानेवाला नक्षत्र सूचक और अकेला मिष्टान्न खानेवाला मनुष्य पूयबह नरकमें प्राप्तहोताहै १८ लाख मांस रस तिल और लवण को बेंचनेवाला ब्राह्मण भी पूयबहनरक में प्राप्तहोताहै १९ हे द्विजसत्तमो बिलाव मुरगा बकरा शूकर और पक्षियों को पालनेवाला मनुष्य भी पूयब-हनरक में प्राप्तहोता है २० रंगकेद्वारा जीविका करने वाला कैवर्त्त और कुण्डसंज्ञक मनुष्य को भोजन कराने वाला बिषदेनेवाला सुईके कर्मसे जीवनेवाला पर्वकाल में स्त्रीसे प्रसंग करनेवाला २१ स्थानको जलानेवाला मित्रको हतकरनेवाला शकुनविद्याको पढ़नेवाला और

ग्रामयाजक २२ मनुष्य रुधिरांध नरकमें प्राप्तहोता है और अमृतको बेंचनेवाला शहदको हरनेवाला और ग्रामको नाशनेवाला मनुष्य बैतरणी में प्राप्तहोता है २३ वीर्यसंबंधी पाप करनेवाला मर्यादाको भेदन करने वाला अपवित्र रहनेवाला और छलसे आजीविका करनेवाला मनुष्य कृष्णनरकमें प्राप्तहोताहै २४ वृथा वृक्षोंको छेदन करनेवाला मनुष्य असिपत्र बनमें प्राप्त होताहै और मृगोंको मारनेवाला मनुष्य अग्निज्वाल नरकमें प्राप्त होताहै २५ भोजनके समय जोविप्र अग्नि में आहुति नहीं करता वह अग्निज्वाल नरकमें प्राप्त होताहै २६ और दिनमें शयन व दिनमें अपनी भार्यासे भोग करनेवाला वेदको न माननेवाला २७ और पुत्रों को विद्या न पढ़ानेवाला मनुष्य कृमिभोजन नरकमें प्राप्त होताहै २८ इनकेसिवाय और अन्यभी हज़ारोंनरकहैं जिनमें पापोंके करनेवाले मनुष्यपकाये जाते हैं २९ और इन कहेहुये पापोंकेसिवाय और भी अन्य हज़ारोंपापहैं जिनके करनेसे मनुष्यनरकोंमें पड़ते हैं ३० जो मनुष्य वर्णाश्रमसे विरुद्धमन कर्म वाणीसे कर्म करते हैं वे सब नरकोंमें बसतेहैं ३१ और नीचेशिरवाले नरकबासीस्व-र्गगत देवताओंको देखतेहैं और देवतानीचे मुखवाले नरकबासियोंको भी देखते हैं ३२ और स्थावर पक्षी पशु मनुष्य देवतामुक्तयेसबक्रमसेकहे हैं जैसेस्वर्गमेंप्राणी हैं वैसेही नरकमेंभी बसतेहैं प्रायश्चित्त को न करनेवाले मनुष्य नरकमें बसते हैं ३३ और पापोंके अनुरूप प्राय-

श्चित्त महर्षियोंने प्रकाशितकियेहैं ३४ हेविप्रेन्द्रो! महत्पाप व स्वल्पपापके अनेक प्रकारके प्रायश्चित्तहैं ३५ और जितने प्रायश्चित्त कर्म तपकर्म्म व ३६ अन्यकर्म कहेहैं उनकेउपरान्त कृष्णकास्मरणकरना उचितहै३७ जिसेपापकिये पश्चात् ग्लानिकी उत्पत्तिहो उसेविष्णुके स्मरणके समान कोईभी प्रायश्चित्त नहीं है ३८ प्रभात सायङ्काल रात्रि और मध्याह्न समयोंमें नारायणकोस्मरणकरे तो तत्काल पापोंकानाश होजाताहै ३९ विष्णु का स्मरण सबप्रकारके क्लेशोंको नाशताहै और विष्णु के स्मरणसे मुक्तिकीप्राप्ति विघ्नोंकी हानि होतीहै ४० जिस मनुष्यकामन जप होम और पूजाकेद्वारा विष्णुमें लगताहै उसेइंद्रआदिदेवताओंके ऐश्वर्यभी तुच्छहैं४१ दुष्टपुरुषोंकेसंग गमनकरना फिर जन्मकीबांछानकरनी औरवासुदेव विष्णुका स्मरणकरना यही मुक्तिका अति उत्तम बीजहै ४२ इसलिये दिन रात्रि पुरुषोत्तम विष्णु का स्मरण करनेसे सब पातकोंसे रहित और शुद्धहो मनुष्य नरकमें नहीं प्राप्तहोताहै ४३ मनको प्रसन्न करनेवाला स्वर्गहै और मनको दुःखित करनेवाला नरक है ऐसे पुण्यरूप स्वर्ग और पापरूप नरक ये दोनों कहेहैं ४४ एकही पदार्थ प्रथम सुख देकर पीछे दुःख देताहै और पीछे कोप और भयको देताहै इसलिये कोई पदार्थ दुःख संज्ञक नहीं है ४५ और जो प्रथम सुखरूप होकर पीछे दुःखरूप होजाताहै इसलिये कोई पदार्थ सुखरूपभी नहींहै ४६ सुख दुःख आदि ल-

क्षणोंवाला केवल यह मनका परिणाम है ज्ञानही परब्रह्महै और ज्ञानसे बंध निवृत्त होताहै ४७ यह विश्व ज्ञानात्मकहै और ज्ञानसे परे कुछभी नहींहै हे विप्रो विद्यातो विद्यारूपहीहै इसलिये ज्ञान धारण करना चाहिये ४८ यह मैंने पृथिवी मण्डलका वर्णन किया और सब पाताल और नरकभी कहे ४९ एवम् सब समुद्र पर्वत द्वीप वर्ष और नदियोंकाभी संक्षेपसे वर्णनकिया अब आप फिर क्या श्रवणाकरनेकी इच्छा करतेहो ५० ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांनरककीर्त्तनन्नामएकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

मुनियोंने कहा हे भगवन् आपने सब कुछ कहा परन्तु अब भुव आदि आकाशस्थलोंको १ और ग्रहोंकी स्थिति और प्रमाणको यथावत् वर्णनकरो २ लोमहर्षण जी बोले हेमुनिजनो सूर्य्य और चन्द्रमाकी किरणोंसे जहांतक समुद्र नदी और पर्वत सहित पृथिवीहै ३ और जितना उसका परिमण्डलहै उतनेही प्रमाणवाला और विस्तृत परिमण्डलवाला आकाश भी है ४ हे विप्रो पृथिवीसे एकलक्ष योजन दूरीपर सूर्य्यका मण्डलस्थित है ५ सूर्य्यसे एकलक्ष योजन चन्द्रमाका मण्डल स्थित है चन्द्रमासे एकलक्ष योजन नक्षत्रोंका मण्डल स्थित है ६ नक्षत्रमण्डलसे दोलक्षयोजन बुधमण्डलहै बुधके

मण्डलसे दोलक्षयोजन शुक्रका मण्डलहै ७ शुक्रके म-
ण्डलसे दोलक्ष योजन मंगलका मण्डलहै मंगलके म-
ण्डलसे दोलक्ष योजन बृहस्पतिका मण्डल है ८ बृह-
स्पतिके मण्डलसे दोलक्षयोजन शनिका मण्डलहै शनि
के मण्डलसे एकलक्षयोजन सप्तर्षियों का मण्डल है ९
और ऋषियों के मण्डलसे एकलक्ष योजन ऊपर और
समस्त ज्योतिश्चक्रका मेढ़ीभूत ध्रुव स्थितहै १० हे द्वि-
जोत्तमो यह संक्षेपसे त्रिलोकी मैंने कही इज्याफलरूप
पृथिवीहै ११ और ध्रुव मण्डलके ऊपर महर्ल्लोकहै जहां
कल्पवासीजन रहते हैं और जो एककोटि योजनहै १२
दोकिरोड़ योजन जनलोकहै जहां सनन्दन आदि प्रिय
रूप और अमलचित्तवाले ब्रह्माके पुत्र स्थित हैं १३
जनलोकसे आठकिरोड़ योजन ऊपर तपोलोकहै जहां
आहारसे वर्ज्जित और वैराजनाम से विख्यात देवते
स्थितहैं १४ तपोलोकसे बारहकिरोड़ योजन ऊपर सत्य
लोकहै जहां मुक्तमनुष्य बसते हैं उसको ब्रह्मलोकभी
कहते हैं १५ पैरोंसे चलनेयोग्य जीव जहां बसते हैं वह
भूर्लोकहै १६ और पृथिवी और सूर्य्यके अन्तरमें सिद्ध
मुनि आदिकोंसे सेवित भुवर्लोकहै सोभी मैंने कहा १७
सूर्य्य और ध्रुवके अंतरमें जो स्वर्ल्लोकहै वह भी लोकसंस्था
जाननेवालों से कहा १८ और इसीप्रकार विप्रोंने यह
त्रिलोकी कही है जनलोक तपोलोक और सत्यलोक
नामोंवाली दूसरी त्रिलोकीहै १९ और इन दुहोंके मध्य
में महर्ल्लोकहै जो इसमें प्रवेश करताहै वह कल्पके अंत

में नष्टहोगा २० हे द्विजो ऐसे सात पातालोंसे संयुक्त ब्रह्मांडका विस्तार मैंने वर्णन किया २१ अंडकटाहसे तिरछा ऊंचा और नीचा जैसे कैथकाबीज सब तर्फसे आवृत होताहै तैसेही यह जगत्स्थितहै २२ दशगुने जलसे यह ब्रह्मांड आवृत होरहाहै जल अग्निसे वेष्टितहै २३ अग्निबायुसे वेष्टितहै बायु आकाशसे आवृत होरहाहै आकाश महाभूत आदिसे आवृतहै २४ और महत्तत्त्वको आवृतकरके प्रधान अवस्थित होरहाहै २५ उस अनंतरूपदेवका अंत और संख्या नहीं है ऐसेही हजारोंके हजार और किरोड़ोंके किरोड़ अर्थात् अपरिमित ब्रह्मांडहैं २६ जैसेकाष्ठमें अग्नि और तिलोंमें तेल निकसताहै तैसेही यहजगतहै २७ क्षोभका कारण भत पृथिवी सृष्टिकालमें इसजगत्को धारण करती है जैसे वायुकणिका रूपहुये पर्वतको २८ प्राणीरूपी स्कंध और शाखाओंवाला ईश्वररूप वृक्षस्थित है २९ जैसे आद्यबीजसे नवीनबीज उत्पन्न होते हैं और तिनसे अन्यवृक्ष उत्पन्न होते हैं ३० और वेभी तिन लक्षणों से अनुगतहैं तैसेही अव्याहतसे महदादि उपजते हैं ३१ महदादिकोंसे विशेष उपजतेहैं विशेषोंसे देवआदि उपजते हैं ३२ और तिन देवोंसे पुत्र और पौत्रउत्पन्न होते हैं ३३ जैसे बीजके संकाश से वृक्षोंका अभाव नहीं होताहै तैसेही प्राणियोंका भूतस्वर्गसे अभावनहीं होता ३४ और जैसे कालांतरमें बीजसे वृक्ष होजाताहै ३५ तैसेही नारायणरूपी बीज से यह संसार

कहा है ३६ और जैसे बीजमें मूल नालिपत्र अंकुर कण्ठ कोष फूल दूध त्वचा फल ३७ तुष और कण उपजते हैं तैसेही ईश्वर में देवतादि प्राणी स्थित हैं ३८ अर्थात् विष्णुकी भक्तिको प्राप्तहोकर प्ररोहण कालमें उपजते हैं ३९ विष्णु परब्रह्महै और सबोंका साक्षीहै जिससे यहजगत् उपजताहै और जिसमें लीन होताहै ४० इसलिये परमधाम और परमपद ब्रह्महीहै ४१ जिसके अभेद संबंधसे यहचराचर जगत् प्रतीत होताहै ४२ वही मूल प्रकृति वालाहै वही व्यक्त रूप वालाहै वही जनार्दनहै और उसीमें उसी जगत् लय होकर ठहरताहै ४३ कर्ता और क्रिया रूपभी वही है वही यज्ञरूपसे पूजितहोताहै और वही कर्म्म फल है ४४ युगादिकोंका साधनरूपभी वही है और उस ईश्वर से व्यतिरिक्त कोई पदार्थ नहीं है ४५ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांभूर्भुवस्स्वरादिकीर्तनंनाम द्वाविंशतितमोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजीबोले हे मुनिजनों ताराओं से व्याप्त और शिशुमारकेसमान आकृतिवाला दिव्यरूप विष्णु काहै उसकी पुच्छपर ध्रुवस्थितहै १ और यह ध्रुव आप भ्रमताहुआ चंद्र सूर्य्यआदि ग्रहोंको भ्रमाता है और उसके भ्रमणकरनेसे सब नक्षत्रचक्रकीतरह भ्रमते हैं २ सूर्य्य चन्द्रमा तारे नक्षत्र ग्रहसब बायुगणसे ध्रुवमें बँधे

हुयेहैं ३ और हे विप्रो शिशुमारकी प्राकृतिवाला ज्योतिषों का रूप जो आकाशमें है तिसका आधाररूप स्थान नारायणके हृदयमें स्थितहै ४ उसी हृदिस्थित नारायण की आराधनासे उत्तानपादकापुत्र ध्रुव शिशुमारचक्रकी पुच्छ पर स्थितहै ५ शिशुमार चक्रका आधाररूप सर्वाध्यक्ष नामसे प्रसिद्ध विष्णुहै शिशुमारसे संयुक्त ध्रुवमें सूर्य्य व्यवस्थित है ६ और उसके आधारभूत देवासुर और मानुषरूपी यह जगत् जिस विधानसेहै वह अब सुनो ७ कार्तिक आदि आठमहीनोंमें सूर्य्य रसात्मिक जल को खैंचताहै और आषाढ़ आदि चारमहीनोंमें वर्षाताहै तब उत्पन्नहुये अन्नसे यह संपूर्ण जगत् पैदाहोता है ८ सूर्य्य अपने तीक्ष्ण किरणोंसे जगत्के जलकोग्रहणकर पीछे बायुमय नाड़ियोंके द्वारा मेघों में पहुँचता है९ और धूम अग्नि और पवनके समूहसे उत्पन्नहुये बादलोंमें जल पहुंचनेसे वे बादल मेघरूप कहाते हैं १० हे विप्रो बायुसे प्रेरित किये जल कालजनित संस्कारको प्राप्तहो वे बादल निर्मल होजाते हैं ११ नदी के जल समुद्रकेजल पृथिवीकेजल और प्राणिसम्भव जल इन चारप्रकारके जलोंको सूर्य्यग्रहण करताहै १२ और कभी२ आकाशगंगाके जलको ग्रहणकर बिना बादलोंकेही पृथिवीपर बर्षाताहै १३ तिसके स्पर्शसे मनुष्योंका पापरूपी कीचड़ धोजाताहै और इसदिव्य स्नानसे मनुष्य नरकमें नहींजाताहै १४ सूर्य्य दीखतेभी जो बर्षाहोतीहै वह सूर्य्य अपनेकिरणोंसे आकाशगंगा

केजलको वर्षाताहै १५ और जब कृत्तिकाआदिनक्षत्रोंमें सूर्य्य दीखतेहुये जल आकाशसे वर्षाताहै वहभी गंगा-जलकेसमानहै १६ युग्म नक्षत्रोंमें सूर्य्यकी साक्षीसे जो जल आकाशसे वर्षताहै यहसूर्य्यने अपने किरणोंसे नि-कासाहै १७ यह जल अतिपवित्रहै और मनुष्योंके पापों को नाशता है ऐसे आकाशगंगा के जलसे दिव्यस्नान कहाहै १८ मेघोंसे वर्षाहुआ जल सब प्रकारके ओषधि आदिको पुष्टकरता है और प्राणियों के जीवनके लिये अमृतरूपहै १९ इसलिये शास्त्ररूप नेत्रोंवाले मनुष्य यज्ञोंको देवताओंकी पुष्टिकेलिये करते हैं २० सबयज्ञ वेद ब्राह्मण आदिबर्ण भूतगण २१ और यह संपूर्ण जगत् वृष्टिद्वारा धारण कियाजाता है और उसी वृष्टि से अन्नउत्पन्न होताहै वृष्टिको सूर्य्यउत्पन्न करताहै २२ सूर्य्यके आधारभूत ध्रुव है ध्रुवका आधार शिशुमार चक्रहै और शिशुमार चक्रका आधार नारायणहै २३ शिशुमारके हृदयमें नारायण सब प्राणियोंका स्वामी आदि भूत और सनातन विष्णुहै २४ हे मुनि श्रेष्ठो यह मैंने समुद्र आदिसे संयुक्त ब्रह्मांडकहा अब इससे अन्य क्या श्रवणकरनेकी इच्छा करतेहो २५ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांध्रुवस्थितिर्नाम त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

मुनियोंने पूंछा हे धर्मज्ञ पृथिवीमें जितनेतीर्थ और

आश्रमहैं तिनको वर्णनकरो हमारामन उनको श्रवण करनेको है १ लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनों जिस मनुष्यके हाथ पैर और मन सावधानहों और विद्या तप और कीर्त्तिभीहो वह मनुष्य तीर्थके फलको प्राप्त होसक्ताहै २ मनुष्यका शुद्धमनही तीर्थरूप होजाताहै और मन वचन और इन्द्रियों इन्होंका निग्रह उत्तमतपहै ऐसे शरीरसे उत्पन्न होनेवाले तीर्थ स्वर्गमें प्राप्तकरते हैं ३ और अति दुष्टचित्त तीर्थके स्नानसेभी नहींशुद्धहो-ताहै जैसे मदिराकापात्र सैकड़ोंबार धोनेसेभी अशुद्ध-ही रहताहै ४ तैसेही तीर्थदान ब्रत और आश्रमये दुष्ट चित्त और दंभी और अजितेंद्रिय मनुष्यको नहीं शुद्ध करसक्ते ५ इन्द्रियोंको वशमेंकरके मनुष्य जहां जहां ब-सताहै उसे वहांहीं कुरुक्षेत्र प्रयाग और पुष्करतीर्थप्राप्त होतेहैं ६ हे मुनिश्रेष्ठो अबतीर्थ और पवित्रस्थानोंका श्रवणकरो गयाजी और प्रयाग श्रीतीर्थ कनखल ७ भृगु तुंग हिरण्यास्थ्य भीमारण्य कुशस्थल लोहाकुल केदार मंदारारण्य ८ महाप्रभ चारुकुंड सर्बपापहर रूपतीर्थ शूकरतीर्थ महाफलदेनेवाला चक्रतीर्थ ९ योगतीर्थ सो-मतीर्थ शाकोटकतीर्थ कोकामुखतीर्थ पवित्ररूप बदरी-शैल १० सोमतीर्थ तुंगकूट स्कंदाश्रमतीर्थ और इसी में महाप्रभावाला सप्तसामुद्रिकतीर्थहै ११ धर्मोद्भवतीर्थ कोटितीर्थ सर्बकामिकतीर्थ सलिलतीर्थ बदलीतीर्थ सु-प्रभतीर्थ १२ ब्रह्मदत्ततीर्थ बह्निकुण्ड सत्यपदतीर्थ च-तुःस्रोततीर्थ चतुःशृंग तीर्थ द्वादशाब्रारक पर्वत १३

मानसतीर्थ और स्थूलशृंगतीर्थ स्थूलदण्डतीर्थ उर्व-
शीतीर्थ लोकपालतीर्थ मेरुवरतीर्थ सोमांघ्रिपर्वत १४
सबकालमें प्रभावाला मेरुकुण्डतीर्थ सोभाभिषेचनती-
र्थ महाशांततीर्थ कोटरकतीर्थ पञ्चधारतीर्थ त्रिधारक
तीर्थ १५ सप्तधारतीर्थ एकधारतीर्थ अमरकटतीर्थ शा-
लिग्रामतीर्थ चक्रतीर्थ अति उत्तमरूप कोटिद्रुम १६
बिंदुप्रभ देवह्रदतीर्थ विष्णुप्रभतीर्थ शंखप्रभतीर्थ ग-
दाकुण्ड चक्रतीर्थ आयुधतीर्थ १७ अग्निप्रभतीर्थ प-
न्नगतीर्थ देवप्रभतीर्थ गन्धर्वतीर्थ श्रीतीर्थ ब्रह्मह्रदतीर्थ
१८ लोकपालाख्यतीर्थ मणिपूरगिरि पवित्ररूप पिंडा-
रकतीर्थ १९ वस्त्रप्रभतीर्थ दारुवन छायारोहण सिद्धे-
श्वरतीर्थ मित्रवन कालिकाश्रम २० बटावठ भद्रकट
कौशांवी दिवाकर दीपसरस्वतीतीर्थ विजयतीर्थ का-
मदतीर्थ २१ मालब्यतीर्थ गोप्रचारतीर्थ गोचरतीर्थ
बटशूलकतीर्थ स्नानकुण्ड प्रयाग गुप्तरूप विष्णुपद
तीर्थ २२ कन्याश्रम उत्तमरूप जम्बूमार्गतीर्थ गाभस्ति
तीर्थ ययातिपत्तन २३ कोटितीर्थ भद्रवटमहाकालबन न-
र्मदातीर्थ वर्षतीर्थ अर्बुदतीर्थ २४ पिंगतीर्थ सुराशिष्टती-
र्थ प्रियसंगमतीर्थ दौर्वासिकतीर्थ पिंजरकतीर्थ २५ ऋषि
तीर्थ ब्रह्मतुंगतीर्थ बसुतीर्थ कुलारिकातीर्थ शक्रतीर्थ
पञ्चनन्दतीर्थ वेणुकातीर्थ २६ विपुलरूप पैतामहतीर्थ
रुद्रपादतीर्थ मणिमन्ततीर्थ कामाख्यतीर्थ कृष्णतीर्थ
कुमारीतीर्थ २७ यजनतीर्थ याजनतीर्थ ब्रह्मबाहुकतीर्थ
पुण्यन्यासतीर्थ पुण्डरीकतीर्थ मणिपूर्व उत्तरतीर्थ २८

दीर्घसत्रतीर्थ हंसपदतीर्थ औशनसतीर्थ गंगोद्भेद तीर्थ शिरोद्भेद औरनर्मदोद्भेदतीर्थ२९रुद्रकोटितीर्थ शंकुमन तीर्थ सत्रावनामिततीर्थ स्यमंत पंचकतीर्थ ब्रह्मतीर्थ द-र्शनतीर्थ ३० पृथिवीतीर्थ पृथूदकतीर्थ दशाश्वमेधिक तीर्थ सर्पितीर्थ दधिकल्लांतकतीर्थ ३१कोटितीर्थ बाराह पक्षिणीतीर्थ पुण्डरीकतीर्थ सोमतीर्थ मुंजवाटतीर्थ३२ बदरीबन रत्नमूलक लोकद्वारतीर्थ पंचतीर्थ कपिला तीर्थ ३३ सूर्य्यतीर्थ सिखण्डीतीर्थ नैमिषारण्य यक्षराज तीर्थ ब्रह्मावर्त्ततीर्थ सुतीर्थक ३४कामेश्वरतीर्थ मातृतीर्थ शीतवनतीर्थश्वानलोमापहतीर्थमानकतीर्थसामकतीर्थ ३५दशाश्वमेध तीर्थ केदारतीर्थ ब्रह्मोदुंबरतीर्थ सप्तर्षि कुण्डतीर्थ देवीतीर्थ जम्बुकतीर्थ३६इलास्पदतीर्थ कोटि कूटतीर्थ किन्दानतीर्थ किन्तपतीर्थ कारण्डवतीर्थ वि-डयतीर्थ त्रिविष्टपतीर्थ ३७ पाणिखारतीर्थ मिश्रकतीर्थ मधुराट्तीर्थ मनोजवतीर्थ कौशिकीतीर्थ देवतीर्थ ऐसे-ही नैमिषमें पांचतीर्थ ३८ ब्रह्मस्थानतीर्थ सोमतीर्थ कन्यातीर्थ ब्रह्मतीर्थ मनातीर्थ एकावनतीर्थ ३९ सौ-गन्धिकबनतीर्थ मणितीर्थ सुतीर्थक ईशानतीर्थ पाव-नतीर्थ पञ्चयज्ञिकतीर्थ ४० त्रिशूलधारातीर्थ माहेंद्र तीर्थ देवस्थानतीर्थ कृतालयतीर्थ शाकम्भरीतीर्थ देव-तीर्थ सुवर्णाख्यतीर्थ कलिहृदतीर्थ ४१ क्षीरतीर्थ विरू-पाक्षतीर्थ भृगुतीर्थ कुशोद्भवतीर्थ ब्रह्मतीर्थ ब्रह्मयोनि तीर्थ नीलपर्वत ४२ कुब्जावट भद्रवट वसिष्ठपदतीर्थ धूम्रावर्त्ततीर्थ मेरुधारतीर्थ कपिलतीर्थ ४३ स्वर्गद्वार

तीर्थ प्रजाद्वारतीर्थ कालिकाश्रमतीर्थ रुद्रावर्त्ततीर्थ सु-
गन्धाश्वतीर्थ कपिलाबन ४४ भद्रकर्णह्रद शंकुकर्णह्रद
सप्तधातुसुततीर्थ औशनसतीर्थ ४५ कपाल मोचन
तीर्थ नरकीर्णतीर्थ काम्यकतीर्थ चतुःसामुद्रिकतीर्थ श-
त्तदतीर्थ सहस्रदतीर्थ ४६ वेणुकतीर्थ पंचवटतीर्थ वि-
मोचनतीर्थ औजसतीर्थ स्थाणुतीर्थ कुरुतीर्थ स्वर्गद्वार
तीर्थ कुशध्वजतीर्थ विश्वेश्वरतीर्थ चामरुककूप नारा-
यणाश्रमतीर्थ गंगाह्रद वटबदरीपत्तन ४७ इन्द्रमार्ग
तीर्थ एकरात्र तीर्थ क्षीरकवन सोमतीर्थ दधीचितीर्थ
श्रुततीर्थ ४८ अरुन्धतीवन उत्तमरूप ब्रह्मावर्त वेदी-
तीर्थ कुरुवन यमुना प्रभवतीर्थ ४९ कन्याश्रमतीर्थ
सन्निहिततीर्थ पवित्ररूपकोटितीर्थ स्थलीभद्र काली
ह्रद ५० बीरप्रभोत्थतीर्थ सिंधोत्थतीर्थ शमीतीर्थ कु-
लपातीर्थ असितीर्थ मृत्तिकातीर्थ ऊर्बीसंक्रमणतीर्थ
मायाबिद्योद्भवतीर्थ ५१ महाश्रमतीर्थ अवतंसिकातीर्थ
रूपतीर्थ सुन्दरिकाश्रमतीर्थ ब्रह्माणीतीर्थ बैश्रामतीर्थ
गंगोद्भेदतीर्थ सरस्वतीतीर्थ ५२ बाहुतीर्थ बाहुनदी
विमलातीर्थ अशोकतीर्थ गौत्तमीरामतीर्थ शतसह-
स्रदतीर्थ ५३ भर्तृस्थान कोटितीर्थ धाराकापिलीतीर्थ
पंचनन्दतीर्थ मार्कंडेयतीर्थ ५४ सोमतीर्थ शिरोदतीर्थ
मत्स्योदरीतीर्थ सूर्य्यप्रभतीर्थ सूर्य्यतीर्थ सोमतीर्थ ब-
लतीर्थ ५५ अरुणास्पदतीर्थ दारुकतीर्थ शुक्रतीर्थ
सवान्नकतीर्थ अविमुक्ताख्यतीर्थ नीलकण्ठह्रद ५६
सुखद्वार किंपुलिकातीर्थ कोटिपिशाचमोचन सुभद्रा

ह्रद ५७ विमलदन्तकुण्ड चण्डेश्वरतीर्थ ज्येष्ठस्थानह्रद हरिकेशवन ५८ अजामुखसुरतीर्थ घण्टाकर्णह्रद पुण्डरीकह्रद रूपिकातीर्थ ५९ सुवर्णोदपानतीर्थ श्वेततीर्थ श्वेतह्रद घर्घरिकामकुण्ड श्यामाकूप चण्डिका ६० श्मशानतीर्थ स्तम्भ कुम्भतीर्थ विनायकह्रद सिंधूद्भवकूप पवित्ररूप ब्रह्मसर ६१ रुद्राबासतीर्थ नागतीर्थ लोमक तीर्थ भक्तह्रद क्षीरसर प्रेताधारतीर्थ कुमारकतीर्थ ६२ ब्रह्मावर्त्त कुशावर्त्त दधिकर्णोदपानकतीर्थ शृंगतीर्थ महातीर्थ महानदी ६३ पवित्ररूप ब्रह्मतीर्थ गयाशीर्ष तीर्थ अक्षयवट दक्षिणतीर्थ उत्तरतीर्थ सोमयतीर्थ रूपशांतिकतीर्थ ६४ कपिलाह्रद गृध्रवट सावित्रीह्रद प्रभासन शीतबनयोनिद्वार धेनुकबट ६५ रण्यकतीर्थ कोकिलाख्यतीर्थ मतङ्गह्रद पितृकूप रङ्गतीर्थ चक्रतीर्थ सुमालीतीर्थ ६६ ब्रह्मस्थान सप्तकुण्ड मणिरत्नह्रद सुकुलाश्रम सुकुलाह्रद ६७ जनकरूपतीर्थ पवित्ररूप विशनतीर्थ आद्यतीर्थ बिनाशतीर्थ माहेश्वरीधारा ६८ रमणीक देवपुष्करणी सपर्यकूप जातिस्मरतीर्थ बामनकतीर्थ बटेश्वरह्रद ६९ कौशाख्यतीर्थ भरततीर्थ ज्येष्ठानिका तीर्थ विश्वेश्वर कांति शांति कन्या संवेद्यतीर्थ ७० निश्चिराप्रभवतीर्थ वसिष्ठाश्रम देवकूटतीर्थ पवित्र कूप कौशिकाश्रम ७१ कुम्भकर्णह्रद कौशिकीह्रद धर्म तीर्थ कामतीर्थ मुकुलिकतीर्थ ७२ दंडोलीमालिनितीर्थ नवेड़िकातीर्थ संध्यातीर्थ कामतोय तीर्थ कपिल तीर्थ रोहिताएर्वतीर्थ ७३ शोणोद्भवतीर्थ वंशगुल्मतीर्थ ऋ-

षभतीर्थ कालतीर्थ पुण्यावतीह्रद बदरिकाश्रमतीर्थ ७४ रामतीर्थ पितृबन बिरजातीर्थ मार्कण्डेयबन कृष्णातीर्थ कृष्णावट ७५ रोहिणीवीर्य्यसर इन्द्रद्युम्नसर सानुगर्भ तीर्थ माहेंद्रतीर्थ श्रीतीर्थ श्रीनदी ७६ इष्टतीर्थ आश्वभ तीर्थ कावेरीह्रद कन्यातीर्थ गोतीर्थ गोमतीस्थान ७७ सर्वदेवब्रत तीर्थ कन्याश्रमह्रद महाराजह्रद शक्रतीर्थ दण्डकतीर्थ ७८ ॐकारतीर्थ तुंगवन मेधारण्य देवह्रद अमर पर्वत ७९ पवित्ररूप मन्दाकिनीह्रद माहेश्वरकूप गंगातीर्थ त्रिपुरुषतीर्थ तांमततीर्थ बड़वामुखतीर्थ ८० गृध्रकूट तीर्थ काकूशोण तीर्थ रोहितकतीर्थ कपिलह्रद अगस्त्यह्रद वासिष्ठह्रद कपिलाह्रद ८१ बालखिल्याह्रद सप्तर्षिह्रद महर्षिह्रद अखण्डितफल ८२ उपवासको करनेवाला और जितेंद्रिय मनुष्य इन तीर्थोंके माहात्म्य को सुन स्नानकरै औरदेवता ऋषिमनुष्य पितरोंकातर्प- णकर और देवताओंका पूजनकर दोदो रात्रि स्थितरहै ८३ हे द्विजो इन तीर्थोंके अलग २ फल प्रकाशितकिये हैं और इन तीर्थोंके स्नानसे अश्वमेध यज्ञके फलको मनुष्य प्राप्त होताहै ८४ जो मनुष्य इन तीर्थों के मा- हात्म्यको सुनै व पढ़ै वह सब पापोंसे छूटजाताहै ८५॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांतीर्थमाहात्म्यवर्णनोनाम चतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

पच्चीसवां अध्याय॥

मुनियोंने पूँछा हे सूतजी इस पृथ्वीमें सब अर्थ काम मोक्षको देनेवाली उत्तम पृथ्वी और तीर्थों में उत्तम तीर्थ हमसे वर्णन करो १ लोमहर्षणजी बोले हे मुनि जनो पहिले मुनिजनोंने इसी प्रश्नको मेरे गुरुसे पूँछा था सोही हे द्विजोत्तमो मैं तुमसे कहताहूं २ सब आश्रमोंसे पवित्र और नानाप्रकारके पुष्पोंसे शोभित नाना प्रकारके वृक्ष और लताओंसे आकीर्ण नानाप्रकारके मृगगणों से युत ३ और पन्नग कमल देवदारु शाल ताल तमाल पनस धव खैर ४ पाटला अशोक बकुल कनेर चमेली और अन्य नानाप्रकारके वृक्ष और पुष्पों से उपशोभित ५ कुरुक्षेत्र में एक समय बुद्धिमानों में श्रेष्ठ महाभारतके कर्त्ता नानाप्रकारके शस्त्रोंमें विशारद ६ अध्यात्ममें निष्ठ विद्वान् और सब प्राणियों में रत पुराण और आगमके बक्ता वेद और वेदांगोंके पारको जाननेवाले और कमलके पत्रके समान नेत्रोंवाले पराशरके पुत्र वेदव्यासजीके दर्शन करनेको संशित ब्रत ७।८ शांतातप भरद्वाज गौतम वसिष्ठ जैमिनि धौम्य मार्कण्डेय बाल्मीकि९ विश्वामित्र सतानन्द वात्स्य दाल्भ्य भागुरि सुमन्तु परशुराम कण्व मेधा तिथि गुरु १० मांडव्य च्यवन धूम्र असित देवल मौद्गुल्य तृण जंतु पिप्पलाद अकृतब्रण ११ सम्बर्त्त दोनों कौशिक मैत्रेय हारित शांडिल्य अगस्त्य दुर्वासा लोमश १२ नारद

पर्वत वैशम्पायन गालव भास्करि पूरण सूत पुलस्त्य कपिल १३ उलूक अश्वहल वायु द्वैधस्थान तुम्बरु सनत्कुमार कृश कृष्ण भौतिक १४ आदि मुनिजन आये और उन तथा दूसरे राजर्षियोंसे नक्षत्रोंमें चन्द्रमाके समान परिवृत हुये वेदव्यासजी १५ उन मुनिगणोंकी पूजाकी और वे मुनिगणभी व्यासजीकी पूजाकर आपसमें कथा बार्त्ता करनेलगे १६ कथा के अन्तमें वे तपोबन निवासी मुनिजन सत्यवतीके पुत्र वेदव्यासजीसे एक संशय पूँछनेलगे १७ कि हे मुने वेद शास्त्र पुराण आगम भारत और भूत भव्य भविष्य सबोंको आप जानते हैं १८ और बहुतसे दुःखोंसे युक्तसारसे रहित बड़े समुद्रवत् रागरूपी ग्राहोंसे आकुल और भयानक विषयरूपी जलसे व्याप्त १९ और इन्द्रियोंसे आवृत पवनवाला कृशरूप सैकड़ों तरंगोंसे संकुल और मोहसे संकलित रौद्र और लोभरूपी गम्भीरतासे दुस्तर २० संसारसे रहित आपसे हम पूंछते हैं कि हे मुनिसत्तम हमसे यह वर्णनकरो २१ कि भैरव और लोमहर्षण रूपी इस असार संसारमें डूबतेहुये लोकोंको उपदेश के द्वारा उद्धार करनेको आप समर्थहो २२ और मोक्ष के देनेवाले और दुर्लभ क्षेत्रोंको कहनेको आप योग्य हो और पृथिवी में कर्मभूमिको सुनना हम चाहते हैं २३ मनुष्य अच्छे कर्म्मों को करके यथोचित कर्मभूमि प्राप्तहोकर परमसिद्धिको प्राप्तहोते हैं और बुरेकर्म्म से नरकको प्राप्तहोतेहैं २४ हे द्विजोत्तम क्षेत्रमें अथवा

क्षेत्रमें पुरुष मोक्षको प्राप्तहोता है इसलिये हे महा-
प्राज्ञ जो हमने प्रश्नकिया है उसका उत्तर वर्णनकरो
२५ मुनिजनोंके वचनसुन भूतभव्य और भविष्यको
जाननेवाले व्यासजी कहनेलगे २६ कि हे मुनिजनो
तुमने जो प्रश्नकिया है तिसका उत्तर मैं कहता हूँ यही
सम्बाद पहले मुनिजनों का ब्रह्माजी के सङ्ग हुआ है
२७ विस्तृत और नानाप्रकारके रत्नोंसे विभूषित नाना
प्रकारके वृक्षों और लताओंसे आकीर्ण नानाप्रकारके
पुष्पोंसे शोभित और नानाप्रकारके पक्षियोंसे शब्दित
रम्य और नानाप्रकारके प्रस्तरोंसे आकुल नानाप्र-
कारके सत्वोंसे आकीर्ण नानाप्रकारके आश्चर्योंसे स-
मन्वित और नानाप्रकारके धातुओंसे भूषितनानाप्रकार
के मुनियोंसे आकीर्ण और नानाप्रकारके आश्रमोंसे
समन्वित मेरुपर्वतके पृष्ठभागमें स्थित जगत्के स्वामी
और जगत्की योनि चतुर्मुख और जगत्के पति बन्धु
आधार और ईश्वर और देव दानव गन्धर्व यक्ष वि-
द्याधर सर्प मुनि सिद्ध अप्सरा आदिसे परिवारित ब्रह्मा
जीको २८।३२ स्तुतिकर कितनेही उनके सामने ध्यान
करनेलगे कितनेक बाजोंको बजानेलगे और कितनेक
नृत्यकरनेलगे ३३ ऐसे सर्वभूत समागमरूप और नाना
प्रकारके पुष्पोंसे संयुक्त और दक्षिणकी पवनसे सेवित
सुन्दर कालमें ३४ ब्रह्माजीको भृगुआदि ऋषिप्रणाम
कर इसी प्रश्नको पूँछनेलगे ३५ कि हे भगवन् पृथिवी
तलमें कर्मभूमि और दुर्लभमोक्षक्षेत्रोंको सुननेकी हम

इच्छाकरते हैं सो हमसे वर्णनकरो ३६ व्यासजी बोले कि उन मुनिजनोंकेवचनको सुन देवताओंके ईश्वरब्रह्मा जी उसप्रश्नके उत्तरको वर्णन करनेमें प्रवृत्तहुये ३७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांऋषिसंबादेप्रश्न नामकपंचविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे मुनिजनो अब मैं भक्ति और मुक्तिके देनेवाले कल्याणरूप और वेदसे व्यवस्थित पुराणको कहूँगा तिसको सुनो पृथिवीमें भारतवर्ष कर्म-भूमि है और कर्म्मों के फलका भोगने का स्थान स्वर्ग और नरकहै १।२ भारतवर्षमें मनुष्य पाप और पुण्य कर्म्मको करनेसेनिश्चयशुभ और अशुभ कर्म्मोंके फलों को प्राप्तहोतेहैं ३ और ब्राह्मण आदि आप कर्म्मकरके सावधानहुये सिद्धिको प्राप्तहोतेहैं इसमें संशय नहीं४ शुभ कर्म्मको करनेवाले मनुष्य वहां देव शरीरको प्राप्त होतेहैं और संयत इन्द्रियोंवाले अन्य मनुष्यमोक्षको प्राप्तहोतेहैं ५ शांतरूप और रागमत्सरतासे रहित पण्डितदुःखोंको त्यागकर विमानोंमें बैठस्वर्गमें स्थितहोते हैं ६ और शुभ कर्म्मके करने से स्वर्गबासीहुये मनुष्य सर्व कालमें भारतवर्षमें जन्मलेनेकी आकांक्षा करते रहते हैं ७ और यह इच्छा रखतेहैं कि स्वर्ग और मोक्ष के फलोंको कब हम देखेंगे मुनियों ने पूँछा कि आपने जो कर्म करके पुण्य आदि कहा है ८ और हे सुरश्रेष्ठ

भारतवर्षमें जहां तप स्वर्ग मोक्ष कर्म पृथिवी में किया-
जाता है ९ सो उसतप स्वर्ग और मोक्षकी प्राप्ति का
कौन कर्महै १० हे ब्रह्मन् जो हमपर दयाकरनेकी इच्छा
करो तो हम भारतवर्ष का आख्यानकहें ११ हे नाथ
इसभारतवर्ष में जौन २ वर्ष और पर्वतहैं और जो जो
वर्षों के भेद हैं वे सब हमसे कहो १२ ब्रह्माजी बोले
हे द्विजो मनुष्योंके भेद भारतवर्ष को सुनो जहां समुद्र
के जलसे वेष्टित टापू हैं १३ और दशहज़ार योजन
भारतवर्षहै जिसके अंतमें किरात पश्चिममें यवन आदि
१४ और मध्यमें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र बसतेहैं
१५ और वे पूजा युद्ध व्यवहार शुश्रूषा आदि कर्म्मों
से बर्त्ततेहैं १६ वहां स्वर्ग और मोक्षका हेतु पुण्यहै और
नरकका हेतु पाप है १७ जहां महेन्द्रमलय शक्तिमान्
ऋक्ष विंध्याचल पारियात्र नामक प्रधान सातपर्वतहैं
१८ और अन्यभी विस्तारसे उच्छ्रितरम्य विपुल और
चित्रशिखरवाले १९ कोलाहल वैभ्राजमन्दर दर्दराचल
बांतधम रैवतक मैनाकसुर २० तुंगप्रस्थ राजगिरि गो-
धन पांडवबिल पुष्पागिरि उर्जवन्त रैवत अर्बुद २१ ऋ-
ष्यमूक गोमन्तकूट शैलकृतासर श्रीपर्वत चकोर आदि
सैकड़ों अन्य पर्वतहैं २२ और तिन पर्वतोंसे मिलेहुये
म्लेच्छ आदिबहुतसे देशहैं वे म्लेच्छ आदि जन जिन
नदियोंकेजलोंको पीतेहैं उनको भी हेद्विजोत्तमो जो २३
गंगा सरस्वती चन्द्रभागा सिंधुयमुना शतद्रू बिपाशा बि-
तस्ता ऐरावतीकुहू २४ गोमती धूतपापा बाहुदा दृषद्वती

बिपाण देविकारं क्षुत्रिशिरा गण्डकी २५ कौशिकी दूसरी हिमवत्पादतिःसृत कौशिकी देवस्मृति देवतीरा दाहुघ्नी सिंधु २६ बेणा चन्दना सदानीरामकी चर्मण्वती विदिशा वेत्रवती २७ सिप्रा अरंती पारियात्र शोण महानदी नर्मदा सुरथाक्रिया २८ मन्दाकिनी दशार्णा चित्रकूटा आपगा चित्रोत्पला करमोदा पिशाचिका २९ लघुश्रेणी विपाशा धैवलानदी सुमेरुजा शुक्तवती शकुनी त्रिदशाक्री ३० कव्यपाद मृता वेगबाहिनी शिप्रा पयोध्नी निर्विर्ण तापी सतपताकिनी ३१ वेष्टया बैतरणी शिनी बाली कुमुद्वती तोया महागौरी दुर्गा अन्ता शिला आदि पवित्र जलवाली नदियां ३२ विष्णुपादसे उत्पन्नहुई हैं और गोदावरी भीमरथी कृष्णवेणी ३३ तुंगभेदा सुप्रयोगा पापनाशिनी ये नदियां सह्यपादसे निकसी हैं ३४ कृतमाला ताम्रपर्णी पुष्पजाति उत्पलावती ये शीतलजलवाली नदियां मलयपर्वत से उत्पन्नहुई हैं ३५ पितृसोमा ऋषिकुल्या बहुलात्रिबिधा लांगलिनी औरबशकरा ये नदियांमहेन्द्रपर्वतसे उत्पन्न हुई हैं ३६ पवित्ररूपी गंगा और सरस्वती सब समुद्र में जाके प्राप्त होतीहैं येसब विश्वकी माताहैं और सब प्रकारके पापों को हरती हैं ३७ हे द्विजोत्तमो अन्य भी प्रावृट्कालमें बहनेवाली और सदाबहनेवाली क्षुद्रनदियां बहुत हैं ३८ मत्स्य मुकुट कुल्य कुन्तल काशिक कोशल अंधक कलिंग मकर और वृकसहित ३९ ये सब मध्यदेश कहेहैं और सह्यपर्वत के उत्तर में जो गोदा

वरी नदी है ४० यहां पृथिवीभरमें मनोरमदेश है और
तहांहीं महात्मा भार्गवमुनिका रमणीक गोवर्द्धनपुरहै ४१
काह्लीकण्टधाना सुभीरा कालतोयद् अपरांत शूद्र बा-
ह्लिक मेकल ४२ गांधार यवन सिंधु सौवीर भद्रक शत
ह्रद् कलिंग पारद् आहार्य मूषिक ४३ माठर कनक कैकेय
दग्धमानिक क्षत्रिय परदास वैश्य शूद्र कुल ४४ कांबोज
विक्रांत बर्बर लौकिक नीव सुषार पह्लव आतन ४५
आत्रेय भरद्वाज पुष्कल दशेरुक नश्यक शून्यकार कु-
लिक जह्नुक ४६ जपध निमित्त किरातजाति तोमर
हंस माक्षा काश्मीर कुबल ४७ सूतिक कहजस्वर्ण दार्व
नामक उत्तरादिशाकेदेशहैं ४८ अंधक मुकुर अंतर्गिरा
बहिर्गिरा अपरंगा रींगामतद् मानबर्तिक ४९ ब्रह्मतुङ्ग
प्रतिभय भर्याग उपमण्डुक प्राग्ज्योतिष मद्र विदेह
स्तामक निंदक ५० मल्व मग्र कामन्द प्राच्यासनपद ये
सब पूर्वदिशा के देश हैं और दक्षिणा पयगामी अन्य
भी देश हैं ५१ पूर्वकेशल गोलांगूल सेतुर्षिक मूषिक
कुमार बासक ५२ महाराष्ट्र माहिषक कालिंग आभीर
सहवैशिक्या अचेब्य शवल ५३ पुलिंद मौलेय वैदर्भ
दण्डक पौलिक मानक अश्मक भोजबर्द्धन ५४ कौलक
कुन्तल डम्भक शीलकालक ये दक्षिणके देशहैं ५५
सूर्पारक कान्निधन ऊर्ण तालकट उत्तमांश दशार्ण तेज
किष्किन्धिक ५६ तोषल कोषल त्रैपुरारिदिशि तुषार
तुवर कांबोज यवन ५७ आभूष तुण्डकार बीरहोत्र
कुतर्ज्जि ये सब देश विन्ध्याचलके पृष्ठपर पश्चिम में

स्थित हैं ५८ नीहार तुषमार्ग कुरुत्वंगण खस५९कुञ्ज
प्रारषण ऊर्णटटी कुण्डक चित्रमार्ग मानुष किरात तो-
मर ये सब पर्वत के आश्रयभूत देश हैं और ६० इन
सब देशोंमें कृत त्रेता आदि युगों की कल्पना है ऐसे
मनुष्यों का स्थान संज्ञक भारतवर्ष है ६१ जिसके पूर्व
और दक्षिणकेतरफ समुद्र लगरहाहै और उत्तरमें हि-
मालय पर्वत है ६२ ऐसे सब बीजोंवाला भारतवर्ष है
तहांब्रह्मत्व और देवत्व से ६३ मृग रीछ सर्प आदि
६४ सब स्थावर जंगम उत्तम गतिको प्राप्तहोजाते हैं
हे विप्रो शुभ और अशुभ कर्म करके प्राणियों को यह
कर्मभूमि प्राप्तहोतीहै और अन्यलोकों में यह कर्मभूमि
नहीं है ६५ देवशरीर को छोड़कर भी मनोरथवाले इस
भारतवर्षमें मनुष्यके शरीर को धारणकरते हैं ६६ इस
वास्ते शुभाशुभ कर्म्मोंको भोगनेकेलिये इसभारतवर्ष
के समान पृथिवीमें अन्यवर्ष नहींहै ६७ जहां ब्राह्मण
आदि वर्ण वांछितफलको प्राप्तहोते हैं भारतवर्षमें जो
मनुष्य उत्पन्न होतेहैं वे धन्य कहाते हैं ६८ और धर्म
अर्थ काम और मोक्षके महाफलको प्राप्तहोते हैं इस
वर्ष में तपका भी दुर्लभफल प्राप्तहोजाताहै ६९ और
सब दानों और सब यज्ञों देवतोंकी आराधना और वेद
के पाठके फल ७० की प्राप्ति मनुष्यों को यथार्थ होती
है इसलिये हे द्विजो भारतवर्षके सब गुणों को वर्णन
करने में कौन समर्थ है जहां तीर्थयात्रा गुरुकी सेवा
७१ नानाप्रकारके कर्मों नानाप्रकारके शास्त्रों और अ-

हिंसा आदि सब फल मनुष्यों को यथार्थ मिलता है ७२ ब्रह्मचर्य्य गार्हस्थ्य इष्टापर्त्ति यज्ञ और अन्यशुभ-कर्मों केफल ७३ भारतवर्षमें प्राप्तहोतेहैं अन्यलोकमें नहीं जिस भारत वर्षमें सब देवते भी जन्मलेनेकी वांछा करते हैं ७४ यह सब पापों को हरताहै पवित्रहै धन्यहै और बुद्धिको बढ़ाताहै ७५ जो जितेन्द्रिय मनुष्य इस आख्यान को नित्यप्रति सुनै व पठन करैगा वह सब पापोंसे निर्मुक्तहोकर विष्णुके लोकको प्राप्तहोवेगा ७६॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयंभूऋषिसंबादे भारतगुणकीर्त्तनन्नामषड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले उसभारतवर्ष में दक्षिण समुद्रके समीप में ओड्रदेश विख्यात है जो स्वर्ग और मोक्ष को देताहै १ और उत्तर समुद्रसे लगाकर जहां तक बिरज मण्डलहै यह सब गुणोंसे अलंकृत पुण्य शील मनुष्योंका देशहै २ उस देशमें जो जितेंद्रिय रूप ब्राह्मण उपजतेहैं वे तप और स्वाध्यायमें तत्पर और पूज्यहैं ३ और तिसदेश में उत्पन्नहुये ब्राह्मण श्राद्धदानबिवाह यज्ञआदिकर्म्मों में प्रशस्तहैं ४ षट्कर्मों में निपुण और वेदके पारग इतिहासको जाननेवाले पुराणोंमें विशारद ५ सब शास्त्रोंके अर्थ में कुशल यज्ञको करनेवाले मत्सरता से रहित अग्निहोत्र में रत और स्मार्त्त अग्नि में तत्पर ६ और पुत्र भार्या धन आदिसे युक्त दान देनेवाले और सत्य-

बादी ब्राह्मण यज्ञोत्सव से विभूषित उस पवित्र देशमें बसते हैं ७ और अपने धर्म में निरत शान्त और धार्मिक क्षत्रिय आदि तीनोंवर्ण भी वहां बसते हैं ८ उस देशमें उत्पन्न होनेवाले कोणादित्य नामसे प्रसिद्ध सूर्य्य को देखनेसे मनुष्य सब पापोंसे छूटजाताहै ९ मुनियों ने पूँछा कि हे ब्रह्मन् अब हम उस सूर्य्य के क्षेत्रका बर्णन सुनने की इच्छा करते हैं जहां वह सूर्य्य स्थित है १० ब्रह्माजी बोले क्षीरसमुद्रके पवित्र मनोहर और सब गुणोंसे अन्विततटपर ११ चम्पक अशोकबकुल कनेर पाटला पुन्नाग कमल नागकेसर १२ तगर कुन्तजक सेवती मालती कुन्दपुष्प मल्लिका १३ केतकी बनखण्डी सम्बर्त्त पुष्प कदम्ब बड़हल शाल पनस देवदारु १४ सरल मुचुकुन्द लाल और श्यामपुष्प पीपल सातला आंब आंवड़ा १५ ताड़ सुपारीवृक्ष नारियलवृक्ष कैथ आदि नानाप्रकारके वृक्षोंसे अलंकृत १६ देशमें पवित्र और जगत्में विख्यात सातयोजन विस्तारवाला और भुक्तिमुक्ति को देनेवाला क्षेत्रहै १७ जहां हज़ार किरणों वाला वह सूर्य्य स्थित है और उसको भुक्तिमुक्ति देने वाला कोणादित्य कहते हैं १८ प्रतिमास शुक्लपक्षकी सप्तमी में जितेंद्रिय और उपबासी मनुष्य वहां प्राप्त होकर समुद्रमें स्नानकरै १९ और शुद्धहोकर दिवाकर का स्मरण २० और देवता ऋषि और मनुष्यों का तर्प्पणकरै फिर धोती और अँगोछेको ग्रहणकर सुन्दर आसनपर बैठ २१ और पवित्रहोकर पूर्वकी तर्फ मुख

कर लालचन्दन संयुक्त पानीसे पद्मके आकार २२ अ-
र्थात् आठपत्तोंवाला और केसराख्य नाम से प्रसिद्ध
बर्तुल और ऊपर को कर्णिकावाला कमललिखकर २३
तिल चावल जल और लालचन्दन रक्तपुष्प और कुशा
सहित तांबाके पात्र में रक्खे २४ और तांबेके पात्रके
अभाव में आकके पत्तेके दोनेमें तिल और पानीडाल
उसपात्रको ढकदे २५ और न्यास और अंग न्यासको
हृदय आदिकोंके द्वारा करके अच्छीतरह सूर्य्यका ध्यान
करके २६ प्रथममध्यदलमें फिर अग्निकोण के दलमें
फिर नैऋत्यकोण के दलमें और फिर ईशानकोणके
दलमें पूजाकरके फिर मध्यदलमें पूजाकरे २७पश्चात्
प्रभूत विमलसार और आराधना के योग्य परमसुख
कमलको पूजकर सूर्य्य का आवाहनकरे २८ और क-
र्णिका के ऊपर स्थापित करके मुद्रादिखावे कि स्नान
आदि करके और ध्यानकरके सावधानहो २९ उसरक्त-
पद्ममें व्यवस्थित पिंगाक्ष और दो भुजाओंवाले और
कमलकीदण्डीके समान अरुण भागवाले सब लक्षणों
से संयुक्त और सब गहनोंसे विभूषित स्वरूप और बर
को देनेवाले शान्त और प्रभामण्डलसे मण्डित ३०।३१
सूर्य्यको पूजे सचिक्कण सिन्दूरके समान उदितहुये सूर्य्य
को देखकर पूर्वोक्तपात्र को ग्रहणकरे और गोडों से पृ-
थिवीपर खड़ाहो ३२ उसे शिरपर धारणकर और एक
चित्त और सावधानहो ३३ अक्षरमन्त्रसे सूर्य्यको अर्घ्य
निवेदनकरे और श्रद्धाभाव और भक्ति से पूजाकरे ३४

फिर अग्नि नैऋत्य वायव्य ईशान मध्य आदि सब दिशाओंमें क्रमसे पूजाकरे ३५ अर्घ्यदेकर गन्ध पुष्प दीप नैवेद्यको निवेदनकर जापस्तुति और प्रणामकरके मुद्रा बांधकर विसर्ज्जनकरे ३६ जो जितेन्द्रिय वाले ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री सूर्य्य को अर्घ्य देवेंगे ३७ वे निरन्तर भक्तिसे युक्त और बिशुद्ध आत्मावाले मनुष्य परमगतिको प्राप्तहों ३८ त्रिलोकी को प्रकाश करनेवाले और देव और आकाशमें बिचरनेवाले सूर्य्य का जोमनुष्य स्मरणकरतेहैं वे सदासुखके भाजनहोतेहैं ३९ जबतक सूर्य्यको अर्घ्य निवेदन न करे तबतक विष्णु व महादेव का पूजन नहीं करे ४० इसलिये यत्न से नित्यप्रति पुष्प और मनोरम गन्धसे संयुक्त अर्घ्य सूर्य्य को देतारहै ४१ ऐसे जो सप्तमी तिथिमें पवित्र और स्नान मनुष्य सूर्य्यको अर्घ्य देताहै वह बांछित फलको प्राप्तहोता है ४२ रोगी रोगों से छूटताहै धनकी इच्छा वाला मनुष्यधनको प्राप्तहोताहै विद्यार्थी विद्याको प्राप्त होता है और पुत्रार्थी पुत्रोंको प्राप्तहोता है ४३ एवम् जिस जिस कामका ध्यानकर सूर्य्यको अर्घ्य दियाजाता है तिसी तिसी फलको मनुष्य प्राप्तहोता है ४४ समुद्र में इसप्रकार स्नानकरके और सूर्य्यको अर्घ्य और प्रणाम करने से नर वा नारी सब तरहके कामोंके फलों को प्राप्त होतेहैं ४५ और सूर्य्य गंगाके जलमें स्नान करके और कुशाओं से शिरका अभिषेक करनेसे सब पापों से मुक्तहुआ मनुष्य स्वर्गमें बसता है ४६ सूर्य्य

को पुष्पांजलि देनेसे मनुष्य सूर्य्यलोकमें बसताहै सूर्य्य की पूजा और प्रदक्षिणाकर ४७ वेदके मन्त्रोंसे स्तुति करे और परम भक्तिसे कोणार्क की पूजाकर गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्यको निवेदनकरे ४८ एवम् दण्डवत् प्रणाम और अनेक तरहकी जय शब्दोंसे जगत्के स्वामी सूर्य्य की पूजाकरै तो ४९ मनुष्य दश अश्वमेध यज्ञों के फलको प्राप्तहोता है ५० और सब पापोंसे मुक्तहोकर और युवा और दिव्य शरीर को धारणाकर सात पीढ़ी ऊपरकी और सातपीढ़ी नीचेकी उद्धारकर ५१ कामग और तेजवाला सूर्य के समान बिमानमें स्थित हो और गन्धर्वोंसे उपगीयमान सूर्य्यलोकमें प्राप्तहोताहै ५२ और तहां उत्तम भोगोंको भोगकर बहुतदिनों के पीछे योगियोंके उत्तम कुलमें जन्मलेकर ५३ चारों वेदों को जाननेवाला स्वधर्म्ममें रत और पवित्र ब्राह्मण होकर उत्तम योगको प्राप्तहो मोक्षको प्राप्तहोता है ५४ चैत्रमासके शुक्लपक्षमें जो मनुष्य तहां कामदेव को नाशनेवाली यात्राकरताहै वह सब पूर्वोक्त फलको निश्चय प्राप्तहोवेगा ५५ सूर्य्यके शयन में स्थापनमें संक्रान्तिमें अयनमें रबिबारमें सप्तमीतिथिमें व सर्बकाल में जो ५६ तहां यात्रा करते हैं वे सूर्य्य के समान वर्ण वाले बिमान में स्थित होकर सूर्य्यलोकमें बसतेहैं ५७ तहां समुद्रके तीरपर सब कामनाओं का देनेवाला बामदेवनाम से बिख्यात महादेव है इसलिये ५८ तिस समुद्रमें स्नानकर महादेवके दर्शनकरे और गन्ध पुष्प

धूप दीप नैवेद्य इत्यादि देकर ५९ प्रणाम स्तुति गीत बाजे इत्यादि उत्सव करने से मनुष्य राजसूय यज्ञ और अश्वमेध यज्ञकेफलों को प्राप्तहोताहै ६० और इसकर्मसे महात्माजन परमसिद्धिको प्राप्तहोतेहैं और मनोबांछित चलनेवाले और किंकिणी जालसे मण्डित ऐसे बिमानमें स्थित होकर और गन्धर्वों से गीयमान हो शिवलोकमें प्राप्तहोतेहैं ६१ शांकरयोग को प्राप्त होनेसे मनुष्य शिवलोकमें जाताहै और तहां मनोरम भोगोंको भोगकर ६२ यहां आकर चारोंवेदों को जानने वाला होकर फिर शांकरयोगको प्राप्तहो मोक्षको प्राप्त होजाताहै ६३ जो मनुष्य उस सूर्य्यक्षेत्रमें प्राणोंकोत्यागताहै वह सूर्य्यलोकमें प्राप्तहोकर सूर्य्यकेसमान आकाशमें आनन्दितहोताहै ६४ और बहुतकालके उपरान्त मनुष्य देहको धारणकर धार्मिकराजाहोता है तब सूर्य्ययोगको प्राप्तहो मोक्षको प्राप्त होजाता है ६५ हे मुनिजनों समुद्रके तीरपर भुक्ति और मुक्तिकोदेनेवाला और अति दुर्लभ यह सूर्य्यक्षेत्र मैंने कहा है ६६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसंवादेकोणादित्य माहात्म्यवर्णनोनामसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

मुनियों ने पूँछा हे सुरश्रेष्ठ भुक्ति और मुक्तिको देने वाला सूर्य्यकाक्षेत्र आपने कहा और हमोंनेसुना १ पर इससुख को देनेवाली आपके मुखसे कही पवित्र और

पापों को नाशनेवाली सूर्य्य की कथा सुननेसे हम तृप्त नहींहोते २ इसलिये हे सुरश्रेष्ठ जो उसदेवकी पूजाका फल दानकाफल ३ और प्रणिपात नमस्कार प्रदक्षिणा धूप दीप प्रदान अर्चनविधि आदिमें जो फलहोता है ४ उपवास में जो पुण्यहै और रात्रिके भोजनमें जोपुण्यहै और किसप्रकारका अर्घ्य दियाजाताहै कहां वस्त्र दियाजाता है ५ कैसे भक्तिकरीजाती है और कैसे वह देवप्रसन्नहोता है यह सब वृत्तांत सुनने की हम इच्छा करते हैं ६ ब्रह्माजी बोले हे द्विजोत्तमो सूर्य्यका अर्घ्य पूजादिक और भक्तिश्रद्धा समाधि को मुझसे सुनो ७ मनसे भावना और भक्तिहोतीहै और ध्यानही समाधि है इसलिये यह सब श्रवणकरो ८ जो उस देवकी कथा सुनावे और उसके भक्तोंको पूजे और अग्निकी शुश्रूषा करै वह मनुष्य सनातनभक्त है ९ चित्त और मन से देव पूजामेंरत और ईश्वर सम्बन्धीकर्म्मको करनेवाला मनुष्य सनातनभक्त होताहै १० देवताओं केलिये क्रियमाण कर्मों को जो यमराजमानता है अथवा जो देवताओं का कीर्त्तन करता है वह सनातनभक्त कहाता है ११ और पदार्थका भोजनकर उसकी निन्दा न करनेवाला और अन्नदेवताकी निन्दा न करने और उस देवमें चित्तलगानेवाला और सूर्य्यकेव्रतको करनेवाला मनुष्य परमभक्त कहाताहै १२ स्थितहुआ चलताहुआ शयनहुआ सूँघताहुआ नेत्रोंको खोलताहुआ नेत्रोंको मीचताहुआ जो मनुष्य सूर्य्यका स्मरण करतारहै वही

भक्त कहाता है १३ ऐसे सब कालमें जाननेवाले और बिनाजानने वाले को भक्ति समाधि तत्त्व और मनसे भक्ति करनीचाहिये १४ जो ब्राह्मणको नेमसे दानदेता है उसे देव मनुष्य और पितर तीनों प्रति ग्रहणकरतेहैं १५ और पत्र पुष्प फल जल ये सब जिसने भक्तिकेद्वारा उसकेलिये अर्पित किये हैं वे सब उसको मिलजातेहैं १६ इसलिये नेम और आचारसे मिलीभाव शुद्धियुक्ति करनी उचित है और भावशुद्धिसे जो कियाजाता है वह निश्चय मनुष्यको मिलता है १७ सूर्य्यकी स्तुति जापपूजा उपचार औरउपवास ये सबषष्ठीतिथिमें किये जाने से मनुष्यको सब पापोंसे छुटातेहैं १८ और शिर को पृथिवी में नवायकर जो सूर्य्यको प्रणामकरते हैं वे तत्कालही सब पापों से मुक्तहोजाते हैं इसमें संशय नहीं १९ जो भक्तपुरुष सूर्य्यकी परिक्रमा करताहै उसको सातोंद्वीपों संयुक्त पृथिवी की परिक्रमा का फल मिलजाता है २० और जो आकाश की परिक्रमाकर सूर्य्यको मनमें ध्याता है उसको सब देवताओं की परिक्रमाकाफल प्राप्तहोताहै २१ जो मनुष्य एकबार भोजन करके षष्ठीतिथिमें सूर्य्यकी पूजाकरताहै और नेम व्रतभक्तिके द्वारा सूर्य्यको ध्याताहै२२वह महाभागसप्तमीतिथिमें अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्तहोताहै और जो दिनरात्रिका व्रतकर सूर्य्यकी पूजाकरताहै २३ सप्तमीमें व षष्ठीतिथिमें वह मनुष्य परमगतिको प्राप्तहोता है कृष्णपक्षकी सप्तमी में जो व्रतकरनेवाला और जि-

तेन्द्रिय मनुष्य २४ सब रत्नोंके द्वारा सूर्य्य को पूजता है वह अग्नि के समान कांतिवाले विमानमें स्थित हो सूर्य्यलोकमें गमनकरताहै २५ और शुक्लपक्षकी सप्तमीमें उपवास करनेवाला मनुष्य जो सब प्रकारके शुद्धउपहारों से सूर्य्यकी पूजाकरै २६ वह सब पापोंसे निर्मुक्त होकर सूर्य्यलोकमें गमनकरता है जो अर्कके सम्पुटमें आठतोले जलकोपीवे २७ और चौबीसदिनोंतक क्रम से इसीप्रकार बढ़ाके पीछे नित्यप्रति घटातारहै तो दो वर्षतक निरन्तर ऐसेही पीनेसे २८ यह अर्कसप्तमी सबकामनाओं को देती है शुक्लपक्षकी सप्तमीतिथि में जो रविवारहो तो२९विजयासप्तमी कहातीहै उसदिन दान करनेसे महाफलकी प्राप्तिहोतीहै और स्नानदान जप होम उपवास आदि ३० विजयासप्तमी में करने से महापातकों का नाशहोता है जो मनुष्य रविवारके दिन श्राद्धकरते हैं ३१ और अश्वकी पूजाकरते हैं वे मनोवांछितफलोंको प्राप्तहोतेहैं जिनलोगोंकेधर्मक्रिया आदि सूर्य्यके उद्देश से कियेजाते हैं ३२ उनके कुलमें दरिद्रता और रोग कभी नहीं उपजताहै और सूर्य्यकी भक्तिकरनेवाला मनुष्य वांछित फलको प्राप्तहोता है ३३ सुगन्धवाले और विचित्र ऐसे पुष्पों से जो उपवासी मनुष्य सूर्य्यको पूजताहै वह मनोवांछितफलको प्राप्तहोता है. ३४ घृत अथवातेलसे दीपक प्रज्वलित करनेसे दीर्घ आयुको प्राप्तहो और सुन्दर शरीरवाला और नेत्ररोगसे रहितहोजाताहै ३५ दीपकदानसे मनुष्य

ज्ञानरूपी दीपकसे प्रकाशित रहताहै और स्पष्ट बुद्धि-
वाला और श्रेष्ठइन्द्रियोंसे युक्तहोजाताहै ३६ तिलपरम
पवित्रहैं और तिलोंका दानभी उत्तमहै इसलिये हवन
और दीपककार्यमें तिलोंका बर्त्तनामहापापोंको नाशता
है ३७ जो मनुष्य नित्यप्रति देवताके मन्दिर अथवा रम-
णीक चतुष्पथमें दीपकजलाताहै वह सुन्दररूप और
भाग्यवाला होजाताहै ३८ विशेष करके तो घृतसे दीपक
जलानाकहा है और घृतके अभावमें तेलसे जलाना
कहा है परन्तु रसमेद और अस्थिकेतेल आदि से क-
दापि न जलाना चाहिये ३९ दीपकदानसे मनुष्य ऊपर,
के लोकोंमें जाताहै सदाप्रकाशित रहताहै और तिर्य्य-
ग्गति को नहीं प्राप्तहोता ४० प्रकाशित दीपकको नतो
हरनाहीचाहिये और न बुझाना चाहिये क्योंकि दीपक
को हरनेवाला मनुष्य अन्धाहोजाता है और नरकमें
बसताहै ४१ जो मनुष्य नित्यप्रति चन्दन अगर और
चम्पासे सूर्य्यको पूजताहै ४२ वह धनयश और लक्ष्मी
वाला होजाताहै और जो मनुष्य रक्तचन्दन और रक्त
पुष्पों से युक्त ४३ अर्घ्यसूर्य्यको देताहै वह एकवर्ष में
सिद्धिको प्राप्तहोता है सूर्य्य के उदय से अस्तहोनेतक
४४ सूर्य्यके सन्मुख मन्त्र को जपना महापातकोंको नाश-
नेवाला आदित्यव्रतकहाताहै ४५ और जो उदयहोते
सूर्य्य को अर्घ्यदेता है वह सब पापोंसे छूटजाताहै ४६
सुवर्ण गाय बैल पृथिवी वस्त्र सहित अर्घ्यको देनेवाला
मनुष्य सातजन्मोंतक फलको प्राप्तहोताहै ४७ अग्नि

जलआकाश पवित्र पृथिवी प्रतिमापिण्डी आदिमेंयत्न
से सूर्य्य को अर्घ्य देनाचाहिये ४८ सव्यहोनेका नियम
नहीं है किन्तु सूर्य्य के सन्मुख स्थित होकर अर्घ्यदेवै
और घृत संयुक्त गूगलका धूपदेवे और भक्ति करतारहै
४९ ऐसे करनेसे मनुष्य तत्काल पापोंसे छूटताहै इसमें
संशयनहीं और श्रीबास धूप देवदारु ५०कपूर अगर
आदि सूर्य्यको देनेवाले मनुष्य स्वर्ग्ग में बसते हैं ५१
सूर्य्यके उत्तर अयन व दक्षिण अयनमें सूर्य्यकी पूजा
करने से मनुष्य सब पापों से छूटताहै ५२ और बिषु-
काल ग्रहण पर्वकालमें सूर्य्य को ५३ विशेषकर पूजने
से मनुष्य सबपापोंसे छूटजाताहै ५४ ऐसेही सब बेला
व अबेला में जो मनुष्य भक्तिसे सूर्य्य को पूजताहै
वह सूर्य्यलोकमें बसता है ५५ और खीर मालपुआ
फलमूल घृत चावलसे सूर्य्यको बलिदेनेसे सबकामना-
ओंकी प्राप्तिहोती है ५६ सूर्य्यको घृतका तर्प्पण करने
से मनुष्य स्निग्ध होजाताहै और दहीसे तर्प्पणकरै तो
कार्यकी सिद्धिहोतीहै ५७ तीर्थसे जललाकर जो सूर्य्य
को स्नानकराता है वह परमगतिको प्राप्तहोता है ५८
जो क्षत्रिय ध्वजा पताका और चमरकादान सूर्य्यकी
प्रीतिके लिये करताहै वह बांछितगतिको प्राप्तहोयगा
५९ और भक्तिसे जो जो द्रव्य सूर्य्यकेलिये दियाजाता
है सो सो लक्षगुण होकर फिर मनुष्यको सूर्य्य देदेता
है६०मानस कायिक और बाचिक आदि सब पापसूर्य्य
के प्रणाम करने से नाशहोतेहैं ६१ सूर्य्यकी एकदिन

की पूजासे जो फल प्राप्तहोता है वह सौ यज्ञोंके करने से नहीं होता ६२ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयंभूऋषिसंवादेसूर्य्यस्य पूजाभक्तिनियममाहात्म्यनामाष्टविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

मुनियोंने पूँछा हे देव बड़ा आश्चर्य्य है कि जगत् के स्वामी सूर्य्यका दुर्लभ माहात्म्य तुमसे सुना १ हे देवेश फिर सूर्य्य के माहात्म्यको वर्णन करो हम सुनने की इच्छा करते हैं और हमको अति आश्चर्य्य है २ गृहस्थी ब्रह्मचारी बानप्रस्थ वा संन्यासी जो मोक्षकी इच्छाकरे तो वह किस देवताका पूजनकरै ३ मनुष्य को स्वर्ग कैसे प्राप्तहोता है और मनुष्य का कल्याण कैसे होताहै किसकर्म्मको करनेसे मनुष्य स्वर्गसे नहीं पड़ता ४ देवताओं का देवता कौन है और पितरों का पिता कौन है जिससे पर कुछभी नहीं है ऐसे देवको वर्णनकरो ५ यह स्थावर जंगम जगत् कहांसेरचागया है और प्रलयमें कहां जाताहै इसका वर्णन कीजिये ६ ब्रह्माजी बोले जो देव अपने किरणोंसे जगत्के अँधेरेको नाशताहै इससे बढ़कर अन्य कोई देव नहीं है ७ यही अनादि है और यही अन्तसे रहित है पुरुष शाश्वत और अव्ययनामवाला भी यही है और अपने तेजरूपवाले किरणों से तीनिलोकोंमें भ्रमनेवाला भी यहीहै ८ सर्वदेवमयभी यही है और तपसे शुभ आ-

चरणवालाभी यहीहै सब जगत्का नाथ भी यहीहै और शुभाशुभ में सर्वसाक्षीभी यहीहै ९ सबभूतोंको नाशने वाला और फिर रचनेवालाभी यहीहै और अपने कि-रणों से वर्षाकरनेवाला भी यहीहै १० धाता विधाता भूतादि भूतभावन नामोंवालाभी यहीहै और यह कभी क्षयको प्राप्त नहीं होताहै और अक्षयमण्डलभी यही है ११ पितरोंमें मुख्य और देवताओंका देवताभी यही है और ध्रुवस्थानभी यहीहै १२ सृष्टिकालमें जगत्को रचनेवालाभी यही है और प्रलयमें सब जगत् इसी सूर्य्यमें लयहोताहै १३ असंख्यातयोगी अपने शरीरों को त्यागकर पीछे वायुकेरूप को धारणकर तेजराशि सूर्य्यमें प्रवेश करतेहैं १४ और इसके हजारोंकिरणों के आश्रितहुये मुनि सिद्ध और देवता बसते हैं १५ गृहस्थी और योगधर्मवाले जनक आदि राजे ब्रह्मवा-दी बालखिल्य आदि ऋषिगण वानप्रस्थ कर्म वाले वेदव्यास आदि और पञ्चशिष्य आदि सन्न्यासी ये सब योगको प्राप्तहो सूर्य्यमण्डल में प्रवेश करतेभये १६। १७ शुकदेवजी भी योगधर्म्मको प्राप्तहोकर पीछे सूर्य्य के किरणों को पानकर मोक्षधर्म्मको प्राप्तहुये हैं १८ शब्दमात्रमें वेद मुखवाले ब्रह्मा विष्णु शिव आदिमें अन्धकारको नाशनेवाला सूर्य्यकहाहै १९ और इससे अन्यबुद्धि करनी उचित नहींहै जिसके सकाशसे दृष्टिका आरोपणहोता है २० उसी सूर्य्यभगवान् को सब को पूजना योग्यहै वही माता और वही पिताहै और सब

जगत्का गुरुभी वहीहै २१ और आदिसे रहितलोकका नाथ किरणोंकीमालावाला जगत् का पति और मित्रता में स्थित यहीहै २२ और अनादि निधन ब्रह्मा नित्य अक्षयनामोंवालाभी यहीहै सब प्रजापतियों और सब प्रजाको रचकर २३ अनन्त किरणोंवाला वह अव्यक्त बारहप्रकार आत्माकोकर सूर्य्यभावको प्राप्तहुआहै २४ औरइन्द्र धाता पर्ज्जन्य तुष्टापूषा अर्यमाभग बिवस्वान् विष्णु अंशु वरुण और मित्र २५ इन बारहनामों से सूर्य्य ने अपनी मूर्त्तियों से यह सब जगत् व्याप्त कर रक्खाहै २६ उस सूर्य्यकी इन्द्रनाम वाली मूर्त्ति दैत्यों को नाशनेके लिये देवराज्यपर स्थितहै २७ धाता नाम से विख्यात मूर्त्ति प्रजापति रूपसे स्थित हुई है और नानाप्रकार की प्रजाको रचती है २८ पर्ज्जन्य नामसे विख्यात हुई तीसरी यह मूर्त्ति जलको वर्षाती है २९ तुष्टानामसे प्रसिद्ध चौथी मूर्त्ति बनस्पति और ओष-धियोंमें स्थित है ३० पूषा नामसे प्रसिद्ध मूर्त्ति अग्नि में स्थित है जो मनुष्यों के शरीर में प्रवेशित होकर अन्नको पकाती है ३१ अर्थमा नाम वाली और भग नाम वाली मूर्त्ति और बिवस्वान् नामवाली मूर्त्ति अनेक प्रकारसे जगत्को पोषतीहै ३२ विष्णु नाम वाली मूर्त्ति देवताओंके शत्रुओंको नाशती है ३३ अंशुमान् नाम से प्रसिद्ध मूर्त्ति वायुमें स्थितहुई प्रजाको आनंद देती है ३४ वरुणनामवाली मूर्त्ति जलमें स्थित होकर प्रजा की रक्षा करती है ३५ और मित्रनाम से प्रसिद्ध मूर्त्ति

लोकके हितके लिये चन्द्रमा और नदीके तटमें स्थित है ३६ वायुको भक्षण करनेवाला नेत्रोंसे अनुग्रह करनेवाला और नानाप्रकारके नामोंसे स्थित ३७ सूर्य्यका स्थान बहुत समय तक मित्रभावसे स्थित होनेसे मित्र कहाताहै ३८ ऐसे सूर्य्यने बारहनामोंसे यह सब जगत् व्याप्त कररक्खाहै ३९ जो मनुष्य इनबारहनामोंसे सूर्य्य की पूजा करते हैं वे सूर्य्यलोकमें जाकर बसते हैं ४० मुनियोंने पूँछा हे भगवन् आश्चर्य है कि आदिदेव और सनातन होकर सूर्य्यने वरकी प्राप्तिके लिये प्राकृत मनुष्यकी तरह क्यों तप किया ४१ ब्रह्माजी बोले सूर्य्य का गुह्य आख्यान कहताहूं जो पहले नारदसे सूर्य्यने कहाहै ४२ पहले सूर्य्यकी बारहमूर्त्तियोंमेंसे मित्र और वरुणने तप किया ४३ जलमात्रका भक्षण करनेवाला वरुण पश्चिम समुद्रपर स्थित हुआ और वायुको भक्षण करनेवाला मित्ररहा ४४ फिर एक समय गन्धमादन पर्वतसे विचरते नारदमुनि मेरुपर्वतके शृंगपरआये ४५ और जहां मित्र तप कररहाथा वहां आकर आप भी तप करनेलगे और मित्रनामक सूर्य्यको देख अति आश्चर्य मानताभया ४६ कि यह अविनाशी अक्षय सर्वव्यक्त अव्यक्त सनातन सत्य एकात्मा त्रिलोकीरूप ४७ सब देवताओंका पिता और परों से भी परे सूर्य्य किस देवताको और किस पितरको पूजताहै ४८ ऐसा मनमें चिंतनकर नारद बोले हे देव सांगोपांग वेदों में तो तुम्हारा गान कियागयाहै ४९ और आपही अज

हैं धाता महामूर्त्त अनुत्तम आदि नामोंवाले भी आपही हो और भूत भविष्यत् भव्य सब आपही में प्रतिष्ठित हैं ५० हे देव गृहस्थ आदि चारो आश्रम नानाप्रकारकी मूर्त्तिवाले आपको नित्यप्रति पूजते हैं ५१ सब जगत्के पिता माता आपही हैं और आपही देव और शाश्वतहो परन्तु किस देवको पूजतेहो हम नहीं जानते ५२ इन्द्रनामक सूर्य्य बोले कि हे ब्रह्मन् नहीं कहनेके योग्य परमगुह्य और सनातन आख्यान मैं तुझ भक्त को यथायोग्य सुनाताहूं ५३ वह सूक्ष्म अविज्ञेय अव्यक्त अचल और ध्रुव आदि नामोंवाला ब्रह्म इंद्रियों और इन्द्रियोंके अर्थ और सब भूतोंसे वर्जित प्राणियों का अन्तरात्मा क्षेत्रज्ञ त्रिगुण और शक्तिसे रंजित और कल्पित पुरुष हिरण्यगर्भ भगवान् और बुद्धिरूप एकात्मा और त्रिलोकीको धारण करनेवाला शरीरों और शरीरवालोंमें निरन्तर बसनेके योग्य शरीरोंमें अवसन्न और कर्मोंसे अलिप्यमान तेरा और मेरा अन्तरात्मा सब देहमें स्थित और सबोंका साक्षीभूत किसीसे और कहीं भी ग्रहण करने के अयोग्य सगुण और निर्गुण विश्व और ज्ञानगम्य चारोंतरफ हाथ और पैरोंवाला और सब जगह शिर नेत्र और मुखवाला सब जगह कर्ण इन्द्रियवाला और सब जगह प्रवृत्त होकर स्थित और विश्वमूर्द्धा विश्वभुज और विश्वरूप पैर नेत्र और नासिकावाला ऐसे क्षेत्रमें विचरनेवाला और सुखको देनेवाला यहां क्षेत्रनाम शरीरकाहै और वहशरीर और

सुखको जानताहै इसवास्ते क्षेत्रज्ञ नामवाला और प्रशस्तरूप अव्यक्तपुरमें संशयकरनेवाला बहुबिध विश्व और सब जगह सर्वरूपहै इसीलिये उसको विश्वरूप कहते हैं सबोंसे बड़ा एकपुरुष और महापुरुष सनातन और विधियोंवाला क्रिया यज्ञ और आत्मासे आत्मा को रचनेवाला एक प्रकार दशप्रकार और शतसहस्र प्रकारवाला अकर्त्ता और कर्त्ता और आकाशसे पतित जलकी तरह सुस्वादु विशेष करके पृथिवीरूप और गुणके वशसे पृथिवीरूपभी नहीं जैसे अकेला वायु देह में पांचप्रकारसे है तैसेही एकत्वरूप और पृथक्त्वरूप और देहमें पांचप्रकार वालाहै इसमें संशय नहीं जैसे स्थानान्तर विशेषसे अग्निपर संज्ञाको प्राप्तहोताहै तैसेही यह ब्रह्महै ५४। ६९ जैसे एक दीपकसे हज़ारों दीपक प्रकाशित होतेहैं तैसेही यह अकेला हज़ारोंरूपों को रचताहै ७० जब यह आत्मा को जानताहै तब केवलरूप होजाताहै और प्रलय में एक रूपवाला और बहुत रूपोंवाला रहताहै ७१ यही नित्यप्रति स्थावर जंगम जगत् को नाशताहै और अक्षय अप्रमेय और सर्व इन नामोंवाला भी यहीहै ७२ इसलिये हे द्विजसत्तम उसीसे अव्यक्तरूप त्रिगुण उत्पन्न होताहै और अव्यक्तसे व्यक्तभावमें स्थितहोनेवाली प्रकृति उत्पन्न होती है ७३ उसी सदसत् और आत्मावाले ब्रह्मकी योनिहै लोकमें देवकर्ममें और पितृकर्ममें पूजितहोता है और इसकेसिवा कोई देव व पितर नहींहै यह ईश्वर

आत्मा से जाननेयोग्यहै इसलिये उसको मैं पूजता हूँ ७४। ७५ कितनेही स्वर्गबासी इस को देखते हैं और इस ईश्वरकी शिक्षासे मनुष्य उत्तमगतिको प्राप्तहोते हैं ७६ नानाप्रकारके जीव इसदेवको पूजकर स्वर्गमें बसते हैं और जो भक्तिसे इस देव को पूजते हैं तिनको यह परमगति देता है ७७ यही सर्वगत और निर्गुणहै यह सुनके मैं इस ब्रह्मरूपी सूर्य्येश्वर को पूजताहूँ ७८ सूर्य्य से भावित लोक एक तत्त्व को आश्रित होते हैं और वे सब सूर्य्य के शरीर में प्रवेश करते हैं ७९ हे नारद यह गुह्य आख्यान मैंने प्रकाशित कियाहै और हमारी भक्तिसे तुमनेभी सुना ८० देवतों और मुनियों ने भी यह पुराण कहा है और सब देवता परमात्मा रूपी सूर्य्य को पूजते हैं ८१ ब्रह्माजी बोले कि इस प्रकार पहले नारदने सूर्य्य से कहा था सोई हे द्विजोत्तमो मैंने भी तुम्हारे आगे यह कथा कही ८२ हे द्विजोत्तमो यह ऋषिजनों का कहा आख्यान है इस लिये जो सूर्य्य का भक्त न हो तिससे कभी न कहना जो मनुष्य इसको सुनावे और सुनै वह सूर्य्य में प्रवेश करता है इसमें संशय नहीं है ८३। ८४ इसको सुनने से रोगी रोगसे छूटजाताहै और जिज्ञासु मनुष्य ज्ञान और बांछितगति को प्राप्तहोता है ८५ इसको मार्ग में अध्ययन करै तो कुशलसे ध्यानको प्राप्तहोताहै और जिसकामनाकी इच्छाकरै तिस कामना को प्राप्तहोता है ८६ इससे तुम्हें निरन्तर सूर्य्यकी पूजाकरनी चाहिये

और वह सूर्य्य सब जगत्काधाता और गुरु है ८७ ॥
इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयंभूऋषिसंवादे
एकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय

ब्रह्माजी बोले हे मुनि सत्तमो इससम्पूर्ण त्रिलोकी का मूल सूर्य्य है और इसी सूर्य्य से देव मनुष्य और दैत्यों संयुक्त जगत् उपजताहै १ रुद्र महेन्द्र उपेन्द्र और सब देवतोंका सार्वलौकिकतेज यह सूर्य्यहै २ सर्वात्मा सर्वलोकों का स्वामी देवतों का देवता और प्रजापति भी इसीकानाम है और त्रिलोकीका मूल और परमदैवतभी यही सूर्य्य है ३ अग्निमें जो हवनकियाजाता है वह सूर्य्यको प्राप्तहोता है सूर्य्यसे वर्षा होतीहै वर्षा से अन्नउपजता है और अन्नसे प्रजा उत्पन्नहोती है ४ इसलिये यह जगत् सूर्य्य से उपजता है और सूर्य्य हीमें लीनहोजाताहै ५ पहलेभाव और अभाव ये दोनों सूर्य्यसे निकसेहैं ६ क्षण मुहूर्त्त दिन रात्रि पक्ष महीना सम्बत्सर ऋतु और युग ७ ये सबकाल संख्या सूर्य्य सेही होतीहै और कालकेबिना कोई क्रियानहीं होसक्ती ८ ऋतुओंका विभाग पुष्पमूल फल और बनस्पती की उत्पत्ति तृण ओषधि आदि ९ व्यवहारोंकी क्रिया और प्राणियोंको इसलोक व परलोकमें सुखकी प्राप्ति और प्रकाश सूर्य्यके बिना नहीं होसक्के १० वसंतऋतु में कपिलरूप सूर्य्य होताहै ग्रीष्मऋतु में सवर्णके स-

मान कान्तिवाला होताहै ११ वर्षाऋतुमें श्वेतरूपहोता है शरदऋतुमें पाण्डुरूप होताहै १२हेमन्तऋतुमें तांबा के समान कांतिवाला होताहै और शिशिरऋतुमें लोहितरूप होताहै ऐसेऋतुओं से उपजे वर्ण सूर्य्यके कहे हैं १३ और ऋतुओंके अनुसार वर्णवाला सूर्य्य सुभिक्षकरता है सामान्यसे सूर्य्य के १४ आदित्य सविता सूर्य्य मिहिर अर्कप्रभाकर १५ मार्तंड भास्कर भानु सूत्र भानु दिवाकर और रवि बारहनामहैं १६ और विष्णु इन्द्र धाता भग पूषा मित्राबरुण अर्यमा बिवस्वान् अंशुमान् त्वष्टा पर्ज्जन्य१७आदि येबारहनाम बारहों महीनों में अलग २ उपस्थित होते हैं १८ चैत्रमासमें विष्णुनामक सूर्य्य तपता है बैशाखमासमें अर्यमानामक सूर्य्य तपता है ज्येष्ठमास में बिवस्वान् सूर्य्यतपता है आषाढ़में अंशुमान् सूर्य्यतपताहै १९ श्रावणमें पर्ज्जन्य सूर्य्यतपताहै भाद्रपदमें बरुण सूर्य्यतपताहै आश्विनमें इन्द्रनामक सूर्य्यतपताहै कार्त्तिकमें धातानामकसूर्य्यतपताहै २० मार्गशिरमें मित्रनामक सूर्य्यतपताहै पौषमें पूषानामक सूर्य्यतपताहै माघमासमें भगनामक सूर्य्य तपताहै और फाल्गुनमें त्वष्टानामवाला सूर्य्यतपता है २१ । १२०० किरणों से विष्णुनामक सूर्य्यतपताहै १३०० किरणोंसे अर्यमानामक सूर्य्यतपताहै २२ । १४०० किरणोंसे बिवस्वान् नामक सूर्य्य तपता है १५०० किरणों से अंशुमान्नामक सूर्य्यतपताहै २३ बिवस्वान् के समानही पर्ज्जन्य बरुण और

अर्यमानामक सूर्य्यतपतेहैं २४। १२०० किरणोंसे इन्द्र नामक सूर्य्यतपताहै और ११०० किरणोंसे मित्र और त्वष्टानामक सूर्य्यतपतेहैं २५ उत्तरदिशासे सूर्य्यकी किरणेंबढ़तीहैं और दक्षिणकेतर्फसे घटतीहैं २६ सूर्य्यलोकसे संग्रहहोकर हजारोंकिरणें धातुओंको प्राप्तहोती हैं और अनेक प्रकारसे संग्रहीत होतीहैं २७ सूर्य्यके चौबीसनाममैंने प्रकाशितकिये पर उनके सहस्रनामभी हैं २८ मुनियोंने पूँछा हे भगवन् जो हज़ारनामोंसे सूर्य्यकी स्तुति कियाचाहतेहैं तिनको क्या पुण्य मिलताहै और वे किसगतिको प्राप्तहोतेहैं २९ ब्रह्माजी बोले हे मुनिशार्दूल सूर्य्य के सहस्रनामों से क्या है सारभूत और सनातन स्तोत्रको सुनो ३० और जो पवित्र शुभ और गुप्तनाम हैं तिनको मैं कहताहूँ ३१ विकर्त्तन विवस्वान् मार्तण्ड भास्कर रवि लोकप्रकाशक श्रीमान् लोकचक्षु ग्रहेश्वर ३२ लोक साक्षी त्रिलोकेश कर्त्ता हर्त्ता तमिस्रहा तपन तापन शुचि सप्ताश्वबाहन ३३ गभस्ति हस्त ब्रह्मा इक्कीसनामोंवाला यह स्तोत्र सूर्य्य को बांछित है ३४ और यह स्तोत्र लक्ष्मी आरोग्यधन वृद्धि और यशको देताहै और त्रिलोकीमें यह स्तवराज प्रसिद्धहै ३५ हे द्विजश्रेष्ठो जोमनुष्य दोनोंसमयमें इसस्तवराज से सूर्य्यकी स्तुतिकरते हैं वे सब पापोंसे छूटजातेहैं ३६ और मानसिक वाचिक देहज और कर्मज पाप इस स्तोत्रके एकपाठसे शान्तहोतेहैं ३७ यह स्तवराजही जपहै यही हवन है यही सन्ध्योपासनहै यही वलिमन्त्र

यहीअर्घ्यमंत्रहै और यही धूपमन्त्रहै ३८ अन्नदान स्नान प्रणिपात और प्रदक्षिणामें पूजितकिया यह मन्त्र सब पापोंको हरताहै ३९ इसलिये हेद्विजो तुम सब वरों और सब कामरूप फलोंके देनेवाले इसस्तोत्रसे सब कामना सिद्धिकरनेवाले सूर्य्यकी स्तुति करतेरहो ४० ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयंभूऋषिसंवादेसूर्य्यस्य चतुर्विंशतिनामवर्णनन्नामत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय॥

मुनियोंने पूँछा हे भगवन् प्रथम तो आपने सूर्य्यको निर्गुण शाश्वत और देव कहा फिर बारहरूपोंवाला कहा और मैंने सुना १ परऐसे तेजका समूह और महाप्रकाशवाला सूर्य्य स्त्रीके गर्भमें कैसे रहा यह हमको अति संशय है २ ब्रह्माजी बोले कि दक्षके ६० पुत्रियांहुईं तिनमेंसे अदिति दिति दनु विनता इत्यादि तेरहकन्याओं को दक्षने कश्यपकेलिये दिया ३ तब तीनों भुवनों के ईश्वर देवताओं को अदिति ने जना दितिने दैत्यों को जना और दनुने दानवोंको जना ४ विनता आदि अन्य स्थावर जङ्गम जगत् को जनतीभई तिनके पुत्र पौत्र दौहित्र आदिकों से ५ यह सब जगत् व्याप्त है और सब देवतेभी कश्यपजीकेपुत्रहैं ६ सात्विक राजस और तामस तीनप्रकारके गुणभी उसीसे उत्पन्नभये ७ त्रिभुवनका ईश्वर और यज्ञकाभोक्ता देवतोंको ब्रह्माजी ने करदिया ८ तब सम्पन्न दैत्य दानव और राक्षस दे-

वताओं को पीड़ा देनेलगे और देवतों और दैत्योंका दारुण युद्धहोनेलगा ९ निदान दिव्य हज़ारवर्षोंतक घोरयुद्ध होकर देवतोंका पराजयहुआ और अतिबल वाले दैत्य और दानवोंका जयहुआ १० तब पराजित हुये देवतोंकी माता अदिति ११ यज्ञभागोंसे वर्ज्जित और क्षुधासे अतिपीड़ित अपने पुत्रोंको देखकर सूर्य्य का तपकरनेकेलिये यत्नकरनेलगी १२ अर्थात् अग्नि में हवन करनेवाली निराहार और परमनियममें स्थित अदिति तेजके समूह और आकाशमें स्थित सूर्य्यकी स्तुति करनेलगी १३ कि हे परमसूक्ष्म आपको नमस्कार है हे अतुलताको धारणकरनेवाले आपको नमस्कारहै हे सबोंके स्वामिन् हे सर्वाधार हे शाश्वत आपको नमस्कारहै १४ हे गोपते जगत्के उपकार केलिये आपकी मैं स्तुति करतीहौं और आपका जो तीक्ष्ण रूप है तिसको नमस्कारहै १५ आठमहीनों में नानाप्रकारके रसोंको धारणकरनेवाला जो आपकारूप है तिसको मैं प्रणाम करतीहूँ १६ और जो दोनों सन्ध्याओंमें रजोगुण और तमोगुण से युक्त और अग्निसोम सहित जो आपकारूप है तिसको मैं प्रणाम करती हूँ १७ मध्याह्नमें ऋक् यजु और सामवेदोंसे जो आपका रूप तपता है तिसबिभावसुको मैं प्रणाम करतीहूँ १८ और सबरूपों से परे जो ॐ आपकारूप है और स्थूल अमल और सनातन जो आपकारूपहै तिसको मैं प्रणामकरतीहूँ १९ ब्रह्माजी बोले कि ऐसे वह देवी दिन

रात्रि और बे भोजनकिये सूर्य्य की आराधनाकेलिये स्तुतिकरनेलगी २० तब बहुतकालके उपरांत भगवान् सूर्य्य अदितिके अगाड़ी प्रत्यक्षप्रगटहुये २१ और तेज के महाकूटमें पृथिवीपर स्थित और किरणोंके समूहसे दुर्दृश सूर्य्यको अदिति ने देखा २२ और उसे देखकर परमआश्चर्य्यको प्राप्तहो बोली कि हे गोपते हे जगत् द्योते आप प्रसन्नहो और मैं आपको देखना नहीं चाहती २३ हे दिवाकर कृपाकरो आपकारूप मैंने देखा हे भक्तानुकम्पक हेविभो मेरे पुत्रोंकी आपरक्षाकरो २४ अपने तेजसे प्रकटहुआ तप्ततांबे के समान कान्ति वालाहोकर सूर्य्यने देखा २५ औरप्रणतहुई अदितिको देख सूर्य्य बोला कि हे अदिति जो तुझको बांछितवर हो वह तू मुझसे ग्रहणकर २६ तब शिरनीचेकिये पृथिवी पर खड़ी अदिति बरकेदेनेवाले सूर्य्यसे कहनेलगी २७ कि हे देव प्रसन्नहो मेरे पुत्रोंका त्रिभुवनराज्य और यज्ञ भाग अति बलवाले दैत्य दानवोंने छीनलिया है २८ हे गोपते पुत्रों की रक्षा सम्बन्धी प्रसाद मुझपर करो और अपने अंशसे मेरे पुत्रोंकेभ्राता बनकर उनदैत्य दानवों का नाशकरो २९ हे दिवाकर ऐसी कृपाकरो कि मेरेपुत्र फिर त्रिलोकीके राज्यको प्राप्तहोजावें और फिर यज्ञोंका भोजन करनेलगें ३० हे च्युत मेरे पुत्रोंपर कृपा करके प्रसन्नहो औरशरणागतकी पीड़ाहरो आपकार्यके कर्त्ता हैं ३१ तब अपने तेजको बारणकरताहुआ सूर्य्यअदितिके पुत्रोंपरप्रसन्नहोकर प्रणतहुई अदितिसे कहने

लगा ३२ कि हे अदिति अपने सम्पूर्ण अंशसे मैं तेरेगर्भ में बसूंगा और तेरेपुत्रोंकोप्रसन्नकर दैत्योंकानाशकरवाऊँगा ३३ ऐसे कहकर सूर्य अंतर्द्धान होगये और बांछित फलकोप्राप्तहो अदितिभी तपसे निवृत्तहुई ३४ निदान अदितिके उदरमें सूर्य्य विप्रावतारसे विख्यातहो प्राप्तभये ३५ और सावधानहुई अदिति कृच्छ्र चांद्रायण आदिव्रतोंको धारणकरनेलगी क्योंकि उसने विचाराकि मैं दिव्य गर्भको प्राप्तभईहूँ इसलिये मुझेभी पवित्रहोना उचितहै ३६ तब कुछ कोपको धारण करनेवाले कश्यप जी अदितिसे कहनेलगे कि हे प्रिये नित्यप्रति व्रतोंके करनेसे तू गर्भको न धारणकरैगी ३७ अर्थात् तेरे गर्भाण्डमें यह बालक मरगयाहै तब अदिति बोली नहीं मराहै किन्तु दैत्य और दानवोंकी यह मृत्युकरेगा ३८ ब्रह्माजीने कहा इसप्रकार अदितिने अपने गर्भसे उस बालककोत्यागा ३९ और जब पतिकेवचनसे कोपितहुई अदिति अतिप्रज्वलितगर्भ को त्यागतीभई तब उदय हुये सूर्य्यके समानतेजवाले ४० उस गर्भ को कश्यप मुनिस्तुति करनेलगा जब वह स्तूयमान बालक गर्भाण्डसे निकल ४१ कमलकेपत्र और सुवर्णकेसमान कांतिवाला अपनेतेजसे दिशाओंमें व्याप्तहुआ तब भार्या सहित कश्यपजी को ४२ आकाशवाणीहुई कि हे मुने अदितिसे तूने कहा था कि यह बालक मृतकहुआ है ४३ इसलिये हे मुने यह मार्तण्डनामसे प्रसिद्धहोगा और यज्ञभागके हरनेवाले दैत्यों को मारेगा ४४ मा-

र्त्तण्ड के जन्मको सुनकर देवता अतिआनन्दित हुये और दैत्य अतिबल देखानेलगे ४५ तब उनदैत्य दानवों को युद्धकेलिये इन्द्र ने बुलाया ४६ और देवता और दैत्योंका ऐसा घोरयुद्धहुआ कि शस्त्र और अस्त्रों की वृष्टिसे तीनों भुवनयुक्त होगये४७ उस युद्धमें भगवान् मार्त्तण्डने अपने तेजसेदग्धकिये दैत्योंकोभस्मकर दिया ४८ और सब देवता अति आनन्दको प्राप्तहो तेजोंके समूहरूपीसूर्य्य और अदितिकी स्तुतिकरनेलगे ४९ निदान सब देवता अपने २ अधिकार और यज्ञ भागोंको पहलेकीतरह प्राप्तहुये और मार्त्तण्डभी अपने अधिकारको प्राप्तहुआ ५० फिर कदम्बकेफूलकेसमान ह्रस्व और नीचे ऊपरके किरणोंसे अग्नि के पिण्ड के सदृश सूर्य्य होगया स्फुटरूप शरीरको न धारणकिया ५१ मुनियोंने पूँछा हे भगवन् अति प्रकाशित और कदम्ब गोलकके आकारको सूर्य कैसेप्राप्तहुआ हे जगत्पते मुझसे यह आप वर्णनकरो ५२ ब्रह्माजीने कहा विश्वकर्म्मा प्रजापतिने सूर्य्यको प्रसन्नकरके संज्ञानाम वाली अपनी कन्याको उसेदिया ५३ और उस संज्ञामें श्राद्ध देव मनु यम और यमुना कन्या उत्पन्नभये ५४ पश्चात् बिवस्वान् का श्यामवर्ण देखकर संज्ञा उसको नसहके अपनी छाया सवर्णाको रचतीभई ५५ और यह मायावती छाया अंजलीबांधके संज्ञाकेआगे स्थित हो ५६ कहनेलगी कि हे भामिनि मुझको जो आज्ञाहो करूँ ५७ संज्ञा कहनेलगी कि हे छाये तेरा कल्याणहो

मेरे दोनों पुत्र और यह कन्या तेरे रक्षाके योग्यहै हे छाये भगवान् सूर्य्यकेआगे यह वृत्तान्त न कहना ५८ यह सुन छाया कहनेलगी हे देवि तू सुखपूर्व्वक जा जबतक सूर्य्य मेरे केशोंको ग्रहण नहींकरेगा और शाप नहीं देगा तबतक मैं नहीं कहूँगी ५९ यह सुन संज्ञा कहनेलगी कि अच्छा ठीक है पश्चात् यह तपस्विनी लज्जितहुई अपने पिता त्वष्टाके यहां गई और पिता भड़कीदेकर कहनेलगा कि तू अपनेभर्त्ताके पासजा ६०। ६१ तब यह घोड़ीकारूप धारणकर और उत्तरके कुरुदेशोंमें जाकर वहां तृण चरनेलगी ६२ और आदित्य ने उसको संज्ञाहीजान उसमें मनुके समान पुत्र उत्पन्न किया जो सावर्णिमनु हुआ ६३ और दूसरापुत्र शनैश्चर हुआ हे मुनिजनो यह संज्ञाके पुत्रोंसे ६४ अपने पुत्रों में अधिक स्नेह करनेलगी यह वर्त्ताव मनुने तो सहन किया पर यम नसहसका ६५ और कोपकरके भावीकेवश बालभावसे उसे एक लातमारी ६६ छाया यह देख दुःखितहुई और बोली कि अरे तेराचरण टूटजाय ६७ निदान यम छाया के वाक्यों को सुन कांपताहुआ और शापसे उद्विग्नहुआ पिताकेआगेजा अंजलिबांध सम्पूर्ण वृत्तांत कहा ६८ और प्रार्थनाकी कि यहमेरा शाप दूरकरो क्योंकि माताको सम्पूर्ण पुत्रोंसे बराबर वर्त्तना उचितहै ६९ पर यह तो हमको छोड़कर छोटों पर मोहकरतीहै इसलिये मैं क्रोधकर बालभाव और मोहसे उसको लातमारने को तैयारहुआ परन्तु मारी

नहीं ७० यह मेरा अपराध क्षमाकरो क्योंकि पूजनीया का मैंने तिरस्कारकियाहै इसवास्ते यह चरण निःसन्देह गिरपड़ेगा ७१ हेलोकेश माताने मुझको शापदियाहै इसलिये आप दयाकरो कि आपकी कृपासे यह चरण नटूटै ७२ इतनीबात सुन विवस्वान बोला कि यह तो निश्चय होगया क्योंकि तुझ धर्मज्ञ और सत्यवादीमें क्रोधउत्पन्न हुआ ७३ और तेरी माताके वचनको अन्यथा करनेकोमें समर्थनहींहूं इसलिये कृमि तेरेपैरसेमांस लेलेकरपृथ्वी पर प्राप्तहोवेंगे ७४ और उसके पीछे तू सुखको प्राप्त होगा ७५ यमसे इसप्रकार कह सूर्य्य भगवान् छायासे कहनेलगे कि हे प्रिये तुल्य पुत्रोंमें तू न्यूनाधिक स्नेह क्योंकरतीहै ७६ छायाने यह सुन उसबार्त्ताको गुप्तरख कुछ उत्तर नदिया ७७ तब विवस्वान आत्माको टेककर योगसमाधि से सत्य विचारकर तिसका नाशकरने को तैयारहुये ७८ और केशपकड़ पूँछनेलगे तब सम्पूर्ण वृत्तान्त छायाने कहा ७९ विवस्वान सब वृत्तान्त सुन और क्रोधयुक्तहो उसे दग्धकरने की इच्छा से त्वष्टाके पासगये और त्वष्टा उनका विधिसे पूजनकर ८० और क्रोधको शान्तकर बोला ८१ कि आपका अत्यन्ततेज से यह रूप शोभाको प्राप्त नहींहोता इसलिये आपके तेजको नसहके संज्ञा घोड़ी बनकर हरयालीमें चरती है ८२ वह अशुभ चारिणी नित्य तपकरनेवाली और घोड़ीका रूप धारणकर ८३ पत्तोंका भोजनकरनेवाली कृश और दीन जटाकोधारण किये ब्रह्मचारिणी और

हाथीके शुण्डसे ब्याकुलकरी यामिनी के समान अति ब्याकुल ८४ और श्लाघा के योग्य योगबल से संयुक्त स्त्रीको तू आज देखेगा हे देवेश जो मेरामत आप योग्य जानो तो ८५ आपके रूपको भी मैं निवृत्त कर देऊं तब तिरछे और ऊंचे रूपसे संयुक्त सूर्य्य ने ८६ त्वष्टा प्रजापतिके वचनको अच्छीतरह मान ८७ रूप की सिद्धिके वास्ते त्वष्टाको आज्ञादी और त्वष्टा समीप में प्राप्तहो ८८ अनुज्ञात हुआ विश्वकर्म्मा शाकद्वीप में सूर्य्य के तेजको यथायोग्य करनेके लिये सावधान हुआ ८९ और जब भ्रामणयन्त्रके द्वारा सूर्य्यके दुःसह तेजको हटाया तब पृथ्वी आकाश को जानेलगी ९० और ग्रह नक्षत्र तारागण सहित आकाश आक्षिप्त और ब्याकुल भया ९१ जलोंवाले सब समुद्र क्षोभित होने लगे शिखरोंवाले पर्वत टूटनेलगे ९२ और हे मुनिसत्तमो ध्रुवरूपी आधारवाले नक्षत्र नीचेको प्राप्त होगये ९३ और भ्रमण से पतित हुये वायुके वेगसे क्षिप्तहुये अति गर्जनेवाले हजारों मेघ वर्षनेलगे ९४ और सूर्य्य के अधिक तेजको हटानेके समय भूमि आकाश और पाताललोक आदि जगत् ब्याकुल होगया ९५ त्रिलोकी को भ्रमते देख सब देवता ब्रह्माके संग सूर्य्यके समीप आकर स्तुति करनेलगे ९६ कि देवताओंके आप आदि देवहैं यह जगत् ब्रह्मासे उत्पन्न हुआहै पर आप सृष्टि स्थिति और प्रलयकालोंमें तीनि प्रकारसे स्थितहैं ९७ इन्द्र भी यहां आकर देवतोंके संग स्तुति करनेलगे ९८

कि हेदेव हेजगतूस्वामिन् हे अशेष जगत्पते आपस-
र्वोत्कर्षतासे बर्त्ततेरहैं वशिष्ठ अत्रि आदि सप्तऋषिभी
तहां प्राप्त होकर ९९ स्वस्ति२ अर्थात् मङ्गल हो हो
कहनेलगे और नानाप्रकारके स्तोत्रों से स्तुति करने
लगे वेदोक्त ऋचाओंद्वारा बालखिल्य मुनिगण भी
स्तुतिकर कहनेलगे १०० कि हे नाथ अग्नि और
पवन आपहीहैं मुक्तोंका मोक्षभी आपहीहैं ज्ञानमें श्रेष्ठ
भी आपही हैं १०१ और कर्म्मकाण्ड से वर्जित सब
प्राणियों की गति भी आपही हैं हे देवेश हे जगत्पते
हम सबों को कल्याण कारीहो १०२ विपत्तिकालमें ह-
मारा कल्याण हो और चार पैरोंवालों से भी हमारा
कल्याणहो फिर विद्याधरोंकेगण यक्ष राक्षस और सर्प्प
१०३ अंजलियों को बांधकर शिरोंके द्वारा पृथिवी में
नतहुये १०४ और कहनेलगे कि हे भूतभावन आपका
अधिकतेज हमैं प्राप्तहो फिर हाहा हूहू नारद तुम्बरु
१०५ नामोंवाले और खड़ज मध्यम गान्धार आदि
ग्रामोंमें विशारद गन्धर्व्व गानेलगे १०६ और मूर्च्छना
और तालोंसे सुखको देनेवाली विश्वाची घृताची उ-
र्वशी तिलोत्तमा १०७ मैनका सहजन्या रम्भा सरसां-
बरा आदि सब अप्सरा नाचने १०८ और भाव हास्य
बिलासआदि बहुतसे कटाक्षोंको करनेलगीं और बीणा
ढोल नक्कारे मृदंग डमरू भेरीआदि हज़ारोंबाजे बजने
लगे १०९ और गन्धर्व्व और अप्सराओं के गणोंके
गान और नाच और अनेकप्रकारके बाजोंसे सबजगत्

में कोलाहल होनेलगा ११० निदान अंजलियों को बांधे और भक्ति से नम्रमूर्त्तिवाले सबदेवों ने लिख्य मान सूर्य्यको प्रणामकिया १११ पर सब देवोंको समागमरूपी कोलाहलमें विश्वकर्म्मा तेजको शान्त न कर सका ११२ तब गोड़ोंतक सूर्य्यका लेखण करदिया ११३ और प्रकाशितसे प्रकाशित रूपको सूर्य्य प्राप्तहोगया ११४ ऐसे हिमजल और धर्मकाल का कारण और ब्रह्मा विष्णु और शिवसे संस्कृत सूर्य्यका ध्यानकरे तो आयुके अन्तमें मनुष्य सूर्य्यके लोकमें बसताहै ११५ हे मुनिसत्तमो ऐसे तो सूर्य्यका पहिले जन्म हुआहै सो परमरूप मैंने कहदिया ११६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भुवऋषिसंवादेमार्तण्ड स्वशरीरजन्मकथनन्नामएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

मुनियोंने कहा हे देव फिर सूर्य्यकी कथा हमारे से कहो क्योंकि इसशुभकथाको सुननेमें हमारी तृप्ति नहीं होती १ दीप्तरूप महातेजवाले और अग्निके समूहके समान कान्तिवाले सूर्य्यका ऐसा प्रभाव कहांसे हुआहै यह सुननेकी हम इच्छाकरतेहैं २ ब्रह्माजीबोले अनन्त भूतोंकेलिये नमस्कारहै प्रकृतिकागुण बुद्धि पहले उपजतीहै ३ फिर महाभूतोंका प्रवर्त्तक अहंकार उपजताहै फिर अग्नि वायु जल आकाश पृथिवी येउपजतेहैं फिर अण्डउपजताहै ४ और फिर उस अण्डमें ये सातोंलोक

प्रतिष्ठितहोतेहैं सातोंद्वीपों और सातोंसमुद्रोंसे पृथिवी आवृत हुईहै ५ और ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों स्थितहैं सब प्रधान गुण उस ईश्वरका ध्यान करतेहैं ६ प्रथम महातेजवाला और तमोगुणसे उत्पन्न विष्णु प्रकटहुआ तब ध्यानयोगसे हमोंने सबदेवतोंको जाना ७ और पृथक् २ सब प्रकार से भाव्यरूप परमात्मा को जानकर दिव्य स्तुतियों से हम स्तुति करनेलगे कि ८ हे देव देवताओं के आदिदेव आपही हैं और देवदेव भी आपही हैं सर्व्व भूत देव गन्धर्व्व और राक्षसका जीवनभी आपहीहैं ९ और मुनि किन्नर सिद्ध सर्प्प पक्षियोंकेभी जीवन आपही हैं आपही ब्रह्मा हैं आपही महादेवहैं आपही विष्णु और प्रजापति हैं १० और बायु इन्द्र चन्द्रमा सूर्य्य बरुण आदि नामोंवाले भी आपही हैं आपही कालहैं आपही सृष्टिकेकर्त्ता हैं और हर्त्ता धर्त्ता और प्रभु इननामोंवालेभी आपही हैं ११ नदियां समुद्र पर्वत बिजली इन्द्रका धनुष प्रलय प्रभव व्यक्त अव्यक्त सनातन आदि नामोंवाले भी आपहीहैं १२ ईश्वरसे परे विद्याहै विद्यासे परे शिवहैं और शिवसे परे परमेश्वररूपभी आपही हैं १३ सब जगह हाथ और पैरोंवाले और सब जगह नेत्र शिर और मुख इन्होंवाले आपही हैं हज़ारों किरणोंवाले और हज़ारों कन्धोंवाले और हज़ारों पैरोंवालेदेव आपही हैं १४ भूः भुवः स्वः महः सत्य तप और जन लोकोंकेरूप भी आपहीहैं और दीप्त दीपन और सेव्य नामोंवाले

भी आपही हैं सब लोकोंको प्रकाशित करनेवाले भी आपहीहैं १५ और देवता और इन्द्रको भी जो दुर्निरीक्ष्यरूप आपका है तिसको नमस्कार है वेदविदों के जाननेयोग्य नित्य और सर्वज्ञानसे समन्वित आपको नमस्कारहै १६ सब देवताओंके आदि देवरूप आपको नमस्कार है और विश्वको रचनेवाले विश्वभूत १७ और अग्नि आदि देवताओंसे पूजित आपको नमस्कार है १८ विश्वस्थित और अनित्य आपको नमस्कारहै १९ और यज्ञ वेद और लोकों से परे और आकाशसे परे परमात्मा नामसे विख्यात आपकोनैमस्कार है २० कारणकेभी कारणरूप आपको नमस्कार है पापबिमोचनरूपी आपको नमस्कारहै अदितिकरके बन्दितहुये आपको नमस्कारहै और रोगसे छुड़ानेवाले आपको नमस्कारहै २१ सब बरोंको देनेवाले आपको नमस्कारहै और सबप्रकारके सुखोंको देनेवाले आपको नमस्कारहै सबोंको धनके देनेवाले आपको नमस्कार है और सबोंको बुद्धि के देनेवाले आपको नमस्कार है २२ ऐसे स्तुतिकिया और तेजसरूप में स्थित सूर्य्य सुन्दर बाणीसे बोला कि तुम्हारेलिये कौन वर देना चाहिये२३ देवताबोले आपके तेजसरूपको कोई सह नहीं सक्ता इसलिये हे प्रभो जगत्के हितकेलिये आप ऐसारूप धारणकरो कि सब सहलेवें २४ एवमस्तु कहके लोकोंके कार्य्यके सिद्धिकेलिये सूर्य्य गरमी बर्षा और हिमको देनेवालाहुआ २५ निदान सांख्य योगी और

मोक्षकी आकांक्षावाले जन ध्यानियोंके हृदयमें स्थित हुये सूर्य्य को ध्यानेलगे २६ सब लक्षणोंसे हीन और सब पातकोंसे संयुक्त मनुष्यभी यदि सूर्य्यके आश्रित हो तो सब पापोंसे छूटजाताहै २७ होम वेद और बहुत दक्षिणाओंवाले यज्ञभी सूर्य्यकी भक्ति और नमस्कार की षोड़शी कला को नहीं प्राप्तहोसक्ते २८ इसलिये तीर्थोंमें परमतीर्थ मंगलोंमें परममंगल और पवित्रोंमें परमपवित्र सूर्य्यकी भक्तिके लिये यत्न करो २९ इन्द्र आदि देवताओं द्वारा स्तुति किये सूर्य्यको जो प्रणाम करतेहैं वे सबपापोंसे मुक्तहुये सूर्य्यलोकमें बसतेहैं ३० मुनियोंने पूँछा कि हे ब्रह्मन् चिरकालसे हमें सूर्य्य के अष्टोत्तरशत नामोंको सुननेकी इच्छा है ३१ ब्रह्माजी बोले अच्छा सूर्य्यके अष्टोत्तरशत नामोंको मुझसे सुनो सूर्य्यका यह स्तोत्र गुह्य है जो स्वर्ग्ग में प्राप्तकरता है औ मोक्षको देता है ३२ सूर्य्य अर्यमा भग त्वष्टा पूषा अर्क सविता रवि गभस्ति भानू अज काल मृत्यु धाता प्रभाकर ३३ पृथिवी जल तेज आकाश वायु परायण सोम वृहस्पति शुक्र बुध अंगारक ३४ इन्द्र बिवस्वान् दीप्तांश शुचि शौरि शनैश्चर ब्रह्मा विष्णु रुद्र स्कन्द वैश्रवण यम ३५ वैद्युत जठराग्नि ऐंधन तेज सांपति धर्मध्वज वेदकर्त्ता वेदांग वेदवाहन ३६ कृत त्रेता द्वापर मलाशय कलि कला काष्ठा मुहूर्त्त क्षया मास आक्षय ३७ सम्बत्सरकर अश्वत्थ कालचक्र विभावसु पुरुष शाश्वत योगी व्यक्त अव्यक्त सनातन ३८ कालाध्यक्ष

प्रजाध्यक्ष विश्वकर्मा तमोनुद वरुण सागर अंश जीमूत जीवन अरिहा ३९ भूताश्रय भूतपति सर्वलोक नमस्कृत मन सुपर्ण भूतादि शीघ्रग प्राणधारण ४० धन्वन्तरि धूमकेतु आदिदेव अदितिसुत द्वादशात्मा अरविन्दाक्ष पिता माता पितामह ४१ स्वर्गद्वार प्रजाद्वार मोक्षद्वार त्रिविष्टप देहकर्त्ता प्रशांतात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुख ४२ चराचर आत्मा भूतात्मा मैत्रेय करुणानिधि अमित तेजवाला और कीर्त्तनके योग्य सूर्य्य के ये नाम हैं ४३ हे द्विजोत्तमो यह नामाष्टशतक मैंने तुम्हारे लिये कहा है ४४ देवगण पितर और यक्षों से सेवित और दैत्यों को नाशनेवाले लोक बन्दित और अग्नि और सुवर्णके समान कांतिवाले सूर्य्यको जगत् के हितके लिये मैं प्रणाम करताहूं ४५ जो समाहित मनुष्य इसस्तोत्रको सूर्योदयकालमें पढ़ेगा वहपुत्र भार्य्या धन और रत्नके समूह पूर्वजन्मके स्मरण सब कालमें स्मृति और उत्तम बुद्धिको प्राप्तहोगा ४६ देववर सूर्य्य के इस स्तोत्रका बुद्धिमान् और सावधान मनुष्य कीर्त्तन करैगा वह शोकरूप दवाग्नि के समुद्र से अलग होकर मनोबाञ्छित फलोंको प्राप्त होगा ४७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्वादेसूर्य्य माहात्म्याष्टशतकंनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

तेंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि सब अंगोंमें प्राप्त होनेवाले त्रिपु-

रारित्रिलोचन उमाप्रियकर रौद्र और चन्द्रमासे अर्द्ध
कृतमस्तकवाले महादेवजीने १ सब देवतों सिद्धों वि-
द्याधरों ऋषियों गन्धर्वों यक्षों नागों और समाहित रूप
वाले अन्योंका विद्रावणकर २ पहले यज्ञ करतेहुये दक्ष
के समृद्धरूप रत्नोंसे आढ्य और सब संभारोंसे संवृत
यज्ञको नाश किया ३ और जिसके प्रतापसे त्रस्त हुये
इन्द्र आदि देवते शांतिको न प्राप्तहो उसीके शरण में
गये ४ वरोंको देनेवाले शूलपाणि वृषध्वज पिनाकधारी
भगवान् दक्ष यज्ञ विनाशन ५ श्मशानवासी महेश्वर
एकाश्रमवासी मुनिश्रेष्ठ सर्वकामप्रद और हरनामवाले
महादेवजी सब कामों को देते हैं ६ मुनियोंने पूँछा कि
महाराज सब भूतोंके हितमें रत महादेवजीने सब देव-
ताओंसे सुशोभित हुये यज्ञको कैसे नाश किया ७ इस
आख्यानको हम श्रवण करनेकी इच्छा करते हैं आप
वर्णन कीजिये ८ ब्रह्माजी बोले कि दक्षप्रजापतिके साठ
कन्या थीं तिन्होंको यथायोग्य पूजकर उत्तमपतियों को
दिया ९ एक समय उसने अपने यज्ञमें सब कन्याओं
को बुलाया और सब कन्याओंमें बड़ी महादेवकी पत्नी
सती को १० रुद्रके बैरसे न बुलाया ११ जमाई और
श्वशुरके इस बैरको जानकरभी बिना बुलाई सती दक्ष
के स्थानको गई १२ पर दक्षप्रजापतिने सब कन्याओं
को तो अच्छी तरह पूजा परंतु सतीको बातभी न पूंछी
१३ तब क्रुद्धहो सती पितासे बोली कि सब कन्याओं
से मैं श्रेष्ठहूं मुझको अच्छी तरह क्यों नहीं पूजते १४

क्या मैं पूजनेके योग्य नहींहूं मुझसे आप सबोंका क्या बैरभाव है मेरा तिरस्कार करनेयोग्य आप नहींहो १५ यह सुन रक्तनेत्रोंवाला दक्ष कहनेलगा कि हे सति तुझसे श्रेष्ठ उत्तम और पूज्य छोटी पुत्रियां हैं १६ जो बहुत मानोंके योग्य और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ व्रत करनेवाले और महायोगी धार्मिक उनके पति हैं १७ हे सति इन सबोंमें तेरे पति महादेवसे गुणोंकी अधिकता है और वशिष्ठ अत्रि पुलस्त्य पुलह कृतु १८ भृगु मरीचि आदि मेरे जमाई श्रेष्ठहैं पर महादेव इनसे और मुझसे ईर्षा रखताहै १९ इसलिये मैं तुझे विशेष भूषित नहींकरता २० ऐसे वचन सुनके क्रुद्धहो सती पितासे कहनेलगी कि २१ यदि आप नहीं दुष्टरूपवाली मुझको निंदित करते हैं तो हे तात तेरे यज्ञसे मैं भी बैर करतीहूं २२ निदान उस अपमानसे दुःखितहो सतीने ब्रह्माजीको प्रणाम करके कहा २३ कि हे ईश्वर इस देहको त्याग करने पर जहां मेरा जन्महो तहां मैं महादेवकीही पत्नी बनूं अन्यकी नहीं २४ ऐसे कह और महादेवजी का ध्यानकर सतीने अपने आत्मामें आत्मासे अग्नि को धारण किया २५ और वायुसे प्रेरित अग्नि सतीके सब अंगोंसे निकलकर प्रज्वलित हुआ सतीके मरण २६ और पिता पुत्रीके सम्बादको सुन महादेवजी दक्ष और मुनिजनोंके ऊपर क्रोधितहो बोले कि २७ हे दक्ष निरअपराध सतीका तूने अपमान किया और पत्नियों सहित अन्य पुत्रियोंका सत्कार कियाहै २८ इसलिये ये

सब महर्षि और तू दूसरे जन्मको प्राप्तहोगा २९ चाक्षुष मन्वन्तरमें सप्तऋषि जन्म लेवेंगे ३० और दक्ष प्रचेताओंका पुत्र और मनुष्योंका राजा ३१ वृक्षोंकी मारिषानामवाली पुत्रीमें जन्मेगा ३२ मैं तहां भी दक्षके धर्म अर्थ और काम कर्मोंमें विघ्न करूंगा ३३ ऐसे शापितहो दक्षने बारम्बार महादेवको शापदिया कि ३४ हे क्रूर तूने जो मेरे कर्त्तव्यमें ऋषिजनोंको शाप दिया है ३५ इसलिये तुझको देवताओंके संग द्विज यज्ञों में न पूजेंगे और हे क्रूर तेरे लिये स्वर्गवासी हवन भी न करेंगे ३६ तू स्वर्गको त्याग बहुत युगोंतक इसी लोक में बसतारहेगा और देवताओं के संग आनन्दित न होवेगा अर्थात् अलगही रहेगा ३७ महादेवजी बोले कि चार प्रकारके भोजनोंको देवतेनहीं भोगसक्के इसलिये देवतोंसे मैं अलगही भोजन करताहूं ३८ और सब देवताओं का आदि भूर्लोक है तिसको मैं अपनी इच्छासे अकेला धारण कररहाहूँ तेरीआज्ञासे नहीं ३९ उसीसे निरन्तर सबलोक बसतेहैं और वहांहीं मैंबसता हूँ तेरी अनुज्ञासे नहीं ४० ऐसे अमित तेजवाले महादेवने दक्षके यज्ञका नाशकियाहै सब अपने २ शरीरोंको त्यागकर उत्पन्नहोवेंगे ४१ परन्तु कश्यपजीकीस्त्री दिति नारायणकी लक्ष्मी इन्द्रकी शची ४२ विष्णुकी कीर्त्ति सूर्य्यकी उषा और वशिष्ठकी अरुन्धती कभी अपने पतियोंको नहीं त्यागेंगी ४३ निदान प्रचेताओंका पुत्र दक्ष महादेवके शापसे चाक्षुष अन्तरमें मारिषामें उत्पन्न

हुआ ४४ और भृगु आदि सब ऋषियोंने भी आद्य त्रेतायुगमें वैवस्वत मनुके जन्म लिये ऐसा मैंने सुना है ४५ दक्ष और महादेव के आपस में ऐसे शापहुये हैं इसलिये बैरीपर कभी दया न करना चाहिये ४६ मुनियोंने पूँछा हे भगवन् दक्षकी पुत्री सती क्रोधवश देहको त्याग फिर हिमाचलकी पुत्री कैसेहुई ४७ और देहान्तरमें वहीदेह कैसे भई महादेवके संग उनका संयोग और महादेव पार्वती का सम्बाद कैसेहुआ ४८ और उस बड़े पर्वतमें स्वयम्बर कैसे बरागया हे जगन्नाथ अति आश्चर्य्योंसे समन्वित वह बिवाह कैसेहुआ ४९ हे ब्रह्मन् यह समग्र वर्णन करनेको आप योग्यहो इसलिये इसपवित्र और मनोहर कथाको सुननेकी हम इच्छा करतेहैं ५० ब्रह्माजी बोले हे मुनिशार्दूलो पापों को नाशनेवाली इसकथाको श्रवणकरो यह महादेव और पार्वतीका सम्बाद सब कामोंके फलोंको देनेवाला और पवित्रहै ५१ एकसमय पर्वतराज हिमालय द्विपदोंमें श्रेष्ठ कश्यपजीकी पूजाकरके बोला कि ५२ हेमुने इस जगत्में ख्यातिही मुख्यहै इसलिये जिसके पूजन से सत्पुरुषोंमें ख्यातिकी प्राप्तिहो वह करूं यही अभिलाषा मुझकोहै ५३ कश्यपजी बोले हे महाबाहो तेरे ऐसी संतति होवेगी कि जिससे आप ब्रह्माआदि ऋषियोंके संग ख्यातिको प्राप्तहोवेंगे ५४ हे शैलेन्द्र क्या तू नहीं देखता है जो मुझसे पूँछता है हे अचल जो पहले मैंने देखाहै वह तुझसे वर्णनकरताहूँ ५५ काशी

पुरीको गमन करतेहुये मैंने आकाश में संस्थित और
देवतोंकेसमान दिव्य और अतिऋद्धिवाला एकविमान
देखा ५६ और हे प्रिय उसविमानमें कुछ आर्त्तशब्द
मैंने सुना तब मैं उसेज्ञानद जानकर वहांहीं अन्तर्हित
होकर स्थितरहा ५७ हेशैलेन्द्र फिर वहां नियमवाला
पवित्र और तीर्थोंके अभिषेक से पवित्र आत्मावाला
एक तपस्वी विप्र बिबरमें संस्थितहुआ ५८ और जि-
सगर्त्तमें विमानसे पतितहुये पुरुष लटकतेथे उसमें प्रवे-
श करगया ५९ उसगढ़में उसने जब लटकतेहुये मुनि
जनोंको देखा ६० तब उन दुःखित और नीचेको मुख
वाले मुनिजनोंसे पूँछनेलगा ६१ कि आपकैसे दुःखित
होरहेहो और तुम्हें इसगर्त्तमें किसने डाला ६२ तब
वे पितर बोले रेमूढ़ हम तुझक्षीण पुण्यवाले के पिता
पितामह और प्रपितामह पितर हैं और तेरे दुष्ट कर्मों
से दुःखित होरहेहैं ६३ हेमहाभाग गर्तरूपी यह नरकहै
और इसमें पड़नेकेलिये हम लम्बायमान होरहेहैं ६४
हे विप्र जबतक तू जीवैगा तबतक हम यहां स्थित हैं
और जब तेरीमृत्यु होजावैगी तब पापमें चित्तलगाने
वाले हम नरक में प्राप्त होजावेंगे ६५ यदि तू बिवाह
करके उत्तम संतति उत्पन्न करेगा तो हम इस नरकसे
मुक्त होसक्ते हैं ६६ तप आदि और तीर्थों के फल से
हम आनन्दित नहीं होते हे महाबुद्धे अपने पितरोंकी
रक्षाकर ६७ निदान पितरोंके वचन को अङ्गीकारकर
और महादेवकी आराधनाकर उसने पितरोंका उद्धार

किया और रुद्रके गणभावको प्राप्तहुआ ६८ महादेव
के तपसे उस ब्राह्मण को उत्तम संतान प्राप्तहुई ६९
इसीतरह हे शैलेन्द्र बर बराणिनी पुत्रीको तू भी उत्पा-
दनकर ७० ब्रह्माजीने कहा कश्यपजीके ऐसे वचनोंको
सुन हिमवान् पर्वत उग्रतप करनेलगा ७१ और मैंने
तपकरतेहुये हिमाचलके समीपजाकेउससे कहा कि ७२
हे शैलेन्द्र इसतपसे मैं प्रसन्नहुआ इसलिये तू बांछित
फलकोमांग ७३ हिमाचल बोला हे भगवन् जो आप
प्रसन्नहुये हो तो मैं एकपुत्र की इच्छा करता हूँ ७४
तब पर्वतराजके वचन सुन उसके मनोबांछित बरको
मैंनेदिया७५ और कहा हे सुब्रत इसतपसे तेरी भार्य्या
में एक कन्या उत्पन्न होवेगी ७६ जिसके प्रतापसे तू
सुन्दर कीर्त्तिको प्राप्तहोगा ७७ देवतों से पूजित और
तीर्थोंकी कोटिसे समावृत पवित्र और देवतों को भी
पवित्र करनेवाली ७८ सुन्दरकन्या तेरे उत्पन्न होवेगी
७९ ब्रह्माजी बोले कि समयपर हिमाचल से मेना में
अपर्णा एकपर्णा और एकपाटलानाम्नी तीनकन्या
उत्पन्नहुईं ८० और बड़केपत्र का आहार करनेवाली
एकपर्णा पाटला वृक्षकेपत्रका आहार करनेवाली पा-
टला और आहारसे वर्ज्जित अपर्णा तीनों कन्यातप
करनेलगीं ८१ निदान कईहज़ारवर्षोंतक वे ऐसा उग्र
तपकरतीरहीं जो देवों और दैत्योंसे भी न होसके ८२
अन्तमें पाटलाकेपत्रों का पाटला और बड़केपत्रों का
एकपर्णा ने आहार किया ८३ पर अपर्णा ने तब भी

भोजन न किया तब स्नेहसे दुःखितहुई उसकी माता ने तिसेवर्जित किया ८४ यह स्थावर जंगम जगत् इन तीन कुमारियों द्वारा प्रलयतक धारणकियाजाताहै८५ योगबलसे अन्वित अति तपसे संयुक्त स्थिर यौवन वाली ८६ ब्रह्मचर्य्यको धारणकरनेवाली त्रिलोकी की माता और अपने तपसे तीनलोकों को प्रकाशित करनेवाली ये तीनों होतीभई८७ इनतीनों में से अपर्णा नामवाली कन्या उमाश्रेष्ठहुई और महायोगके बलसे महादेव को प्राप्तभई ८८ पर्णा और पाटलकण्व और जैगिषव्य मुनियों को व्याहीगई और इन दोनों में से एकमें शंख और लिखितनामक दो पुत्रहुये ८९ तपके योगसे उमा सबलोकोंमें श्रेष्ठ होगई ९० और महालक्ष्मीरूप उमासे पूजित हो मैंने उससे कहा कि हे देवि यह तपकरके तू कैसे लोकोंको स्थापित करैगी ९१ तूनेही तो यह जगत् रचाहै और इन सब लोकोंको अपने तेजसे तूही धारण कररहीहै ९२ हे जगत् की माता हमपर प्रसन्नहो और वर्णनकर कि तेराप्रार्थित क्याहै देवी बोली हे पितामह जिसकामनाके लिये मैं तप करतीहूँ ९३ तिसको आप जानतेहो मुझसे क्या पूँछतेहो तब मैं बोला कि हे शुभे जिसकेलिये तू तप करती है ९४ वह आप आकर तुझे यहांहीं बरैगा और सब लोकेश्वरों का ईश्वर तेरापति होवेगा ९५ हम सब जिसके अगाड़ी स्थित रहते हैं ९६ वह देवताओंका देवता परमेश्वर का भी ईश्वर हम सबोंकी

रक्षाकरनेवाला वदाररूपवाला विकृत अधिकरूपों से युक्त और सबोंके नमस्कार करने योग्य पर्वतलोकका वासी चरअचर का ईश प्रथमरूप अप्रमेय सूर्य्य चन्द्रमाके समान तेजसे विभीषण और राजाकी तरह स्थित महेश्वर तेरापति होवेगा ६७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसंवादे त्रैत्रिंशोऽध्यायः ३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि फिर सब देवतोंने उमासे आकर कहा कि १ हे देवि हम जानतेहैं कि महादेव तेरा पतिहोगा तू संशयमतकर पार्वती की परिक्रमा करके २ तिसको न देखा फिर पार्वतीने भी तपसे बिरामकर उस आश्रमका त्यागकिया ३ और द्वारपर स्थित अशोकवृक्षके आश्रितरहीं निदान चन्द्रमाको मस्तक में धारण करनेवाले और देवताओंकी पीड़ाको हरनेवाले देवादि देव महादेव वहां आये ४ और विकृतरूपको धारणकिये ह्रस्व और नादकरतेहुये दोजगहसे कटीहुई नासिकावाले केशोंसे विकल ५ और विकृत मुखवाले महादेवजी कहनेलगे कि हे देवि तुझको मैं बरूंगा योग से सिद्धहुई ६ और अन्तर्भाव से बिशुद्ध आत्मावाली उमा ने उस देव के आगमन को जानकर क्रिया और अनुष्ठान की बांछाकरके अर्घ्यपाद्य और मधुपर्क से तिसकी पूजाकी ७ और अपनी माता आदिस्त्रियों स-

हित तिस ब्राह्मणको कईप्रकार से पूजाकर बोलीं कि
हे भगवन् मैं स्वतंत्र नहीं हूँ इसलिये तुम ८। ६
समर्थ रूप मेरे पिताके समीप जा पर्वकाल में याचना
करो १० वह मुझको तेरेलिये उचितमानकर निश्चय
देवेगा ब्रह्माजीबोले कि विकृतरूपको धारणकरनेवाले
वह देव ११ हिमाचलके पास जाकर बोला कि हे शै-
लेन्द्र अपनी पुत्रीका तुव मेरेलिये दानकर तब हिमा-
चल विकृतरूप से संयुक्त महादेव को जान १२ शाप
और निन्दासे भीतहो बोला कि हे भगवन् इसपृथिवी
में ब्राह्मणही देवतेहैं १३ पर जैसा मैंने पहले बांछित
कियाहै तिसको आपसुनो ब्राह्मणोंसे पूजित मेरीपुत्री
का स्वयम्बर होवेगा १४ तब जिसको वह बरलेवेगी
वही उसका पतिहोवेगा हिमाचल के यह वचन सुन
महादेवजी १५ देवीके समीप आके कहनेलगे कि हे
देवि तेरे पिताने अनुज्ञादीहै कि स्वतन्त्र होकर उमा
आपही बरको बरैगी १६ हे अनद्योत् स्वयम्बरमें पति
को बरेगी इसलिये तुझसे पूँछकर मैं गमनकरताहूँ हे
बरानने तू मुझको प्राप्तहोनी दुर्ल्लभहै १७ क्योंकि रूप
वाले मनुष्यको त्यागकर मेरेसरीखेको क्योंबरैगी ब्रह्मा
जी बोले महादेवके वचनसुन विचारनेलगी १८ और
बोली कि हे विप्र आप प्रसन्नताको प्राप्तहों और अ-
पनी बुद्धिको अन्यथा भावको न प्राप्तकरें १९ मैंआपही
को बरूँगी अन्य पुरुषको नहीं और हेविप्र यदि आप
को किसीतरह का सन्देह प्रतीत होताहो तो मैं २०

यहांहीं आपको मनोरथसे बरती हूँ ब्रह्माजी बोले कि इतना कह अपने हाथोंमें महादेवके हाथको ग्रहणकर पार्वती स्थितहुई २१ और शम्भुको मध्यमेंकर बोली मैंने आपको बरलियाहै फिर पार्वतीके कर्त्तव्यसे वह देव २२ कहनेलगा कि हे पार्वती जिसवृक्षके नीचे तू स्थितहै यह अतिसुन्दरता को धारणकरैगा २३ अर्थात् इस अशोकवृक्षका पुष्प कामदेवके रूपको धारैगा और मुझको अतिप्रिय लगैगा २४ चारोंतर्फसे सब प्रकारके पुष्प और फलोंसे शोभित सबोंको भक्ष्यदेने वाला और अमृतको झिरानेवाला यहवृक्ष होवेगा २५ और सब देवताओं को अतिप्रिय भयसे रहित सब लोकोंमें श्रेष्ठ और मुनिजनोंसे आवृत तू होवेगी २६ चित्रकूट नामसे विश्रुत तेरे इसआश्रममें जो पुण्यार्थी मनुष्य आगमन करेगा वह अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहोवेगा २७ इसके समीप भी जो मनुष्य मरेगा वह ब्रह्मलोकमें गमनकरेगा और जो मनुष्य नियमों से युक्तहुआ इसजगह प्राणोंको त्यागैगा २८ वह देवी की कृपासे गणोंका स्वामी होवेगा ब्रह्माजी बोले कि उस देवीसे इसप्रकार कहकर २९ अमृतरूप आत्मा वाले और सब भूतोंके ईश्वर महादेवजी चलेगये और पार्वतीने ३० चन्द्रमा सरीखे मुखको धारणकर और गंगामें प्रवेशकर उसदेवहीमें मनको लगाया ३१ परन्तु जैसे चन्द्रमासे रहित रात्रि होतीहै तैसेही उदासहुई पार्वतीने पीड़ित बालकके शब्दको सुना ३२ जोउसी

आश्रमके समीप जलसेपूरित गंगामें क्रीड़ा कररहाथा ३३ फिर क्यादेखा कि उस खेलतेहुये बालकको योग-मायाके बलसे ग्राहने ग्रसलिया ३४ तब वह ग्राहग्रस्त बालक कहनेलगा कि मेरीरक्षा करनेको कोई समर्थ नहीं ३५ मेरे बांछितको धिक्कारहै जो मैं अपने मनो-रथको नहीं प्राप्तहुआ और इसदुरात्मा ग्राहके मुखमें मरूँगा ३६ मैं दुःखितहो अपने शरीरको नहींशोचता कि जैसा पिता और तपस्विनी माताको शोचताहूँ ३७ ग्राहके मुखमें प्राप्तहोनेवाले मुझको मरा सुनतेही मेरे प्यारकरनेवाले और एकपुत्रवाले माता पिता प्राणोंको त्यागेंगे ३८ बड़ा आश्चर्य्य और कष्ट है जो मैं अकृत श्रम बालक तपआदि कर्म्मोंको करेबिनाही मृत्यु को प्राप्तहोताहूँ ३९ ब्रह्माजी बोले कि तब उस पीड़ित बालकके वचनको सुन पार्वती वहांगई जहां वह बालक ग्राहके मुखमें प्राप्तथा ४० और उस सुन्दर रूपवाले बालकको ग्राहके मुखमें स्थितदेखा ४१ ग्राहनेभी देवी को देख उस बालकको पकड़लिया परन्तु उस बालकने आर्त्तशब्द न किया ४२ तब महाव्रतको धारनेवाली और दुःखसेपीड़ित पार्वती उसबालकको देखकर कहने लगी ४३ कि हे ग्राहराज हे महासत्त्व हे भीमपराक्रम इस बालकको तू छोड़दे ४४ ग्राहबोला हे देवि दिनमें जो प्रथम मुझको प्राप्तहोताहै तिसको मैं ग्रहण करता हूँ और लोक के कर्त्ता ने मेरे लिये मांस का भोजन विहितकियाहै ४५ इसकारण हे पार्वती यह तो मुझको

छः दिनोंमें मिलाहै और ब्रह्माके विहितकिये इसभोजन को मैं कैसे त्यागूं ४६ देवीने कहा कि मैंने जो हिमाचल के पृष्ठभागमें तपकियाहै तिसके मिस इस बालक को छोड़दे हे ग्राहराज तुझको नमस्कारहै ४७ ग्राह बोला हे बाले हे शुभानने तू इसके बदलेमें क्यों तपकोदेतीहै हे सुरश्रेष्ठे इसबालकको मैं न छोडूँगा ४८ देवीने कहा हे महाग्राह जिसकर्मको सत्पुरुष नहीं करते वहीकर्म तूने किया इसमेंसंशय नहीं ४९ ग्राहबोला कि हेपार्वती तूने अल्प या बहुत जो कुछ तप कियाहै उस सम्पूर्ण तपको मेरेलियेदे तो बालक छूटसक्ताहै ५० देवीबोली हे महाग्राह जन्मसे जो मैंने तप कियाहै वह सब तेरे लिये मैंने दिया अब इसबालकको छोड़ ५१ ब्रह्माजी ने कहा कि उसतपके फलसे विहितहो वह महाग्राह मध्याह्न के सूर्य्यकीतरह प्रकाशित होगया ५२ और पार्वती से कहनेलगा कि हे देवि तूने यह क्याकिया ५३ कि जिसतपके संचयमें बहुत दुःखसहा तिसको त्याग दिया यह अच्छा नहीं इसलिये हे सुमध्यमे मैं कहता हूँ कि इसको तूही ग्रहणकर ५४ हे देवि तुझपर मैं प्रसन्नहूँ और इसबालककी भक्तिसे मैं इसेउलटा देताहूँ ग्राह के यह वचनसुन पार्वती बोलीं ५५ कि हे महाग्राह तू ने बालक को छोड़दिया यह मैंने जाना परन्तु ब्राह्मणों से तप श्रेष्ठ नहीं है इसलिये मैं ब्राह्मणों को श्रेष्ठ मानती हूँ ५६ हे ग्राहेन्द्र दान देकर मैं फिर ग्रहण नहीं करती क्योंकि धर्मज्ञ मनुष्य दान देकर

फिर उलटा ग्रहण नहीं करतेहैं ५७इसलिये मैंने तुझको-
ही देदिया फिर कैसे ग्रहणकरूँ तेरा यही उत्तम बरहै कि
इसबालकको छोड़ना उचितहै ५८ निदान पार्वतीकी
प्रशंसाकर और बालक को छोड़ वह ग्राह उसी जगह
अन्तर्द्धान होगया ५९ और तीरपर छोड़ाहुआ बालक
भी स्वप्न लब्ध मनोरथकी तरह उसीजगह अन्तर्हित
हुआ ६० और पार्वती अपने तपका क्षयजान फिर
नियमोंमें स्थितहो तप करनेलगी ६१ तपकरती पार्वती
कोदेख महादेवजी आकर बोले कि तप मतकर ६२ हे
देवि जो तूने तपका दानकियाहै तिसीसे तेरातप हज़ार
गुना होगयाहै ६३ ऐसे अक्षय तपके बरको प्राप्तहो पा-
र्वती स्वयम्बरको देखतीहुई तहांही स्थितरही ६४ जो
मनुष्य इस आख्यानका पाठ करताहै वह इस शरीर
को त्यागकर गणपति के शरीरके तुल्य पराक्रमवाला
होजाता है ६५ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांपार्वतीमहादेवसम्बादे
चतुःत्रिन्शोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले सैकड़ों बिमानों से संकुल और वि-
स्तृत हिमवान्के पृष्ठपर समयपाकर पार्वती का स्वय-
म्बरहुआ १ ध्यानमें तत्पर हिमवान् पर्वत ने अपनी
पुत्रीको महादेवसे अभिमन्त्रितकी २ जानकरभी आ-
चारलक्षण की बांछासे पार्वती के स्वयम्बर को सब

लोकोंमें विख्यातकिया और हृदयसे ऐसा चिन्तनाकर
३ कि जब देव दानव और सिद्ध सब लोकनिवासी म-
नुष्यों को बरदेनेवाले महादेव प्रत्यक्ष आगमन करेंगे
४ तब उनकेलिये उमादीजावेगी ५ निदान ब्रह्मलोक
तक इसस्वयम्बरको प्रकाशितकर रत्नोंसे युक्त उसने
स्वयम्बरदेश को सजाया ६ हिमाचलकी पुत्रीका स्व-
यम्बर सुनकर सब लोकोंमें बसनेवाले और दिव्यवेषों
को धारण करनेवाले देवते आनेलगे ७ प्रथम फूलेहुये
कमलोंके आसनमें स्थित सिद्ध और योगियोंसे परि-
वृत और देवताओंसे उपेक्षित मैं ब्रह्मा वहां प्राप्तहुआ
८ फिर हजार नेत्रोंवाला और दिव्य अंगके भूषणोंको
धारण कियेहुये ९ हाथियोंमें उत्तम और मद झिराते
हुये ऐरावत हस्तीपर स्थित और बज्रको धारण किये
इन्द्र आये १० फिर देवताओंके तेजके प्रभावसे अ-
धिक रूपवाले और सब दिशाओंको प्रकाशित करने
वाले सूर्य्य सुन्दर बिमानमें स्थित और छत्रको धारण
कियेहुये वहां आये ११ और महा पर्वतके समान ऊंचा
और पुष्ट शरीरवाला विचित्र रत्नोंसे जटित वेषवाला
और सब जगत्‌को पोषणेवाला वायुदेवताभी बिमान
में स्थितहो वहां आया १२ देवतों और दैत्यों को सं-
तापित करताहुआ और तेजमें अधिक सुन्दर वेषको
धारण करनेवाला अग्निदेव भी वहां देवतों के मध्यमें
स्थित हुआ १३ और अनेकप्रकारकी मणियों और
प्रज्वलित दृष्टिको धारण करनेवाला कुबेर दिव्य बि-

मानमें स्थितहो वहां आया १४ देवतों और दैत्योंको पुष्ट करता हुआ और कांति और शीतलतासे सुन्दर रूपवाला चन्द्रमा भी महारत्नोंसे चित्रितरूप बिमान में स्थितहो वहां आया १५ और श्याम अंग और दृष्टि वाला विचित्र वेषको धारे और सब अंगोंमें सुगन्धित पुष्पोंकी मालाओं को धारण किये बड़े पर्वतके समान गरुड़पर स्थित विष्णुभी वहां आये १६ प्रज्वलित और सुन्दर वेषको धारण करनेवाले देवताओंमें श्रेष्ठ और देवताओं के वैद्य दोनों अश्विनीकुमार भी प्रज्वलित बिमानमें स्थित होकर वहां आये १७ और हज़ारोंप्रकारसे फुरते हुये अग्निके समान जटाओं को धारण करनेवाले और प्रज्वलित सूर्य्यके समान तेजवाले महादेवभी बहुतसे सर्पोंके संग बिमान में स्थित होकर आये १८ अग्नि सूर्य्य चन्द्रमा और वायुके समान प्रकाशितरूप और वेषको धारणकर बहुतसे देवता वहां आये १९ और गन्धर्वोंका राजा दिव्य बिमानमें विचरनेवाला बिश्वावसु भी इन्द्रकी आज्ञा से गन्धर्वों के समूह और अप्सराओंके संग आया २० नानाप्रकार के अलग २ विचित्ररूपोंको धारण करनेवाले अन्यदेवता और गन्धर्व किन्नर राक्षस सर्प्प सब बिमानोंमें बैठ कर वहां आये २१ निदान राजाओंका अधिराज अधिक लक्ष्य मूर्त्तिवाला और आज्ञा ऐश्वर्य्य और बल से आनन्दित इन्द्रने पार्वतीको अधिकवेष धारणकराने की आज्ञादी २२ तब समस्त जगत्को उत्पन्न करनेमें

कारण देवतों और दैत्योंकी माता महादेवकी पत्नी जो पहले पुराणमें प्रकृतिनामसे विख्यात २३ और दक्षके कोपसे हिमाचल के गृहमें जन्म लेनेवाली देवतों के कार्य्यको करनेवाली मणि और सुवर्णसे गुप्त बिमानमें स्थित और देवतोंसे वीजित अंगोंवाली २४ पार्वती सबप्रकारके पुष्पोंकी मालाको ग्रहणकर स्थितहुई ब्रह्माजीबोले कि जब इन्द्रआदि सब देवता अपने आसनोंपर स्थितहुये तब पार्वती मालाकोले सभामें आई २५ तब देवी की जिज्ञासा से पहलेही पंचशिखाओं वाला पवित्र बालक होकर महादेव व पार्वतीके समीप प्राप्तहुआ २६ और उसको देख और जानकर प्रीतिसे संयुक्तहो २७ तपसे पूर्णसंकल्पवाली पार्वती उसविभुको देखकरभी निवृत्तहुईसी स्थित रहीं २८ देवीके समीपवर्ती उस बालकको देखकर देवता कहनेलगे कि यह कौनहै और उसेदेखकर सब मोहितहुये २९ इन्द्रबाहु को उठा बज्रको फेंकनेलगा तो उसका बाहु स्तम्भित होगया ३० फिर भगवान्‌से विख्यात और कश्यपका पुत्र बली सूर्य्य दीप्तरूप शस्त्रको उठा मोहितहो फेंकने लगा ३१ तब शिरको कँपाताहुआ देव उस बालकके सन्मुख देखनेलगा और महादेव ने उसके बल तेज योग सबोंको स्तम्भित करदिया ३२ जब अति क्रोध वाले सब देवता स्तम्भित होगये तब परम संविग्नहो मैंने उसके चरणोंका ध्यानकिया ३३ तब मैंने जाना कि पार्वतीकेसंग महादेवजी स्थितहोरहे हैं ऐसे जान-

कर मैंने उसके समीपजा ३४ शम्भुके दोनों चरणों में नमस्कारकिया और पुराणों और सामवेद के गुह्यनामों से उसकी स्तुति करनेलगा ३५ कि हे देव अजभी आपही हैं और अमरभी आपही हैं श्रद्धा यक्ष परावर प्रधान पुरुष ब्रह्म ध्येय तदक्षर आदि नामोंवाले भी आपही हैं ३६ और अमृत परमानन्द ईश्वर कारण महद्ब्रह्म त्रिक प्रकृति स्रष्टा सर्वकृत्य रतआदि नामों वालेभी आपहीहैं ३७ हे देव सब कालमें सृष्टिकाकारण रूप यह आपकी प्रकृति है जो पत्नीरूपको प्राप्तहोकर यहां प्राप्तहोरहीहै ३८ हे ईशान आपको सदा नमस्कार हो और इस देवीको सदा नमस्कारहो हे देव आपके प्रसाद और योगसे इस पार्वतीने ३९ यह सब देव आदि प्रजाके जीवरचेहैं और आपकी योगमायासे ये मोहित होरहे हैं इसलिये इनपर प्रसादकरो कि पहले की तरह ये फिर होजावें ४० हे विप्रो मैंने ऐसे उस ईश्वरको जान तिसके समीप इसप्रकार कहा ४१ पर मूढ़हुये सब देवतोंने इसमहादेवको न जाना तब मैंने उनसे कहा हे देवतो इस महादेव की शरणमें जल्द प्राप्तहो ४२ भवानीके संग परमात्मा और अव्यय महादेवजी स्थितहैं उन स्तम्भितहुये देवतोंने मेरे वचनको मान ४३ मन और शुद्धचित्तसे उसमहादेवको प्रणाम किया ४४ और उनसबोंपर प्रसन्नहो महादेवजीने पहले की तरह उन देवताओंके शरीरको करदिया ४५ ऐसे जब सब देवताओं का दुःख निवारणकर महादेव ने

क्षमाकरके अद्भुतरूप धारणकिया ४६ जिसके तेजसे ध्वस्तहो सबोंके परमचक्षु खुलगये और महादेव को अच्छीतरह देखकर ४७ इन्द्रआदि सबदेवतोंने प्रणाम किया ४८ तब प्रसन्नहो देवीने सब देवतोंके सन्मुख उन अमलद्युतिवाले महादेव के पैरोंमें माला चढ़ाई ४९ और साधु २ कहतेहुये देवतों ने पार्वती सहित महादेव को पृथिवी में शिरोंको झुकाकर प्रणामकिया ५० उसी अन्तरमें मैंने देवताओं के संगमें महाद्युति वाले हिमाचल से कहा ५१ कि हे शैलेन्द्र अब तू श्लाघा पूजा और बन्दनाके योग्य सबोंसे महान्हो-गया क्योंकि अब महादेवसे तेरासम्बन्धहुआ है ५२ अब शीघ्र बिवाह होना चाहिये तब हिमाचल प्रणाम कर मुझसे कहनेलगा ५३ कि मेरे भाग्यका जो उदय हुआ है इसमें आपही कारणहो इससे मुझपर प्रसन्न हो ५४ हे पितामह बिवाहके लिये यथायोग्य सब सा-मान इकट्ठे किये हैं ५५ हिमाचलके ऐसे वचन सुनकर मैंभी अनेक प्रकारकी तय्यारी करनेलगा ५६ और हे बिप्रो उसी क्षण हमने महादेवके बिवाहके लिये ५७ नानाप्रकारके रत्नोंसे उपशोभित और रत्न मणि सुवर्ण मोती ५८ आदिसे पुरको रचकर अलंकृत किया ५९ मरकतमणियोंसे चित्रित और सोनेके स्तंभोंसे शोभित तांबा और स्फटिककी भीतों और मोतियोंके हारों से प्रलंबित ६० महादेवके बिवाहके लिये स्थान रचागया और ऐसा शोभित होनेलगा जैसे इन्द्रका पुर ६१ मणि

चन्द्रमा और सूर्य्यके समान प्रकाश करनेलगी और सुगन्धित और मनोरम गन्धको ग्रहणकर पवन चलने लगा ६२ अर्थात् महादेवके लिये अपनी भक्तिको दिखाकर सुख स्पर्शरूप पवन चलने लगा और चारों समुद्र इन्द्र आदि सब देवतें ६३ देवनदी महानदी मंत्र ध्यान गन्धर्व अप्सरा गण सर्प यक्ष राक्षस ६४ किन्नर देव चारण तुम्बुरु नारद हाहा हूहू ६५ सब नानाप्रकारके रत्न और बाजोंको यथायोग्य ग्रहणकर वहांआये ६६ वेद गीता और तपमें तत्पर ऋषि मुनि सब वैवाहिक मंत्रोंको जपनेलगे ६७ और सब मातृगण और सब देवताओंकी कन्या आनन्दितहो महादेवके बिवाह में गान करनेलगीं ६८ छहोंऋतु गन्ध और सुखको देनेवाले सब पवन शरीरों को धारण करके महादेवके बिवाहमें स्थितहुये ६९ नीले मेघके समान कांतिवाले और मंत्र आदिसे आनन्दित शब्द करतेहुये मयूरगण नाचनेलगे ७० और पृथ्वी अनेक प्रकारके बिमान और बिजलियोंसे शोभित पीत श्वेत पुष्पों के समान वर्णों वाली बलाकाओंसे अलंकृत अनेक प्रकारके वृक्षलता और सुन्दरजलकी धाराओंसे शोभित समयपर उद्धत मनोंवाली और मोर आदिके समान वाणी बोलने वाली स्त्रियों के शब्दोंसे शब्दित मेघोंके समूहों और इन्द्र के धनुष से अति बिराजित बिचित्र पुष्पों के रसकी सुगन्ध से सुगन्धित होगई मनोहर पवनोंसे कांपती हुई देवताओं की अंगनाओं की अलकावली

में उनका मुख ऐसा शोभायमान होताथा मानों मेघ में स्थित चन्द्रमा बद्दलों से उत्सिक्तहो प्रतिबिम्बको धारणकर रहाहै ७१। ७६ जहां तहां पांथ पुरुषों की स्त्रियें उनस्त्रियों को देखरही थीं ७७ हंस और नूपुरके शब्दों से युक्त समुन्नतस्तनोंवाली रसवाले पुष्प और बेणिसे शोभित सम्पूर्ण अंगोंवाली ७८ मेघोंसे निर्मुक्त और कमलके कोषके समानस्तनोंवाली सुवर्णके नूपुरों से निर्ह्लादित शरत्कालके चन्द्रमाकेसमान दिगंतरों वाली विस्तृत पुलिन और श्रोणीवाली बोलतेहुये सारसोंकी मेखलावाली गीलेकमलोंके समान श्याम और सुन्दरनेत्रों से मनोहर सुन्दर ओष्ठोंवाली कुन्दकेदण्ड के समान प्रहासवाली नवीन नीलेकमलों के समान श्याम और कुन्दपुष्पों की पंक्तियों से परिस्कृत और चन्द्रमाकी शीतलता के वर्षनेसे कठोररूप स्तनोंकरके शोभित और सब देवताओंकी स्त्रियोंको आनन्दितकरनेवाली मदवाले भ्रमरोंके समूहसे मधुरस्वरको बोलनेवाली चलायमान और सुन्दर कुण्डलों से शोभित और रक्तअशोककीशाखाके पत्तोंकेसमान अँगुलियों को धारणकरनेवाली लालअशोकके पुष्पोंकेसंचयरूपी वस्त्रों को धारण करनेवाली और रक्तकमलके समान वर्णवाली जातिकेपुष्पों के समाननखोंकी पंक्तियोंवाली केलाकेस्तम्भोंके समान भीरु और चन्द्रमारूप बलय वाली सब लक्षणों से सम्पन्न और सब गहनों से भूषित शरदऋतु के समान मनोहर और सैकड़ों मेघोंके

समान आडम्बरवाली पूर्ण चन्द्रमाकेसमान मुखवाली और नीलेकमलकेसमान नेत्रोंवाली सूर्य्यकी किरणोंके समान पद्मासनवाली और अनेक पुष्पोंकी रजसे सुगन्धित बनको आनन्दित करनेवाली और बोलतेहुये हंसोंके समान नूपुरोंके शब्दोंवाली अनेक स्त्रियांपार्वती के बिवाहमें आई ७९। ८८ अति शीतल जलसेदशों दिशाओं को लवन करतेहुये हेमन्त और शिशिरऋतु भी आये ८९ और वह पर्वत उन ऋतोंसे शोभित होगया और शिशिरऋतु तथा वर्षाऋतुकी शोभा हिमालयपर्वत परहुई ९० अगाधजलसे समुद्रकी और अम्बरकी एकसी शोभाहोगई और वह पर्वतभी ऋतु के पर्य्यायको प्राप्तहोगया ९१ जैसे श्रेष्ठ उपकारकरने से दुर्जनकी शोभाहोजातीहै तैसेही तिस पर्वतके शिखरोंकी अति शोभाहोगई ९२ वह पर्वत पीलेवर्णकी पृथ्वी से अति शोभित होगया ९३ और देवताओंकी स्त्रियोंके मनमें कामदेव को पैदाकरनेवाला वायुचलने लगा कमलनी पुष्पोंसे युक्तहोगई ९४ कुछ कटे २ बादल अति शोभितभये और शीतोष्णसे रहित साधारण तलावोंकाजल कमलकी केशरों से अति शोभित हुआ ९५ अनेक देवताओं की अंगना वहां शोभा देखनेको आई ९६ प्रियंगुवृक्ष आँब मालकांगनी इत्यादिक आपसमें हिलतेहुये अपनी२ मंजरियोंसे शोभाको प्राप्तभये ९७ और हिमवान् पर्वत से गिरेहुये शृंगोंने अपने कार्य्यके उद्देशलेके हाथी मदके पानी को झिरने

लगे जैसे वृक्षोंसे मदभिरताहो ९८ फूलीहुई शोकवृक्ष की लता पर्वतके शिखरोंपर ऐसे शोभितभई जैसे कामिनी अपने पतियों के कण्ठमें लम्बितहोरही हों ९९ इसमें आँब कदम्ब नीपसंज्ञककदम्ब ताड़वृक्ष तमाल कैथ अशोक सर्जवृक्ष अर्जुन कोबिदारवृक्ष पुन्नागवृक्ष नागेश्वर कर्णिकार १०० लवंग कालागुरु सातला बड़ सहोंजना नारियल आदिवृक्ष और फलपुष्पवाले अन्य अनेक वृक्ष मनोहर दीखनेलगे १०१ श्रेष्ठजल से पूरित जलाशय चक्रांड कारण्डव हंसआदि जीवों से सेवित और बगुलाओंकी पंक्तियों से युक्त हो रहेथे १०२ और नीलेकमल और पद्मसरीखे तथा और अनेक और बिचित्र पंखोंवाले पक्षी अनेक प्रकारकेवृक्षों में बिचररहेथे १०३ और क्रीड़ामें प्रयुक्तहुये कामदेव से मत्तशब्द कररहे थे १०४ निदान उसपर्वत में और पार्वतीजीके बिवाहमें शीतलवायु चलनेलगा और सुन्दरपुष्पोंको गिराताहुआ होले २ पर्वत को स्पर्श करता बहनेलगा १०५ सब ऋतुमिलीहुई प्रकाशितभईं और जो२ चिह्न जिस ऋतुके हैं वे सब मनोहर दीखनेलगे १०६ परस्पर अभिमानवाले पुष्प नीले और सपेद कमलोंसे युक्तहुये शोभित होनेलगे १०७ और भ्रमरोंके झुण्डके झुण्ड झुक विस्तीर्ण जलस्थानोंमें कमलोंकी शोभाहोनेलगी १०८ तलावोंमें सब ओर कमलों की नालें फैलगईं और कमलों के पत्तोंसे भूषितहुई बावड़ी अति रमणीक होगईं १०९ अनेक प्र-

कार के पक्षियों से संघुष्ट उसपर्वतके शिखर फूलेहुये कर्णिकार वृक्षोंसेअधिक शोभितहुये ११०जिनपर पक्षी शब्द करनेलगे और पाटलाके पीले पुष्प खिलगये १११ सबदिशा तिसपर्वतकी शोभासे मूर्त्तिमान् होगईं और कालेमृगके समाननील अशोककेवृक्ष ११२ तिस पर्वतमें आपसमें बढ़ेहुये शोभितहुये और केशूकेवृक्षों के बनोंकी अति शोभाहुई ११३ तमालपत्रोंसे उस हिमवान् पर्वतकी ऐसी शोभाहुई जैसे नीलेमेघोंके समूह से संध्याकी शोभाहोतीहै ११४ श्रेष्ठ बिशाल और ऊंचे चन्दनकेवृक्ष तथा चम्पेके वृक्षों और कोकिलाओं के शब्दोंसे वह पर्वत अति शोभितभया ११५ और मद वाले कोकिलाओं के शब्दों को सुनकर देवताओं की स्त्रियों के मनमें कामदेवका प्रादुर्भावभया ११६ निदान हिमाचल पर्वत बहुत से पुष्पोंवाले वृक्षोंसे अति शोभितभया ११७ और सुन्दर और मनको हरनेवाला वायु पाटला कदम्ब और अर्जुनवृक्षोंकी गन्धकोलिये बहनेलगा ११८ फूलेहुये कमलों से रक्तवर्णवाली बावड़ियोंकी अति शोभाभई और उनकेतटके ऊपर शब्द करतेहुये हंसोंकी पंक्ति दृष्टिगोचर होनेलगी ११९ उस पर्वतके सब शृंगोंपर भ्रमरों की पंक्ति बकुलवृक्षों को सेवन करनेलगी और वे सब वृक्ष सुन्दर पुष्पोंसे प्रफुल्लित होगये १२० निदान सब वृक्ष पुष्पों से चित्रितहो अनेक प्रकारकेपक्षी उनपर बासकरनेलगे १२१ इसप्रकार उसशोभित कालमें जब सब इकट्ठेहुये तब

अनेक प्रकारके बाजों से युक्त ब्राह्मण १२२ आके पार्वती को बिवाह के लिये गहनों से भूषितकर पुरमें ले गये १२३ ब्रह्माजी बोले कि पश्चात् मैंने शिवजी से यह कहा कि अब मैं उपाध्यान पदमें स्थितहो अग्निमें घृत को होमताहूं १२४ इसलिये मुझे आज्ञा दीजियेकि मुझको अब क्या कर्त्तव्यहै यहसुनके देव देव जगत्पति शंकरने मुझसे कहा १२५ कि हे सुरेशान आप अपनी इच्छापूर्वक कर्मकरो और हे ब्रह्मन् हे जगद्विभो मैं आपके वचन को मानूंगा १२६ तब मैंने जल्द कुशाओं को ले शिव और पार्वती के हाथों को योगबंधनसेबांधा १२७ अग्निदेव मूर्त्तिमान्हो अंजली बांध के स्थितहुआ और मूर्त्तिमान् वेदके महामंत्रोंसे १२८ यथोक्तविधि से होमेहुये घृतका भोजन किया पश्चात् ब्रह्माजीने प्रकाशित हुये अग्निकी प्रदक्षिणा शिवजी को करवाके १२९ प्रकृष्ट अंतरात्मासे शिव और पार्वती का हस्त बंधनछुटाया १३० जब शिवजी का बिवाह काल होगया तब सब देवते और ब्राह्मण शिवजी को प्रणाम करनेलगे १३१ पर शिवजीके बिवाहके वृत्तांत को किसीने अच्छीतरह न जाना हे मुनिजनो यह सब स्वयंवर का आख्यान और महादेव का बिवाह तुम्हें सुनादिया १३२॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसंवादेउमा शंकरविवाहनामपंचत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि इसप्रकार अतुल पराक्रमवाले शिवजीका जब विवाहप्रवृत्तहुआ तब इंद्रआदिकदेवते अतुल हर्षको प्राप्तहुये १ और बांछित वाणियोंसे शिवको प्रणामकर कहनेलगे कि हे पर्वतलिंग और पार्वतीश आपको नमस्कार है २ पवन सरीखे वेगवाले विरूप अजित क्लेशकेनाशक और शुभसम्पदा के देने वाले आपको नमस्कारहै ३ नील शिखण्ड और अम्बिकाकेपति आपको नमस्कारहै और पवनरूप और शतरूप आपको नमस्कारहै ४ भैरवरूप विरूपनयन और हजारनेत्रों और हजार चरणोंवाले आपको नमस्कारहै ५ वेद वेदांगरूपी आप त्रिलोकीकेनाथ और पशुलोक में रतको नमस्कार है ६ पीड़ाको हरनेवाले यज्ञके शिरके नाश करनेवाले और सब क्लेशको हरने वाले आपको नमस्कारहै ७ इन्द्रका विष्टंभ करनेवाले श्रेष्ठ तथा नेष्ठ सब पुरुषोंके अधिपति और शमनरूप आपको नमस्कारहै ८ जलाशयमें लिंगवाले युगका अन्तकरनेवाले कपालकी मालाको धारण करनेवाले और कपालसूत्रको धारणकरनेवाले आपको नमस्कार है ९ दंष्ट्री गदी और भगदेवताके नेत्रको गिरानेवाले और पूषाके दांतोंको हरनेवाले आपको नमस्कार है १० और पिनाक शूल खड्ग मुद्गरको धारणकरनेवाले और अमलरूप आपको नमस्कारहै ११ कालको नाश

करनेवाले पर्वतमें वास करनेवाले और सुवर्णकी बेत
वाले और कुण्डलोंको धारण करनेवाले आपको नम-
स्कारहै १२ योगियोंमें गुरुरूप और चन्द्रमा सूर्य्यरूपी
नेत्रोंवाले और मस्तकमें नेत्रवाले आपको नमस्कारहै
१३ श्मशानके पति और श्मशान में वरको देनेवाले
देवताओंके पति और असुररूप आपको नमस्कारहै
१४ सैकड़ों बिजलियोंके तेजकेसमान हासवाले और
पार्वतीकेपति साधुरूप जटिल और ब्रह्मचारी आपको
नमस्कारहै १५ वृषभमुण्ड और पशुके पति और जल
में स्थित होनेवाले और योग ऐश्वर्यके देनेवाले आप
को नमस्कारहै १६ शान्त सूक्ष्म प्रलय और उत्पत्ति-
कारी अनुग्रह कर्त्ता और स्थिति कर्त्ता आपको नम-
स्कारहै १७रुद्र वसु आदित्य अश्विनीकुमाररूप साध्य-
देव और बिश्वदेव आपको नमस्कारहै १८ आपशर्व
उग्र शिव वर देनेवाले और भीमरूप सेनाके पति और
पशुपतिको नमस्कारहै १९ महादेव चित्र बिचित्र प्र-
धान प्रमेय और कार्य कारणरूप पुरुषरूप २० पुत्रकी
इच्छा करनेवाले और पुरुष संयोगसे प्रधान गुणकारी
आपको नमस्कार है २१ सर्वदा पुरुष और माया को
प्रवृत्त करनेवाले कृताऽकृतके कर्त्ता और फलयोग के
कर्त्ता आपको नमस्कारहै २२ कालज्ञ सर्वत्र नियमकारी
गुणों को विषम करनेवाले और वृत्ति को देनेवाले
आपको नमस्कार है२३ हे देवदेवेश हे भूतभाविन् हे
प्रभो आप को नमस्कार है हमारा कल्याण करो २४

इस प्रकार वह उमापति और जगत्पति देवस्तुत हुआ देवताओं से बोला २५ कि हे देवतो मैं तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हुआ आपको जो चाहिये सो वरमांगो मैं देऊंगा इसमें संदेह नहीं २६ तब वे सब देवते नम्रहो के शिवजीसे कहनेलगे कि हमको आप यह वरदें २७ कि जब हमको कुछ कार्यहो तब हमको इच्छित फलमिले ऐसेही होगा कहके और उन देवताओंको बिदा करके २८ शिवजी महाराज अपने गणों समेत बनको चले गये २९ जो पुरुष शिवके इस उत्सवका गान करेगा वह गणेशजीके समान देहको प्राप्तहो सुन्दर बुद्धिवाला होवेगा ३० जो कोई ब्राह्मण इस स्तोत्रको सुनेगा अ-थवा पढ़ेगा वह सर्वलोकोंमें प्राप्त होनेवाला पुरुष दे-वताओंसे पूजित होवेगा ३१ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसंवादे सदाशिवस्तुतिनामषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि जब शिवजी बनकोगये और इन्द्र अपने स्थानको चलेगये तब क्रूर कामदेवने महादेव को बशमें करनेकी इच्छाकी १ और उस दुरात्मा कुलाधम और सब मनुष्यों को कँपानेवाले ऋषियों को विघ्न क-रनेवाले और व्रतोंसहित नियमान और व क्रांजयरूप रतिकेसंग आयेहुये कामदेव को देख २। ३ वह सुरेश्वर शिवजी जानने की इच्छाकरके तीसरे नेत्रसे देखातो ४

शिवजी के नेत्रसे सैकड़ों लटाओंवाला अग्नि निकस
कर बस्त्रों समेत तिसकामदेव को जलानेलगा ५ तब
वह लोकको जलाने वाला आपही हुआ पीड़ितहोके
करुणा सहित शिवको प्रसन्नकर पुकारनेलगा ६ और
भस्महोके पृथ्वीपर गिरपड़ा ७ पतिकी यह दशादेख
उसकी स्त्री दुःखितहो करुणा सहित बिलापकरनेलगी
तब उसको दुःखित देख पार्वती ८ उसके दुःखको जा-
नके समझानेलगीं ९ और कहनेलगीं कि हे भद्रे यह
तो अब दग्धहोगया परन्तु अब फिर इसकी उत्पत्ति
तेरेही से होवेगी १० ब्रह्माजी बोले कि कामदेवकी स्त्री
प्रीतियुक्त और क्लेशरहित हो चलीगई ११ और वह
वृषध्वज महादेव कामदेव को दग्ध करके हिमाचल प-
र्वतकी १२ अनेकगुफाओंसे रमणीक पद्मके बगीचों एवम्
१३ विद्याधर गन्धर्व तथा अप्सरा आदिकों से सेवित
अनेक पवित्र और मनोहर देशोंमें पार्वतीकेसंग रमण
करनेलगे १४ अति हर्षको प्राप्तहो शिवजी महाराज
देव इन्द्र मुनि यक्ष सिद्ध गन्धर्व विद्याधर दैत्य मुख्य
इत्यादिक के संग उस पर्वत में नाचनेलगे १५ और
गन्धर्व और सुवेशवाली अप्सरा इत्यादिक गानकरने
लगीं एवम् श्रेष्ठ ब्राह्मण उनका ध्यान और स्तुति क-
रनेलगे १६ इसप्रकार महादेवजी इन्द्रके तुल्य पराक्रम
वाले अपने गणोंसहित पार्वती की प्रीतिबश उसपर्वत
पररहे १७ ऋषियोंने पूछा कि हे ब्रह्मन् पार्वती के संग
महादेवजी ने वहां क्या किया यह सुननेकी हम इच्छा

करते हैं १८ लोमहर्षणजी बोले कि ब्रह्माजीने यों व-
र्णन किया है कि शिवजी महाराज अपने गणों सहित
पार्वती के संग अनेक हास्य करतेरहे १९ और चन्द्रमा
को मस्तकमें धारणकरनेवाले शिवजी और पार्वती दोनों
अनेक कामरूप धरके अनुभावों से रमणकरतेरहे २०
एक समय पार्वती ने मेना नामवाली अपनी माताको
सुवर्ण के आसनपर बैठे देखा २१ और मेना ने आई
हुई पार्वती को देख अति सुन्दर आसनपर बैठाल २२
बोली कि हे पुत्री तेरा आगमन कैसेहुआ २३ तेराभर्त्ता
दरिद्री है और तूभी दरिद्री के संग रमणकरती है जैसे
दरिद्रीहोतेहैं तैसेही तूभी निराश्रय है २४ हे शुभे जैसे
तेरापति है तैसेही तूभी क्रीड़ा करती है २५ इसप्रकार
माताके वचन सुन पार्वती उदास न हुई और २६ क्षमा
केबश उसको कुछभी न कहा पर क्रोधसेपूरितहो शिवजी
के आगे जा कहनेलगीं २७ कि हे भगवन् देवदेवेश
इसपर्वतपर मैं न बसूंगी कहीं अन्य स्थानमें बासकरो
२८ शिवजी ने पूछा कि हे पार्वती सर्वदा तो तू मेरेही
संग रहती है और अन्य जगह कभी मन नहीं करती
२९ पर अब तू आपही अन्य स्थानका बास क्यों ढूं-
ढ़ती है हे शुचिस्मिते यह मुझसे कहो ३० पार्वती क-
हनेलगीं कि हे देवेश पिताके घर मैं गई थी माता ने
मुझे देखके ३१ और आसनादिकसे मेरा पूजन करके
मुझसे कहा ३२ कि हे उमे तेराभर्त्ता सदा दरिद्रियोंके
संग क्रीडाकरताहै देवताओंकेसंग कभी नहींकरता ३३

इसलिये हे शिवजी महाराज इन अपने गणों के संग जो आप क्रीड़ाकरते हो यह रमण मेरी माता को नहीं सुहाता ३४ ब्रह्माजी बोले कि शिवजी ने पार्वती को हास्य कराने के लिये कहा कि हे पार्व्वती ऐसाही है इसमें संदेह नहीं तुझे क्यों क्रोधहुआ ३५ में बक्लों के बस्त्रों को धारण करने वाला नग्न रहनेवाला और श्मशान में बासकरने वाला हूँ ३६ मेरे कोई मकान भी नहीं है केवल पर्वतों की गुफाओं में मेराबास है ३७ हे कमलनयनी मैंतो नग्नगणोंके संग रहताही हूं हे देवि तू क्रोधमतकर तेरीमाता ने कहा सो ठीकहै ३८ प्राणियों के माता के समान इस पृथ्वी में कोई बन्धु नहींहै ३९ पार्वतीजी कहनेलगीं कि हे देव हे सुरेश्वर मुझको बन्धुओं के साथ कुछ कृत्यनहीं है आप ऐसा करो कि जिसमें हमारा बास अन्य जगहहो ४० ऐसे पार्वतीके वचन सुन महादेवने हिमवान् पर्वतको त्याग और अपनी भार्य्या पार्वती और अपने गणों युक्त सुमेरुपर्वत में गमनकिया ४१ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूसंवादेउमाशंकरयोर्हिमवान्परित्यागनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अरतीसवां अध्याय॥

ऋषियों ने पूछा कि हे ब्रह्मन् पहले बैवस्वत अंतर में प्रचेताके पुत्र दक्षकी यज्ञका बिनाश क्यों हुआ १ और सर्वात्मक विभू शिवने पार्वतीके अपराधको जान

के क्रोधवश अतुलपराक्रमवाले दक्षके यज्ञका कैसे बि-
नाशकिया २ यह आप हमसे विस्तार पूर्वक कहो ३
ब्रह्माजी बोले कि हे विप्रो जैसे महादेव ने क्रोधकरके
पार्वती की प्रीति बश यज्ञ विध्वंसकिया सो मैं तुम्हारे
आगे वर्णन करताहूँ ४ हे द्विजश्रेष्ठो सुमेरु पर्वतमें ज्यो-
तिष्ठनामवाला एक त्रैलोक्य पूजित शृंगहै और वह सब
रत्नोंसे भूषित ५ अप्रमेय अनाधृष्य और सब लोकोंसे
नमस्कार कियाजाताहै तिस पर्वतके सर्वधातु विभूषित
तटपर महादेवजी ६ स्थितहुये और पार्वती भी नित्य
शिवजीके समीप स्थित रहनेलगीं ७ महान् आत्मावाले
आदित्य महान् पराक्रमवाले वसु महात्मा और वैद्यों
में श्रेष्ठ अश्विनीकुमार ८ गुह्यकोंसे युक्त और यक्षोंका
राजा श्रीमान् कैलासमें वास करनेवाला कुबेर राजा ९
और शुक्रजी भी महात्मा शिवकी उपासना करनेलगे
और सनत्कुमार आदि परमऋषि १० अंगिरस आदि
देवर्षि विश्वावसु गन्धर्व नारद और पर्वत ऋषि ११
और अप्सराओंके गण आये अनेक प्रकारकी सुगन्धों
को बहानेवाला और सुखको देनेवाला वायु चलनेलगा
और पुष्पोंसे युक्तहुई सब ऋतु नक्षत्र चन्द्रमा विद्या-
धर और तपरूपी धनवाले सिद्ध १२ पशुपति महादेव
की उपासना करनेलगे अनेक प्रकारके रूपोंको धारण
करनेवाले जीव १३ और राक्षस महाबलवाले पिशाच
और अनेकप्रकारके रूप और आयुधोंको धारण करने
वाले महादेवके अनुचर महादेवजीकी आज्ञामें स्थित

हुये १४ और अपने तेज करके दीप्तमान् हुआ नन्दी-
श्वर शूलको ग्रहणकर शिवजीकी आज्ञामें स्थितहुआ
१५ एवम् सब नदियोंमें श्रेष्ठ और सब तीर्थों के स-
मान जलवाली गंगाजीभी शिवकी उपासना करनेलगीं
१६ इस प्रकार शिवजी महाराज सुरर्षियों और देव-
ताओंसे पूजित वहां स्थित भये १७ एक समय दक्ष
नाम प्रजापतिने अनेक बिधानोंसे यज्ञका प्रारम्भ किया
१८ और इन्द्र आदि सब देवते उसकी यज्ञमें प्राप्त
होनेके लिये इकट्ठे होकर १९ प्रकाशित बिमानोंमें बैठ
के गंगाजीके द्वारपर प्राप्तहुये २० और गन्धर्व और
अप्सराओं और अनेक प्रकारके ऋषियों से युक्तधर्म
करनेवालों में श्रेष्ठ दक्ष राजा को २१ सब पृथ्वीवासी
आकाशवासी और स्वर्गलोकवासी अंजली बांध के
प्राप्तहुये और प्रजापतियोंकी उपासना करनेलगे २२
आदित्य रुद्र साध्य और मरुद्गण यज्ञका भाग लेने को
विष्णुके संग आये २३ और मासतक उपवास करने
वाले आज्यप दोनों अश्विनीकुमार अनेक प्रकारके दे-
वताओंके गण २४ और अन्य भूतग्रामचतुर्विध जरा-
युज अंडज स्वेदज और उद्भिज २५ सबप्राणी निमंत्रित
करके जहां बुलायेगये देवते और महर्षि बिमानोंमें बैठे
हुये ऐसे प्रकाशित हुये कि जैसे अग्नि २६ जब इस
प्रकार सब आचुके तब दधीचिऋषि क्रोधमें युक्तहोके
बोले कि नहीं पूजनेलायकोंकी पूजा करनेसे और पूजा
करने लायकवालोंकी न पूजा करने से २७ मनुष्य म-

हान् पापको प्राप्त होताहै इसमें संदेह नहीं ऐसे कहके वे ऋषि फिर दक्ष से बोले कि २८ इस कर्म में पशुपति प्रभु शिव पूजने लायक हैं २९ दक्ष कहनेलगा कि हे ऋषि शूल हाथमें धारण करनेवाले और कपर्दी ऐसे ग्यारहरुद्र मेरे स्थान पर आये हैं अन्य महेश्वरको मैं नहीं जानता ३० दधीचि बोले कि मैं शिवजीसे उपरांत किसी को नहीं समझताहूं ३१ इसलिये दक्षका महान् यज्ञ सफल न होवेगा ३२ दक्ष कहनेलगा कि इस यज्ञमें सुवर्णके पात्रमें समग्र मंत्रविधिसे अज और प्रतिम विष्णु भगवान्का भागहै शिवजीका इस यज्ञमें भाग नहीं है ३३ हे दधीचि जगत्के प्रभु विष्णु भगवान्को देवताओंने नित्य यज्ञका भागदियाहै इसलिये मैं विष्णुके लिये यज्ञभागदूंगा और शिवके लिये नहीं ३४ इधर देवताओंको जातेहुये देखके पार्वती अपने पति पशुपति देवसे कहनेलगीं ३५ कि हे भगवन् ये इन्द्र आदिक देवते कहांजाते हैं हे तत्त्वज्ञ आप इसका तत्त्व कहो मुझे यह बड़ा आश्चर्य है ३६ महादेवजी कहने लगे कि दक्षनाम वाला महाभाग और उत्तम प्रजापति अश्वमेध यज्ञ करता है इसलिये देवते वहां जाते हैं ३७ पार्वतीने कहा हे महाभाग इस यज्ञमें आप क्यों नहीं जाते ३८ शिवजी कहनेलगे कि हे महाभागे यह यज्ञ उन्हीं देवताओंसे अनुष्ठितहै सब यज्ञोंमें मेरा भाग कल्पित नहीं है ३९ हे बरबार्णिनि देवता मुझको यज्ञधर्म से यज्ञभाग नहीं देते ४० पार्वती कहनेलगीं

कि हे भगवन् आप सब देवताओंमें अधिक तेजवाले
अजेय और यशवालेहो ४१ इसलिये हेमहाभाग इस
यज्ञभागके निषेधसे मुझको अति दुःख होता है और
मुझे महान् संदेहहै ४२ ऐसा कौन दान नियम अथवा
तप मैं करूं कि मेरे पति अब यज्ञके भागको प्राप्त होवें
४३ इस प्रकार कहतीहुई पार्वतीको शिवजी जान फिर
क्षोभको प्राप्तहुई तिसके प्रति शिवजी बोले कि हे देवि
हे कृशोदरि यह क्या वचन तूने कहा ४४ हे विशालनेत्रे
ध्यान करके मैं सब कुछ जानताहूं और सबसंत मेराही
ध्यान करते हैं ४५ हे प्रिये तेरे मोह से अब मैंने सब
देवते और यज्ञ शिक्षित करदिये हैं और मुझ यज्ञेश
को सामवेदके जाननेवाले नित्य गाते हैं ४६ सब ब्रा-
ह्मण मेरी स्तुति करते हैं और यज्ञमें मेरेही भाग की
कल्पना करते हैं ४७ पार्वती कहनेलगीं कि हेभगवन्
मुझ स्त्रीके आगे आप अपनी आत्माकी बड़ाई करते
हो इसमें संदेह नहीं ४८ शिवजी बोले हे बरबर्णिनि
मैं अपनी आत्माकी बड़ाई नहीं करता हे बरारोहे मैं
भाग लेनेके वास्ते किसको रचूं ४९ इसप्रकार शिवजीने
प्राणप्रिया अपनी पत्नी से कहकर क्रोधरूपी अग्निसे
एक गणको रचा ५० और उससे कहनेलगे कि तू दक्ष
की यज्ञका विनाशकर ५१ निदान यह शिवजीका गण
क्रोधयुक्तहो पार्वतीके क्रोधको दूर करनेवाला बीरभद्र
नामसे प्रसिद्ध हुआ ५२ और उसने अपने शरीरके
रोमोंसे अनेक गणोंको रचा ५३ जो रुद्रके पीछे रहने

वाले और उनके समान पराक्रमवाले हुये ५४ वे सब रुद्रके तुल्य पराक्रमवाले अनुचर शीघ्रही सैकड़ों हजारों होगये ५५ और किलकिला शब्द करनेलगे जिससे आकाश पूरित होगया और उस महान् शब्द से सब देवता त्रस्तहोगये ५६ पर्वत व पृथ्वी कांपनेलगी अतितेज वायु चलनेलगा ५७ अग्नि दीप्त न हुआ सूर्य का प्रकाश मध्यमहोगया ग्रह नक्षत्र और तारे अप्रकाश होगये ५८ और ऋषि देव दानव सब छितरबितर होगये इसप्रकार जब अँधेराहोगया तब ये सब गणसबको दग्ध करनेलगे ५९ और वृक्षों को उखाड़नेवाली घोर वायु चलनेलगी वे शिवकेगण अति घोर शब्द और मर्दन करते ६० वायुवेग और मनवेगके समान दौड़ने और यज्ञके पात्रोंको और मकानों को चूर्ण करनेलगे ६१ अन्न आदि अनेक दिव्य पदार्थों की राशि जो पर्वतों के समानथी उन्हें उस समयढकी न देख ६२ और घृत और खीर की कीच और शहदसे दिव्य खांड़की रेतीवाली दूधकीनदी ६३ गुड़के सुन्दर समूह अनेक प्रकारके उच्चावचमांस और अनेक प्रकारके ६४ दिव्य लेह्य और चोष्यपदार्थोंको वे महादेवके गण अनेक प्रकार के मुखोंसे भक्षणकरने और फेंकनेलगे ६५ कोई सब प्राणियों को भयकरानेवाले शब्द करनेलगे और कोई रुद्रकेसमान कोपवाले महाकाय और कालरूपी अग्नि के समान उपमावाले ६६ पर्वतोंको क्षोभकराते हुये और सबोंको डराते हुये अनेक प्रकारकी क्रीड़ा

करते और पुरकी स्त्रियोंको फेंकते हुये ६७ सब गण रुद्रके कोपसेयुक्त विचरनेलगे और देवताओंसे रक्षित दक्षप्रजापतिके यज्ञस्तम्भको शीघ्र भद्रकाली प्राप्तहुई ६८ तब इन्द्र देवता और दक्षप्रजापति अंजली बांध के वीरभद्रसे पूंछनेलगे कि तू कौनहै ६९ वीरभद्रबोले कि मैं देव नहींहूँ और न कोई दैत्यहीहूँ मैं यहां न कुछ भोजनकरने आयाहूँ और न इन देवताओंकी क्रीड़ाही देखने आयाहूँ ७० हे देवतो मैं दक्षकी यज्ञका विनाश करने आयाहूँ और वीरभद्र मेरा नामहै मैं रुद्रकेकोप से उत्पन्न हुआहूँ ७१ और यह भद्रकाली रुद्रके कोप से निकसीहै और महादेवकी प्रेरीहुई यहां यज्ञकेसमीप आईहै ७२ हे राजेन्द्र तू देव देव उमापति शिवकी शरणहो रुद्रका क्रोध श्रेष्ठ है और तेरे परिचारकभी श्रेष्ठहैं ७३ अब त्यागेहुये और जहां तहां से उखाड़े हुये यज्ञस्तम्भके ऊपर मांसकी इच्छा करनेवाले गीध गिरतेहैं ७४ पक्षिपातहोने लगरहेहैं और सैकड़ों गीदड़ बोलनेलगे हैं निदान वह दक्ष राजाका यज्ञ शिव केगणोंसे वध्यमानहो ७५ मृगरूपको धारणकर और अलक्षित होके आकाश में भागा ७६ और वीरभद्र धनुषको ग्रहणकर और बाणको चढ़ाके उसके पीछे दौड़ा तब अमित पराक्रमवाले उस गणके तेजसे ७७ ऊर्ध्वकेश अतिरोमांग और सेनाके अन्त करनेवाले विकराल और कालेवर्णवाले रक्त वस्त्रोंको पहिने ७८ दूसरेगणने उसयज्ञको ऐसे दग्धकिया कि जैसे तृणको

अग्निदग्ध करे सब देवता भयभीतहुये दशोंदिशाओं में भागे ७९ और भयसे पृथ्वी सातोंद्वीप और देवलोक व्याप्तहोगये ८० यह दशादेख दक्ष महादेवजीकी पूजा करके बोला कि हे प्रभो सब देवता यज्ञभाग देवेंगे ८१ और हे देवेश्वर आप इन गणोंका संहारकरो ८२ हे शिवजी महाराज येदेवता और हजारोंऋषि सबआपके क्रोधकेकारण शांतिको नहीं प्राप्तहोते ८३ और आपके क्रोधसे जो यह स्वेदज पुरुष पैदाहुयेहैं सो सब मनुष्यों को दुःख देरहे हैं ८४ हे प्रभो इन सबों के तेज और स्थितज्वर को धारण करनेको यह पृथ्वी समर्थ नहीं है ८५ हे पिनाकधृक् देव सब देवता यह कहके गयेहैं कि शिवके भागकी तुम कल्पनाकरो ८६ ब्रह्माजी ऋ-षियों से बोले कि ऐसा कहनेसे शिव परमप्रीति को प्राप्तहुये और दक्षभी अपने मनसे महादेवकी शरण को गया ८७ फिर दक्षप्रजापति प्राणाऽपान वायुको रोक देवतों और पितरों का पूजन कर अंजली बांध ८८ भयभीत शंकित और विभ्रष्टहुआ और नेत्रों में आंशुभरे शिवसे बोला ८९ कि हे भगवन् जो आप मुझपर प्रसन्नहुयेहैं और जो मैं तुम्हारा प्रियहूँ तो मैं ग्राह्य हूँ अथवा अग्राह्य हूँ ९० परन्तु जो इस यज्ञमें दग्ध कियाहै भक्षण कियागया है पियागया है नाशा गया और चूर्णित कियागया ९१ और दीर्घकाल में यत्नसे सिद्ध कियागया है सो हे महेश्वर आपके प्रसादसे सब सम्पूर्ण होजाय ९२ दक्षके वचन सुन

धर्म्माध्यक्ष भग नेत्रहर्त्ता त्र्यम्बक महादेवजी ने एवमस्तु कहदिया ६३ और दक्षप्रजापतिने साष्टांग दण्डवत् करके शिवजीसे वरदानले शिवका आठ अधिक सहस्रनाम स्तोत्र जपा ६४ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्वादेदक्षयज्ञ विध्वंसनन्नामअष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे द्विजोत्तमो दक्षप्रजापति शिव के ऐसे कार्यको देख अंजली बांध स्तोत्र कहनेलगा कि १हे देवदेवेश आपको नमस्कारहै हे बलसूदन हे देवेंद्र हे बलज्येष्ठ देव दानव पूजित आपको नमस्कार है २हे सहस्राक्ष हे विरूपाक्ष हे त्र्यम्बक हे यक्षाधिपप्रिय आप चारों ओर हाथ पैरोंवाले और सब जगह अक्षि शिर औरमुखवाले हो३ लोकमें आप सबजगह श्रुतिमान्हो और सब जगह आवृत होके ठहरतेहो आप शंकुकर्ण महाकर्ण और कुम्भकर्णहो और समुद्रमें स्थान रखने वालेहो ४ आप गजेन्द्रकर्ण गोकर्ण और पाणिकर्ण हो और आप शतोदर शतावर्त्त शतजिह्व और शतानन हो आपको नमस्कार है ५ गायक गान करते हैं और एक कर्मवाले आपकाही पूजन करतेहैं देव दानव गोप्ता भी आपहीहो और शतक्रतु मूर्त्तिमान्हो ६ और महा मूर्त्तिहो आप समुद्रहो और सबदेवता आपमें ऐसेस्थित रहते हैं जैसे गौओं के थानमें गो ७ मैं शरीरमें सोम

अग्नि गणेश आदित्य विष्णु ब्रह्मा वृहस्पति एक को भी नहीं देखता ८ क्रिया कारण कर्त्ता कार्य और असत्त्व सत् असत् सब आपहीके गुणहैं ९ भवके लिये शर्व रुद्र वरद पशुपति अंधकघाती सबोंको नमस्कार है १० हे त्रिजटावाले हे त्रिशीर्ष हे त्रिशूलधारी हेत्र्यंबक हे त्रिनेत्र हे त्रिपुरघ्न आपको नमस्कार है ११ हे चण्ड हे मुण्ड हे बिल्वदण्डधर हे दण्डिन् हे शंकुकर्ण हे पिण्डिखण्ड आपको नमस्कारहै १२ हे ऋद्धि हे दंडकेश हे शुष्क हे विकृत हे बिलोहित हे धूम्र हे नीलग्रीव आपको नमस्कारहै १३ हे अप्रतिरूप हे बिरूप हे शिव हे सूर्य हे सूर्यसूर्यपति हे सूर्यध्वज हे पताकी आपको नमस्कारहै १४ हे हिरण्यकृतचूड़ हे हिरण्यपति हे शब्दवान् हे चण्ड हे श्मशाननिरत आपको नमस्कारहै १५ हे अस्तुत्यस्तुत्य और स्तूयमान हेकिलकिलायिन् और शेषनागकी मालावान् शयित और शित आपको नमस्कार है १६ हे धारमाण हे मुंजरूप हे कुटिलरूप हे नर्त्तनशील हे शृंगबजानेवाले आपको नमस्कारहै १७ हे बाह्यरूप हे हारलब्ध और गीतबादित्रकारी आपको नमस्कार है १८ हे ज्येष्ठ हे श्रेष्ठ हे बल हे प्रमथन हे कन्यरूप हे क्षय हे उपक्षय और उग्र आपको नित्य नमस्कारहै १९ चतुर्दश बाहुरूप कपालहस्त सितभस्मप्रिय आपको नमस्कारहै २० हे बिभीषणरूप हे भीम हे भीष्मव्रतधर हे पवनसे ऊपर को मुख करनेवाले हे खड्ग सरीखी जिह्वावाले उग्रदंष्ट्र

वाले आपको नमस्कार है २१ पक्ष मास और वर्षरूप ऐसे आपको और गन्धर्वों के प्रिय आपको नमस्कार है २२ हे अघोर घोररूप हे घोरघोरतर हे शिव शांत रूप और शान्ततर आपको नमस्कारहै २३ हे बुद्धरूप हे शुद्धरूप हे विभागप्रिय आपको नमस्कारहै २४ हे पंच हे पतंग हे सांख्यपर हे चंडैकघुष्ट हे यमघण्ट हे घंटिन् आपको नमस्कार है २५ सहस्रशत घंटावाले और घंटाभारप्रिय आपको नमस्कारहै २६ हेप्राणदंड रूप हे नित्यरूप हे लोहितरूप आपको नमस्कारहै २७ हे कुहूकाररुद्र हे कुरुकार प्रिय हे बटको धारण करने वाल ह गिरिवृक्षप्रिय आपको नमस्कारहै २८ हे गृध्र मांस शृगालके लिये तारक और भवकेलिये यज्ञाधि-पति सुत और प्रकृत आपको नमस्कारहै २९ हे यज्ञ वाराहदत्त हे तथ्यातथ्य और तटरूप हे नद्य हे तटिन् पति आपको नमस्कारहै ३० हे अन्नद हे अन्नपति और हे अन्न उपजानेवाले हे सहस्रशीर्ष हे सहस्र चरणों वाले आपको नमस्कारहै ३१ हे सहस्रउद्यतशूलवाले हे सहस्रनयन हे बालार्कवर्ण हे बालरूपधर आपको नमस्कारहै ३२ हे बालार्करूप हे बालक्रीड़नक हे शुद्ध हे बुद्ध हे क्षोभण हे क्षय आपको नमस्कारहै ३३ हे तरं-गांकितकेश हे मुक्तकेश हे षट्कर्म्म तुष्ट और हे द्विज कर्म्मनिरत आपको नमस्कार है ३४ हे वर्णाश्रमों के विधिवत् पृथक् धर्म्मको प्रवृत्त करनेवाले हे घोष हे घोष्य और कलकल आपको नमस्कार है ३५ हे श्वेत

पिंगलनेत्र हे कृष्णरक्तेक्षण हे धर्म्मकामार्थ मोक्षरूप क्रथ और क्रथन आपको नमस्कारहै ३६ हे सांख्य हे सांख्यमुख्य हे योगाधिपति हे रथ्यविरथ्य हे चतुष्पथ निरत आपको नमस्कारहै ३७ हे कृष्णाजिनोत्तरीय हे षाड्यज्ञोपवीतिन् हे ईशान हे वज्रसंघात और हे हरिकेश आपको नमस्कारहै ३८ हे त्र्यम्बक हे विश्वनाथ हे व्यक्ताव्यक्त हे कालचक्र हे कामद हे धृतनिकन्दन आपको नमस्कारहै ३९ हे गन्धर्व्व गर्व्वगर्वित हे गर्वघ्न सद्योजात हे उन्मादन शतावर्त्त हे गंगातोयार्द्र हे मर्द्धज आपको नमस्कारहै ४० हे चन्द्रावर्त्त हेयुगावर्त्त हे मेघावर्त्त हे युगावर्त्तभर्त्ता हे अन्नद हे श्वघ आपको नमस्कार है ४१ आपही अनुश्रेष्ठा हो आपही भोक्काहो सूर्य्य वा अग्निके समान प्रकाशवालेहो और जरायुज अण्डज स्वेदज और उद्भिज भी आपही हो ४२ हे देवदेवेश आपही भूतग्रामचतुर्विधहो और आपही चराचरके स्रष्टा और प्रतिहर्त्ताहो ४३ आपही ब्रह्मा विश्वेश और ब्रह्मविदोंके ब्रह्महो आपही सबके परम योनिहो अमृतहो और ज्योतिषोंके निधिहो ४४ और ब्रह्मवादी आपको ऋक् साम ओंकारादि कहते हैं और आपही अग्निहो ४५ सामवेदके जाननेवाले और ब्रह्मवादी आपही का गुणगातेहैं और ऋक् साम और अथर्ववेदों में प्रभुहो ४६ ब्रह्मके जाननेवालों और कल्पोपानिषद्गणों द्वारा आपही पढ़ेजातेहो और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और अन्य वर्णाश्रम ४७

तथा भूमि आश्रम संघ विजली गर्जना संवत्सर ऋतु मास मासार्द्ध ४८ कला काष्ठा निमेष नक्षत्र युग विषाण ककुद् और पर्वतोंके शिखर सब आपहीहैं ४९ और मृगोंकेपति आपसिंहहो सर्पोंमें आप तक्षकहो समुद्रों में आप दूधका समुद्रहो मंत्रोंमें ओंकाररूपहो ५० प्रह-रणोंमें वज्रहो और व्रतों में सत्यहो हे देवेश आपही इच्छा राग मोह क्षमा ५१ व्यवसाय धृति लोभ काम क्रोध जय और अजयहो खट्वांगी शरीरथीं ५२ छेत्ता भेत्ता प्रहर्त्ता नेता मंता आपही हैं और दश लक्षणों संयुक्त धर्म्मात्माहो कामहो ५३ इन्द्रहो समुद्रहो सूर्य्य हो सरोवरहो और लता वनकेतृण ओषधी पशु मृग पक्षी आदि सब आपकेही रूपहैं ५४ हे भगवन् आप द्रव्य कर्म्म गुणाभहो कालमें पुष्प फलप्रदहो आदि अन्त मध्यहो गायत्रीके आकारहो ५५ हरितहो लो-हितहो कृष्णहो नीलहो पीतहो अरुणहो रुद्रहो कपि-लापतिहो कपोतहो ५६ सुवर्णरेताहो इसलिये सुवर्ण भी आपहीहो सुवर्ण नामाहो और सुवर्णप्रियहो ५७ आपही इन्द्रहो आपही यमहो आपही धनदहो और आपही अग्नि उत्फुल्ल चित्रभानु स्वर्भानु और भानु हो ५८ आपही होत्रहो होताहो हौम्यहो हुतहो विभु हो त्रिसौपर्णहो ब्रह्महो यजुर्वेदियों के शतरुद्रहो ५९ पवित्रोंमें पवित्रहो मंगलोंमें मंगलहो गिरि कोशांतरहो ब्रह्माहो जीवको प्रज्वल करनेवालेहो ६० प्राणहो तम सत्व रजोगुणहो सत्यव्रतहो और प्राण अपान समान

उदान व्यान येभी सब आपहो ६१ उन्मेष निमेष क्षैं-
यास्तम्भ लोहितांगी गदी दंष्ट्री और महावक्त्र महोदर
६२शुचिरोमा हरितश्मश्रु कटिकेश सुलोचनभी आप-
हीहो गीत वादित्र नृत्यांग गीत वादनकाप्रिय ऐसेभी
आपहीहो ६३ और मत्स्य जल जलौजन्य जड़कारक
हो विकालहो सुकालहो दुष्कालहो और कालनाशन
आपहीहो ६४ मृत्युभी आपहीहो क्षयभी आपही हो
अन्नभी आपहीहो और क्षमा करनेवालेहो सर्वतोन-
र्त्तकहो संवर्त्तकहो और मेघहो६५घण्टाकीहो घण्टकी
घण्टीहो वृडाल हो लवणोदधिहो तरणहो शरण अ-
र्थात् रक्षक हो और सब भूत अर्थात् प्राणियों के
सुतारणहो ६६ आपही धाता हो आपही विधाताहो
और सन्धाता धारण धर ऐसेउणोब्रह्म सत्य तथा ब्रह्म-
चर्य्य और आर्जव ऐसे भी आपहीहो ६७ भूतात्मा
भूतकृत् भूतभूतभव्य और विभु और भूर्भुवःस्वःइन्होंमें
रत और अग्नितक आपहीहो६८ईक्षण वीक्षण शांत
दांतदांतविनाशन ब्रह्मावर्त्त सुरावर्त्तकामावर्त्त आपको
नमस्कार है ६९ कामविनिर्हंता कर्णिकार स्रजप्रिया
चन्द्र भीममुख समुख दुर्मुख मुख आप हो ७० और
चतुर्मुख बहुमुख और रणमें अभिमुख और हिरण्यगर्भ
शकुनि धनद और विराट्पति आपहीहो ७१ अधर्म-
हा महादक्ष दण्डधर रणप्रिय गोणेत गोप्रचार और
गोवृषेश्वर वाहन आपहीहो ७२ और त्रैलोक्यगोप्ता
गोविन्द गोमार्ग्ग मार्ग्ग स्थिर स्थाणु निःकम्प और

सुनिश्चल ७३ शिखण्डी पुण्डरीकावलोकन दुर्वारण दुर्विषहा दुस्सह दुरतिक्रमभी आपहो ७४ दुर्बल दुर्द्धर नित्य मुद्धार्य जय और विजय शब्द शशांकशयन शीत उष्ण क्षुधा तृषा ज्वर ये सब आपही हो ७५ आधि व्याधि और व्याधिरूप व्याधि सत्य यज्ञ मृगव्याध और व्याधियों के करनेवाले ७६ दण्डवृक्ष कुण्ड रौद्र भागविनाशन विषप सुराप और क्षीर और अमृतप अर्थात् अमृतके पीनेवाले आपही हो ७७ और मधुप आर्य्यप सर्वप बल अबल वृषआरूढ़ होनेवाले वृषभ और वृषभलोचन आपहीहो ७८ आप वृषऐसे विख्यात और लोकोंमें लोकशंकरहो चन्द्रमा और सूर्य आपके नेत्रहैं ब्रह्मा हृदाहै ७९ अग्निषोम आपका देहहै और आप धर्म्म कर्म्म से साधित हो ब्रह्मा गोविन्द पुराने अवतार ८० ये भी आपके माहात्म्यको जाननेमें समर्थ नहीं हैं और हेशिवजी महाराज वाणीभी आपकेमाहात्म्य अर्थात् आपकी महिमा कहने में समर्थ नहीं है ८१ हे शिवजी महाराज रक्षा करने लायकोंमें मैं रक्षणीयहूँ अर्थात् आपको मेरी रक्षा करनी चाहिये और हे अनघ आपको नमस्कारहै ८२ आप भक्तोंपर दया करतेहो और मैं सदा तुम्हारा भक्तहूँ आपको हजारों पुरुष प्राप्तहोतेहैं ८३ आप समुद्रके अन्तमें ठहरते हैं और आपनित्य सबकी रक्षा करनेवालेहो ऐसे सत्वस्थ समदर्शीपुरुष कहतेहैं ८४ जो ज्योतियोंको प्रकाशकरता है तिस योगात्माको नमस्कारहै और जो सब जीवोंका

विभाग करके युगान्तमें ८५ जलके मध्यमें शयनकर-
ताहै और जिसने राहुरूप होके अमृत पानकिया है
सो आपकाही रूपहै ८६ आपही राहुरूप होके सूर्य्य
और चन्द्रमाको ग्रसतेहो अग्निरूपहो और सब देह
धारियों के शरीर में अंगुष्ठमात्र पुरुषरूप से स्थितहो
८७ हे भगवन् मुझ शरणागत की नित्य रक्षा करो
८८ आपके जिन भागोंको नित्य स्वाहा और स्वधा-
कार प्राप्तहोते हैं और जो देहमें स्थितहोके प्राणियों
को रुलाते ८९ और हर्ष कराते हैं पर आप उसमें
कुछ हर्ष नहीं मानते आपके उन रूपोंको नमस्कार है
समुद्रों दुर्गों नदियों पर्व्वतों की गुफाओं ९० चौराहे
मार्गों गलीमें आंगनों सभाओं हाथी अश्व और रथ
शालाओं जीर्णस्थानों ९१ पांचोभूतों दिशाओं और
विदिशाओंमें जो तेरे अंशहैं और चन्द्रमा सूर्य्य तारा-
गणोंकी किरणोंमें ९२ और रसातल तथा तिससे परे
आपके अंशहैं तिनको नमस्कारहै नमस्कारहै ९३ हे
भव आप सर्व्वहो सर्व्वगहो सर्व्वभूतपतिहो और सर्व्व
भूतांतरात्माहो इसलिये मैंने आपको यज्ञमें निमंत्रित
नहींकिया ९४ और हेदेव अनेकप्रकारकी दक्षिणावाले
यज्ञोंसे आपकाही पूजनकरतेहैं और आपही सबकेकर्त्ता
हो ९५ हेदेव अथवा मैं तेरी सूक्ष्ममायासे मोहित हो-
गया तिसकारण आपको निमंत्रित नहीं किया ९६ हे
देवदेवेश आप प्रसन्नहो आपही मेरे रक्षकहो आपही
गति और प्रतिष्ठाहो और तुम्हारे बिना अन्य कोई

नहीं है ऐसी मेरी मतिहै ९७ इसप्रकार दक्षप्रजापति ने महादेवकी स्तुति करके विशेषकर रमणकिया और महादेवभी प्रसन्नहो दक्षसे कहनेलगे ९८ कि हे दक्ष इस स्तोत्रसे मैं तुझसे अति प्रसन्न होगया इसलिये तू प्रसन्नहोके मेरे सन्मुखहो एकाग्र मनसे सुन ९९ कि हजार अश्वमेध यज्ञों और सौ बाजपेय यज्ञोंका फल तुझको होवेगा १०० बहुत कहनेसेक्याहै तू मेरेसमीपमें प्राप्तहोवेगा और त्रिलोकीका अधिपति होगा १०१ ऐसे कहके सर्व्वज्ञ शिवजी कहनेलगे कि हे दक्ष इस यज्ञके विघ्न होनेमें तू कछु वचन मतकह १०२ क्योंकि पहलेभी मैंने तेरायज्ञ विध्वन्स कियाथा और मुझसे फिर अब तू इसवरको ग्रहणकर १०३ कि वेद और वेदके षडंग सांख्य योगआदि सबोंका जान और देव दानवों सेभी दुश्चर तपकर १०४ हे दक्ष सब वर्णाश्रमोंसे होने में दुस्तर धर्म्मका स्थान और गूढ़ सांगोपांग तप तू कर १०५ सब वर्णाश्रमोंमें पशुपाश विमोक्षण पाशुपत व्रतहै इसलिये हे दक्ष यह सर्व्व पाप विमोचन तप मैंने तेरे आगे कहाहै १०६ और हे महाभाग इस यज्ञका जो फलहै वह सम्पूर्ण तुझको होवेगा व अपने मनकी कल्पना को त्याग १०७ शिवजी महाराजने ऐसेकहके अपनीपत्नी पार्वती और अपनेगणों समेत अमित तेजवाले दक्षको दर्शनदिया १०८ और अपने भागको यथार्थ विधिसे प्राप्तहोके अपने रचेहुये ज्वरको बहुतप्रकार से बांटदिया १०९ ब्रह्मा जी बोले

कि हे द्विजो सुनो सब भूतोंकी शांतिके लिये शिवजी ने हाथियों में तो शिखाभिताप ज्वरदिया ११० पर्वतों में शिलाजीत ज्वर हुआ जल में सिवाल ज्वर हुआ सर्प्पोंमें केंचलीरूप ज्वरहुआ १११ गौओं में खुरकी बीमारी रूपी ज्वरहुआ ऊसर रहजाना अर्थात् बीज न जमना पृथ्वीमें ज्वरहुआ ११२ दृष्टिका प्रत्यवरोधन श्वानोंमें ज्वरहुआ घोड़ोंमें रंध्रद्वारा ज्वरहुआ मयूरोंमें शिखोद्भेद ज्वरहुआ ११३ और कोकिलाओं में नेत्र रोग ज्वरहुआ इसप्रकार प्रजामें जुदा २ भेदसे अनेक प्रकारका ज्वर है ११४ शुक अर्थात् तोतों में हिचकी आना ज्वर हुआ शार्दूलोंमें श्रमरूपी ज्वरहुआ ११५ और मनुष्योंमें ज्वर नामसेही ज्वर प्रसिद्धहै यह ज्वर सबके शरीर में जन्मसमय अथवा मध्यमें प्रवेशहोता है ११६ इसप्रकार यह महादेवजीका रचा दारुणज्वर सब प्राणियों से नमस्कार करनेलायक और मान्य है ११७ और इस ज्वरकी उत्पत्तिको जो मनुष्य समाहित और एकाग्रचित्त हो सुनेगा वह सब रोगों से छूटजावेगा और मनबांछित कामनाओं को प्राप्तहोगा ११८ और दक्षके कहेहुये इस स्तोत्र का जो पाठकरेगा अथवा सुनेगा वह भी कुछ दुःखको न प्राप्तहोगा और उसकी दीर्घ आयुहोगी ११९ जैसे सब देवताओं में महादेवजी श्रेष्ठ हैं तैसेही सब स्तोत्रोंमें यह दक्षनिर्मित स्तोत्र श्रेष्ठहै १२० और यश आयु ऐश्वर्य्य पुत्र धन इत्यादिकों की इच्छावाले और विद्याकी इच्छा-

वाले पुरुषों को भक्तिसे यह स्तोत्र सुननाचाहिये १२१ दीनव्याधिसे दुःखित तथा भयादिग्रस्त और राजकार्य वाला मनुष्य इसस्तोत्रके पाठसे महान् भयसे छूटजाता है १२२ और इसी देहसे गणों का ईश्वर होके और इसलोकमें सुखों को भोगके फिर शिवलोकमें गणोंका राजा होता है १२३ जहां इस स्तोत्र का पाठ होता है वहां यक्ष पिशाच नाग विनायक विघ्न नहींकरते १२४ और जो स्त्री भक्तिसे इसस्तोत्रको सुने तो वह पितृपक्ष में अपने भर्त्ता के संग मोद करती है और इसलोकमें सुखभोगती है १२५ जो इसको सुने अथवा बारम्बार कीर्त्तन करेगा तिसके सबकार्य सिद्धहोंगे १२६ मनके विचारे और वाणीसे कहे सबकाम शिवजीके इसस्तोत्र के अनुकीर्त्तनसे सिद्धहोजातेहैं १२७ जो मनुष्य महादेव स्वामिकार्त्तिक पार्वती और नन्दीश्वर को नियम करके बलिदे और फिर भक्तिसे इन नामों का पाठकरै १२८ वह मनो वांछित फलों को प्राप्तहो मरणके उपरान्त हजारों स्त्रियों से आवृत हो स्वर्गमें प्राप्तहोताहै १२९ और सब पापों से मुक्तहोताहै इसदक्षकृत स्तोत्र का पाठकरने से मनुष्य मरणके उपरांत गणों से युक्त और देव और दानवोंसे पूज्यमान १३० वृषसे नियुक्त बिमानमें बिराजित हो रुद्रका अनुचर होजाताहै १३१ पाराशर के सुत व्यासजी महाराज ने कहा कि यह हर किसी को बताना और सुनाना कभी न चाहिये १३२ इस परमगुप्त स्तोत्र को सुनके पाप योनिवाले पुरुष

वेश्या स्त्री और शूद्रभी रुद्रलोकमें प्राप्तहोते हैं १३३ और जो मनुष्य पर्व में इसे ब्राह्मणों केलिये सुनाताहै वह ब्राह्मण रुद्रलोकमें प्राप्तहोता है १३४॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसंवादेदक्षकृतसहस्रनामस्तुतिनामएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

चालीसवां अध्याय॥

लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो वे सब मुनि इस पाप बिनाशिनी कथा को जो रुद्र क्रोधसे उत्पन्नहुई और वेद व्याससे कहीगईथी १ और जिसमें पार्वती का रोष शम्भुका दुस्सहक्रोध वीरभद्रकी उत्पत्ति भद्रकालीका सम्भव २ दक्षयज्ञ का बिनाश शम्भुका अद्भुतवीर्य्य और दक्षके ऊपर प्रसन्नता ३ रुद्रका यज्ञमें भाग और दक्षकायज्ञफल सुनके बहुत प्रसन्नहुये और बारम्बार विस्मित होके ४ वेदव्याससे इस शेष कथा को पूछनेलगे और वेदव्यासजी एकाम्र क्षेत्रका वर्णन करनेलगे ५ कि हे ब्राह्मण ब्रह्माजीसे इसकथाको सुन के ऋषिप्रशंसा करनेलगे और उनकी रोमावली खड़ी होगई ६ ऋषियों ने पूछा कि हे ब्रह्मन् महादेव का तो माहात्म्य आपने हमसेकहा सो बड़ाआश्चर्य्यहै ७ और दक्षका यज्ञ विध्वंसभी सुना पर अब आप हमारेआगे एकाम्रक्षेत्रका वर्णनकरें ८ हे ब्रह्मन् हम इसे सुननेकी इच्छा करते हैं और हम को परम आश्चर्य्यहै ९ वेदव्यासजी बोले कि उनका वचन सुन चतुर्मुखी ब्रह्मा

पृथ्वीतलमें मुक्ति देनेवाले शम्भुके उसक्षेत्र को वर्णन करनेलगे १० ब्रह्माजीने कहा कि हे मुनि शार्दूल सुनो हम बिधिसे तुम्हारे आगे कहते हैं सब पापों को हरने वाला पवित्र और परम दुर्लभ ११ कोटिलिंगोंसे युक्त और काशीजीके समान शुभ एकाम्रनाम से विख्यात और अष्टकसमान्वित वह तीर्थ है १२ हे द्विजो पहले वहां एक आंब का वृक्षहुआ था इसवास्ते तिसी नाम से वह एकाम्रतीर्थ विख्यातहुआ १३ वह तीर्थ हृष्ट पुष्ट मनुष्यों से आकीर्ण नरनारियों से समन्वित विद्वानोंके गणोंसे बढ़ाहुआ धन धान्य से समन्वित गृह गौओंके कुल इत्यादिकोंसे भूषित अनेक प्रकारके बलियोंसे आकीर्ण अनेक रत्नोंसे शोभित पुरके घरोंकी अटारियों से संकीर्ण गलियों से अलंकृत राजहंसों के समान कांतिवाले श्रेष्ठराजाओं के मकानों से शोभित शस्त्रोंके समूहसे पूरित खांहियोंसे वेष्टित सफेद लाल पीली काली और अन्य अनेक वर्णोंकी ध्वजाओं और पवनसे हिलतीहुई पताकाओं अर्थात् सूक्ष्मध्वजाओं से अलंकृत नित्योत्सवों से प्रमुदित अनेक बाजों से शब्दित १४। १८बीणा वेणु मृदंग क्षपणी आदिबाजों से ध्वनित देवताओं के दिव्य मकानों और किलेकोट से संयुक्त १६ विचित्र पूजासे सर्वत्र अलंकृत है वहां प्रसन्नमन पतलीकटिवाली २० मनोहरहार और ग्रीवा वाली कमलकेपत्तों के समान नेत्रोंवाली भारी तथा ऊंची कुचों वाली पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली

सुन्दरअलकों और नरम कपोलोंवाली तागड़ी और नूपुरोंका शब्द करनेवाली हंस तथा गजगामिनी कुचों के भारसे नईहुई और सुन्दरकेश तथा कानोंवाली फूलेहुये नेत्रोंवाली सब लक्षणों से सम्पन्न और सब आभरणोंसे भूषित दिव्य बस्त्रों को धारण करनेवाली सुन्दर और कांचनकेसमान कान्तिवाली दिव्यगन्धोंको अंगों में लगायेहुये और कानके गहनोंसे भूषित मदसे आलसवाली नित्यहँसतेहुये मुखवाली बिजलीकेसमान चमकतेहुये दन्तोंवाली लालहोठोंवाली मधुरस्वरवाली ताम्बूलसे रंजित मुखवाली और चतुर और प्रियदर्शन वाली सुलभ और प्रियवादिनी नित्य यौवनसे गर्वित और सब चरित्रोंसे मंडित अप्सराओं के समान स्त्री तहां क्रीड़ा करती हैं २१। २७ वे अंगना अपने २ घरों में मुदितरूप और यौवनसे गर्वित सुन्दर शरीरवाली दीखती थीं २८ यहां सब लक्षणों से सम्पन्न और सम्पूर्ण आभरणोंसे भूषित ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र २९ अपने २ धर्ममें निरतबसतेहैं और सुन्दर नेत्रोंवाली अन्य वेश्या भी बसती हैं ३० घृताची मेनका तिलोत्तमा उर्वशी और बिप्रचित्तिके समान कांतिवाली ३१ और बिश्वाची प्रम्लोचा के सदृश प्रियवादिनी और प्रियहास्यवाली वेश्या वहां बसती हैं ३२ सब कुशल संयुक्त सब गुणोंसे संयुक्त और नृत्यगीतमें निपुण स्त्री वहां बसती हैं ३३ हे मुनिश्रेष्ठो वे स्त्री सबस्त्रियोंके गुणों से युक्त देखने में चतुर और सुन्दर तथा प्रियदर्शन

वाली हैं ३४ जिनके दर्शनमात्रसे मनुष्य मोहको प्राप्त होजाताहै वहां कोई निर्द्धन नहीं है और न कोई किसी का वैरी है ३५ वहां रोगीभी नहीं है मलिनभी नहींहै मायावीभी नहीं है और रूपहीन तथा दुर्वृत्त और परद्रोहकारी भी नहीं है ३६ पृथ्वीमें बिख्यात ऐसे तिस क्षेत्रमें मनुष्य बसते हैं और सब सुख संचार औ सत्वसुखाहैं ३७ अनेक प्रकारके मनुष्यों से आकीर्ण और सम्पूर्ण खेती और कर्णिकार पनस चम्पा नागकेशर पाटला शोकवृक्ष बकुल कैथ अर्जुन आंब नींब कदम्ब नारंगी खैर शाल ताड़ तमाल नारियल सहोंजना ससकुम्भ कोविदार पीपल लकुट राल वृक्ष लोध देवदारु पालाश मुचुकुन्द पारिजातक कुन्द केला जामुन सुपारी कावृक्ष केतकी कनेर फूलेहुये केश मन्दार कुंदकेपुष्प अन्य जातिकेपुष्प इत्यादिके वृक्षोंसे युक्तहै और बागों में अनेकप्रकारके पक्षी बोलतेहैं ३८। ४३ फलोंकेभार से नयेहुये और पुष्पित वृक्ष दृष्ट आतेहैं कमल फूल रहेहैं और चकोर भौंरा कोकिला ४४ और मधुरशब्द करनेवाले मयूर शब्द कररहेहैं तोते और अनेकप्रकार के जीव तथा पपैये ४५ तथा अन्य पक्षीगण और मधुर २ बोलतेहुये भ्रमर तालाबोंके ऊपर गूँजरहे हैं ४६ और अनेकप्रकार के वृक्ष पुष्प और जलाशयोंसे वह क्षेत्र चारोंतरफसे शोभित होरहाहै ४७ कृत्तिवासा अर्थात् चर्मके वस्त्रोंवाले महादेवजी सब लोकके हित और भुक्ति मुक्तिके लिये वहां विराजमानहैं ४८ और

पृथ्वीके समस्त तीर्थों नदियों सरोवरों तालाबों बाव-
लियों कूपों तथा समुद्रों ४९ से एक एक बूँद इकट्ठी
करके शिवजी महाराजने सब लोकोंके हितकेलिये सब
देवतों सहित ५० विन्दुसर नामक एकक्षेत्र वहां रचा
है ५१ उस विपुल क्षेत्र में जो मनुष्य मार्ग्गशिर में
जितेन्द्रिय होके यात्रा करेगा ५२ और विधिसे स्नान
कर भक्ति पूर्वक देवता ऋषि मनुष्य और पितरों का
तर्पण ५३ तिल और जलसे नाम गोत्र विधानपूर्वक
करेगा वह अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोवेगा ५४
ग्रहण और संक्रांति के दिन तथा समरात्रि दिवकाल
और युगादिकतिथी वा अन्यशुभतिथी ५५ में जोमनुष्य
ब्राह्मणोंके लिये धनादिक दान देतेहैं उन्हें अन्यतीर्थों
की अपेक्षा सौगुना फल इसतीर्थ में होताहै ५६ इस
तीर्थमें जो पितरों के लिये पिण्डदान देतेहैं वे पितरों
की अक्षयतृप्ति करतेहैं इसमें सन्देह नहीं ५७ वेपुरुष
जितेन्द्रिय होके शिवका पूजन और प्रदक्षिणाकर शिव
लोकमें प्राप्तहोजाते हैं ५८ वहां जाके घृत और दूध
से शिवजी को स्नानकरा और चन्दन सुगन्ध कुंकुम
आदिका लेपकर ५९ चन्द्रमौलि महादेवका अनेकप्र-
कारके पुष्पोंसे पूजनकरै ६० और शास्त्रोक्त तथा वेदोक्त
मंत्रोंसे और अदीक्षितनामवाले मूलमन्त्रसे शिवजीका
जापकरे ६१ तथा दण्डवत्कर और अनेक प्रकारके म-
नोहर गीतवादित्र ६२ नमस्कार जय शब्द प्रदक्षिणा
इत्यादिक विधानों से देवदेव महादेवजीका पूजन करे

तो ६३ वह अपनी इक्कीस पीढ़ियोंका उद्धारकर दिव्य गहनोंसे भूषित होके ६४ जाली के झरोखे लगे सोने के बिमानमें बैठ गन्धर्व और अप्सराओं से उपगीयमान और सर्पोंसे सेवित हुआ ६५ सब दिशाओंको प्रकाशित करता शिवलोकमें प्राप्त होता है और ६६ वहां जाके प्रीतिदायक दिव्य सुखोंको भोग उस लोक बासियों के संग आनन्द करता रहता है ६७ पश्चात् पुण्य क्षीणहोनेपर इस पृथ्वी लोकमें आके जन्म लेता है ६८ हे द्विजोत्तमो फिर वह योगीजनोंके घरमें जन्म ले और चतुर्वेदीहो अर्थात् चार वेदोंका अध्ययनकर ६९ पाशुपत योगको प्राप्तहो मोक्षको प्राप्त होजाताहै ७० अयनके उत्थापन संक्रांतिके अर्क अशोक अष्टमी और पवित्रारोहण आदि ७१ पर्विणियों में जो मनुष्य कृत्तिवासा नामवाले अविनाशी महादेवका दर्शन करते हैं वे सूर्यके समान कांतिवाले बिमानमें बैठ शिवलोक में प्राप्त होते हैं ७२ और जो श्रेष्ठबुद्धिवाले पुरुष किसी अन्य पर्वकालमें भी महादेवका दर्शन करते हैं वे भी पापसे छूटके शिवलोकमें प्राप्त होते हैं ७३ महादेवसे पश्चिम पूर्व दक्षिण और उत्तर चारो तरफ अढ़ाईयोजनमें जो वह क्षेत्रहै सो भुक्ति मुक्तिदायकहै ७४ इस क्षेत्रमें श्रेष्ठ भास्करेश्वर जो महादेवहैं जिन्हें पहिले सूर्य ने पूजा है उन्हें जो मनुष्य कुण्डमें स्नानकर देखते हैं ७५ वे सब पापोंसे निर्मुक्तहो श्रेष्ठ बिमानोंमें बैठ ७६ और गन्धर्वों द्वारा उपगीयमान हो शिवलोकमें प्राप्त

होते हैं और वहां श्रेष्ठ भोगोंको भोग ७७ पुण्य क्षीण होने पर इस पृथ्वीलोकमें जन्मले धार्मिक ७८ यज्ञकरनेवाले दान करनेवाले और यती होते हैं ७९ जो पुरुष मुक्तेश्वर सिद्धेश्वर स्वर्णजालेश्वर परेश्वर शुक्राचार्यातिकेश्वर नामोंसे विख्यात ८० शिवप्रतिमाओं को देखते और पूजन करते हैं और विन्दुसर तीर्थ में स्नान करते हैं ८१ वे सब पापों से निर्मुक्तहो विमानों में बैठ गन्धर्वोंद्वारा उपगीयमानहुये शिवलोकमें प्राप्त होते हैं ८२ और वहां एक कल्पतक मुदित हुये ठहरते हैं और शिवलोकमें बहुतसे मनोहर भोग भोगके ८३ पुण्य क्षीण होनेपर इस लोकमें श्रेष्ठ कुलमें जन्मते हैं अथवा योगीजनों के घरमें वेद वेदांगको जाननेवाले होते हैं ८४ हे द्विजवरो वे मनुष्य सब मनुष्योंके हित में रत रहते हैं मोक्षशास्त्रमें निपुण होतेहैं और ८५ सब जगह वे समान बुद्धि रखते हैं तब शिवजीसे वरको पा मोक्षको प्राप्त होजाते हैं ८६ हे द्विजो उस क्षेत्रमें जहां२ शिवके लिंग स्थापितहैं वे सब पूजा करने लायकहैं ८७ चतुष्पथ श्मशान अथवा जहां २ शिवका लिङ्ग दीखे उसको ८८ अव्यग्रचित्तसे और श्रद्धासे समाहित हो स्नान करावे और भक्तिसहित गन्ध मनोहर पुष्प ८९ धूप दीप नैवेद्य चढ़ाके नमस्कार स्तोत्र दण्डवत् नृत्य गीत इत्यादिकोंसे शिवजीको प्रसन्नकरे ९० तो मनुष्य शिवलोकमें प्राप्त होताहै इसी बिधानसे श्रद्धापूर्वक जो नारी शिवजीका पूजन करती है ९१ वहभी पूर्वोक्त फल

को प्राप्त होती हैं इसमें कुछ संदेह नहीं ६२ उस क्षेत्र के गुणोंको शिवजीके सिवाय कोई कहनेको समर्थ नहीं है ६३ उस उत्तम क्षेत्रमें चैत्र आदिक महीनोंमें जाके श्रद्धा से अथवा अश्रद्धासे जो नर अथवा नारी ६४ विन्दुसरतीर्थमें स्नान करताहै और बिरूपाक्ष महादेव और पार्वती ६५ तथा गण स्वामिकार्त्तिक गणेश नांदि कल्पद्रुम और सावित्रीके दर्शन करताहै वह शिवलोक में प्राप्तहोताहै ९६ जो पापको नाश करनेवाले कपिल तीर्थमें विधिसे स्नान करताहै वह अपने सब मनोरथों को प्राप्तहो शिवलोकमें प्राप्त होताहै ६७ एकाम्रक शिव क्षेत्र काशीजीके समानहै जहां मृत्यु पानेवालेकी मोक्ष होजाती है ६८॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्वादेएकाम्रक क्षेत्रस्यमाहात्म्यवर्णनन्नामचत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

इकतालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि बिरजक्षेत्रमें बिरजा नाम वाली ब्राह्मणी माताहै जिसके दर्शन करके मनुष्य सातपीढ़ी को पवित्र करदेताहै १ उस देवीको देख भक्तिसे पूजन कर और प्रणाम कर मनुष्य अपने वंशका उद्धारकर ब्रह्माके लोकमें प्राप्त होताहै २ बिरजक्षेत्रमें सब पापों को नाश करनेवाली और वर देनेवाली और भक्तव-त्सला माता बिराजमानहै ३ वहां सब पापों को हरने

वाली वैतरणीनदी भी है जहां स्नानकर मनुष्य सब पापोंसे छूटजाताहै ४ क्रोड़रूपी हरिभगवान् भी वहां बास करते हैं जिनकी भक्तिसे मनुष्य दर्शनकर विष्णु पुरमें प्राप्त होताहै ५ कपिल गोग्रहतीर्थ सोमतीर्थ बालासंज्ञक मृत्युञ्जय क्रोड़तीर्थ वासुक और सिद्धकेश्वर यह तीर्थ भी वहां हैं ६ इन तीर्थों में स्नानकर मनुष्य बुद्धिमान् और जितेन्द्रिय होके देवताओं को प्रणाम कर ७ सब पापोंसे छूट श्रेष्ठ बिमानमें बैठ गन्धर्वों से उपगीयमान हुआ मेरे लोकमें प्राप्त होताहै ८ जो पुरुष बिरजक्षेत्रमें पिंडदान करताहै वह पितरोंकी अक्षय तृप्ति करताहै इसमें संदेह नहीं है ९ हे मुनि श्रेष्ठो जो पुरुष बिरजक्षेत्रमें शरीरको त्यागते हैं वे मोक्षको प्राप्त होजाते हैं १० और जो मनुष्य समुद्रमें स्नान करके कपिल हरिभगवान्का दर्शनकर बाराहीदेवीके दर्शन करताहै वह स्वर्गलोकमें प्राप्त होताहै ११ वहां उत्कलक्षेत्रमें अन्यभी पवित्र तीर्थ और देवताओंके स्थान बहुतसे हैं १२ हे द्विजोत्तमो समुद्रके उत्तरभागमें मुक्ति को देनेवाला और पापको नाशनेवाला वह परमगुह्य क्षेत्रहै १३ और वहां दशयोजनमें बिस्तीर्ण और परम दुर्लभ सावित्रतीर्थ है १४ जिसमें अशोकवृक्ष अर्जुन वृक्ष पुन्नाग बकुल सरल पनस नारियल शाल ताड़ कौंच १५ कर्णिकार तमाल देवदारु कदम्ब पारिजात बड़ अगर चन्दन खजूर चूका मुचुकुन्द केशू १६ और सातला सहोंजना शिरस सुन्दर नींब टेंटू बहेड़ा इत्या-

दिक वृक्ष शोभित होरहे हैं १७ और सब वृक्ष फलों और मनोहर चमेली के पुष्पोंसे १८ शोभा देरहे हैं मनको प्रसन्न करनेवाले शब्दोंको करतेहुये चकोर मयूर भौंरे तोते १९ कोकिला कलहंस जीवकपक्षी हारीत पपीहे और मधुर बोलनेवाले अन्य अनेक २० पक्षी कानों को रमणीक शब्द सुनातेहुये वहां कूजरहे हैं २१ और केतकी बनखण्ड अतिमुक्त मालती कुन्द और कनेरके पुष्पोंकी शोभा होरहीहै जम्बीरीनींबू २२ अनार और बिजौरा आमसोल सुपारी ताड़ केला २३ इत्यादिक और रंग बिरंग पुष्पोंवाले अन्य मनोहर वृक्षों और अनेक प्रकार की सुन्दर बेलों से आच्छादित सरोवर २४ बड़ी २ बावड़ी तालाब कुण्डइत्यादिक और सफेद तथा नीले कमलोंसे भूषित अन्य जलाशयोंपर २५। २६ अतिशोभा होरहीहै और राजहंस चकवा चकवी जलकुक्कुट कारण्डव २७ हंस कछुवे मत्स्य बगुले इत्यादिक जलचारी जीव क्रीड़ा कररहेहैं जिनके गूंजने २८ जलोद्भव पुष्पोंके विकास २९ और ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थ भिक्षुक और अपने धर्म्म में निरत अन्य वर्णोंसे वह क्षेत्र अलंकृत होरहा है ३० हृष्टपुष्ट नर और नारियोंसे आकीर्ण सब विद्याओंका स्थान और सब गुणोंकी खानि ३१ वह परम दुर्लभ क्षेत्रहै हे मुनियो वहां पुरुषोत्तमनामसे विख्यात भगवान् विराजमान हैं ३२ उस क्षेत्र में जहां गिरै और जैसे गिरै वही कृष्णके प्रसादसे पुण्य देनेवाली है ३३

वह जगद्व्यापी विश्वात्मा पुरुषोत्तम जगन्नाथ भगवान् जहां विराजमानहै वहां सब कुछ प्रतिष्ठितहै ३४ मैंरुद्र इन्द्र अग्निआदि देवते उस देशमें बसते हैं ३५ और गन्धर्व अप्सरा सिद्ध पितर देव मनुष्य यक्ष विद्याधर तीक्ष्ण व्रतवाले मुनि ३६ बालखिल्य आदिक ऋषि कश्यप आदिक प्रजेश्वर गरुड़ सर्प्प और अन्य स्वर्गवासी ३७तथा अंगोंसहित चारोंवेद और अनेकप्रकार के शास्त्र इतिहास पुराण श्रेष्ठ दक्षिणावाले यज्ञ ३८ और अनेकप्रकारोंकी पवित्र नदी पवित्र तीर्थ और देवताओं के स्थान ३९ समुद्र पर्व्वत सब उस देशमें व्यवस्थितहैं ऐसे देवर्षि पितृसेवित देशमें ४० किसको वास नहीं रुचताहै अर्थात् बसनेकी इच्छा कौन नहीं करताहै उस देशकी अन्य उत्तमता क्या कहें ४१ मुक्ति को देनेवाले पुरुषोत्तम भगवान् स्वयं वहां विराजमान हैं वे पण्डितजन धन्यहैं जो उत्कलेवर क्षेत्र में बसतेहैं ४२ जो पुरुष तीर्थराजके जलमें स्नानकर पुरुषोत्तम भगवान् के दर्शन करतेहैं वे सदा स्वर्ग्गमें बसतेहैं ४३ और जो उत्कल क्षेत्र में बसतेहैं उनका जीवन सफल है जो इस क्षेत्र में शरीर छोड़ते हैं उनका जीवन सफल है ४४ जो ताम्रसरीखे होठोंवाले खिलेहुये कमल सरीखे नेत्रोंवाले विशाल भृकुटी और केशोंवाले ४५ सुन्दर मुकुटवाले सुन्दर हास्य और सुन्दर दांतोंवाले सुन्दर कुण्डलोंसे मण्डित ४६ और सुन्दर नासिका कपोल मस्तकवाले उत्तम लक्षणोंवाले और त्रिलोकी

को आनन्द देनेवाले श्रीकृष्ण के मुखरूपी कमलको देखतेहैं उनका जीवन सफलहै ४७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांउत्कलक्षेत्रवर्णनन्नाम एकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१॥

बयालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे विप्रो पहले कृतयुगमें इन्द्रके समान पराक्रमवाला इन्द्रद्युम्न नाम से विख्यात एक राजाथा जो सत्यवादी पवित्र चतुर और सब शस्त्रधारण करनेवालोंमें उत्तम रूपवान् सुभगशूर दाता भोक्ता और प्रियंवद सबयज्ञोंका यष्टा ब्रह्मण्य सत्यसंगर धनुर्वेद और वेदशास्त्रमें निपुण नर और नारियोंका मित्र पौर्णिमाके चन्द्रमाके समान शीतल और सूर्य्यकीतरह दुष्प्रेक्ष्य शत्रुओंके यज्ञमें भयको देनेवाला और वैष्णव और नित्य सम्पन्न जितक्रोध और जितेन्द्रिय अध्यात्मविद्यामें निरत मोक्षकी इच्छावाला और धर्म्म में तत्परथा निदान उसकीरुचि विष्णुके आराधनमें उत्पन्न भई १।६ और यहचिन्ता उपजी कि देवतोंके देव विष्णु की आराधना कैसेकरूँ और किसतीर्थ क्षेत्र व आश्रम में करूँ ७ ऐसी चिन्ता करके वह राजा मनसे पृथिवी के सब तीर्थों और आश्रमोंको देख ८ और मनहींसे सबोंका चिन्तवन कर मुक्तिके देनेवाले और विख्यात कुरुक्षेत्र में गया ९ और तहां जाकर बहुतसी दक्षिणा वाले अश्वमेध यज्ञको करनेकी इच्छासे १० अतिवि-

स्तृत एक स्थान बनाकर उसमें बलदेव कृष्ण सुभद्रा आदिकोंकी मूर्तियोंको स्थापित किया ११ और पंचनद तीर्थको विधिसे बनाके स्नान दान तप होम देव दर्शन आदि करनेलगा १२ वह भक्तिसे नित्यप्रति विष्णुको प्रणाम करताथा और विष्णुके प्रसादसेही अन्तमें मोक्षको प्राप्तहुआ १३ हे विप्रो मार्कण्डेय वट श्रीकृष्ण और बलदेवके दर्शन और इन्द्रद्युम्न सरमें स्नान करनेसे निश्चय मोक्षहोताहै १४ मुनियोंने पूछा हे भगवन् इन्द्रद्युम्न राजा किसकारण मुक्तिको देनेवाले कुरुक्षेत्र में गया १५ और वहां जाकर कैसे विस्तार से अश्वमेधकरके उसने विष्णुकोदेखा १६ तथा सब फलों को देनेवाले और परमदुर्ल्लभ कुरुक्षेत्र में त्रैलोक्य में विश्रुत उसस्थानको उसने कैसेबनवाया १७ क्योंउसने कृष्ण बलदेव और सुभद्राकी मूर्त्तियोंको स्थापितकिया १८ और कैसे उस राजशार्दूल ने उस स्थान में १९ देवतोंसे पूजित कृष्ण आदि तीनोंको स्थापित किया २० हे मुनिश्रेष्ठ विस्तारपूर्व्वक यथायोग्य २१ उसके चरित्र कहनेको आप योग्यहो और आपके वाक्यरूपी अमृतसे हम तृप्तिको नहीं प्राप्तहोते २२ इसलिये इस वृत्तांतको श्रवणकरने की इच्छाहै क्योंकि हमें अति आश्चर्य्य प्रतीत होताहै २३ ब्रह्माजी बोले कि हे द्विजश्रेष्ठो जो तुम उस पुरातन आख्यान को पूछतेहो जो सब पापोंको हरनेवाला भुक्ति और मुक्तिको देनेवाला और शुभ है २४ तो जैसे कृतयुग में हुआ है तैसे मैं

कहता हूँ २५ हे जितेन्द्रिय मुनिजनो तुम श्रवणकरो पृथिवी में मनुष्योंसे विश्रुत अवन्ती नामक नगरी है २६ जो सब नगरियोंमें उत्तम हृष्टपुष्ट जनोंसे आकीर्ण दृढ़प्राकार तोरणोंवाली गम्भीर परिखाओंसे अलंकृत अनेकप्रकारके जनोंसे आस्तीर्ण नानाप्रकारके मनुष्यों से युक्त और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र आदि अन्य जातियोंसे व्याप्त नानाप्रकार के आयुधों और अनेक प्रकारके भांडोंसे संयुक्त गली बाजारोंसे रमणीय और दृढ़ चतुष्पथों से भूषित अनेकतरह की अटारियों से शोभित गोशाला और मार्गोंसे अलंकृत राजहंसों के समान कांतिवाले क्षुद्र और चित्रग्रीवावाले मनोहर लक्षों स्थानोंसे अलंकृत यज्ञ और उत्सवोंसे आनन्दित और गीत वादादिकोंसे शब्दित नानावर्णवाली पताका और ध्वजाओंसे अलंकृत और हस्ती घोड़ोंके समूहों से संकीर्ण पदातिगण से संकुल अनेकतरहकी कामनाओंकी दाता विद्वानोंसे अलंकृत और मलिन दुःखी दुर्बल रोगी अंगहीन जुवारी आदि मनुष्यों से रहित सुन्दर मनवाले पुरुष और स्त्रियोंसे व्याप्तहै वहां दिन और रात्रिमें आनन्दित हुये मनुष्य अलग २ क्रीड़ा करतेहैं २७ । ३६ और सुन्दर कुण्डल और रूपोंवाले देवते दीखते हैं ३७ एवम् सुन्दर ऐश्वर्य्यवाले और कामदेवके समान कांतिवाले दिव्य अलंकारोंसे भूषित और सब लक्षणोंसे लक्षित सुन्दर केशों नरम कपोलों और आनन्दमुखोंवाले शोभाको धारणकरनेवाले सब

शास्त्रोंके ज्ञाता सब रोगोंकेभेत्ता सब रत्नोंके दाता और सब सम्पदाओंके भोक्ता शूरबीर पुरुष ३८। ४० और हंसके समान विचरनेवाली कानों तक विस्तृत नेत्रोंवाली सुन्दर मध्यवाली चिकने जघनोंवाली पीन और उन्नत स्तनोंवाली सुन्दर केशोंवाली और चन्द्रमुखवाली उज्ज्वलकपोलों और स्थिर मुखोंवाली हारों के भारसे उन्नत ग्रीवावाली लाल ओष्ठोंवाली और रंजित और ताम्बूलसे विराजित मुखोंवाली सुवर्ण और गहनोंसे उपेत्त कानोंके गहनों और सब अलंकारों से भूषित श्यामरंग से युक्त और सुन्दर कटिवाली तागड़ी और नूपुरसे शब्दित दिव्य माला और दिव्य गन्ध अनुलेपनको धारण करनेवाली सुन्दर मुखोंसे प्रकाशित और सुन्दर अंगोंवाली रूप और लावण्य से संयुक्त और हँसित मुखोंवाली मनोहर स्त्रियां रहती हैं मदोन्मत्त हुई चौराहों और सभाओं में क्रीड़ा करती और गीतवाद्य और कथाओंके आलेपसे रमणकरती हुई गीत और नृत्यमें निपुण बहुतसी वेश्यायेंभी वहां दीखती हैं ४१। ४७ और बहुतसे स्त्रीगणोंसे सेवित देखनेके योग्य और कुशल अन्य स्त्रियांभी वहांहैं ४८ गणोंसे समन्वित और सब रत्नोंसे अलंकृत पतिव्रता स्त्रियोंसे आकीर्ण और वन उपवन पवित्र उद्यान देवताओंके दिव्य मंदिरों और पुष्पों के वृक्षों तथा ताल तमाल बकुल नागकेसर दियाल कर्णिकार चन्दन अगर चम्पक और पुन्नाग नारिकेल पलाश सरल नारंग

बड़हल लोध सातला सहँजना आंब अमली शीसम धव खैर पाटला अशोक तगर और लाल और पीले कनेरके वृक्षों कदम्ब अर्जुन भिलावा अम्बाड़ा बड़ पीपल गम्भारीके वृक्षों देवदारु मन्दार पारिजात तिंतड़ीक बहेड़ा प्राचीन आंवला पिलखन जामुन शिरस काला अगर कचनार बिजौरा केंदुक खजूरि अगस्त्य शाखोटक कंकोल मुचुकुन्द हिन्ताल बीजपूरक केतकी बनखण्ड कुन्दुक मल्लिका कुन्द भिंटी केला पूंगफल कन्दर सँभालू बट निर्गुण्डी अर्थात् सँभालू लसोढ़ा बड़बेरी करंजु और अन्यप्रकारके अनेक वृक्षों लताओं गुल्मों और नन्दनबनके समान पुष्पों और पुष्पोंकी गन्धसे युक्त और सबकालमें फलोंवाले वृक्षों और चकोर कमल प्रियपत्रक बातक प्रियपुत्र हारीत जीयापोता जीवक आदि वृक्षोंसे शोभित और कलंविक शशा कोकिल आदि कानोंमें रमणीक शब्दकरने वाले और मनोरम पक्षियोंसे शब्दित बहुतसे तालाब और दिव्यजलाशयों से उपशोभित कौमोदिनी लाल और नीले सुगन्धित कमलों से आकीर्ण और नानाप्रकारके अन्य वृक्षों मनोहर पुष्पों और सब प्रकारके सुगन्धित पुष्पोंके वनों और हंस कारण्डव चकवा चकवीसे उपशोभित सारस बगुला कछुआ मच्छीआदि से संयुक्त जलके स्थानों से आवृत और वेत कदम्ब जल कुसुम और जलचर जीवों और वानरोंसे विभूषित वृक्षोंसे उपशोभित और नानावर्णके आनन्दित

रूप पक्षियोंसे शब्दित नानाप्रकारके वृक्ष और पुष्पों से शोभित अनेकतरहके जलाशयों उद्यानों और जल और स्थलचारी पक्षियोंसे अधिष्ठित और देवताओं के स्थानोंसे शोभित उसपुरीमें त्रिपुरके शत्रु और तीन नेत्रोंवाले ४९। ७० महाकाल नामसे विख्यात और सब कामनाओं को देनेवाले सदाशिव स्थित हैं ७१ वहां देव ऋषि और पितरोंका विधिसे तर्पणकर शिवालयमेंजा तीन परिक्रमाकरै ७२ और धौत वस्त्रोंको धारणकर और जितेन्द्रिय जल पुष्प गन्ध धूप दीप७३ नैवेद्य बलिदान गीत वाद्य परिक्रमा दण्डवत् प्रणाम नृत्यस्तोत्र आदि से महादेव की पूजाकरै ७४ तो विधिपूर्वक महाकालरूप शिवको पूजने से मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै ७५ और सब पापोंसे मुक्त हो सार्वकामिक विमानमें स्थित होकर स्वर्ग में गमन करता है जहां शिवका स्थान है ७६ और दिव्यरूपको धारणकर और शोभासेसंयुक्त और दिव्यगहनोंसे अलंकृत होकर प्रलयतक उत्तम भोगोंको भोगैहै ७७ हे मुनिश्रेष्ठो वह मनुष्य बुढ़ापा और मृत्युसे बर्जित हो अनन्तकालतक शिवलोक में बसता है और पुण्यक्षय होनेपर उत्तम ब्राह्मणकुलमें जन्मता है ७८ तहां चार वेदों को जाननेवाला और सब शास्त्रोंमें निपुण होकर पाशुपत योगको प्राप्तहो मोक्षको प्राप्तहोताहै ७९ उस स्थलमें शिप्रानामक एकनदीहै जिसमें विधिसे स्नान कर और देव पितृका तर्पणकरने से ८० मनुष्य सब

पापों से मुक्त हो विमानमें स्थित होकर स्वर्गलोकमें उत्तम भोगों को भोगता है ८१ वहां भगवान् गोविन्द स्वामी भुक्ति मुक्तिप्रद विष्णुभी स्थितहैं ८२ उनकी भक्ति से पूजन और प्रणाम करने से मनुष्य गन्धर्वोंसे गीयमानहुआ विष्णुलोक में बसताहै ८३ और प्रलयतक नानाप्रकार के भोगोंको भोगताहुआ सुन्दररूपवाला सुभग और सुखीरहता है ८४ फिर वह बुद्धिमान् समयपाकर ब्राह्मणकेकुलमें जन्मलेकर वेद शास्त्रके तत्त्व को जाननेवालाहोताहै ८५ और वैष्णव योगको प्राप्त हो मोक्षको प्राप्तहोता है ८६ विक्रमस्वामी नामवाले विष्णु जो वहां स्थित हैं तिनको देखने से मनुष्य पूर्वोदित फलकोप्राप्तहोताहै ८७ इन्द्रआदि देवते और सब कामोंके फलको देनेवाले मातृगण भी तहां स्थित हैं ८८ जिनकी विधिसे भक्तिपूर्वक पूजाकरने से मनुष्य सब पापों से मुक्तहो स्वर्गलोक में प्राप्तहोता है ८९ वह नगरी ऐसे राजसिंहोंसे पालित रमणीक और नित्य प्रति उत्सवों से आनन्दित है जैसे इन्द्रकी अमरावती ९० छत्तीसग्रामोंसे विभूषित विद्वानोंकेगणोंसे युक्त वेदों केशब्दोंसे शब्दित ९१ औरइतिहास पुराणआदि अनेक प्रकारके शास्त्रों काव्य और कथा वहां दिनरात्र होता है ९२ ऐसे माया और गुणोंसे सम्पन्न वहां उज्जयनी नगरीहै जहांमहामतिवाला इन्द्रद्युम्न राजाहुआ ९३॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसंवादेअवन्तिकापुरीवर्णनन्नामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

तेंतालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि उस पुरीमें उत्तम राज्य करने वाले इन्द्रद्युम्न राजाने सपुत्रोंकी तरह प्रजाको पालन किया १ और सत्यवादी महाप्राज्ञ शूर सब गुणों की खानि मतिमान् धर्म्मों में सम्पन्न शास्त्रियों में श्रेष्ठ शीलवान् चतुर और श्रीमान् परपुरोंको जीतनेवाला सूर्यके समान तेजवाला अश्विनीकुमारोंके समान रूप वाला आठ प्रकारके ऐश्वर्य्योंवाला और इन्द्रके समान पराक्रमवाला शरदऋतुके चन्द्रमाके समान प्रकाशित और सब लक्षणोंसे अलंकृत अश्वमेधादि सब यज्ञों का कर्त्ता और दान यज्ञ तपमें ऐसा हुआ कि उसके समान अन्य राजा न था सुवर्ण मणि मोती हाथी घोड़े आदि महाधनोंको सुन्दर योगमें ब्राह्मणोंको देनेवाला २। ६ और हाथी अश्व रथ रत्न धन धान्यसे उत्पन्न हुये मानसे वर्जित ७ सब शुभगुणोंसे अलंकृत और सब कामोंसे समृद्ध वह राजा अकंटक राज्य करनेलगा ८ निदान उसको यह बुद्धि उपजी कि सर्वयोगेश्वररूप और भुक्ति मुक्तिको देनेवाले विष्णुकी कैसे आराधना करूं ९ इसलिये वह सब शास्त्रों इतिहासों पुराणों और वेदांगों १० एवम् धर्मशास्त्रों और ऋषिभाषित आगम वेदान्तशास्त्र और सर्व विद्यास्थानोंको विचार ११ और गुरु और वेदपारग अन्य ब्राह्मणोंका यत्नसे सेवनकर और परम समयकी आराधनाकर कृतकृत्य हुआ १२

वासुदेवरूपी परमतत्त्वको प्राप्तहोकर और भ्रांतिज्ञान से अतीत बद्धमोक्षकी इच्छावाला और शांत इन्द्रियों वाला वह राजा बोला कि पीतवस्त्रोंवाले चार बाहुओं वाले शंख चक्र और गदाको धारण करनेवाले देवदेव सनातन बनकी मालाओं को धारण करनेवाले कमल के पत्रोंकेसमान बिस्तृत नेत्रोंवाले और लक्ष्मीके चिह्न वाले मुकुट और अंगदसे विभूषित विष्णुकी मैं कैसे आराधना करूँगा निदान वह राजा स्वप्नकी तरह अवन्तीपुरीसे निकसकर बहुतसी सेना भृत्य और पुरोहितों के संग शस्त्रों को धारण करनेवाले योद्धाओंसे सेवित बिमानोंके समान कांतिवाले ध्वजा पताकाओंसे शोभित पाश भाला आदिको हाथोंमें धारण करनेवाले पियादों से परिवृत दिव्य वस्त्रोंको धारणकिये दिव्यगन्धोंसे अनुलिप्त अंगों शरदऋतुके चन्द्रमाके समान मुख सुंदर मध्यभागवाला सुन्दर कुंडलोंसे अर्चित और मणि और सुवर्णसे भूषित सुन्दर असवारियों और कुटुम्बके गणों से परिवृत और नानापुरवासियोंके धन रत्न सुवर्ण दारा और परिच्छदों से परिवृत इतिहास व सर्वशास्त्रोंके वेत्ता ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और अन्यजातियोंसे परिवृत चला और सुवर्णकार लुहार शकुंटुक मणिकार कुम्भकार चर्मकार अनुयाचक पण्यकार वेत्रकार सूत्रकार शिल्पी केशकार बाणकार वृत्तकार शंखकार सुधाकार वादक अपूपकार सीरनी बेचनेवाले मालाकार पर्णकार मद्यविक्रयी मत्स्यविक्रयी मांसविक्रयी अस्त्रविक्रयी ता-

मूलविक्रयी पण्यजीविकावाले ऋणविक्रयी काष्ठविक्रयी रंगोपजीवी धोबी गोपाल नापित दरजी मेढ़ों घोड़ों और बकरों के रखवाले मृगपाल फल बेचनेवाले पान बेचनेवाले काष्ठ बेचनेवाले रस बेचनेवाले जो धान्य बेचनेवाले सत्तू बेचनेवाले गुड़ बेचनेवाले लवण बेचने वाले गवैये और नृत्यकरनेवाले मंगलपढ़नेवाले शैलूष और कत्थक पुराणोंमें निपुण पंडित और काव्य रचने वाले कवि और अनेक बाजोंको बजानेवाले विषको नाशकरनेवाले गारुड़ी और अनेकशस्त्रोंके परीक्षक लुहार ठठेरे और कांशीकार अवरूढक शेषकार और वेत्रकार कुन्दकार और याचक रदनकार और तलवार बनानेवाले चारपुरुष जुवाखेलनेवाले और यक्ष और दूत और कायस्थ और अन्यकर्म करनेवाले जुलाहे काच्यकार वार्त्तिक तेली और ग्रामके जीवोंवाले तीतरोंवाले मृगोंवाले गजवैद्य अश्ववैद्य और बड़े चतुर नरवैद्य वृषवैद्य गोवैद्य और अन्य वेदवाहक आदि अनेकनगरवासी राजाके पीछे ऐसे चले जैसे जातेहुये पिताके अनुउत्साहवाले पुत्र १३।३८ निदान सम्पूर्ण महाजनों ने उस श्रीमान् राजाको घेर लिया ३९ और हस्ती अश्व रथ पदाति सम्पूर्ण होले २ जाके दक्षिणतटपर अनेक तरंगोंसे आकुल अनेकप्रकारके रत्नोंसे रमणीक नानाप्रकार के शंखों और बहुत विचित्र रत्नोंसे व्याप्त महाश्चर्य्य संयुक्त और महाशब्द वाले तीर्थराजको गये ४०। ४३ और मेघसमूहकीसी कांतिवाले अगाध और मकरोंकेस्थान मत्स्य कूर्म शंख

शुक्तिका नक्र शंकु ४४ शिशुमार कीटक कीट आदि और महाबिष सर्प्पोंसे व्याप्त हरि और शमनके स्थान और नदियोंके पति ४५ सम्पूर्ण पापोंके हरनेवाले पवित्र और इच्छितफल देनेवाले दानवोंके आश्रय दिव्य और देव योनि और अनेक आवर्त्तोंसे गम्भीर और जलों के पति सबभूतोंको सुन्दर और प्राणियोंके जीव धारण करनेवाले पवित्रोंमें पवित्र और मंगलोंमें मंगल तीर्थोंमें उत्तमतीर्थ और अव्यय चन्द्रमा की वृद्धि क्षयकीतरह दीखतेहुये प्रतिष्ठित और सब जीवोंसे अभेद्य सब जीवोंका अमृत स्थान और उत्पत्ति स्थिति संहार के कारण सदा रहने वाले और सबके उपजीवन पवित्र और नदियोंके पति लवणोद समुद्रके तीरपर निवासकिया ४६। ५१ उस पुण्य मनोहर और सब भूमिके गुणोंसे युक्त देश कोष शाल वृक्ष कदम्ब पुन्नाग सरलवृक्ष पनस नारियल बड़हल नागकेसर ताड़ प्रियाल खजूर नारंगी बिजौरा शाल आम्रातक लोध्र बकुल बहुबीजक कपित्थ कर्णि-कार पाटला अशोक चम्पक अनार तमाल पारिजात अ-र्जुन पुराने आंवले बेलपत्र प्रियंगुबट बेर क्षारक अमल-तास अश्वत्थ अगस्त्य जामुन महुवा कर्णिकार बहुवार तेन्दुक ढाक चन्दन कदम्ब सहोंजना इंगुदी सातला भतानक ताड़ हिंताल काकोल कुटज बहेड़ा कदम्ब जामुन खम्भारी शाल्मली देवदारु शाखोटक भिन्नबट कुम्भीर हरीतक गूगुल चन्दन तोत्र अगर पाटला जं-बीर करुण अमली लालचंदन आदि नानाप्रकार के

वृक्षों तथा नित्यफल देनेवाले कल्पद्रुमसे शोभित पुष्प वृक्षोंपर बैठे गूँजतेहुये कोकिलाओं मयूरों तोतों मैनाओं भौंरों पपैयों जीव और जीवक काकोल और कलविंक अर्थात् चिमना नामवाले पक्षी और कपोतक आदि नानाप्रकारके पक्षियोंके समूहोंके शब्दोंके घोषसे कानों को रमणीक करनेवाले और केतकी वनखण्ड मल्लिका कुन्द यूथिका तगर कुटज बाणपुष्प अतिखिलीहुई कुंजक मालती कनेर केला और कचनार और नानाप्रकारके दूसरे सुगन्धिवाले और दीखनेमें सुन्दर बगीचोंमें पवन से बहुतप्रकारकी उठीहुई सुगन्धिसे शोभित विद्याधरों के गणोंसे युक्त सिद्ध चामरोंसे सेवित और मृग सिंह बराह और भैंसोंके समूह एवम् कृष्णसार आदिक मृग शार्दूल गर्ववाले हस्ती और बहुतसे वनमें रहनेवाले दूसरे जानवरोंसे युक्त वनों नानाविधि के वृक्षों लताओं गुल्मों तोरणोंसहित उद्यानों और हंस और कारण्डवों से युक्त पद्मिनीके खंडोंसे मण्डित और कलहंस चकवा और बगुलोंसे शोभित एवम् सौ पत्रवाले और कल्हार कमलों कुमुदोत्पल और पक्षियों जलकेजीवों और जलमें उत्पन्न हुये पुष्पोंसे युक्त जल स्थलों और सुन्दर गुहाओं से शोभित नानाप्रकारके कृत्योंसे युक्त नानाप्रकारके धातुओंके उत्पादक और सम्पूर्ण आश्चर्य्यमय पर्व्वतों के शिखरों और सम्पूर्ण प्राणियोंके निवासयोग्य और सम्पूर्ण औषधियोंसे युक्त उस मनको हरनेवाले और त्रिलोकीसे पूजित तीर्थको राजाने देखा ५२। ७५ दश

योजन लम्बा पांचयोजन चौड़ा और बहुतसे आश्चर्य्यों से युक्त वह क्षेत्र बहुत दुर्ल्लभहै ७६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेक्षेत्रदर्शनन्नामत्रिचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

मुनियोंने पूछा कि हे प्रभो क्या उस पुण्यक्षेत्रमें पहले वैष्णवी मूर्त्ति नहीं थी १ क्योंकि आपने कहा कि इस राजाने सेना सहित वहां जाके श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्राकी मूर्त्ति स्थापनकी २ यह हमें महान् आश्चर्य्य है इसलिये आप सम्पूर्ण कारण कहिये ३ ब्रह्माजीबोले कि हे मुनियो यह पापोंको नाश करनेवाली कथा जैसे पहिले लक्ष्मीने पूछीथी सो मैं सम्पूर्ण कहताहूं सुनो ४ सुमेरु पर्व्वतमें सोनाकी शिखरहै जो सम्पूर्ण आश्चर्य्यों से युक्त सिद्धों विद्याधरों यक्षों और किन्नरों से शोभित और देव दानव गन्धर्व नागों अप्सराओं सिद्धों सौपर्णों और मरुतोंके गणोंसे युक्त है और वहां अनेक देवते कश्यप आदि प्रजाके ईश्वर और बालखिल्य आदिक ऋषि रहतेहैं उस शिखरपर सुन्दर कर्णिकार वृक्ष सब ऋतुओंमें होनेवाले पुष्पोंके समूह और सोनेके सदृश शोभासे शोभित और सूर्य्यकेसी शोभावाले शाल ताल आदि पुन्नाग अशोक सरल न्यग्रोध आम्रातक अर्जुन पारिजात आंब खैर कदम्ब बेलपत्र चम्पक धव खादिर ढाक शिरस आमला तिन्दुक नारियल अश्वत्थ अर्थात्

पीपल और बहुतप्रकारके लोध्र अनार बिजौरा राल अश्व कर्णि तगर शीशम भोजपत्र नींब तथा बहुप्रकारके पुष्पों की गन्धसे शोभित और देवताओं से पूजित फलों से झुके वृक्ष और मालती यूथिका चमेली वाणा कुरंटक कनेर कमल केतकी कुंज केशू पाटला अगस्त्य कुटज मन्दार आदिक बहुतप्रकारके पुष्प वृक्ष हैं जिनपर मन को प्रसन्न करनेवाले बहुतप्रकारके पक्षियोंके समूह मधुर स्वरसे कूजते हैं और कोकिलों मातुल और मयूरों के गण बोलतेहैं ऐसे अनेकप्रकारके फल और बहुतप्रकार के पुष्प वृक्ष और बहुप्रकारके पक्षियों और देवतों से सेवित उस स्थानमें स्थित जगन्नाथ अविनाशी जगत् के रचनेवालेको देवी लक्ष्मी ने प्रणाम करके लोकों के हितकेलिये प्रश्नकिया कि भूमीमें सुन्दर स्थान कौनसा है ५। १८ लक्ष्मी बोली कि हे सब लोकोंके ईश मेरे हृदयमें संशयहै कि महा आश्चर्य्य और दुर्लभ कर्म्म भूमी १९ मर्त्यलोक में लोभ और मोहसे ग्रसित और काम क्रोध रूपी संसारसागर में पड़े जीव किसप्रकार छूटेंगे इसलिये हे देवेश २० आप इसका वर्णनकरो हे देवेश जो आप मुझसे प्रीति रखतेहो तो यह सम्पूर्ण वर्णनकरो क्योंकि आपके सिवाय इसलोकमें मेरे संशय को दूरकरनेवाला कोई नहींहै २१ देवतोंका देव जनार्दन लक्ष्मी का यह प्रश्न सुनके परमप्रीति से अमृत वचन बोले कि २२ हे देवि एक बहुत सुसाध्य और महाफल देनेवाला उपायहै उसे सुनो पुरुषोत्तम नामक

एक तीर्त्थवरहै जिसके समान त्रिलोकीमें कोईबस्तु नहीं है २३ उसके कीर्त्तनमात्रसे मनुष्य सम्पूर्ण पापोंसे दूर होजाताहै उसे देवताभी नहीं जानते और न दानवही जानते २४ मरीचि आदि मुनियोंसे मैंने उसे गुप्तरक्खा है २५ पर आज तेरेआगे कहताहूँ एकान्त चित्तकरके सुन २६ कल्पके अन्तमें स्थावर जंगमके नष्टहुये और दैत्य विद्याधर उरग देव और गन्धर्वोंके प्रलीन होनेके पीछे २७ यह भूमि तथा और कुछभी वस्तु नहीं रहती तब जगत् का गुरु विश्वात्मा जागताहै २८ वह शोभा वाला तीनों मूर्त्तीमय और जगत् का रचनेवाला महेश्वर और वासुदेव नामसे विख्यात योगात्मा हरि ईश्वर २९ योगनिद्राके पीछे सुन्दर कमलमें पद्मकोशके प्रकाश करनेवाले ब्रह्मा अविनाशीको उत्पन्न करताहै ३० तिसके पीछे सर्वलोक महेश्वर ब्रह्मा पंचभूत समायुक्त जगत्को हौले २ रचताहै ३१ स्थूलमात्रा भूतों और स्थूल सूक्ष्म चारप्रकारके स्थावर जंगम जीवोंको रचकर ३२ प्रजापति ब्रह्मा ने मनसे आत्मा को चिन्तवनकर बहुत प्रकारकी प्रजाकोरचा और ३३ मरीची आदि सबमुनियों देवताओं असुरों पितरों यक्षों विद्याधरों साध्यों राक्षसों उरगों किन्नरों और भूपालों सहित सात स्वर्ग चौदह भुवन सातद्वीप सातसागर और गंगा आदि नदी नर वानर सिंह और बहुतप्रकारके पक्षी और जरसे उत्पन्न होनेवाले अण्डेसे उत्पन्न होनेवाले पसीने से उत्पन्न होनेवाले और जलसे उत्पन्न होनेवाले जीव ब्राह्मण

क्षत्री और वैश्य शूद्र चारवर्ण और बहुतप्रकारके अन्न और वृक्षों तथा जीवसंज्ञक तृण गुल्म कीट आदि और सम्पूर्ण चर अचर जगत् चिन्तवन करके रचा ३४। ३८ फिर दाहिनें अंग में आत्मा को चिन्तवन करके और बाम में नारी द्विधापुरुष उत्पन्न किया ३९ तिससे आदिलेके मैथुन से अधम मध्यम उत्तम गूढ़ और क्षेत्र सब प्रजाहुई ४० ऐसे जलयोनि से उत्पन्न हुआ ब्रह्मा चिन्तवन करके और ध्यानमें स्थित होके वासुदेव भगवान्के शरीर को प्राप्त भया ४१ ब्रह्माके ध्यानकरने से आप जनार्दनदेव तिसीक्षणमें सहस्रनेत्र सहस्रपाद और सहस्रशिरोंवाले पुरुष उत्पन्नहुये जिसे लोक पितामह ब्रह्माने देखकर आसन अर्घ्यपाद्य और पुष्पोंसे पूजाकरके सुन्दर स्तोत्रोंसे प्रसन्नकिया ४२। ४५ तब कमलसे उत्पन्नहुये ब्रह्मासे जनार्दनभगवान् कहनेलगे कि मेरे ध्यानका कारण कह ४६ ब्रह्माबोले कि हे देवेश मृत्युलोकमें दुर्लभ स्वर्गके मार्ग यज्ञदान व्रत ४७ सत्य तप और बहुतप्रकारके तीर्थ तो सुने पर इन सब को छोड़के जो सुखसाधन हैं सो कहो ४८ हे पुरुषोत्तम मृत्युलोकमें जो सब से उत्तम स्थान है सो कहो ४९ ब्रह्माके ऐसे वचनको सुनके मैंने कहा कि हे ब्रह्मन् भूमीमें मलरहित जो दुर्लभ स्थानहै उसे सुनो ५० यह सुनकर क्षेत्र सब क्षेत्रोंमें उत्तम संसार से तारनेवाला गो ब्राह्मणका हित करनेवाला पवित्र चारों वर्णों को सुख देनेवाला और मनुष्यों को भुक्ती और

मुक्तिका देनेवाला और बसतेहुये सब मनुष्यों को प-
वित्र करनेवाला सनातन और विख्यात चारोंयुगों में
सेवित सब देवतोंका ऋषियोंका ब्रह्मचारियों और दैत्य
दानव सिद्ध गन्धर्व उरग राक्षस नाग विद्याधर और
स्थावर जंगम सब उत्तम पुरुषों का स्थानहै इससे उ-
सका पुरुषोत्तम नामहै५१। ५५ उसके दहिने किनारे
पर एक बड़का वृक्षहै वह दशयोजन लम्बा क्षेत्र परम
दुर्लभ है ५६ कल्पके उत्पन्न होनेमें और महत्वर्गके
नाशने में वह बिनाश नहीं होता और ५७ उसबड़के
देखने और छाया में प्राप्तहोने से ब्रह्महत्या भी दूर
होतीहैं और पापका क्या कहनाहै ५८ उसवृक्षकी जिन
श्रेष्ठ पुरुषोंने प्रदक्षिणा और नमस्कारकरीहै वे सम्पूर्ण
पापोंसे रहितहोके भगवान् के स्थानको जाते हैं ५९
उसबड़के कुछ उत्तरदिशामें केशव का प्रासाद अर्थात्
धर्म मय स्थान स्थित है ६० जहां आप भगवान् की
रचीहुई मूर्त्ति है तिसको देख बिना यत्न मेरे मनोहर
भुवनमें प्राप्तहोजातेहैं ६१ हे विप्रो तिनजातेहुओंको
देखकर एकसमय धर्मराज मेरे समीप आके और प्र-
णामकरके कहनेलगे ६२ कि हे भगवन् आपका नम-
स्कार है हे देव हे लोकनाथ हे जगत्पते हे क्षीरसमुद्रमें
बासकरनेवाले और हेशेष सर्पपै शयन करनेवाले श्रेष्ठ
रूप वरदेनेवाले कर्त्ता अविनाशी समर्थ विश्वेश्वर अ-
जन्मा विश्व और सर्वज्ञ अपराजित नीलेकमलकेदल
के से श्याम कमलनयन शान्त और जगद्धाता अव्यय

सर्वलोक विधाता और सम्पूर्ण लोकको सुख देनेवाले पुराणपुरुष और वेद्य व्यक्त अव्यक्त और सनातन पुराण रचनेवाले और लोकनाथ जगतूगुरु और श्रीवत्सहृदामें युक्त बनमालाओंसे शोभित पीलेवस्त्र धनुष शंख चक्र और गदा धारण करेहुये ८ हारबाजूसे युक्त और मुकुटधारणकरनेवाले सम्पूर्ण लक्षणोंसे युक्त और सब इन्द्रियोंसे वर्जित कूटस्थ अचल सूक्ष्म और ज्योती रूप सनातन भाव अभावसे निर्मुक्त और व्यापक माया से परे और जगन्नाथ सुखदेनेवाले और समर्थ आपको नमस्कार है ६३। ६९ इसीप्रकार धर्मराजने बड़के समीप बहुत प्रकारके स्तोत्रोंसे स्तुति करके प्रणामकिया ७० हे महाभागवाली लक्ष्मी अंजलीबांधे प्रणामकरते हुये उसको देखके मैंने स्तोत्रका कारण धर्मराजसेपूँछा कि ७१ हे सूर्य्यकेपुत्र महान् भुजावाले तू सब देवतों से परे है संक्षेपसे मेरे आगे कह कि किसकारण आया है ७२ धर्मराज बोला कि हे नाथ इसविख्यात पवित्र और इन्द्रनीलमटा पुरुषोत्तम स्थानमें सब कामनादेने वाली मूर्त्तीरची हुई है ७३ तिसको देखके और एक भावसे श्रद्धाकरके मनुष्य श्वेताख्य भुवनको निष्काम होके जातेहैं ७४ हे अरिसूदन इनको रोकनेकी मेरीश्रद्धा नहींहै हे देव आप प्रसन्नहो और इसप्रतिमाको हरो ७५ सूर्य्यके पुत्र धर्मराज का यह वचन सुनके मैं उस से कहनेलगा कि हे यम इस मूर्त्तिको मैं बालूमें गुप्तकर दूंगा ७६ और हेदेवी वह मूर्त्ती मैंने बालूमें गुप्तकरदी

कि सुखकी इच्छावाले मनुष्य तहां उसे न देखें ७७ फिर सुवर्ण और वस्त्रोंसे आच्छादित अपनी पुरीको धर्मराजने दक्षिणदिशामें स्थापन किया ७८ ब्रह्माजी बोले कि हे मुनिजनो उस इन्द्रनीलकी मूर्त्तिको तिसविख्यात पुरुषोत्तम पवित्रस्थानमें गुप्त करनेके पश्चात् ७९ देवतोंके देव जनार्द्दनने जो कियाथा तिसे सम्पूर्ण लक्ष्मी के आगे कहनेलगे ८० और इन्द्रद्युम्नका गमन क्षेत्र का दर्शन प्रासाद अर्थात् महलका निर्मान अश्वमेध का यजन अर्थात् पूजन स्वप्नकादर्शन लवके उत्तरतीर्थ में काष्ठका दर्शन वासुदेवका दर्शन प्रतिमाओंका वर्णन निर्माण और विशेष करके सबका सुन्दर भुवनमें स्थापन और हे विप्रेन्द्रो यात्रा कालकल्पका कीर्त्तन मार्कण्डेय का चरित्र शंकरका स्थापन पांच तीर्थों का माहात्म्य शूलपाणी का दर्शन बड़का दर्शन बलदेव कृष्ण और सुभद्रा के दर्श रत्नका माहात्म्य नृसिंहके दर्शन व्युष्टिका कीर्त्तन अनन्त वासुदेवका दर्शन और गुणोंका कीर्त्तन श्वेत माधवका माहात्म्य स्वर्गद्वार का वर्णन इन्द्रद्युम्नका दर्शन स्नान तर्पण और समुद्र के स्नानका माहात्म्य पांच तीर्थोंका फल महाज्येष्ठी अर्थात् ज्येष्ठसुदी १५ को कृष्णाका स्नान पूर्णिमाकी यात्रा का फल विष्णुलोकका वर्णन तथा तिस क्षेत्रका वर्णन लक्ष्मीजीसे किया ८१।९१॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांपूर्ववृत्तांतवर्णनन्नामचतुःचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४४॥

पैंतीसवां अध्याय॥

मुनियोंने पूँछा हे भगवन् हम उस राजाकी शेषकथा को सुनने की इच्छा करते हैं कि उस राजाने उस सुंदर क्षेत्रमें जाके क्या किया १ ब्रह्माजीने कहा हे मुनि शार्दूलो तुम सुनो उस राजाके कियेहुये कर्मों और क्षेत्रों के दर्शनको वर्णन करताहूं २ उस राजाने उस विख्यात पुरुषोत्तम क्षेत्र जाके सुन्दरस्थानों और नदियों को देखा ३ जहां चित्रोत्पलानामसे विख्यात और सम्पूर्ण पापोंको हरनेवाली सुन्दर और पवित्र विन्ध्याचल पर्वतके पादसेनिकसीहुई एक नदी है ४ जो गंगाके समान पवित्र और महा स्रोतोंवाली दक्षिण दिशा को बहतीहुई पवित्र और नदियोंमें सुन्दर ५ दक्षिणदिशा के समुद्रकीस्त्री और सौपुत्रियोंसे शोभित महानदी है तिसके दोनों किनारों पर छोटे २ ग्राम और बड़े २ नगर बसते हैं ६ जो खेतियोंसे युक्त और मनोहर दीखते हैं ७ और वस्त्र आभूषणोंसे शोभित हृष्टपुष्ट मनुष्योंसे युक्त हैं उन ग्रामोंमें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र पृथक् २ अपने अपने कर्म्मों में स्थित और शान्त और शुभ लक्षणोंसेयुक्त दीखते हैं ८ और नागरपानको चाबने वाले और पुष्पोंकी मालाओंसे शोभित हैं वेदोंसे पूर्ण सुखी और षडङ्गको जाननेवाले अग्निहोत्रमें रत देव उपासना स्थित और सम्पूर्ण शास्त्रार्थमें चतुर और यज्ञ करनेवाले और क्रोध रहित ब्राह्मण वहां बसते

हैं९। १० चौपटके मार्गों राजमार्गों बनों और बगीचों में इतिहास पुराण वेद वेदाङ्ग और काव्य शास्त्र और कथाओंके आलापोंसे युक्त महात्मा उस देशमें स्थित हैं रूप यौवनसे गर्वित ११। १२ सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त पतले कटि स्थलवाली कमलसाखे और शरद्- ऋतुके चन्द्रमाके समान मुखवाली दीर्घनेत्रोंवाली सुंदर दर्शनोंवाली और सोनेके कंकणोंवालीसुन्दर वस्त्र यथा आभूषणोंसे युक्त और केलाके गाभ और पद्मके समान शोभावाली विद्याधरोंके समूहोंसेयुक्त सुंदर केशोंवाली और हारोंके भारसेयुक्त स्त्रियां वहांहैं १। १६ जो वी- णा मृदंग पणव और गोमुख आदि बाजोंको बजातीहैं १७ और शंख और नक्कारोंके शब्दों और बहुतप्रकार के मनोहर बाजोंसे आपसमें बिलास करतेहैं १८ इनके सिवाय अन्यगाने बजाने और नाचनेवाली और दिन रात्रिमें कामदेवसे मत्तस्त्रियां वहां स्थितहैं १९ निदान भिक्षु वैखानस शुद्ध स्नानक ब्रह्मचारी मन्त्रसिद्ध यज्ञ सिद्ध और वृत्तासिद्ध पुरुषोंसे सेवित२०उसपरमसुन्दर क्षेत्रको उस राजानेदेखा तिसके पीछे वह राजा विचार करनेलगा कि मैं सनातन भगवान् का आराधन करूँ २१ मैंने जानलिया है कि उस जगत्के गुरु परमदेव परोंसेभी परे सर्वेश्वर अनन्त अपराजित २२ विष्णु भगवान् का यह मनरूपी पुरुषोत्तम नामवाला क्षेत्रहै और कल्पके वृक्षके समान कामना देनेवाला यह बड़ वृक्ष स्थित है २३ इन्द्रनील नामवाली प्रतिमा आप

देवने गुप्त करदीहै और अन्य कोई सुन्दर मूर्त्ति बिष्णु भगवान्की नहीं देखती २४ इसलिये मैं यत्न करताहूं कि जिससे भगवान् प्रत्यक्ष मुझको दर्शनदें २५ फिर वह यह कहनेलगा कि मैं यज्ञ दान तप होम ध्यान देवार्चन और बहुत प्रकार के व्रतोंको करके सुन्दरकर्म करूंगा २६ और अनन्यमनसे अर्थात् तिसभगवान्हीमें मनको लगाके विष्णुका पूजन और बिन्यासको मैं करूंगा २७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसंवादेक्षेत्रदर्शनन्नाम पंचचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४५॥

छियालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहनेलगे कि वह राजा ऐसे विचारके उसने भगवान् के प्रसादकेलिये उस पुरुषोत्तमतीर्थ में स्थान बनवाना प्रारम्भकिया १ फिर उसराजाने सम्पूर्ण उत्तमशास्त्रों को जाननेवाले गुणियों को बुलाके और यत्नसे भूमीको शोधिके २ शास्त्रोंके जाननेवाले ब्राह्मणों मन्त्रियों बलवानों और बास्तुविद्याको जाननेवाले ब्राह्मणों ३ सहित सुन्दर मुहूर्त्तको देखकर और चन्द्रमा सहित सम्पूर्ण ग्रहोंसे श्रेष्ठ मुहूर्त्तमें पूजन प्रारम्भकिया ४ निदान जयमंगल शब्दों और बहुतप्रकार के मनोहर बाजों वेदोंके शब्दों और गीत इत्यादि सुंदर स्वरों ५ एवम् पुष्प धानकीखील अक्षत गन्ध और दीपकों करके और जलके भरेहुये घड़ोंसे सूर्य्यको अर्घ्य ६

और ब्राह्मणों को बिधि से दानदेकर अन्यराजाओं से कहनेलगा ७ कि आप सब शिलालेनेजाओ और शिलपकर्म के जाननेवाले कारीगरों को लेकर ८ बहुत बिचित्र और कन्दराओं से शोभित पर्वत को छेदन करके सुन्दर शिलाओं को ९ गाड़ियों आदिकोंमें जल्द लेआवो बिलम्ब न करो उनराजर्षियोंको जानेकी आज्ञा देकर १० फिर वह राजा अपने स्त्रियों पुरोहितों और भृत्यों से कहनेलगा कि तुम पृथ्वी के सम्पूर्ण राजाओं के पास जाकर उन्हें मेरी आज्ञाको सुनाओ कि इन्द्र-द्युम्नकी आज्ञासे तुम सब चलो ११।१२ निदान भृत्य राजाकी आज्ञापाकर १३ सम्पूर्ण राजाओंके पासगये वे राजा नौकरोंके वचनोंको सुनकर १४ इन्द्रद्युम्न के पास जल्द अपनी सेनासहित आये पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण और दो दिशाओं के बीच में रहनेवाले एवम् पर्वतों औरद्वीपोंमें रहनेवाले राजे रथों अश्वों हस्तियों प्यादों और धनसेयुक्त आतेहुये तिन राजोंको देखकर इन्द्रद्युम्न अपने मन्त्री और पुरोहितों सहित बोला कि हे मुनियो मैं आप सबोंसे एक प्रश्न करता हूँ कि १५। १९ इस भुक्तिमुक्ति के देनेवाले शुभ क्षेत्र में अश्वमेध यज्ञ और विष्णु का महल २० किस प्रकार से करूं इस चिन्तासे मेरा मन युक्त होरहाहै इससे आप जैसा कहोगे तैसेही मैं करूंगा क्योंकि २१ आप सबमेरे मित्र हो उस राजाके ऐसे वचनोंको सुनकर २२ सम्पूर्ण ने प्रसन्नहो मणी और रत्नों की वर्षा की अर्थात् तिसके

लिये बहुतसा द्रव्य २३ कम्बल मृगछाला रक्तवस्त्र सुंदर बिछौने मोती हीरा वैडूर्यमणि पद्मराग इन्द्र नीलमणि हस्ती अश्व श्वेत सिरसम और चने उड़द मूंग तिल श्यामक मधुर नीवार कुलुत्थक और बहुत प्रकार के अन्न सुन्दर चावल गौओंकेघृतके भरेहुये कलशे बहुतसा द्रव्य चन्दन इत्यादि अनेक बस्तुओंको दिया तिसके पीछे उस सम्पूर्ण सामग्री यज्ञकर्म्म को जानने वाले शास्त्रोंमें निपुण सम्पूर्ण कर्म्मोंमें चतुर ब्राह्मणों ऋषियों महाऋषियों देवऋषियों राजऋषियों आदि को देख ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थ यती शुद्धब्राह्मण और सम्पूर्ण अग्निहोत्र करनेवाले ब्राह्मणों आचार्यों शास्त्रों को पढ़ने पढ़ानेवालों सभाकेबैठनेवालों और बहुतसे शास्त्रोंमें चतुर शुद्ध मनुष्योंको इन्द्रनील राजा देखके अपने पुरोहित से कहनेलगा कि आप वेदोंके जाननेवाले ब्राह्मणोंको लाओ २४। ३३ और अश्वमेध यज्ञ करनेको सुन्दरदेश देखो राजाके वचनों को सुनके उन्होंने वैसाहीकिया ३४ तिसके पीछे मंत्रियों सहित राजाका पुरोहित चतुर मनुष्य और यती सब गये ३५ और यज्ञकर्म्म को जाननेवाले ब्राह्मणों को आगेकरके उस पुरोहितने भौंरोंसे सेवित तिस राजा की यज्ञ भूमिमें इनसबोंको प्राप्तकिया ३६ तिसके उपरान्त सोना और रत्नों से शोभित और सुन्दर भीतों और सोनेके थम्भोंसे युक्त मन्दिर बनवायागया ३७ और रसवाली ईख यव और गोरस ३८ इत्यादि बस्तुओं

को मँगवाके यज्ञकी आज्ञादी उस बुद्धिमान् राजाकी यज्ञ में ३९ बहुतेरे राजा बहुतसे मुनियों के गण ब्रह्मको कहने वाले और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ब्राह्मण ४० शिष्यों सहित सब आये और राजा ने उनका सत्कार किया ४१ जब राजा सबकेसंग यज्ञशालामें स्थितहुआ तब सब राजों यज्ञकेपतियों कारीगरों और सब मनुष्योंने यज्ञकी सम्पूर्ण विधियों को राजासे कहा और राजा उनके वचन सुनकर अति प्रसन्नहुआ ब्रह्माजी बोले कि उस यज्ञके प्रवृत्त होनेपर नियमितबाणी वाले हेतु के कहनेवाले हेतुके अनुकूल चलनेवाले और वैर से रहित ४२। ४५ वे राजे तिस इन्द्रद्युम्न राजाके बनवाये हुये मन्दिरको देखनेलगे ४६ और वहां तोरण कलश कड़ाह शय्या आस्पग और अर्द्धमानक आदि बहुतसे पात्र सम्पूर्ण सोनेकेही देखे ४७। ४८ उन्होंने सुन्दर यज्ञके स्तम्भोंको शास्त्रोंके प्रमाणसे स्थित और सोने से शोभित देखा ४९ और जल थलके समस्त जीव पशु और पक्षी तथा गौ भैंस आदि जरायुज अण्डज स्वेदज और जल से उत्पन्न हुये जीव और पर्व्वतों में रहनेवाले मनुष्यों और धनधान्यसे युक्त उस यज्ञ-शालाको देखके वे सब अति आश्चर्य्यितहुये ५०। ५३ उन्होंने देखा कि ब्राह्मण और वैश्य सम्पूर्ण वस्तुओं से युक्तहैं और लाखों ब्राह्मण भोजन करतेहैं ५४ और शंख दुन्दुभी आदिके शब्दों को सुनके तिस राजा के मनमें उत्साह होरहे हैं ५५ इसी प्रकार उस श्रीमान्

राजाकी यज्ञमें पर्वतोंके समान अन्नके समूहों ५६ दधि
के कुण्डों दूध और जलके तलावों तथा बहुतप्रकारके
मनुष्यों और ५७ स्वस्थ चित्तवाले ब्राह्मणोंको देखा
५८ बहुत से ब्राह्मण मणि माला और कुण्डलों को
धारणकिये और अन्नके पात्रोंको लियेहुये फिरते ५९
और सम्पूर्ण राजे उनको हज़ारों बस्तु देतेहुये दिखाई
दिये ६० निदान सुन्दर कुलमें होनेवाले और सब
गुणों से युक्त वेदके जाननेवाले अनेक ब्राह्मण और
राजे ६१ एवम् सुन्दर स्त्रियोंके समूह वहां प्रस्तुत दि-
खाईदिये निदान सब दिशाओं और देशों से आये
राजे नटों और नाचने गाने तथा स्तुतियोंको जानने
वाले ६२ और पुष्ट और ऊँचे पयोधरों कमलके पत्र
के समान नेत्रों ६३ और शरद्के चन्द्रमा के समान
मुखवाली सुन्दर स्त्रियोंके गणोंसे वह यज्ञस्थान अति
शोभितभया ६४ ध्वजाओं से शोभित रत्नोंके हारोंसे
युक्त और सुन्दर चन्द्रमाकी कांतिके समान रथोंकी
पंक्तियों ६५ बहुत बल और पर्वतोंके समान मदवाले
हस्तियोंके समूहों पवनके समान बेगवाले और धुक-
धुकी युक्त श्वेत कण्ठवाले अश्वों किरोड़ों मनुष्यों ६६।
६७ संजोवावालों काखोंको बांधनेवालों बहुतप्रकारके
शस्त्रोंको धारण करनेवालों और बहुत पियादोंसहित
६८ यज्ञकी सम्पूर्ण बस्तुओं को राजा ने देखा और
आनन्दहोके बोला ६९ कि हे राजपुत्रो तुम सुन्दर और
सब लक्षणोंसे युक्त अश्वों को लाओ और फिर मेरे

अश्वको पृथिवी में विचराओ ७० वेद और धर्म्म के जाननेवाले ब्राह्मणोंसे यहां होमकी तैयारी कराओ और कालीबकरी और कालेमृग ७१ बैल गौ और सबपशुओंको पालनेवालों को बुलाकर यज्ञको प्रवृत्तकरो फिर विष्णु का मंदिर बनाओ ७२ और स्त्री रत्नोंके समूह ग्राम नगर७३ सबऋद्धियोंसेयुक्त पृथिवी और बहुतसी जातके रत्न ये सबस्तु सम्पूर्ण मांगनेवालों को दो किसी को निराश न करो ७४ निदान जबतक मुझे भगवान् प्रत्यक्ष आनके न मिलें तबतक यज्ञ प्रवृत्तकरो ब्राह्मणों से इसप्रकार कहके उस राजाने बहुतसा सोनेका दान किया और किरोड़ों आभूषणों ७५।७७ सहित हज़ारों हस्ती और अश्वोंके समूह अर्ब बैल और सोना के शृंगवाली ७८ सुन्दर कामधेनुगौ और कांसीकी दोहनी आदि अनेकबस्तु ब्राह्मणोंको दानदी और कंचुकी युक्त पुष्ट कुचाओं पतली कमर सुन्दर जंघों और पद्म के पत्रके समान नेत्रोंवाली स्त्रियां जो कण्ठमें धुकधुकी भुजाओं में कंकण पैरोंमें पाजेबें पहिने और सुन्दर वस्त्रोंको धारण कियेथीं उन्हें मांगनेवाले ब्राह्मणों को तिस हयमेध यज्ञमें राजाने दिया एवम् खांड़ और पीठीके बहुत प्रकारके सुन्दर घेवर और मीठे पकेहुये पूये आदि अनेक भक्ष्य पदार्थ सब प्राणियोंको दिये और दियाहुआ धन और अन्न बढ़ताहीगया ७९।८५ निदान ऐसे महायज्ञ को देखके देवता दैत्य चारण गन्धर्व अप्सरा सिद्ध ऋषि और राजे ८६ सब आश्चर्य्य

को प्राप्तहुये उससमय पृथ्वीतलपर कोई मलीन भूखा और अकाल मरनेवाला मनुष्य न था काटने और ज़हरवाले जीव और मनुष्य न रहे उस महोत्सव में सबमनुष्य हृष्टपुष्ट होगये ८७। ८९ ऐसे वह राजा उस अश्वमेध यज्ञको समाप्त किया ९० ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेप्रासादकरणं नामषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

मुनिकहते हैं हे देव देवेश जो हम पूंछतेहैं सो आप कहो इन्द्रद्युम्न द्वारावेप्रतिमा कैसे रचीगईथीं १ और माधवभगवान् उसपर किसप्रकारसे प्रसन्नहुयेथे यह सब हमसेकहो हमको अति आश्चर्यहै २ ब्रह्माजी बोले कि हे मुनिशार्दूलो पुरातन और वेद संमित इस कथाको सुनो हमप्रतिमाओंकी उत्पत्तिके पुराने वृत्तान्तको कहेंगे ३ जब वह महायज्ञ प्रवृत्तहुआ और पुरुषोत्तम देवका मन्दिर रचागया तब राजाप्रतिमाके स्थापनका रातदिन चिन्तवन करनेलगा ४ कि न मैं अम्बिकाको देखताहूँ न देवेश इन्द्रको देखताहूं और न ब्रह्माको देखता हूं मैं तो केवल एक पुरुषोत्तम भगवान्‌को रचना स्थिति औरसंहारका करनेवाला देखताहूं ५ निदान वह राजा दिन रात्रि चिन्ता युक्तहो अनेक प्रकारके भोगोंको त्यागबैठा ६ और सुन्दर गन्धों श्रेष्ठगायकों मदसे युक्त हस्तियों दशहज़ार घोड़ों ७ इन्द्रनीलमणि महानील

मणि पद्मराग सुवर्ण और हीरेआदिके आभूषणों ८ तोतों मैंनाओं और आकाशमें उड़नेवाले अनेक पक्षियोंसे उसका मन प्रसन्न न हुआ ९ वह इसी चिन्तामें रहा कि पृथ्वीमें प्रशस्त और सब लक्षणोंसे युक्त विष्णु कीही प्रतिमाहै १० और इन तीन प्रतिमाओंके पति और देवताओंसे पूजित प्रतिमा स्थापितहो तब भगवान् प्रसन्नहों निदान इसप्रकार बिचारकर और ११ पंचरात्री का विधानकर पुरुषोत्तम का पूजनकरके वह महीपाल स्तुति करनेलगा कि १२ हे वासुदेव मोक्षके देनेवाले आपको नमस्कारहै हे सर्वलोकेश जन्मसंसार सागरसे मेरी रक्षाकरो १३ हे निर्मलकांतिवाले हे पुरुषोत्तम हे संकर्षण आपको नमस्कारहै हे धरणीधर मेरी रक्षाकरो १४ हे पुरुषेश्वर हे रतिकान्त हे असुरान्त आपको नमस्कारहै १५ हे अंजनसंकाश हे भक्तवत्सल हे अनिरुद्ध आपको नमस्कारहै मुझ शरणागत आये की आप रक्षाकरो १६ हे बिबुधश्रेष्ठ हे कमलोद्भव हे चतुर्मुख हे जगद्धाम हे प्रपितामह आपको नमस्कार है मेरी रक्षाकरो १७ हे नीलमेघाभ हे त्रिदशार्चित आपको नमस्कारहै मुझ भवसागरमें डूबेहुयेकी रक्षा करो १८ हे प्रलयकी अग्नि के सदृश कान्तिवाले हे दितिजांतक हेनरसिंह हेदीप्तलोचन आपको नमस्कार है मेरी रक्षाकरो १९ जैसे पहले आपने रसातल से पृथ्वीका उद्धारकियाहै तैसेही हे महावराह इस दुःखसागरसे मेरीभी रक्षाकरो २० हे कृष्ण मैंने वरके देने

वाली आपकी मूर्त्तिकी स्तुतकी है और आपही बल-
देव आदिक जुदेजुदे रूपोंसे स्थित हो २१ हे देवेश
गरुड़ आदिकभी आपकेही अंगहैं और दिक्पाल तथा
इन्द्र आदिक २२ आपहीके भेद बुद्धिमानोंने कहेहैं हे
जगन्नाथ वे भेदभी सब २३ मुझसे अर्चित और स्तु-
त किये हैं और तैसेही आपको नमस्कारहै २४ आप
मुझको धर्म्म काम अर्थ और मोक्षको देनेवाला वर
दो २५ हे हरे आपके जो संकर्षण आदिक भेद कहेहैं
सो तेरीपूजाके सम्बद्धके वास्तेहैं २६ हे देवेश परमार्थ
से आपके भेद नहीं हैं और आपके अनेकप्रकारके रूप
किसीकिसी उपचारके वास्तेहैं २७ अद्वैतरूप आपको
मनुष्य द्वैत कहनेमें कैसे समर्त्थहैं हे हरे हे व्यापी हे
विश्वभाव हे निरंजन आप एकहीहो २८ और आपका
भावाभावसे बिवर्जित परमरूप है आप निर्लेप सूक्ष्म
कूटस्थ अचलध्रुव २९ सर्वोपाधि से विनिर्मुक्त सत्ता-
मात्र व्यवस्थित आप को देवते भी नहीं जानते हे
प्रभो मैं कैसे जानूँ ३० एवम् आपके पीताम्बर और
वस्त्रोंवाले शंख चक्र गदा ३१ मुकुट और बाजूबन्द
धारणकिये और श्रीवत्स चिह्न से युक्त और बनमाला
से विभूषित ३२ चतुर्भुजरूपको आपके आश्रय बुद्धि-
मानजन पूजतेहैं ३३ हे देव सर्व हे सुरश्रेष्ठ हे भक्तोंको
अभयदेनेवाले चारुपद्माक्ष विषयसागर में डूबेहुये की
रक्षाकरो ३४ विषयरूपीजलसे दुष्पार रागद्वेषसे समा-
कल इन्द्रियोंके आवर्त्तोंसे गम्भीर शोकसे समाकुल ३५

निराश्रय निरालम्ब निस्सार और अत्यन्त चञ्चल संसारमें मैं बहुतकालसे भ्रमताहूं ३६ और हज़ारों योनियोंमें मैंने कईहज़ारबार जन्मलियाहै ३७ हे जनार्दन इससंसारमें अनेकप्रकारकेजीवहैं मैंने अंगोंसहित वेद शास्त्र ३८ इतिहास पुराण और शिल्पविद्यापढ़ेहैं और असंतोष संतोष संचयखर्च ३९ क्षय इत्यादिक बहुत प्राप्तहुयेहैं स्त्री मित्र बन्धु आदिकावियोग तथा संगम ४० और अनेक पिता माता और दुःख सुख मुझको प्राप्तहुये हैं ४१ आत्मा बांधव पुत्र भ्राता आदि भी मैं हो चुकाहूं और विष्ठा और मूत्र से दूषित स्त्रियों के उदरमें भी मैंने बासकियाहै ४२ हे प्रभो मुझको गर्भबास में अति दुःखप्राप्तहुआहै बालकअवस्था यौवन और वृद्धअवस्थामें जो दुःखहोतेहैं ४३ वे सब प्राप्तहुये हैं और मरणसमयके दुःख और यमकेमार्ग में जो दुःख होतेहैं ४४ वे सब मुझको नरककी यातनामें प्राप्त हो चुकेहैं कृमिकीट पतंग हाथी अश्व मृग पक्षी ४५ महिषी गौ और द्विजाती और शूद्र आदि योनियों ४६ तथा धनवाले क्षत्री पवित्रजन तपस्वी नृप भृत्य तथा अन्य देहधारियों ४७ के घरमें मैं बारम्बार उत्पन्नहुआ हे नाथ मैं बहुतसे नृपोंकाभृत्य दरिद्री ऐश्वर्य्यवाला तथा स्वामीहुआहूं ४८ कितनोंको मैंने हतकिया और कितनों से मैं हतकियागया अन्योंने मेरेलिये और मैंने अन्यों केलिये बहुत धनदिया ४९ और पिता माता भ्राता स्त्री के कर्त्तव्यमें युक्तहुआ कहीं कहीं प्राप्तहुआ निदान

देव पशु मनुष्य स्थावर जंगम ५० में ऐसा स्थान नहीं है जहां मैं न गयाहो हे जगत्पते कभी तो मेरानरकमेंबास हुआ कभीस्वर्गमें बासहुआ ५१ कभी मनुष्यलोकमें और कभी पशु आदिक योनियोंमें बासभया जैसे घट बनानेमें कभी तो चक्र निबन्ध नीरज्जु ऊपर को प्राप्त होतीहै और कभी मध्यमेंप्राप्तहोतीहै तैसेही कर्म्मरज्जु के आश्रयहुआ मैं क्रमसे नीचे ऊपर और मध्यमें प्राप्त हो ऐसे भयंकर रोमहर्षण संसारचक्रमें बर्त्तताहूँ ५२। ५४बहुतकालतक मैं भ्रमाहूँ पर आपको कभी न देखा व्याकुलइन्द्रियोंवाला मैं अब नहीं जानता कि क्याकरूं ५५ हे देव शोकदृष्टिसे युक्तहुआ मैं विचेतन हो रहा हूँ और आपकी शरणहूँ ५६ हे कृष्ण संसारसागरसे दुःखित मुझको आपरक्षितकरो और हेजगन्नाथ मैं आप का भक्तहूं आपमेरीरक्षाकरो ५७ आपकेसिवाय मेरेकोई बन्धुनहींहै पर हे देव ईश्वररूपी आपको प्राप्तहोके मुझ को कुछभयनहींहै ५८ हेप्रभो जीवन मरणयोग औ क्षेममें जो अधमनर आपका पूजन नहीं करते ५९ वे संसार बन्धनसे स्वर्गकी गतिको कैसे प्राप्तहोवेंगे और उनको कुलशीलता विद्या और जीवन से क्याहै ६० जिनकी भक्तिजगद्धाता केशव भगवान्में नहींहै और जो आप की मायाको प्राप्तहोके आपकी निन्दाकरते हैं वे बार-म्बारजन्मलेतेहुये घोरनरकमें पड़तेहैं और तिसनरका-र्णवसे उनका निकसना नहीं होता ६१। ६२ जो दुष्ट वृत्तिवाले मनुष्य आपमें दूषणनिकासतेहैं वे इस सं-

सार से नहीं छूटते ६३ हे हरे कर्म निबन्धसे जहां २
मेराजन्महो तहांही आपकी मुझे दृढ़ भक्तिरहै ६४ आप
का आराधन करके अनेक दैत्य और नियमवाले म-
नुष्य परमसिद्धिको प्राप्तहुयेहैं इसलिये हेदेव आपका
पूजन किसीसे अभिलषित नहीं है ६५ हे हरे ब्रह्मादिक
देवते भी आपकी स्तुति करनेमें समर्थनहीं हैं तो प्रकृति
से परे आपकी स्तुति मनुष्यबुद्धिसे मैं कैसे करूं ६६ हे
प्रभो अज्ञभावसे जो कुछ मैंने कहाहै उसे आपने हृदामें
दयाकेकारणक्षमाकरो ६७ क्योंकि हे हरे श्रेष्ठ पुरुष अ-
पराधियोंपर भी क्षमाकरते हैं इसलिये हे देवेश आप
मुझपर प्रसन्नहो मैं आपका भक्तहूँ हेदेवेश जो मुझको
६८। ६९ भक्तिभाव चित्तसे कहा है वह सब सम्पूर्ण
हो हे वासुदेव आपको नमस्कारहै ७० ब्रह्माजीने कहा
कि इसप्रकार स्तुति करने से भगवान् गरुड़ध्वज ने
उसको सब मन बांछित बरदिया ७१ जो जगन्नाथ
का पूजन करके इसस्तोत्रसे स्तुतिकरैगा वह मतिमान्
पुरुषनिश्चय मोक्षको प्राप्तहोवेगा ७२ और जो वि-
द्वान् इसस्तोत्रको त्रिकाल पवित्रहोके जपैगा वह धर्म
अर्थकाम और मोक्षको प्राप्तहोजावेगा ७३ जो इसे
पढ़ै अथवा सुनै सुनावैगा वह पापों से रहितहोके वि-
ष्णुके अचल स्थानको प्राप्तहोजावेगा ७४ यह धन्य
पापहर मुक्तिप्रद कल्याणरूप गुह्य दुर्लभ और पुण्य
स्तोत्र ७५ नास्तिक मूर्खकृतघ्नी अभिमानी दुष्टबुद्धि-
वाले और अभक्तपुरुषों को न देना चाहिये ७६ इसे

तो केवल गुण और शीलसेयुक्त विष्णुभक्त शांतश्रद्धा से युक्त चतुर पुरुषों को देना चाहिये ७७ समस्तपापों के विनाश हेतु कारुण्य स्वाभाविक सुखमोक्ष और अशेष वांछित फलप्रद यह पुरुषोत्तम भगवान्‌का स्तोत्र कहाहै ७८ जो मनुष्य उससूक्ष्मरूप विमलकांतिवाले और नित्य पुराणपुरुषका ध्यान करतेहैं वे मुक्तिके अधिकारीहो विष्णुमें इसप्रकार प्रवेशहोजातेहैं जैसे आद्यमन्त्र यज्ञकी अग्निमें ७९ वह संसार के दुःख हरनेवाला देव एकही है और परमपरहै अन्य नहीं है वह रचना स्थिति और संहार करनेवाला विष्णु समस्त संसारमें सारभूतहै ८० उन्हें गुण यज्ञ दान और उग्र तपसे क्याहै जिनकी भक्ति जगत्‌के गुरु सुख और मोक्षके देनेवाले श्रीकृष्णमें है ८१ लोकमें वही धन्य हैं वही शुचिहैं वही विद्वान्‌हैं वही यज्ञ तप और गुणों में अति श्रेष्ठहैं और वही ज्ञाता दाता और सत्यवक्ता हैं जिनकी भक्ति पुरुषोत्तम भगवान् में है ८२ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसंवादेकारुण्यस्तव नामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अरतालिसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे मुनि शार्दूलो इसप्रकार सनातन और सर्वकाम फलप्रद जगन्नाथकी स्तुति और प्रणामकरके वह राजा १ चिन्तायुक्तहो पृथ्वीपर कुशाओं और वस्त्रोंको बिछाकर बैठगया और भगवान् में

मनलगा २ यह चिन्तवन करनेलगा कि देवदेव जनार्दन हरिभगवान् मुझको कैसे प्रत्यक्षदर्शनदें ३ निदान जगत् गुरु वासुदेव ने स्वप्नमें उसे दर्शनदिये ४ और चारो हाथों में शंख चक्र गदा और पद्म धारणकिये जगत्के गुरुदेवको राजाने देखा ५ तब वह शार्ङ्गधनुष और खड्गसे उग्रतेज और प्रकाशमान मण्डल तथा सूर्य्य और नीलमणि के समान कांतिवाले ६ भगवान् सुवर्ण के आसनपर बैठे और अष्टभुजी मूर्त्ति धारण किये उस राजासे बोले कि हे महामते ७ इस श्रद्धापूर्वक दिव्ययज्ञ से मैं तुझपर प्रसन्नहुआ अब तू वृथा शोचक्योंकरताहै ८ हे राजन् जो तू यहां सनातनी राजपूज्या प्रतिमाकी बांछा करताहै तो मैं उसका उपाय कहताहूँ जिससे तू अपनी बांछाको प्राप्तहोजावेगा ९ जब रात्रीव्यतीतहोजावेगी और निर्मलसूर्य्योदयहोगा तबअनेक प्रकारके वृक्षोंसे शोभित समुद्रके तटके समीप १०तिसलवणोदधि समुद्रसे जलबहेगा पर ११कोलालंघीमहावृक्ष समुद्रकी वेलासे हन्यमानहुआ भी न कांपैगा १२ हे राजन् उससमय तू हाथमें कुहाड़ालेकर गमन करियो तो अकेला विचरताहुआ तू उसवृक्षको देखैगा १३ निदान इनचिह्नों को देखके अशंकित हो दिव्यप्रतिमा बनाना १४। १५ ऐसे कहके जब हरिभगवान् अन्तर्द्धान होगये तब वह राजा इसस्वप्नको देख परमआश्चर्य्यको प्राप्तहुआ १६ निदान रात्रीमें तो हरिभगवान्में मनलगाये वैष्णवसूक्तका पाठकरता

रहा १७ और प्रभातहुये यथावत् विधानसे समुद्रमें स्नानकर १८ और ब्राह्मणोंके लिये ग्राम तथा नगरों का दान दे एवम् पूर्वाह्णिक कर्म्मकरके अकेला समुद्रके तटपरगया और अति तेजमान मोटी पेड़ी बिन और महान् शाखोंवाले १९।२१ ऊँचे और जलकेबीचमें स्थित करड़ा मंजीठ के वर्णकेसमान कांतिवाले और अपनीजाति और नामसे विराजित २२ विष्णुके उस पुण्य वृक्षको देखकर प्रसन्न हुआ फिर सफेद कान्तिवाले और दृढ़ कुहाड़े से उसे छेदन करनेलगा २३ जब उसने बीचसे छेदन करनेकी मतिकी तब निरीक्ष्यमाण उस काष्ठमें उसे अद्भुत दर्शनहुये २४ तब तेजसे प्रकाशमान और दिव्यमाला तथा गन्ध अनुलेपनकिये २५ दो महात्मा इन्द्रद्युम्न राजाके पास आकर बोले कि हे महाराज यहां तू क्या करताहै २६ और किसलिये तू इस महादुर्गम निर्जन गहनबनमें २७ इस समुद्रके किनारे इस वृक्षको काटता है राजा उनके वचन सुन और प्रसन्नहो २८ चन्द्रमा और सूर्य्यकी नाईं आये हुये उन ब्राह्मणों को देख जगन्नाथ को नमस्कार कर नीचे शिर झुकाकर बोला कि ब्राह्मणो अनादि और अनन्त जगत्पति देवदेवके आराधनके लिये मैं इसकी मूर्त्ति बनाऊंगा २९।३० देवदेव महात्मा भगवान्ने मुझको आज्ञादी है इसलिये मैं यहां आयाहूं ३१ राजा के ऐसे वचन सुनके वे दोनों हँसके उससे बोले ३२ कि हे महीपाल तुझको धन्यहै और तेरा यह विचार बहुत

उत्तमहै कदलीदलके समान निस्सार ३३ बहुत दुःखों से युक्त काम क्रोधसे समाकुल इन्द्रियोंके आवर्त्तसे गंभीर दुस्तर रोमहर्षण ३४ सैकड़ों व्याधियोंके आवर्त्त घिरे जलके बुलबुलेके समान ३५ घोर संसार सागर से जो तेरीमति विरक्त होकर विष्णु भगवान्के आराधनमें लगी है इसलिये तुझको धन्यहै ३६ हे नृप शार्दूल तुझको धन्यहै तू अवश्य प्रजाका पालन करैगा हे महाभाग तू तो इस वृक्षकी शीतल छायामें धर्म्मकी कथाओंसे संश्रितहमारे संग स्थितहो और शिल्पकर्म्म वालोंमें श्रेष्ठ यह ब्राह्मण जो मेरे महायोगसे प्राप्त हुआ है ३७। ३८ सब कर्म्मोंमें साक्षात् विश्वकर्माके समान है सो तेरे उद्देशके अनुसार प्रतिमा बनादेगा ३९ उस ब्राह्मणके वचनको सुनके ४० वह सागरके तटको त्याग उसके समीप सुन्दर शीतल वृक्षकी छायामें जाबैठा ४१ और उस शिल्पसे मूर्त्तिकी आकृतिको वर्णनकरनेलगा ४२ कि तू तीन प्रतिमाओंको बना एकतो कृष्णरूप परम शान्त पद्मके पत्रके समान विस्तारित नेत्रोंवाली श्री वत्सचिह्नसे युक्त और कौस्तुभमणि शंख चक्र गदा और पद्मको धारण कियेहुये हो ४३। ४४ श्रीकृष्णकी मूर्त्ति बना दूसरी गौर गौके दूधके सदृश और स्वास्तिकसे युक्त हलको धारण करनेवाली अनन्ताख्य महाबलवाले बलदेवकी मूर्त्ति बनाओ ४५ देव गन्धर्व यक्ष विद्याधर उरग इत्यादिकों से उसका अन्त नहीं जानागया इस वास्ते उसको अनन्तदेव कहते हैं ४६ और सुवर्ण के

समान शोभित और सब लक्षणोंसे युक्त वासुदेव श्री कृष्णकी बहिन सुभद्रा नामवाली तीसरी मूर्त्ति बनाओ
४७ निदान शिल्पकर्मोंको जाननेवाला विश्वकर्माराजा केवचनसुनके तिसीक्षण शुभ लक्षणोंवाली प्रतिमाओं को बनानेलगा ४८ और प्रथम उसने विचित्रकुण्डलों से अलंकृतकानों और हलसेयुक्तसुंदर हाथोंवालीशुक्ल वर्ण और शरदऋतुके चन्द्रमाकेसमान कांति तथा महा- नूकायावाली फणोंसहित विकट मस्तक और नीलशस्त्र तथा नीलवस्त्रों को धारण कियेहुये बलदेवजी की मूर्त्ति बनाई एक कुण्डलको धारण किये और दिव्य और सु- न्दर आभूषणोंसे युक्त नीले मेघके समान कांतिवाली दूसरी मूर्त्ति श्रीकृष्णकी बनाई और अलसीके पुष्पके समान कांति पद्मके पत्रके समान बिस्तारित नेत्रों और पीले वस्त्रों से युक्त अति उग्र शुभ श्रीवत्स लक्षणयुक्त चक्रसे पूर्णहस्तोंवाली और सबपापोंको हरनेवाली यह दूसरी मूर्त्तिबनी ४९।५४ तीसरी मूर्त्ति सुवर्णके समान कांति और पद्मके पत्रसमान नेत्रोंवाली विचित्र वस्त्रों को ओढ़ेहुये और हार बाजूबंद आदि आभूषणों को पहिने भूषित विचित्र गहनोंसे युक्त और रत्नोंके हारसे भूषित और भारी तथा ऊंची कुचाओंवाली सुभद्राकी मूर्त्ति उस विश्वकर्म्माने रची ५५।५६ उन प्रतिमाओं को दिव्य बस्त्रोंको पहिने अनेक रत्नोंसे अलंकृत और सब लक्षणोंसे सम्पन्न सुन्दर और मनोहर प्रतिमाओं को देख वह राजा ५७।५८ परमविस्मय को प्राप्तहो

बोला कि आप दोनों ब्राह्मणका रूप धारण करके अद्भुतकर्मा और देवताओंके समान आचरणवाले कौन हो ५९। ६० देवहो अथवा मनुष्यहो आप दोनों किस विधानको धारण करनेवालेहो ब्रह्मा विष्णु अथवा अश्विनीकुमारहो ६१ मायासे संस्थित आपकी मैं शरण हूं आप मेरे आगे अपनी आत्माको प्रकाशितकरो६२॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयंभूऋषिसंवादेनामअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उनचासवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहनेलगे कि फिर वे बोले कि मैं देव नहीं हूं और न यक्ष दैत्य न दैत्यराट् न ब्रह्मा व रुद्रहीहूं मुझको तू पुरुषोत्तम भगवान्‌जान१ सब लोकोंकी पीड़ाको दूरकरनेवाला अनन्तबल और पुरुषार्थवाला समस्त भूतों से पूजनीय अनन्त २ और जो सब शास्त्रों तथा वेदांतमें ध्यान गम्य कहा जाताहै और योगी जिसे वासुदेव कहते हैं ३ वह मैंहीं आप ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्र और यम संयमनहूँ४पृथिवी आदि पञ्चमहाभूत तीन अग्नि और जलोंका पति बरुण धरणी महीधर ५ ये सब और जगत्‌में जो कुछ स्थावर जंगम चराचरहैं सो मुझसे अन्यकिंचित् भी नहीं हैं ६ हे नृप मैं तुझपर प्रसन्नहूँ हे सुव्रत तू बरमांग और जो तुझको वांछित है तिसको तो मैं अपने हृदयमें यत्नसे देखताहूँ ७ पुण्य से रहित पुरुषोंको मेरे दर्शन स्वप्ने मेंभी नहीं होते पर

तू दृढ़ भक्तिकेकारण मुझको प्रत्यक्ष देखताहै ८ हे द्विजो वह राजा वासुदेव के यह वचन सुन रोमांचित हो इस स्तोत्र को कहनेलगा ९ हे लक्ष्मीपति पीताम्बरधारण करनेवाले लक्ष्मीको देनेवाले श्रीनिवास और श्रीनिकेतन आपको नमस्कारहै १० हे आद्यपुरुष हे ईशान हे सर्वेश सर्वतोयम् निष्कल आप पुरातन परमदेवको मैं प्रणाम करताहूँ ११ आप शब्दातीत गुणातीत भाव विवर्जित निर्लेप निर्गुण सूक्ष्म सर्वज्ञ सर्वभावन १२ वर्षा समयके मेघ समान कांतिवाले औ गौ ब्राह्मणके हित मङ्गलरूप सबके गोप्ता व्यापी और सर्वभावी १३ शंख चक्र गदा मुशलको धारण करनेवाले देवको नमस्कार है १४ आप वर देनेवाले नीले पद्मके समान कान्तिवाले नागकी शय्या पर शयन करनेवाले और क्षीरसागरमें वास करनेवाले आपको नमस्कार है १५ सब पापों के हरनेवाले हृषीकेश हरि आपको मैं नमस्कार करता हूँ हे देवेश वरकोदेनेवाले विभु १६ और सर्व्वलोकेश्वर विष्णु मोक्षके कारण आपको नमस्कार है १७ इसप्रकार वह राजा उसदेवकी स्तुतिकर और अंजली बांधके प्रणामकर नम्रहो पृथिवी में गिरकर बोला १८ कि हे नाथ जो आप मुझपर प्रसन्नहुयेहो तो मैं यह उत्तमवर मांगताहूँ कि देव गन्धर्व यक्ष राक्षस दैत्य उरग सिद्ध विद्याधर साध्य किन्नर गुह्यक और महाभागवाले यति ज्ञानी और योग और वेद केतत्त्वको जाननेवाले एवम् अन्यमोक्ष शास्त्रको जाननेवाले आपके जिस परमपदका ध्यान करतेहैं १९।२१

तिसनिर्मल निर्गुण शान्त गुह्य परमपवित्र और दुर्लभ पदको मैंभी प्राप्त हूँ २२ भगवान् बोले कि हे राजन् तेरा जो बाञ्छित है वह सब मेरे प्रसादसे होजावेगा इसमें सन्देह नहीं २३ प्रथम तो तू दशहज़ार नौसौ बर्षतक अव्युच्छिन्न अर्थात् निष्कण्टकराज्य करेगा २४ फिर देवता और दैत्योंको दुर्लभ मेरे परमपदको प्राप्त होवेगा और तेरा मनोरथ पूर्णहोगा गुह्य अव्यय परम सूक्ष्म और निर्म्मल निश्चल ध्रुव बुढ़ापों और शोकसे रहित और कारणसे बर्जित अपने परमपदको मैं तुझ को दिखाऊँगा जिस परमानन्दको प्राप्तहोकर तू परम गतिको प्राप्तहोजावेगा २५।२७ हे राजेन्द्र तेरीकीर्त्ति पृथ्वीतलमें पावन चराचर लोक सूर्य्य चन्द्रमा और तारागण रहेंगे तबतक रहैगी २८ समुद्र पर्वत मेघ और स्वर्ग्गलोक में देवते ये रहेंगे २९ तबतक इन्द्रद्युम्न नामवाला और यज्ञांगसे सम्भव यह तीर्त्थ रहेगा ३० जहां मनुष्य एकबार स्नानकरनेसे इन्द्रके लोकमें प्राप्त होजावेंगे इस सुन्दर सरोवर तटपर जो पिंडोंका दान करैगा ३१ वह इक्कीस कुलोंको उद्धारकरके इन्द्रलोक में प्राप्तहोगा ३२ और अप्सराओं से पूज्यमान और गन्धर्वोंके गानोंसे युक्त बिमानमें स्थितहो जितनेसमय चौदह इन्द्र राज्यकरेंगे तबतक स्थित रहैगा ३३ उस सरोवरके दक्षिणभागके नैर्ऋत्यकोणमें जो एक बड़का वृक्षहै तिसके समीप एक सुन्दर मण्डपहै ३४ जो केतकीके वनसे आच्छादित और नारियल चम्पाके वृक्ष वकुल अशोक कर्णिकार पुन्नाग केशर पाटला सरल

वृक्ष चन्दन देवदारु बड़ पीपल खैर पारिजात खजूरि हिंताल ताड़वृक्ष शीसम सहोंजना करंजुआ बहेड़ा आदि वृक्षोंसे शोभितहै ३५। ३८ आषाढ़में शुक्लपक्षकी पंचमीके दिन जब मघा नक्षत्र हो तबसे सातदिनतक उस मन्दिरमें जो देवताओंकी सुन्दर क्रीड़ाओंसे स्थापन करेंगे और नृत्य और मनोहर गीतोंको गाकर चवँर और रत्नोंसे भूषित पंखे हमारेऊपर डुलावेंगे एवम् जो ब्रह्मचारी यती पवित्र ब्राह्मण वानप्रस्थ सिद्ध तथा अन्य ब्राह्मण अनेकप्रकारके मंत्रों स्तोत्रों और ऋग् यजु और सामवेद के शब्दोंसे बलदेव और श्रीकृष्ण की भक्तिपूर्व्वक प्रणाम और दर्शन करेंगे वे दिव्य दशहज़ार वर्षोंतक श्रीमान् हरिकेपुरमें बसेंगे ३९। ४५ अप्सराओं से पूज्यमान और गन्धर्वोंके गीतोंके शब्द को सुनतेहुये हरिभगवान्के अनुचरहोके भगवान् के संग क्रीडा करेंगे ४६ और सूर्य्यके समान कान्तिवाले और रत्नोंसे जड़ेहुये विमानमें बैठेहुये तीनोंलोकों से उत्तम स्थानमें वासकरेंगे ४७ जब उसका तपक्षीण होजाताहै तब ये संसारमेंआके ब्राह्मणहोतेहैं और किरोड़पति श्रीमान् तथा चारवेदोंको जाननेवाले होते हैं ४८ ऐसे वे हरिभगवान् उसको वरदेके विश्वकर्म्मासमेत अन्तर्द्धानहोगये ४९ और राजाने भगवान्के दर्शनहोनेसे अपनी आत्माको कृतकृत्य माना ५० फिर श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्राको मणि और सुवर्णसे चित्रित औरविमानके समान रथमें बैठाके ५१ जय मंगल शब्दों को करतेभये पुरोहितों सहितलाया ५२ और अनेकप्रकार

के बाजों और वेदोंके शब्दोंसे पवित्र और मनोहरदेश में ५३ शुभतिथी और सुन्दर मुहूर्त्तमें ब्राह्मणों सहित प्रतिष्ठाकी ५४ और यथोक्त विधानसे दक्षिणा आदि बांटनेलगा ५५ इसप्रकार विधिवत् उसउत्तमप्रासाद अर्थात् मन्दिरमें प्रतिष्ठा और विधिदृष्ट कर्म्म करके स्थापनाकर ५६ अनेकप्रकारके पुष्प और सुगन्धियों से पूजन करके उस राजाने सुवर्ण मणि मोती अनेक प्रकारके सुन्दर वस्त्र और अनेकप्रकार के दिव्य रत्न देश और अपनेपुत्र और नगरोंका दानदिया ५७।५८ इसप्रकार विधिसे बहुतकाल तक अनेक राज्यकर अनेक यज्ञोंको ठान और अमित दानदेके वह राजा कृतकृत्य हुआ और सब वस्तुओं को त्यागके परमपदमें किया इतना सुन मुनियों ने प्रश्नकिया कि हे सुरश्रेष्ठ पुरुषोत्तम उस तीर्थमें किसकालमें जानाचाहिये और किसविधिसे पांचो तीर्थोंकी यात्राकरनी चाहिये ५९। ६१ आप एक२तीर्थके स्नान दानका जो फलहोताहै और जिस देवता के दर्शनका जो फल होताहै उसका विस्तारपूर्वक पृथक्२वर्णन कीजिये ६२ ब्रह्माजीबोले कि जो फल कुरुक्षेत्र में निराहार और जितेन्द्रिय हो सातवर्ष तक एक पैरसे तप करने में होताहै वह फल केवल एकबार द्वादशीकेदिन पुरुषोत्तम देवके दर्शनसे होताहै और उसदिन यदि उपवासकरे तो तिस्से भी अधिक फलप्राप्तहो ६३।६४ इसलिये हेमुनिश्रेष्ठो स्वर्गलोककी इच्छावाले मनुष्योंको पुरुषोत्तम भगवान्के दर्शन ज्येष्ठके महीनेमें यत्नकरके करनेचाहिये ६५ जो

मनुष्य शुक्लपक्षकी द्वादशीके दिन अविनाशी पुरुषोत्तम भगवान् के दर्शन करतेहैं ६६ वे विष्णुके लोकमें प्राप्तहोके कदाचित् फिर पृथ्वीलोकमें नहींआते इसलिये हे द्विजो ज्येष्ठके महीने में वहां जाके पंचतीर्थों और पुरुषोत्तम भगवान् के अवश्य दर्शनकरै जो दूर स्थित मनुष्य भक्तिपूर्वक पुरुषोत्तम भगवान् का ध्यान करतेहैं ६७।६८ वेभी दिन प्रतिदिन शुद्धात्मा होके जा विष्णुभगवान्के पुरमें प्राप्तहोतेहैं ६९ श्रद्धासे समाहित हो जो श्रीकृष्ण भगवान्की यात्राकरतेहैं वेभी सबपापों से छुटके विष्णुलोकको जाते हैं ७० जगन्नाथ भगवान्के मन्दिरपर स्थितचक्रको दूरसे देखकर जो मनुष्यभक्तिसे प्रणाम करते हैं वे तत्कालही पापोंसे छूटजाते हैं ७१॥

इति श्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयंभूऋषिसंवादोनाम एकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

पचासवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे मुनिश्रेष्ठो जब महाक्षय प्रवृत्तहुआ और सूर्य्य चन्द्रमा पवन स्थावर जंगमसब नष्टहोगये तब कल्पका अन्तहुआ १ जब प्रलयरूपी सूर्य्य उदयहोके प्रचण्डहुआ और उत्पातघातसे भग्न हुये पर्वतोंमें इकट्ठेहुये २ लोकों सूकेहुये पर्वतोंके अग्र भागों और समुद्र तथा नदियोंमें ३ संवर्त्तक नामवाला कालरूप अग्नि वायु सहित विचरने और सब लोकों में प्रवेश करनेलगा और पृथ्वीलोक को हननकरके रसातल में प्राप्तहो देवदानव और यक्षोंको महान्भय उत्पन्नकिया ४।५ निदाननागलोकको दग्धकरके जो

कुछ दृश्य पदार्थ थे तिनको भी क्षणमें नाश करदिया और बीसहज़ार कईसौ कोशोंकेबीचमें एकबारगी वह संवर्त्तक अग्नि और वायु दग्धकरनेलगा ६।७ जिससे देवते असुर राक्षस आदि सब दग्ध होनेलगे ८ फिर जब यह कल्पाग्नि महाभयंकर प्रदीप्तहुआ तब मोह फांसियोंसे छुटाहुआ और भूख तृषासे व्याकुल इन्द्रियोंवाला ९ मार्कंडेयमुनि तिस महावह्नि को देखभयसे विह्वलहोगया और कण्ठ ओष्ठ और तालु उसके सूखगये १० पश्चात् वह पृथ्वीमें दिशाओंके श्रमसेयुक्त बिचेतनहुआ भ्रमताफिरा ११ जब उसे कहीं विश्राम न मिला तब यह विचारनेलगा कि अब मैं क्या करूं मैं नहीं जानता कि अब किसकी शरणजाना चाहिये १२ उस पुरुषेश सनातन देवको मैं कैसे प्राप्तहोऊँ और उसप्रलयकारी पुरुषोत्तम के दिव्य पदको कैसे प्राप्त होऊँ १३ ऐसे विचारके वह मुनि प्रसिद्धपुरुषेश सनातन्न बटराजकेसमीपगया और १४ उसको मूलमें स्थित हुआ जहां न कालाग्नि काही भयथा और न शरीर को खेद होताथा १५ वहां संवर्त्तक अर्थात् प्रलयके अग्नि आदिका आगमन नहीं होता १६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयंभूऋषिसम्बादेमार्कंडेयदर्शनंनामपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि फिर आकाश में महाअद्भुत संवर्त्तक नाम महामेघ प्रकटहुये और उननीले कमलके समान कान्तिवाले और कुमोदनीके समान तथा और

कमलकेसर काक तोते इत्यादिकोंके समान वर्णवाले १। २ मेघों ने आकाशको आच्छादित करके एकक्षण मेंसब पृथ्वीजलके समूहोंसे पूर्णकरदी ३ निदान हे मुनि सत्तमों ब्रह्माजीके प्रेरित उन मेघोंने सब स्थान जल-मयकरके उसघोर अग्निको नाशकरादिया ४। ५ और दशवर्षतक मूशलधार जलवर्षतारहा ६ हे द्विजो तब तो समुद्रभी अपनी मर्य्यादा को त्यागके चला पर्वतों के शिखर बिदीर्णहोगये और पृथ्वीजलमें डूबगई ७ ऐसे जब सबजगह जल फैलगया और वायुकेवेग स-माहितहोके नाशहोगये तब उस एकार्णव जलमें जहां घोर स्थावर जंगम जगत्था और देव असुर नर ये सब नष्ट होरहेथे और जिसमें यक्ष राक्षस आदिका अभाव था ८। १० वह मुनि विश्रांतहुआ पुरुषोत्तम भगवान् का ध्यानकरनेलगा जब उसने आंखमींचकर जलसे भरीहुई पृथ्वी को देखा ११ तो बड़कावृक्ष उसे न देख पड़ा और न पृथ्वीदिशा सूर्य्य आदिही देखाईदिये १२ तब उसतमोभूत निराश्रय घोररूपी एकार्णवमें जिसमें चन्द्रमा सूर्य्य पवन देवते सर्प्पआदि सबनष्टहोरहेथे १३ डूबतेहुये मार्कंडेय मुनिने निकलनेकी इच्छाकरी और जहां तहां भ्रमताफिरा १४ पर हे विप्रो जब उसमुनिने डूबकेभी पुरुषोत्तमको न देखा तब अति व्याकुलहुआ और पुरुषोत्तम भगवान् तिसको विह्वलदेख बोले १५ कि हे वत्स तू हारगया है और बालकहै सुव्रत तू मेरा भक्तहै १६ हे मार्कंडेय तू शीघ्रही मेरेसमीप आजा और मेरे आगे तू किसी बातकाभय मतकर १७ हे मार्कंडेय

ज्ञानधीर तू बालक क्यों श्रमसे पीड़ित होरहा है यह सुनि मुनि बारम्बार विस्मितहोके कहनेलगा १८ कि यह कौनहै जोकि मेरे तपकातिरस्कार करताहै क्या मेरी हज़ारों वर्षोंकी १९ तपस्याका प्रचार देवताओंमें नहीं है २० मुझको तो देवेश ब्रह्माभी दीर्घ आयुवाला कहते हैं पर मेराजीवन त्यक्तहोगया यह कौनहै जो घोर तप करता है २१ और मुझको हे मार्कंडेय कहता है यह मृत्युहोनेके लायकहै ऐसा विचारकर वह मुनि चिंताको प्राप्तहुआ २२ और बिचारनेलगा कि यह मुझको स्वप्न आया अथवा मेरे मोह होगया ऐसे चिंतवन करते २ उसकी बुद्धि दुःखितहोगई २३ और उसने यह निश्चय किया कि मैं पुरुषोत्तमदेव की शरणजाऊँ निदान वह मुनि तद्गतहोके पुरुषोत्तमदेव के समीप २४ गया और जलकेऊपर सुन्दर और सुवर्णसरीखी शाखाओंसे विस्तृत अति अद्भुत और रुचिर उसबड़वृक्षपर विश्वकर्माके रचेहुये अति दिव्य हीरा मणि मूंगा आदिसेजड़े और पद्मराग आदि अन्यअलंकारों से युक्त तथा अनेकप्रकारके बिछौनों और रत्नोंसे शोभित और अनेक प्रकारके आश्चर्य्योंसे युक्त कान्तिकेमण्डल से मण्डित पलँगके ऊपर बालशरीरको धारणकिये कोटिसूर्य्य के समान कान्तिवाले और दीप्त और सुन्दरतेजवाले चतुर्भुज और उदार अंग तथा पद्मकेपत्रके समाननेत्रों वाले श्रीवत्स चिह्नसेयुक्त छातीवाले शंख चक्र गदाको धारणकिये और बनमालासे विभूषित एवम् कुण्डलधारणकियेहुये और हारकेभारसे युक्तग्रीवा और दिव्यरत्नों

से विभूषित श्रीकृष्णदेव को विस्मय से फूलेहुये नेत्रों वाले वह मुनि देखके ३५। ३१ रोमाञ्चितहुआ और उसदेवको प्रणामकरके बोला कि अहो चराचर नष्टहुये इसएकार्णवमें ३२ तू निर्मलबालक कैसे स्थितहोरहा है भूत भव्य भविष्यको जाननेवाला वह मुनि३३माया से बिमोहित हो उसदेव को न जानसका और खेदसे बोला ३४ कि मेरे तपकावीर्य्य ज्ञान जीवन और मनुष्य जन्म ये सब वृथा अर्थात् झूंठेहीहैं ३५ क्योंकि मैं पलँग पर सोतेहुये इस दिव्यबालकको नहीं जानता ऐसे चिन्तवनकरके बिचेतनहो तिरता ३६ और श्वास लेताहुआ वह अति बिकल हुआ और खेद को प्राप्त होगया फिर अपनी महिमासे व्यवस्थित तिस ३७ सर्व तेजोमय बालकको अच्छीतरह देखनेमें समर्थ न हुआ और वह बालक मुनिको आते देखके ३८ हँसते२ मेघ के गर्जनेके समान बोला ३९ कि हे वत्स मैं तुझको जानताहूं तू प्राणोंके लिये यहां आया है इसलिये जल्द मेरे शरीरमें प्रवेशहो तेरा बिश्राम मेरे शरीरमें है ४० मुनि उनके वचनको सुन मोहित हुआ कछुभी न बोला मुखमें प्रवेश करगया ४१ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांमार्कण्डेयजलभ्रमणंनामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे मुनि सत्तमो उस विप्रने उस बालकके उदरमें अनेक देशोंसे आवृत समस्त पृथ्वी १ लवण ईख मदिरा घृत दही दुग्ध जलोदधि नामक

सात समुद्रों जम्बुप्लक्ष शाल्मलि २ कुश क्रौंच शाक पुष्कर आदि द्वीपों भारतादिक वर्षों ३ सब रत्नोंसे युक्त सुमेरु और अनेक रत्नोंके शृंगोंसे भूषित और बहुत गुफाओंवाले कनकाचल पर्वत ४ और अत्यंत अर्थात् शूद्र चाण्डाल आदिकों और मृग वानर गीदड़ शूसे मनुष्य ५ हाथी तथा अन्य जीवों एवम् पृथ्वी के समस्त तीर्थ नगर तथा ग्रामों ६ और कृषी गोरक्ष और बाणिज्यवालों इन्द्र आदिक देवतों ७ और गन्धर्व अप्सरा यक्ष ऋषि चारण दैत्य और दानवके समूहों एवम् नाग ८ और सिंहिकाके पुत्र देवताओंके बैरियों तथा इससंसारके समस्त स्थावर जंगम पदार्थों ९ और ब्रह्मादि पर्यंत जो कछु भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनलोक तपोलोक सत्यलोक अतल बितल पाताल सुतल तलातल रसातल महीतल और सब चराचर ब्रह्माण्डको देखकर १०। १३ हे द्विज सत्तमो उसकी मति अव्याहत होगई १४ पर तिस देवके प्रासाद अर्थात् मन्दिरकी विस्मृति न हुई और भ्रमता हुआ इस जगत्के अन्तको १५ विष्णुके उदरमें भी न प्राप्तहुआ तब उस वर देनेवाले देवकी शरणमेंगया १६ निदान वह मुनि वायुसरीखे वेगसे तिस महात्मा सुख रूप पुरुषोत्तमके मुखसे निकलगया १७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेमार्कण्डेयस्यविष्णूदरेपरिवर्त्तनंनामद्वापंचाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

तिरपनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे मुनि सत्तमो फिर उस मुनिने उस

बालकके उदरसे निकसके पृथ्वीको जनोंसे रहित देखा
१ और यहभी देखा कि पीतवस्त्र पहिने श्रीवत्स चिह्न
से युक्त छाती चारभुजाओं और पद्मके पत्र समान नेत्रों
वाला वह पूर्वदृष्ट बालक बड़के वृक्षपर पलँगपर स्थित
है निदान उस विचेतनमुनिको आते देख वह बालक
हँसके बोला कि हे वत्स तूने हारकर मेरे उदरमें वास
कियाथा पर वहां भ्रमतेहुये क्या आश्चर्य्य देखा ४।५
हे मुनिश्रेष्ठ तू मेरा भक्त और श्रांतहै इसलिये धर्ममें
आश्रितहुये तुझसे मैं सम्भाषण करके देखताहूं ६ भ-
गवान्‌के ऐसे वचन सुन मार्कण्डेयने रोमांचितहो दिव्य
रत्नों से अलंकृत भगवान् को देखा ७ और हे द्विजो
भगवान्‌की प्रसन्नतासे उसकी बुद्धि स्वच्छ और नि-
र्मलहोगई ८ तब उसने भगवान्‌की रक्त अंगुलियों और
देवताओंसे अर्चित पैरोंके तलवोंको हर्षकी गद्गद्बाणी
सहित झुककर प्रणाम किया ९ और अंजली बांधके
प्रसन्न और विस्मित हो बारम्बार परमात्माकी स्तुति
करनेलगा १० मार्कण्डेय बोले कि हे देवदेव जगन्नाथ
आप मायासे बालक शरीर धारणकिये हैं और हेचारु
पद्मके समान अक्षवाले तुम मुझ दुःखित और शरणा-
गत आयेकी रक्षाकरो ११ हे सुरश्रेष्ठ मैं सम्बर्त्तवह्निसे
दुःखित होरहाहूं इसलिये अङ्गारों की वर्षा के भय से
आप मेरी रक्षाकरो १२ जगत्‌के नाशकरनेवाले प्रचंड
वायुसे मैं शोषित विह्वल और श्रांतहूं इसलिये हे पु-
रुषोत्तम मेरी रक्षाकरो १३ प्रलय करनेवाले सूर्य्योंसे
मैं सन्तप्तहूं और शांतिको नहींप्राप्तहोता इसलिये मेरी

रक्षाकरो १४ हे जगत्पते मैं तृषितहूं और क्षुधासे युक्त हूं हे पुरुषोत्तम मैं अपनी रक्षाकरनेवाला किसीको नहीं देखता आपही मेरी रक्षाकरो १५ इस घोर एकार्णव में चराचर नष्टहुये पर मैं अन्तको नहीं प्राप्तहुआ इसलिये हे पुरुषोत्तम मेरी रक्षाकरो १६ हे देवेश आपके उदरमें मुझको चराचर जगत् दिखाई दिया और मैं अति विस्मित होगया सो आप मेरी रक्षाकरो १७ तेरी मायासे मोहित हुआ मैं बहुत कालतक इस निरालम्ब संसारमें भ्रमाहूं हे पुरुषोत्तम अब आप मेरी रक्षाकरो १८ हे बिबुधश्रेष्ठ हे बिबुधप्रिय हे बिबुधोंकेनाथ हे बिबुधाश्रय आप प्रसन्नहों १९ हे सर्वलोकेश प्रसन्नहो हे जगत्कारणके भी कारण हे सर्वदेवेश हे भूधर आप प्रसन्नहो २० हे कमलावास हे मधुसूदन हे कमलाकांत हे त्रिदशेश्वर आप कंस केशी और अरिष्ट को मारने वाले हैं आप मुझपर प्रसन्नहो २१ हे दैत्योंके नाश करनेवाले हे श्रीकृष्ण हे मथुरावासी हे यदुनन्दन आप प्रसन्नहो २२ हेशक्रावरज हेवरको देनेवाले अविनाशी आप प्रसन्नहो २३ हेदेव पृथ्वीभी आपही हैं और जल अग्नि वायु आकाश मन अहंकार बुद्धि माया और जीव भी आपही हैं हे देव जगत्के बीजरूप पुरुष आपहीहो और पुरुषसे भी उत्तम पुरुषहो २४। २५ आपही सब इन्द्रियोंके शब्दादिक विषयहो और आपही दिक्पाल धर्म वेद और दक्षिणा सहित यज्ञहो २६ आप इन्द्रहो शिवहो धर्मराजहो देवराज इन्द्रहो और राक्षसाधिपति हो २७ आपही जलोंके पति वरुणहो वायुहो कुबेर हो

ईशानहो अनन्तहो गणेशहो और स्वामिकार्त्तिकहो २८ आपही वसुहो आपही रुद्रहो आपही बारह आदित्य हो और आपही दैत्य दानव यक्ष तथा मरुद्गणभी हो २९ पितर तथा बालखिल्या आदिक ऋषि प्रजापति मुनि अग्नि और राक्षस ये सब आपहीके रूपहैं ३० और अन्य जीव संज्ञक जाति और ब्रह्मासे स्तम्भपर्यंत ३१ भूतभव्य भविष्य चराचर जगत् सब आपके ही रूपहैं हे देव आपको कूटस्थ अचल और ध्रुवरूप को ३२ ब्रह्मा आदिकभी नहीं जानते तो स्वल्प बुद्धि वालोंका क्या कहनाहै ३३ आप अव्यक्त शाश्वत नित्य अनन्त और सर्वव्यापी महेश्वरहो आप आकाशसेभी परेहो और अज ३४ अविनाशी विभुहो इसलिये आप निर्गुण निरंजनकी स्तुति करनेमें कौन समर्थ है ३५ हे देवेश मैं आपका पुत्रहूं और मुझ अल्पबुद्धिने जो कुछ कियाहै तिस सबको आप क्षमाकरनेको योग्यहो ३६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्वादेभगवान् स्तवोनामात्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

इस प्रकार मार्कंडेय की स्तुति से प्रसन्नहो भगवान् मेघकीसी गम्भीरबाणी से बोले कि १ हे मुनिश्रेष्ठ तेरे मनमें जो कामनाहै उसे तू कह मैं तुझको बाञ्छित वर दूँगा २ भगवान् विष्णु के इस वचन को सुन वह मुनि बोला ३ कि हे देवेश मैं आप को और आपकी माया को जानने की इच्छा करता हूँ हे भगवन् मैंने आपके मुखद्वारा आपकेशरीरमें प्रवेशकिया ४ और वहां स्थित

होके सब जीवों को देखा हे देव आपके शरीरमें स्थित देव दानव व राक्षस ५ यक्ष गन्धर्व नाग स्थावर जंगम जगत् को देखतेहुये मेरीबुद्धि का नाशनहीं हो ६ ऐसे कहके उसने मुखमें प्रवेशकिया और उस बालकके उदर में विचरतेहुये उसने अनेकप्रकारकेवृक्ष लताओं और भिरने आदिकोंसे युक्त तथा अनेकप्रकारके जीव और आश्चर्योंसे व्याप्त व्याघ्र सिंह बराह चामर भैंसे हस्ती मृग शाखामृग और अन्यजीवों से युक्त इन्द्र आदिक देवतों एवम् सिद्धचारण दिव्यसर्प्प मुनि यक्ष अप्सरा और अन्य देवताओं के भूषित और मनोहर मकान सेवित सुमेरुपर्वत को देखा ७। १० और हिमवन्त हेमकूटनिषध गन्धमादन श्वेतदुर्दुर नीलकैलाश मन्दराचल ११ महेन्द्र मलय विन्ध्य पारिजात अर्बुद सह्य सुक्तिमंत मेनाक चक्रपर्वत १२ एवम् और जितने पर्वत पृथ्वीपर हैं तिनसबको भी देखा १३ कुरुक्षेत्र पांचाल केकय वाह्लीक सुरसेन काश्मीर कुलाश्वगपर्वतोंमें होनेवाले और किरातजाति आदिकेराजा और मनुष्य भी देखपड़े १४। १५ और एकपैरवाले तीनपैरवाले और अश्वसरीखेमुखवाले मनुष्योंको भी देखा १६ प्राग्ज्योतिष कामबोज अंग वंग उत्कल उत्कोशल महाराष्ट्र कलिंग केकय अर्बुद माल्यवान् द्राविड़ सौराष्ट्र और अन्यदेशोंको विचरतेहुये उसमुनिने वहांदेखा १७। १८ और प्रयाग कुरुक्षेत्र नैमिषारण्य १९ गंगाद्वार कुताम्र बदरिकाश्रम सिन्धुसागर कोकामुख शोकरव मथुरा मरुस्थली शालग्राम वायुतीर्थ मन्दार और पूर्वसागर पिं-

डारा चित्रकूट प्रभास कनखल द्वारका कोटितीर्थ महाबन लोहज जंघाश्वतीर्थ और सर्वपापोंको छोड़ानेवाले कर्दमान् अग्नितीर्थ चामरकण्टक मोहार्गल जम्बुमार्ग सोमतीर्थ पृथूदक उत्पलावर्त्तकतीर्थ श्रीपुरुषोत्तम एकाम्रक केदारकाशी ब्रजतीर्थ कालंजर श्रीशैल गंधमादन आदितीर्थों और क्षेत्रों तथा देवताओंके स्थानों को तिसबालकके उदरमें देखा गंगा शतह्रदा यमुना कौशिकी चर्मण्वती क्षेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती विपाशा सवितस्ता सिन्धु गोदावरी एकसारा नलिनी पयोध्मी नर्मदा ताम्रपर्णी सुभद्रामहानदी कर्तोया सुवेला कृष्णवेला ऐरावती आदि पृथ्वीपर जितनी नदीहैं तिन सब को वह हाराहुआ मुनिउसमहात्माकी कुक्षिमेंदेखा २०। २६ चन्द्रमा तथा सूर्य्यसे विराजित कुशलापुरी ३० और तेजोंसे प्रकाशमान् सूर्य्य और अग्निके समान कान्तिवाली सुवर्णसे शोभित पृथ्वीको उसनेदेखा ३१ और अनेक यज्ञों और मन्त्रों सहित पूजाकरते ब्राह्मण सुवर्णके गहनोंसे भूषित क्षत्रिय ३२ और यथा न्यायकरके खेतीको करनेवाले वैश्यों को वह मुनि उसके उदरमें देखकर शीघ्रही बाहर निकल ३३ कहनेलगा कि हे पुण्डरीकाक्ष आप अविनाशीको मैं जाननेकी इच्छाकरताहूँ यहां आप साक्षात् बालकहोके क्यों स्थित होरहेहो ३४ और इस सब जगत्का नाशकरके अपनी कुक्षिमेंरख किसवास्ते विचरतेहो हेदेवेश आपकीमाया कैसी होतीहै हेकमलपत्राक्ष आपसे इसअचित्य पृथिवी की मायाको मैं विस्तार सहित सुनाचाहताहूँ ३५। ३७

उसके यह वचन सुन वह देव देव महेश्वर उसको समझानेलगा कि मुझको तत्त्वसे अच्छीतरह देवते भी नहीं जानते परन्तु तेरीप्रीतिकेकारण मैं यह सब रचना दिखाताहूँ ३८। ३९हेबिप्रर्षे अर्थात् ब्राह्मणोंमेंऋषि तू मेराभक्कहोके मेरीशरण आगयाहै और मैंने तेरामहत् ब्रह्मचर्य्यभी देखाहै इसलिये तुझको अपनी माया सुनाता हूँ ४० नारकहते हैं जलको और अयनका अर्थ स्थानहै मैं कल्पके आदि और अन्तमें जलमें निवास करताहूँ इसवास्ते मुझको नारायण कहतेहैं ४१ मैं नारायण नामसे प्रसिद्ध शाश्वत और अविनाशी हूँ हे द्विजोत्तम मैं सब जीवोंका विधाता और संहर्त्ताहूँ ४२ मैंहीं विष्णु हूँ मैंहीं ब्रह्मा मैंहीं सुराधिप इन्द्र हूँ और मैंहीं कुबेर और प्रेताधिप यम हूँ ४३ मैंहीं सूर्य्य तथा चन्द्रमा हूँ मैंहीं कश्यप और प्रजापति हूँ और मैंहीं धाता विधाता और यक्षहूं ४४ अग्नि मेरा मुखहै पृथ्वी पैर हैं चन्द्र और सूर्य्य नेत्रहैं स्वर्ग्ग आकाश दिशायें मेरे कर्णहैं ४५ और दिशासहित आकाश मेरी कायाहै वायु मेरेमनमें स्थितहै और बहुतसी दक्षिणाओंवाली यज्ञोंद्वारा ४६ मेरेलोककी इच्छा करनेवाले वैश्य मुझे पूजतेहैं चारोंसमुद्रों पर्यन्त सुमेरु और मन्दराचल सहित समस्त पृथ्वी को ४७ मैं शेषनाग होके अकेला धारणकरता हूँ हे विप्र पूर्वमें डूबीहुई पृथ्वी को बाराह रूप धारणकरके ४८ मैं अपने पराक्रम से निकासता था हे द्विजसत्तम मैं बड़वाग्निहोके ४९ जलोंको पीता हूँ और फिर रच देताहूँ मेरे मुखसे ब्राह्मणभुजाओं से

क्षत्रियजाँघोंसे वैश्य और पैरोंसे शूद्र पैदाहोतेहैं और
ऋग् साम यजु और अथर्वण वेद मुझसेही प्रकटहोतेहैं
५०।५२ और मुझमेंही लीनहोजाते हैं काम क्रोध द्वेष
इत्यादिसे विमुक्त सत्वगुणमें स्थित निःसंग और निर-
हंकार नित्यआत्माको जाननेवाले यतीजन ५३ मुझ-
कोही रातिदिन चिंतवन करते हैं मैंहीं सम्वर्त्तक ज्योति
संवर्त्तक अग्नि ५४ सम्वर्त्तक सूर्य्य और संवर्त्तक वायु
हूँ और जितने आकाशमें तारेदीखतेहैं तिनको मेरेरोम-
कूपजानों ५५ रत्नकर चौदहसमुद्रोंको मेरे बसन और
निलय अर्थात् शयनस्थान जानों ५६ काम क्रोध हर्ष
मोह मेरेही रूपहैं और मनुष्य जिसश्रेष्ठ कर्मसे सुन्दर
स्थानको प्राप्तहोते हैं वहभी मेराहीरूप है ५७ सत्य
दान उग्र तप और सब जीवों में अहिंसा मेरे शरीरमें
विचरनेवाले देहधारियों के लिये मेरेही विधानसे रचे
हुये हैं ५८ और मुझसे ज्ञानकी लब्धि को प्राप्तहो
जीव कामनाओंकी चेष्टा नहीं करते हैं बल्कि सम्पूर्ण
वेदोंको पढ़ेहुये अनेकप्रकार की यज्ञों द्वारा मेरी पूजा
करते हैं५९ क्रोध को जीतनेवाले नियतात्मा द्विजाति
मुझको प्राप्त होते हैं और दुष्कर्म करनेवाले मुझको
नहीं प्राप्त होसक्के ६० लोभसे बँधेहुये कृपण दुष्ट और
अकृत आत्मावाले मनुष्योंमें मेरी मायाका बल होता
है ६१ और भावित आत्मावाले पुरुष योगोंसे निसेवित
और मूढ़ों को दुर्लभ मुझको प्राप्त होजाते हैं ६२ हे
मार्कण्डेय जब २ धर्मका नाश और अधर्मकी उत्पत्ति
होती है तब २ ही मैं अपने आत्माको रचताहूं ६३ और

हिंसामें रत और देवतों से अबध्य दारुण दैत्य और राक्षस जब उत्पन्न होते हैं तब मैं शुभकर्मवालोंके घर में जन्म लेताहूं ६४ और मनुष्यदेहमें प्रवेशहोके सब को शमन कर देव मनुष्य गन्धर्व सर्प राक्षस ६५ स्थावर जंगम जीवों को अपनी माया से संहार करता हूं एवम् कर्मकालमें देह का चिंतवन करके फिर आत्मा को रचताहूं ६६ पापोंके नाशके लिये मैं सतयुगमें श्वेत त्रेतायुग में श्याम ६७ द्वापर में रक्त और कलियुग में कृष्णरूप धारण करताहूं ६८ और जब दारुण प्रलय काल प्राप्त होताहै तब सब स्थावर जंगम त्रिलोकीको नाश करताहूं ६९ मैं त्रिधर्मा विश्वात्मा और सबलोकों को सुख देनेवालाहूं और सर्वव्यापी अनंत हृषीकेश पुरुषोत्तमहूं ७० हेब्रह्मन् मैंअकेला काल चक्रको प्रेरित करताहूं और सब लोकोंका रमण और उद्यम करने वालाहूं ७१ हे मुनिसत्तम ऐसे मैंने सब वस्तु युक्तकर रक्खी है और सब जीवोंमें मेरा आत्माहै पर मुझको कोई नहीं जानता ७२ हेभक्त सब लोकोंमें मुझको सब पूजते हैं और हेद्विज तुझको जो क्लेश प्राप्त हुआहै ७३ वह सब तेरे सुखके उदयके वास्ते है संसारमें जो कुछ तुझको स्थावर जंगम दिखताहै ७४ वह सब भूतोंको उत्पन्न करनेवाले मुझहीसे बिहितहै और मैं शंख चक्र गदाको धारण करनेवाला नारायणहूं ७५ जितने हजार बार सब युग आवते हैं उतने कालमें सब विश्व को मोहताहुआ शयन करताहूं ७६ हे मुनिसत्तम ऐसे सब कालमें मैं स्थित रहताहूं जब तक ब्रह्मा नहीं उ-

त्पन्न होता तबतक मैं बालकमें बालक रूपसे रहताहूं ७७ हे विप्रेन्द्र बारम्बार तुझसे प्रसन्नहो मैंने ऐसा वर तुझे दियाहै जो विप्रर्षिगणोंसे पूजितहै ७८ सब एकार्णवहोने और स्थावर जंगम नष्टहोनेके पीछे तू मेरेजाननेके लिये निकसा इसवास्ते तुझको यह जगत् दिखाया है ७९ जब तू मेरे उदरके भीतर प्रवेश गया तब तूने सब लोक देखे पर विस्मित होके मुझको न जाना ८० फिर जब तू मेरे मुखसे निकसा तब मैंने तेरेलिये अपनी आत्माका वर्णनकिया ८१ हे विप्रर्षे जबतक महातपवाला ब्रह्मा न बोधकरै तबतक तू सुखसे यहां विश्रामकर ८२ सब लोकोंका पितामह ब्रह्मा जब उत्पन्न होगा तब मैं सब जीवों के शरीरों ८३ और आकाश पृथिवी अग्नि जल और संसारमें जो कुछ स्थावर जंगमहै तिसको रचूंगा ८४ निदान माधव भगवान् इस प्रकार उस मुनिसे कहकर जब हजारयुग पूर्ण होचुके तब मेघ सरीखे गंभीर शब्दसे उससे कहनेलगे ८५ कि हे मुने जिसलिये तू मेरी स्तुति करताथा सो तू कह और जो चाहताहै सो वरमांग मैं शीघ्रही देऊंगा ८६ तू सब देवताओंसे भी बड़ी आयुवाला और मेरा दृढ़भक्त है इसलिये फिर तू दीर्घ आयुवालाहो ८७ ऐसी शुभबाणीको सुन और भगवान्‌के दर्शनकर मार्कण्डेयने प्रणाम करके कहा कि ८८ हे देवेश हे सुरोत्तम आप मुझको देखें और हे अमरहरि आपके देखनेसे तत्काल मेरा मोह दूरहोगया ८९ हे नाथ आपकी प्रसन्नता से लोकोंके हित अनेक भावोंकी शांति ९० और आपके

भक्तोंके भेदके निषेदके वास्ते मैं इसपुण्य और निर्मल पुरुषोत्तमक्षेत्रमें स्थितरहूं ९१ हे देव मैं परमात्माशंकर का स्थापन करूंगा इसलिये किस स्थानमें मैं शंकरको स्थितकरूं जो ९२ संसारमें हरिको और शंकरको लोग एक मूर्त्ति जानें यह सुन जगन्नाथ महामुनिसे बोले ९३ कि जो तेरी बुद्धि इस परमदेव भुवनेश्वर महादेव के लिंग आराधन करनेकी है ९४ तो मेरी आज्ञासे शीघ्र ही शिवालय बना उसके प्रभावसे तू सदा शिवलोक में स्थित रहैगा ९५ हे विप्र शिवके स्थापन करने से मेराभी स्थापन होजावेगा क्योंकि हमारा और शिवका कुछ अन्तर नहीं है ९६ जो रुद्रहै सो आप विष्णु है और जो विष्णुहै सो महेश्वरहै जैसे वायुका और आकाशका अन्तर नहीं तैसे इन दोनोंका अन्तर नहींहै ९७ तू मोहित हुआ नहीं जानताहै यह गरुड़ध्वज है यह वृषध्वजहै यह त्रिपुरघ्नहै और यह त्रिविक्रमहै ९८ हे विप्र अपनेनामसे चिह्नित पापोंको नाशकरनेवाला शिवालय पुरुषोत्तमदेवके उत्तरदिशा में बना ९९ यह मार्कण्डेय नामक तीर्थ मनुष्यलोक में विश्रुत अर्थात् विख्यात और सब पापों का नाश करनेवाला होवेगा १०० ऐसे कहके वे सर्वव्यापी जनार्दन भगवान् तिसी जगह अन्तर्द्धान होगये १०१ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांमार्कण्डेयभगवत्दर्शनन्नाम चतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीबोले कि इसके उपरांत अब मैं पंचतीर्त्थकी

विधि और उसके स्नान दान देवताके दर्शनका फल कहताहूँ १ मार्कण्डेय ह्रदमें स्नानकर पवित्रहो उत्तरके तर्फ मुखकरके तीनबार इसमंत्रका उच्चारणकरै २ हेभगवन् मैं संसारसागरमें ग्रस्त और अचेतहूँ मेरी रक्षाकरो हे त्रिपुरके नाशक आप शिवशान्त सर्व पापहरको मैं नमस्कार करताहूँ आप मेरे पातकोंको दूरकरो ३। ४ फिर नाभिमात्र जलमें स्नानकरके विधिवत् देवता ऋषि पितरोंका तर्पण तिलोदक करके करै ५ और स्नान आचमनकर शिवालय में जा तीनबार प्रदक्षिणाकरके ६ अमोघ मूलमंत्रसे मार्कण्डेय और केशव भगवान् का पूजन करके स्तुत प्रणामकरै ७ हे विलोचन हे शशिभूषण आपको नमस्कार है हे विरूपाक्ष हे महादेव आपको नमस्कार है ८ इस प्रकार मार्कण्डेय ह्रद में स्नान और शिवजी के दर्शन करनेसे मनुष्य दश अश्वमेधयज्ञों के फलको प्राप्तहोता है और सब पापोंसे छुटके शिवलोक में प्राप्त हो प्रलयतक श्रेष्ठ भोगों को भोगके ९। १० इसलोकमें प्राप्तहो वेदपाठी ब्राह्मणहोता है एवम् फिर शंकर योगकरके मोक्षको प्राप्त होजाताहै ११ कल्पवृक्षके समीपजा तीनप्रदक्षिणा करके इसीमंत्र से परमभक्ति पूर्वक तिसबटका पूजनकरै १२ कि ॐ व्यक्तरूप आपको नमस्कार है महाप्रलयबासी और महेन्द्रके ऊपर स्थितहोनेवाले आपको नमस्कारहै १३ महाकल्पमें आप अमर हैं और बटके शरीरकोधारण किये आप अमर रहतेहैं हे बटरूपीकल्पवृक्ष मेरेपापों को हरो आपको नमस्कारहै १४ इसप्रकारभक्तिसे उस

बटकी प्रदक्षिणा और नमस्कारकरके मनुष्य एकबार पापोंसे छुटजाताहै जैसे कंचुलीसेसर्प १५ हे द्विजो तिस कल्पवृक्षकीछायामें बैठकेमनुष्य राजसूय अश्वमेधयज्ञों केफलको प्राप्तहोताहै १६ और अपने कुलकाउद्धारकर विष्णुलोकमें प्राप्तहोताहै कृष्णके आगे स्थित गरुड़के दर्शन करनेसे १७सबपापोंसे निर्मुक्तहुआ मनुष्य विष्णु लोकमें प्राप्तहोताहै और बट तथा गरुड़के दर्शन जो पुरुषोत्तमभगवान् १८ और बलदेव सुभद्रा इन्हीं के दर्शन करताहै वह परमगतिको प्राप्तहोजाताहै विष्णु के मन्दिरमें प्रवेशकरके तीनबार प्रदक्षिणाकर १९शिव के मन्त्रोंसे बलदेवको भक्तिपूर्व्वक पूजै और स्तुतिकरै कि हलधर हे मुशलायुध आपको नमस्कार है २० हे रतिकांत हे भक्त वत्सल हे बलियोंमें श्रेष्ठ हे धरणीधर आपको नमस्कार है २१ हे प्रलंबकेअरि और कृष्णके अग्रज आपको नमस्कारहै आप मेरीरक्षाकरो ऐसे उस अनन्त अप्रमेय देवार्चित बलदेवजीकी स्तुतिकरै २२ और हे बलदेवजी आपकामुख कैलासके शिखर और चन्द्रमाकी कान्तिसरीखा और नीलवस्त्रके धारण करनेवाले और सुन्दर मस्तकवाले आपको नमस्कार है २३ महा बलवाले हलधर एक कुण्डल से विभूषित बलदेवको भक्तिकरके स्तुति करनेसे मनुष्य सब कामनाओं को प्राप्तहोता है २४ और सब पापोंसे विनिर्मुक्तहो विष्णुलोकमें जाताहै जहां प्रलयतक सुखभोग के २५ फिर पुण्यक्षीण होनेपर श्रेष्ठयोगिजनों के कुल में जन्मलेताहै और सबशास्त्रोंको जाननेवाला ब्राह्मण

हो २६ ज्ञानको प्राप्तहो दुर्लभमुक्तिको प्राप्तहोताहै ऐसे बलदेवका पूजनकर फिर विद्वान्पुरुष श्रीकृष्णको २७ द्वादशाक्षरमंत्र से समाहित होकेपूजे जो बारह अक्षरों केमंत्रसे भक्तिपुरुषोत्तम भगवान्की २८ सदाधीरहोके पूजाकरताहै वह मोक्षको प्राप्तहोताहै उस गतिको देवते और योगी भी नहींप्राप्तहोते २९ जिसको द्वादशाक्षरमंत्र जपनेवाला पुरुष प्राप्तहोताहै इसलिये उसी मंत्र से भक्तिपूर्वक जगत् गुरु श्रीकृष्ण का पूजनकरै ३० और गंध पुष्पादिकों से पूजन और प्रणामकरके स्तुतिकरे कि हे जगन्नाथ सब पापोंको नाशकरनेवाले जयकरो ३१ हे चाणूर केशी और कंसके मारनेवाले आपजयकरो हे पद्मके पत्र समान नेत्रोंवाले और चक्र गदाधर आप जयकरो ३२ हे नीलाम्बुज श्याम हे सर्व सुखप्रद आप जयकरो हे जगत्पूज्य देव हे संसार नाशनदेव आप जयकरो ३३ हे लोकनाथ बांछाफल को देनेवाले आप जयकरो इस घोरनिस्तार दुःखों के भागों ३४ और क्रोधरूपी ग्राहसे आकुल विषयोदक से युक्त अनेकप्रकार के वेगों की लहरोंवाले औरमोह रूपी आवर्त्तसे ३५ संसार सागरमें मैं डूबरहाहूं इसलिये हे पुरुषोत्तम आप मेरी रक्षाकरो इसप्रकार वरके देनेवाले भक्तवत्सल देवको प्रसन्नकर ३६ जो मनुष्य सब पापोंको हरने और सब कामनाओंके फलको देनेवाले सुन्दर नासिका और बलिष्ठ भुजाओंवाले कमल के पत्रोंके समान नेत्रों और महान् उदरवाले पीतवस्त्र तथा शंख चक्र गदाको हाथमें धारणकिये सब लक्षणों

करके संयुक्त और बनमालासे विभूषित श्रीकृष्णके द-
र्शन अंजलीबांध और दण्डवत् करताहै ३७।३९ हजारों
अश्वमेध यज्ञों के फलको प्राप्तहोता है ४० जो फल
सब तीर्थोंके स्नान दान करनेसे होताहै तिस फलको
मनुष्य श्रीकृष्णके दर्शन और प्रणाम करनेसे प्राप्तहो-
ताहै ४१ जो फल यथोक्त विधिसे अपने हाथसे दान
देने और यथोक्त विधिसे संन्यास करनेका होताहै ४२
उस फल को मनुष्य श्रीकृष्ण के दर्शन और प्रणाम
करने से प्राप्तहोताहै ४३ हे द्विजो बहुत कहांतक कहें
मनुष्य श्रीकृष्णके दर्शनसे दुर्लभ मोक्षको प्राप्तहोताहै
४४ और पापोंसे विमुक्त और शुद्ध आत्माहो किरोड़ों
कल्पोंतक परमलक्ष्मी से युक्त हुआ सब गणोंके संग
आनन्द करताहै ४५ और सब कामनाओंकी समृद्धि
सहित सुन्दरकान्तिवाले विमानमें स्थितहोताहै काला-
न्तरमें जब पुण्य क्षीण होजातीहै तब वह यहां ब्राह्मणों
के कुलमें जन्मले ४६ सर्वज्ञ सर्ववेदी और मत्सरतासे
रहित अपने धर्म्ममें रत शान्त दांत और सब जीवों
में हित रखनेवाला होताहै ४७ और वैष्णव ज्ञानको
प्राप्तहो फिर मुक्तको प्राप्तहोजाताहै जो मनुष्य भक्ति
सहित मंत्रसे अंजलीबांध प्रणामकर जो सुभद्राजीकी
पूजा करके यह स्तुति करताहै कि ४८ हे सर्वगे देवि
शुभ सौख्यके देनेवाली आपको नमस्कारहै मेरी रक्षा
करो और हे पद्मपत्राक्षि हे कात्यायनि आपको नम-
स्कारहै वहजगत्धात्री और जगत्पर हितकरनेवाली
बलदेवकी भगिनी सुभद्राको प्रसन्नकर ४९।५० कामना

को देनेवाले बिमानमें बैठके विष्णुपुरको जाता है और प्रलयतक देवताओंकी तरह सुख भोगके ५१ फिर इस लोकमें ब्राह्मणकेघर जन्मले वेदको जाननेवाला होता है और योगको प्राप्तहो फिर मोक्षको प्राप्तहोजाताहै ५२

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेकृष्णबलदेव सुभद्रादर्शनफलवर्णनन्नामपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

छप्पनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि इसप्रकार श्रीकृष्णबलदेव और सुभद्राके दर्शन और प्रणाम करनेसे मनुष्य धर्म अर्थ काम मोक्षको निश्चय प्राप्त होताहै १ और मन्दिरसे निकसके कृतकृत्य होजाता है २ जहां इन्द्र नीलमय विष्णु भगवान् रेतसे आवृतहुये छिपाहै तिसके दर्शन करनेसे मनुष्य विष्णुपुरमें प्राप्त होताहै ३ जिस सर्वदेव मय भगवान् ने नृसिंहरूप धर हिरण्यकशिपु दैत्यको माराथा वही वहां स्थितहै ४ उस देवको भक्तिसे देख और प्रणामकर मनुष्य सब पापोंसे छूटजाताहै ५ वह मनुष्य भक्तिकरके नृसिंहदेवका प्यारा होजाताहै और उसे कुछ दुःख नहींहोता है इच्छितफल प्राप्त होता है ६ इसलिये सब यतनसे नृसिंहदेवके आश्रयहो जिससे धर्म काम अर्थ मोक्षकी प्राप्ति होजातीहै ७ मुनियों ने पूँछा कि नृसिंहका महात्म्य जो आप इस पृथ्वीलोक में कहतेहो सो हमें महान् विस्मय है ८ हे देवेश उस जगत्पतिके प्रभावको हम सुनने की इच्छा करते हैं ९ जैसे नृसिंहदेव प्रसन्नहों सो हे पितामह आप अपनी प्रसन्नतासे हमारे आगे कहो १०। ११ ब्रह्माजी कहने

लगे कि नृसिंहदेवके प्रभावको सुनो यद्यपि उस अजित अप्रमेय और भक्ति मुक्तिप्रद १२ देवके सम्पूर्ण गुणों को कहनेमें मुझे समर्थ नहीं है तौभी उस देवके कछुक गुणोंको मैं कहताहूं १३ जो फल मनुष्य किसी सिद्धि का सेवन करके पाता है वे सब सिद्धि नृसिंहदेवके प्रसादसे सिद्ध होजाती हैं १४ और स्वर्ग मर्त्यलोक पाताल दिशा जल आकाश आदिमें आहतगति अर्थात् इन सबोंमें उसकी गति होजाती है इसमें सन्देह नहीं है १५ उस नृसिंहदेवकी प्रसन्नता होनेसे चराचरलोक में कछु असाध्य नहीं रहता इसलिये नृसिंहकी भक्ति में सदा रहना चाहिये १६ भक्तोंके उपकारके लिये उसके विधानको मैं कहताहूं जिसके करनेसे यह नृसिंह देव प्रसन्नहोजाताहै १७हे नर शार्दूलो आपसनातन कल्पराजरूप तिस अनन्तदेवके तत्त्वको सुनो १८ साधक को जवोंकातुष मूल फलखल दूध आदि भक्षण करनाचाहिये १९ और कौपीनवस्त्र पहिन भक्तिसेयुक्त और जितेंद्रियहो अरण्यविजन देश अथवा पर्वत नदी २० ऊषरभूमि सिद्धिक्षेत्र तथा नृसिंहके आश्रममें जा नृसिंहकी प्रतिष्ठाकर फिर तिसकी पूजाविधानसेकरै २१ और शुक्लपक्षकी द्वादशीकेदिनव्रतकर और मनसे जितेंद्रिय हो एकलाख बार नृसिंह के मन्त्र को जपै २२ तो मनुष्य उपपातक और महापातक आदिकोंसे छूट जाता है इसमें सन्देह नहीं २३ फिर प्रदक्षिणाकर नृसिंहदेव का पूजन गन्ध पुष्प धूप इत्यादिकों से करके प्रणामकरै २४ और कपूर चन्दन चमेलीकेपुष्प नृसिंह

के मस्तकपर चढ़ावे तो सिद्धिहोजाती २५ और सब कार्यों में ऐश्वर्यवाला दृढ़ और ब्रह्मा रुद्र आदिक देवताओंसे भी असह्यहोजाताहै २६ दानवोंका तो क्या कथनहै सिद्ध गन्धर्व मनुष्य विद्याधर यक्ष गण किन्नर दिव्य सर्प्प आदि सब २७ उसके सूर्य्य और अग्नि के समान तेजसे दग्ध होजाते हैं एकबार भी नृसिंहजी के मंत्रके जपने से सब उपद्रवों से रक्षा होती है २८ और नृसिंहकवच के पाठ करनेसे देव दानव भूत पिशाच राक्षस और चोर आदिकोंसे रक्षा होजाती है २९ दो बार कवचके पाठसे देवता और असुरोंसे अभेद्य होजाताहै और द्वादशीके दिन ३० पाठ करनेसे तिसकी रक्षा महाबलवाले नृसिंहदेव करतेहैं बिलद्वार में जाके तीनरात्री तक उपवासकर ३१ और ढाक आदिकों से अग्नि प्रज्वलित कर शहद और घृतसे युक्त पलाश आदि समिधोंको होमै ३२ और रकारान्तमन्त्रसे बीस हज़ार बार जपे तो उसी क्षण नृसिंहदेव उसके आगे प्रकट होतेहैं ३३ शङ्कासे रहितहो कवचको धारणकरके बिचरै तो सङ्कट और तमका नाश होजाताहै ३४ नृसिंहके स्मरण करनेसे राजमार्ग प्राप्तहोताहै और पातालमें भी प्रवेश होसक्ता है ३५ जहां जाके अविनाशी नृसिंहके तत्त्वका पूजनकरै तो चवँर ढुलातीहुई हज़ारों स्त्रियोंसे ३६ आदरसत्कार कियाजाताहै और वे साधक के हाथको ग्रहणकर ३७ दिव्यरसायन पानकरादेती हैं तिसकेपीनेसे वह दिव्यदेहवाला और महाबलवाला हो प्रलयकालतक उन कन्याओंके संग रमणकरता है ३८

और जब शरीर छूटताहै तब वासुदेवभगवान् में लीन होजाताहै इसमें संदेह नहीं ३९ जो पाताललोकमें बास करनेकी रुचिनहो तो वहांसेनिकसकै पदृशूल खड्ग सुंदर मणि ४० रसायन रस खड़ाऊं कालीमृगछाला गुटिका कमण्डलु अक्षसूत्र संजीवनी यष्टि ४१ सिद्ध विद्या और सत्यशास्त्रको ग्रहणकर और हृदय में अग्निसरीखे किणकोंकी तरह प्रकाशित हो ४२ एकबारगी किरोड़ों जन्मोंके पापों को नृसिंह कवच के धारणकरने से नाश करदेताहै ४३ उस कवचको जो विष में स्थापित करदे तो विषका नाश हो और शरीर पै धारणकरे तो दुःखों का नाशहो यह भ्रूणहत्यादिकों का नाशकर दिव्य शरीर करदेता है ४४ और महाग्रहसे ग्रहित पुरुषों के शरीरपर इस कवचके बांधने से दारुण ग्रहों का नाश होजाताहै ४५ बालकोंकी भुजापर बांधनेसे नित्य रक्षा होतीहै और गण्डरोग पिटिकारोग लूत आदि अनेक रोगोंका नाशहोताहै ४६ व्याधि से पीड़ित की रक्षाके वास्ते समिधों को दुग्धके संग इसकवचसे ४७ तीन वक्त एक महीनातक होम करनेसे सब रोगों का नाश होजाताहै और चराचर जगत्में कुछभी उसको असाध्यनहींहै ४८ जिन जिन सिद्धियोंकी वह इच्छा करताहै तिन्होंहींको प्राप्तहोजाताहै ४९ बांबी श्मसान चौराहा इत्यादिक सातस्थानोंकी मिट्टीलेकर लालचन्दन मिला और गौके दूधमें पीस ५० छः अंगुल प्रमाण सिंहकी प्रतिमाबना और विष और गोरोचन से भोजपत्रपर नृसिंहकवचको लिख ५१ उस मूर्त्तिके कण्ठ में बांधदे

और आप जलमें प्रवेशकरके ५२ और जितेंद्रियहोके सातदिनअसंख्यात मंत्रजपकरै तो सबपृथ्वी सातदिन मेंजलसेपूर्ण होजाती है अथवा सूखे वृक्षकेआगे पूजन करै ५३ और १०८बार मंत्रजपै तो वर्षाका निवारण हो जो उसको भ्रमाकेवृक्षमें बांधदे तो५४एक मुहूर्त्तमें महावायु चलनेलगजाय इसमें संदेह नहीं यदि शीघ्र-ही सातबार जलसे जपैतो वायुको धारणकरलेवे ५५ जो उस मूर्त्तिको किसीके द्वारकेआगे रखदे तो तिसके कुलका उच्चाटन होजाताहै और हटालेतो शांतिहोजा-तीहै ५६ इसलिये हेमुनि शार्दूलो उस महा पराक्रम वाले नृसिंहका पूजन सदा भक्तिसे करनाचाहिये इस-से सर्वकामनाओंकी सिद्धिहोजाती है ५७ और सब पापोंसे विमुक्तहो मनुष्य विष्णुलोकमें प्राप्तहोजाता है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य स्त्री शूद्र कोई अपनीजातिकेजनों समेत जो५८ भक्तिसे सुन्दर शरीरवाले सुरश्रेष्ठनृसिंह का पूजनकरें तो किरोड़ों जन्मों के पापों और दुखों से छूटजाते हैं ५९ उस देवका पूजनकरने से मनुष्य बांछितफलको प्राप्तहोजाताहै और देवता इन्द्र गंधर्व यक्ष विद्याधर ६० जो कुछ बांछा करतेहैं सो नृसिंहदेव के दर्शन और नमस्कार तथा पूजनकरनेसे ६१ प्राप्त होता है दुर्लभमोक्ष तथा स्वर्ग भी इस पूजनसे प्राप्त होतेहैं और नृसिंहके दर्शन करनेसे मनुष्य अतुलफल को प्राप्तहो ६२ सब पापोंसे विमुक्तहुआ विष्णुलोकमें बासकरताहै६३ दुर्गमयुद्ध संकट और चौर तथा व्याघ्र आदिकोंके भयमें ६४ एवम् प्राणोंको बाधाकरनेवाले

दुर्गममार्ग विष अग्नि जल राजाकायुद्ध ग्रहरोगादि-
कोंकी पीड़ामें ६५ मनुष्य उस नृसिंहदेवका पूजनकरने
से सबआपदाओंसे ऐसे छूटजाता है जैसे सूर्य्योदयमें
महान् अँधेराका नाशहोजाताहै ६६ नृसिंहके दर्शनकरने
से सबउपद्रव बिनाशहोजाते हैं और गुटिसे जलपढ़के
पैरों में लेपकरना रसायन है ६७ नृसिंहदेवके प्रसन्न
होनेसे सब बांछा प्राप्तहोजातीहैं और अश्वमेधयज्ञोंसे
भी दशगुणाफलप्राप्तहोताहै ६८ फिर वह सब पापों से
छुट और सब गुणोंसे अलंकृतहो सब कामनाओं की
समृद्धिवाला और जरामरणसे रहित ६९ होके सुवर्ण
के झरोखों और सब कामनाओंवाले सुन्दर और ७०
मध्याह्नके सूर्य्यकेसमान कांतिवाले मोतियों के हारोंसे
शोभित दिव्य सैकड़ोंस्त्रियोंसे युक्त और गंधर्वोंसे ना-
दित ७१ विमान में बैठ इक्कीस पीढ़ियों का उद्धार कर
देवतोंकीतरह मोदकरताहुआ अप्सराओंसे स्तूयमान
हो विष्णुलोकमें प्राप्तहोताहै ७२ जहां सुन्दर भोगोंको
भोगगन्धर्व और अप्सराओंसे युक्तहो चतुर्भुजीरूपको
धारणकर सुखसे प्रलयकालतक रहताहै ७३ और जब
पुण्यक्षीणहोजाते हैं तब यहां योगिजनोंकेकुलमें जन्मले
वेदवेदांगको जाननेवाला विप्रहोताहै और वैष्णव योग
को प्राप्तहो मोक्षकोप्राप्त होजाताहै ७४॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांनारसिंहमाहात्म्यन्नाम
षट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

सत्तावनवां अध्याय॥

ब्रह्मा जी बोले कि अनन्त नामवाले वासुदेव को

देख और भक्तिसे नमस्कार करके मनुष्य सम्पूर्ण पापों से रहित होकर विष्णुके लोकको प्राप्त होजातेहैं १ मैंने भी विष्णुका आराधन कियाहै और मेरे पश्चात् इन्द्र नेभी कियाहै तैसेही विभीषण और रामचन्द्रनेभी कियाहै तो फिर और क्यों न करेंगे २ श्वेत गंगामें स्नान करके जो मत्स्याख्य माधवके दर्शन करताहै वह श्वेत द्वीपको प्राप्त होता है ३ मुनियों ने पूंछा कि हे जगन्नाथ जी तिस श्वेत नामवाले माधवका पूजन प्रतिष्ठा और सम्पूर्ण माहात्म्य विस्तार से कहिये४ उस पवित्र क्षेत्र में श्वेताख्य नामसे विख्यात पुरुषोत्तम देव ने कैसे अवतार लिया और पहिले वहां किसने तपकिया ५ ब्रह्माजीबोले कि हे विप्रो सत्ययुग में श्वेतनामसे विख्यात एकबुद्धिमान् धर्मात्मा शूरवीर सत्यबोलनेवाला दृढ़संकल्प और बलीराजाथा ६ जिसकेराज्यमें मनुष्यों की दशहज़ार बर्षकी आयु होतीथी सब भक्तिसे युक्त होतेथे और बालअवस्थामें कोईभी न मरताथा ७ जब ऐसे बर्त्तते कुछकाल ब्यतीतहुआ तो संयोगवश परम धर्म्ममें युक्त गौतमनामक ऋषिका पन्द्रहवर्ष का पुत्र काल का ग्रास हुआ ८ तब वह बुद्धिमान् ऋषि उस बालकको लेके राजाके समीप आया ९ राजा उस मृत कुमारको देखकर बोला कि हे विप्र मैं आपकाशिष्यहूँ और प्रतिज्ञा करताहूं १० कि यदि सात दिनमें यमराज के स्थानसे इसको यहां न प्राप्तकरूँगा तो मैंभी प्रकाशमान चिन्तामें दग्ध होजाऊँगा ११ ऐसे कहके वह ग्यारहसे कमल के पुष्पोंसे महादेव का पूजनकर

राजविद्या को जपनेलगा १२ तब राजा की अत्यन्त बढ़ी हुई भक्तिका चिन्तवन करके जगदीश्वर महादेव पार्वतीसहित प्रसन्नहोके उसके समीपआये १३ और राजाने उनभस्मसे लेपितअंगोंवाले विरूपाक्षपरमेश्वर को शुक्लपक्षके चंद्रमाके समानप्रकाशित १४ सिंहचर्म ओढ़े और मस्तकपर अर्धचन्द्र धारणकिये देखके आदरपूर्वक नमस्कारकरकहा १५ कि हेप्रभो जो आप मुझ पर प्रसन्नहो और दया करते हो तो यह ऋषिका पुत्र जो कालके वशमें आगयाहै १६ फिर जीजावे मेरा यही ब्रतहै हे भगवन् मैं यह नहीं जानता कि यह कैसे मरा है १७ हेमहेश्वर इसेआप कल्याणपूर्व्वक यथोक्तआयु वाला करो महादेवजी श्वेत राजाके वचन सुनके आनन्दितहुये १८ और विचार करके उस सम्पूर्ण भूतोंके क्षय करनेवालेने अपनी आज्ञा करनेवाले दुर्धर्षकाल को आज्ञादी जिसने १९ सम्पूर्ण जगत्के कल्याण करनेवाले मृत्युके मुख में गयेहुये मुनिके उस पुत्रको जिलादिया २० इस प्रकार राजाका बांछित कर पार्वती सहित महादेवजी अन्तर्द्धान होगये हे द्विजो ऐसे मुनि के पुत्रको श्वेत राजा ने जिलाया २१ मुनियों ने पूछा कि हेदेव हे जगन्नाथ हे त्रैलोक्यप्रभु अब आप श्वेताख्य राजाकी सत्यताको वर्णनकरो २२ ब्रह्माजी नेकहा कि हे मुनिश्रेष्ठो सम्पूर्ण जीवोंको आनन्द देनेवाली सत्यताका कारण जो आपने पूछाहै तो मैं कहताहूं सुनो २३सम्पूर्ण पापोंके नाशक माधवके माहात्म्यको जो सुनेगा वह मनोबांछित कामनाको निश्चय प्राप्तहोगा२४

हे द्विजो पहिले ऋषियोंने तो माधवका माहात्म्य सुना है पर उस दिव्य और भयशोक के दूर करनेवाले माहात्म्य को आप भी सुनो २५ पहिले तो श्वेत राजा कईहजार वर्षोंतक एकाग्रचित्तहो राज्य करतारहा फिर इस लोककी कामनाओंसे विरतहो दक्षिण दिशाके रमणीक और स्वच्छ तटवाले समुद्रपर गया २६ । २७ और वहां जाके सौधनुष लम्बा चौड़ा एक अतिउत्तम देवमन्दिर बनवाकर उसमें चन्द्रमाके तुल्य कान्तिवाले माधवकी मूर्त्ति स्थापनकी २८ । २९ और प्रतिष्ठाकरवाके उत्तम ब्राह्मणोंको बहुत दानदिया ३० और माधव के मन्दिरके समीप उसने एक धर्म्मशाला भी बनवाई निदान यह सब कृत्यके उपरान्त उसने ओंकार सहित द्वादशाक्षर मन्त्र (ओंनमोभगवतेवासुदेवाय) जपना प्रारम्भ किया ३१ और भोजन त्यागकर एक महीना तक मौनको धारणकरके जपतारहा ३२ जपके अन्तमें वह उत्तम देवकी इसप्रकार स्तुति करनेलगा ३३ कि हे देव वासुदेव आपको नमस्कारहै हे संकर्षण आपको नमस्कार है हे प्रद्युम्न आपको नमस्कार है हे अनिरुद्ध आपकोनमस्कारहै हेनारायण आपकोनमस्कारहै ३४ हे बहुतसेरूपोंवाले आपकोनमस्कारहै हेविश्वरूप आपको नमस्कारहै हेब्रह्मारूप आपको नमस्कारहै हेबाराहरूप आपको नमस्कारहै हेबरकेदेनेवाले तथा हे सुन्दरबुद्धिवाले आपको नमस्कारहै ३५ हे श्रेष्ठरूप तथा हे बरों के अधिष्ठाता आपको नमस्कारहै हे शरणागतकी पालनावाले तथा हे अच्युत आपको नमस्कारहै हेबाल-

रूप आपको नमस्कारहै हे कमलकैसी कान्तिवाले आ-
पको नमस्कारहै ३६ हे उदित सूर्य्य तथा चन्द्रमाकेसे
नेत्रोंवाले आपको नमस्कारहै हे मुंजकेशोंवाले और हे
बुद्धीवाले आपको नमस्कारहै हे केशव आपको नम-
स्कार है और हे नारायण आपको नमस्कार है ३७ हे
माधव हेगोबिन्द हेविष्णुरूप और हेदेवदेवोंको विधान
करनेवाले आपको नमस्कारहै ३८ हे मधुसूदन हे शुद्ध
हे अस्त्रोंको धारनकरनेवाले हे अनन्तरूप हे सूक्ष्मरूप
हे श्रीके चिह्नको धारन करनेवाले आपको नमस्कारहै
३९ और हे त्रिविक्रमरूप हे दिव्य पीताम्बरवाले हे
सृष्टिके करनेवाले हे रक्षा तथा धारनकरनेवाले आपको
नमस्कारहै ४० हे सगुण तथा निर्गुणरूप हे बामन तथा
हे बामनकर्मकरनेवाले आपको नमस्कारहै ४१ हेवामन
नेत्रवाले हेबामन बाहुवाले हे रमणीक हेगुह्य हेटेढ़ेमुख
वाले आपको नमस्कारहै४२हे अतर्क्य हे रम्य हे भयके
हरनेवाले हेसंसाररूपी समुद्रमें नौकारूपी हेशांत सुंदर
रूपवाले आपको नमस्कारहै४३हेशिवरूप हे चन्द्ररूप
हे रुद्ररूप हे तारणरूप हेभवभंग करनेवाले हेभवभोग
देनेवाले आपको नमस्कारहै ४४ हे भवरूप हे भवसृष्टि
हृतरूप हे दिव्यरूप हे सोमअग्नि सरितृरूपवाले आ-
पको नमस्कारहै ४५ हे सोम सूर्य्याग्निकेशरूप हे गौ
ब्राह्मण हितकारी हे धामरूप तथा हे पदक्रम सुन्दर
रूपवाले आपको नमस्कार है ४६ हेऋक्स्तुत तथा हे
ऋक्श्रेष्ठरूप और हे ऋक् धारण करनेवाले हे यज्ञरूप
आपको नमस्कारहै ४७ हे यज्ञमेंपूज्य हे श्रेष्ठ तथा हे

पशुओं के पति और हे श्रीपति हे श्रीधर हे श्रेष्ठरूप आपको नमस्कार है ४८ हे श्री तथा कान्तिसे युक्त हे दांत हे योगको चिन्तवन करनेवाले हेयोगरूप हेसामरूप हे सामवेद की ध्वनिमें रत आपको नमस्कार है ४९ हे सामगोंमें असाम्यरूप हे सामगके जाननेवाले हे सामरूप तथा हे सामके गानेवाले और हे सामको धारण करनेवाले आपको नमस्कारहै ५० हे सामयज्ञ को जाननेवाले हे सामकेकरनेवाले हे अथर्वमें शिवरूप हे अथर्वरूपी आपको नमस्कारहै ५१ हे अथर्वरूप तथा हे अथर्व के करनेवाले हे वज्रसरीखे शिरवाले हे मधुकैटभके हनन करनेवाले आपको नमस्कारहै ५२ हे महा समुद्र में शयन करनेवाले हे वेदोंके हरनेवाले हे दीप्तस्वरूप हे हृषीकेश आपको नमस्कारहै ५३ हेभगवद्रूप हे वासुदेव हे नारायण हे नर्म अर्थात् क्रीड़ा में हित करनेवाले आपको नमस्कारहै ५४ हे मोहके दूर करनेवाले हे जन्म मरणकी निवृत्ति करनेवाले हे सुगति के देनेवाले हे बन्धके हरनेवाले आपको नमस्कारहै ५५ हे त्रिलोकी के करनेवाले हे तेजस्वरूप हे योगेश्वर हे शुद्धरूप हे अर्थका उद्धारकरनेवाले आपको नमस्कार है ५६ हे सुखको देनेवाले हे सुखरूपी नेत्रोंवाले हे सुकृतमें विचरनेवाले हे वासुदेव हे वन्द्यरूप हे वामदेव आपको नमस्कारहै५७ हे संकर्षण हे प्रलम्बका मथन करनेवाले हे देवतों को वांछित हे मेघ घोष से उतरा हुए लांगल की इच्छा करनेवाले आपको नमस्कार है ५८ हे सम्पूर्ण ज्ञानों में ज्ञानरूप हे नारायण हे परा-

यणरूपवाले आपको नमस्कार है आपके बिना मनुष्यों का उद्धार करने में कोई भी समर्थ नहीं है ५९ इसकारणसे हे प्रणतोनतवत्सल मैंने आपकी स्तुतिकरी है मेरे पापों का संसर्गहोरहाहै ६० और उनपापोंका दूरकरने वाला आपकेसिवा मैंने नहीं सुना इसलिये सम्पूर्णकामनाओंकोत्याग आपकेपास आयाहूँ ६१ हे विश्वज हे केशव आपसे मेरा संग है और दुःपार संसार की आपदाओं में जो कष्टहै तिसको मैं जानताहूँ ६२ तापत्रय से युक्तहुआ मैं आपके शरणमें आयाहूं मायासे मोहा हुआ यह सम्पूर्ण जगत् आपकी नाभिमें स्थितहै ६३ हे विष्णो लोभादिकों से आकर्षणकराहुआ मैं आपके आश्रयहुआहूँ संसारमें देहधारीको कुछभीसुख नहीं है ६४हेपुण्डरीकाक्ष जैसे मेराचित्तआपमेंहै तैसेही आपका भी हो और फलसेहीनको भवार्णवसेपारकरनेवाले आप केसिवा अन्य नहींहै६५ब्रह्माजी बोले कि हे द्विजो उस पवित्र और विख्यात पुरुषोत्तम युक्तक्षेत्रमें श्वेतराजाने ऐसे विष्णुकी स्तुतिकी ६६ और देवदेव जगत्के गुरु नीलमेघयुक्त कांतिवाले तथा पद्मकेपत्रसरीखे नेत्रवाले सम्पूर्ण देवतोंसे युक्त विष्णुभगवान् ६७ उसकीभक्ति को चिन्तवनकरके राजाकेसमीपआये६८ फिर श्रीमान् कृष्णने किरणोंसे दीप्तमण्डलवाले सुदर्शनचक्रको धारणकिये क्षीरसमुद्रके जलकीनाईं तेज और विमलचन्द्रमाकीकांतिकोधारणकिया६९ और महाकान्तिवाले बाम हाथमें पांचजन्यशंख श्रीमान् और गदा शंख असिचक्र को धारणकिये और गरुड़पैचढे शोभाकोप्राप्तहुये ७०

फिर भगवान् बोले हे राजन् हे अनघ तेरीबुद्धि बड़ी उत्तम है क्योंकि तूने वांछितवरकोमांगा इसलिये तुझपर हम प्रसन्नहुये ७१ उस देवदेव के परम अमृतरूपी वचनसुनके शिरकोनवायके भक्तिपूर्व्वक बोला कि ७२ हे भगवन् जो मैं आपकाभक्त हूँ तो ब्रह्माके भवनसेलेके विष्णुपद पर्यंत जो अव्यय स्थान है सोही उत्तम वर मुझको दो ७३ हे जगत्पते आपकेप्रसादसे संसार में विमल और विरज तथा स्वच्छ ध्वजारूपीपदको आपकी प्रसन्नतासे प्राप्तहोने की मैं इच्छा करता हूँ ७४ भगवान् बोले कि जिसमार्गको देवते मुनि सिद्ध और योगी नहीं प्राप्तहोते सो अव्ययपद कहाता है ७५ हे राजन् तू मृत्युको दूरकरके परमपदको प्राप्तहोगा और सम्पूर्ण लोकों का अवलंघन करके फिर मेरे लोकको प्राप्तहोवेगा ७६ हे राजेन्द्र तेरीकीर्त्ति तीनोंलोकोंमें प्रकाशितहोगी और श्वेतगंगाका सम्पूर्ण नर तथा देवता गानकरेंगे ७७ हे राजेन्द्र श्वेतगंगाजी के जलको जो मनुष्य कुशा के अग्रभाग से स्पर्शकरेगा सो सावधान होके स्वर्गलोक में वासकरेगा ७८ जो कोई माधव की चन्द्रमाकेसी कान्ति तथा शंख और गौ के दूध केसे तेजवाली सम्पूर्ण पापोंके नाश करनेवाली प्रतिमा को देखेगा ७९ और मेराभक्तहोके एकबार पवित्र अक्षियों वाली देवदेवकी मूर्त्तिको नमस्कार करेगा ८० वह इन सब लोकों को त्यागके मेरे लोकोंको प्राप्तहोवेगा और मन्वन्तर पर्य्यन्त देवकन्याओंसे युक्त रहेगा ८१ सिद्ध चारण गन्धर्व उसके अगाड़ी गानकरेंगे और मेरेसंग

अनेकप्रकार भोगोंको भोगके फिर इसलोकमेंवब्राह्मण कुलमें जन्मेगा और वेदवेदांगको जाननेवाला बुद्धिमान् तथा भोगोंका भोगनेवाला और बहुत आयुवाला होवेगा ८२ हस्ती अश्व रथ माला धन धान्यसे युक्त रहेगा और शुद्ध तथा रूपवान् बहुतसेबेटे पोतोंसे युक्त रहके ८३ अन्तमें बटवृक्षकी मूलके आश्रयहोके अथवा समुद्रके तटपर इस देहकोत्याग शान्तियुक्त पदको प्राप्त होवेगा ८४ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयंभूऋषिसम्बादेश्वेत माधवमाहात्म्यंनामसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि एकार्णवसमुद्रमें जो रूप पहिले स्थितथा तिस श्वेत माधव १ और वेदोंके हरनेके लिये रसातलपर स्थित तथा सम्यक् पृथ्वीका चिन्तवन करके तिसी स्थानपर स्थित २ और आद्यअवतार मच्छ सदृश माधवके रूपको देख और नम्रहो जो नमस्कार करताहै सो सम्पूर्ण दुःखोंसे छूटजाताहै ३ एवम् जहां हरिदेवहैं वहां वास करताहै और कालपाके पृथ्वीपर जन्मताहै और राजा होताहै ४ जो नर मत्स्य माधव को प्राप्त होताहै वह बड़े तेजवाला और दाता भोक्ता यज्वा तथा विष्णुभक्त और सत्य बोलनेवाला होजाता है ५ और योग को प्राप्त होके अन्तमें मोक्षको प्राप्त होजाताहै यह मत्स्यमाधव माहात्म्यहै ६ हे मुनि शार्दूलो जिस रूपको देखकर नर सम्पूर्ण कामनाओं से छूटजाते हैं ७ मुनियोंने पूंछा कि हे भगवन् इससंसार

में स्नान दानादिकों से कैसे तिरजाता है इसका फल आप कहो हमारी सुननेकी इच्छाहै ८ ब्रह्माजीने कहा कि हे मुनिशार्दूलो उत्पन्न होनेवालों को मुक्ति के देने वाले पुराणहैं सो तन्मयहोके सुनो ९ सम्पूर्ण पापों को नाश करनेवाला मार्कण्डेयह्रदमें स्नान है जो सम्पूर्ण कालमें मोक्ष दाताहै और चतुर्दशीको विशेष करके १० समुद्रमें स्नान करना सम्पूर्ण कालमें कहा है और विशेष करके पूर्णिमाको जो स्नान करते हैं सो अश्वमेध के फलको प्राप्तहोते हैं ११ मार्कण्डेयवट १ रोहिणीपुत्र २ कृष्ण ३ महोदधि ४ तथा इन्द्रद्युम्नका सरोवर यह पंच तीर्थी कही है १२ ज्येष्ठमास की पूर्णिमाको जो ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो तीर्थराज में स्नानका विशेष फल वर्णन किया है १३ कायाबाक् और मनसे शुद्ध अनन्य मन वाले और सम्पूर्ण पाखण्डसे रहित तथा राग और मत्सरतासे विगत मनुष्य कल्पवृक्षवट और जनार्दनको देखऔरसमाहितमनसेतीनबारपरिक्रमाकरके १४। १५ जो विष्णुका दर्शन करते हैं वे सप्तजन्मोंके पापोंसे छूट जाते हैं और बड़े पुण्य और सुन्दरगतिको प्राप्तहोते हैं १६ हे विप्रो उस विष्णुके नाम और युगयुगके प्रमाण तथा संख्या और ह्रदादिक यथाक्रमसे मैं वर्णन करूंगा १७ सो सुनो बटबटेश्वर कृष्ण और पुराणपुरुष ये सत्ययुगमें बटके नाम वर्णन किये हैं १८ और तीनयोजन लम्बा चौड़ा और अर्धयोजन ऊंचा कल्प वृक्षका प्रमाण वर्णन कियाहै १९ पूर्वोक्त प्रकारसे उस वट को नमस्कार करके तीनसौ धनुष दक्षिण दिशा

को २० जहां मनकोरमणकरनेवाला स्वर्गके द्वारका चिह्न दीखताहै और जो सागरयुक्त सम्पूर्णगुणोंवाली दिशा है गमनकरै २१ और वहां स्थित होके विष्णुको नमस्कारकर तथा बारम्बार पूजनकरके सम्पूर्ण रोगादिकों और पापग्रहों से छूटजाता है २२ पहिले उग्रसेन को देख और स्वर्गद्वारसे समुद्रपर जाय आचमनकर शुद्ध होके उत्तम नारायण का ध्यान करके २३ अष्टाक्षर मन्त्रसे जो हाथों और शरीरमें न्यासकरतेहैं २४ तिनको और बहुतसे मनको भ्रमानेवाले मन्त्रोंसे क्याहै उन्हें तो (ॐनमोनारायणायेति) यही मन्त्र सम्पूर्ण अर्थोंको साधन करनेवालाहै २५ पहिले विष्णुका जलमें स्थान था तिससे नारायण कहातेहैं २६ वेद द्विज ज्ञान क्रिया धर्म तप दान ब्रत लोक सुर नित्यता परमपद पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश अहंकार तथा बुद्धि और भूत भव्य भविष्यत् आदि जो कुछ जीव संज्ञक और स्थूल सूक्ष्म है सो सब नारायणपरहैं २७। ३१ हे द्विजो यहां नारायणसेभिन्न कुछभी नहीं है उसीसे यहसब चराचर व्याप्त होरहाहै ३२ अप जो जलहै यह विष्णुकास्थानहै और विष्णुजलों के पति हैं इससे भयके दूरकरनेवाले विष्णुका नित्य स्मरण करना चाहिये ३३ स्नानकालमें जलको ग्रहणकर खड़ाहो नारायणका स्मरणकर हाथों और कायामें न्यासकरै ३४ अर्थात् बायेंपैरमें ॐकार दहिनेमें नकार बाईंकटि में मोकार दहिनी कटिमें नाकार नाभि देशमें राकार बायेंबाहुमें यकार ३५। ३६ दहिनी तर्फ णाकार मस्तकमें यकार ऐसे न्यासकरके और नीचे

ऊपर धीरेधीरे तथा पृष्ठपर और अगाड़ी ३७ नारायण देवका ध्यानकरके बुद्धिमान् कवचका आरम्भ करै कि पूर्वकीतर्फ गोबिन्द दक्षिणकीतर्फ मधुसूदन ३८ पश्चिम की तर्फ श्रीधर तथा उत्तरकीतर्फ केशव रक्षाकरो और आग्नेयमें विष्णु तथा नैऋत्यमें माधव ३९ बायव्यमें हृषीकेश तथा ऐशान्यमें माधव सुतलमें बाराह और ऊपरको त्रिविक्रम रक्षाकरो ४० ऐसे कवचको धारणकरके फिर आत्माका चिन्तवनकरै अर्थात् शंख चक्र गदा पद्मको धारण करनेवाले नारायण देव का ध्यानकरके हृदयमें इसमन्त्रका उद्घाटन करै ४१ और यह कहे कि हे नाथ आप शत्रुओंको अग्निरूप हैं और कामके प्रकाशकरनेवाले तथा प्रधानरूप और सम्पूर्णजीवोंके प्रभुरूप अविनाशी हैं ४२ हे देव अपांपते हे तीर्थराज इसीकारण आप अरनिरूपहैं और योनिहैं मेरे दुःखको हरो आपको नमस्कारहै ४३ ऐसे हे मुनिश्रेष्ठो बिधान पूर्वक उच्चारणकरके फिर स्नानकरै और अन्यथा स्नान करना श्रेष्ठ नहीं है ४४ वेदों के मन्त्रों से अभिषेक तथा मार्जन करके पश्चात् जलमें अघमर्षण मन्त्रको जपै ४५ हे विप्रो जैसे अश्वमेध यज्ञ नरोंके पापों को हरलेताहै तैसेही अघमर्षणमन्त्र सर्ब पापोंको नाशता है ४६ फिर जल से बाहर निकसकर निर्मल उत्तरीय वस्त्रों को धारणकर प्राणों और वाणी का निरोध कर सन्ध्याका उपासनकरके ४७ पुष्पोंकी जलांजली ग्रहण कर ऊर्ध्वबाहु स्थित हो सूर्य्य का पूजन करै ४८ और पवित्र करनेवाली गायत्री देवी को अष्टोत्तरशत जपै

एवम् अन्य पवित्र मन्त्रोंको जपके समाहितहोके स्थित हो ४९ फिर सूर्य्यकी प्रदक्षिणा और नमस्कारकर पूर्व की तर्फ मुखकरके प्रथमदेवता और ऋषियोंका तर्पण करै ५० फिर मनुष्य और पितरों का तर्पणभी तिल मिलेहुये जलकेसाथ विधिसेकरै क्योंकि समाहितहुआ मनुष्य देवतोंका तर्पणकरके ५१ पितरोंके तर्पणकरने का अधिकारी होताहै श्राद्धकालमें एक हाथसे विसर्जनकरै ५२ और दोनोंहाथोंसे तर्पणकरै और अन्वारब्ध अर्थात् गोड़ेको नवाके बायेंहाथसे दक्षिणहाथमें जलको डालताहुआ ५३ (तृप्यन्तां) २ऐसा वचननाम और गोत्रसहित कहै जो पुरुष तिलोंको हाथ पर रख अज्ञानसे पितरोंका तर्पणकरताहै ५४ वह जल रुधिर केसमान होजाताहै और तिसका देनेवाला पुरुष पापों का अधिकारी होताहै ५५ पृथ्वी में जो जल देताहै और आप जलमें स्थित रहता है तिसका दियाहुआ वृथा जाताहै किसीको नहीं मिलताहै ५६ जो जल से बाहर स्थितहोके जलमें तर्पणकरताहै वह जल पितरों को नहीं मिलताहै ५७ और जलमें जलडालके पितरों के लिये तर्पण कभी नकरना चाहिये ५८ किंतु पवित्र जगह स्थित हो जलसे तर्पणकरै जलमें अथवा पात्रों में क्रोधकरके अथवा एक हाथसे तर्पण न करै ५९ जो जल पृथ्वीमें नहीं दियाजाता वह पितरोंको नहीं मिलता हे द्विजो मैंने पितरोंको पृथ्वीका अक्षय स्थानदिया है ६० इसलिये पृथ्वीही में पितरों के तर्पण का जल डालनाचाहिये ६१ पितर पृथ्वीमें तो उत्पन्नहोतेहैं पृथ्वी

मेंही स्थित होते हैं और पृथ्वी मेंही लीन होजाते हैं इसलिये पृथ्वीही में जलदेना चाहिये ६२ और पृथ्वी में कुशाओंको बिछाकर मन्त्रोंसहित पितरोंका आवाहनकर पश्चिमके अग्रभागमें देवताओंका तर्पण और पूर्वके अग्रभागमें पितरोंका तर्पणकरै ६३ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेसमुद्रस्नान विधिर्नामअष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

देवता और पितरोंका तर्पण मौन धारणाकरके करै और हाथभरका चारकोन मण्डल पृथ्वीमें लीपके १ उस मण्डल में अष्टपत्र कमलको लिखे २ और फिर अष्टाक्षरविधानसे नारायण अजविभुकोलिखे ३ इसके उपरान्त उत्तम कायाशोधन कहतेहैं रेफसमन्वित अकारको हृदामें चिन्तवनकरके ४ पापोंको नाश करनेवाले प्रकाशमान मध्यस्थ आकारको मस्तकमें चिन्तवनकरै ५ सफेदवर्णवाले अमृतवर्षतेहुये और अमृत से पृथ्वी को आच्छादन करतेहुये ईश्वरके ध्यानकरने से मनुष्य पापोंसे रहितहोके दिव्यदेहवाला होजाताहै ६ देहात्मावाला बुद्धिमान् पुरुष इस अष्टाक्षरमंत्र का न्यास बायें पैरसे आरम्भ करके क्रमसे सब शरीर में करै ७ और वैष्णव पंचांग और चतुर्व्यूह मूलमन्त्रसे साधक पुरुष हाथों की शुद्धि करै ८ अर्थात् एक एक वर्णको अँगुलियों में पृथक् २ वर्णोंका न्यासकरै पृथ्वी शुक्ल ओंकार को बायें पैर में ध्यावे ९ भुवर्लोक तथा श्यामवर्णवाले नकार को दक्षिण पैरमें स्थित करै और

जहां लोक प्रतिष्ठित हैं तहां शिर स्थान में यकार को स्थापितकरै १० अथमन्त्रः ओंविष्णवेनमः शिवः ज्वलनायनमः शिखः ओंविष्णवे नमोनमः कवचं विष्णवे षुच ११ दिशोबन्धाय ओंह्रींफट् अस्त्रंओंशिरसि शुक्लोवासुदेवइति ओंअस्मात्वललाटेरक्षासंकर्षणोगरुत्मान् वह्निस्तेजसआदित्यइति १२ ओंग्रीवायांप्रीताप्रद्युम्नोवारिमेधाया ओंआंहरायकृष्णोनिरुद्धःसर्वशक्तिसमन्वित इति १३ ऐसे आत्माको चतुर्व्यूहकरके कि मेरेअगाड़ीविष्णु पीठपरकेशव १४ और दाहिने और बायेंतरफ मधुसूदन स्थित हैं ऊपरवैकुण्ठ तथा पृथिवीतलपर बाराहस्थित हैं १५ और अन्तरदिशाओंमें माधवस्थित हैं चलते हुये तथा स्थितहुये और अगाड़ी तथा सोतेमें नृसिंह स्थित हैं १६ और गुप्तस्थानोंमें जलमयविष्णु स्थित हैं और विष्णुमयहोके कर्मकाआरम्भकरै १७ जैसे देह में तैसेही देवमेंयोजनाकरै और प्रणवपूर्वक प्रोक्षण करै १८ और सर्वविघ्नहरनेवाला शुभफट् अक्षर पर्यंत उद्देशकरके सूर्य्य और सोमकेमण्डलका चिन्तवनकरै १९ पद्मकेमध्यमें विष्णुकोस्थितकरके समीपमेंभानुको और हृदामें ज्योतिस्वरूपओंकारको स्थितकरै २० कर्णिकार अर्थात् कमलकीडण्डीपर स्थित सनातनज्योति और अष्टाक्षरमन्त्रको वृक्षकीनाईं स्थितकरै २१ इससमस्त सामग्री और द्वादशाक्षरमन्त्रसे सनातनदेवका पूजन करै २२ फिर हृदामेंनिश्चयकरके चतुर्भुजाऔरमहासत्वरूप कोटिसूर्य्यकेसीकांतिवाले भगवान् का कर्णिकाके बाहरन्यासकरै २३ और महायोगवाले सनातनज्योति

रूपका चिन्तवनकरके फिर क्रमसे मन्त्रका चिन्तवन करके आवाहनकरै २४ हे भीम तथा वराहनृसिंह तथा वामन और देवी तथा नारायण वरकेदेनेवाले ये मेरे अगाड़ीरहो २५ (ॐनमोनारायणाय) यह आवहनमंत्र है हे मधुसूदन कर्णिकामें अर्थात् कमलकीडण्डी बिषे सुमेरुके पैररूपी सम्पूर्ण जीवोंके हितके लिये आपका आसनकल्पितकियाहै २६ (ॐनमोनारायणाय) यह स्थापनमन्त्रहै (ॐत्रैलोक्यपतीनांपतयेदेवदेवाय हृषी-केशाय विष्णवेनमः ॐनमोनारायणाय)२७ यहअर्घ्य मन्त्रहै (पादयोर्देवदेवेशपद्मनाभ सनातन। विष्णोक मलपत्राक्ष गृहाणपुरुषोत्तम ॐनमोनारायणाय) २८ यह पाद्यमन्त्रहै (मधुपर्कंमहादेवंब्रह्माद्यैः कल्पितंमया ॐनमोनारायणाय) २९ यह आचमनीयमन्त्रहै (त्व-मापःपृथिवीचैवज्योतिस्त्वंवायुरेवच। लोकसंवृतिमात्रे णचारिणाम्लाव्यपाम्यहं ॐनमोनारायणाय) ३० यह स्नानमन्त्र है (देवत्वंवाससमायुक्तो यज्ञवर्णसमन्वितः। स्वर्णवर्णाप्रभोदेव वाससीतवकेशवं ॐनमोनारायणा-य) ३१ यह वस्त्रमन्त्र है (शरीरंतेनजानामिचेष्टांचैव चकेशव। मायानिवेदितंनाथ प्रतिगृह्यविलिप्यतां ॐ नमोनारायणाय) ३२ यह विलेपनमन्त्र है (ऋग्यजुः साममंत्रेण त्रिवृत्तंपद्मयोनिना। सावित्रीग्रथितंयुक्तउप वीतंत्वंगृहाणच ॐनमोनारायणाय) ३३ यह उपवीत मन्त्रहै(दिव्यरत्नसमायुक्तं वह्निभानुसमन्वितं । गा-त्राणितवशोभंतु सालंकाराणिमाधव ॐनमोनारायणा य) ३४ यह अलङ्कारमन्त्रहै (ॐनमः ॐनमः ॐनमः

ओंनमोनारायणाय) ३५ पृथक्२ मूलमन्त्रसे पूजनकरै (ओंनमःपुरुषोत्तमाय) वनस्पतिकारस है दिव्य है ३६ गन्धसेयुक्त है देवतोंसे पूजितहै और भक्तिसेमेरा निवेदितकियाहुआ यह धूपग्रहणकरो ३७ (ओंनमोनारायणाय) यह धूपमन्त्रहै आपसूर्य्य हैं तथा ज्योतिरूप हैं और विजली तथा अग्नी और ज्योतियोंके देव हैं यहदीपग्रहणकरो(ओंनमोनारायणाय)३८यहदीपमन्त्र है हे केशव षट्रसों से समन्वित चार प्रकार का अन्न भक्तिसे मेरा निवेदित कियाहुआ नैवेद्यग्रहणकरो (ओंनमोनारायणाय) ३९ यह नैवेद्य मन्त्र है पूर्वदल में वासुदेवको दक्षिणमें सङ्कर्षणको पश्चिममें प्रद्युम्नको उत्तरमें अनिरुद्धको और वराहको अगाड़ी ४० तथा नृसिंहको नैर्ऋतमें माधवको वायव्यमें और त्रिविक्रम को ऐशान्यमें स्थित करके ४१ वेदके अष्टाक्षर मंत्रको स्थितकरै फिर उस देवके अगाड़ी गरुड़को दाहिने तर्फ गदा और शार्ङ्गधनुषको स्थितकरै ४२ दाहिनेओरहृषीकेशको और बायेंओर शंखको स्थितकरै दाहिनेतर्फ श्री को ४३ भीतरपुष्टिको व अगाड़ी बनमाला श्रीवत्स व कौस्तुभको स्थितकरै ४४ फिर पूर्वसे हृदयादिकोंमेंचारोंओर न्यासकरै ४५ इन्द्र अग्नि और यमको नैर्ऋत में और वरुण और कुवेरको ईशानमें अनन्त ब्रह्मासहित अध ऊर्ध्वभागमें मंत्रोंसे पूजनकरै ४६ ऐसे मण्डलमें स्थित देवदेव जनार्दनका पूजन करनेसे मनुष्य बांछितकामनाओंको प्राप्त होताहै इसमें संशयनहीं ४७ इस विधान से मण्डलमें स्थित जनार्दनको जोदेखताहै औरपूजता

है सो मोक्षको प्राप्तहोताहै ४८ और जिसने एकबारभी विधिपूर्वक विष्णुकापूजनकियाहै वह जन्म मृत्यु जराको तिरके विष्णुकेपदको प्राप्तहोता है ४९ आलस्य त्याग के जो निरन्तर भक्तिसे नारायण का स्मरण करता है तिसके बासकेवास्ते श्वेतद्वीप कल्पितकियाजाता है ५० ओंकार तथा नमस्कारसे युक्त और सब जीवों के नाम मंत्रसे इसीविधानसे गन्ध पुष्पको निवेदनकरै ५१ और यथोद्दिष्ट क्रमसे एक एकका पूजन करके विधानपूर्वकमुद्राकरै और मूलमंत्र ५२ अट्ठाईस तथा एकसौआठजपै और कामनाओं के फल प्राप्तिके लिये सावधान होके यथाशक्ति जपै पद्म शंख श्रीवत्स गदा गरुड़ चक्र शंख और शार्ङ्ग ये अष्टमुद्रा कहे हैं ५३ पूजनके अन्तमें यह कहके बिसर्ज्जन करै कि हे पुरुषोत्तम आप परम स्थानको जाइये जहां ब्रह्मादिकदेवहैं ५४ जो यथोदित मंत्रों से हरिके पूजनको नहींकरते उन्हें मूलमंत्रसे अच्युतका पूजन करना चाहिये ५५ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेपूजाविधिवर्णनोनामएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा ऐसे भक्तिपूर्व्वक पुरुषोत्तम को पूज और नमस्कारकर सागरको प्रसन्नकरै १ कि हे सरितांपते हे तीर्थराज हे अच्युतप्रिय आप सम्पूर्ण भूतों के प्राणरूप हैं मेरीरक्षाकरो २ ऐसे कह सागरमें स्नान कर तटपर विष्णुका विधिवत् पूजनकरै ३ नारायण तथा रामकृष्ण सुभद्रा और सागरको जो नमस्कार करता

है वह सौअश्वमेधोंके फलकोप्राप्तहोताहै ४ और स-
म्पूर्ण पापोंसे तथा सब दुःखोंसे छूट देवतोंकीनाईं श्री
वाला तथा रूपयौवनसे गर्वितहोजाताहै ५ और दिव्य
गन्धर्वोंसे शब्दितहो सूर्य्यकेसेतेजमान विमानपरचढ़
इक्कीस पीढ़ियोंका उद्धारकर विष्णुलोकको प्राप्तहोता
है ६ और तहां सौमन्वन्तरतक अच्छेभोगों को भोग
अप्सराओंसे क्रीड़ाकरता है और जरामृत्युसे वर्जित
रहताहै ७ एवम् जब पुण्यक्षयहोजाताहै तबयहांसम्पूर्ण
गुणयुक्तकुलमें जन्म ले शुभ श्रीमान् ८ सत्यवादी और
जितेंद्रिय वेद शास्त्रार्थ के जाननेवाला और यज्ञों को
करनेवाला विष्णुभक्त ब्राह्मणहोताहै और वैष्णवयोग
को प्राप्तहो मोक्षको प्राप्तहोताहै ९ ग्रहण संक्रांति अ-
यन अमावास्या युगादिकों व्यतीपात दिनक्षय १० आ-
षाढ़ और कार्त्तिक तथा माघ और शुभतिथीमें जो ब्रा-
ह्मणोंके लिये दानदेतेहैं ११ वे हजार अश्वमेधोंकेफल
को प्राप्तहोतेहैं और विधानसे पितरोंकोजो पिण्डदेते हैं
१२ उनके पितर अक्षयगति को प्राप्तहो निश्चयतृप्ति
को प्राप्तहोते हैं हेविप्रो यह सागरके स्नानकाफल मैंने
तुमसेकहा १३ और पिण्डदानका जो अनंतफल है सो
भी कहा सागरका स्नान धर्म अर्थ मोक्ष आयु कीर्त्ति
यश १४ भुक्ति और मुक्ति आदि सम्पूर्ण कामनाओं
को देनेवाला धन्य दुःस्वप्नों को नष्ट करनेवाला और
सम्पूर्ण पापोंको हरनेवालाहै १५ हे द्विजो नास्तिकोंसे
यह कथा कहना योग्यनहीं है अपने २ पर्वमें सब तीर्थ
शब्दयुक्त होजाते हैं १६ जब तक मनुष्य तीर्थराजके

माहात्म्यको नहीं सुनते तबतक उसके फलको भी नहीं प्राप्तहोते १७ पृथिवीपर जितनेतीर्त्थ और सरित तथा सरोवरहैं तिनसबकाफल सागरमें रहताहै तिसकारण वह श्रेष्ठहै १८ सागर सब नदियोंका राजा और पति है इसकारण सम्पूर्ण कामनाओंको देनेवाला श्रेष्ठ और सम्पूर्ण तीर्थों से अधिकहै १९ जैसे सूर्य्य के उदय में अँधेरा नाशहोताहै तैसेही इसतीर्त्थराजके स्नानकरने से सबपापोंका नाशहोजाताहै २० और इसतीर्त्थराजके समान तीर्त्थ न हुआहै और न होगा क्योंकि वहां आप विष्णुभगवान् स्थितहैं २१ इस तीर्त्थराजके गुणों को कहनेमें कौन समर्त्थहै २२ वहां ९९ कोटि तीर्त्थहैं इस वास्ते स्नान दान जप होम देवपूजन आदि जो कुछ वहां कियाजाताहै वह अक्षय होजाताहै २३ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेसमुद्रस्नान माहात्म्यवर्णनन्नामषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे द्विजश्रेष्ठो पश्चात् यज्ञांग सम्भव तीर्त्थमें जाके इन्द्रद्युम्न नामक पवित्र और शुभ सरोवरमें १ आचमनकर मन से हरिका स्मरण और ध्यानकर और जलका स्पर्शकरके इसमन्त्रका उच्चारण करै २ कि (अश्वमेधाङ्गसम्भूत तीर्त्थसर्व्वाघनाशन ॥ स्नानंत्वयिकरोम्यद्य पापंहरनमोस्तुते) ३ ऐसे इसमन्त्र का उच्चारणकरके विधिवत् स्नानकर देवता पितृ और ऋषि और अन्योंका तिलजलसे तर्पणकरै ४ पितरोंके लिये पिण्डदानदे पुरुषोत्तम भगवान्का पूजनकरमनुष्य

दश अश्वमेध यज्ञसेभी अधिकफलको प्राप्तहोताहै ५ और सातअगिली तथा सातपिछिली पीढ़ीके वंशोंका उद्धारकरके देवतोंकीतरह कामग बिमानमेंबैठके विष्णु लोकमें प्राप्तहोताहै ६ और वहां जबतक चन्द्रमा और तारागणहैं तबतक अनेकप्रकारके सुखभोग मृत्युलोकमें मोक्षको प्राप्तहोजाताहै ७ऐसे पांच तीर्थोंके दर्शन और एकादशीकेदिन ब्रतकर जो ज्येष्ठसुदी पूर्णमासीके दिन पुरुषोत्तम भगवान् को देखताहै ८ वह पूर्वोक्त फलको प्राप्तहो भगवान्के स्थानमें क्रीड़ाकरताहै जहांसे फिर निवृत्ति नहींहोती ९ मुनियोंने पूंछा कि हे प्रभो अन्य सब महीनोंको त्यागके ज्येष्ठके महीनेकीही प्रशंसाआप क्योंकरतेहो इसका कारणकहो १० ब्रह्माजीबोले कि हे मुनिशार्दूलोसुनो मैंविस्तारसे बारम्बार ज्येष्ठकेमहीनेकी प्रशंसा करताहूँ ११ और पृथ्वीपर जितनेतीर्थ नदी सरोवर तालाब बावड़ी कूंवे ह्रदहैं १२ वे सब ज्येष्ठके महीनेमें पुरुषोत्तम तीर्थ में शयनकरतेहैं और सर्वदा ज्येष्ठशुक्ला दशमीकेदिन प्रत्यक्षहोतेहैं १३ हे द्विजो इस लिये सब स्नान दानादिक और देवतों का दर्शन जो कुछ तिसकालमें वहां कियाजाताहै वह अक्षयहोजाता है १४ ज्येष्ठसुदी दशमी दशपापोंका नाशकरतीहै इस लिये इसकानाम दशहराहै १५ जो पुरुष दशमीकेदिन कृष्ण बलदेव और सुभद्राका दर्शन करताहै वह सब पापोंसे निर्मुक्तहो विष्णुलोक में प्राप्तहोताहै १६ उत्त-रायण तथा दक्षिणायन में पुरुषोत्तम तीर्थ में बलदेव और सुभद्राके दर्शनकर मनुष्य विष्णुलोकमें प्राप्तहो-

जाताहै १७ जो मनुष्य फाल्गुनी नक्षत्रके दिन सवारी पर पुरुषोत्तम गोविन्दको देख पुरमें जाय १८ विधान से पांचतीर्थोंमें बलदेव और सुभद्राके दर्शन करताहै १९ वह सब यज्ञोंके फलको प्राप्तहोजाताहै और सब पापोंसेविमुक्तहो विष्णुलोकको प्राप्तहोताहै २० बैशाख सुदी तृतीयाकेदिन जो चन्दनसे विभूषित श्रीकृष्णके दर्शनकरताहै वह भगवान्के स्थानको प्राप्तहोताहै २१ और जो ज्येष्ठानक्षत्र सहित ज्येष्ठकी पूर्णमासीके दिन पुरुषोत्तम भगवान् के दर्शन करताहै वह इक्कीसकुलों का उद्धार करके विष्णुलोक में प्राप्तहोताहै २२ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्वादेपञ्चतीर्थ माहात्म्यंनामएकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

बासठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीबोले कि जब राशि और नक्षत्रसे युक्त महाज्येष्ठी अर्थात् ज्येष्ठसुदी१५ हो तब बुद्धिमान् पुरुषोंको पुरुषोत्तमतीर्थमें जानाचाहिये १ क्योंकि उसदिन श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्राके दर्शनसे बारहगुना फल प्राप्त होताहै २ प्रयाग कुरुक्षेत्र पुष्कर नैमिष गया गंगाद्वार कुब्जाम्र गंगासागर संगम कोकामुख शूकर मथुरा मरुस्थल शालग्राम वायुतीर्थ मन्दार सिन्धुसागर पिण्डारक चित्रकूट प्रभास कनखल कालञ्जर गोकर्ण श्रीशैल गन्धमादन महेंद्र मलयाचल विंध्य पारिपात्र हिमालय सह्याचल मुक्तिमंत गोमन्त अर्बुद गंगा और यमुना जी के सब तीर्थ सरस्वती गोमती सप्तब्रह्मपुत्र तीर्थ गोदावरी भीमरथी तुंगभद्रा नर्मदा तापी

पयोष्णी कावेरी क्षिप्रा चर्म्मण्वती बितस्ता चन्द्रभागा शतद्रु बाहुदा ऋषिकुल्या कुमारी दृषद्वती सरयू गण्डकी कौशिकी करतोया अतिश्रोता मधुवर्त्तिनी महानदी वैतरणी और बिनाकही अन्य सबनदियों पृथ्वी के सब तीर्थों विष्णुके मन्दिरों समुद्रों पर्वतों सरोवरों आदिमें और सूर्य्यग्रहणमें स्नानदानका जो कुछ फल होताहै वही महाज्येष्ठी अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्रसहित ज्येष्ठ की पूर्णिमाको श्रीकृष्णके दर्शन करनेसे होताहै ३।१३ इसलिये सब यत्नोंसे इच्छित फलकी बाञ्छावाले मनुष्योंको महाज्येष्ठीके दिन पुरुषोत्तमतीर्थमें जानाचाहिये १४ वहां बलदेव श्रीकृष्ण और सुभद्राके दर्शन कर मनुष्य सौकुलों का उद्धार कर विष्णुलोकमें प्राप्त होताहै १५ और वहां प्रलयतक श्रेष्ठभोगोंको भोगके पुण्य क्षयहोने के बाद इस लोकमें आके चतुर्वेदपाठी ब्राह्मण होताहै १६ और अपने धर्ममें निरत शांतकृष्ण भक्त और जितेन्द्रिय होके वैष्णवयोगको प्राप्तहो मोक्ष को प्राप्त होजाता है १७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेमहाज्येष्ठीप्रशंसानामद्वाषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

तिरसठवां अध्याय॥

मुनियोंने पूंछा हे भगवन् वहां किसकालमें श्रीकृष्ण का स्नानहोताहै और कौन करवाताहै १ ब्रह्माजी बोले हे मुनियो तुम श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्राके स्नान का पुण्य जो सब पापोंको नाश करनेवाला है सुनो २ ज्येष्ठके महीनेमें ज्येष्ठानक्षत्र सहित पूर्णमासी के दिन

सदा हरिका स्नान करायाजाताहै ३ उसदिन भगवान्
को स्नान करवा सुन्दर वस्त्र पहिनाके ध्वजाओं और
पष्पोंसे अलंकृतकरे ४ और विधिसे धूपदे इसप्रकार ब-
लदेव और श्रीकृष्णका स्नान करावै और सफेद वस्त्र
तथा मोतियोंका हार पहिनाके ५ अनेकप्रकारके बाजों
और मंत्रोंसे श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्राका स्थापन
करै ६ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनसबोंसे वह पुरुषोत्तम
क्षेत्र उस दिन युक्त होजाता है ७ और गृहस्थी यति-
जन ब्रह्मचारी आदि सब श्रीकृष्ण और पलंगपर स्थित
बलदेवको स्नान कराते हैं ८ एवम् पूर्वोक्त सब तीर्थभी
पुष्प मिश्रित अपने २ जलोंसे भगवान् को पृथक् २
स्नान कराते हैं ९ निदान ढोल और भेरी तथा मृदंग
और झर्झर एवम् अनेकप्रकारके अन्यबाजों तथाघंटों
और स्त्रियोंके मंगल शब्दों और मनोहर स्तुतियों व
अनेक प्रकारके पवित्र सामवेदके स्तोत्रोंसे यतियों सूत
संज्ञक गायकों और गृहस्थों तथा ब्रह्मचारियों द्वारा
भगवान्के स्नानकालके समय स्तुति कीजाती है कुचों
के भारसे नई हुई सोलहवर्ष की स्त्रियांभी उस देवकी
स्तुति और १०।१३ माला रत्न दिव्य कुण्डल और सु-
वर्णके गुच्छोंसे पूजा करती हैं १४ और सुवर्णकी दण्डी
वाले चँवरोंको बलदेव और श्रीकृष्णपर सबजन डुलाते
हैं १५ यक्ष विद्याधर सिद्ध किन्नर अप्सराओं के गण
और परिचर्यामें स्थित देव गन्धर्व चारण आदित्य वसु
रुद्र इंद्र साध्य विश्वेदेवा मरुद्गण १६।१७और लोकपाल
तथा अन्यजन उस भगवान्की स्तुति करते हैं कि हे

देवदेव पुराण पुरुषोत्तम आपको नमस्कारहै १८ सब कामनाओंके फलदेनेवाले कृष्ण बलदेव और सुभद्रा को इसप्रकार पण्डितजन १९ प्रसन्न करते हैं और आकाशमें स्थितहुये देवते गन्धर्व और अप्सरायें गान करते हैं२० शीतल पवन चलती है और आकाशसे देवते बाजेबजातेहैं और पुष्पोंको वर्षातेहैं२१ मुनि सिद्ध चारण और इन्द्र आदिक देवते और ऋषि पितर आदि सब जयकृष्ण करते हैं २२ और प्रजापति नाग और अन्य स्वर्गबासी २३ मंत्रोंसाहित अभिषेचन द्रव्योंको ग्रहणकर चढ़ाते हैं देवताओंके गणों इन्द्र विष्णु सूर्य्य चन्द्रमा धाता विधाता वायु अग्नि पूषा भगदेव अर्यमा त्वष्टा अश्विनीकुमार धर्मराय वरुण एकादश रुद्र वसु इत्यादिकों से वह ईश्वर युक्त है और विश्वेदेवा मरुद्गणों साध्य संज्ञक देवतों पितरों गन्धर्वों अप्सराओं यक्षों राक्षसों पन्नगों और असंख्यात देवर्षियों ब्रह्मर्षियों और बालखिल्य मरीची भृगु आंगिरस और सबविद्या में निश्चयवाले विद्याधरों और योगिजनोंसे वहविष्णु भगवान् आवृत होते हैं २४।२६ ब्रह्मा पुलस्त्य पुलह आंगिरस कश्यप अत्रि मरीचि भृगु क्रतु वरुणमनु दक्ष ऋतु ग्रह तारा गण एवम् मूर्त्तिमान्होके नदी सनातन वेद समुद्र ह्रद और अनेक प्रकारके तीर्थ पृथ्वी आकाश दिशा वृक्ष और देवताओंकी माताअदिति और ह्री श्री स्वाहा सरस्वती उमा गौरी सिनीवाली अनुमति राका बुद्धि और अनेक देवताओंकी स्त्रियां हिमवान् विन्ध्याचल सुवर्णके शृंगवाला सुमेरु और अनु-

चरों सहित ऐरावतहस्ती कला काष्ठा पक्ष मास ऋतु अहोरात्र उच्चैःश्रवा हाहा हूहू गन्धर्व शेषनाग मृत्यु धर्मराय और धर्मरायके अनुचर और अन्य देवतों के गण उस देव को अभिषेचन करने के वास्ते उस दिन आते हैं ३०। ३७ हे विप्रो तब वे सब देवते सरस्वती और आकाशगंगाके जलसे भरेहुये कांचनके दिव्यकलशों से बलदेव और श्रीकृष्ण को आकाशसे स्नान कराते हैं ३८। ४० और दिव्यरत्नोंसे विचित्र बिमानों में बैठेहुये देवतों और अप्सराओंकेगण गीत और वाद्यसे भगवान्को प्रसन्नकरते हैं ४१।४३ और स्तुति करते हैं कि जयजयलोकपाल जयशरण्य जयपद्मनाभ जयभूधरण जय जय सूर्य्यानुज ४४ जय योगिबर जय जय योगाशय जयजय देवबर जयकैटभारे ४५ जयदेव वेगधर जयजय कूर्माधिप त्यायवर जय जयकमलानाथ जयशैलधर ४६ जयजययोगाशय जयवेगधर जयविश्वमूर्त्ति जयचक्रधर जयभूतनाथ जयधरणीधर जय शेषशायिन् ४७ जयपीतबासिन जयसामकलि जयजय योगेश जयजय जगदचक्षुदहन जयभ्रमबास ४८ जय गुण निधान जय श्रीनिवास जयजयगरुड़ गमन जय सुखनिवास ४९ जयजय धर्मकेतो जय जगतीनिवास जय जय गहनगेह निवास जय जय योगिगम्य जय मखनिवास ५० जय जय वेदवेद्य जय जय शांतिकर जय जय योगिचिंत्य जयजय पुष्टिकर ५१ जय ज्ञानमूर्त्ते जय कमलाकर जय भाववेद्य जय मुक्तिकर जय विमलदेह जयसत्वनिलय ५२ जयजय सृष्टिकर जय

गुणसमूह जयजय गुणविहीन जयजय मोक्षकर जयभू-शरण्य ५३ जयगोविंद जयकमलासन जयजय कांति-युत जयलोककारण ५४ जयजय लक्ष्मीयुत जयपङ्क-जाक्ष जयजय भोगयुत जयनीलाम्बर जयजयअतसी कुसुमश्यामदेह जयसमुद्र निविष्टगेह ५५ जय लक्ष्मी पङ्कजभोगानिह जयभक्तिभावनलोकनाथ जयजयलो-ककांत५६ जयपरमशान्त जयजय परमसार जयचक्र-धर जयशांतिकर जयजय मोक्षकर ५७ जयजयकलुष हर जयकृष्ण जगन्नाथ जयसंकर्षणानुजजयपद्मपला-शाक्ष जयबांछाफलप्रद५८जयमालावृतोरस्क जयचक्र गदाधर जयपद्मालयाकान्त जय विष्णोनमोस्तुते ५९ ब्रह्माजी बोले कि इसप्रकार इन्द्रादिक देवते और सिद्ध और चारणोंकेसमूह ६० एवम् अन्य स्वर्गबासी स्तुति और बालखिल्यआदि मुनि आकाशसे श्रीकृष्ण बल-देव और सुभद्रा को प्रणाम ६१ स्पर्श तथा नमस्कार कर अपने२ भवनकोजातेहैं ६२ उसकालमें जो मनुष्य पुरुषोत्तमभगवान् बलभद्र और सुभद्राके दर्शनकरतेहैं वे अव्यय परमपदको प्राप्तहोते हैं ६३ और बलदेव सहित सुभद्रा औरपुरुषोत्तमको मंचस्थ अर्थात् पलँग केऊपर स्थितहुये ६४ जो मनुष्य देखताहै वह अविनाशी स्थानमें प्राप्तहोताहै इसमें संदेह नहीं ६५ पुष्करतीर्थ में एकसौगोदानों एकसौकन्यादानों तथा बिधिसे भूमि सुवर्ण अन्न एवम् ग्रीष्मऋतुमें जलदान औरबिधिवत् चान्द्रायण आदिव्रतों और नानायज्ञों एवम् वृषोत्सर्ग आदिका जो पुण्य और फलहै वही फल बलदेवसहित

सुभद्रा और श्रीकृष्ण ७६।७७ के दर्शनकरनेसे प्राप्त होता है इसलिये स्त्री पुरुषों को पुरुषोत्तम भगवान् के अवश्य दर्शन करनाचाहिये ७८ समस्त तीर्थोंके जलसे स्नान करानेसे औरभी अधिकफल होताहै श्रीकृष्णके स्नानकरानेसे बाकीरहे जलसे शरीरका सेचनकरनेसे ७९ बन्ध्या मृतप्रजा दुर्भागा ग्रहपीड़िता और राक्षस आदिकोंसे ग्रसित तथा अन्य रोगोंसे युक्त ८० स्त्रियां बांछित कामनाओंको प्राप्तहोजातीहैं ८१ पुत्रकीइच्छा वाली पुत्र और सौभाग्य सुखों को प्राप्तहोती हैं और धनकी इच्छावाली धनको प्राप्तहोतीहैं ८२ पृथ्वीतल में जितने पवित्रहैं वे श्रीकृष्णके स्नानशेष जलकी सोलहवींकलाको भी नहीं पहुँचते ८३ हे द्विजो इसलिये कृष्णके स्नानविशेष जलको सब गात्रोंमें लगाना सब कामनाओंको देनेवालाहै ८४ जो श्रीकृष्ण को स्नान करातेहैं और दक्षिणामुखक्षेत्रको जातेदेखतेहैं वे मनुष्य ८५ गंगाद्वार तथा कुब्जाम्र तीर्थ और सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्रमें स्नान दानके फलको प्राप्तहोते हैं ८६ माघ के महीनेकी पूर्णमासीके दिन प्रयागमें और महाचैत्रीके दिन शालग्राम तीर्थमें स्नान दान करनेका जो फल होताहै वह फल दक्षिणामुखमें श्रीकृष्णके दर्शनकरने से होताहै ८७।८८ गंगाद्वार गंगासारस्वत तथा अन्य क्षेत्रों ८९।९० और सूर्य्यके ग्रहणमें स्नान दानका जो फल होताहै वह दक्षिणामुखमें श्रीकृष्णके दर्शनकरने से प्राप्तहोता है ९१ निदान बहुत कहने से क्या है जो कछु पुण्यकर्म्म यहां ९२ तथा वेदों भारतआदि पुराणों

और अन्य धर्म्मशास्त्रोंमें कहेहैं ६३ उनकाफल बल-देव सहित श्रीकृष्ण और सुभद्रा को दक्षिणामुख क्षेत्र में दर्शन करनेसे प्राप्तहोताहै ६४ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्वादेकृष्णस्नान माहात्म्यन्नामत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौसठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीबोले कि गुड़िचक्षेत्रमें जातेहुये रथमेंस्थित श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्राके जो दर्शन करते हैं वे हरिके भवन को प्राप्तहोते हैं १ और जो पुरुष वहां सातदिनतक मण्डप में स्थित श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्राके दर्शनकरतेहैं वे विष्णुलोकको जातेहैं २ मुनि-योंने पूँछा कि किसने वह गुड़िचानामवाली जगत्पति भगवान्की यात्रा रचीहै वहां यात्राका क्या फलहै ३ और किसलिये सरोवरके तीर उसपवित्र और बिजन देशके मण्डपमें ४ श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्रा अपने स्थानको त्यागके सात रात्रितक बासकरतेहैं ५ ब्रह्मा जी बोले कि हे ब्रह्मणे पूर्वकालमें इन्द्रद्युम्ननामक राजा ने हरिकी प्रात्र्थना करके कहा कि सरोवरके तीर मेरी यात्राहो ६ तब भुक्ति मुक्ति को देनेवाले गुड़िचक्षेत्र में अपने बासकरनेका पुरुषोत्तम भगवान् ने बरदिया ७ श्रीभगवान् ने कहा कि हे राजन् सरोवर के तीर सात दिनतक मेरी यात्राहोवेगी और गुड़िचानामवाली वह यात्रा सबकामनाओंकी सिद्धिकरनेवालीहोगी ८ और जो पुरुष मण्डपमें स्थित मेरापूजन और बलदेव तथा सुभद्राके दर्शनकरैंगे उनकी सिद्धि ९ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य

तथा शूद्र स्त्री पुरुष जो कोई गंध दीप धूप नैवेद्य १०
और बहुत प्रकारके उपवास तथा प्रदक्षिणा और जय
शब्दस्तोत्र और मनोहर गीत वाद्य ११ सहितमेरा पू-
जनकरैंगे उनको कुछभी दुर्लभ न होगा १२ हे नृपश्रेष्ठ
मेरे प्रसाद से वे इच्छित फलको प्राप्तहोवेंगे १३ ऐसे
उससेकहके विष्णुभगवान् अन्तर्द्धान होगये और वह
श्रीमान् राजा कृतकृत्य होगया १४ हे द्विजोत्तमो इस
लिये सब यत्नोंसे गुड़िचतीर्थ में पुरुषोत्तम भगवान्के
दर्शनकरने से सब कामना सिद्धहोती हैं १५ बिनापुत्र
वाला पुत्रको पाताहै निर्धन पुरुष धनको प्राप्तहोता है
रोगीरोगसे छूटजाताहै कन्याको श्रेष्ठपति मिलताहै १६
और आयु कीर्त्ति यश मेधा बल विद्या भृत्य पशु और
रूपयौवनकी सम्पदा मिलतीहै १७ पुरुषोत्तमभगवान्
के दर्शनकरके जिनभोगोंकी इच्छा मनुष्यकरताहै नर
अथवा नारी उन्हींभोगोंको प्राप्तहोता है इसमें सन्देह
नहींहै १८ आषाढ़शुक्ल में विधिवत् गुड़िचा नामवाली
यात्राकरके १९ श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्राके दर्शन
करनेसे मनुष्य १५ अश्वमेध यज्ञोंसे भी अधिकफल
को प्राप्तहोताहै २० और अपने सकाससे सात अगिली
और सात पिछिली पीढ़ियोंका उद्धार करदेताहै २१ वह
पुरुषरत्नों से अलंकृतहो इच्छापूर्वक चलनेवाले विमान
में बैठ २२ गंधर्व और अप्सराओं से सेवित रूपवान्
तथा सुन्दर ऐश्वर्यमान् होके विष्णुपुरको जाताहै २३
और वहां प्रलयकालतक सुन्दर भोगों को भोग सब
कामनाओंसे बढ़ाहुआ बुढ़ापे तथा मरने से बर्जितहो

जाताहै २४ जब पुण्यका नाश होताहै तब वह इसलोक में आके चारोंवेदोंको जाननेवाला ब्राह्मणहोताहै और वैष्णव योगको प्राप्तहो मोक्षको प्राप्तहोजाताहै २५॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्वादेगुडिचाया माहात्म्यंनामचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४॥

पैंसठवां अध्याय॥

मुनियोंने पूंछा कि हे ब्रह्मन् एक एक यात्राके पृथक् २ फलकहो १ ब्रह्माजीबोले कि हे विप्रो उसयात्रामें जिस क्षेत्रमें कि समाहित पुरुष जिसफलको प्राप्तहोताहै सो सुनो २ फाल्गुनीनक्षत्रके उत्थानमें अथवा जिसदिन रात्रिदिन समान हो तब विधानसे गुड़िचामें यात्राकर श्रीकृष्ण बलभद्र तथा सुभद्राको प्रणामकरके मनुष्य अक्षयफलको प्राप्तहो जबतक चौदहइन्द्र राज्यकरें तब तक विष्णुलोकमें रहताहै ३।४ पुरुष जितनेदिन ज्येष्ठ के महीने में बिधिवत् यात्राकरताहै उतनेही कल्प विष्णुलोकमें सुखभोगता है इसमें संदेह नहीं है ५ उस श्रेष्ठ और भुक्ति मुक्ति तथा सुखदेनेवाले पुरुषोत्तमक्षेत्र में ६ ज्येष्ठ में जो नरनारी अथवा यतीयात्राकरै और यथार्थ बिधानकरके प्रतिष्ठाकोकरै ७ वह सबपापोंसे छूट और अनेक प्रकारके भोगोंकोभोग अन्तकालमें मोक्ष को प्राप्तहोताहै ८ मुनियोंने पूंछा कि हेदेव आपसे हम प्रतिष्ठाकाबिधान और भगवान् की पूजाका माहात्म्य सुननेकी इच्छा करते हैं ९ ब्रह्माजी बोले हे मुनिश्रेष्ठो प्रतिष्ठाकी बिधिको तुम सुनो जिसके करने से मनुष्य इच्छितफल को प्राप्तहोते हैं १० हे द्विजोत्तमो जब बा-

रहयात्रा सम्पूर्णहोलेवें तब बिधिवत् पापनाशिनी प्रतिष्ठाकोकरै ११ ज्येष्ठके महीनेमें शुक्लपक्षकी एकादशी के दिन समाहितहो पवित्र जलाशय अर्थात् सरोवर पर जा आचमनकर पवित्रहो १२ और सब तीर्थोंका आवाहनकर नारायणका ध्यान करके बिधिवत् स्नान करै १३ और ऋषियों ने स्नान बिधिमें जो कर्म कहा है सो करै १४ फिर सम्यक्बिधानकरके स्नानकर और देवता ऋषि पितरों और नामगोत्रसहित अन्यों का तर्पणकर १५ पवित्र कन्धा के बस्त्र धारणकर और सूर्य्य के सन्मुखहो १६ सब पापोंको हरनेवाली पवित्र और वेदोंकी माता गायत्री देवीका अष्टोत्तरशत जाप करै १७ फिर पवित्र मन्त्रोंका उच्चारणकर श्रद्धासहित समाहितहो सूर्य्यको तीनबार प्रदक्षिणाकर नमस्कार करै १८ तीनोंवर्णों का स्नान और जाप वेदमें कहाहै तिस बिधिसे करना चाहिये और शूद्र तथा स्त्री को वेदोक्त कर्म बिनाही स्नानमात्र करनाचाहिये १९ फिर पुरुषोत्तम भगवान् के मन्दिरमें मौनधारणकरके जाय और पूजन करके २० यथा बिधिसे पुरुषोत्तमभगवान् के हाथ पैरोंकोस्पर्शकर प्रथम घृतसे स्नानकरावे फिर दूधसे करावे२१फिर मधु गन्ध और तीर्थकेजल तथा चन्दनकेजलसे स्नानकराके दो वस्त्रोंको अर्पणकरै २२ और परमभक्ति सहित मल्लिकादि पुष्पोंसे पुरुषोत्तम भगवान्का पूजनकरै२३इसप्रकार उसभुक्ति मुक्ति देने वालेहरिकापूजन करके अगर अथवा घृतमिश्रितगूगल कीधूपदे २४ और भक्तिसहित यथाशक्ति घृतकीज्योति

प्रकाशकरके समाहितहो अन्यदीपकोंको २५ घृत अथवा तिलोंकेतेलसे पूर्णकर प्रकाशमानकरै और नैवेद्य खीर पूड़े पूरियां २६ मोदक और फेनी आदि सब पदार्थ और अन्यफल भगवान्‌के लिये निवेदनकरै ऐसेपुरुषोत्तमभगवान्‌का पूजनकरना चाहिये २७ फिर (ॐनमः पुरुषोत्तमाय) इसमन्त्रको १०८ बारजपके पुरुषोत्तम भगवान्‌की स्तुतिकर प्रसन्नकरै २८ कि हेलोकेश आपको नमस्कारहै हेभक्तोंको अभयदेनेवाले मुझसंसार सागर में डूबेहुयेकी रक्षाकरो २९ हे जगत्पते मैंने जो आपकी द्वादश १२ यात्राकी हैं वे आपकी प्रसन्नतासे सम्पूर्णताको प्राप्तहों ३० इसप्रकार देवेशकी स्तुति और दण्डवत्‌कर फिर पुष्प वस्त्र अन्न अनुलेपन इत्यादिकों से अपनेगुरु का पूजनकरै ३१ क्योंकि हे मुनिसत्तमो गुरु और पुरुषोत्तम भगवान् में कुछ अन्तर नहीं है फिर पुरुषोत्तम देवके ऊपर श्रद्धासहित ३२ अनेक प्रकारके पुष्पों से विचित्र पुष्पमण्डल बनाकर रात्रीमें जागरणकरै ३३ और भगवान्‌के गुणोंका गाना ध्यान तथा पाठ करता हुआ प्रणामकरै ३४ फिर विमल प्रभातको द्वादशीके दिन वेदके पारको जाननेवाले बारह ब्राह्मणोंको निमंत्रितकरै ३५ उन इतिहास पुराणोंको जाननेवाले जितेन्द्रिय ब्राह्मणोंको सुवर्ण छतुरी जूतीकाजोड़ा धन और वस्त्रादिकोंका दानदे ३६ । ३७ ऐसे श्रेष्ठभावसे पूजित भगवान् प्रसन्नहोते हैं फिर आचार्यकेलिये गौ तथा वस्त्र सुवर्ण छतुरी जूतीका जोड़ा और कांसेकापात्र दानदेवे फिरपायस अर्थात् दूधकी खीर ब्राह्मणोंकेलिये नियोजन

करे ३८।३९ और पक्वान्न भक्ष्य भोज्य गुड़ तथा खांड़
से युक्त पदार्थ तिन स्वस्थ चित्तवाले ब्राह्मणोंको भोजन
कराके ४० बारहजलके भरे मोदक सहित कलशे देवे
और अभिमानसे रहितहो शक्तिके अनुसार दक्षिणादे
४१।४२ऐसे तिन ब्राह्मणों और ज्ञानके देनेवाले गुरुका
पूजन परमभक्तिसे करनाचाहिये क्योंकि गुरु और ब्रा-
ह्मण विष्णुकेही तुल्यहैं ४३ सुवर्ण वस्त्र तथा गौ धान्य
और अनेकप्रकारके अन्य द्रव्यों से भगवान्का पूजन
और नमस्कारकर इसमंत्रकाउच्चारणकरै ४४(सर्वव्यापी
जगन्नाथःशंखचक्रगदाधर। अनादिनिधनोदेवःप्रीयतां
पुरुषोत्तमः)४५ और ब्राह्मणोंकी तीनबारप्रदक्षिणा और
भक्तिसहित प्रणामकरके आचार्य सहित बिदाकरै ४६
और थोड़ीदूर साथ जाकर प्रणामकरके उन्हें बिदाकरके
उलटआवे ४७ फिर नियमसहित अपनेबांधव तथा स्व-
जनोंकेसाथ भोजनकरै ४८ और आयेहुये भिक्षुकों दीनों
और अन्नकी इच्छावालोंको भोजनकरवावे ऐसे सम्यक्
करनेसे ४९ नरहो अथवा नारी हजार अश्वमेध और सौ
राजसूय यज्ञोंके फलको प्राप्त होताहै ५० और सुन्दर
भोग भोगके दिव्यरूपको धारणकर ५१ सब लक्षणों
से सम्पन्न और सब अलंकारोंसे भूषितहो आकाशमें
सब दिशाओं को प्रकाशित करता हुआ वह महाबल
वाला और बुद्धिमान् विष्णुलोकमें प्राप्तहोताहै ५२।५३
और वहां सौकल्पोंतक गन्धर्व अप्सरा सिद्ध देव वि-
द्याधर दिव्य सर्प ५४ और मुनियोंद्वारा प्रणितहोकर
सन्ताप से रहित मनवाञ्छित कामनाओं को भोगता

है ५५ और जैसे शंख चक्र और गदाको धारणकरनेवाले जगन्नाथदेवहैं तैसेही वहभी मुदित हुआ चतुर्भुजरूप को धारण करता है ५६ इस प्रकार वहां सुन्दर भोगों को भोग और अप्सराओंके संग क्रीड़ाकर अन्तकाल में सब कामनाओं को देनेवाले ब्रह्मा के स्थानमें प्राप्त होताहै ५७ और सिद्धों विद्याधरों देवतों और किन्नरों से शोभित होताहै और नब्बेकल्पतक वहां सुख भोग के ५८ सब कामनाओंको देनेवाले रुद्रलोकमें देवताओं के गणोंसे सेवितहो सैकड़ों हजारों बिमानोंसे अलंकृत और सिद्ध विद्याधर यक्ष देव दानव के आवृत हुआ अस्सीकल्पतक सुख भोगके सबभोगोंसे समन्वित गोलोकमें प्राप्तहोताहै ५९।६१ और देवते सिद्ध अप्सरा आदिसे शोभितहो सत्तरकल्पतक वहां सुन्दर भोगोंको भोग ६२ जितेन्द्रिय और स्वस्थचित्तहो तीनों लोकों में दुर्लभ और अति श्रेष्ठ प्राजापत्यलोकमें प्राप्तहोता है ६३ और वहां गन्धर्व अप्सरा सिद्ध मुनि विद्याधरों से युक्तहो साठकल्पतक अनेकप्रकारके सुखों को भोग के ६४ अनेक प्रकारके आश्चर्यों से युक्त इन्द्रलोक में प्राप्त होताहै और गन्धर्व किन्नर सिद्ध देवते विद्याधर दिव्यसर्प गुह्यक अप्सरा साध्य और अन्य स्वर्गवासियोंसे युक्तहो पचासकल्पतक सुख भोगताहै ६५ फिर वह बिमानोंमें चढ़के और सब देवताओंसे अलंकृतहो दुर्लभ और पवित्र स्वर्गलोकमें प्राप्तहोता है ६६।६७ और वहां चालीसकल्पतक दुर्लभ भोगोंको भोगके नक्षत्रलोकमें प्राप्त होताहै ६८ और वहां तीसकल्पतक

सुन्दर भोगोंको भोगके चन्द्रलोकमें प्राप्त होताहै ६९ जहां सब देवताओंकेसहित चन्द्रमा स्थितहै बीसकल्प तक वहां दुर्लभभोगोंको भोगके ७० फिर वह देवताओं से पूजित अनेक यज्ञमय पवित्र और गन्धर्व तथा अप्सराओं से सेवित आदित्यलोकमें प्राप्त होता है ७१ और वहां दशकल्पतक सुन्दर भोगों को भोगके फिर गन्धर्वों के लोक में जाता है ७२ और वहां एक कल्प तक सुन्दर सुख भोगों को भोग के पृथ्वी में धार्म्मिक ७३ चक्रवर्त्ती महान् पराक्रमवाला और सब गुणों से अलंकृत राजा होके श्रेष्ठ धर्म्म सहित राज्यकर और दक्षिणासहित यज्ञकर वैष्णवलोक में प्राप्तहो मोक्षको प्राप्तहोजाताहै ७४ हे विप्रो यह मैंने उस यात्राकाफल कहाहै यह मनुष्योंको भुक्ति और मुक्तिको देनेवालाहै अब तुम क्या सुननेकी इच्छाकरतेहो ७५॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेयात्राफल माहात्म्यंनामपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५॥

छाछठवां अध्याय॥

मुनियोंने पूछा कि हे देव हम अनामय सर्वानन्दकर और सब आश्चर्य्योंसेयुक्त विष्णुलोकका वर्णन सुनने की इच्छाकरतेहैं १ उसलोकका प्रमाण कितनाहै और उसलोकके भोगक्याहैं धर्म्ममें तत्पर मनुष्य वहां किस कर्म्मसे प्राप्तहोतेहैं २ दर्शन स्पर्शनसे वा तीर्थ स्नान आदिसे अथवा अन्य किसीउपायसे सो विस्तारकरके कहो हमें परमआश्चर्य्यहै ३ ब्रह्माजीबोले कि हे मुनियो उस परमपद और भक्तों से प्रेरित धन्य पुण्य संसार

नाशन ४ सब लोकोंमेंश्रेष्ठ सब आश्चर्य्योंसेयुक्त और त्रैलोक्य पूजित ऐसे विष्णुलोकका वर्णन मुझसेसुनो ५ वहलोक अशोक पारिजात मंदार चम्पक मालती चमेली कुन्द बकुल नागकेशरि पुन्नाग अतिमुक्त प्रियंगु अर्जुन पाटला आंब खैर कर्णिकार नारङ्गी पनस लोध नींब अनार सर्ज दाख बड़हल खिजूर महुआ ईख कैथा नारियल ताड़ बेल कल्पवृक्ष साल चन्दन कदम्ब देवदारु और जावित्री कंकोलआदि अन्य असंख्यातगन्धवाले वृक्षों नागरपानके समूहों और सुपारी अम्बआदि अनेकप्रकारके फल और पुष्पोंवाले वृक्षों और मनोहर जलाशयों और बड़े२सरोवरोंसे अलंकृतहै जिनमें शतपत्र रक्त और नीले तथा सुगन्धवाले अनेक कल्हार कमल और जलमें उत्पन्नहोनेवाले अन्य सुन्दर पुष्प लगेहैं और हंस सारस चकवा चकवी बगुले और कारण्डव तथा प्रियपुत्र जीवजीवक जातियोंके पक्षी और अन्य मधुर स्वरवाले दिव्यजलचर पक्षी अनेकप्रकार के आश्चर्य्योंसे समन्वित वृक्षोंपर मनोहर स्वरसे गान करते हैं ६।१७ वहलोक अनेकप्रकारसे विभूषित इच्छा पूर्वक आकाशमें चलनेवाले सुवर्णमय दिव्य और गन्धर्वोंसे नादित १८ तरुण सूर्य्यके समान कान्तिवाले और अप्सराओं और सुवर्णकी शय्या तथा आसनों और अनेकप्रकार के भोगोंसे समन्वित और पताकों और मोतियोंके हारोंसे युक्त और अनेक रंगके सुवर्णमय वस्त्रों और अनेकप्रकारके पुष्पों तथा चन्दन अगर आदिसे विभूषित और अनेकप्रकार के मधुरशब्दों से

नादित मनोहरवायुसेयुक्त विमानोंसे शोभितहै १९।२३
और देवताओंकी स्त्रियों तथा अप्सराओं और चन्द्र-
माकेसमान कान्तिवाले मुखोंवाली अनेक अन्य मनो-
हर अंगनाओं एवम् गीत नृत्य और वाद्यसे प्रसन्न
यक्ष गन्धर्व्व विद्याधर और अप्सराओं के गण और
देवताओं और ऋषियोंके समूहोंसे उसभुवनकी शोभा
होरहीहै २४।२६ ऐसे तिसविष्णुलोकमें ज्ञानवान्मनुष्य
प्राप्तहोके अनेकप्रकारके भोगोंकोभोगतेहैं २७ दक्षिण
समुद्रके तटपर बटराज के समीप पुष्कराक्ष जगत्पति
श्रीकृष्णभगवान्के दर्शन जिन्होंने करेहैं २८ वे तपेहुये
सुवर्णके समान कान्तिवाले और जरामरणसे रहितहो
यावत् सूर्य्य चन्द्ररहें तबतक सब दुःखों और ग्लानिसे
रहितहो वनमाला से विभूषित और श्रीवत्सचिह्न और
शंख चक्र गदाको धारण किये महाबिक्रम चतुर्भुजरूप
से तिस लोकमें अप्सराओंके संग बासकरतेहैं २९।३१
वहां कोईपुरुष तो नीलेकमलकेसमानकान्तिवाले कोई
सुवर्णके समान कान्तिवाले कोई सुवर्णके कुण्डलोंवाले
और कोई श्रीवत्स चिह्नवाले होजातेहैं ३२।३३ हे द्विजो-
त्तमो जैसा हरिभगवान्का लोक सबआश्चर्य्योंसे युक्त
है वैसा अन्यदेवताओंका लोक नहीं है ३४ और वहांसे
फिर और कहीं जाने आने की प्रवृत्ति नहीं होती ३५
तिस देव के प्रभाव से कितनेही महाप्रलय होने तक
पुरुषरूप यौवनसे गर्वितहुये उसपुरमें विचरतेहैं ३६ जो
मनुष्य श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्रा के दर्शन करते हैं
वे तरुणसूर्यके समान कांतिवाले और सबरत्नोंसेविभू-

षितहोके सैकड़ों तथा हजारों महलोंसेयुक्त एकयोजन ऊँचेसोनेके किलेमें अनेकप्रकारकी ध्वजाओंसे विचित्रित और मनोहर नक्षत्रोंसे शरदऋतु के चन्द्रमा के समान प्रकाशमान चारदरवाजोंवाले तथा अनेक प्रकारकी रक्षाओं से रक्षित और मनोहर पुरमें मरकत मणि इन्द्रनीलमणि और महानीलमणिसे जटित और पद्मराग तथा अनेक प्रकारके दूसरेरत्नों और सुबर्ण के अद्भुत प्रकाशवाले थंभोंसे युक्त महान् भुवनमें बास करतेहैं३७।३८जहां सबदिशाओंके मध्यमें नक्षत्रोंसहित पूर्णमासीके चन्द्रमाकेसमान भगवान् विष्णु पीताम्बर पहिने और श्रीवत्सचिह्नसे युक्त प्रकाशमान घोर और सबपापों को नाशनेवाले सुदर्शनचक्रको दाहिनेहाथमें धारण किये प्रकाशहोते हैं जब सर्वतेजोमय हरिभगवान् सफेदकुन्द चांदी तथा गौकेदूधके समान कांतिवाले उससुदर्शनचक्र को बायेंहाथमें ग्रहणकरते हैं ३९।४७ तब हे मुनिश्रेष्ठो उसके शब्दसे सब जगत् क्षोभको प्राप्तहोजाताहै ४८ एकहाथमें सहस्र आवर्त्तों से भूषित पांचजन्य शंख दूसरेहाथमें क्षत्रियोंकाअन्त करनेवाली भयङ्कर और दैत्य दानवों का नाश करने वाली ४९ जलतीहुई अग्निकी शिखाकेआकार और देवताओंको भी दुस्सह कौमोदकी गदा ५० और बायेंहाथमें सूर्य्यकेसमान कांतिवाले धनुष और बाणोंको धारणकिये विष्णुभगवान् चराचर जगत् का संहार करते हैं ५१ वह सब को आनन्दकरनेवाले सब शस्त्रों से विभूषित सब लोकोंकेगुरु और सब देवताओं द्वारा

नमस्कृत हजारशिरों हजारचरणों हजारनेत्रों हजार किरणों और हजारभुजाओंवाले और पद्मके पत्तों के समाननेत्रों और बिजलीकेसमान कान्तिवाले श्रीमान् जगन्नाथ जगद्गुरुके चारोंतर्फ सुर सिद्ध गन्धर्व अप्सराओंकेगण उपस्थित रहतेहैं ५३।५५ और यक्ष विद्याधर नाग मुनि सिद्ध चारण सुपर्ण दानव दैत्य राक्षस गुह्यक और देव और सुरर्षि स्तुति करते हैं ५६ विष्णु भगवान् जहां स्थितहैं वहां कीर्त्ति प्रज्ञा मेधा सरस्वती बुद्धिमति क्षांति सिद्धि मूर्त्ति कृति गायत्री सावित्री मंगला सर्वमंगला प्रभा आदि सबस्थितहोतीहैं ५७।५८ और श्रद्धा कौशिकी देवी बिजली निद्रा तथारात्री तथा अन्यदेवोंकी स्त्रियां वासुदेवभगवान् के भुवनमें प्रतिष्ठित हैं ५९ निदान बहुत कहने से क्या है सब बस्तु वहां प्रस्तुत होतीहैं और घृताची मेनका रम्भा सहस्रजन्या तिलोत्तमा उर्व्वशी सुरसेना मन्दोदरी सुभगा विश्वाची विपुलानना भद्रांगी चित्रसेना स्रस्तोना सुमनोहरा मुनिसंमोहिनी रामा चन्द्रमत्या शुभानना हंसलीलानुगामिनी मत्तवारणगामिनी बिम्बोष्ठी इत्यादिक अप्सरा और रूपयौवन से गर्वित पतलीकटी और सुन्दर मुखवाली सब अलंकारोंसेभूषित गीत माधुर्य्य में संयुक्त और तालक्षण तथा गीत वाद्य विलासमें निपुण देवताओं तथा गन्धर्वों की स्त्रियां नृत्यकरती हैं ६०।६५ वहांकोई रोगनहींहै और न मृत्य जाड़ा गरमी ६६ क्षुधा तृषा बुढ़ापा तथा विरूपताही है ६७ निदान सुख तथा परमानन्दको उत्पन्नकरने और सब कामना-

ओंके फल को देनेवाले विष्णुलोक से परे अन्यकोई लोकनहींहै ६८ और जोलोक पुण्यकर्मी पुरुषोंकेवास्ते स्वर्गलोकमें सुनेजातेहैं वे विष्णुलोककी सोलहवींकला कोभी नहींपहुँच सकते ६९ ऐसे सबभोगों और गुणों से युक्त हरिकापुर और स्थानहै जो सबसुखों को देने वाला और सब आश्चर्योंसे युक्तहै ७० वहां नास्तिक विषयी कृतघ्नी चुगुलखोर और अजितेन्द्रियपुरुष नहीं पहुँचते७१ पर जो सदाभक्तिपूर्वक जगद्गुरु वासुदेव का पूजनकरते हैं वे वैष्णव वहां प्राप्तहोते हैं इसमें संदेह नहीं ७२ दक्षिणसमुद्रके तीरपर जगन्नाथ नामसे प्रसिद्ध परमदुर्लभक्षेत्रमें श्रीकृष्ण बलदेव और सुभद्रा का जो दर्शनकरतेहैं ७३ और जो कल्पवृक्ष के समीप अपना शरीर छोड़ते हैं एवम् पुरुषोत्तम तीर्थ में जो मरते हैं वे पुरुष वहां प्राप्त होते हैं ७४ बढ़के नीचे तथा समुद्रके बीचमें पुरुषोत्तम भगवान्‌का स्मरणकरतेहुये जो पुरुषोत्तमतीर्थ में मरजाते हैं ७५ वेभी उस परम स्थानमें प्राप्त होते हैं इसमें संदेह नहीं ७६ हे मुनिश्रेष्ठो ऐसा अनामय सबको आनन्द देनेवाला और भुक्ति मुक्तिको देनेवाला विष्णुलोक कहाहै ७७ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेविष्णुलोककीर्त्तनंनामषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

मुनियोंने पूछा कि हे ब्रह्मन् आपने जगत्पति विष्णु के अति आश्चर्य और नित्यानन्द और भुक्ति मुक्तिको देनेवाले लोक १ और संसारमें दुर्लभ पुरुषोत्तमक्षेत्र

जहां मनुष्य शरीर त्यागके हरिके लोकमें प्राप्त होजाता है वर्णनकिया २ बड़ा आश्चर्य है कि वहां देह त्यागना मोक्षका मार्ग्ग है वह पुरुषोत्तमक्षेत्र मनुष्योंके उपकार के वास्ते है ३ हे देवेश उस क्षेत्रमें देहको त्याग मनुष्य विष्णुके परमपदको प्राप्त होते हैं ४ और उस शुभक्षेत्र का माहात्म्य सुन हमें बड़ा आश्चर्यहुआ प्रयाग और पुष्कर आदिक क्षेत्रों और देवताओंके स्थानों ५ तथा पृथ्वीपर जो अन्यतीर्थ नदी और सरोवरहैं उनकी आप उतनीप्रशंसा नहीं करते ६ जैसी बारम्बार पुरुषोत्तम भगवान्की करतेहो इसलिये हे पितामह हमनेआपका अभिप्राय अब जानलिया ७ कि मुक्तिको देनेवाला पुरुषाख्य पुरुषोत्तम तीर्थही पृथ्वीभरमें सराहने योग्यहै ८ इसवास्ते आप श्रेष्ठ बुद्धिमान् बारम्बार उसकी प्रशंसा करतेहो ९ ब्रह्माजी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठो आपने सत्य कहा निश्चय पुरुषाख्यक्षेत्रके समान पृथ्वीमें अन्य तीर्थ नहीं है १० और जितने दूसरे क्षेत्र और देवताओं के स्थान हैं वे उस पुरुषोत्तम तीर्थ की सोलहवीं कला कोभी नहीं प्राप्तहोते ११ जैसे सर्वेश्वरविष्णु सब लोकों में उत्तमहैं तैसेही पुरुषोत्तमतीर्थभी सब तीर्थोंमें उत्तमहै १२ जैसे वसुओं में पावक रुद्रोंमें शंकर वर्णोंमें ब्राह्मण व पक्षियोंमें गरुड़ उत्तमहैं तैसेही सबतीर्थोंमें पुरुषोत्तमतीर्थ उत्तमहै १३।१४ जैसे शिखरोंमें सुमेरु पर्वतोंमें हिमालय हाथियोंमें ऐरावत और महर्षियोंमें भृगु उत्तम हैं तैसेही सबतीर्थोंमें पुरुषोत्तमतीर्थ श्रेष्ठहै १५।१६ जैसेइंद्रियों में मन भूतों में प्राणी १७ सेनानियों में स्कंद अर्थात्

स्वामिकार्त्तिक सिद्धोंमें कपिल १८ वर्णों में अकार और छंदोंमें गायत्रीहै तैसेही तीर्थोंमें पुरुषोत्तम तीर्थ है १९ जैसे अश्वोंमें उच्चैःश्रवा कवियोंमें भार्गव मुनियोंमें वेद व्यास और यक्ष राक्षसोंमें कुबेर हैं तैसेही सब तीर्थोंमें पुरुषोत्तमतीर्थ श्रेष्ठहै २०।२१ जैसे सब वृक्षोंमें पीपल और व्याप्त होनेवालोंमें पवन उत्तमहै तैसेही सबतीर्थों में पुरुषोत्तमतीर्थ श्रेष्ठहै २२ और जैसे गन्धर्वोंमें चित्ररथ शस्त्रोंमें वज्र २३ विद्याओंमें मोक्षविद्या २४ सती स्त्रियोंमें अरुंधती २५ मनुष्योंमें राजा और गौओंमें कामधेनुहै तैसेही सब तीर्थोंमें पुरुषोत्तमतीर्थ श्रेष्ठ है २६ जैसे पदार्थोंमें घृत २७ रत्नोंमें सुवर्ण सर्पोंमें वासुकि २८ दैत्योंमें प्रह्लाद और शस्त्रधारण करनेवालों में रामचंद्रश्रेष्ठ हैं तैसेही सब तीर्थों में पुरुषोत्तमतीर्थ श्रेष्ठहै २९ जैसे मच्छोंमें मकर मृगोंमें सिंह ३० समुद्रों में क्षीरसागर ३१ देवर्षियों में नारदजी ३२ पुरोहितों में वृहस्पति संख्यामें काल ३३ ग्रहोंमें सूर्य और मंत्रों में ॐकारहै तैसेही पुरुषोत्तमतीर्थ है ३४ जैसे धनों में सुवर्ण रक्षकोंमें दक्षिणा ३५ यज्ञोंमें अश्वमेध ३६ औषधियोंमें धान्य और तृणोंमें ईख श्रेष्ठ है तैसेही सब तीर्थोंमें पुरुषोत्तमक्षेत्र श्रेष्ठहै ३७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्वादेक्षेत्र माहात्म्यंनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अरसठवां अध्याय॥

हे द्विजोत्तमो सबतीर्थों क्षेत्रोंमें और जप होम व्रत तप दान इत्यादिके फल १ में कोई तिस क्षेत्रके सदृश

पृथ्वीमें नहीं दीखता बारम्बार कहनेसे क्या है २ वा-
स्तविक वह परममहत्क्षेत्रहै समुद्रके समीप उस पुरु-
षोत्तम को एकबार देखके और ब्रह्मविद्या को एकबार
जपके फिर मनुष्यका गर्भमें वास नहीं होता है हरिके
समीप पुरुषोत्तमक्षेत्रमें ३।४ जो पुरुष एकवर्ष और तीन
महीने उपवास करताहै तिसे यज्ञ होम तथा महातपका
फल प्राप्तहोताहै ५ और वह योगीश्वर भगवान्‌के पर-
मस्थानमें प्राप्तहोताहै और देवताओंकी स्त्रियोंसे सम-
न्वितहुआ अनेकप्रकारके भोगोंको भोगके ६ कल्पके
अन्तमें मृत्युलोकमें आके योगिजनोंके घरमें ज्ञानको
जाननेवाला उत्पन्न होताहै ७ और वैष्णवयोगको प्राप्त
हो इच्छापूर्वक हरिको प्राप्त होजाताहै हे मुनियो कल्प-
वृक्ष बलदेव श्रीकृष्ण सुभद्रा ८ और मार्कण्डेय इन्द्र-
द्युम्न माधव भगवान् एवम् स्वर्गद्वार का माहात्म्य
समुद्रयात्राकी विधि और यथाकालमें भागीरथी गंगा
का समागम यह सब तो मैंनेकहा अब और क्यासुनने
की इच्छा करतेहो यह इन्द्रद्युम्न और पुरुषोत्तमतीर्थ
का व्याख्यान सम्पूर्ण आश्चर्ययुक्त ९।११ पुरातन और
परमगुप्तहै औरसंसारसे छुटादेताहै १२ मुनियोंने कहा
हे देव भगवत् की कथा सुनते हमें तृप्ति नहीं होती है
इसलिये फिरभी आपको यह परमगुह्य कथा कहनीचा-
हिये १३ हम अनन्त वासुदेवका सम्पूर्ण माहात्म्य वि-
स्तारपूर्वक सुननेकी इच्छाकरते हैं १४ ब्रह्माजीने कहा
हे मुनिश्रेष्ठो सारसेभीसार और पृथ्वीमें दुर्लभ अनन्त
वासुदेवका माहात्म्य सुनो १५ हे विप्रो आदिकल्पमें

मैंने देवशिल्पी विश्वकर्माको मोक्षका साधनसुनाके १६ यह कहा कि तू पृथ्वीपर पाषाणमयी वासुदेवकी प्रतिमा बना १७ जिसको विधिवत् भक्तिपूर्वक पूजनकरके इन्द्र आदिकदेवते और मनुष्य दैत्य दानव और राक्षसोंके भयको त्याग १८ स्वर्गको प्राप्तहों और सुमेरुपर्वत के शिखर पर वासुदेव का आराधन करके बहुत कालतक निर्भयहोके बासकरैं १९ ऐसामेरा वचनसुन विश्वकर्मा ने शंख चक्र और गदा को धारण करनेवाले अनन्त वासुदेवकी प्रतिमा बनाई २० और सब लक्षणोंसेयुक्त कमलसरीखेनेत्रों और श्रीवत्स और बनमालासे युक्त छातीवाली मुकुट तथा बाजूबन्दको धारण किये और पीलेवस्त्र पहिने ऊँचेकाँधोंवाली और कुण्डलोंसे भूषित उस प्रतिमाको मैंने कालपाके गुह्य अर्थात् श्रेष्ठमंत्रोंसे प्रतिष्ठितकिया २१।२३ तब देवताओं सहित इन्द्र ऐ-रावत हस्तीपर चढ़के ब्रह्मलोकमें आया २४ और उस मूर्त्तिको और मुझको बारम्बार प्रसन्नकरके अपनीपुरी में लेगया २५ और उसको वाणी और मनके निरोध से आरोपणकर क्रूरवृत्र और नमुचि आदिक भयंकर दैत्योंका नाशकरके चिरकालतक स्वर्गादिकोंका भोग करतारहा और दूसरे त्रेतायुगमें राक्षसोंका ईश्वर और महान् पराक्रमवाला प्रतापवान् रावणहो परमदुश्चर और अति उग्रतपका आचरण करनेलगा २६।२८ और मैंने उसपर प्रसन्नहो सबदेवताओं दैत्यों सर्पों और राक्षसों से अवध्य वर दिया २९ निदान वह शाप उग्र शस्त्र और धर्मरायके किंकरों से अवध्यवरको प्राप्त हो

के ३० और कुबेरको जीत इन्द्रके जीतनेका उद्यम करने लगा ३१ और इन्द्र आदिक देवताओंके संग महाघोर युद्धकरके इन्द्रको जीत लिया ३२ इन्द्रकी हार सुनके प्रतापवाले मेघनादने अमरावतीपुरीमें जाके ३३ देवराज इन्द्रके घरमें अंजन सरीखी कांतिवाली उस प्रतिमाको देखा जो सब रत्नोंको छोड़ शुभलक्षणों से युक्त श्रीवत्स चिह्न व भूषण धारणकिये बनमाला मुकुट तथा बाजूबन्दसे भूषित शंख चक्र गदादि चारों भुजाओं में लिये और पीतवस्त्र पहिने और सबकामनाओंके फल को देनेवाली पद्मसरीखे नेत्रोंवाली उसमूर्त्तिको ग्रहण किया ३४। ३७ और पुष्पक बिमान में रख शीघ्रही लंकामें स्थापित किया पुरका अध्यस्थ ३८ रावण का छोटाभाई और मन्त्री विभीषण जो नारायण में तत्पर था इन्द्रके भुवनसे आईहुई उस दिव्यप्रतिमाको देख के ३९ रोमांचित होगया और विस्मयको प्राप्तहो प्रसन्नमन से उसदेवको प्रणामकरके ४० कहनेलगा कि अब मेराजन्म और तप सफल हुआ ४१ निदान वह धर्मात्मा बारम्बार प्रणाम करके अपने बड़ेभाईके आगे अंजलीबांधके कहनेलगा ४२ कि हे राजन् इसप्रतिमा को आप प्रसन्नकरो ४३ इस जगन्नाथके आराधनकरनेसे संसाररूपी सागरसे छुटकाराहोताहै भाई के यह वचनसुन रावण उससेबोला ४४ कि हे वीर यह प्रतिमा ब्रह्माकी बनाईहुईहै इससे मुझेक्याहै मुझेतो सबभूतों के उत्पन्न करनेवाले महादेव का केवल आसराहै ४५ निदान भाईका यह उत्तर सुन महाबुद्धिमान् विभीषण

उससुन्दर प्रतिमाको १०८बर्षतक आराधन करतारहा ४६ और उसके प्रभावसे अजर अमर पदको प्राप्तहो अणिमादिक ऐश्वर्य्योंसे युक्तहो लंकाके राज्यको प्राप्तहो यथेप्सित भोगोंको भोगताहै ४७ मुनियोंने पूछा हे देव अनन्त वासुदेवका यहपरम अमृतमाहात्म्य सुनकरहमें बड़ाआश्चर्य्यहुआ ४८ इसलिये हे देव हम सम्पूर्णवृत्तान्त विस्तारसे सुननेकी इच्छा करते हैं और आपकहने को योग्यहो ४९ ब्रह्माजी कहनेलगे कि निदान वह क्रूर राक्षस देवों गन्धर्वों दानवों लोकपालों मनुष्यों मुनियों और सिद्धोंको जीतके ५० अपनी लंकापुरीमें राज्य करनेलगा फिर सीतापर मोहितहो राक्षसीमायासे सुवर्णकामृग रचकर सीताजीको हरलेगया ५१ और लक्ष्मणसहित रामचन्द्रजी रावणके बध के लिये मन सरीखे वेगवाले बाली को मार और ५२ सुग्रीव को राजतिलकदे बालीकेपुत्र युवाअवस्थावाले अंगद ५३ हनुमान् नल नील जाम्बवान् गवय गवाक्ष पनसआदि परमबलवानों और अन्य बहुतसे वानरोंकी सेनाले और ५४।५५ अगम समुद्रमें सेतुबांधपारउतरे ५६ वहां राक्षसोंकेसंग महायुद्ध हुआ और रामचन्द्रजी यम हस्त प्रहस्त निकुम्भ कुम्भ ५७ नरान्तक महावीर्य यमांतक मालाढ्य माणिकाढ्य ५८ इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण सहित रावणको मार और सीताजीको अग्निसे शोध तथा विभीषणको राज्यदे ५९ और वासुदेवको पुष्पक विमानमें स्थापनकर अपनी लीला करके भ्रातसे पालित अयोध्यापुरी में आये ६० निदान छोटेभाई भ-

रत और शत्रुघ्नने राजाधिराजवत् रामचन्द्रको अभि-
षेक अर्थात् राजतिलक किया ६१ और रामचन्द्र
अपनी पुरातन मूर्त्तिका आराधनकर११०००वर्ष६२
सागरपर्य्यन्त पृथ्वी को भोगके वैष्णवपदमें प्रवेशकर
गये ६३ रामचन्द्रने उस प्रतिमाकोभी समुद्रके जलमें
डुबोकर कहा कि आप धन्य हैं यहां जलमें स्थित हो
जगत्की रक्षाकरनेवालेहो ६४ पश्चात् उस जगत्पति
देवनेद्वापरयुगमें पृथ्वीकेअनुरोध और भारके शैथिल्य
कारणसे ६५ वसुदेवके घरमें अवतारलिया और कं-
सादिकोंके वधकेलिये बलदेवसहित विचरनेलगे ६६
निदान सबवाञ्छाओंके फलको देनेवाली उसप्रतिमा
को समुद्रसे निकाल श्रीकृष्ण भगवान्ने सबमनुष्योंके
हितकेलिये६७ उसपुण्य सुन्दर और दुर्लभ पुरुषोत्तम
क्षेत्रमें स्थापितकिया ६८ तबसे सबकी पीड़ादूर करने
और सब कामनाओं और मुक्तिको देनेवाले यह अनन्त
देव उस क्षेत्रमें स्थित हैं ६९ और जो सर्वेश्वर देवको
बाणी मन और कर्मसे नित्यसंश्रय करते हैं वे परमगति
को प्राप्त होते हैं ७० एकबार उस अनन्त देवको देख
पूजन और प्रणामकरने से राजसूय और अश्वमेध
यज्ञोंसे दशगुणा फलहोता है ७१ जो कोई उस देवका
पूजन करताहै वह सब कामनाओंके देने बहुत चलने
और सूर्य्यके समान वर्णवालेकिंकिणी जालियोंसे युक्त
विमानमेंबैठ ७२ और इक्कीस पीढ़ियोंका उद्धारकरदि-
व्य स्त्रियोंसे सेवित और गंधर्वोंसे उपगीयमान हुआ
विष्णुपुरमें प्राप्तहोता है ७३ और वहां जरामरणसे र-

हितहो और सुन्दरभोगोंको भोग दिव्यरूप धारणकिये प्रलयकालतक ७४ स्थित रहताहै फिर पुण्यक्षीणहोने के बाद यहां पृथ्वीमें आके चतुर्वेदी ब्राह्मणहोताहै ७५ और वैष्णवयोगको प्राप्त हो मोक्षको प्राप्तहोजाताहै हे मुनिसत्तमो उस अनन्तदेवका यह मैंने संक्षेप कीर्त्तन किया है ७६ सम्पूर्ण वर्णन तो सैकड़ों वर्षों मेंभी कोई गुणवान् नहीं करसक्ता ७७ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसंवादेअनन्तवासुदेवमाहात्म्यंनामाष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीनेकहा कि ऐसा अनन्तदेवकामाहात्म्य और भुक्ति मुक्तिको देनेवाला पुरुषोत्तमक्षेत्र है १ जहां शंख चक्र और गदाको धारणकिये और पीताम्बरपहिने कंस और केशीको मारनेवाले श्रीकृष्ण स्थितहैं २ वहां जो दैत्य और देवताओंसे नमस्कृत श्रीकृष्ण बलदेव तथा सुभद्राको देखतेहैं वे धन्यहैं इसमें सन्देहनहींहै ३ त्रिलोकीका अधिपति तथा सब कामनाओंको देनेवाला श्रीकृष्णका जो ध्यानकरते हैं वे मुक्तहोजाते हैं इसमें सन्देहनहीं ४ और जो श्रीकृष्णमें राति दिन रतरहते हैं और रात्री में स्मरण करके जो उठते हैं वे शरीरको त्यागके श्रीकृष्णमें प्रवेशहोतेहैं जैसेमन्त्रसे होमाहुआ घृत अग्निमें लीन होजाता है तैसेही वे लीनहोजाते हैं हे मुनिश्रेष्ठो इसलिये मोक्षकी इच्छावाले पुरुषों को उस क्षेत्र में यत्नकरके कमललोचन श्रीकृष्ण के दर्शन करने चाहिये ५ । ६ जो बुद्धिमान् पुरुष शयनोत्थापन

में श्रीकृष्ण का स्मरण और बलदेव सुभद्रा के दर्शन करतेहैं वे निश्चय हरिके स्थानमें प्राप्तहोतेहैं ७ जो पुरुषभक्तिपूर्वक पुरुषोत्तम भगवान् बलदेव और सुभद्रा का दर्शन करते हैं वे विष्णुलोकमें प्राप्त होजाते हैं ८ और जो चतुर्मास तथा वर्ष पर्य्यंत पुरुषोत्तमतीर्थ में वास करते हैं वे सब तीर्थोंकी वार्षिकयात्राके फल को प्राप्त होते हैं ९ जो बुद्धिमान् मनुष्य जितेन्द्रिय होके पुरुषोत्तमतीर्थ में सदा वास करते हैं वे क्रोधसे रहित कियेहुये तपके फलको प्राप्तहोते हैं १० अन्य तीर्थोंमें दशहजारवर्षतक तप करके जो फल प्राप्तहोता है वह फल पुरुषोत्तमक्षेत्रमें एक महीना तपकरने से होता है ११ स्त्रीसंग त्यागकरके ब्रह्मचर्य तपकरने से जो फल प्राप्तहोताहै वह फल वहांके वाससे प्राप्त होता है १२ सब तीर्थों में स्नान दानका फल पुरुषोत्तमक्षेत्रके दानादिकोंसे होताहै १३ और सम्यक्प्रकारके व्रत तथा नियम करने का फल पुरुषोत्तमक्षेत्र में प्रतिदिन प्राप्त होताहै १४ अनेकप्रकारके यज्ञोंका फल वहां एकदिन जितेंद्रियहोके वास करनेसे होताहै १५ और स्वाध्याय अभ्यासका फल पुरुषोत्तमक्षेत्रमें साधारण प्राप्तहोता है १६ जो पुरुष पुरुषोत्तमक्षेत्र १७ तथा बड़ के नीचे वा सागरके मध्यमें शरीर छोड़देते हैं वे परमदुर्लभ मोक्ष को प्राप्त होजाते हैं इसमें संदेह नहीं १८ कल्पवृक्षके समीप इच्छासे रहितहोके जो प्राणोंको त्यागताहै वह दुःखोंसे छूटके मुक्तिको प्राप्त होजाता है १९ और जो कृमि कीट पतंग इत्यादिक तिर्यक्योनि गत्त वहां देह

छोड़देते हैं वेभी परमगतिको प्राप्तहोते हैं २० हेमुनियो मनुष्यकी अन्य सबतीर्थोंमें भ्रांतिहै क्योंकि पुरुषोत्तम तीर्थका फल सबसे अधिक है २१ जो श्रेष्ठकर्म करने वाला श्रद्धासहित पुरुषोत्तमतीर्थमें जाताहै वह हजारों पुरुषोंमें उत्तमहै २२ जिसे पुराणोंमें प्रकृतिसे परे कहते हैं और वेदांतमें जो परमात्मा कहाताहै २३ वह सर्व के उपकारके लिये वहां स्थित है इसलिये वह पुरुषोत्तम क्षेत्र कहाताहै २४ पुरुषोत्तमक्षेत्रके मार्ग श्मशान गली तथा अन्य कहीं जो इच्छा करता हुआ अथवा बिना इच्छासे शरीर छोड़देताहै वह मोक्षको प्राप्तहोताहै २५ हे द्विजोत्तमो इसलिये सब यत्नसे मोक्षकी इच्छावाले मनुष्योंको वहांहीं शरीरका त्याग करनाचाहिये २६ पुरुषोत्तमक्षेत्रके सम्यक् माहात्म्य कहनेमें कौन समर्थहै २७ जो मनुष्य वहां बड़के दर्शनकरताहै वह ब्रह्महत्या को दूर करदेता है २८ और बहुतसे क्षेत्र तथा पवित्र स्थानहैं परन्तु पुरुषोत्तमक्षेत्रकी सदृश ब्रह्माजी कहते हैं कि मैं अन्यक्षेत्रको नहींदेखता जहांमनुष्यदेहको त्यागके दुर्लभमुक्तिको प्राप्तहो २९।३० उसे गुणोंका एकदेश क्षेत्र कहाहै उसके गुणोंको सैकड़ों वर्षोंमें भी कहनेको कोई समर्थनहीं ३१ हे मुनिश्रेष्ठो जो तुम मोक्षकी इच्छाकरते हो तो उसपवित्रक्षेत्रमें वासकरो ३२ वेदव्यासजीबोले कि वेमुनि अव्यक्त जन्मवाले ब्रह्माके वचन सुन वहां निवासकरके परमपदको प्राप्तहुये ३३ जो तुमभी मुक्ति की इच्छाकरतेहो तो उस क्षेत्रमें वासकरो ३४ ॥

आदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयंभूऋषिसंवादेक्षेत्रमाहात्म्यंनाम६९॥

सत्तरवां अध्याय॥

वेदव्यासजी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठो सबजीवोंको सुख और धर्म अर्थ काम मोक्षके फलदेनेवाले उस पुरुषोत्तमक्षेत्रमें १ कंडुनामक एक महातेजवान् परमधार्मिक सत्यवादी चतुर और सबजीवोंमें हितकरनेवाला ऋषि हुआ २ जो जितेन्द्रिय क्रोधकोजीतेहुये और वेदवेदांग को जाननेवाला उसक्षेत्रमें परमसिद्धिको प्राप्तहुआ ३ और अन्यभी अनेकऋषि मुनि जितेन्द्रिय सबभूतोंमें हितरखनेवाले क्रोध और मत्सरतासे रहितहोके वहां सिद्धिकोप्राप्तहुये ४ मुनियोंनेपूँछा कि कण्डुनामक ऋषि कौनथा और वहां कैसेसिद्धिको प्राप्तहुआ हमयह सुननेकी इच्छाकरते हैं ५ ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे मुनिशार्दूलो उस मनोहर कथा को तुमसुनो हम विस्तार सहितउसका वर्णनकरते हैं ६ पवित्र मनोहर और विजन तथा कन्द मूल फल और पुष्पोंके मध्यमें शोभित गोमती के तीरपर ७ अनेक प्रकारकी लताओंसे आकीर्ण पुष्पोंसे शोभित अनेकप्रकारके पक्षियोंके शब्दों से रमणीक अनेक भांति के मृगोंके गणोंसे युक्त और केलेके खंडोंसे मण्डित ८।९ क्षेत्रमें वह मुनि व्रत उपवास नियम स्नान और मन्त्रों से तप करनेलगा १० और ग्रीष्मऋतुमें पंचाग्नितपके वर्षाऋतुमें स्थंडिल अर्थात् चौतरे पर शयनकरके और हेमन्त समय में गीलेवस्त्र पहिर करके उस ऋषिने परमअद्भुत तपकिया ११ निदान उस मुनिके तपको देखके देव गन्धर्व सिद्ध विद्याधर आदि सब विस्मित होगये १२ और हेमुनियो उस

कंडुऋषिने पृथ्वी आकाश और त्रिलोकीको अपने तप के बलसे सन्तापित करदिया १३ तब उसको तपमें स्थित देखके देवते कहनेलगे कि अहो इसका परम धैर्य्य और परमतपहै १४ निदान इन्द्रसहित सबदेवतोंने भयसे उद्विग्नहो उसके तपमें विघ्नकरने की इच्छा से सलाहकी १५ और त्रिभुवनके ईश्वर इन्द्रने उनके अभिप्राय को जानके रूप यौवन से गर्वित और सब लक्षणोंसे सम्पन्न सुन्दरकटि जांघ और उदर तथा कुचाओंवाली प्रम्लोचा अप्सरासे कहा कि हे प्रम्लोचे हे शुचिस्मिते जहां वह मुनि तपताहै वहां तू उसके तप के विघ्नके लिये शीघ्रजा १६।१८ प्रम्लोचा कहनेलगी कि आपके बाक्यको मैंने कभी नहीं टाला परन्तु इसमें मेरे जीवनेकी शंकाहै १९ हे विभो वह मुनि ब्रह्मचर्यमें नित्य स्थित अति उग्र तपकरताहै और अग्नि तथा सूर्यके समान कांतिवाला है २० मुझको विघ्नके लिये आई जानके शापदेदेवेगा २१ इसलिये उर्वशी मेनका रम्भा घृताची पुंजिका स्थली विश्वाची सहजन्या पूर्वचित्ति तिलोत्तमा अलंबुषा सुकेशी शशीलेखा वरांगना आदि अन्य जो रूप यौवनसे गर्वित सुन्दरमुख और कडी तथा ऊंचीकुचोंवाली और कामदेव प्रधानवालियोंमें कुशल अनेक अप्सरा हैं उन्हें आप वहां भेजिये २२।२४ उसके यह वचन सुन शचीपति इन्द्र बोला कि हे शुभे उनकुशल अन्य अप्सराओंको रहनेदो मैं तेरी सहायके लिये कामदेव बसन्तऋतु और वायुको भेजूंगा २५ हे सुश्रोणि जहां वह मुनि है तहां तिनके संग तू

जा इन्द्रके यह वचनसुन उस सुन्दरनेत्रोंवाली अप्सरा ने कामदेव आदिकोंके संग आकाशमार्गसे मुनिके आश्रममें जाके उसे देखा २६।२७ और तपसे दीप्त और पापसे रहित उस मुनिके आश्रममें उसने नन्दनवनके समान सब ऋतुके पुष्पोंसे युक्त और शाखामृगगणों सहित पवित्र पल्लव आदिकोंसे शोभायमान वगीचा देखा और प्रीति उत्पन्न करनेवाले सुन्दर शब्दोंको बोलते और कानोंको रमणीक करते पक्षियोंके मधुर२कल रवको सुना २८। ३२ सबऋतुओंके पुष्पों तथा फलोंसे युक्त आंब आँवला नारियल टेंटु मुखविंद अनार विजोरा पनस बड़हल कदम्ब शिरीष फालसे भिलावें इंगुदी कनेर हर्रे बहेरा ३३।३६ तथा अशोक पुन्नाग केतकी चम्पा सातला कर्णिकार मालती पारिजात अमलतास मन्दार पाटला और देवदारु शाल ताड़ तमालवृक्ष जलवेत और अन्य रचेहुये अनेक फलों और पुष्पोंवाले वृक्षोंपर ३७।३८ चकोर मयूर भौंरे कोकिला राजहंस हारीत जीवजीवकपक्षी प्रियपुत्र पपैये तथा अनेकप्रकारके और पक्षी मधुरस्वरसे कानोंको रमणीक करते हुये स्थितथे ३९।४० और सुन्दर जलवाले सरोवरों में कुमुद पुण्डरीक नीलेकल्हार कमल चारोंतर्फ शोभितथे ४१ और बगुले चकवा चकवी कुञ्जआदिक पक्षी४२ तथा कारण्डव सञ्ज्ञक पक्षी हंस कछुवे मगर मच्छ और अन्य जलचारी जीवोंसहित ४३ उस वन में वह अप्सरा फिरनेलगी और उस परमअद्भुत वन को देख ४४ आश्चर्य्य से उत्फुल्ल नेत्रोंवाली हो वायु

बसन्त और कामदेवसे कहनेलगी कि ४५ आप सब जुदे जुदे मेरी सहायकरो ऐसे कहके और अपनी शक्ति के क्षोभसे गर्वितहोके बोली ४६ कि अब मैं वहां जाती हूँ जहां वह देहको प्राप्तकरनेवाला इन्द्रियरूप अश्वका यन्ता अर्थात् नहीं रोकनेवाला मुनिहै ४७ वनरूपी शस्त्रसे तिस इन्द्रियरूपी अश्वकी रश्मि अर्थात् रस्सीको मैं काटूँगी ४८ और यदि ब्रह्मा विष्णु अथवा रुद्रभी उसकाहितकरेंगे तोभी मैं अबकामबाणसे इसको क्षीणकरूँगी ४९ ऐसे कहके जहां वह मुनि स्थितथा गई और उस मुनिके तपके प्रभाव से श्वापद जीवोंके प्रशान्तरूप आश्रय ५० उस नदीके किनारेपर कोकिलोंकेसे मधुरस्वरसे बोलनेलगी ५१ फिर किंचित्काल ठहरके मधुर २ स्वर से गानेलगी बसन्त ऋतुकासा समा बँधगया ५२ मधुर स्वरसे कोकिला बोलनेलगीं और मलयाचल पर्वतसे स्पर्शकरती ५३ और हौले २ पवित्र पुष्पोंकी सुगन्धकोलिये सुन्दरवायु चलनेलगी निदान उसने कामदेवकी सहायतासे मुनिको क्षोभित किया और वह मुनि गीतध्वनि सुनके विस्मितहो काम बाणसे अतिपीड़ितहुआ जहां वह अप्सराथी ५४।५६ गया और उसको देखके आश्चर्य्यसे उसकेनेत्र उत्फुल्लितहोगये उत्तरीयवस्त्र उतरगया और रोम खड़ेहोगये ५७ तब वह उस अप्सरासे कहनेलगा कि हे सुभगे हे सुश्रोणि हे सुन्दर हासवाली तू किसकी स्त्री है सत्य कह हेसुमध्यमे तूतो मेरे मनको हरती है ५८ प्रम्लोचा कहनेलगी कि हे मुने मैं तेरेही काम करनेको यहांआई

हूं पुष्प आदि लानेका जो कामहो मुझको जल्द आज्ञा दे कि मैं उसे कियाकरूं ५९ ऐसे उसके वचन सुनके वह मुनि धैर्यको त्याग मोहितहुआ उसका हाथ पकड़ अपने आश्रमको लेगया ६० और काम वायु और बसन्तऋतु जैसे आयेथे तैसेही कृतकृत्यहोके स्वर्ग को चलेगये ६१ पश्चात् इन्द्रदेव उसअप्सरा और हरिका सम्यक् चेष्टित वृत्तान्तसुनके प्रसन्नहुआ ६२ और कण्डु ऋषि उस अप्सराके संग अपने आश्रममें प्रवेश कर तपकेबलसे मदनकीआकृति दिव्यवस्त्रोंको धारणकिये और दिव्यमाला और गन्धसे भूषित सब भोग तथा उपभोगोंसे सम्पन्नहुआ जिसे देख प्रम्लोचा अति मुदित हो कहनेलगी कि अहो इसके तपका पराक्रम है ६३।६५ निदान स्नान संध्या जप होम स्वाध्याय देवता का पूजन ब्रत उपवास नियम ध्यान आदिको त्यागके मुदितहुआ वह मुनि राति दिन उसकेसंग रमण करने लगा ६६ और कामसे आसक्तहो परमतपको भूलसंध्या दिन पक्ष मास वर्ष ६७ विषयभोगमें लगारहा और उस अप्सराने भी काम आदिकों के भारसे उसे त्याग न किया ६८ निदान उस सुन्दर कटिवालीके संग कण्डु ऋषिने सौवर्षोंसे भी अधिक रमणकरके ६९ मन्दराचल पर्वतकी गुफामें ग्राम्यधर्म स्वीकारकिया तब वह अप्सरा बोली कि हे महाभाग मैं स्वर्गमें जानेकी इच्छा करतीहूं ७० आप प्रसन्नहोके मुझको आज्ञादें उसके ऐसे वचन सुन उसमें आसक्तमनवाला वह मुनि ७१ बोला कि कुछदिनतो यहांही ठहरनाचाहिये यहकहनेके

बाद सौवर्षसे अधिक फिर वह कोमलांगी अप्सरा उसके संग अनेक भोग भोगके ७२ कहने लगी कि हे भगवन् आप आज्ञादें तो अब मैं स्वर्गलोकको जाऊँ ७३ उसके वचन सुन फिर वहमुनि कहनेलगा कि अभी तो ठहरना चाहिये ७४ निदान फिर जब भोगविलास करते डेढ़सौ वर्ष बीते तब वह शुभानना कहनेलगी कि हे ब्रह्मन् अब मैं स्वर्गलोक को जाऊँगी ७५ तब वह मुनि नेत्रोंको फैलाय कहनेलगा कि हे सुभ्रु तू क्षणभर और स्थितरह ७६ यह सुनके डरतीहुई वह अप्सरा कुछकम दोसौवर्षतक उसके पास ठहरीरही ७७ निदान जब २ यह स्वर्गलोक जानेको कहती तब २ वह मुनि ठहरनेको कहताथा ७८ और वह उसके शापके भयसे पीड़ितहुई कुछभी न कहसक्की ७९ निदान उसके संग बसताहुआ वह महर्षि दिन प्रतिदिन कामदेवमें आसक्तमन कियेहुये नवीन२ प्रेम बढ़ातारहा ८० एक समय वहमुनि अपनी कुटीके इधर उधर डोलताथा ८१ तब वह अप्सरा बोली कि कहांजाते हो यह सुन वह मुनि बोला कि ८२ हे शुभे मैं संध्योपासन करूंगा क्यों कि क्रियाके लोपसे अन्यथा होजाताहै ८३ तब वह अप्सरा हँसके मुनिसे कहनेलगी कि हे सर्वधर्मज्ञ आज के दिन क्या कोई बड़ापर्व है ८४ वा आजका दिन तेरे बहुत वर्षोंके भोगका परिणामहै क्योंकि इतने काल तक आपनें कुछ नहीं किया यह बड़ा आश्चर्य है ८५ नौसे सातवर्ष छःमहीने और तीनदिन बीतचुके हैं ८६ ऋषि बोला हे भीरु तू सत्य कहती है अथवा हास्यहै मैं तो

तेरे संग बास करतेहुये एकही दिन मानताहूं ८७ प्रम्लोचा बोली हे ब्रह्मन् मैं क्या आपके आगे झूठबोलतीहूं और इष्टकालको जाननेवाले आप नहींजानते ८८ वेद व्यासजी बोले कि हे मुनिसत्तमो वह मुनि उसके वचन सुनके अपने आपको धिक्कारकरके ८९ बोला कि मेरे तप नष्टहो गये और ब्रह्मवेत्ताओंका धन और विवेक हरलियागया यह स्त्री मोहके वास्ते किसने रची है ९० छः उर्मियों में अतिगत और आत्मासे विज्ञेय ज्ञातब्रह्मगति जिसने हनन करदी उस महा ग्रहरूपी कामको धिक्कारहै ९१ मेरे व्रत वेद और सबकर्म ग्राम्य मार्गसे कामदेवने हतकरदिये ९२ ऐसे वह धर्मज्ञमुनि अपनी निंदाकरके उस अप्सरासे बोला कि ९३ हेपापे तेरी इच्छाहो तहांजा देवराजका कार्य तो तूने करदिया ९४ मैं तुझको क्रोधरूप तीव्रअग्निसे भस्म तो न करूंगा क्योंकि तेरे संग मैंने भोग और प्यारकियाहै ९५ अथवा तेरा इसमें क्या दोषहै तुझपर मैं क्या क्रोधकरूं इसमें तो सब मेराही दोषहै क्योंकि मैं अजितेंद्रिय होगया ९६ तूने इन्द्रके प्यारसे मुझे महामोहित करदिया इससे तुझको धिक्कारहै ९७ वेदव्यासजी बोले कि उस विप्रर्षिके वचनसुन वहसुमध्यमा अप्सरा पसीनेसे नहा उठी और कांपनेलगी ९८ पश्चात् उस कांपती हुई खिन्नगात्रा और नतासे क्रोधितहो वह मुनिबोला किचलीजा२ निदान उसमुनिके घुड़कनेपर वहअप्सरा उस आश्रमसे निकसपसीनेको पोंछते आकाशमार्गकी रस्ता लिया ९९। १०० जब उसने झिरतेहुये पसीनेको वृक्षों

के पत्तोंसे पोंछा तो ऋषिने जो उसमें गर्भस्थापितकिया था १०१ वह रोमोंके द्वारा स्वेदरूपहोके निकसा और उन वृक्षोंने उसे ग्रहणकिया निदान वह गर्भ हौलें २ बढ़नेलगा १०२ और वृक्षों के सुन्दर नेत्रोंवाली एक कन्या पैदा भई जो प्राचेतसोंकी भार्या और दक्षकी माता हुई १०३ इधर कण्डु ऋषि तप क्षीण होजानेपर विष्णु के आराधनके लिये पुरुषोत्तमतीर्थको गया १०४ और दक्षिण समुद्रके किनारे मुक्तिको देनेवाले पृथ्वी में दुर्लभ उस परमक्षेत्रको देखा १०५ कि सुन्दर महलोंसे युक्त केतकीके बनसे शोभित अनेक प्रकारके वृक्ष और लता आदिकोंसे आकीर्ण और अनेकभांतिके पक्षियों के शब्दसे कूजित तथा सबजगह सुखके संचारसे युक्त और मनुष्यों को सब प्रकारके सुख देनेवाला है और धन्य और गुणों की खान और भृगु आदिक मुनिवरों गन्धर्वों किन्नरों यक्षों तथा अन्य मोक्षकी इच्छा करनेवाले पुरुषोंसे सेवित सब देवताओं से अलंकृत एवम् ब्राह्मण आदिक वर्णाश्रमों से सेवित हरिभगवान् विराजमान हैं १०६। १०९ पुरुषोत्तम देवके दर्शन कर उसने अपने आत्माको कृतकृत्य माना ११० और एकाग्र मनसे ब्रह्मपारका जपकरताहुआ हरिका आराधन १११ और ऊर्ध्वबाहुसे स्थित महायोगी होके तप का आचरण करनेलगा ११२ मुनियोंने पूछा हेभगवन् हम परमशुभ ब्रह्मपारको सुननेकी इच्छा करतेहैं जिस से कण्डुऋषिने केशव भगवान्का आराधनकिया ११३ वेदव्यासजी कहनेलगे कि वहब्रह्मपार पारहै और परहै

विष्णुहै अपार पारहै परोंसेभी परे है परमात्मारूप है परपारभूतहै और परोंकेभी पारपरहै ११४ वह कारण सहित और कारणके संश्रितहै और हेतु तथा परपार के हेतुहै वह कर्मकर्त्ता है और अनेकरूपोंसे सबसंसार की रक्षाकरताहै ११५ वह ब्रह्म प्रभुहै और सबकी उत्पत्ति ब्रह्मसेही है प्रजाकापति अच्युत अव्यय नित्य विष्णुरूप और सम्पूर्ण अपक्षयादिक संगोंसे रहितहै ११६ जैसे अज और नित्य वह पुरुषोत्तम है तैसेही मेरेभी रागादिक दोष शांतिको प्राप्तहों ११७ पुरुषोत्तम पारब्रह्मकी ऐसी स्तुति सुनके वह परम तथा दृढ़ भक्ति और प्रीतिसे ११८ भक्तवत्सलदेवके समीपजाके मेघसरीखे गंभीर नादसे दिशाओं को नादित कराता हुआ स्तुति करनेलगा ११९ और उसकी भक्तिदेख गरुड़पर असवार भगवान् वहां आके कहनेलगे १२० कि हे मुने तेरे मनमें जो परमकामनाहै उसे कह हेसुव्रत में वरदेनेवाला प्रस्तुतहूं तू वरमांग १२१ उसदेवदेव चक्री भगवान्का यह वचन सुनके उसने एकबार नेत्र मीच आगे हरिको देखा कि १२२ अलसीके पुष्प सरीखी कान्ति और पद्मका पत्रके समान नेत्रोंवाले भगवान् चतुर्भुज शंख चक्र और गदाको हाथमेंलिये मुकुट तथा बाजूबन्द को पहिने पीले वस्त्रोंको धारण कियेहुये श्रीवत्सचिह्न और बनमालासे विभूषित सब लक्षणों संयुक्त सब रत्नोंसे विभूषित और चन्दनआदिकों से लिप्त मूर्त्तिसे विराजमान हैं ऐसे भगवान् के दर्शनकरके वह अति आश्चर्यित और रोमांचितहो

दण्डवत् प्रणामकरनेलगा १२३। १२६ और बोला कि अब मेराजन्म सफलहुआ और अब तपभी सफल हुये ऐसा कहके उसने स्तोत्रका प्रारम्भ किया कि हे नारायण हे कृष्ण हे श्रीवत्स चिह्नवाले हे जगत्पते जगद्धाता जगद्धाम और जगत्साक्षि आपको नमस्कारहै १२७।१२८हे अव्यक्तहे जेता हे उत्पत्ति करनेवाले हे प्रधान हे पुरुषोत्तम हे पुण्डरीकाक्ष हे गोविन्द हे लोकनाथ आपको नमस्कार है १२९ हे हिरण्यगर्भ हे श्रीनाथ हे पद्मनाभ हे सनातन हे भूगर्भ हे ध्रुव हे ईशान हेहृषीकेश आपको नमस्कारहै १३०हे अनाद्य हे अमृत हे अजेय हे अजित हे अखण्डल हे कृष्ण हे श्रीनिवास आपको नमस्कार है १३१ हे योगात्मा हे सर्व्व मायात्मा हे लोकात्मा हे सनातन हे कूटस्थ अचल दुर्विज्ञेय और कुशेशय आपको नमस्कारहै १३२ हेवरेण्य हे गुणाकर हे प्रलय उत्पत्ति और योगके ईश हे वासुदेव आपको नमस्कार है १३३ हे पर्जन्य हे धर्म कर्त्ता हे दुष्पार हे दुराधिष्ठित हे दुःखार्त्तिनाशन हे हरे हे जलशायी आपको नमस्कारहै १३४ हे विश्वात्मा हे परमात्मा हे चन्द्र सूर्य्य और वायुरूप हे शुचिश्रवा हे शुचिवर हे श्रीस्रवन आपकोनमस्कारहै १३५ हे यज्वा हे यज्ञधाता हे अभयप्रद हे यज्ञगर्भ हे हिरण्यांग हे पृथ्वीगर्भ आपको नमस्कार है १३६ हे वरेण्यवरद हे अनन्त हे ब्रह्मयोनि हे गुणाकर हे प्रलयउत्पत्ति और योगकेईशभूत हे तत्त्वों से अनाकुल १३७ हे भूताधिवास भूतात्मन् हे भूतगर्भ आपको नमस्कार है १३८

हे स्थूल तथा सूक्ष्मरूप शुद्ध और अभयंकर आपको नमस्कारहै १३९ हे क्षेत्रज्ञभूत क्षेत्रज्ञ क्षेत्रहा क्षेत्रवित् क्षेत्रात्म क्षेत्ररहित और क्षेत्रसृष्टा आपको नमस्कारहै १४० हे गुणालय हे गुणाबास हे गुणाशय हे गुणावह हे गुणभोक्ता हे गुणाराम हे गुणत्यागी आपको नमस्कारहै १४१ हे भगवन् आपही विष्णुहो और आपही हरि चक्री और जेता तथा जनार्दनहो आपही वषट्कार भव्य और प्रभुहो १४२ और आपही भूतकृत् मध्य भूतभृत् भूतभावनदेव और शुभरजनीहो १४३ आपही अनन्तहो कृतज्ञहो कृतिहो और वृषाकपिहो आपही रुद्रहो दुराधर्षहो और अनाद्य ईश्वरहो १४४ आपही विश्वकर्माहो जिष्णुहो शम्भुहो और वृषाकृति हो और आपही उशना सत्य और तपोधनहो १४५ आपही बिश्वरेताहो आपही शरण्यहो आपही अक्षर हो और आपही शम्भु स्वयम्भू ज्येष्ठ और परायणहो १४६ आपही आदित्यहो आपही ॐकारहो आपही प्राणहो आपही तमिश्रहाहो आपही मेघहो और सुरेश्वरहो १४७ और आपही ऋग् यजु और सामयेहो आपही अग्निहो आपही पवनहो आपहीजलहो और आपही पृथ्वी हो १४८ आपही श्रेष्ठ तथा भोक्ता हो आपही होताहो आपही हविहो और आपही यज्ञरूप हो आपहीप्रभुहो श्रेष्ठविभुहो लोकपतिहो स्तुतहो १४९ लोकहो धर्महो धारणाहो सर्वदर्शनहो श्रीमान्हो १५० और आपही दिन तथा रात्रीहो आपहीको पण्डितजन वर्ष कहते हैं आपही काल हो कला हो काष्ठाहो और

मुहूर्त्तहो १५१ और आपही बाल तथा वृद्ध और पुमान् स्त्री तथा नपुंसक हो आपही विश्वयोनि और बभ्रुस्थाणु तथा शुचिश्रवा हो १५२ आपही शाश्वत अजित उपेंद्र और उत्तमहो आप सर्वहो चित्सुखद हो वेदांगहो और अविनाशी हो १५३ और आपही वेदविध्याहोताहो विधाताहो और आश्रितहो आपही जगन्निधि मूल धाता और पुनर्वसुहो १५४ और आपही वेत्ता धृतात्मा और यतींद्रियगोचर अग्रणी ग्रामणी सुपर्ण और आदिमान् हो १५५ आपही संग्रह तथा संग्रहकृतहो धृतात्मा और अच्युतहो यमहो नियमहो प्रांशुहो और चतुर्भुजहो १५६ आपही आत्मा और परमात्मा हो और आपही चारमुखोंवाले ब्रह्मा हो इन्द्र हो और अग्रज हो १५७ आपही गुरु हो और आपही गुरुत्तम हो आपही बास हो और आपही दक्षिण हो आपही पिप्पल हो आगम हो १५८ हिरण्यदेवाभहो देवेशहो प्रजापतिहो और अनिर्देश्य बपुधृक् हो आपही यम और सुरारिहा हो संकर्षणदेव हो सनातन कर्त्ता हो १५९ और आपही वासुदेव हो अमेयात्माहो गुणवर्जित हो आपही ज्येष्ठ हो बरिष्ठहो विभुहो माधवहो १६० और सहस्रशीर्षादेवहो अव्यक्त हो सहस्रदृक्हो हजार पैरोंवाले हो और विराट् तथा सुराट् प्रभु हो १६१ हे देव आप दशांगुलमें स्थित रहते हो और क्षांतरूपहो शक्रहो इन्द्रहो १६२ वाच्य हो ईशानहो मृत तथा अमृतहो और आपहीसे लोक मोहको प्राप्त होरहाहै आपही उत्तम पृथ्वीपालहो १६३

आपही अतिवृद्ध पुरुषहो और हे देव आपही दशप्र-
कारसे स्थितहो आपही विश्वभूत चतुर्भाग हो १६४
आपही नरभागहो आपही स्वर्गमें अमृतरूपहो और
आपही सनातन पुरुषके सब भाग आकाशमें स्थितहैं
१६५ और दोभाग आपके पृथ्वी में स्थित हैं आपके
तेजसे जगत्का व्यष्टिकारण होताहै १६६ आपही से
विराट् उत्पन्न होता है और आपही जगत् को प्रसन्न
करनेवाले पुरुषहो आप अपने तेजसे पृथ्वी में सबके
ईशहो १६७ आपही से देवताओं की उत्पत्ति हुई है
और ग्राम्य अरण्यमें होनेवाली औषध पशुमृगादिक
येभी आपही उत्पन्न हुये हैं १६८ और आपही ध्येय
हो आपही ध्यानपरहो आपही कृतवान्हो आपही देव
देव और कालाख्यहो और दीप्तविग्रहहो १६९ स्था-
वर जंगम चराचर जगत् सब आपहीसे उत्पन्न हुआहै
और आपही में प्रतिष्ठित है १७० हे देवसर्व हे सुर-
श्रेष्ठ हे सर्वलोकपरायण हे अरविंदाक्ष हे नारायण मेरी
रक्षाकरो आपको नमस्कार है १७१ हे भगवन्विष्णो
आपको नमस्कार है हे पुरुषोत्तम हे सर्वलोकेश हे क-
मलाशय आपको नमस्कार है १७२ हे गुणबर्जित हे
गुणरूप आपको नमस्कार है हे गुणालय हे गुणाकर
आपको नमस्कारहै १७३ हे वासुदेव हे सुरोत्तम हेज-
नार्दन हे सनातन आपको नमस्कारहै हे योगवास हे
योगियोंकोगम्य आपको नमस्कारहै १७४ हे गोपते हे
श्रीपते हे जिष्णो हे मरुत्पते हे जगत्पते और हे ज्ञा-
नियोंकेपति आपको नमस्कारहै १७५ हे दिवस्पते हे

महीपते हे मधुको मारनेवाले हे पुष्करेक्षण आपको नमस्कारहै १७६ हे कैटभारे हे सुब्रह्मण्य हे महासीन हे श्रुतिपृष्ठधर हे अच्युत आपको नमस्कारहै १७७ हे समुद्रमलिनक्षोभ हे पद्मजाह्लादकारण आपको नमस्कारहै १७८ हे अश्वशीर्ष हे महास्वन हे महापुरुष विग्रह हे मधुकैटभकेहन्ता हे तुरगानन आपको नमस्कारहै १७९ हे महाकच्छरूप पृथ्वीके उद्धारकरनेवाले और हे विभूत अद्रिस्वरूप हे महाकूर्म रूप आपको नमस्कार है १८० हे महाबाराहरूप पृथ्वी को उद्धार करनेवाले हे श्वादिवराह विश्वरूप वेधस आपको नमस्कारहै १८१ हे अनन्त सूक्ष्म मुख्यबर परमात्मस्वरूप योगिगम्य आपको नमस्कार है १८२ हे कारण रूप हे योगेन्द्र चित्तालय हे मुर्भिद क्षीरार्णवमें आश्रित महासर्पपर शयनकरनेवाले और सुवर्ण तथा रत्नोंके कुण्डलोंको धारणकरनेवाले आपको नमस्कारहै १८३ वेदव्यासजीबोले कि इसप्रकार उसकी स्तुतिसुन भगवान्बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ जो तू मुझसेचाहताहै उसको जल्दमांग १८४ कण्डुमुनि कहनेलगा कि हेजगन्नाथइस दुस्तर और लोमहर्षण और अनित्य दुःख विशेषवाले कदलीदलसन्निभ १८५ निराश्रय निरालम्ब जलके बुलबुलेके समान सर्वोपद्रव संयुक्त और अतिभयंकर संसार में मैं भ्रमता हूं १८६ सो हे देव आपकी माया से मोहित हुआ मैं बहुत कालतक विषयासक्तरहा पर इस संसारके अन्त को नहीं पहुँचा १८७ हे देवेश मैं संसारके भयसे पीड़ितहुआ स्तुतिकरके आपकीशरण

हुआहूँ इसलिये आपजल्द इस संसाररूपी समुद्रसे मेरा उद्धारकरो १८८ हे भगवन् आपके सनातन परमपदको जानेकी मैं इच्छाकरताहूँ जहांसे फिर आवृत्ति नहो और जो दैत्यदानवोंसे दुर्लभ आपकापदहै १८९ श्रीभगवान्बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ तू मेराभक्तहै और इस क्षेत्रमें तूने मेरा आराधनकिया इसलिये जो तू चाहताहै उस मोक्षपदको मेरे प्रसादसे प्राप्तहोवेगा क्योंकि १९० मेरेभक्त क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री तथा चाण्डालादिकभी परमसिद्धिको प्राप्तहोजातेहैं हेद्विजोत्तम फिर तेराक्याकहनाहै १९१ वेदव्यासजी बोले कि वे भक्तवत्सलदेव और दुर्विज्ञेय गतिवाले विष्णु उससे ऐसे कहके अन्तर्द्धान होगये १९२।१९३ हे मुनिश्रेष्ठो उनके जानेकेपीछे प्रसन्न मनवाला कंडुऋषि सब कामनाओंको त्यागस्वस्थचित्त हो १९४सबइन्द्रियोंकोरोक और ममता और अहंकारसे रहितहो एकाग्रमन से उस पुरुषोत्तम भगवान्को जान १९५ निर्लेप निर्गुण शान्त सत्तामात्र व्यवस्थित और देवताओंकोभी दुर्लभ मोक्षको प्राप्तहुआ १९६जो पुरुष इसकण्डु महात्माकी कथाको कहेगा औरसुनेगा वहसब पापोंसेमुक्तहो स्वर्गलोकको प्राप्तहोजावेगा १९७हेमुनिश्रेष्ठो यहमैंने कर्मभूमि और परममोक्षका क्षेत्र पुरुषोत्तम देवका व्याख्यानकहाहै १९८जो मुक्तिदेनेवालेपुरुषोत्तम भगवान्का दर्शन नमस्कार और ध्यानकरेंगे वे मनुष्य सुन्दरभोगों औरस्वर्गमें दिव्यसुखोंको भोगकर समस्त दोषसे रहित हरिके अव्यय स्थानको प्राप्तहोंगे १९९॥

श्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांकण्डुउपाख्यानंसप्ततितमोध्यायः ७०

इकहत्तरवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी बोले कि हे द्विजोत्तमो व्यासके वचन सुन बारम्बार विस्मित और प्रसन्न हो १ मुनियों ने कहा हे भगवन् अहो भारतवर्ष के आपने अपूर्व गुण कीर्त्तनकिये और श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्रका उत्तम माहात्म्य सुनके हमें बड़ा आश्चर्य हुआ हमारे हृदामें चिरकाल से एक संदेहहै २।३पर हे लोमहर्षणजी महाराज आप-के सिवाय इस संशयको दूरकरनेवाला पृथ्वीपर कोई नहीं है ४ बलदेव श्रीकृष्ण और सुभद्राकी उत्पत्तिका वृत्तांत हम आपसे पूछते हैं ५ बलदेव और श्रीकृष्ण वसुदेवके घर किसलिये उत्पन्नहुये और सुभद्रा वहां क्यों उत्पन्नहुई ६ उन्होंने साररहित दुःखरूप पापरूप चंचल जलके बुद्बुदेके समान भयंकर ७ और लोम-हर्षण मर्त्यलोक में विष्ठा और मूत्रके स्थान संकटरूप और दुःखदायक घोरतर गर्भवासकी रुचि कैसे की ८ पृथ्वीपर उत्पन्नहोके उन्होंने जो२ कर्मकिये तिनको आप विस्तारसे कहो ९ जिनके अद्भुत चरित्रहैं वे सुरेश सुर-सत्तम विष्णु भगवान् १० वसुदेवके कुलमें गोपभाव को कैसे प्राप्तहोगये और देवताओंसे आवृत और पु-ण्यात्मा पुरुषोंसे अलंकृत ११ देवलोकको त्यागके इस लोकमें वे क्यों आये १२ देव तथा मनुष्यों में न युक्त होनेवाले आत्मा मनुष्य शरीरमें कैसे युक्तहुये १३ और जो अनामयरूपहोके मनुष्योंके चक्रको बर्त्तारहे हैं उन चक्र गदाधर भगवान्ने मनुष्य शरीरमें कैसे बुद्धिकी १४ जो सब जगत्की रक्षा करते हैं वे विष्णु स्वर्ग में

रहके गोपपना कैसे करनेलगे १५ और जो भूतात्मा महाभूतोंको धारणकरते हैं वे श्रीगर्भ भगवान् स्त्री के गर्भमें कैसेआये १६ जिसने देवताओंके लिये तीनपैड़ों से क्रमसे तीनोंलोक जीतके कर्म के मार्ग त्रिवर्ग और त्रिप्रवर रचादिये १७ जो अन्तकालमें जगत्को त्याग जलमय शरीरधारणकर दृश्यादृश्यमार्गसे लोकोंको एकार्णव करदेते हैं १८ जो पुराणात्मा बाराहरूपको धारणकर अपने मुखके अग्रभागसे पृथ्वी को लाये १९ जिन्होंने पुरुहूत अर्थात् इन्द्रके लिये इस अव्यय त्रिलोकीको दैत्योंसे जीता २० जिसने आधासिंहका और आधा मनुष्यका शरीर धारणकर महान् पराक्रमवाले हिरण्यकशिपु दैत्यको मारा २१ जिसने उर्वसे संवर्त्तक संज्ञक अग्निहोके पातालस्थसमुद्रके जलको पीलिया २२ जिसे हजार चरणोंवाला हजारकिरणोंवाला और हजार शिरोंवाला कहते हैं २३ जिसकी नाभिसे एकार्णवलोकहुये पीछे ब्रह्माका घररूप पंकज अर्थात् कमल पैदाहुआ २४ जिसने तारकामययुद्धमें सर्वदेवमय और सब शस्त्रोंको धारणकरनेवाला शरीर धारणकरके दैत्यों का नाशकिया २५ और गरुड़पर सवारहोके कालनेमि दैत्यमारा २६ जो उत्तर समुद्रके अन्तमें क्षीरसागर में शाश्वतयोगको प्राप्तहो शयनकरते हैं २७ जो सुरारणि अर्थात् देवताओंकी माता दिव्यके गर्भमें दैत्योंके गणों को मारके इन्द्रकी रक्षाकरनेके लिये प्राप्तहुये २८ और तीनोंलोकोंमें व्याप्त होनेवाले पैरों को फैला दैत्यों को पाताललोकमें भेज देवताओं और इन्द्रको स्वर्ग का

ईश करते हैं २९ जो गार्हपत्य विधिसे और अन्वाहार्य
कर्म से अग्नि आहवनीय वेदीचार दीक्षा ३० और
प्रोक्षणीय ध्रुव आवभृथ्य अवाक आदि यज्ञमें हव्य
विभागको करतेहैं ३१ और जो हव्यको ग्रहण करने
वाले देवतों और पितरोंको भागके लिये यज्ञविधि से
यज्ञकर्म्ममें प्रवृत्त करातेहैं ३२ जो यज्ञपात्र दक्षिणा
दीक्षा चमस उलूखल धूप शमी श्रुवा सोम पवित्राआ-
दिको युक्तकरतेहैं ३३ और जो यज्ञियद्रव्य यज्ञअग्नि
और श्रेष्ठ यजमानों को प्रस्तुत कराते हैं ३४ जिसने
पहले श्रेष्ठ कर्मों से इनका विभागकिया और युगों के
अनुसार रूपधरके लोकों में क्रमसे ३५ क्षण निमेष
काष्ठा कला त्रिकाल मुहूर्त्त तिथी मास दिन वर्षकोरचा
३६ जिसने ऋतुकाल योग अनेकप्रकारके प्रमाण आ-
युक्षेत्र लक्षण रूप सुन्दरता ३७ तीन लोक तीन देव
तीनअग्नि त्रिकाल तीन कर्म तीनवर्ण तीनगुण ३८
सब मनुष्योंसे पहलेही रचदिये जो सब भूतोंकी गति
सर्वभूतगुणात्मक ३९ और मनुष्योंके इन्द्रियरूपहोके
रमण करतेहैं जो गताऽगतयोग से ईश्वर४० और जो
धर्मयुक्तोंकीगति पापकर्मवालोंकी अगति और चारो
वर्णोंकी उत्पत्ति और रक्षा करनेवाले हैं ४१ जो चार
वर्णोंको जाननेवाला चातुराश्रमके संश्रय और दिशा
आकाश पृथ्वी वायु जल अग्नि ४२ और चन्द्र सूर्य्य
की ज्योतिरूप और युगेश वे भगवान्हैं जो परमज्योति
और परमतप सुनेजाते हैं ४३ और जो परसेभी परे
और आत्मवान्हैं ४४ जो आदित्योंकादेव और दैत्यों

का नाश करनेवाला और युगान्तकहै तथा जो लोकोंका अन्त करनेवाला ४५ और लोकसेतु अर्थात् मर्यादामें मर्यादारूपहै जो पवित्रकर्म करनेवालोंमें पवित्र वेदके जाननेवालोंमें वेद्य और प्रभवात्मावालोंमें प्रभुहै ४६ और जो सौम्योंमें सोमरूप अग्निसरीखे तेजवालोंमें अग्निरूप इन्द्रियोंके ईश तपस्वियों में तपरूप ४७ नयवृत्तिवालोंमें विनयरूप तेजवालोंमें तेजस्वी और आकाश प्रभव वायु बाहु प्राण अग्निरूप है ४८ जो देवताओंको हवनसे ग्रहण कियाहुआ प्राण और जो प्राणअग्नि है वह मधुसूदन भगवान् है ४९ बसा से शोणित पैदा होताहै शोणितसे मांस मांससे मेद मेद से अस्थि ५० अस्थिसे मज्जा मज्जा से वीर्य्य और वीर्य्यसे गर्भ पैदाहोताहै ५१ जहां सोर कर्म रूप रस मूलहै प्रथमभाग अर्थात् वीर्य्य तो सोमराशिहै ५२ दूसराभाग ग्रीष्मसे सम्भव हुआहै उसमें पहलाभाग वीर्य्य सोमात्मकहै और आर्त्तव अग्निरूपहै ५३ ऐसे उनके रसके अनुसार चन्द्रमा और अग्नि इज्य अर्थात् पूजितहैं ५४ फलवर्गमें वीर्य्य स्थितहै पित्तवर्ग में शोणितहै कफका हृदय स्थानहै और पित्त नाभिमें प्रतिष्ठितहै ५५ देहके मध्यमें जो स्थानहै सो मानस कहाताहै और कोष्ठ स्थानमें अग्नि देव स्थितहै ५६ मन प्रजापतिहै कफ सोमहै और पित्त अग्निरूप है और अग्निसोमात्मक जगत्है ५७ ऐसे प्रवर्त्तित और बुदबुदाके समान गर्भमें वायु परमात्माके संसर्गसे अपना प्रवेश करताहै ५८ और शरीरमें पांच प्रकारसे

स्थित होजाताहै ५९ प्राण अपान समान उदान और व्यान प्राणवायु आत्माको बढ़ाताहुआ शरीरमें वर्त्तता है ६० अपान वायु शरीरके पृष्ठभाग में और उदान वायु कण्ठमें स्थितहै व्यानवायु सर्वशरीरव्यापीहै ६१ और समानवायु नाभिमें स्थितहै तिसीसे सबभूतोंकी उत्पत्ति होतीहै ६२ पृथ्वी वायु आकाश जल अग्नि इन पांच तत्त्वोंसे उत्पन्नहुये शरीरमें इन्द्रिय अपना २ योग करतीहैं ६३ देह पार्थिवहै प्राणवायु आत्मारूप है छिद्र आकाशतत्त्वहै राल आदिक जलका झिरना जल तत्त्वका विकारहै ६४ और नेत्रों में तेज अग्नि तत्त्वहै इनसबका आत्मा मनहै और विषय ग्रामहै ६५ ऐसे इनसब प्रकारके सनातन पुरुषोंको रचतेहुये विष्णु भगवान् इसमृत्युलोकमें कैसे प्राप्तहोतेहैं ६६ हे ब्रह्मन् हमें यह बड़ा संशय और आश्चर्य्यहै कि मनुष्य शरीर की गतिको वे भगवान् कैसे प्राप्तहोगये ६७ हे महामुने विष्णुकीउत्पत्ति ६८ और उन विख्यात बलवीर्य्य अमित पराक्रमवाले और कर्मसे आश्चर्य्यरूप विष्णु के तत्त्व को आपवर्णनकरो ६९ क्योंकि देवताओं की पीड़ा दूरकरनेवाले उस सर्वव्यापी देव जगन्नाथ सर्वलोकमहेश्वर ७० और रचना स्थिति संहारकेकरनेवाले और सर्वलोकोंको सुख देनेवाले अक्षय शाश्वत अनन्त क्षय वृद्धिविवर्जित निर्लेप निर्गुण सूक्ष्म निर्विकार निरंजन सब उपाधियोंसे निर्मुक्त सत्तामात्र व्यवस्थित अविकारी विभु नित्य परमात्मा सनातन अचल निर्मल नित्यतृप्त निरामय विश्वम्भर और हरिके कर्मों

की गति अति गम्भीरहै ७४। ७५ वह अनन्तात्मा प्रभव और अव्यय भगवान् नारायण सनातनहरिहैं ७६ ब्रह्मा रुद्र धर्म शुक्र बृहस्पति आदि सबोंको उस प्रधानात्मा ने पहले ब्रह्माहोके रचा ७७ और उसी भगवान्ने पूर्वकल्पमें प्रजापतियोंकोरचाथा७८फिर वे सर्वलोक महेश्वर भगवान् यदुकुलमें क्योंपैदाहुये७९॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेऋषिप्रश्न कथनन्नामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

वेदव्यासजी बोले कि उससुरेश विष्णु प्रभुविष्णु पुराणपुरुष शाश्वत अव्यय चतुर्व्यूहात्मा निर्गुण सगुण वरिष्ठ गविष्ठ वरेण्य श्यामरूप भगवान्को नमस्कारहै १ सम्पूर्ण यज्ञके अंगोंवाले और देवताओं से स्तुत भगवान्को नमस्कारहै२जिससे अन्य और जिससे बड़ाकोई नहींहै ३ जिससे जगत्की व्याप्ति और संक्षयहोतीहै और जिस दृष्टअदृष्ट विलक्षण भाववाले ४ ब्रह्मरूप देवको समाधिमें नमस्कारकरके जानलेते हैं तिसको नमस्कारहै ५ उस अविकाररूप शुद्ध नित्य परमात्मा सदैकरूप विष्णु जिष्णु देवको नमस्कारहै६ हिरण्यगर्भ देव हरशंकर वासुदेव रचना स्थिति संहार कोकरनेवाले अनेक तथा एकस्वरूप स्थूल तथा सूक्ष्म रूप और अव्यक्त व्यक्तरूप मुक्तिकेहेतु और जगत्में रचना स्थिति और संहारकेमूल परमात्मा विष्णु को नमस्कार है ७।१० संसार के आधारभूत सर्वभूतस्थ अच्युत पुरुषोत्तम ज्ञानस्वरूप अत्यन्तनिर्मल आत्म-

स्वरूपसे सबजगह स्थित ११ और संसारकी स्थिति तथा रचनाकरनेवाले जगतोंकेईश अज अव्यय और अनादि प्रभु १२ को प्रणाम करके मैं पहिले हुई कथा को कहताहूं पहले दक्ष आदिक श्रेष्ठ मुनियोंद्वारा पूछे हुये ब्रह्माजी कहनेलगे १३ कि ऋक् साम और यजुर्वेदोंको मुखसे उगलके त्रिलोकी को पवित्र करनेवाले जिस एक परिपूर्णरूप ईश्वरके १४ यज्ञको दैत्य लोप करते हैं उस अव्यक्त जन्माब्रह्मको मैं कहूंगा १५ और जिसने सृष्टिके उद्देशके वास्ते धर्म आदिक प्रकटकिये हैं तिस ईश्वरके जन्मको मैं कहताहूं १६ तत्त्वके जानने वाले मुनियों ने जलोंका नाम नाराकहा है १७ सोही पहले उस भगवान्का अयन अर्थात् स्थान था इस वास्ते वे सर्वव्यापी भगवान् नारायण कहेजाते हैं १८ वह सगुण निर्गुण ईश्वर चारप्रकारसे स्थित है मूर्त्ति मान्को बुद्धिमान्जन शुक्लदेखते हैं १९ और अग्निकी लटाओं से बढ़े हुये अंगवाली दूरस्थ और समीपमें स्थितहुई मूर्त्तिको योगिजन देखते हैं २० वासुदेव नाम वाली निर्मलमूर्त्तिका रूप आकाशके समानहै २१ वह सदा शुद्धहै और अपनी प्रतिष्ठासे एकरूपवाली है दूसरी पृथ्वी को मस्तकपर धारण करनेवाली शेष नाम वाली मूर्त्तिहै २२ जो तिर्यक्योनिके विस्तारसे तामसी है तीसरी मूर्त्ति प्रजापालनके कर्म करती है २३ और सत्त्वगुणमें युक्त और धर्मकी स्थिति करनेवाली है और चौथी जलके मध्यमें शेषशय्यापर शयनकरती है २४ जो रजोगुणवाली और सृष्टिकी रचना करती है ऐसी

जो हरिकी मूर्त्ति प्रजापालनमें तत्परहै २५ वह पृथ्वी पर धर्मका प्रचार और नियम करती है धर्मका लोप करनेवाले बढ़ेहुये दैत्योंको मारती है २६ देव गन्धर्वों की पालना करती और धर्ममें तत्परहै जब २ धर्म क्षीण होताहै २७ तब २ दैत्योंका वे भगवान् नाशकरते हैं और देव गन्धर्वोंकी पालना और धर्मकी रक्षाकरते हैं २८ और जब अपने आत्माको रचते हैं तब धर्मकोभी बढ़ाते हैं उस भगवान्ने पहले बराहरूप धारणकर २९ अपने मुखके अग्रभागसे पृथ्वीका उद्धारकिया नृसिंह रूप धारणकरके हिरण्यकशिपुको मारा ३० और विप्रचित्ति आदि अन्य दैत्योंको हनन किया वामनरूप धर बलिको वशमें कर ३१ सब दैत्योंको जीत त्रिलोकी नापली और भृगुवंशमें उत्पन्नहो प्रतापवान् परशुराम रूपसे ३२ कार्यकीसिद्धिकेलिये दानवोंकोमारा औरउसी देवने प्रतापवान् दाशरथि रामहोके ३३ त्रिलोकी को भय देनेवाले रावणको युद्धमें मारा जब आप एकार्णव समुद्र में शयनकरते थे ३४ तब सहस्रयुगों तक विभु ब्रह्मा आपकी योगनिद्राको प्राप्तहो आपकी महिमामें स्थित रहा ३५ और सब स्थावर जंगम त्रिलोकी को अपने उदरमें करके जनलोक में प्राप्तहुये सिद्धों द्वारा स्तूयमान ३६ ईश्वर की नाभि में सुन्दरमण्डित और अग्नि तथा सूर्यके समान कांतिवाला ३७ और सुमेरु पर्वतकी कांतिके समान कमलकेशरोंवाला पितामहका घर अर्थात् कमलपैदाभया ३८ जब वह चारमुखोंवाला ब्रह्मा उत्पन्नहुआ तब विष्णुके कानके मैलसे उत्पन्नहो

मधुकैटभ नामक ३९ महान् पराक्रम और महान्वीर्य वाले दो दैत्य ब्रह्माको मारनेके वास्ते उद्योग करनेलगे ४० और उन दुराधर्ष दैत्योंको भगवान्ने शयनसे उठ के मारा इसीप्रकार अनेककर्म उस भगवान्ने किये ४१ उन जगत्पति भगवान्ने मथुराजी में नियमकिया ४२ देवयोनि मनुष्ययोनि तथा तिर्यक्योनि में वे वासुदेव भगवान् सदा इच्छा करके श्रेष्ठस्वभावको ग्रहण करते हैं ४३ और इच्छित कामनाओंको देते हैं ४४ हे द्विजोत्तमो इस प्रकार मैंने विष्णु भगवान् का यह प्रभाव सुनाहै अब मनुष्य शरीरमें प्राप्त हुये विष्णु के चरित्रों को सुनो ४५ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसम्वादे चतुर्व्यूहनामद्वासप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

वेदव्यासजी बोले कि हे मुनिशार्दूलो पृथ्वीका भार उतारनेके लिये हरिने जो अवतार लिये उनको मैं विस्तारपूर्वक कहूंगा १ जब२अधर्म प्रवृत्त होताहै तब२ धर्मकी कामनासे २ जनार्दनभगवान् साधुओं और धर्म की रक्षा ३ और दुष्टों और दैत्योंके नाशके वास्ते युग युगमें अवतारलेते हैं४।५हे विप्रो पूर्वकालमें भारसेपीड़ितहुई पृथ्वी सुमेरुपर्वतपर देवताओंके समाजमें गई और ब्रह्मा आदिक देवताओंको प्रणाम करके करुणा सहितबोली ६ कि सुवर्णका गुरु अग्निहै अग्निका गुरु सूर्य है और सब लोकोंके गुरु नारायणहैं ७ अब कालनेमि आदिले दैत्य मृत्युलोकमें प्राप्तहो रातिदिन प्रजा

को बाधादेते हैं ८ क्योंकि विष्णु भगवान्ने जो काल-नेमि दैत्यको माराथा वह उग्रसेनका पुत्र महा असुर कंस नामसे विख्यात हुआहै ९ और अरिष्ट धेनुक प्र-लम्ब नरक और बलिका पुत्र बाणासुर १० तथा अन्य राजाओंके भुवनोंमें महापराक्रमवाले अन्य दुरात्माओं को मैं नहीं सहसक्ती ११ महाबलवाले दुष्ट दैत्यों की अक्षौहिणी सेनाके १२ भारसे पीड़ितहो मैं उनको नहीं सहसक्ती इसलिये आप मुझको धारणकरो यह आप को विज्ञापन करातीहूं १३ हे महाभाग मेरा यह भार उतारो कि मैं अतिविकलहो रसातलको न प्राप्तहूं १४॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसम्वादो नामत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

व्यासजी बोले कि सब देवताओं ने पृथ्वी के यह वचन सुन उसका भार उतारने के वास्ते ब्रह्मासे कहा तब ब्रह्माजी ने कहा हे देवताओ पृथ्वी जो कहती है सो सत्य है मं शिव तथा आप सब नारायणात्मक हैं और उसकी जो विभूतिहै १।३ तिसमें परस्पर आधि-क्यता न्यूनता और मध्यभाव बाधकतासे वर्त्तते हैं ४ इसलिये हमसब क्षीरसागरके उत्तरतटपर चलके हरि का आराधन करके उसे सम्पूर्ण विज्ञप्तकरें ५ तो वह सर्वात्मा जगन्मयदेव अपने अंशसे पृथ्वी में अवतार लेके धर्मकी स्थितिकरेगा ६ व्यासजी बोले कि ऐसेकह के ब्रह्माजी देवताओं सहित वहां गये और सावधान मनसे गरुड़ध्वज भगवान्की स्तुति करने लगे ७ कि

हे सहस्रमूर्त्ति सहस्रबाहु तथा सहस्रमुख और सहस्र पैरोंवाले और जगत्की रचना स्थिति और संहार करनेवाले पर तथा अप्रमेय आपको नमस्कारहै ८ हे सूक्ष्मसेभी अतिसूक्ष्म और बड़ोंसे बड़े हे बुद्धि और इन्द्रियों में प्रधान हे परात्मा हे भगवन् आप प्रसन्न हो ९ हे भगवन् यह पृथ्वी महान् असुरोंसे पीड़ितहो आप जगत् के परायण और अपारपार देवकी शरण अपना भार उतारनेके वास्ते आईहै १० और ये सब देवते अश्विनीकुमार वरुण रुद्र वसु सूर्य्य पवनआदिक सबके ११ संग मैं आपकेपास इसपृथ्वीके भारउतारने केवास्ते आयाहूँ इसलिये आप ऐसी आज्ञादें कि हम दोषरहितहोके बसें १२ व्यासजी बोले कि इस प्रकार स्तुति कियाहुआ वह परमेश्वर भगवान् श्वेत और कृष्ण दोकेशोंको अपने शरीरसे उखाड़तेभये १३ देवताओंकेप्रति बोले कि येमेरेकेश पृथ्वीमें अवतारलेके पृथ्वीका भार उतारेंगे और क्लेशकी हानि करेंगे १४ आप सब देवतेभी अपने अंशसे पृथ्वीमें उतरो और पहलेउतरेहुये महान् असुरोंके संग युद्धकरो १५ तोवे सब दैत्य पृथ्वीतलमें क्षयको प्राप्तहोजावेंगे १६ मेरा यह केश वसुदेवकी पत्नी देवकी के आठवांगर्भ होगा १७ और कालनेमिरूप कंसको मारेगा ऐसे कहके हरि भगवान् अन्तर्द्धानहोगये १८ और उन सब देवतों ने उस ईश्वरको प्रणामकरके सुमेरुपृष्ठसे उतर पृथ्वीतल में अवतारलिया १९ इधर कंससे नारदमुनिने कहा कि देवकीकेआठवेंगर्भमें धरणीधर भगवान्पैदाहोवेंगे २०

तब कंसने नारद से यह सुनके कुपितहो देवकी और वसुदेवको अपने घरमें रोकरक्खा २१ निदान वसुदेव जी ने उत्पन्न हुये बालकको कंसके अर्प्पण किया २२ हिरण्यकशिपुके विख्यात पुत्र षड्गर्भको विष्णुभगवान् से प्रेरीहुई निद्राने क्रमसे गर्भमें प्रवेशकिया २३ और योगनिद्रा महामाया जो सबको मोहमें प्राप्त करदेतीहै तिससे भगवान् ने कहा २४ कि हे माये मेरी आज्ञासे तू पातालूलोकमें जाके तिन छः गर्भोंको एकएक करके देवकीके उदरमें प्रवेशकर २५ जब वे मारेजावेंगे तब सातवांगर्भ उसके उदरमें मेरा शेषाख्यअंश प्राप्तहोवेगा २६ इसलिये हे देवी गोकुलमें तू वसुदेवकी भार्य्या रोहिणीके गर्भमें प्राप्तहो २७ तो संसारके मनुष्य कहनेलगजावेंगे कि यह देवकीका सातवांगर्भ कंसकेभयसे गिरपड़ा २८ गर्भ के संकर्षण होनेसे उसको लोकमें संकर्षण कहेंगे और वह सफेद पर्व्वतके समान कान्तिवाला संकर्षण इस संज्ञाको प्राप्तहोजावेगा २९ पश्चात् मैं देवकी के गर्भ में उत्पन्न होऊँगा और तुझको यशोदाके गर्भमें प्राप्तहोनाचाहिये इसमें कुछविलंब न करना ३० कालान्तरमें कृष्णपक्षकी अष्टमी को महारात्रीको मैं जन्मलूंगा और नवमीको तू जन्मलेगी ३१ और मेरीशक्तिसे प्रेरित वसुदेव मुझको तो यशोदाके घर पंहुचावेगा और तुझको देवकीके घरमें लेआवेगा ३२ हे देवि फिर कंस तुझको ग्रहणकरके शिलापर पटकेगा और तू आकाशको प्राप्तहोवेगी ३३ फिर मेरे गौरवसे तुझको सहस्र नेत्रोंवाला इन्द्र प्रणाम कर शिर

में क्यों अवतारलिया सोकहो १७ भगवान् कहनेलगे कि पहले तूने पुत्रकी बांछासे मेरी स्तुति कीथी और मैंने वर दिया था सो सफल होगया क्योंकि में तेरे उदरमें उत्पन्नहुआ १८ वेदव्यासजी बोले कि हे मुनि सत्तमो ऐसे कहके भगवान् चुपहोगये और वसुदेव उन्हें लेके वहांसे चले तो १९ योगमाया के प्रभावसे मथुराके द्वारपाल निद्रासे मोहितहोगये और २० मेघ बर्षनेलगे शेषनाग फणोंसे आच्छादन करतेहुये वसुदेवको मिले २१ और सैकड़ों आवर्त्तों से युक्त अति गम्भीर यमुनाजी गोड़ोंमात्र होगईं २२ पार उतरकर वसुदेवजीने देखा कि कंसका वार्षिक करलिये यमुनाके किनारे नन्दादिकगोप प्रस्तुतहैं २३ पर वह उनसे बेमिले गोकुलचलेगये जहां यशोदानेभी योगनिद्रासे मोहित हुई कन्याको जनाथा २४ निदान अतुल कान्तिवाले वसुदेव उस बालकको यशोदाकी शय्यापर सुला और उस कन्याकोले शीघ्रही लौटआये २५ पश्चात् यशोदा जागी तो नीलेकमलकी कांतिकेसमान पुत्र उत्पन्नहुआ देख अतिप्रसन्नहुई २६ और उधर वसुदेवने उसलड़की को अपने भुवनमेंला देवकीकी शय्यापै स्थितकर चुपके होरहे २७ बालकके रोनेका शब्दसुन रक्षाकरनेवालोंने शीघ्रही उठके देवकी के बालक उत्पन्नहोने का हाल कंसको जा सुनाया २८ और कंसने शीघ्रही आके उस कन्याको छीनलिया तबदेवकी उसे कंठसेलगाके वारण किया और छोड़ २ कहा २९ लेकिन कंसने उसे शिला पर पटकदिया और वह कंस के हाथसे छूटके महान्

कान्ति और शस्त्रों आठभुजाओंवाली होके अतिक्रो-धितहो ३० ऊँचेस्वरसे हँसके कंससे बोली कि हे कंस मेरेफेंकनेसे क्याहै तेरेमारनेवालेने तो जन्मलियाहै ३१ जो देवताओंका सर्वस्वरूपहै इसलिये तूअपनीआत्मा काहित जल्दकरले ३२ ऐसे कहके वहदेवी दिव्यमाला और गन्धोंसेभूषितहुई सिद्धोंसेपूजितहो कंसकेदेखते २ आकाशमें चलीगई ३३ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांकृष्णजन्मकथनन्नाम
पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

व्यासजीबोले कि तबतो कंसने उदासीनहो प्रलंब केशीआदि सब दैत्योंको बुलाके कहा कि १ हे प्रलम्ब महाबाहुओंवाले हे केशिन् हे धेनु पूतना और अरिष्ट आदिक अन्यसब दैत्योंको मेरेवचन सुनाओ २ मुझ-को हतकरनेमें कौनधैर्य नहीं करता मैं अपनी बाहुओं के बलसे संसारकी पालना करताहूं ३ और देवताओं में भी जो मेरीआज्ञा नहींमानता उसको मैं हननकरता हूँ ४ परन्तु तोभी उनदुष्ट देवताओं की अधिकताका मुझे नाशकरना चाहिये ५ देवकीके गर्भसे उत्पन्नहुई कन्याने कहाहै कि जिससे मेरीमृत्यु होनाहै वह उत्पन्न हुआहै ६ इसवास्ते पृथ्वीपर उत्पन्न सब बालकों का ऐसा यत्न करनाचाहिये कि जहां कोई बालक जन्मा हो वहीं मारदियाजाय ७ दैत्योंको ऐसी आज्ञादे कर कंस अपने घरको चलागया और वसुदेव तथा देवकी को कैदसे छोड़ ८ कहनेलगा कि मैंने जो तुम्हारे बालक

वृथा मारेहैं यह मैंने बड़ा अन्याय कियाहै ९ पर खेद करनेसे क्याहै अवश्य यहीभावीथी तुम्हारे बालक मैंने मारदिये १० ऐसे कंस तिनको समझाके और कैदसे छोड़के अपने महलोंमें चलागया ११ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसम्बादेबालचरित्रं नामषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि फिर वसुदेव वहांसे छूटके जहां नन्दगोपका डेराथा गये और वहांजा अपने भ्राता नंद को १ आदरसे मिलके बोले कि हे नन्द वृद्धअवस्थामें जो आपके यह पुत्रहुआहै सो बड़ा मंगलहुआ २ और आप सबोंने राजाका वार्षिककर देदिया है अब बहुत देर न ठहरनाचाहिये ३ निदान वे महाबलवाले गोप उस कार्यको करके अपने गाड़ों में बरतनोंको लादकर वहांसे चले ४ उधर कंसकी आज्ञापाकर बालघातिनी पूतना गोकुलमें पहुंच सोते बालकोंको रात्रीमें दूध पिलानेलगी ५ और जिस२को दूध पिलाया उसके प्राण क्षणमें नाशहोगये ६ इसीतरह वह श्रीकृष्णकोभी पिलानेगई और उन्होंने उसकी चूंचियोंको हाथोंसे पकड़ क्रोधयुक्तहो प्राणोंसहित पीलिया ७ तब वह पृथ्वीपर गिरपड़ी और महान्शब्द करती हुई प्राणों को त्याग दिया ८ तब उस कानोंको त्रास पहुंचानेवाले नादको सुन गोप जागे तो उन्होंने पूतनाको श्रीकृष्णको गोद में लिये पड़ीहुई देखा ९ हे द्विजो संत्रस्तहुई यशोदाने तब कृष्णको उठाकर उसपर गौ की पूंछ घुमाई १० और

नन्दगोपने गोबरको उसके मस्तकपर लगाके रक्षाकरते हुये यह उच्चारणकिया कि ११ महान्ईशों और भूतों में जो श्रेष्ठहै और जिसकी नाभीसे उत्पन्नहुये कमलसे जगत् पैदा हुआहै वह तेरी रक्षाकरें १२ और जिसने वराहरूप धारणकर अपने दंष्ट्राके अग्रभाग से पृथ्वी का उद्धार करदिया वह केशव तेरी रक्षाकरें १३ जिस भगवान्ने नृसिंहरूप धारणकर अपने नखोंसे हिरण्यकशिपुकी छातीको छेदन कियाथा वह सर्वात्मा केशव भगवान् तेरी रक्षाकरें १४ और जो एक क्षणमें त्रिविक्रमरूप और त्रिलोकीमें दीप्तशस्त्रोंवाले होगये वे वामनजी तेरी रक्षाकरें १५ तेरे शिरकी रक्षा गोविन्दकरें और कण्ठकी केशव गुदा तथा उदरकी विष्णु पैरोंकी जनार्दन १६ मुख बाहु और सब इन्द्रिय तथा ऐश्वर्यों की रक्षा नारायणकरें १७ दिशाओंमें वैकुंठभगवान् तेरी रक्षाकरें और विदिशाओंमें मधुसूदन भगवान् रक्षाकरें १८ हृषीकेश अम्बरमें और महीधर पृथ्वीमें तेरी रक्षा करें १९ ऐसे उसबालकको नन्दगोपने स्वस्त्ययनकरके शकट अर्थात् गाड़े के नीचे पलंग पर सुलादिया २० और सबगोप मरीहुई पूतनाके शरीरको देखके संत्रस्त हो अति आश्चर्यितहुये २१ व्यासजीने कहा कि एक समय शकटके नीचे सोतेहुये मधुसूदन भगवान् दूध के लिये रोते २ पैरोंको ऊपरको फेकनेलगे २२ जिनके प्रहारसे वह गाड़ा औंधा गिरपड़ा और उसमें धरे हुये सब भांडे बिखरगये २३ गिरनेका शब्दसुन सब गोप गोपीजन हाहाकार करतेहुये आये और बालकको सोता

देखके २४ कहनेलगे कि यह गाड़ा किसने गिरादिया तब अन्यबालक कहनेलगे कि इसीने रोवते २ अपने पैरमारकर मौंधा पटकदियाहै और अन्यका कियाहुआ यह कृत्यनहीं है २५।२६ फिर नन्द आदि गोपोंने अति विस्मितहो उस बालकको उठालिया २७ और यशोदा ने उस गाड़ेमें सब बरतनोंको रखके दही पुष्पआदिसे उसका पूजनकिया २८ निदान वसुदेवके प्रेरेहुये गर्ग- मुनिने गोकुलमें आ अन्य गोपों से गुप्तही उन दोनों बालकोंका संस्कारकराया २९ और बड़का नाम राम और छोटेका कृष्ण रक्खा ३० निदान थोड़ेही काल में वे महा नियमवाले दोनों बालक खेलते और हाथों पैरों से घिसलते हुये बड़े हुये ३१ और राख आदिकों से लिप्तअंगों जहां तहां भ्रमनेलगे और यशोदा और रो- हिणी रोकनेमें असमर्थ होगई ३२ वे गौओंके मध्यमें क्रीड़ा करते और बच्छोंमें डोलतेहुये गौओंकी पूंछें खीं- चते ३३ और अतिचंचलतासे खेलतेथे ३४ एकसमय यशोदाने श्रीकृष्णको ऊखलसे बांधकर कहा ३५ कि यदि तू चंचलहै और समर्थ है तो अबचल ऐसे कहके वह कुटुम्बिनी तो घरके काममें लगगई ३६ और कृष्ण ने ऊखलको खींचके ऊंची शाखोंवाले यमलार्जुन वृक्षों को उखाड़डाला ३७ तब वे कातर ब्रजके गोप कटकटा शब्द सुनके वहांआये ३८ और स्कन्द तथा शाखाभग्न हुये और पृथ्वीमें गिरेहुये उन वृक्षों और उनके मध्य में कुछ हँसतेहुये ३९ रस्सीमें बँधे उस बालकको देख उसका नाम दामोदर रक्खा ४० नन्द आदि सब वृद्ध

गोप उन महान् उत्पातोंसे अति डरगये और उद्विग्न
हो सलाह करनेलगे कि ४१ इसस्थानमें अब हम बास
न करेंगे क्योंकि यहां नाशके हेतु बहुतसे उत्पात दीखते
हैं ४२ पूतनाका निवास गाड़ेका विपरीत गिरना और
वायु आदिकके बिना वृक्षोंका पड़ना ४३ ये बड़े भयंकर
उत्पातहुये हैं इसवास्ते जबतक यह महान् उत्पात शान्त
न होवें तबतक हम सब वृन्दाबनमें जाके बासकरेंगे ४४
ऐसे वे सब ब्रजबासी सलाह करके क्षणमात्रमें वहांसे
चले ४५ और ब्रजवासियों का स्थान कागोंके मण्डल
से युक्तहोगया वे गोपअपने कुलके लोगोंसे कहनेलगे
कि जल्दगमनकरो ४६ और गाड़े और गोधनसे युक्त
हो अपने बच्छोंको गिनतेहुये वहां से चले ४७ और
अक्लिष्टकर्म करने और गौओंमें शुभबुद्धि रखनेवाले श्री
कृष्णसे बृन्दाबन शोभित होगया ४८ निदान वहांवास
करते जबग्रीष्मऋतु व्यतीत होगई तब वर्षाऋतु आई
और वे सब ब्रजबासी वृन्दाबनमें ४९ अपने गाड़ोंको
अर्द्धचन्द्राकार स्थितकरके बासकरनेलगे और बलदेव
तथा दामोदर बच्छोंकेपालकबनकर ५० गौओंकेस्थान
में अपनी बाललीलाकरने लगे ५१ मयूरके चन्दोंका
मुकुट और सुन्दर पुष्पोंके गहने पहिने और गोपवेष
धारण किये ५२ काकपक्ष समान शिरके बालों और
अग्निके समान कांतिवाले वे दोनों कुमार उसमहान्
बनमें क्रीड़ाकरते ५३ कहीं आपसमें हँसते और कहीं
गोपोंके लड़कोंके संग बच्छोंको निवारण करतेहुये वि-
चरते थे ५४ इसीप्रकार काल व्यतीत होनेसे वे सात

वर्षके हुये ५५ निदान अति प्रावृट्काल आया और मेघोंके समूहों से अम्बर क्षुभित होके ऐसा जल वर्षा मानों सब दिशा एक होगई ५६ नवीन शाखाओं से युक्त वृक्षों और तीजसंज्ञक वर्षाके जीवोंसे पृथ्वी ऐसी शोभित होगई मानों पद्मरागसे विभूषित मरकतमणि हो ५७ और झीलोंमें जल भरनेसे पृथ्वी ऐसी होगई मानों भयंकर मनुष्योंको नवीन लक्ष्मी प्राप्तहुईहो ५८ और महाबलवाले श्रीकृष्ण और बलदेव गोपों के सङ्ग ऐसे रमण करतेथे जैसे देवताओं के संग इन्द्र ५९ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसम्वादेबाल क्रीड़ाचरितंनामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

व्यासजीने कहा कि एक समय श्रीकृष्णचन्द्र अकेले वृन्दावनमें गये और वनकेपुष्पोंसे उज्ज्वलहुये गोपोंके सङ्ग विचरते २ लोकोंके पाप हरनेवाली यमुनाजी पर पहुँचे तो वहां १।२महाभयंकर विष और अग्निरूपबाण छोड़ताहुआ कालियनाग को देखा ३ विषरूप अग्नि से तीरके महान्वृक्षोंको दग्ध करताहुआ और वायुसे उड़ते जलके स्पर्श से पक्षियों का नाशकरताहुआ ४ अतिभयंकर और दूसरा मृत्युरूप उस कालियनागको मधुसूदन भगवान् देखके चिन्तवन करनेलगे ५ कि विषरूप शस्त्रोंवाला यही दुष्ट कालियहै जिसेमैंने पहले जीतके पयोनिधि समुद्रसे निकासा था ६ इसने यह यमुना दूषित करदी और तृषासे पीड़ित गौभी इस विषको पीजातीहैं ७ इसवास्ते इससर्पका मुझको दमन

करना चाहिये जिससे सब ब्रजबासीजन सुखसे विचरें
८ मैंने इसीवास्ते मनुष्यलोकमें अवतार लियाहै कि
ऐसे दुष्टात्माओंको दण्डदूं ९ बस मैं इसऊँचे शाखाओं
वाले कदम्बपर चढ़के इस ह्रदमें कूदूँगा १०ऐसे चिन्त-
वनकर और कड़ा कड़गताबांध श्रीकृष्ण उस महाह्रदमें
कूदे तो११सर्पराज और श्रीकृष्णके वेगसे चलायमान
हुआ जलकिनारे के वृक्षोंमें लगा १२ और उस दुष्ट
विषरूप अग्निसेतप्तहुये जलकेलगनेसे वे वृक्ष तत्काल
जलनेलगे और सब दिशाओंमें अग्नि व्याप्तहोगया
१३ फिर श्रीकृष्ण उस नागकेह्रदमें अपनी भुजाओंको
बजानेलगे तब शब्दकोसुनके वह सर्पभी सन्मुखआया
१४ और क्रोधसे लालनेत्रकिये विषाग्निसे युक्त चिन-
गारियों से आवृत और अग्निके समूहरूप महावृष
और अश्वोंसे युक्त सैकड़ों नागपत्नियोंसे शोभित और
हलतेहुये कुण्डलों की कान्ति से सुन्दर शरीरवाला
वह सर्प अन्य सर्पोंके सहित प्रसन्नहो अपने शरीरको
फैलानेलगा और वे अन्यसर्प विषरूप अग्निके मुखों
से श्रीकृष्णको देखने लगे १५।१७ श्रीकृष्णको उस
नागके शरीरपर पड़ाहुआ देखके गोपब्रजमें आके शोक
पूर्वक पुकारनेलगे १८ कि कृष्ण मोहको प्राप्तहो का-
लियह्रदमें डूबगया और सर्पराज उसको भक्षण करता
है सो आप सबआके देखो १९ बज्रपातके समान इस
वचनको सुन सब गोप और यशोदाआदि सबगोपियां
शीघ्रही उस ह्रदपर गये २० हाहाकार करतीहुई गोपी
विकलहोगईं और यशोदाको मूर्च्छा आगई २१ नन्द

आदि गोप अद्भुतपराक्रमवाला बलदेव सहित कृष्ण के दर्शनकी लालसासे शीघ्रही यमुना के किनारे पर एकत्रथे २२ सर्पराजके वशमें निष्प्रयत्न और सर्प्पसे लिपटाहुआ श्रीकृष्णकोदेख २३ नन्दगोप और यशोदा चेष्टासे रहितहोगये २४ और अन्यगोपियां शोक से कातरहो रोतीहुई श्रीकृष्णको देखनेलगीं और भय से गद्गदवाणी सहित श्रीकृष्णजीसे कहनेलगीं २५ कि हे कृष्ण यशोदा आदि हम सब इसहृदमें प्रवेशकरके तेरे संग इससर्प से लिपटेंगी २६ क्योंकि जैसे सूर्य्य बिना दिन चन्द्रमा बिना रात्री और वृष बिना गौ हों ऐसेही श्रीकृष्ण बिना ब्रज है २७ इसलिये कृष्ण के बिना हम गोकुल में न जावेंगी महाबलवाले बलदेव जी गोपियोंके वचन सुन २८ और नेत्रोंमें जलभरे गोपोंको अतिदीन और पुत्रमें अतिदृष्टिलगाये नन्द और मूर्च्छासे आकुल यशोदाको देख और श्रीकृष्णके माहात्म्य को जान २९ बोला कि हे देव देवेश तूने यह क्या भार कररक्खाहै क्या तू अपनी आत्मा और अन्यजनोंका बोध नहींकरता ३० आपही जगत्के रक्षक हो आपही कर्त्ताहो आपही त्रिलोकीके अपहर्त्ताहो ३१ हे कृष्ण यहां अवतार लेनेसे गोपही आपके बांधव हैं आप अपने बंधु गोपोंके खेदको क्यों नहीं देखते ३२ आपने मनुष्यभाव दिखालिया और बालकपनकी चपलताभी दिखादी ३३ अब हे कृष्ण इस दुरात्मासर्प को दमन करनाचाहिये ३४ व्यासजी बोले कि यह सुनके किंचित् हँसते हुये लाल ऐसे होठोंवाले श्रीकृष्ण

ने ३५ फुरना करके अपनी देह को सर्पके शरीरसे छु-
टाया और अपनी भुजाओंसे उसको नीचे दबाय ३६
और उसके शिरपर चढ़ नृत्यकरनेलगे श्रीकृष्णके च-
रणोंकी धमकसे उसके शिरमें ब्रण होगये ३७ और
उसके ऊंचे शिरको जब श्रीकृष्णने दमनकिया तब वह
नाग मूर्च्छित होगया ३८ श्रीकृष्णके पैरों और हाथों
के दंड लगनेसे बहुतसा रुधिर बहा ३९ और उसकी
यह दशा देखके नाग की पत्नी मधुसूदन भगवान्की
शरण होगई ४० नागपत्नी कहनेलगी कि हे देवदेवेश
हे सर्वेश आप सबसे उत्तम और परम अचिंत्यज्योति
परमेश्वरके अंशहो ४१ आपकी स्तुति करने में देवते
भी समर्थ नहीं हैं तो आपके रूपका वर्णन हम स्त्री कैसे
करेंगी ४२ सम्पूर्ण पृथ्वी आकाश वायु अग्नि और
ब्रह्मांडकल्प ये सब जिसके अंशहैं तिसकी स्तुति हम
कैसे करसकें ४३ हे जगत्स्वामी आप प्रसन्नहों और
यह नाग प्राणों को त्यागता है सो आप यह भर्त्तारूप
भिक्षा हमकोदो ४४ व्यासजी बोले कि जब ऐसे उन्हों
ने कहा तब दुःखित देहवाला नाग भी हौले २ बोला
कि हेदेव आप प्रसन्नहों ४५ हेनाथ आपके स्वाभाविक
आठ प्रकारका ऐश्वर्य रहता है आपकी स्तुति मैं क्या
करूं ४६ आप परहो और परकेभी आद्यहो परत्व और
परात्मकहो और परसेभी परमहो आपकी मैं क्या स्तुति
करूं ४७ जैसे आपने इस जातीको रचाहै तैसेही अपने
स्वभावसे यह मेरा सब चेष्टितहै ४८ हे देव जो मैं अन्य
तरह वर्त्तताहूं तो मैं दंड देने लायकहूं ४९ परन्तु तो

भी मेरे जो आप जगत्स्वामी ने दण्डपात किया सो यह आपका प्रसादहै और आपका दण्डदेना ठीक है ५० मैं अब वीर्य और बलसे हतहोगयाहूं और आपने दम दियाहै तो जीवनभी दो और यह आज्ञादो कि मैं क्या करूं ५१ भगवान् बोले हे सर्प तुझको इस यमुनामें न रहना चाहिये तू अपने भृत्यों और कुटुम्बसमेत समुद्र में चलाजा ५२ हे सर्प तेरे मस्तकपर मेरे पैरोंके चिह्न देख पन्नगारि गरुड़ तुझको न मारेगा ५३ व्यासजीने कहा कि भगवान्‌हरिने ऐसे कहके सर्पराजको छोड़दिया और वह सर्प कृष्णके प्रणाम करके ५४ सबके देखते हुये अपनेभृत्यों बांधवों और स्त्रियोंसहित अपने ह्रदको त्याग समुद्रको चलागया ५५ जब वह सर्प चलागया तब गोपों ने श्रीकृष्णको मानों मरके फिर पाया हो तैसे नेत्रोंके जलसेसींचा ५६ और अक्लिष्टकर्मवाले श्रीकृष्ण को देख विस्मित चित्तवाले अन्यगोप अति प्रसन्न हो स्तुति करनेलगे ५७ फिर गोपीजनों से गीयमान हुये और गोपालोंसे स्तुतहुये श्रीकृष्ण ब्रजको आये ५८॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेबालचरित कालियदमनन्नामअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

उन्नासीवां अध्याय॥

व्यासजी बोले कि एकदिन बलदेव और श्रीकृष्ण गौचरातेहुये रम्य ताड़वनको गये १ जहां धेनुकनाम गदा की आकृतीवाला और नर मनुष्य और गौ के मांसका आहार करनेवाला राक्षस रहाकरताथा २ पके हुये फलोंसे युक्त उस ताड़वनको गोपों ने देखके कहा

कि३ हे राम हे केशव यहवन सदा धेनुकदैत्यसे रक्षित कियाजाता है इसलिये यहां के श्रेष्ठफल अवश्य लेने चाहिये ४ फिर उन ताड़फलों को देखके प्रसन्न हो वे कहनेलगे कि हम पड़ेहुये इनफलों के लेने की इच्छा करतेहैं जो आप कहो तो लेलें ५ गोपोंके कुमारों के यहवचन सुन बलदेव और श्रीकृष्ण उनफलोंको पृथ्वीपर गिरानेलगे ६ निदान गिरतेहुये फलोंके शब्द को सुन उसदैत्यने क्रोधकरके वहांआ ७ पिछलेपैरोंसे बलदेवकी छातीमें दुलत्ती मारी ८ पर बलदेवने उस के दोनों पैरोंको पकड़कर घुमाया तब वह प्राणोंसे रहितहोके उसीजगह वेगसे गिरपड़ा९गिरतेसमय उस दैत्यने ताड़के अग्रभागके अनेकफलोंको गिराया १० और उसकी जातीके जो अन्य गर्दभथे तिनकोभी बलदेव और श्रीकृष्णने अपनी लीलासे ताड़पर पटक के मारा ११ निदान क्षणभरमें ताड़के पकेहुये फलोंसे पृथ्वी पूरितहोगई और पड़ेहुये उस दैत्यरूप गर्दभकी देह शोभित हुई १२ उसदैत्यके नाशहोनेसे उसताल वनमें बाधासे रहितहो गौवें विचरने और सुखसे नवीनतृण और पत्रआदिकों को चरनेलगीं १३ व्यास जीबोले कि जब वहदैत्य अनुचरोंसहित मरगया तब गोपकुमारोंसे सेवित वहवन रमणीक होगया १४ और वे दोनों वसुदेवके पुत्र धेनुकदैत्यकोमार प्रसन्नहो भांडीरवनको गये १५ गाते बजाते वृक्षोंको ढूँढ़ते गौवों को चराते और नामलेकर बुलातेहुये १६ आपस में कंधेपर हाथरक्खे वनमालासेविभूषित वे दोनोंमहात्मा

ऐसे शोभितहुये मानों छोटे २ शृंगवाले बच्छे हों १७
सुवर्ण तथा अंजन के चूर्ण के समान कांतिवाले और
इन्द्रके धनुषकी कांतिसे जैसे सफेद और कालेबादल
हों तैसे वे दोनों प्रकाशमान हुये १८ लोक में प्रसिद्ध
क्रीड़ाकरते और आपसमें खेलतेहुये सम्पूर्ण लोकनाथों
के नाथ पृथ्वीमें प्राप्त हुये १९ वे कभी मनुष्यधर्म को
प्राप्तहो सब मनुष्योंको मनुष्यभाव दिखाते २० और
कभी गोपजातिके गुणोंसे युक्तहो क्रीड़ाकरते बनमें वि-
चरते थे कभी आपसमें डोली आदिकी तरह लेलेके
चलते २१ कभी कसरत करते और कभी आपसमें प-
त्थर आदि फेंकते थे २२ निदान उन दोनोंके खेल में
प्रलम्ब नामकदैत्य चुपकेसे गोपवेष धारणकरके आया
२३।२४ और उनके छिद्र देखनेकी इच्छासे उसने श्री
कृष्णसे पहले बलदेवकेमारनेका मनोरथकिया २५ जब
श्रीकृष्णने क्रीड़न नामसे सब बालकोंको क्रीड़ा करने
को कहा तब सब बालक दो दो इकट्ठे होके दौड़नेलगे
२६ श्रीदामा गोपके संग श्रीकृष्ण प्रलम्बके संग ब-
लदेव २७ और अन्य गोपोंके संग अन्य गोपालदौड़े
श्रीदामाको श्रीकृष्ण और प्रलम्बकोबलदेवनेजीता २८
और कृष्णके पक्षवाले गोपोंने अन्यगोपोंको जीतलिया
ऐसे आपसमें दौड़ते और भांडीरवृक्षके डालोंको छूते
हुये २९ जबवे लौटे तब प्रलम्बदानव बलदेवको कांधे
पर बैठाके दौड़ा ३० पर जब वह बलदेव के हरने की
इच्छाकरके चला और उनकेबोझको वह न सहसका ३१
तब उसने वर्षाकालके बादलके समान अपनी कायाको

बढ़ाया और बलदेवने काले पर्वतके समान आकृति वाला ३२ लंबी माला पहिने और मुकुटको मस्तकपर धारणकिये भयंकर और चक्रके समान और पैरों को फैलाता हुआ देख ३३ कहा कि हे कृष्ण इस पर्वत के समान उग्रमूर्त्तिवालेने ३४ गोपाल वेषका छल करके मुझे हरलिया अब हेमधुसूदन मुझको क्या करना चाहिये ३५ यह दुष्टात्मा वेगसे चलाजाताहै ३६ व्यास जी कहनेलगे कि तब हँसते और होठोंको जुदे२ फरकातेहुये ३७ महात्मा बलदेवके बलवीर्यको जाननेवाले श्रीकृष्णने कहा कि यह मनुष्यभाव तुमने क्यों प्रकट कररक्खाहै ३८ हे सर्वात्मन् सब गुह्योंके गुह्यात्मारूप से आप स्मरण करें कि आप सब जगत् के कारण हैं ३९जब एकार्णव जगत् होजाता है तब हे विश्वात्मन् आप और मैं तत्त्वरूप एकही कारण हैं ४० इस पृथ्वी में जगत्के भेदके वास्ते हम दोनों व्यवस्थित हैं हे अप्रमेयात्मन् तुमको यह स्मरण करना चाहिये ४१ इसदानवकोमारो क्योंकि मनुष्यभावको प्राप्तहोके बंधुओंकाहित करनाचाहिये ४२ व्यासजीबोले कि जब महात्मा श्रीकृष्णने इसप्रकारस्मरण कराया तब बलदेव ने प्रलम्बको पीड़ादे क्रोधसे लालनेत्र करके मस्तकमें मारा जिस प्रहारसे उसकेनेत्र बाहिरको निकलपड़े४३। ४४ और मुख से रुधिर फेंकनेलगा महापराक्रमवाले बलदेव से निहतहुआ प्रलम्बको देख सबगोप प्रसन्न हो स्तुति करने और साधुसाधु कहनेलगे ४५।४६ फिर गोपों से संस्तूयमानहुये बलदेवजी श्रीकृष्ण स-

हित गोकुलको लौटआये ४७ व्यासजी बोले कि इस प्रकार बलदेव और श्रीकृष्ण ब्रजमें खेलते रहे जब बर्षासमयसे निवर्त्तहुई स्थली कमलनीकी तरह होगई ४८ और आकाश निर्मल नक्षत्रोंसे युक्त होगया तब श्रीकृष्णनेदेखा कि इन्द्रके यज्ञके आरम्भमें सब ब्रज-वासीलगेहैं ४९ उन उत्साहवाले गोपोंकोदेख महामति श्रीकृष्णने आश्चर्य्य से उन वृद्धोंसे पूंछा कि जिससे आप सबको हर्ष होरहाहै वह इन्द्रका उत्सव क्या है कृष्णको पूंछतेदेख नन्दगोपनेकहा कि ५०।५१ मेघोंका ईश शतक्रतु इन्द्रहै तिसके प्रेरेहुये मेघ जलमय रस को वर्षातेहैं ५२ और वृष्टिसे खेतीउत्पन्नहोतीहै जिस-को भोगते हुये हम देवता आदिकों का तप आचरण करतेहैं ५३ और दूध तथा बच्छोंवालीगौवें तुष्ट और पुष्ट रहतीहैं ५४ जहां बर्षावाले बादल दीखतेहैं वहां अन्न और तृणसे रहित भूमि और क्षुधासे पीड़ित मनुष्य नहींहोते ५५ सूर्य्यकी कांतिसे मेघ सब लोकोंके सुख और गौओंके दूध बढ़ानेकेवास्ते बर्षतेहैं ५६ इसलिये बर्षाकालके पीछे प्रसन्नहुये सब राजा और हमभी सु-रेश इन्द्रका पूजनकरतेहैं ५७ व्यासजी बोले कि इंद्र के पूजनके विषय नन्दगोपका यह वचन सुन इन्द्रपर क्रोधकरके श्रीकृष्ण कहनेलगे ५८ कि हम कृषिकर्म करनेवाले नहींहैं वल्कि वाणिज्य जीविकावालेहैं इस-लिये हे तात गौही हमारीपरमदैवतहैं क्योंकि हम वन-चरहैं ५९ जैसे आन्वीक्षिकी त्रयीवार्त्ता दण्डनीतिआदि विद्याचारहैं ६० तैसेही खेतीव्यवहार पशुपालनआदि

कर्मभी हैं इसलिये हे महाभाग ये वार्त्ता भी वृत्तिके आश्रयहैं ६१ जैसे खेतीकरनेवालोंकी कृषिवृत्तिहै और बाणिज्यआदि करनेवालोंकी पण्यवृत्तिहै वैसेही वार्त्ता के भेदसे हमारी अन्यहीवृत्तिहै ६२ इसलिये जो जिस वृत्तिको करताहै उसका वही परमदैवतहै वही पूज्यहै और वही जीविका है ६३ और जो अन्य के फलको ग्रहण करताहै और अन्यका पूजनकरताहै वह यहां और अन्यलोकमें भी शोभा को नहीं प्राप्तहोता ६४ खेतीसे सीम विख्यातहै सीमकाअन्त वन कहाहै और वनका अन्त पर्वतहैं और वेही सब हमारी परमगति हैं ६५ इसलिये गिरियज्ञ गोयज्ञ प्रवर्त्त करनाचाहिये हमको इन्द्रसे क्याहै हमारे देवते गौ और पर्वतहैं६६ विप्रमन्त्र यज्ञमें तत्परहैं सीमयज्ञवाले कृषिक अर्थात् खेतीकरनेवालेहैं और गिरिगोयज्ञमें तत्पर हमहैं क्यों-कि हम पर्वत और वनके आश्रयहैं ६७ इसवास्ते आप को अनेकप्रकारके पूजनोंसे पर्वतकापूजन करना चा-हिये इस विधानसे पशु हननकरके अर्चन और युक्त करनाचाहिये ६८ और सब ब्रजका दूध एकत्र करके ब्राह्मणों और अन्य भूखोंको जिमाओ ६९ यहपूजन करके जब सब द्विजाती भोजनकरचुकें तब ७० शरद् ऋतुके पुष्पों के मुकुटों से शोभितकर सब गौओं के समूह को इकट्ठेकरके उनका पूजनकरो ७१ मेरा तो यहीमतहै यदि इसे प्रीतिसहित करोगे तो गौओंका कल्याणहोगा ७२ कृष्णचन्द्रके यह वचनसुन प्रीतिसे उत्फुल्लमुखवाले नन्दआदिक सबगोप साधु२ अर्थात्

बहुतअच्छाहै २ कहनेलगे और बोले ७३ कि हे वत्स जो तेरामत श्रेष्ठहै तो गिरियज्ञही हम प्रवृत्तकरेंगे ७४ निदान उन ब्रजवासियों ने वैसेही गिरियज्ञ अर्थात् गोबर्द्धन का पूजनकिया और पर्वतको दही दूध मांस आदिकी भेटदे ७५ हजारों ब्राह्मणोंको भोजनकराया और गौ तथा पर्वतका पूजनकरके प्रदक्षिणाकी ७६ हे द्विजो तब श्रीकृष्णने उसीरूपसे गोपोंके संग पर्वतके शिखरपर स्थितहोके गोपोंका दियाहुआ बहुतप्रकार का भोजनकिया ७७ और दूसराशरीर धारणकरके उसे सबके संग आपभी पूजा ७८ निदान वे गोपवरों को प्राप्तहोके जब श्रीकृष्ण अन्तर्द्धान होगये तब अपने घरोंको आये ७९ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसम्बादेबालचरिते गिरिमाहात्म्यन्नामनवसप्ततितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

वेदव्यासजी बोले कि जब इन्द्रका यज्ञ प्रतिहत होगया तब वह कोपित हो सम्बर्त्तक नामवाले मेघों से बोला १ कि हे मेघो मेरे वचनको सुनके और निस्सं-देहहोके मेरी आज्ञाको शीघ्रकरो २ खोटीबुद्धिवाला नंद गोपने अन्य गोपों सहित कृष्णके आश्रयहो मेरे यज्ञ को नष्टकियाहै ३ इसलिये उन गोपोंका परमआजीवन जो गौ हैं तिनको हमारे कहनेसे वर्षाकरके नष्टकरदो ४ मैंभी पर्वतके शिखरके समान हस्ती पर चढ़कर और वायुको वेगसे चलाके तुम्हारी सहाय करूंगा ५ व्यास जी बोले कि हे ब्राह्मणो इन्द्रकी यह आज्ञा पाके मेघ

गौओंके नाशके लिये महाभयानक बातयुक्तवर्षा करने
लगे ६ और उस बातवर्षासे दुःखितहो गायें जहां तहां
शिरको हिलाहिलाके प्राणोंको त्यागनेलगीं ७ हे ब्रा-
ह्मणो कितनी गायें छातीके नीचे अपने बछड़ोंको दबा
के खड़ीहोरहीं और कितनी जलकी पूर्णता होनेसे ब-
छड़ोंसे रहित होगईं ८ वायुसे कम्पायमान ग्रीवा और
दीनमुखवाले दुःखित बछड़े ऐसेखड़ेथे मानों यहकहते
हैं कि हे कृष्ण हमारी रक्षाकरो ९ निदान गोपी गोपोंस-
हित सम्पूर्ण गोकुलको दुःखितदेख श्रीकृष्णचन्द्र रक्षा
करनेका चिन्तवन करनेलगे १० कि यह सम्पूर्ण कर्म
यज्ञके नष्टहोनेमें विरोध करनेवाले इन्द्रने करा है इस
लिये मुझे अब इस सम्पूर्ण गोकुलकीरक्षाकरनी योग्य
है ११ और मैं इस पर्वतको अपने बलसे उखाड़के स-
म्पूर्ण गोब्रजकी रक्षाके वास्ते छत्रकीतरह धारणकरूंगा
१२ ऐसा निश्चयकरके श्रीकृष्णने गोवर्द्धन पर्वत को
उखाड़कर एक हाथपर धारणकरलिया १३ और गोपों
से बोले कि मैंने वर्षाका निवारण करदिया इसमें आप
सब प्रवेश करो १४ क्योंकि न तो यहां वायु का वेगहै
और न पर्वतके गिरने का भयहै बर्षासे पीड़ित गोप
और गोपियोंने कृष्णके यह वचनसुन गाड़ोंमें
कोधर गायों सहित गुफामें प्रवेशकिया १५।
आश्चर्य्ययुक्त नेत्रोंवाले ब्रजवासियोंको आ
दीखनेवाले कृष्णजी उस अचलपर्वतको
रण कियेरहे १७।१८ इन्द्रके प्रेरेहुये मेघों
तक गोपोंके नाशकरनेवाली बर्षाकी १९

धारणकरके श्रीकृष्णने सम्पूर्ण गोकुलकी रक्षाकी तब
झूठीप्रतिज्ञावाले इन्द्र ने बलसेनष्टहो मेघोंकोनिवारण
किया २० जब इन्द्रकी प्रतिज्ञा झूठीहोगई और आ-
काशस्वच्छहोगया तब कृष्णने सम्पूर्णगोकुलको अपने
अपने स्थानों में भेजा २१ और सबको निज स्थानों
में देख श्रीकृष्णजीनेभी उस अचल पर्वत को उतारा
२२ वेदव्यासजी बोले कि जब श्रीकृष्ण ने गोबर्द्धन
पर्वत धारणकरके सम्पूर्ण गोकुलकी रक्षाकी तब इन्द्र
ने श्रीकृष्णके दर्शन करनेकी इच्छाकी २३ और ऐरा-
वतहस्तीपरचढ़ वहांआके सम्पूर्णअमृतके अधिष्ठाता
श्रीकृष्णको गोबर्द्धनपर्वत पर २४ गोपोंके बालकों स-
हित सम्पूर्ण जगत् के दुःखोंको निवारण करते और
गौओंको हटाते गोपकेशरीरको धारणकरेहुये श्रीकृष्ण
को देखा २५ और दोनोंपंखोंसे हरिके मस्तकपर छाया
किये पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड़जी को भी देखा २६ तब
ऐरावतहस्तीसे उतरके एकान्तमें अति विस्तार युक्त
नेत्रोंवाले मधुसूदन भगवान् से बोला कि हे कृष्ण हे
कृष्ण हे महाबाहो आपके समीप जिस कार्य्यके लिये
में आयाहूँ सोसुनो२७।२८और सुनके अन्यथा चिन्त-
- करना हे परमेश्वर इस पृथिवीके भारउतारनेके
म्पूर्ण जगत्काआधार आपकाअवतारहै २९
ोनेसे मैंने गोकुलकेनाशकरनेवास्ते मेघोंको
' तब उन्होंने यह कर्मकिया३०पर जब आप
(यके गायोंकी रक्षाकी तबमैं आपकेसुन्दर
कर्मसे प्रसन्नहुआ ३१ हे कृष्ण आपने

देवतोंका मनोरथ सिद्ध किया है इसको मैं मानता हूं क्योंकि यह पर्वत आपने एक हाथपर धारणकिया ३२ हे कृष्ण आपने अच्छे विधानसे गोव्रजकी रक्षाकी इससे गायोंका प्रेराहुआ मैं यहां आयाहूं ३३ हे कृष्ण गायोंके वचनसे प्रेराहुआ मैं आपका अभिषेक करूंगा और आप उपेन्द्र और गोविन्द संज्ञावाले नामों को प्राप्त होंगे ३४ निदान इन्द्रने सुन्दर जल और ऐरावत हस्तीकी घंटालेके पूर्ण जलकी धारा से विष्णुका अभिषेककिया ३५ जब इन्द्रने विष्णुका अभिषेक कर लिया तब ऊपरने मुखवाली गायोंने झिरतेहुये दूधसे पृथ्वीको गीली करदिया ३६ और इन्द्र गायोंके वचन से प्रसन्नहो मधुसूदन भगवान्का अभिषेककरके बोला ३७ हे महाभाग मेरे वचनको सुनो गायों के वचन से भार उतारनेके वास्ते यह कर्म आपने कियाहै ३८ पृथिवीपर मेरा अंश पुरुषोंमें सिंहरूप अर्जुननामसे विख्यात आपसे रक्षितहुआ भारके उतारने में आपकी सहाय करेगा ३९ इसलिये हे मधुसूदन अपने आत्मा की तरह आपको अर्जुनकी रक्षा करनीचाहिये ४० भगवान् बोले कि भारतखण्ड में जो तेरे अंशसे उत्पन्न और अर्जुन नामसे विख्यातहै उसे मैं जानताहूं और जबतक पृथ्वीपर रहूंगा उसअर्जुनकी सहायता करूंगा ४१ हेशत्रुओंके दमनकरनेवाले इन्द्र जबतक मैं पृथ्वी पर स्थित रहूंगा तबतक मेरी तरह युद्धमें अर्जुन जीतेगा ४२ हे देवेन्द्र कंस नामवाला महादैत्य अरिष्टदैत्य केशी कुबलयापीड़ हस्ती तथा नरकासुर और अन्य

दैत्य जब मारेजावेंगे तब घोरयुद्धहोगा ४३ हेसहस्राक्ष मैंने पृथ्वीका भार उतारनेके लिये जन्मलियाहै तू जा और पुत्रके लिये संदेह मतकर ४४ मेरे अगाड़ी अर्जुनका कोई शत्रु न रहेगा और जब भारतयुद्ध निवृत्त होजावेगा तब युधिष्ठिरादिकोंसे कुंतीको पुत्रवाली कर दूंगा ४५।४६ वेदव्यासजी बोले कि जब भगवान् ने ऐसे कहा तब इन्द्र ऐरावत हस्तीपर चढ़के स्वर्ग को चलागया ४७ और श्रीकृष्ण भी गायों और गोपालों सहित व्रजमें आये ४८॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांबालचरितेगोवर्द्धनोद्धरणं नामअशीतितमोऽध्यायः ८०॥

इक्यासीवां अध्याय॥

व्यासजी बोले कि जब इन्द्र चलागया तब अक्लिष्ट कर्म करनेवाले श्रीकृष्णसे प्रसन्न होके गोपाल कहने लगे कि हे कृष्ण तैंने अचल पर्वतको धारण किया १ हे महाभाग तैंने पर्वत धारणकरके इस बड़े भयसे हमारी और गायों की रक्षाकी २ हे कृष्ण यह तुम्हारी बालक्रीड़ा बड़ी अतुलहै इसको प्राप्त होनेकी गोपाल भी इच्छा करते हैं आपके कर्म्म अति आश्चर्य्य हैं ३ क्योंकि आपने जल के बीच में कालिय सर्प का दमन किया प्रलम्बासुरको मारा और गोबर्द्धन धारणकिया इसलिये हमारे मनको शंका होती है ४ हे कृष्ण आप सत्य सत्य कहो आपको हम सौगन्द दिलाते हैं हम आपके पराक्रमको देख आपको मनुष्य नहीं मानते ५ हे कृष्ण सम्पूर्ण व्रजकीस्त्रियें बालकों सहित इस आप

के कर्म्म को देखके प्रसन्न हुईं और यह तुम्हारा कर्म्म देवतों से भी असह्य है ६ हे अमेयात्मन् इस आपके बालकपन के अत्यन्त पराक्रम को देखके हम सबोंका मन शंका को प्राप्त होता है ७ आप कोई देव हैं अथवा दानव हैं यक्ष हैं गन्धर्व्व हैं अथवा हमारे बांधव हैं जैसे आप हैं आपको नमस्कार है ८ हे द्विजोत्तमो जब गोपोंने ऐसे कहा तब श्रीकृष्ण नम्रहोके गोपोंसे बोले ९ कि हे पापियो मेरेसम्बन्धसे तुम्हें लज्जानहीं होती किन्तु श्लाघाही होतीहै फिर विचारने से क्या प्रयोजनहै १० जो तुम्हें मुझमें प्रीतिहै और मैंतुमको श्लाघनीयहूँ तो मुझमें बान्धवोंकीसी प्रीतिकरो ११ हे गोपो मैं देव नहींहूँ और न गन्धर्व यक्ष वा दानवही हूँ मैं तो तुम्हींमें उत्पन्नहुआहूँ इसलिये अन्यथा मेराचिन्तवन मतकरो १२ निदान वे महाभाग सम्पूर्ण गोप शान्तिवाले कृष्णका कोपयुक्त वचन सुनके और मौन को धारणाकरके वनमें चलेगये १३ और कृष्णने आनन्दित दिशाओंमें खिलेहुये कुमोदनीके पुष्पोंसहित शरद्युक्त चन्द्रमा की चांदनी और निर्मल आकाश को उसरात्रीमेंदेख १४ पक्षियोंसे गूँजतेहुये वनमें गोपियोंसे क्रीड़ाकरनेका मनमेंनिश्चयकर १५ बलदेवसहित वृंदावनकी स्त्रियोंको प्यारे कोमलपद गानेलगे १६ गायन शब्द सुनके गोपियां अपने घरोंको छोड़ जहां मधुसूदनथे वहां चलीं १७ कितनी तो होले २ कृष्णको आमिलीं कितनी भागके आईं कितनी मनमें स्मरण करनेलगीं १८ और कितनी हे कृष्ण २ कहतीहुई

लज्जाको प्राप्तहुई कोई गोपी तो प्रेमसे कृष्णको आ मिली कोई बहुतदेरमें गई १९ और कोई गृहकृत्यसे निवृत्तहोके बाहर गयेहुये कृष्णको देख उनमें लीनहो उनका ध्यान करनेलगी २० मनको रमानेवाले शरद् युक्त चन्द्रमावाली रात्रीमें गोपियोंसहित रासक्रीड़ाके आरम्भ में उत्साहवाले गोविंद तिस वनमें जापहुँचे २१ और सब गोपियां शुद्धहोके कृष्णसे मिलीं जब कृष्ण अन्यदेशमें चलेजावें तब वे वृन्दावनके भीतर विचरतीफिरें २२ निदान वे कृष्णके वियोगसे व्यग्रहो रात्रिमें भयभीतहोकर उनके चरणोंका ध्यानकरनेलगीं और दर्शनों की आशा से निराश होकर यमुनाजी के निकट जाके उनके चरित्रोंको वर्णनकरनेलगीं २३।२५ जबउन्होंने त्रिलोकीकीरक्षाकरनेवाले खिलेहुयेकमलके समानमुखवाले कृष्णको आतेदेखा २६ तब कोईगोपी तो कृष्णको आतेदेख अति आनन्दितहुई कोई कृष्ण कृष्ण कहनेलगी २७ कोई हरिके कमलरूपी मुखको देख पात्ररूपी भृकुटियोंसे अमृतको पीनेलगी २८कोई नेत्रोंको मीच गोविन्द को देखनेलगी कोई योगारूढ़ कृष्ण और बलदेवका ध्यानकरनेलगी २९ और कोई गोपी प्रियवचन कहके अपनी भृकुटियों से कृष्णको देखनेलगी और कृष्ण ने उनके हाथ पकड़लिये ३० और उनअप्रसन्नचित्त गोपियोंसे आदरपूर्वक रमण करनेलगे ३१ उस रासमण्डल के मध्यमें एकान्तमें स्थित होनेवाले कृष्णने गोपीजनोंके समीप प्राप्तहोके ३२ नेत्रों को मीच एक एक गोपिका को स्पर्श किया

तब जैसे शरदऋतुमें कवियोंके आनुपूर्व्वक गायेहुये गीतोंसे ध्वनिहोतीहै तैसे उस रासमण्डलमें चलायमान कंगनोंकेशब्दोंकी प्रक्षतीहुई ३३ और शरदऋतु के चन्द्रमा और खिलीहुई कौमोदनी तथा कमलोंके पुष्पोंकीतरह मुखवाले राम कृष्णकेगुण गोपियां बारम्बार गानेलगीं ३४ फिर कंगनोंसे आलापकरनेवाली किसीगोपीने कृष्णके कांधेपर अपनी बाहुलताको रखदिया ३५ और किसी सुन्दर बाहुओंवाली गाने तथा स्तुतिकरनेमें निपुण गोपीने मधुसूदनको चुम्बन दिया ३६ गोपियोंके कपोलोंके संश्लेष से उठहुये रोमोंवाले और पसीनोंसे युक्त राम और मधुसूदन उस समय अति शोभाको प्राप्तहुये ३७ हरिभगवान् उस समय तारतरकी ध्वनिवाला गान गानेलगे और गोपियां कहनेलगीं कि हेकृष्ण अच्छागानहुआ हेकृष्ण अच्छा गानहुआ ३८ जब कृष्ण चलतेथे तो वे उनके साथ चलतीथीं और बलसे सन्मुख होतीथीं और जैसे वे फिरे वैसेही वेभी फिरतीहुई गोपोंकीकन्या हरिको प्राप्त होतीथीं ३९ कृष्णभी उनकेसंग रात्रिमें रमणकरतेरहे और वहरात्री एक क्षणमात्रकीनाईं ब्यतीतहोगई ४० माता पिताओं तथा पतियों और भ्राताओंसे निवारण कीहुई वे गोपोंकी अङ्गना रात्रिमें रतिमें सुखदेनेवाले कृष्णसे रमण करतीरहीं ४१ और अमेयात्मा और किशोर अवस्थावाला मधुसूदनभी उनकेसंग रमणकरतारहा ४२ सम्पूर्ण भूतोंकाईश्वर और सब आत्माओं में एकरूप गोविन्द उन गोपियों और उनके पतियों

में वायुकीतरह व्याप्तहोके स्थितहुआ ४३ जैसेसमस्त भूतोंमें आकाश अग्नि पृथिवी जल और वायुसे युक्त जीवात्मा स्थित रहता है तैसेही आत्मारूप परमेश्वर सबमें स्थितहुआ ४४ व्यासजी बोले कि किसीसमय प्रदोषयुक्त अर्द्धरात्रिमें जनार्दन भगवान् जब रासक्रीड़ामें आसक्तहोगये तब गोपोंको त्रासदेताहुआ अरिष्टनामकदैत्य ४५ जलसेयुक्त बादलोंकी छायाके रङ्गका पैने शृंगोंवाला और सूर्य्यके तेजकेसे नेत्रोंवाला वहां आके खुरोंके अग्रभागसे पृथ्वीतलको खोदनेलगा ४६ और जिह्वासे वारम्वार अपने ओष्ठोंको चाटता और कठिन स्कंधोंकेबेगसे इधरउधरपूँछको मारताहुआ ४७ ग्रीवाको उठाये वह प्रमाणके पराक्रमका उल्लंघनकरनेवाला अर्थात् अति पराक्रमवाला और गोबर मूत्रसे लिपेहुयेअङ्गवाला अरिष्टदैत्य गायोंमेंउद्वेगकरनेलगा ४८ जब वहलम्बेउदर और वृक्षोंकेघिसनेसे चिह्नित मुखवालेदैत्य बैलकेरूपकोधारणकिये गायोंके गर्भगिराने लगा ४९ और सबको दुःख देताहुआ इधरउधर प्रकाशमानहुआ फिरनेलगा तब उस घोरनेत्रोंवालेको देख गोपियां अतिभयभीतहो कहनेलगीं ५० कि हे कृष्ण हे कृष्ण हम हतहुईं गोपियोंकी यह दशा देख सिंहकासा शब्दकरके श्रीकृष्णनेतालीबजाई ५१ तब वहदैत्य तिस शब्दको सुनके दामोदरके सन्मुख आया और कृष्णके मुखकेआगे सींगोंकोरोपके टेढ़े नेत्रोंसे देखनेलगा ५२ पर उस वृषभरूप दैत्य को देख अवज्ञात लीलावाले महाबल कृष्ण चलायमान न हुये ५३।५४ बल्कि उ-

सको पकड़के उसकी कुक्षिमें लातेंमार उसे व्याकुलकर दिया ५५ निदान उसदैत्यके गर्वको हननकर ५६ और उसका एक शृंग उखाड़के उसीसे मारनेलगे तब उसके मुखसे रुधिर निकसनेलगा ५७ जैसे इन्द्रने जब जंभ दैत्य माराथा तब देवगणोंने इन्द्रकी स्तुति करीथी तैसेही कृष्णने जब वृषभ दैत्य को मारा तब सब गोप गोपी कृष्णकी स्तुति करनेलगे ५८ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसम्वादेबालचरिते नामैकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

वेदव्यासजीबोले कि जब रिष्टनामक दुष्टदैत्य धेनुक दैत्यऔरप्रलम्बदैत्यको कृष्णनेमारदिया गोबर्द्धनपर्वत को उठालिया १ कालियनागको दमन किया यमलार्जुन वृक्षको उखाड़डाला पूतनाको मारा और गाड़ा उलटादिया २ तब नारदजीने कंसकेपासजाके यहसंपूर्णवृत्तांत क्रमसे कहा और यहभी कहा कि यशोदा और देवकी का गर्भ बदल दियागया है ३ कंसने इस सब वृत्तांत को देवदर्शन नारदसे सुनकर वसुदेव पर अति क्रोध किया ४ और सभामें आके सब यादवोंकी निंदाकरने लगा फिर वह यह चिन्ताकरनेलगा ५ कि बलदेव और कृष्ण दोनों बालकोंको बलवान् होनेके पहिलेही मरवा डालनाचाहिये क्योंकि यौवन होनेके बाद नहीं मरेंगे ६ इसलिये महान् बलवान् चाणूर और मुष्टिक इन दोनों से युद्ध करवाकर मैं इन्हें मरवाऊंगा ७ अथवा धनुषयज्ञके छलसे बुलवाकर जैसे उनका नाशहोवेगा तैसेही

करूंगा ८ व्यासजी बोले कि वह दुष्टात्मा ऐसे विचार के अक्रूरसे कहनेलगा ९ कि हे अक्रूर यहांसे रथ में बैठके तू गोकुल में जा १० जहां वसुदेवके पुत्र विष्णु के अंशसे उत्पन्न हुये हैं और मेरे नाश के वास्ते बढ़े हैं ११ उन्हें यहां बुलाला क्योंकि मेरे यहां चतुर्दशी के दिन होनेवाले धनुषयज्ञ में १२ मल्लयुद्ध में चतुर चाणूर और मुष्टिकके संग उन दोनों का युद्ध होवेगा और सब मनुष्य देखेंगे १३ कुवलयापीड़ हस्ती महामत्यसे प्रेराहुआ पापी वसुदेवके उन पुत्रों को मारेगा १४ और उन्हों को मारके दुर्मति वसुदेव व नन्दगोप और दुर्म्मति उग्रसेन पिता को मारूंगा १५ और मुझ से द्वेष करनेवाले समस्त दुष्ट गोपों के समग्र गोधनों को हरूँगा १६ हे अक्रूर इन यादवों के बध के वास्ते मैं अनुक्रमसे यत्न करूँगा १७ और उनसेरहितहोके निष्कण्टक राज्य करूँगा हे वीर इस वास्ते तुझे मेरी प्रीतिसेवहांजानाचाहिये १८ औरउनगोपोंसेयहकहना चाहिये कि भैंसकाघृत औरदहीलेके तुमजल्दआवो १९ व्यासजी बोले कि कंसका प्रेराहुआ बलसे उग्र केशी दैत्य पहिले कृष्णकी मृत्युकी इच्छा करके वृन्दाबनमें आया २० और खुरोंसे पृथ्वीको खोदता नाड़के बालों से बादलोंको चलायमान करता चन्द्रमा तथा सूर्यको आच्छादित करता और मार्ग्ग को रोकताहुआ २१ गोपोंको भयभीत करनेलगा निदान गौओं के भयसे दुःखीहुये वे गोविंदकी शरणगये २२ और कहनेलगे कि हमारी रक्षाकरो रक्षाकरो ऐसे उनके वचन सुनके

गोविन्दमेघके गर्जने सरीखा गंभीर शब्द करके बोले २३ कि हे गोपालो क्या आप गोपजातियों को केशी दैत्यका भय होरहाहै २४ इस अल्प पराक्रमवाले हिं-सक भयंकर और बलसे रहित अश्वरूपी दुष्टदैत्यका क्या भयहै २५ फिर केशी से बोले कि मैं कृष्णहूं आ तेरे शिरको मैं गिराऊंगा और तेरे दांत मुखसे बाहर निकालूंगा २६ ऐसे कह श्रीकृष्ण दौड़के केशी के स-न्मुख आये और वहभी श्रीकृष्णके पीछे मुख फाड़के दौड़ा २७ तब श्रीकृष्णने अपनी बाहु को उस दुष्टके मुखमें डालदिया २८ केशीदैत्यके मुखसे सफेद बादलों के समान दो दांत गिरपड़े २९ हे द्विजो केशी दैत्यके मुखमें पड़ीहुई श्रीकृष्णकी बाहु उपेक्षित व्याधिकी त-रह बढ़तीगई ३० और फेनों और रुधिर सहित केशी का होठ फटगया दोनों आंखें बाहर निकलआईं ३१ और वह पेशाब और लीद करताहुआ पृथ्वीपर गिर पड़ा तब उसका शरीर पसीनेसे तर और निर्यत्न होगया ३२ और उसने महारौद्र मुख फाड़दिया वह श्रीकृष्ण की भुजासे द्विधाभूत हुआ पृथ्वीमें ऐसे गिरा जैसे वायु से वृक्ष ३३ और उसके दो पैर दोपीठ आधीपूंछ एक कान एकनेत्र और एक तर्फकी नासिका द्विधाभूत हो अंगके टुकड़े २ होगये ३४ निदान श्रीकृष्ण केशीदैत्य को मार मुदितहुये गोपोंके संग हँसतेहुये वहीं संस्थित रहे ३५ और गोपी और गोप केशी दैत्यके मारने से विस्मितहो मनोहर वचनोंसे श्रीकृष्णकी प्रशंसा करने लगे ३६ पश्चात् नारदमुनि वहां आप्राप्तहुये और केशी

दैत्यको मरा देख मनमें हर्षकर ३७ कहनेलगे कि हेजगन्नाथ यह बहुत अच्छाकिया कि देवताओंकोभी दुःख देनेवाले केशी दैत्य को मारा ३८ पर उग्रसेनका पुत्र कंस जब अनुचरों सहित माराजायगा तब आप पृथ्वी में भारको उतारनेवाले होंगे ३९ हे जनार्दन वहां अनेक राजाओंके चरित्र आपके करेहुये मुझको देखने हैं ४० इसलिये मैं आपके करे हुये इस महत्कर्म को गाऊंगा आपसे पूजित हुआ अब मैं जाताहूं आपका कल्याणहो ४१ स्वर्ग से आकर मैंने यह नरबाजी का महान्युद्ध देखा है यह अपूर्व आश्चर्य मैंने देखा ४२ हे मधुसूदन आपने अवतारोंमें जो कर्म किये हैं उनसे मेरे मनको विस्मय हुआ और इस कर्मसे मैं अतिप्रसन्न हुआ ४३ हेकृष्ण नाडके बालोंको कँपानेवाले हिनहिनातेहुये और आगेको देखतेहुये इस अश्वसे इंद्र और देवतेभी डरतेथे ४४ हेश्रीकृष्ण आपने जो इस दुष्टात्मा केशी दैत्यको मारा है इसवास्ते आप संसारमें केशव नामसे विख्यातहोवेंगे ४५ आपकी स्वस्ति हो मैं तो अब कंसके युद्धमें जाताहूं हे केशिनिषूदन मैं परसों के दिन आपसे मिलूंगा ४६ व्यासजी बोले कि जब नारद चलेगये तब गोपों सहित श्रीकृष्ण गोकुल में आये ४७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसम्वादेकेशिबधो नामद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२॥

तिरासीवां अध्याय॥

व्यासजी बोले कि कंस की आज्ञापाकर अक्रूरभी

शीघ्रगामी रथमेंबैठ कृष्णके दर्शनके लिये आसक्तहो नन्दके गोकुलमेंआये १ रास्तेमें अक्रूर ऐसे चिन्तवन करनेलगे कि मेरेसमान कोई धन्य नहींहै क्योंकि मैं अंशसे उतरेहुये चक्रीभगवान्के दर्शनकरूँगा २ अब मेराजन्म सफलहुआ और श्रेष्ठप्रभात और रात्रीभी सफलहुई क्योंकि आजदिन कमलसदृश विष्णुकेमुख को मैं देखूँगा ३ जो पुरुषों के पापको नाशताहै और संकल्पनामसे प्रसिद्धहै तिस कमलसरीखे नयनोंवाले विष्णुके मुखको मैं देखूँगा ४ जो अनन्तरूप भगवान् इसपृथ्वीको धारणकरतेहैं उन्होंने पृथ्वीके भारउतारने को अवतारलियाहै सो मुझको अक्रूर कहैंगे ५ पितृ पुत्र सुहृत् भ्राता बन्धुमयी मायारूपीनाल जिसने जगत्में फैलारक्खाहै तिसको नमस्कारहै ६ जो हृदयमें अविद्याका विस्तार कररहेहैं और यह मेरा अपत्यहै ऐसी माया फैलारहेहैं तिस विद्यात्माको नमस्कारहै ७ जो यज्ञकरनेवालोंसे यज्ञपुरुष यादवोंसे वासुदेव वेदान्तियों से विष्णु कहाजाता है तिसको नमस्कार है ८ ब्रह्माने जो २ सत् और असत् रचा है वे दोनों तिसके साम्यहैं ९ और जिस पुरुषके स्मरण करने से मनुष्य सब कल्याणोंका पात्र होजाता है तिसअज नित्य हरि की मैं शरणहूँ १० व्यासजी बोले कि इसप्रकार भक्ति से नम्रहोके विष्णुका चिन्तवन करताहुआ जब अक्रूर गोकुलमेंआया तो सूर्य्य कुछही बाकी रहाथा ११ इसलिये उसने श्रीकृष्ण को गोदोहनमेंदेखा बछड़ोंकेमध्य में गत फूलेहुये नीले कमलसरीखी कान्ति और खिले

हुये कमलसरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्णको अक्रूरने श्री-
वत्सचिह्नसे अङ्कित बड़ीछाती लम्बीबाहु और नासि-
का और विशाल और सस्मित मुखपंकज को धारण
करतेहुये देखा जिसको सब वेद और वेदाङ्ग प्राप्तहो
रहेहैं १२।१४ उसदेवताओंके परमधाम भगवत्के पीले
वस्त्रोंको धारणकिये पीले पुष्पों की माला पहिने और
सचिक्कन नीली लताके समान हाथमें सफेद कमलके
पुष्पोंके गहनों को धारणकिये १५।१६ नीलाम्बरमें
हंस और चन्द्रमाके समान सफेद दांतोंवाले श्रीकृष्ण
को देखकर फिर अक्रूरने यदुनन्दन बलदेवको देखा
१७ गौओंके थानमें प्रकाशमान मुखपंकज को ऊपर
कियेहुये मेघ मालासे परिवृत कैलासपर्व्वतके समान
कान्तिवाले १८ बलदेव और श्रीकृष्णको देख अक्रूर
के सब अङ्गमें रोमाञ्चितहोगये १९ और यह विचा-
रनेलगा कि यह भगवत् का परमधाम और परमपद
वासुदेवांश द्विधा व्यवस्थितहै २० अब मेराजन्म स-
फल है क्योंकि मैं भगवत्के प्रसादसे अच्छीतरह श्री
कृष्णसे मिलूँगा २१ और श्रीमत् अनन्तमूर्त्ति श्रीकृष्ण
मेरी पीठपर पद्मरूपी हाथधरेंगे जिनकी अँगुलियोंके
स्पर्शनमात्रसे सब दोषभी सिद्धिकोप्राप्तहोजातेहैं २२
जिस भगवान् ने आकाश अग्नि बिजली इत्यादिकों
से उग्र अपने चक्रसे अनेक दैत्योंको मारा २३ और
जिस भगवान्की कृपासे बलिराजा मनवाञ्छित भोगों
को प्राप्तहो पाताललोकमें स्थितहुआ और मन्वन्तर
में देवताओं का पति इन्द्र होवेगा २४ वह भगवान्

मुझको कंसका भेजाहुआ जानके दोषदृष्टिसे मौननहो २५ क्योंकि ज्ञानात्मा अमल सत्त्वराशि और दोष से रहित सदा स्फुट भगवान् समस्त पुरुषों के हृदयकी बातोंको जानते हैं २६ इसवास्ते मैं भक्तिसे नम्रचित्त कियेहुये उस अज आदि मध्यान्त से रहित विष्णु के सर्वेश्वर अवतारकी शरणहूँ २७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांअक्रूरगमनन्नाम
त्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३॥

चौरासीवां अध्याय॥

वेदव्यासजी बोले कि ऐसे चिन्तवन करताहुआ वह गोविन्दके पास पहुँच श्रीकृष्ण के चरणों में शिर रखकर बोला कि मैं अक्रूरहूँ और श्रीकृष्ण ने ध्वजा और चक्रसे चिह्नित अपने हाथोंसे स्पर्शकरके प्रीति सहित अच्छीतरह अक्रूरसे मिलकर उसे अपने घर लेगये और अति आदर सत्कारपूर्वक भोजनकराया तब अक्रूरने जैसे कंस देवकीको झिड़काकरताथा और वसुदेवको दुर्वचनकहता तथा जैसे उग्रसेनसेवर्त्तताथा और जिस कार्य्यके उद्देशसे अक्रूरको भेजाथा १। ६ तिस सम्पूर्ण वृत्तान्तको केशव भगवान्से विस्तारसे कहा और उसे सुनकर भगवान् बोले कि हे अक्रूर यह सम्पूर्ण हमने जानलिया ७ हे महाभाग कंसका मैं अब उपायकरूँगा आपयहीजानो कि मुझसे कंस हतहोवेगा अन्यथानहीं ८ हम और बलदेव कलकेदिन मथुरापुरीमें आवेंगे और बहुतसी भेंटलेके वृद्धगोपभी आवेंगे ९ हे वीर यह रात्री योंहीं बितानीचाहिये क्योंकि

चिन्ताकरनी योग्य नहींहै मैं तीनरात्रीके भीतर अनु-
चरोंसमेत कंसको मारूँगा १० व्यासजी ने कहा कि
इसप्रकार बातचीत करके अक्रूरजी कृष्णके संग सब
गोपों और बलदेवको आज्ञासुनाकर नन्दकेघरमें रात
को सुखसे सोये ११ और प्रभातहोतेही बलदेव और
श्रीकृष्ण अक्रूरकेसंग मथुरापुरी में जानेको उद्यतहुये
१२ तब गोपी दुःखार्त्तहो श्वासेंभरनेलगीं और उनके
हाथके कंकण ढीलेहोगये वे आपसमें कहनेलगीं १३
कि अब श्रीकृष्ण मथुरामें जाके गोकुलमें क्योंआवेंगे
शहरकी स्त्रियोंके गान अच्छीतरह कानोंसे सुनेंगे १४
और नगरकीस्त्रियोंके विलासमें रचाहुआ इसकाचित्त
फिर यहां ग्रामवाली गोपियोंमें कैसे लगेगा १५ हाय
सब गौओंके मक्खनआदिको हरनेवाला हरि बलदेव
केसंग निर्दयीहुआ अन्यजगह ज़ाताहै १६ हाय रथ
में बैठके गोविन्द तो जाताहै हम अपनी प्रार्थना गु-
रुलोगोंके मध्यमें कैसे करें १७ और विरहअग्नि से
दग्धहुई हमारा ये बड़ेमनुष्य क्याकरेंगे हाय नन्दआ-
दि गोपभी जानेको उद्यत होरहेहैं १८ ऐसा कोईनहीं
जो कृष्णके जानेकेसमय गौओंका उद्यमकरे यहरात्री
मथुराकी स्त्रियोंकोही सुप्रभाता भई १९ जो अच्युत
अर्थात् श्रीकृष्णके संग भोजनकरेंगे और जो कृष्ण
के संग जावेंगे वेही धन्यहैं २० हमें गोविन्द का मुख
देखनेकी अति इच्छाहै ऐसा कौनभाग्यहै कि जिससे
हम कृष्णकेसंगजावें २१।२२ विस्तारित तथा कांति-
वाले श्रीकृष्णकेनयनोंको हम नित्यदेखेंथीं अहो निर्दयी

विधाता तूने २३ महानिधिरूप श्रीकृष्णको दिखाके फिर हरलियाहै इसके जानेसे हमारे शरीर तथा २४ हाथों और कङ्कणों में शिथिलता होगईहै और यह क्रूरहृदयवाला अक्रूर रथके घोड़ोंको जल्दी भगाताहै २५ हाय हम पीड़ितहुई अबलाओंपर किसीको दया नहीं आती इसप्रकार रथमें बैठेहुये श्रीकृष्णके मुखको वे गोपी देखरहीथीं २६ और जब वे दूरचलेगये तब बांसुरीकाशब्द सुनतीरहीं २७निदान इसप्रकार गोपियोंकेदेखते२बलदेव और श्रीकृष्ण व्रजभूभागकोत्याग २८ बेगसे चलनेवाले अश्वोंपर अक्रूरसहित मध्याह्न समय यमुनाके किनारेपहुँचे२९ तब अक्रूरने कृष्ण से कहा कि जबतक मैं यमुनामें आह्निक कर्म करूं तब तक आप यहां स्थित रहो ३० ऐसे कहके जब वह महामति यमुनामें स्नानकरके जलमें प्रवेश हो परब्रह्मका ध्यान करनेलगा ३१ तो वहां उसने हजार फणों सहित कुंद सरीखी कान्ति और कमलोंकेपत्रसरीखे नेत्रोंवाला वासुकि आदि महान् सर्पों से युक्त और संस्तूयमान और सुगंधित बनमालाओंसे विभूषित कालेवस्त्रों को पहिने कुण्डल आदि गहनों को धारण किये हुये बलदेव को जलके भीतर स्थित देखा और उनकी गोदमें ताम्रायन नेत्रों चार बाहुओं उदार अंगोंवाले श्रीकृष्णको चक्रायुधसे विभूषित पीले वस्त्रोंको धारण किये और विचित्र मालाओंको पहिने इन्द्र धनुष तथा बिजली सहित विचित्रित मेघोंके समान शोभित श्रीवत्ससे चिह्नित छाती सुन्दर बाजूबंद उज्ज्वल मुकुट और पुंडरीक कमल को

धारण कियेहुये सनकादिक मुनियोंसे स्तूयमान देखा ३२।३८ नासिकाके आगे नेत्रोंकी दृष्टि किये संचित्यमान अक्रूरने उनको बलदेव कृष्ण जानके ३९ यह चिंतवन किया कि ये यहां कैसे आगये पर देखतेहुये जनार्द्दन भगवान्ने उसेमूककरदिया और उसने४०जलसेबाहर निकलकर उसी जगह रथमें बैठेहुये दोनोंको देखा४१ निदान बलदेव और कृष्णको पूर्ववत् बैठे देख अक्रूर ने फिर जलमें गोता मारा तो फिरभी वैसेही देखा ४२ गन्धर्वोंसे संस्तूयमान और मुनि सिद्ध दिव्यसर्प आदिकोंसे स्तुत उनके भावको जान ४३ अक्रूर सर्वविज्ञानमय ईश्वरकी स्तुति करनेलगा कि हे तन्मात्ररूप हे अचिंत्यमहिमा और ४४ अनेकरूपोंमें व्याप्त होने वाले आपको नमस्कार है हे सत्त्वरूप हे अचिंत्य हे हविर्भूत आप प्रकृतिसे परे और विभुहैं आपको नमस्कारहै ४५ हे भूतात्मा इन्द्रियात्मा प्रधानात्मा आत्मा और परमात्मा आपही एक पांच प्रकार करके स्थित हो ४६ हे सर्व सत्त्वात्मन् हे क्षराक्षर हे महेश्वर आप प्रसन्नहो आपही ब्रह्मा विष्णु और शिव कल्पनाकरके कहेजातेहो ४७ हे अनाख्ये हे यस्वरूपात्मन् हेअनाख्येय प्रयोजन हे अनाख्येयाभिधान आपको मैं नमस्कार करताहूं ४८ जहां नाम जात्यादिकी कल्पना नहीं है सो तत्परमब्रह्म नित्य अविकार और अज आपहो ४९ आपके बिना कुछभी कृत्यता नहीं है इसवास्ते हे कृष्ण आपकी अच्युत अनन्त विष्णुआदि संज्ञाहै ५० सर्वात्मा अज देवाद्य अखिल जगत् और सर्व विश्व

आपही हो और हे विश्वात्मन् अति विकारहीन सब विकारोंसे रहित आप हो ५१ आपही ब्रह्मा पशुपति सूर्य तथा विष्णुहो और इन्द्र वायु अग्नि वरुण कुबेर आदि जगत्में आपहीके भेद हैं ५२ आपही विश्वको रचते हैं आपही पालना करते हैं और आपही संहार करते हैं और विश्वमयी आपका रूप है ५३ जिसमें यह जगत् स्थितहै जिससे उत्पन्न हुआहै और जिसमें लीन होताहै तिसको नमस्कारहै ५४ वासुदेवको नमस्कारहै और संकर्षण और प्रद्युम्नरूप अनिरुद्धको नमस्कारहै ५५ वेदव्यासजी बोले कि इसप्रकार अक्रूर ने जलके भीतर स्तुति करके फिर सर्वेशको धूप और मनोहर पुष्पोंसे पूजा५६ और सबजगहसे मनको दूर कर उसीमें प्रवेश किया फिर ब्रह्मका बहुत काल तक ध्यानकरके स्मरणकर ५७ आत्माको कृतकृत्य मानता हुआ यमुनासे निकल रथके समीप आ ५८ यमुनाके जलमें जो आश्चर्य देखाथा तिससे विस्मित और उत्फुल्ल नयन हुआ बोला ५९ कि हे अच्युत श्रीकृष्ण जलके भीतर जो मैंने आश्चर्य देखा सो इसी जगह मूर्त्तिमान् स्थितहुये आपको देखताहूं ६० हेकृष्ण आप के रूपका परम आश्चर्य है यह मैंने जान लिया ६१ हे मधुसूदन ऐसे समर्थहोके आप मथुराका क्यों परिश्रम करतेहो और परपिंडोपजीवी कंससे क्या भयकरते हो ६२ ऐसे कहके रथके घोड़ोंको फेरते भये संध्यासमय वे मथुरापुरीमें प्राप्तभये ६३ तब अक्रूरने कहा कि आप दोनों पैदल चले आवो मैं अकेला जाताहूं पर

आप वसुदेवके घर मतजाना ६४ क्योंकि आपके कारण वसुदेवको कंसने बांधरक्खाहै और नित्य भिड़ता है ६५ व्यासजीनेकहा कि ऐसे कहके अक्रूर मथुरापुरी को गये और पीछे २ बलदेव और कृष्णने भी प्रवेश किया ६६ तब मथुरापुरी में स्त्री पुरुष उनके दर्शनसे अति आनन्दहुये ६७ निदान वे दोनों शूरबीर बालक अपनी लीलासे गजकी चाल चलेजातेथे कि उन्होंने एक धोबीको देख उससे सुन्दर मनोहर वस्त्रोंको मांगा ६८।६९ तब वह रजक प्रमादसे बहुत निन्दित वचन ऊंचे स्वरसे बलदेव और कृष्णसे कहनेलगा ७० और श्रीकृष्णने अपने हाथके प्रहारसे तिस दुरात्माका शिर पृथ्वीमें गिरादिया ७१ और उसे मारके वस्त्रोंको छीन नीले और पीतवस्त्रोंको पहिन बलदेव और कृष्ण प्रसन्नहुये मालाकारके घरगये ७२ खिले हुये नेत्रोंवाले तिन दोनोंको देख मालाकार विस्मितहो चिंता करने लगा कि ये किसके पुत्रहैं ७३ फिर उनको पीले तथा नीलाम्बरको धारण किये सुन्दर और मनोहर देख तर्कणाकरनेलगा कि पृथ्वीमें देवतेआयेहैं ७४ फिर खिले हुये कमलसरीखेमुखोंवाले वे दोनों उससे पुष्प मांगने लगे तब वहमालाकार पृथ्वीमें अपनाशिर रखकेबोला ७५ कि हे नाथ आपने बड़ी कृपाकी जो मेरे घरआये और मैंधन्यहूं जो आपका पूजनकरूंगा ७६ ऐसे कहके प्रसन्नहो उसने इच्छापूर्वक विचित्र २ पुष्प उन्हें दिये ७७ और नरोत्तम जान बारम्बार प्रणाम करनेलगा ७८ तब प्रसन्नहो श्रीकृष्णने मालाकारको वरदिया कि

मेरे संश्रय से तुझको लक्ष्मी कभी नहीं त्यागेगी ७९ हेसौम्य तेरे बलकी हानि तथा धनहानि कभी न होवेगी और तेरी सन्तति पृथ्वीमें कल्पतक रहेगी ८० तू बहुतसे भोगोंको भोग अन्तमें मेरे प्रसादसे मेरा स्मरण कर दिव्यलोकको प्राप्तहोवेगा ८१ वेदव्यासजी बोले कि ऐसे कहके श्रीकृष्ण बलदेवके संग मालाकारसे पूजितहुये उसके घरसे चले ८२॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेरजकवध मालाकारवरप्रदानंनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

पचासीवां अध्याय॥

व्यासजी कहनेलगे कि वहांसे चलकर श्रीकृष्णने राजमार्गमें अनुलेपनलिये नवयौवन कुब्जाको आते देख १ बोले कि यह अनुलेपन किसकाहै हेवरलोचने तू किसकेवास्ते इसे लेजातीहै सत्यकह २ ऐसे सकाम वचनसुन प्रीतिसे देखतीहुई कुब्जा बोली ३ हे कान्त आप नहींजानते कि मैं नैकवक्रानामसे विख्यात कंस को अनुलेपन कर्म करनेमें नियुक्तहूँ ४ पर ये अनेक प्रकारके सुन्दर अनुलेपन आपकी प्रसन्नताके वास्ते हैं उसके यह वचनसुन श्रीकृष्ण बोले कि यह अनुलेपन तो राजाओंके लायकहै हमारे गात्रसदृश अनुलेपन हमेंदेनाचाहिये ५।६ व्यासजीकहनेलगे कि कृष्ण के ऐसे वचनसुनके कुब्जा आदरसे बोली कि अच्छा लो ७ निदान वे पुरुषोत्तम अपने अंगोंमें चन्दनादिक लगाके काले और सफ़ेद मेघकेसमान विराजमानहुये ८ और कूब्जाकी ठोड़ी पकड़ ऊपरको उठाके ९ और

नीचेसे पैरोंकोखींचके उसे कोमल और श्रेष्ठस्त्रीकरदिया
१० तब तो वह विलासिनी प्रेमसे वस्त्र ग्रहणकर गो-
विन्दसेकहनेलगी कि आप मेरेघरचलो ११ और हरि
भगवान् हँसतेहुयेबोले कि तेरेघर हम फिर आवेंगे ऐसे
कहके उसेबिदाकिया और उसकामुखदेखके हँसनेलगे
१२ इसप्रकार भक्तिपूर्वक कुब्जासे अनुलिप्तांगहो नी-
लपीताम्बरको धारणकिये और विचित्र मालाओं से
शोभित वे दोनों धनुःशालामें गये १३ और रक्षकोंसे
विनापूछेही धनुषको उठाके श्रीकृष्णने खींचलिया १४
निदान बलसे चढ़ानेसे वह धनुष जब टूटगया और
सारी मथुरापुरीमें महाघोर शब्दभया। १५ तब रक्षकों
को मालूमभी न हुआ और वेधनुःशालासे निकसगये
१६ इधर अक्रूर के आगमन और धनुषके टूटनेका
हाल सुनकर कंसने चाणूर और मुष्टिकआदि मल्लोंसे
कहा कि दोगोपालदारक जो यहां आयेहैं वे मेरे प्राणों
के हरनेवालेहैं इसवास्ते तुम उनको मल्लयुद्ध करके
मारो१७।१८यदि तुम युद्धमें उनकोमारके मुझे प्रसन्न
करोगे तो मैं तुमको मनोबांछित द्रव्यदूंगा १९ न्याय
सेहो अथवा अन्यायसेहो उन दोनोंको अवश्य मारना
चाहिये तब मेरा मनोरथ होवेगा २० ऐसे मल्लोंको
आज्ञादे फिर महावतसे ऊँचेस्वरसेकहनेलगा कि तुझ
को मल्लसमाजकेआगे हाथी खड़ाकरके२१ कुवलया-
पीड़द्वारा रंगद्वारमें आतेहुये उनदोनोंको मरवाडालना
चाहिये २२ इसप्रकार उनको आज्ञादे बिछेहुये सब
मंचों को देखनेलगा २३ साधारण मंचोंपर नगर के

मनुष्य मिलेहुये बैठे राजमंचों पर भृत्यों सहित राजे बैठे २४ और रंग मध्यके समीप ऊँचामंच बिछवाकर आप स्थितभया २५ महलके भीतरकी स्त्रियोंकेवास्ते जुदेमंच बिछायेगये वेश्याओंकेवास्ते जुदे और नगर की स्त्रियोंकेवास्ते जुदे बिछगये २६ नन्दआदिक गोप अन्यमंचोंपर स्थितहुये अक्रूर और वसुदेव एकमंच परबैठे २७ और नगरकीस्त्रियोंके बीचमें पुत्रकी लालसा करनेवाली देवकी भी यह विचारतीभई बैठीं कि अन्तकाल में मैं पुत्रका मुख देखूँगी २८ निदान जब बाजे बजनेलगे और चाणूर और मुष्टिक ने खड़ेहोके अपनी भुजा बजाई तब मनुष्योंमें हाहाकार मचगया २९ बलदेव और श्रीकृष्णनेभी पीलवानद्वारा प्रेरेहुये कुवलयापीड़ हस्ती को मार सुगन्ध से लिप्तांग दोनों हाथोंमें हस्तीके दांतोंकोलिये ३० मृगोंकेमध्यमें वनके गर्वित सिंहकेसमान देखतेहुये जब उस महान् रंगशालामें प्रवेश किया ३१ तो महान् हाहाकार होनेलगा और लोगों को यह आश्चर्य्य होगया कि यही कृष्ण और बलदेव हैं ३२ जिन्होंने घोर पूतनाको माराथा गाड़ा फेंकदियाथा और यमलार्जुन वृक्ष तोड़दियाथा ३३इसीबालकनेकालियनागके मस्तकमें नृत्यकियाथा इसीने सातरात्रितक महान् गोवर्द्धनपर्वतको उठालियाथा ३४ और अपनी लीलाकरके केशी और धेनुक दैत्योंको माराथा ऐसे दुष्ट जिसने मारादिये सो तो अच्युत भगवानही दीखताहै ३५ यह महाबाहु बलदेव इसका बड़ाभाईहै जो लीलाकरके गमन करताहुआ

स्त्रियोंके नयनोंको आश्चर्य्यित कराताहै ३६ यह वहहै जोकि स्वर्ग्गलोकका अवलोकनकरनेवाले पंडितोंद्वारा ऐसे कहाजाताथा कि यह गोपाल यादवोंके मग्नवंशका उद्धारकरेगा ३७ और यह सर्वभूतमय अतुल तेजवाले विष्णुके अंशसे पृथ्वीका भार हरनेकेवास्ते उतराहै ३८ पुरबासी मनुष्यों के ऐसे कहतेहुए बलदेव और श्रीकृ-ष्णको देख देवकीके पयोधरों से दूध झिरनेलगा ३९ और बसुदेव अतिहर्ष को प्राप्तहो पुत्रोंके मुखको देख वृद्धअवस्थासे युवाअवस्था को प्राप्तहोगया ४० राजा केमहल और पुरकी स्त्रियोंमें आपसमें चर्चाहोनेलगी ४१ कि हे सखियो लालकमलसरीखे नेत्रोंवाले कृष्ण के मुखकोदेखो कि युद्धके श्रमसे पसीनेमें कैसा सुन्दर होरहाहै ४२ इस खिलेहुए शरदऋतुके कमलसरीखे मुखको देखके जन्मसफल करलेनाचाहिये ४३ श्रीवत्स चिह्नसे अंकित और जगद्धाम और श्रेष्ठ भुजाओंवाला श्रीकृष्णके दर्शन अवश्य करनेचाहिये ४४ मैं देखतीहूँ कि कमलकी डांड़ीके समान सफेद मुखवाला और नीले वस्त्रोंको धारणकिये यह बलदेव ४५ बलवान् मुष्टिक दैत्यकेसंग युद्धकेवास्ते तैयार है यह बलदेवका हास्यही होवेगा ४६ हे सखि देखो चाणूरकेसंग युद्ध करनेके वास्ते यह श्रीकृष्ण जाताहै क्या यहां यथार्थविधि कहनेवाले वृद्धनहीं हैं ४७ कहां यहयौवनवाला कठिनरूप महान् असुर और कहां सुकुमारअवस्थावाले श्रीकृष्ण ४८ इन दोनोंसुलभवर्ण और नवयौवनवालोंकेसन्मुख ये अति दारुणदैत्य न रोपने चाहिये ४९ विशेषयुद्धप्राप्तिवाले इन

पुरुषोंमें जो बालकोंकेसंग दैत्योंका युद्धदेखाजाताहै सो अतिबुरा है ५० व्यासजी बोले कि पुरकी स्त्रियोंके ऐसे कहतेहीकहते श्रीकृष्णभगवान् और बलदेव हर्षसहित भुजाओंको फरकाते ५१ ललित कटिबंधबांध पृथ्वी में युद्धकेलिये उतरे ५२ अमित पराक्रमवाले श्रीकृष्ण चाणूरकेसंग युद्धकरनेको उद्यतहुये और युद्धमें कुशल मुष्टिकदैत्यकेसंग बलदेवजी युद्धकरनेलगे ५३ निदान क्षिपणी मुष्टिछातीमें कीलोंका निपातन ५४ पादोद्भूत इत्यादि पेचोंसे कृष्ण और चाणूरका महान् युद्धहुआ और शस्त्रों से रहित महा घोर मल्लयुद्धभी भया ५५ उस समय जितनाबल पराक्रम चाणूर दैत्यमेंथा उससे हरिकेसंग युद्ध करनेलगा ५६ और जब युद्ध करते २ चाणूरको प्राणोंकी हानि ज्ञात होनेलगी तबभी जगन्मय श्रीकृष्ण लीलाकरके उससे युद्धकरतेही रहे ५७ अतिश्रमसे चाणूरके स्वेदआगया ओष्ठ फरकनेलगे और बल क्षयहोगया पर श्रीकृष्णमें बल बढ़ताहीजाता था ५८ यह हालदेख कोपयुक्तहो कंसनेतूर्य और मृदंगादि बाजोंको बंदकरादिया ५९ तब आकाशमें स्थितहुए देवते अनेकप्रकारके बाजे बजानेलगे ६० और कहनेलगे कि हे गोविन्द तुम्हारी जयहो इस चाणूर दैत्यकोमारो ६१ निदान चाणूरदैत्यके संग बहुत काल तकश्रीकृष्ण क्रीड़ाकरके तिसको उठा और भ्रमाके बध करनेको उद्यतहुए ६२ और सौगुना घुमाके उसेआकाशमें ऐसाफेंका कि उसके ६३ सौ टुकड़े होगये और रक्त बहनेलगा ६४ उसीसमय बलदेवनेभी मुष्टिक दैत्यके

संग युद्ध करतेकरते ६५ उसे मुष्टिका और लातोंसे मार पृथ्वी में गिराके पीसडाला और प्राणों से रहित करदिया ६६ फिर श्रीकृष्ण ने बायीं मुष्टिके प्रहारसे तोशकल मल्ल को पृथ्वी में गिराके मारडाला ६७ जब चाणूर मुष्टिक और तोशकल दैत्य मरगये तब सब मल्ल वहांसे भागे ६८ और कृष्ण और बलदेव अपनी अवस्थाके गोपोंके संग हर्षितहुये क्रीड़ा करनेलगे ६९ यह दशा देख क्रोधसे रक्त नेत्र किये ऊंचे स्वर से कंस बोला कि ये दोनों गोपाल यहांसे निकला देनेयोग्यहैं ७० पापीनन्दको बेड़ियोंसे बांधदो और जवानोंको देने लायक कड़ादंड वसुदेवको दो ७१ कृष्णके संगके इन गोपोंकोभी निकलादो और इनकी गौ आदिकोंको छीन लो ७२ ऐसे आज्ञा देतेहुये कंसको देख मधुसूदनभगवान्ने कूदके मंचपर चढ़ और उसके शिरके बालों को खींच उसका मुकुट पृथ्वीपर गिरादिया और उसी समय उसकोभी पटकदिया ७३।७४ हे द्विजो निःशेष जगत्के आधार श्रीकृष्णनें जब उग्रसेनके पुत्र कंसके प्राण निकाललिये ७५ और उसकीदेह अन्य लोगोंपर गिरने लगी तब उसकेबालोंको महाबलवाले श्रीकृष्ण पकड़के रंगसमाजमें खींचलाये ७६ और अति जोरसे खींचनेसे उसकी देह छिलगई ७७ निदान कंसको मार बलदेव सहित महाबाहु श्रीकृष्ण देवकी और वसुदेव केपैरोंपड़े ७८।७९ और देवकी और वसुदेव श्रीकृष्णको पैरोंसे उठा पूर्वजन्मका स्मरणकर श्रीकृष्णसे बोले ८० कि हे देवदेवेश हे देवताओं में श्रेष्ठप्रभो आपप्रसन्नहो

मैं आप दोनों के प्रसाद से कृतार्थ होगया ८१ मैंने जो तुम्हारा आराधन कियाथा इसवास्ते आप दोनों ने मेरे घर अवतार लियाहै खोटा व्यवहार करनेवालों की आप मृत्युहो आपको नमस्कारहै ८२ आपने हमारा कुल पवित्र करदिया आप सब जीवों में विचरनेवाले हो और आपसेही सब जीव पैदा होते हैं ८३ यज्ञमें त्वं पदसे आपका सेवनहोताहै आपही यज्ञहो आपही यज्वाहो आपही यष्टाहो और आपही परमेश्वरहो ८४ मेरा मन जो आपमेंहै और देवकी के पुत्रहो यहप्रीति अत्यन्त बिड़म्बना है ८५ सब भूतोंकेकर्त्ता अनादि निधन ऐसे आपको हे वत्स हे पुत्र ऐसे यह जिह्वा कहतीहै ८६ हे जगन्नाथ जिससे यह सम्पूर्णजगत् पैदा होताहै तिस मायासे मेरे मोहहै ८७ जिसमें स्थावर तथा जङ्गम जगत् स्थितहै वह मनुष्यके उदरमें कैसे उत्पन्नहोवे ८८ हे ईश्वर आप प्रसन्नहो और विश्वकी रक्षाकरो अंग अवतार चरणआदि से आप मेरे पुत्र नहींहो ८९ ब्रह्मासे लेके सब जगत् आपकी मायासे मोहित होरहाहै ९० और मायासे बिमोहित दृष्टिसे आपमुझको पुत्रदीखतेहो कंसका अतितीव्रभय होनेसे आपको मैं गोकुलमें पहुँचाआयाथा तहां आप वृद्धि को प्राप्तहुयेहो ९१ हे ईश आपके दर्शनोंसे सौयज्ञों का फलहोताहै आपविष्णु जगत्के उपकारकेहेतु बास करतेहो और मुझे मोहित कररक्खाहै ९२ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेबालचरित्रे कंसबधःनामपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

वेदव्यासजी बोले कि फिर श्रीकृष्णभगवान् देवकी और बसुदेवके ज्ञानकी उत्पत्तिजान १ मोहके वास्ते अपनी वैष्णवी मायाको फैलाकर बोले कि हे मात हे तात आपसे मैंने बहुतकालसे कहरक्खाथा २ कि कंस का भय हमारा कब दूरहो सो अब तुम्हारे पूजनकरने के बिना यहकाल व्यतीत हुआजाताहै ३ जिनका श्रेष्ठ पुत्रोंसे पूजन नहीं कियाजाता उन मनुष्यों का भाग्य भी व्यर्थहीहै ४ गुरु देव ब्राह्मण माता पिता आदिका पूजनकरनेसे मनुष्यका जीवन सफलहोताहै ५ हे पिता जी मैंने जो विपरीत कियाहो वह सब आप क्षमाकीजिये ६ व्यासजीबोले कि ऐसे कहके और प्रणामकरके कृष्ण और बलदेवने यथावत् पूजनकिया ७ इधर कंस की माताने शोकसे दुःखितहो पृथ्वीको लीपकर कंस को लिटाया ८ और श्रीकृष्णने बिलाप करतीहुई तिनको बहुत प्रकार समझा और आपभी आंशुओं से युत नेत्रकरके तिनको शिक्षादी ९ पश्चात् मधुसूदन भगवान्ने उग्रसेन को बन्धसे छुटाया और अभिषेक करके उनको राज्यपर बैठाया १० श्रीकृष्णद्वारा राज्याभिषिक्तहोकर उग्रसेन मृतकोंकी प्रेतक्रियाकी ११ और ऊर्ध्वदैहिक क्रियाकरनेकेबाद श्रीकृष्णने उग्रसेनसेकहा कि हे विभो मुझको अब आप आज्ञादो १२ क्योंकि हमारा यदुवंश तो ययातिके शापसे राज्य के लायक नहींहै और यदि मैं तुम्हारेआगे भृत्यहोकर रहूँगा तो देवताओंका प्रयोजन न होगा १३ ऐसे कहतेहीथे कि

श्रीकृष्णकेआगे उसीक्षण वायुआया तब कार्य्यमानुष भगवान्‌ने उससे कहा १४ कि हे वायु तू इन्द्रके पास जाके यह कह कि हे इन्द्र तुझको यह सुधर्म्मा सभा उग्रसेनके वास्ते देनी चाहिये १५ श्रीकृष्ण ने कहाहै कि इस सुधर्म्माख्य सभामें राजाओंके लायक रत्नहैं १६ व्यासजी बोले कि कृष्णके यह वचन सुनके वायुने जाके इन्द्रसे सब हालकहा और इन्द्रने वायुको सुधर्मा सभा देदी १७ तब वायुद्वारा प्राप्तकी हुई उस दिव्य और सबरत्नोंसेयुक्त सभामें सबयदुपुंगवोंने गोविंदकी भुजाके आश्रयहो प्रवेशकिया १८ फिरसम्पूर्ण विज्ञान को जाननेवाले और सर्वज्ञानमय बलदेव और कृष्ण ने शिष्य आचार्य्यकर्मको विख्यातकिया १९ काशीमें शीक्षित और अवंतीपुरबासी सांदीपनि आचार्य्य के पास बलदेव और श्रीकृष्ण शास्त्र पढ़नेके वास्ते गये २० और उसके शिष्यहोके अपने पराक्रमको प्रचार करतेहुये विचरनेलगे २१ निदान चौंसठदिनके भीतर उन्हों ने सब रहस्य और धनुर्वेद आदि पढ़लिया हे द्विजो यह बड़ा आश्चर्य्य हुआ २२ फिर सांदीपनी आचार्य्य ने उनके असम्भाव्य और अमानुष कर्म्म जानकेउनको चन्द्रमा और सूर्य्यमाना २३ जबउन्होंने सम्पूर्ण अस्त्रविद्या सीखली तब गुरुसेबोले कि महाराज आप कुछ दक्षिणामांगो २४ और आचार्य्य ने उनके देवकर्मजानके लवणसमुद्रमें मरेहुयेपुत्रकोमांगा २५ निदान गुरुदक्षिणाके लिये वे दोनों अपने अस्त्रों को ग्रहणकर समुद्रके पासगये और श्रीकृष्णने समुद्र

से कहा कि सांदिपनी का पुत्र तूने क्यों हरलिया २६ तब समुद्र कहनेलगा कि मुझमें एक पांचजन्य नाम वाला शंखरूपी दैत्यहै उसने वह बालक माराहै और वह शंख इसीजलमेंहै २७ यह सुनके श्रीकृष्णने जल में गोतामार पांचजन्यको मार उसमें उत्पन्नहुये शंख को ग्रहणकिया २८ जिसके शब्दसे दैत्यों के बलकी हानिहो देवताओं का तेज बढ़ताहै और अधर्म्म का नाशहो २९ फिर उस पांचजन्य शंखको बजा श्रीकृष्ण और बलदेवने धर्मराय के पुरमें जा यमको जीत ३० उस बालकको उसीशरीरसे सापुष्टकर उसके पिता सांदीपनीको दिया ३१ इसकेउपरान्त वे उग्रसेनसे पाली हुई मथुरापुरी में आये और ३२ अस्ति और प्राप्ति नामिनी कंसकी स्त्रियोंने जरासंधके आगे जा कृष्ण द्वारा भर्त्ताके मरणका समाचार सुनाया ३३ तब मगध देशके पति जरासन्ध राजा ने यादवों सहित कृष्णको मारनेकेलिये ३४ तेईस अक्षौहिणी सेनालेकरके मथुरा कोघेरलिया ३५ और थोड़ेसे यादवोंको लेकर बलदेव और कृष्ण बाहर निकलके समस्त सेनाके योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेलगे ३६ कृष्ण और बलदेव ने पुराने शस्त्रोंके चलानेकी सम्मतिकी ३७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांगुरुपुत्रानयनंजरासन्धो धर्मंचनामषडशीतितमोऽध्यायः ८६॥

सत्तासीवां अध्याय॥

व्यासजी कहनेलगे कि अक्षय बाणोंवाले धनुषको तो श्रीकृष्णने चढ़ाया और हल तथा मूसलको बलदेव

जी चलानेलगे १ और उन दोनोंने युद्धमें जरासन्धकी सेनाकोजीतके मथुरापुरीमें प्रवेशकिया२जब श्रीकृष्ण जीतके लौटआये तब सेनासे युक्तहो जरासंध फिर युद्ध करनेकेवास्ते आया३ और हे द्विजोत्तमो फिरभी बलदेव और कृष्णने उसेजीतलिया ऐसेही जबउसे सत्रहबार जीतलिया तब अठारहवींबारभी वहदुर्मदराजा४कृष्ण आदि यादवोंके सङ्ग युद्धकरनेको उद्यतहुआ पर यादवोंने उसे फिरभी युद्धमें हरादिया ५ तब हाराहुआ जरासन्ध थोड़ीसी सेनाको लिये उसीतरह मनुष्य देह कीचेष्टा को करताहुआ ६ अपनी लीला से जगत्में स्थित होनेवाले कृष्णकेसङ्ग युद्धकरनेलगा ७ मनुष्य धर्ममेंलीन जगतोंके पति चक्रधारीविष्णुके अंशसे उत्पन्नहुये कृष्णके माहात्म्यको कौनजानताहै ८ औरजो अनेकप्रकारके शस्त्रोंको छोड़ताहै और जगत्की रचना तथा संहार करताहै उसके पराजित करने में कौन समर्थहै ९ तथापि जो मनुष्य धर्मोंके अनुसार वर्त्तते हैं वे बलवालोंके सङ्ग युद्धभी करतेहैं १० और साम दाम दण्ड भेदकोभी करतेहैं और कहीं भागभी पड़तेहैं ११ वेदव्यासजीने कहा कि एकसमय गोशालामें बैठहुये गार्गेय अर्थात् गर्गकुलमें होनेवाले ब्राह्मणको उसके शालेने १२ कहा कि यहनपुंसकहै इसपर सबयादव हँस उठे १३ और वह गार्गेयद्विज क्रोधयुक्तहो दक्षिणमें जाकर उत्तमतप करनेलगा जिससे यादवोंको दुःखहो १४ उसने महादेवका आराधन करतेबहुत दिनोंकेवललोहा केचूर्णकोही भक्षण किया तब प्रसन्नहोकर शिवजी ने

बारहें बर्ष उसे बरदिया १५ निदान एकसमय किसी यवनेश्वर राजाने उस ब्राह्मणको भोजन कराया और इस द्विजके सकाशसे उस यवनकीस्त्री के बज्रकेसमान एक पुत्रहुआ १६ तब उस यवनेश्वरने उसका कालयवननाम रक्खा और उसको राजदेके आप बनमें चलागया १७ निदान वीर्य तथा मद से उनमत्त कालयवन पृथ्वीके बलवान् राजाओं को पूछनेलगा और नारदने यादवोंको बतलाया १८ नारदसेऐसासुनकोटि सहस्रम्लेच्छों और हस्ती अश्व रथ पियादे आदिकोंसे युक्तहो वहयादवोंकी तरफ१९ वायुकीतरह दिन प्रतिदिन बेगसे आकर मथुरापुरीके नजदीकआया २० तब श्रीकृष्णने यादवोंकोक्षीणहोते और मागधसेनापतिके सङ्ग यवनेश्वरको यादवोंको मारनेकेलियेआतेदेख यह विचारकिया कि२१।२२ इसमें यदुवोंकेवास्ते एकऐसा दुर्जयदुर्ग बनाऊँ२३जहां स्त्रीभी युद्धकरलेवें यादवोंका तो कहनाही क्या है और मैं यदि मद में हों अथवा सोताहूँ वा बिदेशगयाहूँ तबभी यादवों का तिरस्कार बलाधिक दुष्ट न करसकें२४गोविन्दने ऐसे चिन्तवन करके समुद्र से बारह योजन पृथ्वी द्वारकापुरी रचने के वास्ते मांगी २५ और उसपर महान् बगीचों ऊँची खाहीं सैकड़ों तलावों और किलेसेयुक्त ऐसी पुरीरची मानों इन्द्रकी अमरावतीपुरीहो २६ निदान मथुरावासी मनुष्यों को वहां बसाकर जब कालयवन के आनेका समय समीपआया तब आप मथुरापुरी में आये २७ और मथुराके बाहर सेना इकट्ठीहोनेके समय शस्त्रोंके

बिना मथुरासे बाहरनिकले २८ तब कालयवन उन्हें देख और वासुदेव श्रीकृष्णजान उनकीतरफचला जो योगियोंके चित्तकोभी नहीं प्राप्तहोते २९ फिर श्रीकृष्ण और वह दोनों चलते २ एक महान् गुहामें पहुँचे जहां एक अति पराक्रमवाला राजा सोरहाथा ३० निदान वह दुर्मति कालयवनभी उनके पीछे २ गया और उस राजाको कृष्णजानके एकलात मारी ३१ जिससे वह राजाजागउठा और उसके देखनेहीसे कालयवन उसके क्रोधकी अग्निसेजलके क्षणमें भस्महोगया ३२ क्योंकि उस राजाने देवतों और दैत्योंके युद्धमें दैत्योंको जीतके देवतों से यह बरमांगाथा कि मैं सोऊँगा ३३ और देवताओंने यह वरदान दियाथा कि तुझको सोतेहुये जो उठावेगा वह तेरे शरीरसे उपजी अग्निसे तत्कालही भस्महोजावेगा ३४ ऐसे उसपापीको दग्ध कर और श्रीकृष्णकोदेख वह बोला कि तू कौनहै तब श्रीकृष्ण बोले कि मैं चन्द्रबंशमें जन्माहूँ ३५ वसुदेव का पुत्रहूँ और यदुबंशमेंहूँ यह सुनके मुचकुन्दभी गर्ग के वचनोंका स्मरणकर ३६ इससर्वेश्वर हरिको प्रणाम कर कहनेलगा कि मैंने आपको जानलिया आपविष्णु के अंशसे उपजेहुये परमेश्वरहो पहले गर्गजीने कहा था कि अष्टाविंशति युगके ३७ द्वापरके अन्तमें यदुबंशमें हरिकाजन्म होवेगा सो आपमेरे उपकार करने वाले प्राप्तहुयेहो इसमेंसंदेह नहींहै ३८ आपके महान् तेजसे मैंपूर्णहूँ ३९ मेघकेशब्दसरीखा नादवाला आपका वाक्यहै और आपके पैरोंसे पीड़ित पृथ्वी नीचे

को नमतीहै ४० जैसे देवतों और दैत्योंके महान् युद्ध
में मेरेतेजको दैत्यसेनाके योद्धान सहसके तैसेही आप
केतेजको मैं नहीं सहसक्काहूं ४१ आप संसारके पति
हो और जीवोंके रक्षकहो मेरेऊपर प्रसन्नहोके मेरेपापों
को हरो ४२ आपही समुद्रहो और आपही पर्वत तथा
नदियां हो पृथ्वी आकाश जल वायु अग्नि मन ४३
बुद्धि आत्मा हित प्राण ये सब तुम्हारेही रूपहैं और
आप विशेषकरके पुमान्हो और जो२ परतरहैं व्याप्य
तथा जन्म विकल्प हैं ४४ शब्दादि हीन अजर और
क्षयसे रहित ममता ये सब आपहीहो और आपहीसे
देवते पितर यक्ष गन्धर्व किन्नर ४५ सिद्ध अप्सरा म-
नुष्य पशु पक्षी सर्प बीछू मृग येसब उत्पन्नहोतेहैं ४६
जो भूत भविष्यत्किंचित् चराचरहै तथा जो कुछमूर्त्ति
सेरहित वा मूर्त्तिमान् स्थूल सूक्ष्महै ४७ सो सब आप
हीहो आप जगत्के कर्त्ताबिना कुछभी नहीं है संसार
चक्रमें भ्रमतेहुयेमेरे ४८ तीनप्रकारके सन्तापोंको दूर
करनेवाले आप मिले हो मुझको मूढ़दृष्टि से दुःखही
सुख दीखतेहैं ४९ हे नाथ मैंने दुःखरूप सेना खजाना
मित्र पक्षवाद पुत्र ये सबसंग्रह कररक्खे हैं ५० हे प्रभो
भार्य्या भृत्यजन शब्दादि विषय ये सब मैंने सुख बुद्धि
सेग्रहणकरलिये हैं ५१ और हे देवेश परिणामसे यह
सब मेरेप्राणपातात्मक होरहे हैं हे नाथ मैं देवलोकगति
को प्राप्तहोगया और देवगणों ने ५२ कहीं २ मुझसे
सहायली पर हे परमेश्वर आपके आराधनबिना ५३
अचल निवृत्ति न प्राप्तहुई तुम्हारी माया से मूढ़ हो

जन्म मृत्यु और जराको प्राप्तहो मनुष्य धर्म्मराय को देखता है ५४ और तुम्हारे रूपको जाने बिना सैकड़ों क्रियाओं से युक्त दारुण नरकमें दुःखभोगताहै ५५ मैं अत्यन्तविषयी और आपकी मायासे मोहितहूं हे परमेश्वर ममतारूपी मकानकेभीतर मैंभ्रमताहूं ५६ इसलिये मैं आप परम ईशरूपी आपकी शरणहूं तुम्हारे परमपदके शरणहोने से मनुष्य संसार श्रमके तापसे छूटजाताहै ५७ वेदव्यासजीनेकहा कि इसप्रकार बुद्धिमान् मुचुकुन्दसे स्तुतहो सब भूतोंके ईश अनादि हरि भगवान् बोले कि ५८ मेरे प्रसादसे हे राजन् तू जैसे दिव्य लोकोंकी वाञ्छा करताहै उनमें अव्याहत परम ऐश्वर्य्यवालाहो ५९ दिव्यभोगोंको भोग महान् कुल में उत्पन्नहोवेगा और मेरे प्रसाद से तुझको वहां भी स्मरणरहेगा पश्चात् मोक्षको प्राप्तहोजावेगा ६० वेदव्यासजी बोले कि यह सुनके वह नृप जगतोंके ईश भगवान्को प्रणामकर ६१ उसगुलगुफासे बाहरनिकल और छोटे२मनुष्योंको देख ६२ कलियुग आया जान नरनारायणके स्थानमें गन्धमादनपर्वतको चलागया ६३ और श्रीकृष्णने उस शत्रुकोमार और उसकीसेना को ले मथुरामें होतेहुये हस्ती अश्व उज्ज्वल रथ ६४ सब लाके द्वारकापुरीमें उग्रसेनको अर्प्पण किये तबसे यादवोंका कुल पराजयसे निःशंकहोगया ६५ ब्रह्माजी ने कहा कि हेविप्रेन्द्रो फिर जब सबबिग्रह शान्तहोगये तब बलदेवजी जीतिके बंधुओंके दर्शनकी उत्कण्ठा से गोकुलमें आये ६६ और गोपी व गोप उनसे बड़ेप्रेमसे

मिले ६७ कोई गोपी गृहकार्य्यको त्यागके मिली और कोई बलदेवकेसंग हासकरनेलगी ६८ हलायुध बलदेव गोपोंसे अनेक प्रियवचन कहनेलगे और गोपीभी प्रेम से कुपित ईर्षासहित टेढ़े वचन बोलनेलगीं ६९ गोपियोंने पूछा कि शहरके मनुष्यों से प्यारकरनेवाला और प्रेममें लीन कृष्णतो सुखसे है ७० और हमारी इसदशाको सहनकरके कभी मथुरा नगरकी स्त्रियोंको सौभाग्यमान करताहै ७१ वह कभी प्रीतिके साथ अपने कुलकाभी स्मरण करताहै और कभी अपनी माताके दर्शनकरनेकोभी एकबार आवेगा ७२ अथवा तिन अपने आलापोंकी कथाको फिरभी कभी सुनावेंगे कि नहीं माता पिता भ्राता भर्त्ता बन्धुजनोंको त्याग हमेंतो वही प्रियथा ७३ पर वह अकृतज्ञहै तोभी अपने आलापोंका यहां सङ्गम करेगा कि नहीं कृष्ण जो करता है सो आप सत्य २ कहो ७४ वह दामोदर मथुराकी स्त्रियोंमें आसक्त मनकिये हमारी प्रीतिकी क्या दुर्दशा कररहाहै ७५ व्यासजी बोले कि फिर वे गोपी हे कृष्ण हे दामोदर तू आमन्त्रितहै ऐसे कहके ऊँचेस्वरसे हँसनेलगीं ७६ फिर श्रीकृष्णके अमित मनोहरप्रेमसे गर्वित संदेशों से वे बलदेव को समझानेलगीं ७७ और पहले की तरह मनोहर हास और विचित्र कथाओंसे रमण करती रहीं ७८ व्यासजी बोले कि इसप्रकार वृन्दाबनमें विचरते और गोपियों के संग रमणकरते मनुष्य रूप से ढकेहुये शेषरूप ७९ बलदेव के अति उपभोगके वास्ते ८० बरुणजीने अपनी बारुणी से कहा कि

हे शुभे तू अनन्तके उपभोगके वास्ते गमनकर ८१ ॥
इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांबलदेवसहगोप्यालापनंनाम सप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि कुबेरकी आज्ञापाकर बारुणीवृन्दावनमें कदम्बके कोटरमें उत्पन्नहुई १ और बलदेवजीने विचरतेहुये मदिराकी गन्धपाके पुरातन हर्षकोप्राप्तहो २ कदम्बको मध्यसे काटा और उसमेंसे निकलती हुई मदिराकोदेख परमआनन्दको प्राप्तहुये ३ निदान मदिराको पानकर गोपगोपियोंकेसंग आनन्दसे अति सुन्दर गीतगाते तथा वाद्यबजातेहुये ४ कलीकीतरह खिलेहुये बलदेवने यमुनानदीको अपने समीप बुलाया पर यमुनाने उनकावचन नहींमाना ५ तब क्रोधसे हल को ग्रहणकर और मद से विह्वल हो बलदेव ने बड़के समीप तिसनदीको खींचा ६ और यह कहा कि अब इस पापसे आवेगी कि नहीं इस प्रकार बलदेव द्वारा खींचीहुई यमुना मार्गकोत्याग ७ जहां बलदेवथे तहां बहनेलगी और शरीरको धारणकर त्राससे विह्वल हो ८ यह कहनेलगी कि हे हलायुध आप प्रसन्नहो और मुझको छोड़दो तब बलदेवजी बोले कि तू मेरे बलको नहीं जानती है ९ इसवास्ते मैं तुझको हलसे हजारों प्रकारसे नवाऊँगा १० व्यासजीने कहा कि जब यमुना नदी अति त्रासितहुई ११ तब बलदेवजी ने पृथ्वीमें छोड़के उसे फैलादिया और उसमें स्नानकरनेसे महात्मा बलदेवकी अति कान्ति हुई १२ निदान वरुण ने

आकर बलदेवको आभूषण कमल कुण्डल निर्मल कमलोंकी माला समुद्रके जलमें धोयेहुये नीलेबस्त्र १३ और लक्ष्मीभेटकी तब वह बलदेवजी आभूषणों और सुन्दर कुण्डल से भूषितहो नीलाम्बर तथा मालाको धारणकिये कान्तिसे युक्त अति शोभितहुये १४ और ब्रजमें रमणकरते दोमहीने बासकर पश्चात् मथुरापुरी में लौटआये १५ और रैवतराजा की पुत्री रेवती को प्राप्तहो रमण करतेरहे १६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांयमुनाकर्षणंनाम अष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि बिदर्भदेश के कुण्डिनपुरके राजा भीष्मकके रुक्मीनामक पुत्र और रुक्मिणी पुत्रीथी १ सुन्दर हास्यवाली रुक्मिणी ने श्रीकृष्ण के बिवाह की इच्छाकी पर रुक्मी के बैरसे उसका सम्बन्ध श्रीकृष्ण के साथ राजाने स्वीकार नहींकिया २ जरासन्धकी प्रेरणासे शिशुपालसे उसके बिवाहकीठहरी और रुक्मी कीभी यही सलाहहुई ३ निदान बिवाहकेवास्ते जरासन्ध आदि सब राजे शिशुपाल के हित की इच्छासे भीष्मककेपुरमें आये ४ और श्रीकृष्णभी बलदेवआदि यादवोंसहित बिवाह देखनेके वास्ते कुण्डिनपुरमें आगये ५ बिवाहसे एकदिन पहले हरिभगवान् उसकन्या को हरके बलदेवआदि क्षत्रबंधुओंमें आमिले ६ और पौंड्रकराजा दन्तवक्र बिदूरथ शिशुपाल जरासंध और शाल्वआदिक राजे येहालसुन ७ कुपितहो हरिके मार-

नेका उद्योगकरने और यह कहनेलगे कि बलदेव आदिक यादवोंसेहारेहुये हम ८ कुण्डिनपुरमें न प्रवेशकरेंगे पहले कृष्णको मारेंगे यह प्रतिज्ञाकरके वे श्रीकृष्णको मारनेदौड़े ९ पर चक्रीभगवान् ने अपनी लीलाकरके अश्व पियादे रथ इत्यादिक सेनाकोमार १० रुक्मिणी से राक्षसबिवाहकिया ११ और उससेकामदेव के अंशवालावीर्य्यवान् प्रद्युम्न पैदाहुआ जिसको पहले शम्बर दैत्यहरलेगयापरपीछेसेउसनेशम्बरकोमारडाला १२॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांकृष्णचरित्रेरुक्मिणीहरणं प्रद्युम्नोत्पत्तिनामैकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्बेवां अध्याय ॥

मुनियोंने पूछा कि शम्बरदैत्यसे हतहुये प्रद्युम्न ने फिर महापराक्रमवाले शंबरको कैसेमारा १ वेदव्यास जीनेकहा कि शंबरदैत्य यहमानके कि यह मुझे मारने वाला है जन्म से छठे दिन सूतिका घरसे प्रद्युम्न को उठालेगया २ और बहुत दूर लेजाकर समुद्र में फेंक दिया जहां उस मकरालय समुद्रमें उसे ३ एकमत्स्यने लीललिया निदान उस मच्छको एक व्याध ने और मच्छोंकेसाथ पकड़ ४ शम्बरकोदिया और सबगुणों से युक्त ५ रतीनामवाली शम्बरदैत्यकी स्त्रीने उस मत्स्य केउदरको फाड़ा ६ तो उसमें एक अतिसुन्दर बालक को देख आश्चर्य करनेलगी ७ कि यह कौनहै और मच्छके उदरमें कैसेआया उसीअवसर में नारदमुनिने आकर उससेकहा ८ कि यहसब जगतोंकी स्थिति तथा संहार करनेवाले श्रीकृष्ण का पुत्रहै शम्बर ने इसको

सूतिका घरसेलाके समुद्रमें डालदियाथा ९ और इस मच्छने निगललियाथा अब यह तुझको प्राप्त हुआहै इसलिये इस नवीन रत्नको तू विश्वास से रहितहोके पाल १० व्यासजीनेकहा कि नारदसे यहसुन वह उस बालकको पालनेलगी और उसकी बाल्यअवस्था के रूपरागसे अतिमोहित हुई ११ जब वह यौवनसे भूषित अंगवालाहुआ तब रती अभिलाषासहित गजगामिनीभई १२ और उस महात्माकेलिये अपनी सब मायाको दे हृदयमें कुछ इच्छाकरनेलगी १३ और वह कमलसरीखे नेत्रोंवाला प्रद्युम्न उसप्रेमिनीसे कहनेलगा कि तू माताभाव त्यागके ऐसे अन्यथा क्योंवर्त्ततीहै १४ वह बोली कि तू मेरापुत्र नहींहै तुझको तो कृष्णकेघर से कालरूप शम्बरने हरलाकर १५ समुद्रमें फेंकदिया था और एकमच्छके उदरसे मैंने तुझेपायाहै तेरीमाता तो अतिवत्सला रुदन करतीहोगी १६ व्यासजीने कहा कि यह सुनकर प्रद्युम्नक्रोधसे आकुलहो शम्बरकेसंग युद्धकरनेलगा १७ और सबसेनाका हननकरके अपनी मायासे शम्बर दैत्यको आश्विन महीनेकी अष्टमीके दिनमार १८ रतीसहित अपनेपिताकेपुरमें आया रती केसंग आतेप्रद्युम्नको देख १९ कृष्णकी सबस्त्री प्रसन्न भईं २० और रुक्मिणी प्रेमसे अश्रुपूर्ण दृष्टिसहित आनन्दितहोबोली कि मैं धन्यहूं क्योंकि मेरे ऐसापुत्रहै २१ और इसअवस्थामें जो मेरा प्रद्युम्नपुत्र जीताहै हे पुत्र मैं भाग्यवती हूं और तुझसे विभूषितहूं २२ इस अवस्थामें ऐसे स्नेहवाले हरिका तू पुत्रहोवेगा २३ वेद-

व्यासजी ने कहा कि इसके अन्तर कृष्णकेसंग नारद मुनिआये और महलकेभीतर रुक्मिणीको हर्षितकरते बोले २४ कि हे सुभ्रु तेरापुत्रअब अपनेपुरमें आयाहै जिसने तेरे घरसे यह बालक हराथा २५ उसकी यह मायावती भार्या तेरेपुत्रकीभार्याहै शम्बरकी भार्या नहीं है २६ मन्मथके अनुगमनसे उसकी उत्पत्तिमें परायण इसरूपिणीने शम्बरको मायारूपसे मोहितकिया २७ और बिवाह आदिक उपभोगों में अपने शुभरूपको मायासे दिखाया २८ परइस रतिस्त्री का पति यहतेरा पुत्रहीहै और यह शोभनातेरी पुत्रबधूहै २९ यहसुन हर्षयुक्तहो केशवभगवान् और समस्तनगरी रुक्मिणी को साधुसाधु कहनेलगे ३० और चिरकालकेवियोगी पुत्रकोदेख रुक्मिणी और द्वारकापुरीके सब मनुष्य विस्मयको प्राप्तहुये ३१ व्यास ने कहा कि फिर रुक्मिणीके चारुदेष्ण सुदेष्ण चारुदेह सुषेण चारुगुप्त भद्रचारुचारुविन्द सुचारु चारुरुच आदिपुत्र और चारुमतीकन्या उपजे ३२ और कृष्णकी अन्यभार्याभी अतिशोभना हुई मित्राबिन्दा कालिन्दी सत्या नाग्निजिती ३३ देवी जाम्बवती सदातुष्टा रोहिणी भद्र राजसुता सुशीला अतिमंडना ३४ सात्राजिती सत्यभामा लक्षणा चारुहासिनीआदि सोलहहजारस्त्री श्रीकृष्णकेथीं ३५ महान् पराक्रमवाले प्रद्युम्नने स्वयम्बर में रुक्मिकी पुत्रीको बरा ३६ तिससे महान्पराक्रमी अनिरुद्धनामक बैरियों को शान्तकरनेवालापुत्र पैदाहुआ ३७ तिसको रुक्मी की पोती बिवाहीगई ३८ और उसके [illegible]

देव आदिक यादव कृष्णके संग रुक्मी के नगरमें गये
३९ जब अनिरुद्धका बिवाह होचुका तब कलिंगराज
आदिराजे रुक्मीसे कहनेलगे ४० कि बलदेवजी पासे
खेलनेमें चतुर नहीं हैं पर महान् व्यसनवाले हैं इस-
लिये इनको हम जूवेमें हरावेंगे ४१ व्यासजीने कहा
कि यह सलाहकर बलसे युक्तहो रुक्मी सभा में बल-
देवकेसंग जूवाखेलनेलगा ४२ और हजारभार सोना
रुक्मीने बलदेवसे प्रथमही जीतलिया फिर दूसरेबार
हजारभार और जीतलिया ४३ तब दशहजार भार
सोना एकदांवपर बलदेव ने लगाया जीत लिया तब
द्यूतविशारद रुक्मी ४४ मदोन्मत्त हुआ मूढ़की तरह
हँसताहुआ बोला कि ४५ बलदेव विद्यासे रहित है
और पासोंके खेलने में चतुर नहींहै ४६ कलिंगराज
रुक्मीको हँसते और खोटेवचन कहतेदेख हलायुधने
क्रोध किया ४७ और रुक्मी पासों को फेंक ऊँचेस्वर
से कहनेलगा कि मुझे बलदेवने जीतलिया ४८ ऐसे
ही अनेक उक्तियोंसे जब रुक्मीने कहा कि मुझको ब-
लदेव ने जीता ४९ तब बलदेव ने कहा कि तूने झूठ
वचनकहकर दांवलियाहै यहअच्छानहींहै ५० तब अ-
तिगम्भीर बलदेवके अभिमानको बढ़ातीहुई आकाश
वाणी हुई ५१ कि बलदेव जीताहै और रुक्मी झूठ
बोलताहै पर कहनेसे नहींहोता कर्म तो करनेसे होता
है ५२ निदान बलदेव ने क्रोधसे खड़ेहोके आठलातें
रुक्मीकोमारीं और पकड़कर ५३ जिनदांतोंसे वह हँसा
था उनदांतोंको ... एवम् महान् हलको ग्रहणकर ५४

जो२ उसके पक्षके राजेथे उन्हेंभी मारा और वे हाहाकार करतेहुये वहां से भागे५५ इसप्रकार जब बलदेव के क्रोधसे वह राजमण्डल हतहुआ तब रुक्मीके मारे जानेका हालसुन५६श्रीकृष्ण भगवान् रुक्मिणी और बलदेवके भयसे कुछभी न बोले ५७ और बलदेवजी अनिरुद्ध का बिवाह करवा के श्रीकृष्ण और यादवों समेत द्वारकाको लौटआये ५८॥

श्रीआदिब्रह्मपुराणेऽनिरुद्धबिवाहेरुक्मीबधोनवतितमोध्यायः९०

इक्यानबेवां अध्याय॥

व्यासजी ने कहा उनके द्वारकामें लौटआने के पश्चात् त्रिभुवनेश्वर इन्द्र ऐरावतहस्तीपर चढ़के द्वारकापुरी में श्रीकृष्ण से मिलनेके वास्ते आया १ और श्रीकृष्ण से मिलकर बोला २ कि हे श्रीकृष्ण आपने मनुष्यशरीरसे स्थितहुये सब देवतोंके दुःखोंकी शांति करदी३तपस्वीजनोंकेनाशकरनेवाले अरिष्टदैत्य धेनुक प्रलम्ब केशी आदि सबको हनन किया ४ और कंस कुबलयापीड़ हस्ती बालघातिनी पूतना आदि जगत् के अन्य उपद्रव आपने शांत करदिये५आप त्रिलोकी में रक्षा करनेवाले हो और यज्ञके अंशरूप तुमसे देवतोंकी तृप्ति होती है ६ हे जनार्द्दन जिस निमित्त अब मैं आया हूं उसको सुनके उस बैरका बदला लेने को आप समर्थहो ७ हे अरिंदम प्राग्ज्योतिषपुरका ईश्वर नरकासुर सब प्राणियों का तिरस्कार करता है ८ देव सिद्ध नृपआदिको जीतके उसने अपने मन्दिरमें उनकी कन्या रोकरक्खी हैं ९ और कांचनस्रावि छत्रको उसने

वरुणसे छीनलिया मन्दराचल पर्वत के शिखरको हर लिया १० अमृतस्रावी दिव्य अमृतनामवाले कुंडलों को हरलिया और अब ऐरावतहस्ती लेने की बाञ्छा करता है ११ हे गोविन्द उसकी यह दुर्नीति मैंने कही है अब जो कर्त्तव्यहै वह आप विचारो १२ वेदव्यास जी कहनेलगे कि यह सुनके देवकीसुत भगवान् हँसके इन्द्रका हाथ पकड़ बरासनसे उठे १३ और इंद्रको बिदाकर आप आकाशगामी गरुड़पर चढ़ सत्यभामा को संगले प्राग्ज्योतिषपुरमें गये १४ जो चारोंतरफ से सौ योजनथा और उसकेचारोंतरफ१५।१६दैत्योंने फांसी बनारक्खीथीं ऐसे तिसपुरकोदेख भगवान्ने सुदर्शनचक्रको फेंका१७और मुरुदैत्यकोमार अनेक राजाओं की१८सातहजार कन्याओं को छुड़ाया जब उनदैत्यों को चक्रधारासे टीड़ियों की तरह भगवान्ने मारा १९ तब महान्हयग्रीव पंचनदआदि दैत्य प्राग्ज्योतिषपुर कोत्यागकेभागे२० और नरकासुरसहित उसकीसेना के संग श्रीकृष्णका युद्ध होनेलगा निदान श्रीकृष्ण ने अनेक दैत्योंको मार २१ अपने चक्रसे भौमासुर और नरकासुरदैत्योंकोभी हननकिया२२नरकासुर भौमासुर दैत्योंके हतहोनेकेपीछे पृथ्वी दितिके कुण्डलोंको ग्रहण कर जगन्नाथ श्रीकृष्णके सामनेआकर कहनेलगी कि २३ हेजगन्नाथ जब शूकररूप धरके आपने मुझको उद्धारकियाथा तब तुम्हारे स्पर्शसे यह पुत्र पैदाहुआ था २४ आपने यह पुत्र दियाथा और आपहीने हरलिया तो अब इनकुण्डलोंको ग्रहणकरो और इसकी

सन्तानको पालो २५ हे प्रभो भारउतारनेकेलिये देव अंशसे आप मेरीहीप्रसन्नताकेवास्ते उतरेहो २६ और कर्त्ता विकर्त्ता हर्त्ता प्रभु अविनाशी और जगतोंके स्वरूप आपहीहो २७ आपव्यापीहो व्याप्यक्रियाकेकर्त्ता हो और कार्य्यभीहो सो सर्वभूतात्मभूत आपकी क्या स्तुतिकरिये २८ आपपरमात्माहो आत्माहो भूतात्माहो और अबिनाशीहो और आपकीस्तुतिकरनेमें नहींआती है २९ हे सर्वभूतात्मन् आपप्रसन्नहो और नरकासुरने जोकियाहै उसे आपक्षमाकरो उसकेलिये यहीकर्त्तव्य था इसवास्ते आपने मारा ३० इतनीकथा कह व्यासजीने कहा कि भूतभावन भगवान्‌ने पृथ्वीकी यह प्रार्थना सुन कहा कि ऐसेही होगा ३१ पश्चात् अतुल पराक्रमवाले श्रीकृष्णभगवान्‌ने नरकासुरकेभुवनमें जा सोलहहजारएकसौ कन्याओं ३२ चतुर्दंतगज छःहजार अश्व और काम्बोजदेशके इक्कीसलाखअश्वों ३३ को देख उनकन्याओंको नरकासुरकेकिंकरोंकेसाथ द्वारकापुरीमें पहुँचाया ३४ और वरुणके छत्र और मणि पर्वतको गरुड़पर आरोपण कर ३५ सत्यभामा सहित दितिके कुण्डल देनेकेवास्ते स्वर्गकोगये ३६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेकृष्णचरिते नरकवधोनामएकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबेवां अध्याय ॥

व्यासजीने कहा कि जब गरुड़जीने वारुणछत्र मणि पर्वत और भार्य्यासहित श्रीकृष्णको अपनी लीलासे स्वर्गको पहुँचाया १ तब स्वर्गके द्वारपरजाके श्रीकृष्ण

ने अपने शंखको बजाया और शंखकी ध्वनिसुन इन्द्र आदिक देवते भगवान्केपासआप्राप्तहुये २ देवताओं से पूजितहो श्रीकृष्णने देव माता अदितिके भोडरके समान सफेद मकानोंकोदेख ३ इन्द्रकेसमेत प्रणामकर उत्तम कुण्डलोंको दिया और नरकासुरके वधकाहाल कहा ४ यह वृत्तान्तसुन प्रसन्नहुई जगन्माता अदिति शुद्धमनसे जगद्धाता हरि की स्तुति करनेलगी कि हे पुण्डरीकाक्ष भक्तोंको अभयकरनेवाले आपकोनमस्कार है हे भूतात्मन् हे सर्व्वात्मन् भूतभावन ५।६ हे प्राणभू आप मन बुद्धि और इन्द्रियों के गुणात्मकहो हे त्रिगुणातीत हेनिर्द्वन्द्व शुद्ध और सर्वहृदिस्थित ७ हे सम्पूर्ण कल्पनाओं से वर्जित जन्मादिकों से असंस्पृष्ट और स्वप्नादि परिवर्जित ८ सन्ध्या रात्री दिन भूमि आकाश वायु जल अग्नि मन बुद्धि ये सब आपकेही रूपहैं ९ सृष्टि स्थिति और विनाशके कर्त्ताहो कर्तृपतिहो और ब्रह्मा विष्णु शिवआदि आख्यातियोंवाले आत्ममूर्त्ति ईश्वर हो १० हे भगवन् मैंने अपने पुत्रके वैरियों के पक्ष के नाशके वास्ते आपका आराधन किया है मोक्ष के वास्ते नहींकिया ११ कल्पद्रुमसे यदि कोपीनआदि वस्त्रों की वांछा कीजाय तो यह अपराध सहित दोषज पुण्यक्षीण का लक्षण है १२ आप सब जगतोंपर माया से मोह करनेवाले हो मुझपर प्रसन्न हो हे भूतेश मेरे अज्ञान का नाश करो १३ और हे शंख चक्र शार्ङ्ग और गदा हस्त हे विष्णो आपको नमस्कार है १४ स्थूल चिह्नसे उपलक्षित आपके इस रूपको मैं नहीं जानती

आप प्रसन्न हो १५ इतनी कथा सुनाकर वेदव्यासजी बोले कि ऐसे अदिति द्वारा स्तुतहोके विष्णु भगवान् सुरारणि से बोले १६ कि हे मातर्देवि तू हम पर प्रसन्नहो और वर देनेवाली हो १७ अदितिने कहा कि ऐसेही होवेगा आप देवतों और असुरोंसेभी अपनी मायाद्वारा अजेयहोगे और मृत्युलोकमें पुरुषोंमें सिंहरूपहोगे १८ फिर इन्द्रसहित अदितिको सत्यभामाने बारम्बार प्रणामकरके कहा कि तू प्रसन्नहो १९ अदिति कहनेलगी कि हे सुभ्रू मेरी प्रसन्नतासे तुझे बुढ़ापा न आवेगा और तू सुन्दर अङ्गवाली और सर्वकामनाओं को सिद्धकरनेवालीहोगी २० वेदव्यासजी कहनेलगे कि अदितिसे कृतानुज्ञहुये देवराज इन्द्र ने फिर श्रीकृष्ण को बहुमानसे पूजनकिया २१ और श्रीकृष्ण और सत्यभामाने देवताओंके सबसमूहोंको देख २२ सुगन्ध और मंजरियोंके समूहोंसेयुक्त नन्दनवनआदि बगीचों और सुन्दर प्रकारके ताम्रसमान पत्तोंसेयुक्त वृक्षों २३ और यक्ष नाग राक्षस सिद्ध पन्नग कूष्माण्ड पिशाच गंधर्व मनुष्यजाति २४ बीछू सर्प गुज बेल और सबप्रकारके तृणको देखा २५ तब स्थूल सूक्ष्म अतिसूक्ष्म देह भेद और माया के आश्रयसे उत्पन्नहुये २६ वृक्ष बोले कि हे ईश्वर परम मोहिनी यह आपकी अज्ञात माया है २७ जैसे मूढ़जन अनात्मामें अधिष्ठान आत्मा का निरोध करताहै और अहंकारसे पुरुषोंमें भार पैदाहोरहाहै २८ और जो कुछहै सो हे जगन्नाथ आप कीही माया है जो अपने धर्मसे आपका आराधन क-

रते हैं वे आत्मविमुक्तिके वास्ते सब मायासे पार उत-
रते हैं २९ ब्रह्माआदिक सबदेव मनुष्य और पशु सब
मायामोहके अन्धतमसे आवृत होरहे हैं ३० हे ईश्वर
आपकीमायासे मोहित पुरुष आपकाआराधनकर ना-
शमान कामनाओंकी इच्छाकरते हैं ३१ हे भगवन् इस
प्रकार आपकी माया फैलरही है ३२ हे जगन्नाथ जब
अमृत मथागयाथा तब उसकी विंदुसे सुवर्णके समान
बक्कलवाला यह कल्पवृक्ष आपकीही मायासे पैदा हुआ
था ३३ उसवृक्षको सत्यभामादेखके गोविंदसेकहनेलगी
कि आप इस वृक्षको द्वारकाको क्योंनहीं ले चलते ३४
जोतुम्हारे वचन सत्य हैं और सत्यकेवास्ते आप यत्न
करतेहो तो यहवृक्ष मेरेघरके वास्ते लेचलना चाहिये
३५ हे कृष्णजी आपनेपहलेकहाथा कि मुझकोजैसी तू
सत्याप्रियाहै तैसी जाम्बवती और रुक्मिणीनहींहै ३६
सो हे गोविन्द यहतो सत्यहै परन्तु आपने कुछउपचार
नहींकिया इसलिये यह कल्पवृक्ष मेरेघरका आभूषण
करनाचाहिये ३७ कि इसवृक्षकी मंजरीको मैं केशोंमें
धारण करतीहुई आपकी सपत्नियोंके मध्यमें शोभित
रहूं ३८ कि यहसुन भगवान् ने जब उस कल्पवृक्ष को
गरुड़पर आरोपणकिया ३९ तब बनकी रक्षाकरनेवाले
कृष्णसे कहनेलगे कि इंद्राणीकेपतिने इन्द्राणीकेवास्ते
इसेस्थित कररक्खाहै इसलिये हे गोविन्द इसको आप
मतहरो ४० इन्द्राणीके भूषणकेवास्ते देवताओं के अ-
मृतमथन समयमें यह उत्पादन कियागयाथा इसेलेके
तू क्षेमसेघर न जावेगा ४१ देवराजके मुखकोदेखके मूढ़-

पनेसे तू क्षेमकी इच्छाकरताहै और घरजानेको समर्थ नहींहै४२ हेकृष्ण तू निश्चय इंद्रद्वारा तिरस्कारकोप्राप्त होगा जबइन्द्र हाथमें वज्रउठाताहै तब देवतेभी इन्द्र के सङ्ग होजाते हैं ४३ और सम्पूर्ण देवताओं से युद्ध करके कुछभलानहीं बुद्धिमान् मनुष्यको ऐसाकर्म न करनाचाहिये ४४ यह सुनकर उनसे अतिकोपवाली सत्यभामाबोली कि ४५ इस कल्पवृक्षकी मालिकशची कौनहै और इन्द्रकौनहै यह अमृततो सबकेवास्ते सामान्यसे पैदाहुआहै ४६ देवते किससे पैदाहुये हैं जो अकेलाइंद्र इसेग्रहणकररहाहै जैसे सबदेवतेविशेषकर किसीके नहींहैं ४७ तैसेही यह कल्पवृक्षभी सामान्यसे सबकाहै अपनेभर्त्ताका भाग बतानेवाली शचीसे ४८ कहदेना कि क्षांतिमतकर सत्यभामा इसवृक्षको हरवा के लियेजातीहै ४९ यदि तू अतिगर्ववालीहै और तेरा भर्त्ता तेरेवशमेंहै तो ५० मेरेभर्त्ताको वृक्षहरतेहुये निवारणकरे स्वर्गकेपति उसकेभर्त्ताको मैं जानतीहूं ५१ और इसकल्पवृक्षकी कथाकोभी जानतीहूं इसलियेमैं मानुषी इसको हरवातीहूं ५२ व्यासजीने कहा कि यह सुनके बनरक्षा करनेवाले ने शचीसे जाकर सब हाल और शचीने इन्द्रसे उत्साह बढ़ाकेकहा ५३ तब इन्द्र सबदेवताओंकी सेनासे युक्तहो कृष्णसे कल्पवृक्ष लेनेके वास्ते युद्धकरनेको आया ५४ इन्द्रको इसप्रकार सुसज्जितहो युद्धकेवास्ते आतादेख श्रीकृष्णने दशोंदिशाओं में व्याप्तहोनेवाले शङ्खका शब्द किया ५५ और सैकड़ों हजारों बाणोंके समूहोंकोछोड़ सब दिशाओंको

बाणोंकी दृष्टिसे पूर्णकरदिया ५६ निदान सब देवतेभी अनेकप्रकारके शस्त्र अस्त्रोंकोले एकएकशस्त्रको हजारों बार छोड़नेलगे ५७ तब मधुसूदन भगवान्‌ने अपनी लीलासे उन्हें छेदनकिया वरुणकी फांसीको गरुड़जीने तोड़ा ५८ और धर्मरायके प्रेरेहुये दण्डको देवकीसुत भगवान्‌ने अपनीगदासे खण्डितकरके पृथ्वीमें गिरादिया ५९ फिर भगवान्‌ने कुबेरके प्रेरेहुये शिविरशस्त्र को अपनेचक्रसे खण्डितकर ६० और सूर्य्यको अपनी दृष्टिसे देख हतपराक्रम करदिया और सैकड़ों बाणोंसे भेदनकर अग्निको दशों दिशाओं से भगादिया ६१ चक्रसे कांधे छेदनकर रुद्रोंको पृथ्वीमें गिरादिया और साध्य विश्वेदेवा मरुद्गण गन्धर्व इत्यादिकोंको बाणोंसे व्याकुल करदिया ६२ निदान शार्ङ्गधनुषसेप्रेरित हाथों से श्रीकृष्णने और मुख और पक्षोंसे गरुड़ने ६३ सब देवताओंको ताड़नादी और विदारणकिया तब इन्द्र और मधुसूदन ने ६४ आपसमें ऐसा बाणयुद्ध किया मानों धारासहित मेघ वर्षताहो ऐरावत हस्तीके संग गरुड़ युद्धकरनेलगा ६५ और सब देवतोंसमेत इन्द्र के संग श्रीकृष्ण युद्ध करनेलगे जब सब शस्त्र कटगये तब ६६ इन्द्रने वज्रको और कृष्णने सुदर्शनचक्र को ग्रहणकिया और सबचराचरलोक हाहाकारकरनेलगा ६७ वज्रको ग्रहणकरे इन्द्रकोदेख हरिभगवान्‌ने इन्द्र के वज्रको छीनलिया ६८ और चक्रको न छोड़के कहने लगे कि तू नष्टवज्रवाला और गरुड़से हतबाहनवाला है ६९ भागने में तत्पर इन्द्रको देख सत्यभामा कहने

लगी कि हे त्रिलोकीके बलसेयुक्त इन्द्राणीकेभर्त्ता७०
विनाकल्पवृक्षके लेगयेहुये वह शची तुम्हको कैसेप्राप्त
होगी अर्थात् कैसे आदरकरेगी ७१ हे इन्द्र वहशची
कल्पवृक्षके देखेबिना प्राणों से हीन होजावेगी ७२ हे
इन्द्र तू खाली मतजा इस कल्पवृक्षको लेताजा और
देवते भी व्यथासे रहित होजावें ७३ पतिके गर्वसे ग-
र्वित शचीने बहुत मानबढ़ाके मुझेघरमें आने पर भी
न देखा ७४ पर हे इन्द्र मैं स्त्री भावसे गम्भीर चित्त
वाली नहींहूं इसवास्ते तेरेसंग मैंने यहयुद्ध कराया७५
मैं इस कल्पवृक्षसे तृप्तहूं तेरी भार्या शची भर्तृबलसे
गर्वित थी इसवास्ते यह विग्रह हुआ ७६ इतनी कथा
कह व्यासजी बोले कि जब सत्यभामाने ऐसे कहा तब
इन्द्र निवृत्तहो सत्यभामासे बोला कि हे चंडि अतिवि-
स्तृत खेदोंसे मैं तृप्तहूं ७७ रचना स्थिति और संहार
के कर्त्तासे हारनेमें मुझको क्या लज्जा है ७८ जिसमें
यह जगत् लीन होताहै और जिस अनादि मध्यवाले
बिना कुछपैदा नहीं होता उसउत्पत्ति प्रलय और पा-
लनके कारणरूपसे हारनेमें हे देवि कैसे लज्जाहो ७९
सकल भुवनकी मूर्त्ति सूक्ष्मरूप और सब वेदों से भी
अविदित एवम् जिसकी आद्य नहीं जानी जाती उस
अज अकृश ईश शाश्वत स्वेच्छा से वर्त्तमान आद्य
भगवान्को जाननेमें कौन समर्थ है ८० वेदव्यासजीने
कहा-कि इसप्रकार देवराजसे संस्तुतहो केशवभगवान्
ने गम्भीरभावहो इन्द्रसे हँसके कहा ८१ कि आप देव-
राज इन्द्रहो और मैं मृत्युलोकवासी मनुष्यहूं इसलिये

मैंने जो अपराधकिया है तिसको आप क्षमाकरो ८२
और यह कल्पवृक्ष शचीके स्थानको लेजावो मैंने तो
सत्यभामाके कहनेसे इसेग्रहण करलियाथा ८३ हेइंद्र
यह जो तेरा वज्र गिरपड़ाहै उसको तू ग्रहणकर क्योंकि
वैरियोंको विदारण करनेवाला यह अस्त्र तुम्हीही सोहत
है ८४ इन्द्र कहनेलगा कि हे ईश मैं मनुष्यहूं ऐसेकहके
क्या आप मुझको मोहतेहो मैं ऐश्वर्यवाले आपको जा-
नताहूं हमभी सूक्ष्मविद्हैं ८५ हेनाथ जो आपहो वही
हो आप जगत्की रक्षा करने में संस्थितहो आप इस
कल्पवृक्षको लेजाओ ८६ और द्वारकापुरी में स्थापित
करो आपकेसिवाय अन्यपुरुष इसको मर्त्यलोकमें नहीं
स्थापितकरसक्ता ८७ इतनीकथासुनाकर व्यासजीबोले
कि फिर हरिभगवान्ने इन्द्रसे यह कहके कि ऐसेही हो
सिद्ध गन्धर्व ऋषि आदिकों सहित पृथ्वीतल परआके
द्वारकापुरीमें प्राप्तहो अपने शंखको बजाया और द्वार-
कावासियोंको अतिहर्षितकिया ८८।८९ फिर सत्यभा-
मासहित गरुड़से उतर उस कल्पवृक्षको स्थापनकिया
९० जिसकेसमीपआके सब मनुष्य पूर्वजातिकास्मरण
करलेतेहैं और जिसके पुष्पोंकीगति पृथ्वीमें नहींगिर-
तीहै ९१ सब यादवोंने उसवृक्षमें गन्धर्व मनुष्यआदि
सबोंको देखा ९२ नरकासुर के स्थान से किंकरोंद्वारा
लायेहुये हस्ती अश्व और स्त्रियोंको श्रीकृष्णने ग्रहण
कर ९३ शुभकाल आनेसे उनकेसंग बिवाहकिया ९४
गोविन्द भगवान् ने उनके पृथक् २ गोत्रधर्म होने के
कारण अनेकरूप धरकर एकहीबेर उनका पाणिग्रहण

किया ९५।९६ और उन एकएक कन्याओंने यह जाना कि गोविन्दने मेरेहीसाथ विवाहकिया ९७निदान विश्व के रूपको धारणकरनेवाले हरि रात्रियों में उनकेघरोंमें बास करनेलगे ९८॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांकृष्णावतारचरितंपारिजातानयनं नामद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानवेवां अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि प्रद्युम्न आदि पुत्र रुक्मिणीके हुये भानु और भौमनिक सत्यभामाकेहुये १ दीप्तिमन्त प्रपक्ष आदि रोहिणी के पुत्रहुये महाबलवाले साम्ब आदिक बाहुशालिन् २ पुत्र भद्रविन्दाके हुये नाग्नि-जितिके महाबलवाले कईपुत्र पैदाभये सैव्यामें संग्रा-मजित् प्रधानपुत्र पैदाभया ३ सदा तुष्टाआदि स्त्रियों से अन्यपुत्र पैदाभये और लक्ष्मणा और कालिंदी इ-त्यादिक स्त्री भी पुत्रोंको प्राप्तभई ४ ऐसे उन आठों रानियोंमें हजारोंपुत्र पैदाभये तिनमें सबसेबड़ा पहले रुक्मिणीकापुत्र प्रद्युम्नभया ५ प्रद्युम्नसे अनिरुद्धपैदा हुआ और तिससे बज्रनामवाला पुत्रहुआ ६ महाबल वाले अनिरुद्ध ने बलिकी पोती बाणासुरकी पुत्री को बिवाहा और वहां हरि और शिवका घोरयुद्धहुआ ७ तब भगवान् ने बाणासुरकी हजार बाहुओं का छेदन किया ८ मुनियों ने प्रश्न किया कि हे ब्रह्मन् ऊषाके वास्ते शिव और कृष्णका युद्ध कैसेहुआ और हरिने बाणासुरकी बाहुओंका कैसे छेदनकिया ९ हे महाभाग यह सम्पूर्ण हमसे कहिये हमें इसकथाको सुनके बड़ा

आश्चर्य्यहुआ १० व्यासजीने कहा कि बाणासुरकी पुत्री ऊषा शिवजीसे पार्वती को क्रीड़ाकरतीहुई देख तदाश्चयहो बड़ी इच्छाकरनेलगी ११ तब सबके चित्तों को जाननेवाली पार्व्वती उससे बोली कि तू सन्ताप मतकर तुझको रत्नरूपी भर्त्ता मिलेगा १२ यह सुन उसने पूछा कि कब और कौन भर्त्ता मिलेगा तब पार्वती बोली १३ कि वैशाखकृष्णा द्वादशी के दिन जो तुझे स्वप्नमें दीखेगा वही तेराभर्त्ताहोगा और तू राजपुत्री होवेगी १४ निदान जैसे पार्वतीने कहाथा तैसेही उसतिथीको उसे स्वप्नहुआ और वह उससे बातेंकरने लगी १५ पर जब जागउठी तब उस पुरुषको न देख निर्ल्लज्जहो सखीसे बोली कि तूकहांगया १६ बाणासुरके कुम्भांडनाम मंत्री की चित्रलेखानाम पुत्री जो वहांथी बोली कि तू किससे बातेंकरती है १७ तबऊषा ने लज्जासे आकुल होके जो कुछ स्वप्नमें इसके आगे बार्त्ताकहीथी तिसका १८ विदितअर्त्थ उससे कहा और पार्वतीने जोकहाथा सोभीकहा १९ तब चित्रलेखासखी ने सब देवताओं दैत्यों और मनुष्योंके चित्रोंको पट्ट पर लिखके उसे दिखाया २० और ऊषा ने गन्धर्व्वों दिव्य सर्प्प देवताओं दैत्यों को त्याग के मनुष्यों में दृष्टिदे अन्धक और यादवोंमें दृष्टिलगाई २१ निदान बलदेव और कृष्णको देखके वह लज्जा युक्तहुई और प्रद्युम्नको देख लज्जासे व्याकुलहोगई २२ फिर जबप्रद्युम्नकेपुत्रकोदेखा तो अतिखिलके और लज्जासे व्याकुलहो २३ बोली कि यही मेरापति है उसकी यहबात

सुन योगगामिनी चित्रलेखा ऊषाको समझाके द्वारका-
पुरीकोगई २४ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वप्नदर्शनन्नाम
त्रिनवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

चौरानबेवां अध्याय ॥

इतनीकथासुनाकर वेदव्यासजी बोले कि एकसमय बाणासुरने शिवजीको प्रणामकरके कहा कि हे देव युद्ध केबिना मैं हजारबाहुओंसे दुःखीहूं १ कोई मनुष्यमेरी इनबाहुओं को सफलभी करेगा युद्धकरेबिना तो मेरी यहभुजा भारहीहैं २ बाणासुरकी यह बातसुन शिवजीने कहा कि हे बाणासुर जबतेरी मयूरकी ध्वजा टूटजावेगी तब तू आनंदको प्राप्त होवेगा ३ निदान शिवको प्रणाम करबाणासुरअपने घरलौटआया। और टूटीहुईध्वजाको देख अतिप्रसन्न हुआ ४ तिसीसमय योगविद्यावाली चित्रलेखा अप्सरा अनिरुद्ध को द्वारकासे लेआई ५ और महलमेंऊषाकेसङ्गरमणकरतेहुये अनिरुद्धको रक्षा करनेवालोंनेदेखके राजासेजाकहा ६ किंकरोंसे यहसुन बाणासुर लोहकामूसललेके अनिरुद्धके मारनेको आया ७ और उसके बधके वास्ते उद्यतहो रथमें बैठ अपनी बाहुओंकेबलसे युद्ध करनेलगा ८ और मंत्रीकी प्रेरणा से बाणासुरने अनिरुद्धको नागपाशमें बांध लिया ९ निदान उस समय द्वारकापुरी को जाते नारदमुनि ने अनिरुद्धकी बाणीसुनके यादवों से जाके कहा कि बा-णासुरने अनिरुद्धको बांधरक्खा है १० तब अनिरुद्ध को मायावीविद्यासे लेगयेहुये शोणितपुरमें सुनके ११

हरिभगवान् गरुड़पर चढ़के बलदेव और प्रद्युम्नसहित बाणासुरके पुरमें आये १२ और वहां पहुंचके श्रीकृष्ण भगवान् शिवजीके गणोंके संग युद्ध करनेलगे जब बाणासुरकी पुरीके समीप उनका नाशहुआ १३ तब तीन पैरों और तीन शिरोंवाला शिवजीका रचा हुआ ज्वर बाणासुरकी रक्षाके वास्ते हरिके संग अत्यंत युद्धकरने लगा १४ और उसने श्रीकृष्णके संग युद्धकरके उनके शरीरसे उपजे ज्वरको हर लिया १५ नारायणकी भुजाओंके आघातसे उपज औरों को पीड़ाकरनेमें युक्त विष्णुके ज्वरको देखके १६ ब्रह्मा बोले कि इस ज्वरको शांतकरो तब विष्णुभगवान्ने तिस ज्वरको शांतकिया १७पर शोणितपुरकी पांचों अग्नियोंका नाशकरदिया १८ पश्चात् जब श्रीकृष्णभगवान्ने अपनी लीलासे दैत्योंकीसेनाका नाशकिया १९ तब हरिभगवान्के संग शिवजी युद्ध करनेलगे और हरि और शंकरका दारुण युद्ध हुआ २० निदान जब शिवजीके शस्त्रोंसे दुःखित हुये सब लोक क्षोभको प्राप्तहुये और सबदेवताओंने ऐसा निश्चय करलिया कि सम्पूर्ण जगत्का काल आगया २१ तब गोविंद भगवान्के जृंभणअस्त्र द्वारा शिवजीको जंभाई आनेलगीं २२ और दैत्य और शिवजीके गण चारोंतर्फ नाशको प्राप्तहुये तब जंभाइयों से युक्त हो शिवजी रथके उपस्थमें जाबैठे २३ और क्लिष्टकर्म करनेवाले श्रीकृष्णके संग युद्ध करनेमें असमर्थ होगये २४ और गरुड़द्वारा क्षतबाहुवाला प्रद्युम्नके अस्त्रोंसे पीड़ित और कृष्णकी हुंकारसेकांपताहुआ स्वामिका-

र्त्तिकभी हारगया २५ जब शंकर जँभाई लेनेलगे दैत्य सेनानष्टहोगई और स्वामिकार्त्तिक जीतलियागया २६ तब नन्दीद्वारा लायेहुये महान् रथमें आरूढ़होके २७ बाणासुरदैत्य कृष्ण और यादवोंकीसेनाकेसंग युद्धकरनेकोआया और महान् पराक्रमवाले बलदेवने बाणासुरकी सेनाको अनेकप्रकारके २८ बाणोंसे बेधा हलके अग्रभागसे खींच और मूसलसेकूटा २९ निदान सेना के सङ्गतो बलदेव युद्ध करनेलगे और श्रीकृष्णका बाणासुरके सङ्ग महान् युद्धहोनेलगा ३० कायाकोछेदन करनेवाले और दीप्तबाणोंको श्रीकृष्णने छेदनकरदिया और श्रीकृष्णके छोड़ेहुये बाणों को बाणासुरने छेदन करदिया ३१ केशव भगवान्‌को बाणासुरने बींधदिया और बाणासुरको चक्रधारी भगवान्‌ने बींधदिया ३२ और आपसमें जीतने और मारनेकी इच्छाकरनेवाले बाणासुर और श्रीकृष्ण शस्त्रोंको छोड़नेलगे ३३ सब शस्त्रछिद्यमानहोतेदेख हरिभगवान्‌ने जब विशेषकरके बाणासुरके मारनेको मनकिया ३४ और सैकड़ोंसूर्य्यों के समान तेजवाले अपने सुदर्शनचक्रको छोड़नेको ग्रहणकिया ३५ तब कोटरानामवाली बाणासुरकीमाता नङ्गीहोके भगवान्‌के आगे खड़ीहोगई ३६ और उसकोआगे नंगीखड़ीहुईदेख हरिभगवान्‌ने नेत्रमींच के बाणासुरकेबाहु छेदनकरनेको सुदर्शनचक्रको छोड़ा ३७ और अच्युत भगवान्‌का छोड़ाहुआ सुदर्शनचक्र क्रमसे बाणासुरकी बाहुओं को छेदनकरताहुआ ३८ हाथ में आया तब मधुसूदन भगवान् उसे बाणासुर

को मारनेकेवास्ते छोड़नेकोही थे ३९ कि शिवजी गोविन्दको बाणासुरके छेदनकरनेवाला शस्त्र छोड़तेदेख कहनेलगे ४० कि हे कृष्ण हे जगन्नाथ हे पुरुषोत्तम आपके पराक्रमको हम जानतेहैं आप परेश परमात्मा अनादि निधनपर ४१ देवकी पशु मनुष्य आदिकों में शरीर ग्रहणात्मिका लीला है और सब भूतों में आप कीही चेष्टाहै ४२ हे प्रभो आप प्रसन्नहो और बाणासुरको अभयदो मैंने जो यह वचन कहाहै सो मिथ्या नहींहै ४३ हे अविनाशी मेरे आश्रयसे बढ़ाहुआ जो अपराधहै और मेरे दिये बरवाला यहदैत्यहै इसलिये मैं आपसे क्षमामांगताहूँ ४४ व्यासजीबोले कि गोविन्द शिव के यह वचनसुन प्रसन्नमुखहो और दैत्योंपरसे क्रोधत्याग शूलपाणि उमापति शिवसे कहनेलगे ४५ कि हे शङ्कर आपसे बरदियाहुआ बाणासुरजीवे और आपके कहनेसे मैंने चक्र निवृत्तकरलिया ४६ आपने जो इसकोअभयदेदियाहै इसवास्ते मैंभी इसकोअभय देताहूँ हेशङ्कर मुझसे भिन्नआत्मा आपको न जानना चाहिये ४७ जो मैं हूँ सो आप हैं और देवते मनुष्य दैत्य सब अविद्याके मोहसे भिन्न२ देखते हैं ४८ ऐसे कहके श्रीकृष्ण अनिरुद्धके पासगये और गरुड़द्वारा नागपाश को छेदनकरवा ४९ ऊषासहित अनिरुद्धको गरुड़पर बैठाकर बलदेवआदिक यादव द्वारकापुरी में आये ५० ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांकृष्णचरित्रेऊषापरिणयनोनाम चतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबेवां अध्याय ॥

मुनियोंनेपूछा कि हे मुनिश्रेष्ठो श्रीकृष्णभगवान् ने मनुष्यशरीर धारणकरके जो महान्कर्मकिये इन्द्र शिव और देवतोंकेसङ्ग अपनीलीलाकरके युद्धकिये १ अन्य दिव्यचेष्टाकी और राजाओंका बधकिया सो कहिये यह हमें परम आश्चर्यहै २ व्यासजीने कहा हे मुनिश्रेष्ठो मुझसे आपनरावतारमें श्रीकृष्णने जसे काशीपुरीदग्ध करीहै सो आदरसे सुनो ३ एकसमय वसुदेव का पुत्र पौंड्रराजा पृथ्वी पर गमनकरता अज्ञानसे मोहितहो बोला कि मैं अवतार हुआहूं ४ निदान पौंड्रराजाने ऐसे नष्टस्मृतिहो कहा कि मैं वासुदेवहूं ५ श्रीकृष्णके पास अपनेदूतद्वारा यह कहलाभेजा कि हे कृष्ण मेरे चक्रादिकचिह्न और नाम आदि छोड़दे६ हे मूढ़ यदि तू अपना जीवन चाहता है तो वासुदेवात्मक सब त्याग दे उस दूतके यह वचन सुन ७ जनार्दन भगवान् दूतसे हँसके बोले कि हम अपने चिह्न और चक्रको तेरे कहनेसे न त्यागदेंगे ८ हे दूत तू पौंड्रकके आगे जाके कह दे कि तेरा वचन हमने जान लिया तेरे किये जो करा जावे सो कर ९ मैं जब तेरे पुरमें इन चिह्नों को ग्रहण कियेहुयेही आऊंगा तभी इसचक्रका त्यागकरवाऊंगा १० तूने जो आज्ञापूर्वक मुझे बुलवाना चाहाहै तो मैं तेरे इस कहेको करूंगा ११ और तेरी शरणहोके मुझे तुझसे किंचित् भी भय न हो तैसेही करूंगा १२ ऐसे कहके हरिभगवान्ने उस दूतको बिदाकिया और गरुड़ पर चढ़के आप भी जल्द उसके पुरमें पहुंचे १३

पौंड्रराजा केशव भगवान्का शब्दसुन अपनी सबसेना सहित उनकेसन्मुख युद्धके वास्ते आया १४ और उसे गदा शंख धनुष और चक्र हाथमेंलिये १५।१६ सुवर्णकी मालापहिने छातीमें श्रीवत्सचिह्न धारणकिये १७ मुकुट और कुंडल पहिने और पीले वस्त्रोंसे भूषित गम्भीर भावसे रथमें बैठे देख मधुसूदन भगवान् हँसे १८ और उसकी सेनाके संग गदा शूल शक्ति धनुष इन्होंको धारण कियेहुये १९ शार्ङ्ग धनुषके अग्नि शिखाके समान उपमावाले बाणोंसे युद्ध करनेलगे और गदा और चक्र का निपात करके उस राजाके बलका नाश करदिया २० जनार्दन भगवान् मूढ़ और आत्मामें चिह्नका उपक्षण करनेवाले पौंड्रराजाका बल क्षीणकरके बोले कि हे पौंड्रक तूने जो कहाथा तो अब यह मेरा चक्र तुझ को बल दिखावेगा और तेरेचिह्नोंको छुड़ावेगा २१।२२ तूने जो यह चक्र बनारक्खाहै इसको मेराचक्र काटेगा और तेरे गरुड़को मेरागरुड़ छेदनकरेगा २३ ऐसे कहके श्रीभगवान्ने जब चक्रसे पौंड्रराजा को बिदारण किया और गदासे उसके सब अंग भग्न करदिये एवम् भगवान्के गरुड़ने उसके गरुड़को छेदनकिया २४ तब सबमनुष्य हाहाकार करनेलगे और काशीका राजा मित्रके बदले श्रीकृष्णके संग युद्ध करनेलगा २५ निदान श्रीकृष्ण ने शार्ङ्गधनुष के बाणोंसे उसके शिरको काटकर लोकोंको आश्चर्यदिखातेहुये काशीपुरीमें फेंक दिया २६ और द्वारकापुरीको लौटआये २७ भगवान्का फेंकाहुआ वह शिर जब काशीमेंजाके गिरा तो काशी-

राजका पुत्र उसे देख पुरके मनुष्यों से पूँछनेलगा २८ और श्रीकृष्णका कराहुआ कर्म जान पुरोहित सहित होके शिवको प्रसन्नकरनेका यत्नकर २९ अविमुक्त महाक्षेत्र में उग्र तप करनेलगा शिवजी महाराज उसकी भक्तिसे प्रसन्नहो बोले कि वरमांग ३० तब उसने यह वर मांगा कि हे भगवन् मेरे पिता को वध करनेवाले श्रीकृष्णके मारनेके वास्ते आप अपनी कृत्या अर्थात् मायाको उठावो और ३१ शिवने कहा ऐसेही होवेगा शिवजीकेयह वरदेनेके पश्चात् दक्षिणाग्निके अनंतर उनके नेत्रके निवेश करनेसे महाकृत्या उठी और ३२ अग्निकी तरह केशवाली करालरूप कपाली प्रकाशमान वह कृत्या कृष्ण कृष्ण कहती और कोप करतीहुई द्वारकापुरीको चली ३३ जिसे देख सबमनुष्य त्रासित हो जगतों के कारण मधुसूदन भगवान्की शरण जाके ३४ कहनेलगे कि हे नाथ काशीराजके पुत्रने शिवजीका आराधन करके महाकृत्याको उत्पादन किया है ३५ इसलिये बह्निकी लटाओंसे युक्त इस कृत्याको आप नाशो उनसे यह हाल सुन चौपड़ खेलने में आसक्त हुये भगवान्ने ३६ अपनी मायासे उस अग्निमाला सेजटिल और भयंकर कृत्याके पीछे २ अपना सुदर्शनचक्र छोड़ा ३७ और वह चक्र उसके पीछे २ चला निदान माहेश्वरी कृत्या चक्रके वेग से गिरके ३८ शक्तिहत होगई और वह सुदर्शनचक्र उसके पीछे चलाही गया ३९ जब वह कृत्या विष्णुके चक्रसे प्रतिहत हो काशीपुरी पहुंची तब काशीकी सेना और शिवजी के

पारिषदोंके समूह ४० शस्त्रों को धारणकरके सुदर्शन-चक्रके सन्मुखआये और उस चक्रने अपने बलसे बहुतसे शस्त्रोंको दग्धकर ४१ कृत्याके पीछे२ गमनकिया और कृत्याके गर्भ एवम् बहुतसे भृत्य और पुरके आदमियोंके घरोंसे युक्त ४२ देवताओं को भी देखने में असमर्थ काशीपुरी को ४३ जलतीहुई ध्वजा और महलों सहित दग्धकर ४४ वैरियों को नाश करनेवाला और साध्यसाधनका स्थान वह दीप्तिमान चक्र विष्णु के हाथमें आगया ४५॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांकृष्णचरित्रेपौंड्रकवासुदेववधो नामपंचनवतितमोऽध्यायः ९५॥

छानबेवां अध्याय॥

मुनियोंने कहा कि हे मुने हम बुद्धिमान् बलदेवके पराक्रमोंको भी सुननेकी इच्छाकरते हैं और आप उनके वर्णन करनेको समर्थ हो १ वेदव्यासजी ने कहा हे मुनियो अनन्त अप्रमेय धरणीको धारण करनेवाले भगवान् शेषावतार बलदेव ने जो कर्म किये हैं उन्हें सुनो २ जब दुर्योधन राजाकी पुत्रीके स्वयम्वरमें जाम्बवतीके पुत्र साम्बने उसे हरा ३ तो महान्‌पराक्रम वाले कर्ण दुर्योधन भीष्म द्रोण आदिकने साम्ब को युद्धमें जीतके बांधलिया ४ यह समाचार सुन सब यादव दुर्योधन आदिकों पर क्रोध कर उनको मारने के लिये महान्‌उद्योग करनेलगे ५ तब उनको वर्जके बलदेवने कहा कि वे मेरे कहनेसे साम्बको छोड़देंगे इसलिये मैं अकेलाही कौरवोंको निवारण करदूंगा ६ ऐसे

कहके बलदेवजी ने हस्तिनापुर को गमन किया और वहां पहुंच पुरकेबाहर बगीचोंमें जा बैठे बलदेवकेआने का समाचार सुन दुर्योधन आदि कौरव पूजाके वास्ते अर्घ्यजल आदिलेकर उपस्थितहुये ७।८ और बलदेव जीने उसे विधिवत् ग्रहणकर उनसेकहा कि उग्रसेन ने यह आज्ञादीहै कि साम्बको जल्दछोड़दो ६ भीष्म द्रोण कर्ण दुर्योधनआदिक बलदेवके यह वचनसुनके क्रोधकर १० एकबारगी बोले कि हम यादवोंका मूसल युद्ध देख के निवृत्त होवेंगे ११ हे बलदेव तुमने यह क्या वचन कहा ऐसाकौन यादवहै जोहम कुरुवंशीको आज्ञादेवेगा १२ उग्रसेनभी यदि कौरवों को आज्ञा देवेगा तो नृप योग्य अलंकृत पांडवोंका क्या राज्यहै १३ हे बलदेव तू चलाजा उग्रसेनकी आज्ञासे हम साम्बको न छोड़ेंगे १४ हमने जो भृत्यरूप उनको प्रणतिकी है तो क्या उनकी आज्ञाकीहै १५ तुम गर्वमें युक्तहो देवताओंके समान हो रहेहो तो ऐसा क्यादोषहै कि प्रीतिसे हम न देखें १६ हमने जो यह तेरेलिये अर्घ्य निवेदन कियाहै सो प्रेम से कियाहै पर हमारे कुलको तुम्हारे लिये अर्घ्य देना उचित नहीं है १७ व्यासजीने कहा ऐसे सब कौरवों ने कहके हरिके पुत्र साम्बको नहींछोड़ा १८ और सब एक निश्चय करके अपने हस्तिनापुरको चलेगये १६ निदान कौरवोंके यह वचन सुनकर बलदेवजीने क्रोध से अपने नेत्रोंको आघूर्ण करके एड़ीसे पृथ्वीको हनन किया और उनके पैरसे विदारित हुई पृथ्वी दशोंदि-शाओंमें शब्दसे पूरितहोगई २०।२१ तब बलदेवजीने

अति लाल नेत्र करके कुटिल मुखसे कहा कि मैं दुष्ट कौरवोंके महानूबलका उपायकरूंगा २२ अबकौरवोंके राज्यका नाश आचुका क्योंकि ये उग्रसेनकीभी आज्ञा नहीं मानते २३ जिसकी आज्ञाको धर्मसे देवतों समेत इन्द्रभी मानताहै और जो इन्द्रकी सुधर्मासभामें स्थित रहताहै २४ उसके आगे इनसैकड़ों मनुष्योंके उच्छिष्ट नृपासनपै बैठनेवालोंको धिक्कार है २५ जिस उग्रसेन के भृत्योंकी स्त्री पारिजातवृक्षकी मंजरीको धारण करती हैं सो इन सब भूपालों का राजा उग्रसेन सदा स्थित रहो २६ अब मैं पृथ्वी को कौरवोंसे रहितकर द्वारकापुरीको जाऊंगा और कर्ण दुर्योधन भीष्म द्रोण बाह्लिक दुश्शासन भूरि भूरिश्रवा सोमदत्त शल्य भीम अर्जुन युधिष्ठिर नकुल सहदेव आदि २७।२८ सब कौरवोंको इनके अश्व रथ हस्ती सहित मार और साम्बको स्त्री सहितले द्वारकापुरीमें जा उग्रसेनआदिक बांधवोंकोदेखूंगा समग्र कौरवों समेत इस नगरीका २९।३० भार उतारनेकेलिये इन्द्रका प्रेराहुआ मैं इस हस्तिनापुरको जल्द गंगाजीमें डुबोऊंगा।३१ व्यासजीने कहा कि ऐसे कहके बलदेवने मदसे रक्तनेत्रकर नीचे मुख कियेहुये हस्तिनापुरकी खांही और किलेको मूसलका ग्रहणकिये हुये खींचा ३२ जिसे देख चलायमान हृदयवाले सब कौरव अति दुःखितहो ३३ कहनेलगे कि हेराम हेमहाबाहो आपको क्षमाकरनी चाहिये हे मूसलायुध आप को कोप दूरकरना चाहिये आप प्रसन्नहो ३४ साम्ब को पत्नीसहित लेजावो और आपके प्रभाव न जानने

घाले हमअपराधियोंपर क्षमाकरो ३५ व्यासजीने कहा कि ऐसे कहके सब कौरवोंने पत्नी सहित साम्बको पहुंचा दिया और अपने पुरसे बाहर निकल बलदेवके संग चले ३६ तबभीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य आदिसे बलदेवने प्रणाम करके कहा कि मैं तो क्षांतही हूं ३७ व्यासजी ने कहा कि हे द्विजो अबभी वह हस्तिनापुर घूर्णित आकार अर्थात् कोड़ाहुआ दीखताहै ऐसा बलदेवके बल वीर्यका प्रभावहै ३८ इसप्रकार कौरवोंने साम्बका पूजनकर और धन और भार्या समन्वितकर बलदेवके संग बिदाकिया ३९ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांकृष्णचरित्रेबलदेवमाहात्म्यं नामषण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

सत्तानबेवां अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि हे मुनिजनो बलदेवजीके अन्य चरित्रोंकोभी आप सबसुनो द्विविदनामक वानर देवतों से बैररखता था १ कृष्णके सकाश से बल गर्वसहित नरकासुरकेमारेजानेको देख वह सब देवतोंके विपरीत कर्म करनेलगा २ कभी तो वह यज्ञोंका विध्वंसकरता कभी मनुष्योंको मारता ३ कभी श्रेष्ठपुरुषोंकी मर्य्यादाओंका भेदनकरता और कभी चपलरूपहोके देश पुर ग्राम इत्यादिको दग्धकरता ४ कभी पर्वतोंके फेंकनेसे वृक्षोंका चूर्णकरता और कभी पत्थर उखाड़ उखाड़के समुद्रमें डालता ५ हे द्विजो फिर वह समुद्र पर क्रोध करनेलगा और क्रोधसे उसेरोक ६ समुद्रकेतीरके ग्राम और पुरों को भगाने लगा फिर उसने कामरूपी और

महासारवाली ऐसी सौगन्द अर्थात् प्रतिज्ञाकी ७ कि मारनाअभावना पीड़न करना तथा चूर्णकरना इत्यादिककर्मोंसे सम्पूर्ण जगत्को दुःख देनेलगा ८ और ब्राह्मणोंके पढ़नेपढ़ाने तथा वषट्कार शब्दोंको न सुनता निदान एकसमय रैवत पर्वतके वनमें हलको धारणकर बलदेवजी ९ महाभागवाली रेवती तथा सुन्दर रूपवाली दूसरी स्त्रियोंकेसङ्ग रमणकरनेकोगये और संयोगवश वह वानरभी उधरजा निकला बलदेवजीको वहां देख उसने उनकाहलछीन और मूसललेके शब्दकरना प्रारम्भकिया १०।११ और स्त्रियोंके सन्मुख हँसनेलगा १२ फिर उसने मदिरा से पूर्ण कलशे को उठाके फेंक दिया और कोपयुक्तहोके बलदेवको झिड़कनेलगा १३ निदान बलदेवजीने उठके मूसलको ग्रहण किया १४ और द्विविदनेभी भयानकशिलाको ग्रहणकर बलदेव केऊपरफेंका तब बलदेवजीने मूसलसे शिलाके हजार टुकड़े कर दिये १५ और वह शिला टूटकर पृथ्वी पर गिरपड़ी और बलदेवका मूसल समुद्रमें गिरपड़ा १६ शिला टूटनेपर द्विविदने वेगसेआके कोपयुक्तहो बलदेवकी छातीमें एकमूकामारा और बलदेवने भी कोप युक्तहोके उसके मस्तकपर बहुत मूकेमारे १७ जिससे वह पृथ्वीपर गिरपड़ा और उसके मुखसे रुधिरनिकल कर प्राणोंसे रहितहोगया फिर पर्वतके शिखर के टुकड़े की तरह उसके शरीरके १८ मुनियोंने सौ टुकड़ेकरके दग्धकरादिया और देवतोंने बलदेवजीके ऊपर पुष्पों की वर्षाकी १९ और उनके कर्म को साधु साधु कहके

सराहनेलगे कि इस दुष्ट वानरने दैत्यों और यक्षों का उपकारकर २० जगत्को दुःखीकरादियाथा पर हे वीर यह मङ्गलकी बातहै कि अब यह नाशहुआ २१ व्यासजी बोले कि शेषरूप और धरणीको धारण करनेवाले बुद्धिमान् बलदेवके पर पुरुषोंको आनन्द देनेवाले अनेकप्रकारके कर्महैं २२ बलदेवकी सहायसेही कृष्णजी ने दुष्टराजाओं का नाशकिया और अर्जुनके संगहो २३ कई अक्षौहिणी सेनाओंके सम्पूर्ण राजाओंकावध ब्राह्मणोंके शापकेमिससे यदुकुलका क्षयकर पृथ्वीका भार उतारा २४ । २५ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांद्विविदबधोनाम सप्तनवतितमोऽध्यायः ९७ ॥

अट्ठानबेवां अध्याय ॥

व्यासजी ने कहा कि हे द्विजो फिर श्रीकृष्णजी ने द्वारका को त्याग और मनुष्य देह को छोड़ विष्णुमय अपने अंशमें प्रवेशकिया १ मुनियोंने पूँछा कि हेभगवन् श्रीकृष्णने विप्रोंके शापसे अपनेकुलका संहार कैसे किया और मनुष्यदेहको कैसे त्यागा २ व्यासजी बोले कि पिंडारकतीर्थमें स्थित विश्वामित्र कण्व नारद आदि महाभागवालोंके आगे ३ उन्मत्त यादवों के कुमारों ने भावीवश जाम्बवतीके पुत्रको स्त्रीका वेष बनाके ४ खड़े होके कहा कि आपको नमस्कारहै यह स्त्रीपुत्र या कन्या क्या जनैगी ५ उनके ऐसे कपटके वचन सुनके दिव्य ज्ञानसे युक्त और कुमारोंके वचनोंसे विप्रलब्ध अर्थात् मिथ्यावचनसे दुःखितहो दोष दूरकरनेको ६ कोपयुक्त

होके मुनिजन बोले कि यह स्त्री मूशलको जन्मेगी और हे कुमारो जैसाहो तैसा तुम देखोगे ७ फिर उग्रसेनसे कहनेलगे कि साम्बके मूशल पैदा हुआहै और उग्रसेनने तिस मूशल को चूर्णकर ८ समुद्र में फेंक दिया निदान हे द्विजो वह चूर्ण समुद्रके लहरोंसे किनारे पर जा लगा ९ और एक मछली उसको निगलगई १० फिर उस मच्छीको एक लुब्धक पकड़ लेगया और परमार्थके जाननेवाले मधुसूदन भगवान्ने ११ विधिके रचेके अन्यथा करनेकी इच्छानकी तब देवतोंका भेजा हुआ दूत कृष्णको नमस्कारकर एकान्तमें वचनबोला १२ कि हेप्रभो मैं दूतहूं वसु अश्विनीकुमार मरुत् आदित्य चन्द्रमा साध्य आदिकों सहित १३ इन्द्रने दिव्य बाणीसे कहाहै कि सौवर्षसे अधिक होचुके पृथ्वी का भार उतारनेके लिये १४ आपने कृष्णका अवतार लिया और खोटीवृत्तीवाले दैत्योंको मार पृथ्वीका भार आपने उतारा १५ हे जगन्नाथ स्वर्गमें देवते आपसे सनाथहैं अब सौवर्षसे अधिक काल होचुकाहै १६ जो आपको रुचै तो स्वर्गमें चलो और जो आपकी यहांही रुची है तो पक्षी मनुष्य जीवरूप होके देवते भी यहीं बासकरेंगे १७ भगवान् बोले कि हे दूत जो तूने कहा सो सम्पूर्ण मैंने जान लिया १८ यह सब प्रारब्धकृत है यादवोंका भी क्षय प्राप्तहुआ पर अवतक पृथ्वीका भार नहीं उतरा १९ इसलिये मैं द्वारकामें जाके सात रात्रि पर्यंत समुद्रके किनारे पर रह २० यादवोंका संहार करके इस मनुष्य देहको त्याग बलदेवकी सहाय

से स्वर्गलोकमें आऊंगा २१ इन्द्र तथा देवतोंका कहा हुआ वचन मैं मानताहूं मुझको स्वर्गमें प्राप्तहुआही मानो पृथ्वी का भार उतारनेके लिये जरासन्ध आदि राक्षसोंको तो मारचुकाहूं २२ अब कुमारों सहित यदु जो पृथ्वीपर महाभार हैं तिनको मारके २३ स्वर्गलोक में आऊंगा इन्द्रादिकोंसे तू जाके यह कहदेना व्यास जी बोले कि हे द्विजो वासुदेवके यह वचनसुन वहदूत नमस्कार करके २४ स्वर्गको गया और इन्द्रसे सबहाल कहा इधर भगवान् द्वारकापुरीका नाशके लिये उद्यत हुये और पृथ्वी आकाशमें २५ उत्पातोंको रातदिन देख यादवों से बोले कि इन दारुण उत्पातों को देखो २६ और इनकी शांतिके लिये समुद्रपर चलो देर मतकरो व्यासजी बोले कि कृष्ण के यह वचन सुन महाभाग वाला उद्धव कृष्णको नमस्कार करके बोला २७ कि हे भगवन् मेरा जो कार्य्य है सो आज्ञादो इससम्पूर्णमर्त्य कुलका आपसंहारकरेंगे २८ और यह कुलनाशकोप्राप्त होगा इसको मैं जानताहूं भगवान्ने कहा कि उद्धव तू हमारे प्रसादसे प्राप्तहुई दिव्यगतिसे २९ गन्धमादन पर्वतपर जहां नरनारायणकास्थानहै उसपवित्र बदरि-काश्रमको तपकीसिद्धिकेलियेचलाजा ३० तो तू मुझमें मनको लगामेरेप्रसादसे सिद्धिको प्राप्तहोवेगा और मैं इसकुलका संहारकरके स्वर्गमेंजाऊंगा ३१ उद्धवबोला कि मैं अभीद्वारकाको त्याग समुद्र में स्नानकरूंगा ऐसे कहके वह श्रीकृष्णको नमस्कारकर ३२ जहां नरनारा-यणका स्थानथा अनुमोदितहोके चला ३३ और सब

यादवजल्दी चलनेवाले रथोंपर चढ़केकृष्ण और राम सहित प्रभासक्षेत्रको गये३४निदान हे द्विजो वेकुकुरांधकबंशी यादवप्रसन्नहो प्रभासक्षेत्रमें प्राप्तहो बासुदेव के मोहेहुये आनंदसे जलपान करनेलगे ३५ और पान करते २ उनकी अतिपान करनेकी इच्छाहुई तब नाश करनेवाली कलहरूपी अग्नि उत्पन्नहुई ३६ और सब आपसमें डंडोंके शस्त्रबनाके लड़नेलगे ३७ ऐसे वज्रभूत लकड़ीको ग्रहणकर बलके क्षतहोने से वे सब परस्पर लड़मरे ३८ और ऐसा दारुणयुद्धहुआ कि प्रद्युम्न साम्ब कृतबर्मा सात्यकी ३९ अनिरुद्ध पृथु विपृथु चारुकर्मा चारुकंठ और अक्रूर ४० आदि सब बज्ररूपी शरों से परस्पर युद्धकरके हतहुये कृष्णनेभी कोपित होके उनके बहुत मुक्केमारे ४१ और बलदेवजीने शेष रहेयादवोंको मारनेकेलिये लोहरूपी मूशलग्रहण ४२ करकेमारा और वे सब परस्पर लड़कर ४३ समुद्रके मध्यमें शंख चक्र गदा और धनुषधारी कृष्णके देखते देखते तृणवत् नमस्कार और परिक्रमाकरके सूर्यके मार्गसे चलेगये ४४ फिरतेहुये दारुकसहित भगवान् ने बलदेवको वृक्षकेनीचे आसनकरेहुये देखा ४५ और यहदेखा कि बलदेवजीके मुखसे एकमहा सर्पने निकस कर समुद्रमें प्रवेश किया ४६ और सिद्ध और दिव्य सर्पोंके दियाहुआ अर्घ्य और पूजनको ग्रहणकर समुद्रमें गुप्तहोगया ४७ भगवान् ने बलदेव का बैकुण्ठ गमनदेख दारुक सारथीसे कहा ४८ कि बसुदेव और उग्रसेनका गमन तथा यादवोंका क्षयदेख ४९ योगमें

स्थितहोके मैंभी इसशरीर को त्यागूंगा और बाकीरहे
द्वारकावासी जन और सारीनगरी समुद्रमें प्रवेशहोवे-
गी ५० देखअभी समीपमें जलोंका आगमन होताहै
इसलिये इस द्वारकामें ठहरना न चाहिये ५१ पांडवोंके
पासजाकर कुन्तीकेपुत्र अर्जुनसे कहना ५२ कि अपनी
शक्तिभर जनोंकी पालना करनीचाहिये यही मेरी शि-
क्षा है ५३ दारुकसे भगवान्के यह वचन सुनकर सब
द्वारकावासियों ने अर्ज्जुन सहित यादवों को साथ ले
कृष्णको नमस्कार किया ५४ व्यासजी बोले कि फिर
द्वारका तथा कृष्णकी बारम्बार बहुतसी परिक्रमा कर
जैसे कृष्णने कहाथा तैसेही उन्हों ने किया ५५ और
अर्जुनको साथलेके ब्रजके बासकी सलाहकी ५६ गो-
विंद भगवान्नेभी वासुदेवात्मक परब्रह्मको आरोपण
कर सर्वभूतोंमें धारण किया ५७ और हे मुनि सत्तमो
द्विजके वचनको मान और क्रोधरहितहो पैरोंको गोड़ों
से मोड़के योगमें युक्तहुये ५८ फिर जरानामक वाला
लुब्धक मुशलाशेषलोह अर्थात् बाकीरहे लोहकी कील
सहित वहां आया और उससे शापरूप काल उत्पन्न
हुआ ५९ हे द्विजसत्तमो वह उस लुब्धकने उसकेमृगके
आकारवाले पैरोंको देख दूर स्थितहोके उसको तोमर
से बेधा ६० और बाहुमें धनु को धारणकिये जातेहुये
भगवान्को देख और नमस्कार कर तिनसे बारम्बार
कहनेलगा कि मेरे ऊपर प्रसन्न हो ६१ मैंने हरिणकी
शंकाकरके बिनाजाने यह कर्म कियाहै इसवास्ते मुझ
पर क्षमाकरो और मुझको पापसे दग्धहोनेसे बचाओ

आप दग्धकरनेको योग्यहो ६२ व्यासजी बोले कि ब-
धिकके यह वचन सुन भगवान् बोले कि तू कुछभी भय
मतकर मेरे प्रसादसे तू सुखपूर्वक उत्तमस्थानको जा-
यगा ६३ व्यासजी ने कहा कि भगवान्के यह कहनेके
अनन्तर आकाशमार्गसे एक विमान आया और लु-
ब्धक भगवान्के प्रसादसे तिसमें बैठ स्वर्गमें गया ६४
जब वह लुब्धक स्वर्गको चलागया तब कृष्णने आद्य
रूप और अन्यके देह को न प्राप्त होनेवाले वासुदेवा-
मय ब्रह्मभूत अव्ययरूपको चित्तमें युक्तकरके ६५ तीन
प्रकारकी गतिवाले मनुष्यदेहको अखिलात्मामें त्याग
दिया ६६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसम्वादेकृष्णस्य
मानुषदेहत्यागंनामअष्टानवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

निन्नानवेवां अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि कृष्ण बलदेव तथा अन्योंके श-
रीरको देख अर्जुनभी मोहको प्राप्तहुये १ और रुक्मिणी
आदि आठोंरानियोंने हरीके देहके साथ हुताशनरूपी
अग्निमें प्रवेशकिया २ हे सत्तमो रेवतीनेभी बलराम
के देहको प्राप्तहोके आनन्दसहित प्रज्वलित अग्नि में
प्रवेशकिया ३ और उग्रसेन तथा वसुदेव देवकी और
रोहिणीने भी इस कर्मको सुन अग्निमें प्रवेशहो अपने
शरीरको नाशकिया ४ फिर अर्जुनने सबका यथाविधि
से प्रेतकर्म क्रिया कर जलमें दाह करके बहा दिया ५
और कृष्णकी हजारों स्त्रियें द्वारकासे निकसके अर्जुन
करके पालित बज्रको देख हौलेहौले ६ जब कृष्णने मर्त्य

लोकको त्यागदिया तब धर्मवालीसभा और पारिजात वृक्षभी स्वर्ग को चलेगये ७ जिस दिन इस पृथ्वी को त्याग हरिभगवान् स्वर्गको गये उसी दिन कलह प्रिय कलियुग रूपकाल उत्पन्नहुआ ८ शून्यहुई समस्त द्वारकाको समुद्रने डुबोदिया पर यादवोंमें श्रेष्ठ उग्रसेनके घरको छोड़ दिया ९ हे विप्रो वह समुद्र अबतक उस घरका उत्क्रमण कररहाहै १० जिस क्रीड़ायुक्त विष्णु के स्थानको देख मनुष्य सब पापों से छूटजाते हैं ११ और जहां नित्य हरी समीपमें रहते हैं वह स्थान सर्व पापोंके नाश करने और महापुण्यके देनेवालाहै हेमुनि सत्तमो अर्जुन ने उस समुद्रके ऊपर बहुतसे धान्यसहित सब जनोंका बास कराया १२ फिर धनुषको धारण करनेवाले अर्जुनके संगभी लोभ हुआ और प्राप्त हुई स्त्रियोंको देखके न इच्छाकरनेवाले अर्जुनको चोर जान १३ पापकर्मोंके करनेवाले और लोभसे हतचित्त आभीर संज्ञक मदवाले दुष्टजनोंने सलाहकी १४ कि यह धनुषवाला अर्जुन ईश्वरको हतकर स्त्रियों को लेजाताहै और हमारा तिरस्कार करताहै इसवास्ते हम सब बलकरें १५ निदान भीष्म द्रोण महारथवाले कर्ण आदि दूरबसनेवालोंको नजान १६ उन महादुष्ट और खोटीमतिवालोंने अर्जुनको पकड़लिया १७ और लाठी का प्रहारकरनेवाले हजारोंआभीर अर्जुनके पीछे दौड़े १८ अपने ऊपर दौड़तेहुये जनोंको देख और उनकी प्रवृत्तिको विचार अर्जुनने हँसके उनसे कहा कि हेमूढ़ो तुम्हारा कल्याण न होगा तुम निवृत्त होजाओ निदान

स्त्रीजनों मुनियों तथा विष्णुका और अपना तिरस्कार देख१९।२० अर्जुनने अजर तथा दिव्य गांडीव धनुषको ग्रहणकर युद्धमें आरोपण किया और उनका पराक्रम न सह कर २१ कष्टसे धनुषपर प्रत्यंचा को चढ़ाने लगा पर चढ़ानेसे मनशिथिल होगया और उसे यह स्मरण न हुआ कि कौनसा अस्त्र चलाऊं २२ फिर उसने शरों को छोड़ा पर वे शर भेदन नकरसके तब क्रोधित होके उसने और बाणछोड़े २३ और वे बड़ेचतुर क्रूरभी तीव्र धनुषके बाणोंको छोड़नेलगे और अर्जुनके शरोंकाक्षय करदिया २४ तब गोपालों अर्थात् आभीरुओंके संग युद्ध करते अर्जुनको चिन्ताहुई और यह यह चिन्तवन करनेलगा कि वहबल कृष्णकाहीथा जिससे मैंने शरोंके समूहसे अनेक बलवाले राजोंको जीताथा २५ निदान अर्जुनके देखते२वे प्रमदोत्तमा स्त्रियें आभीरोंकी खोसी हुई चलीगईं २६ जब अर्जुनके शर क्षीण होगये तब वह दस्यूजनोंपर प्रहार करनेलगा और दस्यूजन उन्हें देख आनंदितहुये २७ हे मुनिसत्तमो अर्जुनके देखते२ वृष्णी अन्धकोंकी श्रेष्ठ स्त्रियं चारों तर्फसे म्लेच्छों के साथ चलीं २८ तब अर्जुन दुःखी होके कहनेलगा कि कष्टसे भी अधिक कष्ट भगवान्ने दिया है ऐसे कहके अर्जुन रोदन करनेलगा २९ और उसी समय अर्जुन का धनुष अस्त्र रथ और घोड़ा सब बिनापढ़ेहुयेको दिये दानके समान चलेगये ३० तब अर्जुनने कहा कि बल वालोंका बल दैवहीहै उस महात्माके बिना ऊँचाभी नीचताको प्राप्तहोजाताहै ३१ वेहीबाहुहैं वेही मुष्टीहैं वेही

स्थानहै और वहीं मैं हूं पर उस पुण्यके विना सब वृथा होगये ३२ मेरा अर्जुनपना और भीमका भीमपना उस भगवान्के विना बज्रभीरोंने जीता ३३ ऐसे कहताहुआ अर्जुन पुरों में उत्तमपुर इन्द्रप्रस्थ को गया और वहां यादवनन्दन को राजतिलकदे ३४ आप बनको चला गया और वहां व्यासजी को देख नम्र होके नमस्कार किया ३५ तब वेदव्यासजी ने अर्ज्जुनसे पूँछा कि तूने यहां गमनकिया तो अच्छाकिया परन्तु तू कान्तिसे रहित मुखवाला क्यों है क्या तूने कोई ब्रह्महत्या करीहै जिससे तू भ्रष्टछाया प्रतीत होता है ३६ वा तेरी कोई सेना शान्तहोगई अथवा कहिंक तेरी यांचना वृथा होगई क्या तूने किसी अगम्यास्त्रीसे तो गमन नहींकिया जिससे तू कान्तिरहित होरहा है ३७ वा भोजन करने पश्चात् किसी ब्राह्मणको अन्न तो नहीं देदिया अथवा कहिंक तेरा चित्त ग्लानिको तो नहींप्राप्त होगया ३८ हे अर्जुन क्या तूने कोई सूर्य्यको अपराधकिया अथवा दुष्टचक्षुसे सूर्य्यको देखा जिससे तू शोभारहित दीखता है ३९ तुझे किसीने युद्धमें तो नहींजीतलिया व किसी सिद्धका अपराध तो नहींकिया जिससे तू पराजितहुआ दीखताहै ४० व्यासजी के यह वचनसुन स्वस्थचित्त हो अर्जुन बोला कि हे भगवन् सुनो मुझमें जोकुछ बल तेज वीर्य्य व पराक्रमथा ४१ उस सबको परमात्माजगन्नाथ सम्पूर्ण ग्रहणकर परलोकको गये ४२ हे मुने हास्यपूर्वक सम्भाषण करनेवाले उस महात्मासे मैं स्थम्भोंके समूह कीनाईं हीनहोगया ४३ और मेरे गांडीवधनुषकी और

शरोंकी सहायता जिससे होतीथी वह पुरुषोत्तम चले गये ४४ जिसके देखनेसे हमारीश्री और जय उन्नतीको प्राप्तहोतीथी वे भगवान् हमको त्यागके चलेगये ४५ और जिनके प्रभावसे भीष्म द्रोणाचार्य्य और दुर्य्योधनादिक अन्य राजोंको हमने जीताथा वे इस पृथ्वीको त्यागगये ४६ हे मुने यौवन से रहित शोभासे बर्जित और भ्रष्टछाया मुझको यहपृथ्वी दृष्टआतीहै और उस चक्रीकेबिना मैंने एकभी स्त्री नहीं बिवाही ४७ जिसके प्रभाव से भीष्मादिकों ने पतंगकीतरह महाअग्नि में प्रवेशकियाथा उसीकृष्णके विना मैं भीरुओंद्वारा जीता गया ४८ और जिसके प्रभावसे गांडीव तीनोंलोकोंमें विख्यातहुआथा अब उसीके बिना भीरुओंने लाठीसे मेरा तिरस्कार किया ४९ मेरेनाथ महात्माकी हजारहां स्त्रियें लाठियोंसे युद्धकरके भीरुओं ने मुझसे छीनलीं ५० और हे कृष्ण हे कृष्ण कहतेभी लाठियोंके प्रहार से उन्होंने इस गोधनकोले मेरेबलका तिरस्कारकिया ५१ हे पितामह उनसे पराजितहुआभी मैं जीवताहूँ यही आश्चर्य्यहै नीचोंसे अपमानसहके मैं निर्ल्लज्ज होरहाहूँ ५२ ऐसे कहतेहुये अर्जुनके वचनसुन वेदव्यासजी दुःखित और दीनहुये महात्मा पाण्डवसेबोले कि तेरी लज्जाका कारण हमने जाना ५३ तू शोच मतकर कालकीगति बलवान्है सब भूतोंमें प्राप्तहोतीहै ५४ हे पाण्डव कालही भूतोंकी उत्पत्ति स्थिति और नाश करता है इससे कालही इस जगत्का मूलहै और इसी लिये तुझे मनमें स्थिरता करनीचाहिये ५५ नदी समुद्र

पर्वतसारीपृथ्वी देव मनुष्य पशु वृक्षआदि सरीसृप ५६
कालकेरचेहुयेहैं और फिर कालहीद्वारा नाशको प्राप्तहो-
जातेहैं इसलिये तू इससम्पूर्ण जगत्को कालात्मक जान
के शान्तिको प्राप्तहो ५७ हे अर्जुन महात्मा कृष्णने भार
उतारनेकेलिये पृथ्वीपर अवतारलियाथा ५८ पूर्वकाल
में भारसे दुःखीहुई पृथ्वीने शिव तथा ब्रह्मा और सब
देवतोंसहित विष्णुके पासजाके प्रार्थनाकी थी उसीके
लियेजनार्दनका अवतारहुआ ५९ और सबवृश्न्यंधक
अर्थात् यादवोंके कुलका संहारकर उन्होंने पृथ्वीका
भारउतार ६० हे अर्जुन भगवान्का कुछ प्रयोजन अ-
वतारका नहींथा इसलिये कृतकृत्यहो अपनी इच्छासे
गमनकरगये ६१ संसारकी रचनामें तो देवतोंकेदेव कृ-
ष्णकी स्थितिहोतीहै और अन्तमें नाशकरनेको समर्थ
हैं जैसे अब किया ६२ इस कारण अपना तिरस्कार
होने का दुःख तू मतकरे कुछ कालपाके पुरुषों में तेरा
पराक्रमहोवेगा ६३ हे अर्जुन जिसकारण तू और येभीष्म
द्रोणसे आदि नृपसब कालकेवशहुयेहैं उससे तिरस्कार
क्याचीजहै ६४ जिस विष्णुके प्रभावसे तू ने राजोंका
पराभव कियाथा उसी भगवत्प्रसाद से धाड़ियोंसे तेरा
पराभवहुआ ६५ अन्य शरीरको प्राप्तहो भगवान् जगत्
की स्थिति करतेहैं और अन्तमें जगत्का क्षयभी करते
हैं ६६ हे कौंतेय जन्मजन्ममें जनार्दन तेरे सहायीहुये हैं
और अन्तमें केशवसे अवलोकितहो तूने भीष्मआदि
कौरवोंका नाशकिया ६७ हे पार्थ आभीरोंसे तेरापरा-
भवहुआ यह क्याबातहै यह सब जगत् हरीकी लीला

से रचाहुआहै ६८ जैसे तूने कौरवजीते तैसेही तुझे भीरुओंने जीतलिया ६९ तुझसे रक्षितस्त्रियें जो दस्युवोंने छीनलीं वहभी वृत्तांत मैंतुझसे कहताहूँ ७० पूर्व कालमें अष्टावक्रनामक ब्राह्मण ऊपरको बाहुकरके बहुत बर्षोंतक सनातन ब्रह्मका ध्यान करतारहा ७१ और फिर असुरोंके समूहको जीतके मेरुपर्वतपरजा स्थित हुआ तहां फिरतीहुईं श्रेष्ठस्त्रियों ने उसमहात्माकोदेखा ७२ और हे पांडव रम्भा तिलोत्तमा आदिक हजारहां स्त्रियें उस महात्मा की स्तुति और परस्पर सराहना करनेलगीं ७३ कण्ठपर्य्यंत जलमें स्थित और जगके भारको धारणकिये हरीके तुल्य रूपवाले उस ब्राह्मण को उन स्त्रियों ने नम्रहोके नमस्कार किया ७४ और जैसे वहप्रसन्नहो तैसेही उपायकरनेलगीं स्तुतिसे प्रसन्न हो ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ वह मुनिबोला ७५ कि हे महाभाग वालियो मैं प्रसन्न हूं तुमसबों को जो वाञ्छितहो वह बरमांगो यदि दुर्लभहोगा वह भी बर मैं तुमको दूंगा ७६ रंभा तिलोत्तमा आदि अप्सरा बोलीं कि हे द्विज यदि तू प्रसन्नहै तो हमको अप्राप्त क्या है ७७ अन्य स्त्रियें कहनेलगीं कि हे विप्र जो तू हमपर प्रसन्न हुआ है तो वरदे कि हमारे पति पुरुषोत्तम होवें ७८ व्यास जी बोले कि उनके यहवचन सुन मुनिबोला कि ऐसेही हो इतना वचन कहके मुनिजलसे बाहिर निकसा और सबस्त्रियें आठमुखवाले मुनिके विरूपको देख ७९ घरकी तरफ मुखफेरके हास्यकरने लगीं तब उसमुनि ने उनको शापदिया कि मुझको विरूपमान के तुमने

हास्यकियाहै इसकारण मैं तुमको यह शापदेताहूं ८० कि मेरेप्रसादसे तुम पुरुषोत्तम भर्त्ताको लब्धहोके फिर मेरे शापसे हतहुई तुम सब दस्यु अर्थात् धाड़ियों को प्राप्तहोगी ८१। ८२ व्यासजी बोले कि मुनिके वचन सुनके उन्होंने फिर मुनिको प्रसन्नकिया तब वह मुनि बोला कि अच्छा फिर तुम इन्द्रलोकमें जाओगी ८३ निदान वे अष्टावक्र मुनिके प्रसाद से प्रथम केशवको प्राप्तहो फिर शापसे दस्युवोंको प्राप्तहुई और अन्तमें सुराङ्गना भईं ८४ व्यासजी बोले कि हे पाण्डव इस कारण तुझको कुछभी शोक न करना चाहिये उसी अखिलनाथ परमात्माने सबका संहार किया ८५ और तुम्हारा संहार भी उसीपरमात्मा द्वारा समीप आरहा है और बल तेज वीर्य्य सहायी आदिका भी संहार उसीने करदिया ८६ जो उत्पन्न हुआ है उसकी मृत्यु निश्चय है और संयोग तथा वियोग कर्मों की अपेक्षा से होते हैं ८७ इसलिये बुद्धिमान् इसबात को जानके शोकहर्ष को नहीं प्राप्तहोते और जो इसको नहींजानतेहैं वे हर्षशोकमें युक्तरहतेहैं ८८ और इसीकारण तुझे शोक न करना चाहिये और इसबातको जान भाइयों सहित सबको त्यागके तपके वास्ते बनमें जानाचाहिये ८९ तू अभी युधिष्ठिरके पास जाके मेरा यह वचनकह और हे वीरभाइयों सहित परलोक को गमनकर ९० व्यासजीबोले कि यहसबहाल अर्जुनने जाके युधिष्ठिरादिकोंसेकहा ९१ तब युधिष्ठिरादिक अर्जुनके कहेहुये मेरे वचन सुनके परीक्षित को राज्यतिलक दे वन को

चलेगये९२हे मुनिश्रेष्ठो यह यदुवंशमें उत्पन्नहोनेवाले वासुदेवकाचरित्र मैंने विस्तारपूर्वक तुमसे कहा ९३॥

इतिश्रादिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयंभूऋषिसंवादेश्रंशावतारकथनं नामैकोनशततोऽध्यायः ९९॥

सौ का अध्याय॥

इतनीकथा सुनकर मुनियोंने कहा कि हे मुने आपके मुखसे पवित्र धर्मको सुनेबिना हमारीतृप्ति नहींहोती बल्कि हमको बड़ा आश्चर्य्यहै १ हे मुने भूतोंकी उत्पत्ति तथा प्रलयकर्मोंकी गतिको जानतेहैं इससे आपसे पूछते हैं २ हे महामते यमलोक का मार्ग बड़ा दुष्कर और सम्पूर्ण भूतोंको भयके देनेवाला है३उस मार्ग्गसे मनुष्य यमकेस्थानको कैसेजाते हैं उसमार्गका विस्तार हमसेकहो ४ हे मुने इस सम्पूर्ण वृत्तान्तको आपकहो कि नरकके दुःखोंसे नर कैसेबचे ५ भगवान्ने मनुष्यों तथा पशुपक्षिआदिके लिये नरक स्वर्ग्गको कैसे रचा ६ और स्वर्ग्ग तथा नरक कबतक रहताहै और कैसे सुकृत तथा दुष्कृत करनेवाले जाते हैं ७ नरक और स्वर्ग्गका क्यारूपहै कितना प्रमाणहै और क्यावर्णहै और जीवको यमलोक कैसे प्राप्तहोताहै ८ व्यासजी बोले कि हे मुनिशार्दूलो हे सुव्रतो मेरे वचनोंको सुनो यह संसारचक्र अजरहै और स्थिति इसकी नहींहै ९ इसलिये मैं यममार्ग्गके निर्णय और मरणसे आदिके सबकर्मोंको कहताहूँ १०हेसत्तमो यमके स्थान और मनुष्यलोकमें ११ छियासीहजार योजनका अन्तरहै और यमराजके पुरका मार्ग तपेहुये तांबेके सदृश कहाहै १२

जीवसंज्ञक सबप्राणी उसबनके मार्गसे जातेहैं पर पुण्य करनेवाले अच्छे पवित्र मार्ग से और पाप करनेवाले खोटे मार्गसे यमराज को प्राप्त होते हैं १३ यमराजके स्थानमें बाईस नरक स्थित हैं जिनमें खोटे कर्म करने वाले पृथक् २ पकायेजाते हैं १४ और उनके नाम यह हैं रौरव रौद्र शूकर तल्ल कुम्भीपाक महाघोर शाल्मल्ल विमोहन कीट कृमिभक्ष लालाभक्ष भ्रमनदी पुञ्जबही रुधिर अंभस् अग्निज्वाल महाघोर संगश शुनभोजन घोरबैतरणी और असिपत्रबन १५।१७ न वहां वृक्षोंकी छायाहै और न तलाव सरोवर कूप बावड़ीही हैं जिनमें तृषायुक्त अपनीप्यासबुझावें १८वहां सुखदेनेवाले कोई पर्वतभी नहीं हैं और सुन्दरआश्रम तथा स्थानभी नहीं हैं १९ जिनमें मुनी तथा मार्गके थकेहुये जन बासकरें और वहमार्ग सबको गंतव्य है २० कालको प्राप्त हो सुहृद् बन्धु धनादिक जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज २१ तथा स्थावर जंगम सब उस महापन्थको जाते हैं और देवता असुर मनुष्य सब यमराजके बशमें हैं २२ स्त्री तथा पुरुष व नपुंसक पृथिवी पर जितने जीवसंज्ञकहैं पूर्वाह्न अपराह्ण तथा मध्याह्नमें २३ संध्याकालमें रात्री में तथा प्रातःकालमें यमके मार्ग को जाते हैं और वृद्ध युवा बालक अथवा गर्भयुक्त और अन्यभी सबको वह महापन्थ गंतव्य अर्थात् गमन करने योग्य है २४ संन्यासी गृहस्थी अथवा अन्यजनों को बैठे स्थित हुये शयन करते २५ जागते अथवा सोते वह पन्थ गंतव्य है यह प्राणी नहीं इच्छा करताहुआ भी जैसे इस देह

से छूटताहै सो सुनो जल अग्नि विष शस्त्र क्षुधा और पर्वत तथा दूसरे ऊंच स्थानों वृक्षादिकों से पतनादि २६।२७ एवम् अन्यनिमित्तोंसे देह प्राणोंसे छूटजाता है और इस पंचभौतिक शरीरके त्यागने में शरीर को बहुत कष्ट प्राप्त होताहै २८ फिर जीवकर्मोंसे उत्पन्न होनेवाले अन्य शरीरको ग्रहण करताहै और उस शरीरमें कर्मों से प्राप्तहुई तन्मात्रा और गुणोंको धारण करताहै २९ सुख दुःखको भोगनेके लिये जीव दृढ़शरीरको प्राप्तहो भोगयुक्त बारम्बार पाप करता है ३० और धर्मात्मा सुखोंकोभोग सुखसे धर्मराजकेपासजाता है कोपको प्राप्त हो उष्णवायुका प्रेरा हुआ जीव वहां कायामें बास करताहै ३१ और उष्मा से बँधेहुये प्राणी के मर्मस्थान भिन्न भिन्न रहते हैं उदाननामवाला पवन उसकायाके ऊर्ध्वभागमें रहताहै ३२ जो भक्षणकिये हुये अन्न जलको नीचेको प्राप्तकरके रोकदेताहै और अन्न जलकेरसको शरीरमें प्रवेशकरदेताहै ३३ वहवायु स्त्रियों पुत्रों और अपनी अवस्थावालों से प्रसन्नताको प्राप्त होताहै ३४ और श्रद्धासे पवित्र चित्तवाला होके जिसने अन्नदिये हैं वहभी यत्नकेबिनाही पुष्टीको प्राप्त होजाताहै ३५ जो नर प्रीतिसे झूठ नहीं बोलते आस्तिकमार्गमें प्रवृत्त हैं और श्रद्धावाले हैं उनका सुख द्वारा मृत्यु होताहै ३६ और जो देव ब्राह्मणकी पूजामें रतहैं किसीकी निंदा नहींकरते शुद्ध रहते हैं और शरणागतकी पालना करते हैं उनकी सुखसे मृत्यु होती है ३७ जो मनुष्यकर्मोंके वेग अथवा बैरभावसे धर्मको

नहीं छोड़ता और यथोक्तकर्मको करनेवाला तथा सौम्य वृत्ति है वहभी सुखसे मृत्युको प्राप्त होताहै ३८ जिनके काल प्राप्त होने से मृत्यु समीप होरहाहो वे तृषायुक्त को जल और क्षुधायुक्त को अन्नदे तो उनका सुखसे मृत्यु होताहै ३९ धनका दान करने से जीव शीत को जीतलेताहै और जलका दानकरनेसे आतपरूपी गर्मी को जीतलेताहै और अन्य उद्वेगके करनेवाले कष्टभी उन्हें नहीं होते ४० मोहमें आके जो दूसरों को ज्ञान नहीं देते और तमयुक्त स्थान में दीपक नहीं बारते अ-थवा जो झूठी साक्षी भरते हैं झूठ बोलते हैं गुरु की शिक्षाको नहीं मानते ४१ और वेदकी निंदा करते हैं वे सब मोहरूपी मृत्युको प्राप्तहोते हैं और भयके देने वाले पवित्र गन्धवाले क्रूर मुद्गरको हाथमें लिये यमराज के दूत उन्हें लेनेको आते हैं ४२ ऐसे यमदूतोंको आते देख वह कम्पमान हो रोदन करता हुआ माता पिता और भ्रातृयों सहित तत्काल एकवर्ण होजाता है ४३ त्रासको प्राप्त होनेसे उसको दृष्टीभ्रम होजाताहै और वह कहताहै कि मैं तुम्हारा दासहूं इसप्रकार दुःखको प्राप्तहो वह उस शरीरको त्याग ४४ अन्यदेहको प्राप्त होताहै और उस कर्मसे प्राप्तहुई यातनासे माता पिता कोभूल४५उसी प्रमाणवालेआयु और वैसीहीं स्थिति को प्राप्तहोताहै जब यमराजकेदूत उसे दारुण फांसियों से बांधलेते हैं ४६ तब वह प्राप्तहुयेकाल में बारम्बार दुःखीहोताहै और पंचभूत इन्द्रियोंसे कण्ठमात्र बायु वाले देहकोत्यागके ४७ दूसरे शरीरमें प्राप्तहो गाढ़ा

रोदनकरताहै और षट्कौशिक शरीरसे वायुभूतहुआ निकसताहै ४८ यहजीव जब पृथ्वीको त्यागताहै तब माता पिता भ्राता मामा दारा नौकर मित्र सब रोदन शब्दकरते हैं ४९ और अश्रुवोंसे पूर्णनेत्रवाला कुटुम्ब के आदमियोंके देखते२ वहजीव अपनेशरीरको त्याग वायुभूत होजाताहै ५० घोर अँधेरेसे युक्त व सुख दुःख के प्रभाववाला दुर्दमपन्थ पाप कारियोंके लिये कहा है ५१ और दुःसह तथा दूर और दुर्निरीक्ष्य तथा दुरासद और दुर्गंधवालामार्ग पापियोंके लिये वर्णनकियाहै ५२ दूतोंद्वाराखैंचा फांसीसे बँधा और मुद्गरसे ताडयमान जीव उसमहापन्थाको प्राप्तहोता है ५३ क्षीण आयुवाले मनुष्योंको देख यमराजके दूत भयङ्कररूप धारण कर जब उनके जीवको लेनेआते हैं ५४ तो वे अञ्जन के पर्वतकेसमान आकारवाले ऋक्ष व्याघ्र खर उष्ट्र बानर बीछू बैल उल्लू सर्प्प मार्जार अर्थात् बिलाव और अन्य बाहनोंपर चढ़ेहुयेआते हैं कोई शिकरा व गीदड़पर चढ़ेहुये कोई गृध्रपर चढ़ेहुये कोई बराह और प्रेतोंपर चढ़ेहुये और कोई महिष पर चढ़ेहुये नाना प्रकारके घोर रूपों को धारण किये वे सब प्राणियों को भय देने वाले दीर्घमुख करालजिह्वा कठोरनासा तीननेत्रों बड़ी ठोड़ी बड़ेकपोल और बड़ेमुख तथा दीर्घ शरीर और विकृतस्वरूप और अंकुशकेतुल्य दांतोंवाले यमराज के मन्दिरसे निकसते हैं वे मांस और रुधिरसे भीगेहुये अंगोंवाले कठोर दंष्ट्रावाले पाताल सदृश मुखवाले और भयङ्कर जिह्वावाले ज्वलित और चञ्चल नेत्रों

को फाड़े और मार्जार उल्लू खद्योत आदिको इन्द्रके धनुषकीनाईं उठायेहुये गलेमें मालाओंको पहिने कंठ में फूत्कार शब्दको करते और भयंकर सर्पों को धारण किये सर्पोंके वेगकेसमान चलतेहैं कोई बिवाहके रूप को धारणकरे कोई चतुर्भुजी रूप को धारणकिये कोई छःबाहुओंको धारणकिये कोई दश तथा बीसभुजाओं को धारणकिये कोई सौ भुजाओं को धारणकिये और कोई हजार भुजाओंको धारणकियेहुये और अनेकप्रकारके आयुध अर्थात् जलतेहुये भयानक शक्ति यष्टी चक्रआदि हथियारों को लिये और फांसी बेड़ी दण्ड आदिको धारणकिये वे महाबलवाले भयदेते हैं वे महाबलवाले जब मनुष्योंके प्राण हरते हैं तब ऐसे ऐसे रूप धरकर तथा ऐसे ऐसे बाहनोंपर चढ़कर आते हैं ५५।६७ और सब हाथोंमें शस्त्रोंको ग्रहणकर यमराज कीआज्ञासे जीवोंको फांसी तथा बज्रयुक्त शृंखलावाली बेड़ियोंसे बांधके ताड़ना देतेहुये रोदनकरते तथा बारम्बार पुकारतेहुये प्राणीको यमराजके स्थानमें लेजाते हैं ६८।७० हा तात हे पुत्र हे माता कहतेहुये उसप्राणी को यमराजके दूत पृथ्वी पर गिराकर ७१ पैने शूलों तथा मुद्गर मूसल और घनकीमार देते हैं और खड्ग शक्तिके प्रहारसे और बज्रतुल्य कठोरदण्डसे मारतेहैं ७२ वे कठोर और असह्य शब्दों से उसे झिड़कते हैं और अनेकदूत क्रोधयुक्तहोके चारोंतरफसे ताड़नादेते हैं ७३ निदान दुःखसे पीड़ित और धूपसे नीचेको शिर किये ऐसे जीव को यमराजके दूत खैंचके उस भयंकर

मार्गमें लेजाते हैं ७४ और कुशा कांटे पर्वत कीच और पत्थरोंसे पूर्णमा ा तथा उत्कट मदवाले दूतोंके प्रज्वलितनेत्रोंसे देखनेसे ७५ और दीप्तमान आदित्यकेतपन सेअश्रुवोंसेपूर्ण दग्धअंगवाला वहजीव भयकेदेनेवाले दूतोंद्वारा उसमार्गमें खैंचाजाताहै ७६ और पापोंको करनेवालेजीव तिनघोरोंसे खैंचेहुये और सैकड़ों गीदड़ों से भक्षणकियेहुये यमराजके दारुणमार्ग्गमें जातेहैं ७७ कहीं भयसे कहीं पड़के कहीं२ उठने और कहीं दुःखसे युक्तहोके वह मार्ग्ग गमन करनापड़ताहै ७८ और निर्भत्स्यमान उद्विग्नमनवाले तथा शीघ्रचलनेवाले और भयसे विह्वल तथा कम्पमान शरीरवाले इनसब जीवसंज्ञकोंको उसमार्गमें चलना अवश्यहोताहै ७९ कांटोंसे आच्छादित मार्ग तथा तप्यमान रेतसे दह्यमान और ज्ञानसे रहित सबको उस मार्गमें चलनापड़ता है ८० और मांस और रुधिरकी दुर्गन्ध और रादयुक्त बस्त्रों तथा गात्रों से पूर्ण घात से दग्धअङ्गोंवाले ८१ शब्द करनेवाले पक्षियोंसे क्रन्दमान अर्थात् कांटों और दूतों की ताड़नासे अतिदुःखोंको प्राप्तहुये उस मार्ग्गमें चलनापड़ता है ८२ शक्तियों और भिण्डिपाल अर्थात् गोफियों तथा तलवार लाठी बाण बिजली और पैने शूलोंके अग्रभागसे युक्त ८३ और श्वान व्याघ्र काक गृध्र आदिकों और सींगवाले जीवोंसे भेदन कियेहुये एवम् ८४ पृथ्वीको खोदतेहुये हस्तियों से भक्षणकिये हुये और श्वान भ्रमर काक उलूकमक्षिकाओंसे भक्ष्यमान ८५ वह मार्ग गन्तव्यहै और स्वामी तथा मित्रों

में न विश्वास करनेवाला और स्त्रीको मारनेवाला शस्त्रों से छेदनहुआ उस मार्गमें जाताहै ८६ और जो बिना अपराध जंतुओं को मारते हैं वे राक्षसों से भक्ष्यमाण हुये यमराजके मार्ग्गमें जातेहैं ८७ जो अंगके अच्छे वस्त्रों को हरलेते हैं वे विकृतरूप नग्नहोके यमराजके स्थानमें जातेहैं ८८ और जो सुगन्धकीवस्तु सुवर्ण गृह क्षेत्र आदिको हरलेते हैं वे दुरात्मा पापों के करनेवाले ८९ पत्थर लाठी दण्डआदिसे ताडयमान तथा टूटेअङ्ग-वाले रुधिरको फेंकतेहुये यमराजके मन्दिर को जाते हैं ९० जो नरकसे निर्भयहो ब्राह्मण के द्रव्यको हरते हैं और ब्राह्मणको कोशतेहैं ९१ वे अधम शुष्ककाष्ठ के समान छिन्नकर्मोंवालेहोके नेत्र और नासिकासे रुधिर फेंकतेहुये और काक गृद्ध जम्बुक आदिकोंसे भक्षणकरे हुये ९२ दारुण यमराजके किङ्करोंद्वारा ताड्यमान हुये चिल्लाते पापीजन यमराजके मंदिरमें जाते हैं ९३ ऐसा परमदुर्द्धर्ष और ज्वलितकांतिवाला रौरव विषम मार्ग पापीजीवोंको दिखायाजाताहै ९४ और तपायेहुये तांबेके पत्रके तुल्य और ज्वलितहुई अग्निकी लटाके समान कुरण्ड कंटक नामवाले जीवोंसे आच्छादित तथा भे-ड़ियों और निरंकुश हस्तियों से भक्ष्यमाण ९५ और शक्ति बज्र कांटेआदिकोंसे ज्वलित अंगारोंसे और तपे हुयेरेत अग्नि लोहेकी कीलोंसे पापीपुरुषोंको वह मार्ग दुर्गमहै ९६ ज्वलित तथा कठोर और सूर्य्यके तेजसे तपायमान मार्ग में निर्दय यमराज के दूतोंद्वारा खैंचा हुआ जीव वहां प्राप्तहोता है ९७ और शब्द करता

हुआ दुःखोंसे युक्तहोके पड़जाताहै और यमराजकेदूत शस्त्रोंसे मारते हैं ९८ वहजीव यमकी आज्ञाकरनेवाले घोर दूतोंद्वाररूपवश जीव उस मार्ग में तांबे और लोहे की रचीहुई यमराजकी पुरीमें प्रवेशकरताहै ९९।१०१ वहपुरी लक्षयोजनविस्तृत और चौकोर तथा चार दरवाजोंसेयुक्त शोभावालीहै १०२ उसपुरी में दशहजार योजनविस्तारवाला एकसुवर्णकामहलहै जो इन्द्रनील महानील पद्मराग आदि रत्नोंसे जटितहै १०३ वहपुरी देव दानव गन्धर्व यक्ष राक्षस पन्नग और घोर तथा अघोर आदिकोंसे व्याप्तहै १०४ और उसका पूर्वदिशाका दरवाजा सैकड़ों पताकाओंसे शोभित और बज्र इन्द्र नील वैडूर्य्य मोती और अनेक भूषणोंसे भूषितहै १०५ और गन्धर्व तथा अप्सराओं के गाने नाचने से रमणीकहै उस दरवाजेसे देवता ऋषि और योगिजन प्रवेशकरतेहैं १०६ गंधर्व यक्ष सिद्ध विद्याधर सर्पआदिकों केलिये उत्तरका दरवाजाहै जो घण्टा और चमरोंसेजटित १०७ और कल्याणकारी बन्दरवाल तथा रत्नोंसे अलंकृत कियाहुआहै और वीणा बांसुरी आदिसेयुक्त गानकरनेवालों और ऋग्वेद यजुर्वेद और सामवेद के उच्चारण करनेवाले मुनियोंके समूहोंसे व्याप्तहोरहा है धर्मज्ञ सत्यव्रत में परायण ग्रीष्म ऋतु में जलदान करनेवाले शीतकालमें अग्निसे तपानेवाले थकेहुयेको असवारी देनेवाले मीठावचन बोलनेवाले दानी तथा शूरवीर माता पिता तथा ब्राह्मणोंकी टहलकरनेवाले और नित्य अभ्यागतकी पूजाकरनेवालेभी उत्तर दर-

वाजेसे प्रवेशकरतेहैं १०८।१११ पश्चिमका दरवाजा अनेक रत्नों से भूषित और विचित्रमणियों तथा अन्य सामग्री और बन्दरवालोंसे अलंकृत ११२ एवम् भेरी और मृदंगके शब्दोंसे मंगलयुक्त है प्रसन्नहुये शिवके भक्त ११३ सब तीर्थोंकोकरके पवित्रदेहवाले पंचाग्नी से तप करनेवाले धीरहोके गमनकरते मरने वाले पर्वतसे गिरके मरनेवाले ११४ तथा जलमेंडूबके मरनेवाले और अपघात करके मरनेवाले पश्चिम द्वार से उसपुरीमें प्रवेशकरते हैं ११५ हे तपोधन स्वामिमित्र और जो लोकके जनोंकेलिये गायको हननकरते हैं वे घोरनर दक्षिणदरवाजेसे उसपुरीमें प्रवेश करतेहैं ११६ वहां सबजीव महाघोरशब्द करतेहैं और वहपुरी हाहाकारशब्दसे व्याप्त है दक्षिणदरवाजा ११७ अन्धकार और शृङ्गवाले जीवों से युक्त है और कांटे बीछू सर्प्प और चूंचवाले कीड़ों ११८ तथा भेड़ियों ऋक्षों सिंहों गीदड़ों श्वानों मार्जारों चीलों और अग्निकीतुल्यमुखवाले अनेकजीवोंसे दुर्गमहै ११९जितनेजीवदक्षिणदरवाजे से गमनकरते हैं सबका तिरस्कार होजाताहै और बालक तथा वृद्ध वा आतुर सब वहां तपायेजाते हैं १२० जो शरणागत को स्त्री को मित्रको और बिना हथियार वालेको विश्वासदेके मारतेहैं अथवा अगम्यास्त्रीसे जो गमनकरतेहैं और परायेद्रव्यको हरलेतेहैं १२१वा धरी हुई चीजको नहीं देते एवम् जहर और अग्निके देने वाले पराई पृथ्वी घर स्त्री शय्या वस्त्र गहना आदिको हरनेवाले १२२ दूसरेके छिद्रको देख प्रसन्न होनेवाले

सदा खोटेवचनको कहनेवाले और ग्राम देश पुर स्थान के दुःखसे मर्दनकरनेवाले १२३ तथा झूठीसाक्षीभरनेवाले कन्याओंके वादमें झूठबोलनेवाले अभक्ष्यबस्तु को भक्षणकरनेवाले पुत्रकी बहू १२४ माता और पुत्री तथा तपस्विनी इत्यादिकोंसे गमनकरनेवाले और महा पापोंके करनेवाले १२५ ये सब दक्षिणदरवाजेकेमार्ग से उसपुरीमें प्रवेशकरते हैं १२६ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसम्वादेयमलोकस्य सांगस्वरूपवर्णनोनामशतोऽध्यायः १०० ॥

एकसौएकका अध्याय ॥

मुनिजनोंने पूछा कि हे तपोधन उसपुरी में दक्षिण मार्गसे पापी पुरुष कैसे जाते हैं सो विस्तारसे कहो हमारी सुननेकी इच्छाहै १ व्यासजीबोले कि वह दक्षिणद्वार महाघोर तथा भयानकहै और नानाप्रकारके श्वानों सेव्याप्त और सैकड़ों गीदड़ोंकेशब्दसे नादितहै २ फुत्कारशब्द करनेवालोंसे वह द्वार अगम्यहै एवम् भूत प्रेत पिशाच यक्ष तथा अन्योंसेभी युक्तहै और वहांजाने वालोंके रोमखड़ेहोजाते हैं ३ ऐसे घोरदरवाजेको देखके पापीजन दुःखको देनेवाले सागररूप मोहको प्राप्त होजातेहैं ४ उसपुरीमें प्राप्तहुयेजीवोंको वे दूत शृंखलों तथा फांसियोंसे खैंचतेहैं और बारम्बार दण्डोंसे ताड़नादेतेहैं ५ कहीं २ रुधिरसे व्याप्त अंगवालेजीव दक्षिणदरवाजेमें पग २ पर गिरते पड़ते जातेहैं ६ और कहीं २ पैनेकांटों और कांकरों तथा छुरीकीसी पैनी धारवाले पत्थरोंसे और कहीं २ बहुतकींच और चूंचवालेजीवों

तथा लोहेकीसी पैनीजीभवाले जीवोंसे छिन्नहुये और गढ़ेवाली भूमिके लंघनकरने और वृक्षोंसे व्याप्त पर्व्वतों तथा तपायेहुये अंगारोंसे दुःखितहुये जीव दक्षिण मार्गकोजाते हैं ७।९ कहीं२ विषम गढ़ों तथा लोहेकीसी पैनीचूंचवाले जीवों और तपायेहुये बालू तथा कठोर तृणों एवम् १० तपायेहुये लोहेकी बेड़ियों प्रकाशवाले अग्नि और तप्यमान शिलाओंसे व्याप्त मार्गसे ११ और कहीं२ बालू तथा बड़े२ कांटों और तपायेहुये जल तथा प्रकाशकीहुई अग्निसे व्याप्त १२ एवम् कहीं भेड़ियों तथा डाढ़वाले कठोरकीड़ों और कहीं २ बड़ीबड़ी जोकों तथा सर्प्पों और मर्द्दनकरने औ पैनेसींगोंवाले बैलों और मदांध हस्तियों तथा बलसे मथनकरनेवाले जीवों १३।१४ और खोटे मार्ग को चलनेवाले जीवों बड़े सींगोंवाली महिषियों और अनेक भयदेने तथा भक्षण करनेवाले उन्मत्तजीवों १५ महाघोर डाकिनियों और कठोर राक्षसों से व्याप्त मार्ग से प्रज्वलित अंगारोंकी वर्षासे दग्धअङ्गवाले जीव दक्षिणद्वारमेंप्रवेश करते हैं १६ बहुतधूलीकी वर्षासे दुःखीहुये रोदनकरतेहैं और मेघकेसेरूप तथा लम्बे केशोंवाले दूत बारम्बार उन्हें दुःखदेतेहैं १७ और चारोंतरफसे शरोंकी वर्षाकर उसेचूर्णकरदेतेहैं छूरीकीसीपैनीजलकीधारा गमनकरते हुये जीवको भेदनकरदेतीहैं १८ और महाशीतलकठोर वायु चारोंतरफसे पीड़ादेके जीवको सुखादेता है १९ ऐसे मार्ग से दुस्तर और स्थान नहीं है जिसमें दुर्बल होके जीव वहां प्राप्तहोताहै २० पापोंकेकरनेवाले यमराजकी

आज्ञा करनेवाले घोररूप दूतोंद्वारा बलसे उस मार्ग्गमें प्राप्तकियेजातेहैं २१।२२ जीव पराधीन हुआ तथा मित्र और बन्धुजनों से रहित अपने कियेहुये कर्म्मोंको शोचताहुआ २३ और प्रेतरूप होनेसे ध्वस्त कण्ठ और तालू और कृश अंगोंवाला तथा क्षुधारूपी अग्निसे दग्धहुआ भयको प्राप्तहोताहै २४ कोई शृंखलोंसे बँधा हुआ ऊपरको पैर किये मदोन्मत्त दूतों द्वारा खेंचे जाते हैं २५ और कितने नीचेको छाती तथा मुखकरके और अन्नपानीसे रहित बारम्बार वहां जातेहैं २६ दही घृत चावल तथा सौगन्धिक वस्तु वा शीतल जलको वहां देख वे जब मांगतेहैं तो क्रोधसे रक्तनेत्रोंवाले यमराज के दूत झिड़कके कहतेहैं २७।२८ कि तूने कोई व्रत नहीं किया और ब्राह्मणोंको दानभी नहींदिया बल्कि अन्य दानकरनेवालेको ब्राह्मणोंके देखतेहुये निवारण करदिया २९ इसलिये उस पापकेफलको तू अभीभोग तेरा धन न अग्निने दग्धकिया न जलमें डूबा न नष्टहुआ और न राजा वा चोरोंने लिया ३० हे नराधम तू अभी देख उसके फलको प्राप्तहोगा तूने दान क्योंनहीं किया जिन्होंने यहां दान कियाहै तथा श्रेष्ठमार्ग का साधन कियाहै उनकेवास्ते ये पदार्त्थहैं और पहिलेही कल्पना कियेजातेहैं ३१।३२ भक्ष्य भोज्य तथा पानकरने वा चूसनेकी वस्तुओं को देखके तू लोभ मत कर क्योंकि तूने किसीकाभी दान नहीं कियाहै ३३ जो दानमें रत तथा यज्ञ और ब्राह्मणों का पूजन करनेवाले हैं उनके लिये यहां यह पदार्त्थहैं ३४ हे नारको पर द्रव्यका क-

थन अब हम कैसेकहैं किंकरोंके यह वचन सुन भूखसे पीड़ित वह जीव पदार्त्थोंमें इच्छा नहींकरता ३५ और यमराजके दूत दारुण शस्त्रों से ताड़ना देके यमराजके पास उस जीव को प्राप्त करदेते हैं ३६ धर्म्मात्मा धर्म के करनेवाले देव आदि सब को दण्डदेनेवाले यमके सामने बड़े कष्टसे मरके जीव जाताहै ३७ जब दूतोंकी आज्ञासे जीव यमराजके अगाड़ी जातेहैं तब वे भयानकरूप यमको देखतेहैं ३८ पापोंके बन्धनसे युक्त तथा विपरीत बुद्धिवाले जीवोंको दंष्ट्राओंसे करालमुख तथा भृकुटियोंसे कुटिल देखनेवाला ऊपरको केशोंको किये तथा बड़ी डाढ़ीवाला फरकतेहुये ऊपरले ओठ और अठारह भुजाओंवाला यमराज क्रोधको प्राप्तहो नीले अंजनके पर्वतकेसमान उपमावाला सब शस्त्रोंको धारणकिये और ब्रह्मदण्डसे भिड़कता हुआ महामहिषपर चढ़ा प्रकाशमान अग्नि के तुल्य नेत्रोंवाला रक्तमाला और रक्तवस्त्रोंको धारणकिये और महामेघ के समान ऊँचा तथा प्रलयकालके मेघकासा शब्द करता महा समुद्रके समान गम्भीर मानों त्रिलोकी को ग्रसलेगा और अग्निके समान मुद्गरलिये प्रलयकालकी कालरूपी अग्निकेसमान और अन्तके करनेवाला भयानक और मारीच तथा उग्र मारीच कालकी तुल्य दारुण रात्री तथा अनेक आधिव्याधिसेयुक्त भयके देनेवाले और शक्ति शूल अंकुश फांसी चक्र तथा बज्रयुक्त दण्ड और रौद्र और कठोर दुर्द्धर्ष धनुषको धारण कियेहुये महा पराक्रमी क्रूर तथा अंजन के समान कान्तिवाले

सब शस्त्रोंको धारण किये दूतकर्म के करनेवाले असं-
ख्यातभयङ्कर दूतों ३९।४७ तथा अपने कुटुम्बसहित
यमराज तथा चित्रगुप्त पापीपुरुषको देखताहै ४८ और
झिड़कताहै फिर चित्रगुप्त धर्मराजके कहनेसे जीवको
बोधकराताहै ४९ कि तुम खोटेकर्मोंके करनेवाले तथा
दूसरेके द्रव्यको हरनेवालेहो और रूप तथा वीर्य्य से
गर्वित तथा पराईस्त्रियोंसे रमणकरनेवालेहो ५० जैसा
तुमने कर्म कियाहै वैसाही भोगो तुमने अपने हननके
लिये दुष्कृतकर्म कियाहै ५१ और अब तुम्हीं पीड्य-
मानहुये अपने कर्मोंकोदेखो और भोगो अबकिसीकाभी
दोषनहींहै ५२ अपने घोरकर्मों खोटी बुद्धि तथा बलसे
गर्वितहो जोराजा मेरेसमीप आतेहैं ५३ उनसे चित्रगुप्त
कहतेहैं कि हेनृपोत्तम दुराचारी और प्रजाके नाशकारी
हो थोड़ेकाल रहनेवाले राज्यको प्राप्तहो तुमने दुष्कृत
कर्म्मकिया ५४ और राज्यके लोभ तथा मोहमें आके
बलसे प्रजाको अन्यायमेंप्रवृत्तकिया इसलिये अब ह-
नन होतेहुये उसके फलकोभोगो तुमने जो राज्य तथा
धनको प्राप्तहोके ५५।५६ अशुभकर्म कियाहै इसवास्ते
सबकोत्यागके काकरूपहो यहां स्थितहो ५७ अब उस
बलको हमनहीं देखते जिससे तुमने प्रजाकानाशकिया
यमके दूतोंद्वारा प्राप्त कियेहुये तुमको कैसा फलहै ५८
ऐसे बहुतसे वाक्योंको सुन वे अपने कर्मों को शोचते
हुये चुपके हो स्थित होते हैं ५९ फिर धर्मराज आप
राजाओंको क्रमसे आज्ञादे पापोंकी शुद्धीके लिये यह
वचन कहते हैं ६० कि हे चंड और महाचंड इन राजों

को पकड़कर पापयुक्त देशोंमें लेजाओ और क्रमसे नरकादिकोंमें प्राप्तकरो ६१ फिर अन्य दूतोंसे कहताहै कि पापकर्म में जो नर प्रवृत्तहैं तिनको प्राप्त करो ६२ और वे दूत कहते हैं कि हेतात यह धर्मसे विमुख तथा पापकर्मका करनेवाला आपके अगाड़ीहै ६३ यह लोभी दुराचारी महापापोंसे युक्त बड़े २ पापों को करनेवाला सदा हिंसा करने में रत और अशुद्ध है यह अगम्या स्त्रीसे गमन करनेवाला परायेद्रव्यको हरनेवाला कन्या विषयक झूठ बोलनेवाला मित्रके मारनेवाला तथा मित्र की चुगली करनेवाला और मदसेमत्त धर्मका निन्दाकारी है और मर्त्यलोकमें इस दुरात्मा ने पापकर्म का आचरण कियाहै ६४।६६ अब हेदेवेश इसपर तुम्हारी दयाहो चाहे न हो पर इसपर दण्ड तथा कृपादृष्टि के विधान करनेवाले आपहीहो और हम प्राप्त करनेवाले हैं ६७ धर्मराजसे ऐसेकहके वे पापकारी जीवों को यमराजके अगाड़ी करते हैं और यमराज घोरदण्ड देने के लिये दूतोंको आज्ञा देताहै तब जैसा जिसका कर्म होताहै तैसाही दण्ड अथवा उत्तम भोग उसे मिलता है पापी जीव पर क्रोधकर यमराज दूतों को दण्ड की आज्ञा देता है और वे दूत अंकुश मुद्गर दण्ड क्रकच शक्ति तोमर तथा खड्ग शूल आदिकोंसे पापियोंको भेदनकर किरोड़हा नरकोंमें पापियोंको प्राप्तकरते हैं ६८। ७२ और वे अपने कर्मोंके दोषोंसे पीड़ाको प्राप्त होते हैं अब उन नरकों का भयंकर रूप नाम तथा प्रमाण सुनो जिनमें जीव जाते हैं रुधिरसे भीगा हुआ महारि

बीच नामवाला नरक विख्यातहै ७३। ७४ जो बज्र कं-
टकोंसे मिलाहुआ है और दशहजार योजन विस्तार
वालाहै ७५ उसमें डूबाहुआ पुरुष बज्र कांटोंसे भेदन
किया जाताहै गौके मारनेवालोंके लिये महाघोर नाम
वाला नरकहै जो एक लक्ष योजन का विस्तृत है ७६
कुम्भीपाक नामवाला दारुण नरक भी एक लक्षयोजन
विस्तारवालाहै और उसमें रेतसे युक्त श्रेष्ठकलशे अं-
गारोंसे ढकेहुयेहैं ७७ ब्राह्मणको मारनेवाले और भूमि
तथा धरोहरके हरनेवाले ७८ और दूधके क्रय विक्रय
करनेवाले वहां डालेजाते हैं वहां जल अन्न और वायु
नहीं हैं ७९ और विप्रोंको दानदेके उनसे विरोध करने
वाले निश्चेष्टहुये उसमें डालेजाते हैं अंगारोपचय नाम
वाले नरकमें पापी दीप्त अंगारोंसे जीव पकाया जाता
है ८० और जिसने ब्राह्मण को दान नहीं दिया है वे
तहां दग्ध कियेजाते हैं महापात नामवाला नरक भी
लक्षयोजन ऊंचा है ८१ जो सदा झूठ बोलते हैं वे अ-
धोमुख हुये वहां जाते हैं महाज्वाला नामवाला नरक
ज्वालाके प्रकाशसे भयानक है ८२ और जो पापों में
बुद्धि करनेवाले हैं वे वहां दग्ध होते हैं क्रकच नामवाले
नरक में बज्रपातकसे अग्रभागवाले क्रकचोंसे अगम्य
हुये वहां गमन करते हैं गुड़पाक नामवाले नरकमें एक
जलता हुआ तलावहै जिसमें ८३।८४ अपने गोत्रका
नाश करनेवाले जीव विलुप्तहुये दग्ध होते हैं प्रस्फुट
नामवाला नरक बज्रकी सूइयोंसे व्याप्तहै ८५ वहां जो
परछिद्रमें रतहैं वे पीड़ाको प्राप्तहोते हैं क्षारहृदनामवाला

नरकक्षारसे भराहुआहै८६ और वहां जो प्राणोंके बध करनेमें रतहैं वे शस्त्रोंसे छेदन कियेजाते हैं क्षुरधार नाम वाला नरक पैनीछुरियोंसे युक्तहै ८७ ब्राह्मणकी पृथ्वी को हरनेवाले कल्पके अन्तमें छेदनकियेजाते हैं काल-सूत्रनामवाला नरक बज्रसूत्रोंसे व्याप्तहै ८८ जो किसी का नाशकरने में रहते हैं वे वहां कल्प पर्य्यन्त रहते हैं कश्मल नामवाला नरक कफ और सिनक से व्याप्त है ८९ और जिनकी सब काल में मांसखानेकी रुचिहै वे कल्पपर्य्यन्त तिसमें डालेजाते हैं उग्रगन्ध नामवाला नरक नानाप्रकारके मूत्र और विष्ठाओं से युक्त है ९० और जो पितरोंको पिण्डनहींदेते वे वहां डालेजाते हैं दुर्द्धर नामवाला नरक जोक तथा बीछूसे व्याप्तहै ९१ और पापी वहां जाके दशहजार बर्षतक रहते हैं बज्र महापीड़ा नामवालानरक बज्रोंसे रचाहुआहै ९२ जो नर झूठीसाक्षीभरतेहैं वे ईखकीनाई वहां पीड़ेजातेहैं तपाये हुये लोहेकासा मंजूषनामवाला नरक है जहां पापोंसे युक्तनर दग्धकियेजाते हैं ९३ अप्रतिमा नामवाला न-रक राद मूत्र और विष्ठासेयुक्तहै जो कोई वेदकीनिंदा करते हैं वे नीचे को मुखकरके वहां पड़ते हैं ९४ परि-लुम्पाख्य नामवाला नरक खोटे प्रेतों से व्याप्तहै जो ब्राह्मणोंकोपीड़ादेतेहैं वे वहां राक्षसोंसे भक्षणकियेजाते हैं ९५ लाक्षाप्रज्वलित नामवालानरक ज्वालामेंयुक्त है वहां पापीपुरुष दग्धकरके डुबोयेजाते हैं ९६ महाप्रेत नामवालानरक प्रज्वलितहुई शूलियों से ऊँचा है और जो कोई श्रेष्ठाभार्या को मारदेते हैं वे वहां शूलियों से

भेदनकियेजाते हैं ९७ महाघोर नामवाले नरकमें शिलाओं से दग्धहुये पंखोंवाले बायसकाक हैं जो पराई स्त्रियोंका सेवन करते हैं वे वहां खायेजाते हैं ९८ शाल्मल नामवाले नरकमें तपायेहुयेकांटे हैं और जो परस्त्रियोंसे रमणकरते हैं वे वहां डालेजाते हैं ९९ जो सदा सत्यबोलते हैं तथा परधर्मका कीर्त्तनकरतेहैं परन्तु परस्त्रीरत हैं वे पापीभी वहां डालेजाते हैं १०० और उन की जिह्वा तथा इन्द्रिय जाड़वाले जीवोंसे छेदनकराये जाते हैं १०१ जो रागों तथा कटाक्षोंसे पराईस्त्रियोंकी इच्छाकरते हैं उनकेनेत्र नाराचशस्त्रोंसे भेदनकियेजाते हैं १०२ और माता बहिन पुत्री पुत्रबधूसे गमनकरने वाले यमराजके दूतोंद्वारा अंगारोंसे दग्धकियेजातेहैं १०३जो मूढ़ प्राणियोंको मारते हैं उनके मांसको कल्प के अन्तमें काक और गृद्ध भक्षण करते हैं १०४ आसन शय्या तथा बस्त्रको जो मूढ़ हरते हैं वे यमकेदूतों द्वारा शक्ति और तोमर से भेदन कियेजाते हैं १०५ और जिसने फल पत्र तथा तृण कुबुद्धिसेहरे हैं उन्हें क्रुद्धहुये यमकेदूत तृणरूपी अग्निमें दग्धकरतेहैं १०६ जो परद्रव्य तथा परस्त्री को हरताहै और जो नरोंको कष्टदेतेहैं उनका जलताहुआ हृदय शूलसे भेदन किया जाताहै १०७ कर्म मन और बाणीसे जो धर्मसे रहित हैं वे यमराजकी घोरयातनाको प्राप्तहोते हैं १०८ ऐसे सैकड़ों हजारों लाखों तथा किरोड़ों नरक पापराशिवाले पुरुषों द्वारा सेये जाते हैं १०९ और यहां जो मनुष्य स्वल्पभी खोटाकर्मकरते हैं वे घोर यमयातनाको प्राप्त

होजातेहैं ११० श्रेष्ठकहेहुये धर्मको न करने और समीप में किसीधर्म को देख न माननेवाले १११ एवम् दिन रात जो पापोंकायत्नकरते हैं और मोहमेंआके जो धर्म का आचरणनहींकरते ११२ वे यहां फलको भोगते हैं और जो परलोकसे विमुखहैं वे अधमनर घोर नरकमें प्राप्तहोतेहैं ११३ नरकवास दारुणहै और स्वर्गवास सुख का देनेवालाहै शुभ तथा अशुभ कर्मके करनेवाले जीव वहां प्राप्तहोते हैं ११४ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांपृथकपृथक्यातनाकीर्त्तनंनामैक शततमोऽध्यायः १०१ ॥

एकसौदोका अध्याय ॥

मुनिजनोंने कहा कि हे सत्तमाहो अतिघोर यमका मार्ग आपनेकहा और घोरनरक तथा घोरद्वारभीकहा १ हे ब्रह्मन् पापी नरों को यमका मार्ग्ग अतिभयानक है इसलिये वहां पापीजन सुखसे चलेजावें ऐसा उपाय कहो २ व्यासजी बोले कि यहां जो कर्मोंसेयुक्तहै तथा हिंसासे जो रहित गुरूकी टहलमेंयुक्त तथा देव ब्राह्मण की पूजा करनेवाले ३ वे इस मनुष्यलोक से भार्य्या सहित उस मार्गको नहींजाते वे अनेकप्रकारके सुवर्ण युक्त शोभायमान विमानोंपरचढ़ धर्मराजके पुरमें शोभितहोते हैं ४।५ और जो सत्य बोलतेहैं और शुद्ध अन्तःकरणवालेहैं वेभी देवतोंकीतरह विमानमें बैठके यमके मन्दिरको जातेहैं ६ और जो सब पवित्र दानोंको करतेहैं श्रेष्ठवृत्तिको रखतेहैं और कृपणब्राह्मणको दान देतेहैं ७ वे सब दिव्यवर्णवाले तथा मणियोंसे जटित

विमानोंमें बैठके दिव्यअप्सराओंसे शोभितहुये पवित्र यमराजकी पुरीमें जातेहैं ८ जो जूती छत्री शय्या आसन वस्त्रादिक तथा गहनों अर्थात् आभूषणोंका दान करतेहैं ९ वे सब अलंकारोंसे सज्जित हस्तियोंपर चढ़ दिव्यवर्णवाले तथा सुवर्णसे शोभित यमराजके पुरको जातेहैं १० और जो गुड़ तथा पीनेकीवस्तु दुग्धआदिकोंका दान करतेहैं और शुद्धआत्मासे जो चावलोंका दानकरते हैं ११ वेभी सुवर्णयुक्त नानाप्रकारके विमानों पर चढ़ यमके मन्दिर में जाते हैं और वस्त्र तथा स्त्रियों से यथाकाम बारम्बार सेवन करते हैं १२ जो श्रद्धायुक्त दूध घृत शहद गुड़ दही आदि ब्राह्मणोंकेलिये यत्नसे दानकरते हैं १३ वे चक्रवाकोंके शब्दोंसेयुक्त सुवर्णकेविमानोंपर चढ़के गन्धर्वोंके गानसुनते यमके स्थान में जाते हैं १४ जो फल तथा सुगन्धियुक्त पुष्पोंका दान करते हैं वे हंसोंसेयुक्त विमानोंपर यमकीपुरी में प्रवेश करते हैं १५ और जो तिलकी धेनु तथा तिलों और घृतकीधेनुका दान श्रद्धायुक्त वेदपाठी ब्राह्मण को देते हैं १६ वे चन्द्रमाके मण्डलकी नाईं निर्मल विमानपर चढ़ यमके स्थानमें प्राप्तहोते हैं वह पुर गन्धर्व तथा गानकरने वालोंसे युक्तहै १७ बड़े तलाव तथा शीतल जलका स्थान बनवाने वाले सब शोभायुक्त १८ सुवर्ण तथा चांदीके बड़े२ घण्टोंसे शब्दित तथा वीजनों और ताड़पत्रोंसेयुक्त महाकान्ति वाले विमानोंपरचढ़कर यमपुरको जाते हैं १९ जहां रत्नोंसेयुक्त और शुभ लक्षणों वाले देवतोंकेसमूह प्राप्तहोते हैं २० और वायुकेसे वेग-

वाले विमानोंपर लोकपालभीआतेहैं ऐसा धर्मराजका पुर नानाप्रकारके जनों से युक्त होरहा है २१ जो सब प्राणियों को जिलानेवाला जल का दान देते हैं वे भी सुखपूर्वक विमानोंपरचढ़के उसमहामार्गमें जातेहैं२२ और काष्ठ की पादुका अर्थात् खड़ाऊं तथा सिंहासन व आसन जिन्होंने ब्राह्मणों के लिये दियाहै २३ वेभी सुवर्ण तथा मणियोंसेजड़ित सिंहासन तथा पादुकाओं से निर्म्मल यमराज के मन्दिर में जाते हैं २४ जिन्होंने बाग तथा विचित्र पुष्पों की बाटिका लगाई है वे अप्सराओं से युक्त विमानोंमें बैठके यमके स्थानमें जाते हैं २५ और जो सुवर्णयुक्त रथ तथा भूमिका दान देनेवाले हैं वे सब कामना तथा तृप्ति के देनेवाले विमानों पर चढ़के यम के स्थान में जाते हैं २६ जो अलंकृत करीहुई कन्याका दान ब्राह्मण को देते हैं वे उदय हुये सूर्य्य के तेजकेसे तेजवाले विमानपर चढ़के २७ दिव्य कन्याओंसे युक्त यमराजके मन्दिरमें प्रवेश करतेहैं २८ भक्तिपूर्वक सुगन्धयुक्त अगर कर्पूर पुष्प तथा धूप जो ब्राह्मणके लिये देते हैं २९ वे सुगंधित सुन्दर वेष तथा उत्तम कांतियोंसे भूषितहुये और विमानों से अलंकृत हुये धर्मराजकी पुरीमें प्रवेशकरते हैं ३० दीपकका दान करनेवाले दशोंदिशाओंके प्रकाशमान मार्गसे सूर्य के तुल्य विमानमें प्रकाशमानहो यमके स्थानमें प्राप्तहोते हैं ३१ बास करनेके लिये सुवर्णसे जटित घर को ब्राह्मणके लिये जो देदेते हैं वे उदयहुये सूर्यकीसी कांति वाले होके धर्मराजके स्थानमें जाते हैं ३२ और जल

तथा भोजन और सुवर्णसे युक्त जलकी हांडीका दान जो देते हैं वे अप्सराओं से पूजेहुये महा हस्तियों पर चढ़के जाते हैं ३३ पैरोंके मलनेका उबटन तथा शिर के मलने और स्नान करने को जल वा गंगाजल जो ब्राह्मणको देते हैं वे बड़े ऐश्वर्य्यसे युक्तहुये यमके स्थान को जाते हैं ३४ और मार्गसे थकेहुये ब्राह्मणको जो विश्राम करवादेते हैं वे चक्रवाकोंके शब्दसे युक्त विमानों पर यमके स्थानमें जाते हैं ३५ घरमें आयेहुये ब्राह्मण को जो आसनदेते तथा पूजते हैं वे परमसुखको प्राप्त हुये यमके मार्गमें जाते हैं ३६ और जो नमोब्रह्मण्यदेवाय इस मन्त्रसे हरिको नमस्कार करते हैं और हे हरे मेरी रक्षाकरो ऐसे जो कहते हैं वे उस मार्गमें सुखसे चलेजाते हैं ३७ जो अनन्तकी पूजामें रत तथा पाखंड और झूठसे रहित हैं वेभी हंसयुक्त विमानोंपर यमके मार्गमें जाते हैं ३८ और जितेंद्री होके जो चौथे दिन भोजन करते हैं वे मयूरोंसे युक्त विमानोंपर धर्मराजके मार्गमें जाते हैं ३९ जो व्रत धारणकरके तीसरे दिन भोजन करते हैं वेभी हस्ती तथा सुवर्ण युक्त रथों पर चढ़के यमके स्थानमें जाते हैं ४० और जो नित्य जितेंद्रिय होके धनुषको धारण करते हैं वे हस्तीपर चढ़के इन्द्रके समान यमके मार्गको जाते हैं ४१ धर्मराजकी पुरी दिव्यहै और नानाप्रकारकी मणियोंसेभूषित नाना प्रकार के वस्त्रों से युक्त और नाना प्रकारके शब्दों से शब्दितहै ४२ मास मास प्रति शुक्ल तथा कृष्णपक्षके व्रत करनेवाले सिंहों से युक्त विमानों पर उस यमकी

पुरीमें जाते हैं और अप्सराओंसे युक्त रहते हैं ४३ एकाग्र तथा दृढव्रत होके जो प्रस्थानका काल में दान करते हैं वे अप्सरों और गन्धर्वोंसे युक्त सूर्य्यकी कांति केसे विमानोंपर चढ़के यमके मार्गमें जाते हैं ४४ जिसने वैष्णवरूपी आत्मा से गोबर के खाने से आत्मा का साधन कियाहै वे अग्निवर्णवाले विमानपर यमके स्थानमें जाते हैं ४५ और जो नारायणमें तत्पर होके अग्निमें प्रवेश करते हैं वे अग्निके प्रकाशसे युक्त विमानपर यमके मार्गको जाते हैं ४६ जो अनशन व्रतमें विष्णुका स्मरणकर प्राणोंको त्यागते हैं वे सूर्य के प्रकाशसे युक्त विमानोंपर यमके स्थानमें जाते हैं ४७ और जो प्रातःकाल जलको स्पर्शकरके प्राणोंको त्यागते हैं वे चन्द्रमाके मण्डलकेसमान विमानोंपर चढ़के यमके स्थानमें जाते हैं ४८ जो विष्णुभक्त होके अपने शरीरको अर्पणकरनेवालेहैं वे सुवर्णयुक्त रथमेंबैठके यमकेस्थान को जाते हैं ४९ और स्त्रीयुक्त घरोंमें तथा गौ के स्थान वा युद्धमें जो मृत्युको प्राप्तहोते हैं वे देवतोंकी कन्याओं से युक्त तथा सूर्यकी कांतिवाले यमके स्थानमेंजाते हैं ५० जो जितेंद्रिय तथा विष्णुभक्त होके तीर्थयात्रा करते हैं वे तिस घोरमार्गमें सुखपूर्वक चलेजाते हैं ५१ और जो यज्ञों तथा बहुतसी दक्षिणासे ब्राह्मणोंका पूजनकरते हैं वे तपायेहुये सुवर्णकेसमान विमानपरचढ़के सुखसे यम के स्थानकोजाते हैं ५२ अपने नौकरों तथा अन्यों को जो पीड़ा नहींदेते वे सुखसे सुवर्णके तुल्य कान्तिवाले विमानों पर यमके स्थानकोजाते हैं ५३ और जो सब

जीवोंपर शान्तिरखते हैं तथा उनके भयको दूरकरते हैं वे क्रोध मोह मद आदिसे रहित और जितेन्द्रियहुये ५४ पूर्ण चन्द्रमाकीसी कान्तिवाले विमानोंपर देव गन्धर्वों सेयुक्त यमकेपुरमें जाते हैं ५५ सत्य तथा शुद्धतासेयुक्त एक पैरसे स्थित होके जो विष्णु का पूजन करते हैं वे सुखसे धर्मराजके पुरको जाते हैं और जिनको मीठेका स्वादनहीं है और जो मिष्टतममांसको ५६ जो भक्षण करनेवालीवस्तुओंमें अभक्ष्यहै उसे त्यागदेतेहैं उनको हजारगौओंके दानकाफल प्राप्तहोताहै ५७ पहिले वेद के जाननेवालोंमें श्रेष्ठ ब्रह्माजी यह कहतेहुये कि सब तीर्थोंके स्नानका जो फलहै सो मांसके त्यागनेमें प्राप्त होताहै ५८ हे विप्रो वे धर्मसेयुक्तहो सुखपूर्वक यमराज के स्थानमें चलेजाते हैं ५९ जो महीनेके व्रतमें युक्त हैं वे सूर्य्यलोकमें जाते हैं ६० और उन धर्मात्माओं को देवता तथा यमराज आप बड़ाई देते हैं ६१ आयेहुये विप्र को जो आसन पाद्य और अर्घ्य देतेहैं उन महात्मा तथा आत्मा के हितकरने वालों को धन्य है ६२ सुखके लिये जिन्होंने रथादिकका दान कियाहै उनके वास्ते दिव्य स्त्रियों से भूषित विमान है ६३ और वे सम्पूर्ण कामनाओंसे युक्त स्वर्ग में जाते हैं और वहां महाभोगोंको भोग पुण्यके क्षय होनेपर यहां आजाते हैं ६४ एवम् यहां जो कुछ शुभ अथवा अशुभ किया है तिसको भोग फिर पुण्यके प्रभावसे धर्मराजके स्थान में जाते हैं और वहां ६५ शुद्धमन होके अपने आत्मा को पितृभूत देखते हैं और उस आत्मा से सदा भक्ति

रूप फलको देनेवाले धर्म में युक्तरहते हैं ६६ धर्म से
धन तथा मोक्षहोताहै और धर्महीमाता तथा भ्रातारूप
है धर्महीसे सुहृद प्यारे होते हैं६७और धर्मही स्वामी
तथा रक्षा करनेवालाहै धर्मही भ्राता तथा विधान क-
रनेवालाहै और धर्मही पालना करनेवाला है धर्म से
अर्थ अर्थसे काम और कामोंसे भोग तथा सुख होते
हैं ६८ धर्म से एकाग्र ऐश्वर्य्य होता है और धर्मसेही
स्वर्गकी गति होती है जिन्होंने धर्मकी सेवा करी है वे
महा भयसे रक्षित होजाते हैं ६९ और देवपना तथा
ब्राह्मणपना धर्मसेही होताहै इसमें संदेह नहीं धर्म से
सब काल के इकट्ठे करेहुये पाप नाश होजाते हैं७०हे
द्विजोत्तमो हजारों जन्मपाके दुर्लभ मनुष्य शरीर जीव
को प्राप्त होताहै और फिर वहां धर्ममें बुद्धि होनी दु-
र्लभहै ७१ मनुष्य शरीर पाके जो सबको वांछित धर्म
का आचरण नहीं करते वे कुत्सित दरिद्री विरूप तथा
व्याधिसे युक्त रहते हैं ७२ अन्य पुरुषोंके मारनेमें जो
लिप्त हैं वे मूर्ख धर्म से रहित हैं और दीर्घ आयुवाले
शूर वीर तथा पण्डित वा अभ्यागतको जो भोजन क-
रावते हैं सो धर्मयुक्त हैं ७३ हे विप्रो जिन्हों ने पहिले
धर्म कियाहै वे रोगरहित और रूपवान् होते हैं और
वेही धर्ममें रतहुये उत्तम पुरको जाते हैं ७४ और जो
पापोंसे सेव्यमानहैं वे सर्प्पादिकोंकी योनिको प्राप्तहोते
हैं जो वासुदेवके अनुकूलहैं वे नरकोंको नहीं प्राप्त होते
हैं ७५ वे स्वप्नेमेंभी यमराजको नहीं देखते और नहीं
हैं आदि अन्त जिनके ऐसे दैत्य दानवोंको मारनेवाले

देवके पास रहते हैं ७६ जो नर नित्य विष्णु को नमस्कार करते हैं वेभी यमको नहीं देखते मन कर्म और वाणीसे जो अच्युतकी शरणमें हैं ७७ और हे द्विजो जो जगत्‌के नाथ नारायण नित्यरूप परमात्माकी भक्ति में रतहैं वे मुक्तिफलके भोगनेवाले हैं और यमराजकी सामर्थ्य मुक्तिदेनेकी नहीं है ७८ जो नमस्कार करते हैं वे विष्णुके स्थानसे अन्यत्र गमन नहीं करते और उनको यमकी तथा दूतोंकी पुरीमें प्रवेश करनेकी गम्य नहीं है ७९ जो नमस्कार करके विष्णु को देखते हैं वे नरकोंको कैसे प्राप्तहोवेंगे ८० जो वे मोहयुक्त होके बहुतसे कियेहुये पाप और नरकोंको त्यागके सब पापों के हरनेवाले महादेव तथा हरिके मन्दिरमें जाते हैं ८१ और जो शुद्धभावसे जनार्दनकास्मरणकरते हैं वेभीशरीरकोत्यागके रोगरहित हो विष्णुकेस्थानमें जातेहैं ८२ क्रोधी भी यदि अनन्यचित्त होके सब काल में हरिका कीर्त्तनकरते हैं वेभी दोषोंके नाशहोनेसे वैसेही मुक्तिको प्राप्तहोजातेहैं जैसे चंदेरीपुरीकापति रुक्मैया ८३ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांधार्मिकानांयमलोकवर्णनं नामद्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२ ॥

एकसौ तीन का अध्याय ॥

लोमहर्षणजी बोले कि हे मुनिसत्तमो ऐसे यम के मार्ग तथा नरकोंके दुःखको सुनकर फिर मुनियोंने वेद व्यासजीसे यह संदेह किया कि १ हे भगवन् हेसर्वधर्मज्ञ हे सर्वशास्त्रविशारद इस मनुष्यकी सहाय करने वाला कौनहै २ पिता माता पुत्र गुरु तथा ज्ञाति बांधव

सम्बन्धी तथा मित्रोंके देखते इस शरीरको त्याग जीव कहां लीन होजाता है ३ और परलोकमें कैसे चलता है ४ व्यासजी बोले कि हेविप्रो जीव अकेलाही जन्मता है अकेलाही नाश होताहै अकेलाही अज्ञानको प्राप्त होताहै और अकेलाही दुर्गतिको प्राप्त होताहै ५ पिता माता भ्राता पुत्र गुरू ये उसकी सहाय नहीं करसकते काठ तथा लोहेके तुल्य इस शरीरको त्याग ६ तथा दो घड़ीतक रोदन करके परलोकको मुख करके जीव चला जाता है और कियेहुये कर्मभी शरीरको त्यागके साथ-ही चलते हैं ७ जो प्राणी धर्मसे युक्तहैं वे परमरूप स्वर्ग में जाते हैं और पापसंयुक्त नरकोंमें जाते हैं ८ इसलिये मेरे कहेहुये अर्थको जान तथा पंडितहोके धर्मकी सेवा करे क्योंकि धर्मही मनुष्योंका सहाय करनेवाला है ९ लोभ से मोहितहुये नर लोभसे मोहसे क्रोधसे भयसे तथा खोटे वचनोंके सुननेसे कर्मकरते हैं १० और धर्म अर्थ काम ये तीनों जीतेहुयेके फलहैं इन तीनोंमें व्याप्त रहना योग्यहै और अधर्म से रहित होनाचाहिये ११ मुनिजनने पूछा कि हे भगवन् धर्मसे युक्त तथा हितके करनेवाले और ज्ञानसेयुक्त आप के वचन सुन हमारे ज्ञानरूपीनेत्र हुये हैं १२ शरीरको त्यागके न जानेहुये मार्गमें जीव कैसे जाताहै और धर्मके साथ कैसे चलता है सो कहो १३ व्यासजी बोले कि पृथ्वी वायु आकाश जल अग्नि तथा आत्मा सहित बुद्धि धर्मको नित्य दे-खती है १४ और सबकालमें रातदिन जीवोंका साक्षी है इनके सहित धर्म जीवके साथ चलता है १५ और

हे विप्रो त्वचा अस्थि मांस वीर्य्य रुधिर येभी जीवके साथ होनवाले जीवके साथही जाते हैं १६ और धर्म से युक्त जीव इस लोकमें तथा परलोकमें सुखको प्राप्त होताहै और ज्यादे क्या कथनकरूं १७ मुनिजनोंने पूछा कि जैसे धर्म जीवके साथ चलता है यह आपने कहा पर वीर्यकी कैसे प्रवृत्ती होतीहै सो हमें जाननेकी इच्छा है १८ व्यासजी बोले कि हे द्विजोत्तमो शरीरमें स्थित होनेवाला देव अन्नको भक्षण करताहै और तिसके पश्चात् पृथ्वी वायु आकाश जल और अग्नि ये भक्षण करते हैं १९ हे विप्रो जब ये पंचभूत तृप्त होजाते हैं तब भूतात्मा जो मनहै सो वीर्य्यको प्राप्त होता है २० हे द्विजो स्त्री और पुरुषके वीर्य्यसे गर्भ होताहै यह तो तुमसे कहाहै और तुम क्या इच्छा करते हो २१ मुनिजनोंने कहा कि जैसे गर्भ होताहै वह आपने कहा पर पुरुषको ज्ञान कैसे होताहै सो कहो २२ व्यासजी बोले कि आसन्नमात्र कालवाला पुरुष उन पंचभूतोंसे अनुमान कियाजाताहै और जब वे पंचभूत जुदे २ होजाते हैं तब जीव परमगतिको प्राप्त होजाताहै २३ सब भूतों से युक्त हुआ जीव जल्दी से वीर्य्य में प्रवेश करता है और स्त्रियोंके पुष्पमें प्राप्तहो जीवसंज्ञक होजाताहै २४ तब हे मुनिजनाहो पंचदेवता उसके शुभ अथवा अशुभ कर्मको देखते हैं अब तुम्हें क्या सुननेकी इच्छाहै २५ मुनिजनोंने पूछा कि हे भगवन् कृष्णरूप वह जीव त्वचा अस्थि मांसको त्यागके तथा पञ्चभूतों से रहित होके कैसे सुख दुःखको भोगता है २६ व्यासजीने कहा कि

हे विप्रो कर्मोंसे युक्तहुआ जीव जल्दीसे वीर्य्यमें प्राप्त हो कालसे स्त्रियोंके पुष्पोंको प्राप्तहोजाताहै २७ और यमके दूतोंद्वारा बांधाहुआ संसारमें विचरता है और दुःखरूपी संसार चक्रमें क्लेश को प्राप्त होता है २८ हे द्विजो इसप्रकार लोकमें प्राणी जन्मसे लेके सुकृत तथा दुःकृत कर्मके फलको भोगता है २९ जो जन्मसे धर्म्म में युक्तहै वह सुखको भोगते हैं ३० और जो धर्म्म करनेके अनन्तर अधर्मोंको सेवताहै वह सुखसे अनन्तर दुःखको भोगता है ३१ जो अधर्म्मयुक्त है वह यम के स्थानको जाता है और महादुःखों को प्राप्तहोके फिर सर्प्पादिककी योनिको प्राप्तहोताहै ३२ निदान जिसने यहां जैसा कर्मकियाहै तिसको तैसीहीयोनि प्राप्तहोती है जीव जैसे मोहयुक्त होताहै सो सुनो ३३ और जितने पाप कहेहैं तिनका इतिहासभी कहताहूँ कि जैसे मनुष्य यमके घोर विषयों को प्राप्तहोते हैं ३४ हे द्विजो यहां देवस्थानोंके तुल्य और भी बहुत पवित्र स्थानहैं और तिनमें रहनेकीगति सर्प्पादिकोंकीहै ३५ हे ब्रह्मन् यमराजका भुवन यमकेही गुणोंकेतुल्यहै विग्रहयुक्त कर्मोंसे बँधाहुआ जीव दुःखों की उपासना करता है ३६ और जिसजिस भावयुक्तहोके कर्म्मकरताहै तैसीहीगति होजातीहै ३७ जो ब्राह्मण चारों वेदोंको पढ़के मोह युक्तहो पतित अन्नोंको ग्रहणकरताहै वह खर अर्थात् गधेकी योनिको प्राप्तहोताहै ३८ और हे द्विजो वह खर पन्द्रह वर्षतक जीके फिर बैलकी योनिमें जाताहै और सात वर्षतकजीताहै ३९ फिर ब्रह्मराक्षसहोके मांसको भक्षण

करताहै और फिर ब्राह्मणहोता है ४० हे विप्रो जो पतितसे अन्नादिक मांगनेवाले हैं वे कीड़ों की योनिको प्राप्तहोतेहैं और पन्द्रहवर्षतकजीतेहैं ४१ फिर कीड़ोंकी योनिसे छूटके गर्दभकी योनिको प्राप्तहोतेहैं और पांच वर्ष गर्दभ तथा पांचवर्ष शूकरयोनिमें रहतेहैं ४२ फिर पांचवर्ष मुर्गाकीयोनिमें रहके पांचवर्ष काकरहतेहैं और एकवर्ष कुत्तेकी योनिमेंरहके फिर मनुष्यहोतेहैं ४३ जो शिष्य पढ़के कुबुद्धिमें युक्तहो पापकरताहै वह इससंसार में तीनयोनियोंको प्राप्तहोताहै इसमें सन्देह नहीं ४४ पहिले कुत्तेकीयोनिमें फिर कीड़ोंकी योनिमें पश्चात् गधे की योनिकोप्राप्तहो मरके ब्राह्मणहोताहै ४५ जो शिष्य गुरूकी भार्य्या को गमनकरके कुबुद्धि करलेता है वह पापी घोर संसारमें चित्तसे रहितहो नरकवास करता है ४६ प्रथम वह कुत्ते की योनि में तीन वर्ष जीता है और फिर मृत्यु को प्राप्त हो कीड़ों की योनि में उत्पन्न होता है ४७ वहां भी एक वर्ष तक जीके फिर ब्राह्मण की योनिमें उत्पन्न होताहै जो पुत्र तथा शिष्य बिना कारण गुरूको मारदेतेहैं वे अपने आत्माके कारण से हंसकीयोनिको प्राप्तहोतेहैं ४८ जो पुत्र पिता वा माता को नहीं मानते वेभी जैसे पूर्वमें गर्दभकी योनि कहीहै तैसेही प्राप्तहोते हैं ४९ और गर्दभयोनि को प्राप्त हो दशवर्षतक जीते हैं और एकबर्ष तक कुम्भीर संज्ञक योनिमें रह फिर मनुष्यजन्म लेताहै ५० माता पिताको जिसने अप्रसन्न किया है और गर्भिणी स्त्रीसे जिसने गमनकियाहै वहभी गर्दभकीयोनिको प्राप्तहोता है ५१

और उस योनिमें एकमहीना जीके मनुष्ययोनि में प्राप्त होताहै जो माता पितासे विमुखहै वह मैनापक्षीकी योनि को प्राप्तहोता है ५२ और वहां पीड़ाको प्राप्तहोके फिर कछुवेकी योनिको प्राप्तहोताहै और दशवर्षतक कछुवा रहके फिर टीड़ीकी योनिको प्राप्तहोताहै तहां तीन वर्ष जीके ५३ फिर छःमहीने सर्प्पकी योनि में रहताहै तब मनुष्ययोनिको प्राप्तहोताहै नौकर रहके जो रानीसे रत रहते हैं वेभी मोहमें प्राप्तहोके वानरकी योनिको प्राप्त होतेहैं ५४ और दशवर्ष वानर दशवर्ष मूषक तथा छःवर्ष श्वान होके फिर मनुष्ययोनिको प्राप्तहोताहै ५५ धरोहर का हरनेवाला यमके दुःखोंको प्राप्तहोताहै और सैकड़ों संसारोंमें भ्रमके कीड़ोंकी योनिको प्राप्तहोताहै ५६ तहां पन्द्रहवर्ष जीके फिर मनुष्यहोताहै ५७ जो निन्दाकरने-वालाहै वह मरके मयूरकी योनिको प्राप्त होताहै और जो विश्वासदेके मारतेहैं वे मछलीकीयोनिको प्राप्तहोते हैं ५८ हे द्विजो मच्छहोके वह एकवर्ष जीताहै फिर चार महीने मृगरहके फिर बकरीकीयोनिको प्राप्तहोताहै ५९ और जब वर्षदिन पूराहोताहै तब मृत्युको प्राप्तहो कीड़ों कीयोनिमें जाताहै औरफिर मनुष्यहोताहै ६० धान्ययव तिल उड़द कुलथी सरसों चने मोठ मूंग गेहूँ ६१ आदि को जो धूर्त्त मोहमें प्राप्तहोके चोरीकरतेहैं वे तीनबार मूषाकीयोनिको प्राप्तहोतेहैं ६२ फिर मरकेशूकरहोतेहैं और रोगयुक्तरहके कुत्ता होतेहैं फिर कालके अन्तमें मनुष्यहोतेहैं ६३ जो पराईस्त्रीसे रमणकरताहै वह प्र-थम भेड़िया होताहै ६४ फिर कुत्ताहोताहै फिर गीदड़

होता है फिर चीलकी योनिको प्राप्तहोता है तथा सर्प काक बगुला क्रम आदि योनियों को प्राप्तहोताहै ६५ जो मूढ़ात्मा मोहमें आके भाईकी स्त्री को भोगताहै वह एकवर्षतक कोकिला रहता है ६६ प्यारेकीभार्या गुरू कीभार्या और राजाकीभार्याको जो भोगकेलिये धारण करताहै वह शूकर होताहै ६७ और शूकरहोके पांचवर्ष तथा दश वर्षतक जीताहै फिर चींटी होताहै तब भी तीनमहीने जीताहै फिर एकमहीना कीड़ारहता है ६८ और इन संसारों की साधनाकरके फिर और कीड़ोंकी योनिमें जाताहै और वहां चौदहमहीने जीके ६९ धर्मराज को प्राप्तहो मनुष्य शरीर पाताहै और बिवाह तथा यज्ञादिकको प्राप्तहोताहै ७० जो मोहसे बिवाहादिकोंमें विघ्नकरतेहैं वे मरके कीड़ेहोते हैं और पन्द्रहवर्ष जीते हैं ७१ और जब अधर्मक्षयहोतेहैं तब मनुष्य होजातेहैं पहिले कन्यादान करके दूसरेदान करनेकी जो इच्छाकरता है ७२ वह भी हे विप्रो कीड़ोंकी योनिको प्राप्तहोताहै और वहां तेरहवर्ष तक जीके ७३ अधर्म के क्षयहोनेपर मनुष्य होजाताहै देवकार्य्य तथा पितृकार्य्यकरके ७४ जोउनका पूजननहींकरता वहमरकेकाक होताहै और सौवर्ष काकरहके फिर मुरगाहोता है ७५ फिर एक महीनातक सर्परहके मनुष्य होताहै जो अपने पिता तथा भ्राताको नहीं मानते ७६ वे भी मृत्यु को प्राप्तहो चकोरकीयोनिको प्राप्तहोतेहैं और वहां कितनेवर्षजीके और फिर मैनाकी योनिको प्राप्तहोके ७७ मनुष्य शरीर को प्राप्तहोता है जो ब्राह्मणी से गमन

करता है वह कीड़ोंकी योनिको प्राप्तहोताहै ७८ और वहां मृत्यु को प्राप्तहोके शूकरहोताहै और उत्पन्नहोतेही रोगसे ग्रसाजाताहै ७९ फिर कुत्ताहोके कर्मोंके प्रतापसे मनुष्य होजाताहै पर वहांभी पुत्रसे हीनरहता है और फिर मरके मूषाकी योनिको प्राप्तहोता है ८० हे विप्रो कृतघ्नी पुरुष मरके यमकेयातनाको प्राप्तहोताहै और वहां यमके क्रूरदूतों द्वारा दारुणदुःख पाता है ८१ असिपत्रवन तथा बालूक शाल्मलि अग्नि आदि अन्य दुःखोंकोभी जीवप्राप्तहोताहै ८२ हे द्विजो वहां उग्रयातनाको प्राप्तहोके जीव बन्धनको प्राप्तहोताहै कृतघ्नीहोके८३ और संसारचक्रको प्राप्तहोके फिर कीड़ोंकीयोनिमेंजाताहै औरवहां पन्द्रहवर्षतकजीके ८४ मनुष्य गर्भको प्राप्तहो बालक अवस्थामेंही मरजाता है और मरके बहुत काल तक सर्प्पादिक की योनि को प्राप्त होता है ८५ तहां बहुतसे बर्षों तक दुःख पाके फिर कर्मोंसे ८६ बगुलेकी योनिको प्राप्तहोताहै और वहां प्रायतासे जालमें रहताहै जो मछलीकी चोरी करतेहैं वे भेड़िया तथा डांशकीयोनिको प्राप्तहोते हैं ८७ और जो फल तथा मूलवस्तुकी चोरीकरतेहैं वे चीटी की योनिको प्राप्तहोतेहैं फिर मरके बिनापैरवाले मूषे होतेहैं ८८ जो खीरकी चोरीकरताहै वह तीतरकी योनिको प्राप्तहोताहै और वहां से मरके उल्लूकी योनिको प्राप्तहोते हैं८९ जो सुवर्ण के भांडेकी चोरी करता है वह कीड़ोंकी योनिमेंजाताहै और जो अन्नकी चोरीकरताहै वह कुक्कुट अर्थात् मुरगेकी योनिको प्राप्तहोता

है ९० जो कुत्सितकारको करते हैं वे नाचनेवालेहोतेहैं
और जो अंकुशकी चोरीकरते हैं वे तोतेकी योनि को
प्राप्तहोतेहैं ९१ जो डुपट्टावस्त्रकी चोरीकरते हैं वे हंस
होतेहैं और चकोर तथा कायासंज्ञक जीवकी योनिको
प्राप्तहोके फिर मनुष्यहोतेहैं ९२ हे द्विजो जो दाखकी
चोरीकरतेहैं और रेशमीवस्त्रकी चोरीकरतेहैं वे शोभन
संज्ञक योनिमें प्राप्तहोतेहैं ९३ और वहां पुरुष का वर्ण
करके मृत्यु को प्राप्तहो मयूर की योनिको प्राप्तहोते
हैं ९४ जो रक्तवस्त्र से जीव जीवकेप्रति मांगतेहैं और
सुवर्ण से आदि ले गन्धादि की चोरीकरते हैं ९५ वे
पापोंसेयुक्तहुये चकचुंधरकी योनिको प्राप्तहोतेहैं और
वहां पन्द्रहवर्ष रहके ९६ अधर्म्म के क्षयहोने पर म-
नुष्यहोते हैं जो दूधकी चोरीकरते हैं वे बगुलाकी योनि
को प्राप्तहोतेहैं ९७ और जो नर मोहमें युक्तहोके तैल
की चोरीकरता है वह मरके तैलपानकरनेवाला जीव
होताहै ९८ जो नीचनर बैरभाव करके शस्त्रोंसे पुरुषको
तथा अन्नार्थीनरको मारताहै वह मरकेगधाहोताहै९९
और उसयोनिमें एकवर्षतक शस्त्रोंसे भेदनकियाजाता
है फिर मरकरके मृगकी योनि को प्राप्तहोता है और
विघ्नोंसे संयुक्तरहताहै १०० जब एकवर्ष होलेताहै तब
मृगयोनि में भी शस्त्रोंसे बेधनकियाजाताहै और मच्छ
होके जालमेंरहताहै १०१ जब वहांचारमहीने होलेते
हैं तब मरके कुत्ताहोताहै और वहां दशवर्षजीके फिर
हस्तीहो पांचवर्ष जीवताहै १०२ हेद्विजो फिर वह मृत्यु
को प्राप्तहोके अधर्म्मको दूरकर मनुष्य होताहै १०३

और लोमों तथा रोगोंसे युक्तहो पापोंके दुःखको भोगताहै १०४ फिर वह घोरतम तथा दारुण मूसेकी योनि को प्राप्तहोताहै और पापोंके दुःखसे नरकों को प्राप्त होताहै १०५ खोटी बुद्धीसे जो नर घृतको होमतेहैं वे काक मद्रोग से युक्त रहते हैं और मत्स्य को हननकर जो मांसको खाते हैं वे काकयोनि में जाते हैं १०६ जो कानके आभूषण को चुराते हैं वे जलके काक होते हैं और जो विश्वासदेके मनुष्यको मारते हैं १०७ वे उसी के सदृश प्राणोंसे रहित होजाते हैं और मच्छकीयोनि में प्राप्तहो फिर मनुष्य शरीर को प्राप्तहोते हैं १०८ हे विप्रो फिर वह क्षीणहोके जलमेंपड़ताहै और वहां पापों को करके सर्प्पादिकोंकी योनिमें प्राप्तहोताहै १०९ जो आत्माके प्रमादसे धर्मको नहीं जानते वे सदा पापोंही में युक्तरहतेहैं ११० फिर वे सुख तथा दुःखमें युक्तहोके अनेकव्याधियों को प्राप्तहोते हैं और खोटे म्लेच्छोंके बासको प्राप्त हो वेभी म्लेच्छ होजाते हैं इसमें संशय नहीं १११ जो लोभ और मोहसे युक्तहो पापोंका आचरणकरते हैं वे सब पापयुक्त योनिमें प्राप्तहोतेहैं ११२ जन्मसेलेके जो पाप नहीं करते वे रोगरहित रूपवान् तथा बलवान् होते हैं ११३ स्त्रीभी ऐसे कर्मकरैं तो पापों के प्रभावसे ऐसीही ऐसी योनियोंको प्राप्तहोती हैं ११४ और इन्हीं उपजातियोंके मनुष्योंकी भार्य्या प्राप्तहोती हैं जो जो यहां चोरीकरनेमें दोषहैं वे सब तो मैंने लेख के अनुसार कहे और अब अन्यकथासुनो ११५ हेमहाभागो यहकथा ऋषियोंसे ब्रह्माजीकेकहतेहुये मैंने सुनी

और पूंछीभी ११६ पापसेयुक्त जीवोंका वर्णन यथावत् मैंनेकहा इसको सुनके तुमधर्ममें मनको लगाओ११७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेसंसार चक्रेत्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३ ॥

एकसौ चार का अध्याय ॥

मुनिजनोंने पूछा कि हे ब्रह्मन् अधर्म की गति तो तुमने हमसे कही पर अब धर्मकी गति को सुनने की इच्छाहै १ कि पापकर्म करके कैसी अशुभगतिको प्राप्त होतेहैं और शुभकर्मके करने से कैसी शुभगतिकोप्राप्त होते हैं २ व्यासजी बोले कि पापकर्म करके जीव अपने कर्मोंके बशमें होजातेहैं और मनसे विपरीत होनेसे नरकमें पड़ते हैं ३ धर्मकरके मोहसे जो तापकरते हैं वे मन रूपी समाधिमें प्राप्तहोके दुष्कृतकर्मों को नहीं सेवते ४ और जैसे २ जीव का मन दुष्कृत कर्मकरताहै तैसातैसा ही शरीर प्राप्तहोताहै ५ हेविप्रो जो विप्रोंकेलिये धर्मका बादकरते हैं वे जल्दीही अपराधसे छूटजाते हैं ६ और जो अधर्मका कथनकरते हैं वे मनसावधानकरनेसे छूट जाते हैं ७ और सर्पोंकी तरह स्थानों को त्यागदेते हैं सावधानहोके जो ब्राह्मणोंकेलिये अनेकप्रकारका दान देतेहैं ८ वे मनको समाधिमें युक्तकरके स्वर्गगति को प्राप्तहोते हैं हे द्विजोत्तमो अब मैं दानोंको कहताहूँ ९ जो खोटेकर्म करके धर्म्ममें युक्तहोजावे उसकेलिये सब दानों से श्रेष्ठ अन्नका दान कहाहै १० और धर्म्मकी इच्छाकरनेवालेको दयाकरके अन्नका दानदेना योग्य है अन्न मनुष्यों का प्राण है उसीसे मनुष्य पैदाहोता

है ११ और सर्व्वलोक अन्नमेंही स्थित हैं इसकारण अन्नदान श्रेष्ठहै देव ऋषि दानव सब अन्नकी सराहना करते हैं १२ हे कौशिको अन्नके दानदेनेसे जीव स्वर्ग में चलेजाते हैं न्यायसे लब्धहुआ उत्तमअन्न ब्राह्मण केलिये देनाचाहिये १३ वेदपढ़ेहुये एकसौदश ब्राह्मणों को जो प्रसन्नमनहोके अन्नदानदेते हैं १४ और ब्राह्मण प्रसन्नमनसे भक्षणकरते हैं तो उसके प्रभावसे दान देनेवाला तिरछीयोनिको नहीं प्राप्तहोता १५ हे द्विजोत्तमो जो हजार ब्राह्मणोंके लिये अन्न देताहै वह नर चाहे नित्य पापोंमें युक्तभी हो परन्तु शीघ्रही पापोंसे छूटजाता है १६ वेदके पाठकरनेवाले ब्राह्मणों को जो खानेके लिये भक्ष्यवस्तु देताहै वह यहां सुखोंको प्राप्त होताहै १७ हिंसाकरके जोब्राह्मणन्यायसे अपने मनुष्यों की पालनाकरताहै जो क्षत्रिय उसको अन्नदेताहै १८ और वेदमें मुख्य ब्राह्मणोंको जो सावधानहोके त्याग देतेहैं वे सब दुष्कृत कर्म्मकारीहैं १९ जो वैश्य खड्ग धारणकरके शुद्ध कृषिसे उपार्जित अन्नको ब्राह्मणके लिये देताहै वह पापोंसे छूटजाताहै २० और काक सिकरा आदिके तुल्य शरीरको धारणकरके जो शूद्र ब्राह्मणोंकेलिये अन्नकादान देताहै वहभी पापोंसे छूटजाता है २१ और जो अपनी छाती के बलसे अहिंसाकरके अन्नको ग्रहणकर ब्राह्मणों के लिये दान देताहै वह नरकोंको नहीं सेवताहै २२ न्यायसे प्राप्तहुये अन्नको जो आनन्दयुक्तहोके ब्राह्मणके लिये देदेताहै वह भी पापोंसे छूटजाताहै २३ और बलसे इकट्ठे किये अन्न

को जोब्राह्मणकेलिये देदेताहै वह बलवान्होताहै और सब पापों से रहितहोके श्रेष्ठ मार्गको प्राप्तहोताहै २४ जिसने वित्तके समान दान किया है वह बुद्धिको प्राप्त होताहै और जो वहअन्न ब्राह्मणकेलिये देताहै तिसका सनातन धर्म्म होजाताहै २५ सब कालमें मनुष्य को चाहियेकि न्यायसेइकट्ठाकरके अन्न पात्रके लियेदे २६ तो वह सब कामोंसेयुक्तहो मरणउपरान्त सुखको भोगताहै ऐसे जो युक्तरहतेहैं वे सबपापोंसे छूटजातेहैं २७ इसकारण अन्यायरहित अन्नदेना योग्यहै जो ब्राह्मण पहिलेही घरमें उसके अन्नको भक्षणकरतेहों २८ तब भी दिनप्रतिदिन अन्नका दानकरै और वेदके जाननेवाले सौ ब्राह्मणोंको जिमावे २९ वे ब्राह्मण विद्वान् तथान्याय और इतिहासके जाननेवालेहों तो वह जीव घोर नरक में नहीं जाता तथा संसारकोभी नहीं सेवता ३० वहसब कामनाओंसेयुक्तहो मरणउपरान्त सुख को प्राप्तहोताहै ऐसे जो वर्त्तताहै वह विगतज्वरवाला होके रमण कियाकरता है ३१ और कीर्त्ति तथा बल और धनवाला होजाताहै ३२ हेविप्रो यह जो अन्नदान काफल तुम्हारे अगाड़ी कहाहै वह सब धर्म्मोंकामूल और सब धर्मोंमें श्रेष्ठहै ३३ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादसंसारचक्रे चतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४ ॥

एकसौपांचका अध्याय ॥

मुनिजनों ने पूछा कि कर्मों के वशसे परलोक गये हुयोंके पुत्र बन्धु तथा अन्य सम्बन्धी श्राद्ध कैसेकरावें १

व्यासजी ने कहा कि लोकके उत्पन्न करनेवाले वराह रूप जगन्नाथको नमस्कारकर श्राद्धविधि में कहताहूँ तुम सुनो २ हे द्विजो पहिले कोकाजलमें डूबेहुये पितरों का शूकरने उद्धारकिया और उसदेवने तहां यथाविधि श्राद्धकिया ३ मुनिजनोंने पूछा कि हे मुने वे कोकाजल में कैसे डूबे और वराह ने उनका कैसे उद्धारकिया ४ भुक्ति मुक्तिके देनेवाले कोकातीर्थ का आप यथावत् वर्णन करो ५ व्यासजी बोले कि त्रेता और द्वापर की सन्धि में पितरजन दिव्य मनुष्यरूप होके मेरुपर्व्वत की पीठ पर विश्वेदेवों सहित स्थितहुये ६ तब उनके अगाड़ी चन्द्रमा से उत्पन्न हुई कान्तियुक्त एक दिव्य कन्या हाथ जोड़के स्थित हुई ७ और वे आसन पर स्थितहुये पितरदेव उससे पूँछनेलगे कि हे भद्रे तू कौन है और तेरापति कौनहै ८ तब वह पितृदेवों से बोली कि मैं चन्द्रमा की कलाहूं और तुमसे एक इच्छित वर को वरूंगी ९ मैं पहिले ऊर्ज्जा नामवालीथी पश्चात् स्वधाहुआ और अब तुमने कोकानाम कियाहै १० वे दिव्य मानुषरूप पितरदेव उसके वचनको सुनके उस कामुख देखतेहुये तृप्तिको न प्राप्तहुये ११ तब विश्वेदेवा उसकेमुखदेखते जान और योगसे भ्रष्टदेख उनकोत्याग के स्वर्गको गये १२ और चन्द्रमाभी अपनी आत्मजा ऊर्ज्जा को उस स्थानमें न देख व्याकुल होकरके मनमें ध्यान करनेलगा १३ तब उसने जाना कि कामसे पीड़ितहुई वह ऊर्ज्जा पितरोंको प्राप्तहोरहीहै तपके बलसे स्वीकार कीहुई अपनी पुत्री तथा पितरोंके अपराधको

देखके १४ क्रोधसेयुक्त आत्मावाले चन्द्रमाने पितरों को शापदिया कि तुम विचेतहुये योगसेभ्रष्ट होजाओ १५ क्योंकि तुमने मूढ़होके नहींदीहुई मेरीकन्याको कामयुक्त होके ग्रहणकियाहै १६ और इसने जो तुमपर मोहित हो पतिभावसे तुम्हेंबरा है १७ और धर्मका त्यागकेस्वतन्त्रहोगई इस कारणसे यह नदीहो १८ और लोकमें कोकानाम से प्रसिद्धहो इस पर्वत के शिखर पर स्थित हो १९ निदान चन्द्रमाके शापसे दिव्यरूप पितरयोग सेभ्रष्टहो हिमवान्पर्वतकेनीचे जापड़े २० और ऊर्जाभी वहींसेबहके सप्तसमुद्रमें जापड़ी निदान वह एक उत्तम तीर्थ भया और कोकानामसे विख्यात वह नदी वेगसे चलने २१ और पड़ेहुये पर्वतके टुकड़ोंको डुबोनेलगी पितरभी योगसे हीनहो २२ उसशीतलजलवाली दुस्तर तथा शुभनेत्रोंवाली नदीको देखनेलगे फिर उस पर्वतने क्षुधासे पीड़ित पितरोंको देखके बदरीबन तथा अमृत देनेवाली गौको आज्ञा दी २३ तब उस कोका रूपी नदीका जल दुग्ध होगया और बदरीफल तथा दुग्ध पितरोंके पोषणकेलिये निवेदनकिया २४ हे मुनिसत्तमो उस वृत्तिसे पापयुक्तहोके पितर दशहजार बर्ष बासकरतेरहे २५ निदान सबलोक स्वधाकार और पितरोंसेरहितहोगये और दैत्य यातुधानराक्षसआदि सब बलवालेहोगये तब वे सब विश्वेदेवोंसेरहित पितरोंको देखके चारोंतरफसेआये हेद्विजो इसप्रकार उन्हें आते देख क्रोधसेयुक्तहो कोकाने अपने वेगसे हिमाचल को डुबोके पितरोंको घेरलिया २६।२७ पितरोंको अन्तरहुये

देख राक्षसादिक भयदेनेकेलिये निराहार वहांहीं स्थित होगये ३० और रुकेहुये रास्ते में पितर अतिदुःखको प्राप्तहुये जलमेंदुःखीहोके पितर ३१ जनार्दनदेव हरिकी शरणमें गये और बोले कि हेजगन्नाथ हेदेव हेकेशव आपकी कृपासे हमारी जयहो ३२ हेअनघ इस जल केअन्तर स्थितहोनेवाले हमें उद्धार करनेको आपयोग्य हो३३ हेप्रभो हेवैरग्य हेवैकुण्ठनाथ हेवराह हेविष्णो हेनारायण हे कृष्ण हेमहेश्वर कठोरदर्शनवाले राक्षसों से भयभीत हमारीरक्षाकरो आपकी जयहो ३४।३५ हे उपेंद्र हे योगिन् हे मधुकैटभको मारनेवाले हे विष्णो हे अनन्त हे अच्युत हे वासुदेव हे श्रीशार्ङ्ग चक्राम्बुज हे शंखपाणे हे देवेश्वर राक्षसों से हमारी रक्षाकरो ३६ हे शंभो आप जगत् को रचनेवाले हो और अन्य कोई इसको बाधा नहीं करसक्ता निशाचरों के गणसे भयभीतहुये हम आपके शरणमें प्राप्तहुये हैं ३७ हे विष्णो आपके नामके कीर्तन से निशाचर भूतगण तथा शत्रु चलेजाते हैं और नाशको प्राप्तहोते हैं ३८ ऐसे स्तुति कियेहुये विष्णुने धरणीको धारणकरनेवाले दिव्यमूर्ति शूकररूपको धारणकर ३९ जल में डूबेहुये पितृगणोंको देखके शिरसे शिलाको उठालिया ४० और बराहरूपी जनार्दन भयसे जलमेंडूबेहुये पितृगणोंकोदेखके उद्धार करनेको सम्मतहुये ४१ फिर दंष्ट्राके अग्रभागसे शिला को फेंक रसातलसे पितृगणोंको लाके उद्धारकिया ४२ बराहकीदेह लगनेसे पितरोंकी सुवर्णकीसीकांति होगई और विष्णुद्वारा कोकाआदि सबभयसेनिवृत्तहोगये ४३

और शूकररूपधारणकरके पितरोंका उद्धारकरनेसे वहां विष्णुतीर्थ स्थापितहुआ और सावधान होके विष्णुसे जल और ४४ अपने रोमोंसे उत्पन्नहुई कुशाकोलेके अपने पसीने से उत्पन्न हुये तिलों सहित उस उत्तम तीर्थमें पितरोंका तर्पणकिया ४५ उस तीर्थको सूर्य्यकी ज्योति के समान करके कोटीरूप बट को वहां स्थापन किया और विष्णुमय पवित्र जलहुआ ४६ फिर समुद्र से पर्वत यज्ञ ओषधी रस मधु दूध फल अन्न पुष्प४७ धूपादि लेपनको लाये और दंष्ट्रासे स्थापनकरी पृथ्वी पर सबका जलसे सेचन किया ४८ फिर धर्मादिकसे पृथ्वी को लीप कुशासे अक्षरलिख प्रस्तारित कुशासे बारम्बार छींटेलगाये ४९ और पूर्वकीतरफ अग्रभाग वाली कुशाओंको लेके ऋषियोंको बुलाके कहा कि मैं पितरोंका तर्पण करूँगा और ऋषियोंने कहा करो तब विष्णुने विश्वेदेवोंको स्थापनकरके ५०।५१ वेदोक्तविधानमन्त्रोंसे अक्षतोंसहित देवोंकी पूजाकी ५२ चावल यव तिल और ओषधी ये सब देवतों से हुये हैं और उनकी रक्षाकेवास्ते रचेगये हैं ५३ देव दानव गन्धर्व यक्ष राक्षस ये सब चर अचर अक्षतोंसे रक्षाकियेहुयों का क्षय नहीं करसक्के और किसीकालमें भी क्षयनहो इसवास्ते अक्षतरचे हैं पहिले विष्णुने देवतोंहीकी रक्षा केवास्तेरचे५४।५५फिर शूकररूप भगवान्ने कुशाओं तथा गन्ध चन्दनादि पुष्पोंसे विश्वेदेवोंको अर्घदिया और उनसेकहा ५६ कि मैं दिव्यमनुष्यरूपी पितरोंका आवाहन करूँगा तब वे बोले करो और विष्णुने शुद्ध

होके आवाहन किया ५७ फिर वेदको जाननेवाले शूकर भगवान्ने मिलीहुई जड़ों सहित तिलयुक्त दर्भको आरोपणकिया और सव्य अर्थात् बायेंहस्तसे आसन दिया ५८ फिर टिहुनीको पृथ्वीमें लगाके एक हाथसे पितरोंको विप्रोंमें आवाहनकिया ५९ और (अपहतेति) इसमन्त्रकेद्वारा अपसव्यहोकेरक्षाकी और नामगोत्रके उच्चारसे पितरोंका आवाहनकिया ६० फिर (एतत्तेपितरो मनोजराना गच्छत) इस मन्त्र का उच्चारकर और (संवत्सरै) इसका उच्चारकर अर्घदिया ६१ (यातिष्ठन्त्यमृतावाचःयन्मेति) इसमन्त्रसे पिताको और (यन्मेति पितामह) इस मन्त्र से ६२ पितामह अर्थात् बाबा और प्रपितामह अर्थात् बड़ाबाबा इन्होंको अपसव्य होके कुशा गन्ध तिल पुष्प मिश्रित अर्घ दिया ६३ वैसेही मातामह अर्थात् नानाकी विधिकी और भक्तियुक्तहोके धूपगन्धादिकोंसे पूजनकिया ६४ फिर जगत् के प्रभुने (आदित्यावसवोरुद्रा) इस मन्त्रका उच्चारण किया और पात्रमें घृत कुशा तिलयुक्त अन्नलेके और ६५ अन्य पात्रसे ढकके मुनियोंसे कहा कि मैं अग्निकरणकर्म्म करूँगा तब वे बोले करो ६६ तब (सोमायाग्नयेयमाय) इस मन्त्रसे दोआहुतीदी और (येमामकेतिचमामकेति) इसमन्त्रका उच्चारणकिया ६७ हे विप्रो इसप्रकार सात आहुती देके नामगोत्र उच्चारण करके बाकीरहे अन्नको देदिया और फिर तीनआहुती पृथक् २ पितरोंकोदी ६८ फिर बचेहुये अन्नको पिण्डों केपात्रमेंधरकर सुन्दररसवाला स्वादुअन्न घृतसहित

पूर्व कहे ऋषियों को दिया ६९ पूर्वकाल में अगाड़ी परोसाहुआ उत्तमअन्न अथवा शाक थोड़ाही षट्रस तथा अमृतकी समान बहुतफलके देनेवाला होजाता है ७० और घृत और मधुसेभीगाहुआ पिण्डपात्र वेद विधिसे ब्राह्मणोंको तथा पितरोंकोदिया ७१ (पृथ्वीत्येवं) यह मन्त्र तथा (मधुवाता) इस मन्त्र का उच्चारकरा जब ब्राह्मण भोजनकरचुके तब ये पांच मन्त्रजप ७२ इसप्रकार नाचिकेत संज्ञक त्रिमधु त्रिसुपर्ण और बृहदारण्यक तथा विष्णुने अन्य ऋचाआदिको जपा ७३ और ब्राह्मणोंके भोजन करतेहुये (पक्वातृप्तास्थइति) इस मन्त्रका जपकिया जब उन ब्राह्मणों ने कहा हम तृप्तहोगये तब चुपकेहोके एकबार अन्नको छोड़दिया ७४ फिर पिण्ड पात्र ग्रहण करके छायाके लिये दिया और वह छाया तिसअन्नको दोप्रकार करके तीन प्रकार करतीभई ७५ फिर बराहजी ने पृथ्वी को लिख और वहां छिड़कादेके दक्षिणको अग्रभागवाली कुशा कोधर उठाके ऊपर आसन दिया ७६ ऐसे शूकररूप भगवान्ने मातामह आदिको पिण्डदिया और पिण्ड से बाकीरहे अन्न लेपभागसंज्ञक पितरोंको दिया ७७ निदान जितने पितरहैं सबको भक्तिसे दो दो अंगुलके नवीनवस्त्रदिये ७८ तथा गन्ध पुष्पादिकदेकर परिक्रमा की और आचमनकरके ब्राह्मणोंको आचमन कराया फिर पितरों तथा देवतोंको आचमन कराया फिर उस पृथ्वीको लीपके अक्षत और पुष्पछोड़े और तिलोंसहित जल देवतोंको दिया ७९।८० फिर देवतोंसे बोला

कि आप अक्षयतृप्तिको प्राप्तहोके प्रसन्न हो और तीन बार परिक्रमा करके अघमर्षण मन्त्रकोजपा ८१ फिर निवृत्तहोके भगवान्के नामोंका कीर्त्तनकिया और कहा कि हेपितरो आप वीरताको प्राप्तरहो ८२ फिर पिण्डों केपश्चात् अर्घपात्रों को ऊर्ज्जाकोकानामवाली बहती नदीमें फेंकदिया और विष्णु का जपकिया ८३ और उसदुग्धरूपीजलमें तिलोंसहित पितरोंकातर्पणकिया जब पितरोंने स्वस्ति कहा तब निवृत्तहुआ ८४ फिर ब्राह्मणोंको चांदीकी दक्षिणादे द्रव्यादिकभीदिया ८५ और कितनों को अन्यकी दक्षिणा देके कहा कि इससे आप आनन्द करिये और वे ब्राह्मण आनन्दहुये ८६ जब शूकर भगवान्ने शुद्धअन्नदिया तब आनन्दहो वे ब्राह्मण अन्नकोग्रहणकर दूसरे ब्राह्मणोंकेसाथ चलेगये ८७ फिर (वाजे वाजे) इसऋचा और अन्यऋचाओंको पढ़ा और कोटितीर्थ युक्त कोकानदीके जलमें सब सामग्री फेंकदी ८८ जो द्रव्यादिकका अभावहो तो बहुतसा अन्न ब्राह्मणोंकोदेके आशीर्वादकी प्रार्थना करे ८९ (दातारोनोभिवर्द्धन्तां) इसमन्त्रसे ब्राह्मणों से आशीर्वादले और परिक्रमाकर पैरदाबके शूकररूप भगवान्ने ब्राह्मणोंको विश्रामकराया ९० और पिंडको ग्रहणकर खड़ाहोके नदीमें गेरताभया ९१ (आध्वपित रोगर्भे) इसमन्त्रके उच्चारसे नदीरूपवाली कोका ने पिंडोंको ग्रहणकर ब्राह्मणोंकेपैरोंको नमस्कारकिया ९२ और शूकररूपभगवान्ने जब पितरोंका बिसर्जनकिया तब कोका तथा पितरोंने अपनेहितका वचनकहा ९३

कि हे भगवन् स्वर्ग में स्थित चन्द्रमा ने हमको शाप दियाथा कि तुम योगभ्रष्ट होजाओगे इससे हम सब स्वर्गसे भ्रष्टहोगये ९४ और आपने रसातल में प्रवेश हो हमारी रक्षाकी हमें योगभ्रष्टों को देख विश्वेदेवा ने भी त्यागदिया जिनसे हमरक्षितथे ९५ पर आपसबों ने फिर विश्वेदेवों सहित हमारी रक्षा की और अब तुम्हारीकृपासे फिर उनका संयोगहोगया ९६ हे अच्युत योगको धारण करनेवाला चन्द्रमा हमारा अधिदैव है वह फिर कहीं हमारे योगको भ्रष्ट न करदे ९७ आप सबोंकी कृपासे स्वर्ग्ग तथा पृथ्वीमें हमारा सदा बास रहै और आकाशमेंभी कभी हमारा बासहोजावे ९८ सुधानामवाली चन्द्रमाकी पुत्रीभी हमको प्राप्तहो और वहभी योगसे युक्तहुई योगमाता तथा आकाशमें बिचरनेवालीहो ९९ जब पितरोंने ऐसे कहा तब भूतोंके उत्पन्न करनेवाले शूकररूप विष्णु पितरों कोकानदीसे बोले १०० कि जो आप कहतेहो वह सब वैसेहीहोगा अब तुम्हारा अधिदेव यमहोगा और चन्द्रमा पठपठावनेमेंयुक्तरहैगा १०१ अग्नि तुम्हारा अधियज्ञरहैगा अग्नि वायु और सूर्य तुम्हारे स्थान रहैंगे १०२ ब्रह्मा विष्णु और रुद्र तुम्हारे अधिपुरुषहोंगे आदित्य बसु और रुद्र तुम्हारी मूर्त्तिहोंगे १०३ और आप योगीरूप योगयुक्त देहवाले तथा योगको धारणकरनेवाले और सुव्रतहुये कामपूर्वक लोकोंको फलदेतहुये बिचरो १०४ हे उत्तमो स्वर्गस्थ नरकस्थ तथा भूमिस्थ चराचर सबको आप अपने योगबलसे मधुपानकराओ १०५

ऊर्ज्जा चन्द्रमाकी पुत्री मधुपानमें बिग्रह करनेवाली तथा महाभागवाली सुधारूप दक्षकी पुत्रीहोगी १०६ और वहांभी यह तुम्हारी पत्नीहोगी कोकानाम से विख्यात गिरिराजकी कन्या होवेगी १०७ और कोटितीर्थों सेयुक्त तथा बराहरूपसेपालित विख्यातहोवेगी अबसे मैं पापोंके नाशकरनेकेलिये वहांबासकरताहूं १०८बड़के दर्शन पवित्र और पूजनेवालेको भुक्ति मुक्ति देनेवाले हैं कोकाके जलका पान पापोंका नाशकरता है १०९ और उसतीर्थ में स्नानकरना धन्यहै वहां का ब्रत स्वर्ग का देनेवालाहै ११० और वहां जन्म मृत्युको दूरकरने तथा अक्षय फलको देनेवाला दान कहाहै माघके महीने में शुक्लपक्षमें प्रातःकाल १११कोकाकेस्नानकरे और पांच दिन वहां ठहरे उस कालमें जो वहां पितरों का श्राद्ध करेगा ११२ वह पहिलेकहे कोटितीर्थोंके फलको प्राप्त होवेगा इसमें संशय नहीं एकादशी और द्वादशी को वहां ठहरना योग्यहै ११३ जो बुद्धिमान् वहां बसते हैं वे पहिले कहेहुये फलको प्राप्तहोते हैं हे महाभागो वहां वाञ्छित स्थानपर आप सब जाओ ११४ और मैंभी यहांसे जाताहूं ऐसेकहके शूकररूप भगवान् अन्तर्द्धानहोगये और जब बराहभगवान् चलेगये तब पितर कोकासे आके कहनेलगे ११५ और कोकाभी तीर्थों सहित गिरिराजपर स्थितहुई पृथ्वी पिण्डोंके प्राशन से बढ़ीहुई ११६ और गर्भसेलेके स्पर्शहोनेसे बराह कीही सुन्दरी पत्नीहुई फिर इसपर भौमनामवाले अत्युग्र नरकासुरने ११७ विष्णुके दियेहुये प्राग्ज्योतिष

नगरमें बासकिया ११८ मेरीकहीहुई कोकासे आदिले दिव्य बराहरूप विष्णु की क्रीड़ाको सुन करके मनुष्य मलों और पापोंसे रहितहो दशअश्वमेधों के फल को प्राप्तहोता है ११९ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेश्राद्धविधिर्नाम पञ्चाधिकशततमोऽध्यायः १०५ ॥

एकसौछःका अध्याय ॥

मुनिजनोंने पूछा कि हे भगवन् हे तपोधन विस्तार से श्राद्धकल्पकहो कि कैसे कहां किसकालमें तथा किन स्थानोंमें और किसने कराहै १ व्यासजी बोले कि हे मुनिशार्दूलो मेरेकहेहुये श्राद्धकल्पको सुनो यह कुलके धर्मसे मन्त्रपूर्वक मनुष्योंको कर्त्तव्यहै २ स्त्रियों तथा शूद्रादि अन्यवर्णोंको ब्राह्मणोंकीशिक्षासे यहश्राद्धकल्प देना योग्यहै ३ पहिलेकी तरह मन्त्रोंका उच्चारण और वह्निपाक श्राद्धकल्पमें बर्जाहै ४ हे विप्रो पुष्करआदि सब तीर्थों पवित्र स्थानों पर्वतके शिखरों तथा गुफाओं और पवित्रदेशोंमें श्राद्धकरनायोग्यहै ५।६ नदीपर सरोवरपर सातोंसमुद्रोंपर लीपीहुई भूमिपर तथा जहां ब्राह्मणकीआज्ञाहो वा जहां दिव्यवृक्षलगेहों और पवित्रजलहो वहां श्राद्धकरनायोग्यहै ७।८ किरात कलिङ्ग कौंकण कृमि ९ दशार्ण कुमार्य्य अंग कुश आदिदेशों तथा समुद्रके उत्तरके किनारेपर और नर्मदाके दक्षिण तटपर श्राद्ध बर्जितहै १० जो वहां श्राद्धकरताहै वह पाप युक्त होजाताहै महीने२ अमावास्याको श्राद्धदेना योग्यहै ११ और व्यतिपातादि योगोंमें पूर्णिमाको श्रा-

द्धकरना उचितहै नित्यश्राद्ध विश्वेदेवोंसेरहित मनुष्यों के वास्ते कहाहै १२ और नैमित्तिक तथा नित्य नैमित्तिक विश्वेदेवों सहित करवावै १३ अन्य काम्यश्राद्ध प्रति सम्वत्सरमें करना उचितहै और जातकर्मादिकोंमें वृद्धिश्राद्धकरना उचितहै १४ इनमें मातृपूर्वक विश्वेदेवों का आवाहनकरै और जब पन्द्रहदिन कन्याके सूर्य्यके व्यतीतहोजायँ तब करवाना योग्यहै १५ तहां पार्वण की विधिसे श्राद्धकराना उचितहै धनके लाभकेवास्ते प्रतिपदाको स्थानकेवास्ते द्वितीयाको १६ पुत्रकेलिये तृतीयाको तथा शत्रुके नाशकेलिये चतुर्थीको लक्ष्मी की प्राप्तिकेलिये पंचमीको और षष्ठीको पूजनीयहोता है १७सप्तमीको करनेसे गणोंका अधिष्ठाता होताहै अष्टमीकेकरनेसे बुद्धिमान् होताहै नवमीके करनेसे स्त्रीकी प्राप्तिहोतीहै और दशमीकेकरनेसे पूर्णकामनाको प्राप्त होताहै १८ एकादशी को करनेसे वेदोंको प्राप्तहोताहै द्वादशीको करनेसे पितृपूर्वक जय तथा लाभको प्राप्त होताहै १९ त्रयोदशीको करनेसे बकरीसे आदि पशुओंकी वृद्धि तथा स्वतन्त्रता और उत्तम पुष्टी तथा दीर्घआयु रथ और ऐश्वर्य्योंको प्राप्तहोताहै २० जो श्रद्धायुक्तहोके इन तिथियोंमें श्राद्धकराते हैं वे इन सब बस्तुओंको प्राप्तहोते हैं इसमें सन्देह नहीं २१ और जो यथाविधि मिलीहुई बस्तुलेके श्रद्धायुक्तहो श्राद्ध करते हैं वे सब सिद्धिको प्राप्तहोते हैं २२ जिसके पितर जवानहों तथा शस्त्रोंसे मारेगयेहों तिसको चतुर्दशीको श्राद्ध करनेसे वांछित सिद्धि प्राप्तहोतीहै २३ और जो

शुद्धहोके अमावास्याको श्राद्धकराते हैं वे सब कामना-
ओंको प्राप्तहो अनन्तगुणा स्वर्गको भोगते हैं २४ हे
मुनीश्वरो पितरोंकी प्रसन्नता के वास्ते प्रीतिसे श्राद्ध
कियाजाताहै २५ साकल्यकेअन्नसे एकमहीना पितरोंकी
तृप्तिहोतीहै दोमहीने मच्छके मांससे तीनमहीने हिरन
के मांससे चार महीने शशाके मांससे पांचमहीने तक
शिकराके मांससे छःमहीने शूकरके मांससे सातमहीने
बकरीके मांससे आठ महीने मृगमांससे नौमहीने रुरु
संज्ञक मृगके मांससे दशमहीने रोझके मांससे ग्यारह
महीने भेड़के मांससे और सम्बत्सर अर्थात् वर्षदिन
तक गौकेदूध तथा खीरसे पितरोंकीतृप्तिहोतीहै २६।३१
भेड़ियोंकेमांससे तथा रक्त अन्न शाक मधु अथवा रुधिर
युक्त मांस और अन्न अथवा जो कछु मिलै उसके पिंड
देनेसे ३२ पितर अनन्त तृप्तिको प्राप्तहोजाते हैं और
पितरोंको वह गयाश्राद्धकेतुल्य होजाताहै इसमें सन्देह
नहीं ३३ जो श्राद्धकर्ममें गुड़ तिल तथा शहद मिलाके
पिंडदेते हैं वह सबपितरोंका अक्षय्यगुणाहोजाताहै ३४
जो श्रेष्ठ कुल में पैदाहुआ हो उसको मघानक्षत्र युक्त
त्रयोदशीकेदिन खीर तथा शहदसंयुक्त श्राद्धयज्ञ करा-
ना उचितहै ३५ बहुत से पुत्रोंमें से जो एकभी गया
चलाजाय तो उसको भी मघायुक्त त्रयोदशी के दिन
श्राद्धकराना उचितहै ३६ बैलकेसाथ बछड़ीका बिवाह
करवाके जो छोड़ते हैं और कार्त्तिक में कृत्तिका नक्षत्रमें
पितरोंका पूजनकरते हैं वे मनुष्य स्वर्गवास करतेहैं ३७
सन्तानकी कामनावाले रोहिणीनक्षत्रमें तेजकी कामना

वाले मृगशिरा नक्षत्रमें ३८ रूपकी कामनावाले आर्द्रा
में क्षेत्रादिककी कामनावाले पुनर्वसु नक्षत्रमें ३९ और
धनकी कामनावाला पुष्यमें पितरोंका पूजनकरै श्लेषामें
पितरोंका पूजनकरै तो उत्तम आयुको प्राप्तहोताहै ४०
मघानक्षत्रमें पूजनकरै तो सन्तानवृद्धिहो पूर्वाफाल्गुनी
नक्षत्रमें सौभाग्य की प्राप्तिहोती है ४१ उत्तराफाल्गुनी
नक्षत्रमें मनुष्योंमें प्रधान शीलस्वभावयुक्तहोताहै हस्त
में पूजनकरै तो श्रेष्ठशास्त्रोंकी प्राप्तिहोतीहै ४२ चित्रा
में रूप तथा सन्तानकी प्राप्तिहोतीहै ४३ स्वातिमें व्य-
वहार में लाभहोता है विशाखामें पुत्रकी कामना प्राप्त
होतीहै ४४ अनुराधा नक्षत्रमें पितरोंका पूजनकरै तो
चक्रवर्त्ती राज्यकरनेवाले पुत्रकी प्राप्तिहोती है ४५ और
ज्येष्ठा नक्षत्र में पितरोंका पूजनकरै तो राज्यकी प्राप्ति
होतीहै और मूल नक्षत्रमें पितरोंका पूजनकरै तो सब
कुटुम्बमें उत्तम आरोग्यता रहतीहै पूर्वाषाढ़ ४६ नक्ष-
त्रमें पितरोंका पूजनकरै तो सुन्दर यशकी प्राप्तिहोती
है और उत्तरानक्षत्रमें शोक दूरहोजाताहै ४७ श्रवण
नक्षत्रमें जो पितरोंका पूजनकरै तो शुभलोकोंकी प्रा-
प्तिहोतीहै और धनिष्ठानक्षत्रमें पूजनकरै तो बहुतधन
की प्राप्तिहोतीहै ४८ अभिजित् में पितरोंका पूजनकरै
तो वेदके पाठको प्राप्तहोताहै और शतभिषा में पूजन
करै तो काशीजीमें सिद्धिको प्राप्तहोताहै ४९ पूर्वाभा-
द्रपद तथा उत्तराभाद्रपदमें जो पितरों का पूजन करते
हैं वे उत्तम गौकेदुग्धको प्राप्तहोते हैं ५० और रेवती
तथा अश्विनी नक्षत्रोंमें जो पितरोंका पूजनकरते हैं वे

घोड़ेकी असवारीको प्राप्त होते हैं ५१ भरणीमें जो पितरोंका श्राद्धकरते हैं वे उत्तमआयुको प्राप्तहोते हैं तत्त्व के जाननेवाले नक्षत्रोंसे इन फलोंको प्राप्तहोते हैं ५२ इसलिये हे द्विजो काम्य श्राद्ध करनाही योग्यहै कन्या राशिपर सूर्य्य होनेके समय श्राद्धकरनेके अनन्त गुण फलकहे हैं ५३ उस समय श्राद्धसे जिसजिस कामना की इच्छाहो सब प्राप्तहोजाती हैं यह बराहजीका वचन है ५४ उस समय स्वर्ग पृथ्वी और आकाश में रहने वाले चर अचर सब पितर पिण्डकी इच्छा करते हैं ५५ कन्या राशिपर सूर्य्य आनेके समय श्राद्धकरना सोरह यज्ञोंके तुल्य है ५६ जिसफल की इच्छा राजसूय अश्वमेध आदि यज्ञोंसे पूर्णहोती है सो फल कन्याराशि गत सूर्य्यमें पितरोंका श्राद्धकरनेसे होताहै ५७ उत्तरा हस्त और चित्रा जब सूर्य्यका अर्कहो तब जो भक्तिसे पितरोंका श्राद्धकरताहै उसका स्वर्गमें बासहोताहै ५८ जब हस्त नक्षत्रपर सूर्य्यआवे और वृश्चिकसंक्रान्ति के दर्शनजबतक न हों तबतक अपने राजाकी आज्ञा लेके पितर पृथ्वीलोक पर रहते हैं और पितरोंकी पुरी शून्य रहतीहै ५९ और जब वृश्चिकपर अर्कहोजाता है तब देवतों सहित पितर न श्राद्ध करनेवालेको दुःसह शाप देकर उलटेही चलेजाते हैं ६० यह अष्टक श्राद्ध कन्यागत सूर्य्यमें कर्त्तव्यहै और क्रमसे मातृपूर्वक अन्वष्टकैं श्राद्ध करना श्रेष्ठहै ६१ चन्द्रसूर्य्यग्रहण में व्यतीपात में नवीन तृणकी प्राप्तिमें जन्मके नक्षत्रमें और घरकी पीड़ामें पार्वणश्राद्ध कराना शुभ कहाहै ६२ उ-

त्तरायणसूर्य्य में अमावस्याको तथा दोनों द्वितीया को और संक्रांतिको पिण्ड देना शुभ है ६३ और बैशाख की तृतीया को कार्त्तिक की नवमी को तथा संक्रांतिको विधिसे नरोंको श्राद्ध करना योग्यहै ६४ भाद्रपदमें त्रयोदशी को और माघमें जिस तिथिमें चन्द्रमाका क्षय हो खीरसे नरोंको दक्षिणावर्त्त श्राद्ध करना योग्यहै ६५ यदि वेदका पढ़ाहुआ अग्निहोत्री ब्राह्मण घर आजाय तो उस एकहीसे उत्तम श्राद्ध कराना उचित है ६६ हे द्विजो जब श्राद्धके द्रव्यकी प्राप्ति होजावै तब विधान से पार्व्वणश्राद्ध कराना उचितहै ६७ जब प्रतिसंवत्सर माता पिताका तथा पुत्रहीन पितृव्य वा ज्येष्ठभ्राताका क्षयदिवस आवे ६८ तब देवोंसे रहित एकोद्दिष्ट पार्वण विधिसे करना उचितहै और दो देवों और तीन पितृपक्षके और तैसेही एक एक मातामहोंका श्राद्ध करना उचितहै ६९ जो प्रेतभावको प्राप्त होगया हो तिसको तिल जल और कुशायुक्त पूजनपूर्वक पिंडदानदेवै ७० हेद्विजो तीसरे दिन प्रेतका अस्थिसंचयन करना योग्य है और दश दिनमें ब्राह्मण तथा बारह दिनमें क्षत्रिय शुद्ध होते हैं ७१ सूतकके अन्तमें मृतक के वास्ते बारहवें दिन तथा महीनेमें और त्रिपक्ष अर्थात् पैंतालिसवेंदिन एकोद्दिष्ट श्राद्ध करावे ७२ हे द्विजो जब तक वर्ष पूरा नहो महीना२ श्राद्धकरना योग्यहै ७३ तिसके उपरान्त क्रम से सपिंडीकर्म्म करना कहा है और जब सपिण्डीकर्म करले तब फिर पार्वणश्राद्धकहाहै ७४ तिस से जीव प्रेतभाव को छोड़के पितृभावको प्राप्तहोजाताहै

मूर्त्तिवाले तथा अमूर्त्तिवाले पितर दो प्रकारके हैं ७५ नान्दीमुखतो अमूर्त्तिवाले हैं पार्वणमें मूर्त्तिवाले हैं और एकोद्दिष्टके लेनेवाले प्रेतहैं ऐसे पितरोंका निर्णय तीन प्रकारकाहै ७६ मुनिजनोंने पूछा कि हे द्विजसत्तम हे कहनेवालोंमें श्रेष्ठ मरेहुयेका सपिण्डीकरण कैसे करावै सो विधिपूर्वक हमारे आगेकहो ७७ व्यासजीनेकहा कि हे विप्रो सपिण्डीकरण में कहताहूं तुमसुनो सपिण्डीकरण भी दैवोंसेरहितहै और एकसेएक पवित्रहै ७८ उसमें अग्निकरणभीनहींहै और आवाहनभीनहींहै उसमें अपसव्य होके दशहजार ब्राह्मणोंको भोजनकरावै ७९ और हे विप्रो विशेषयहहै कि महीने२जो क्रियाहै सोभी मैं कहताहूं एकाग्रमनहोके सुनो ८० तिल गन्ध और जलसे युक्त चारपात्रभरै तीनतो पितरोंके और एकप्रेतका ८१ और शुद्धहोके पहिले की तरह (येसमाना) इसमंत्रसे चारोंपात्रोंके जलके छींटेलगावै ८२ और दूसरोंकाभी ऐसेही एकोद्दिष्ट विधिसेकरै जिसस्त्रीकेपुत्र नहो उसकी सपिण्डी नहींहोती ८३ इसलिये प्रतिसंवत्सर नरोंको स्त्रीकेवास्ते एकोद्दिष्टकरनाचाहिये मृतादिवसमें सपिंडीकरण कराना तथा तैसेही स्त्रियोंका एकोद्दिष्टकराना ८४ और पुत्रको सपिण्डी कराना उचितहै जो पुत्रनहो तो भ्राताको करानाउचितहै और जो भ्राताभी नहो तो दौहित्रको कराना चाहिये ८५ दौहित्रको मातामहकेवास्ते सपिण्डन कहाहै और वह मातामह और पितामहके श्राद्धकरानेमें अधिकारीहै ८६ जो पहिलेकहे सबोंका अभावहो तो स्त्रीको पतिका सपिण्डन करानाउचितहै ८७

और जो स्त्रीकाभी अभावहो तो उस कुटुम्बिका राजा को श्राद्धकराना उचितहै और वहभी न करे तो उसकी जातिके मनुष्योंको पाद्यादिकसे सब क्रिया करानी उचितहै ८८ हेविप्रो सब वर्णोंका राजाही बान्धवहै इस से राजाको करानाउचितहै यहसब नित्यनैमित्तक क्रिया तुम्हारे आगेकही८९ श्राद्धके आश्रय जो देवहैं उनकी नित्यनैमित्तक क्रिया कहते हैं श्राद्धों के योग्य चन्द्रमा से रहित अमावस्या कहीहै ९० और निरन्तर जो काल है तिसको नित्यकाल कहते हैं सपिण्डीकरणसे उपरांत पितासेआदि लेकर प्रपितामह पर्य्यन्त कहे हैं ९१ जो पितरोंके पिण्डसे लोप होरहाहै वह लेपभुक् कहाता है और पितासे चौथा लेपभागी होताहै ९२ वह लेपभागीभी तीनपीढ़ियों से बचेहुये भाग को प्राप्तहोता है पिता पितामह और प्रपितामह९३ये तीनों पुरुष पिण्ड सम्बन्धी जानने चाहिये और सम्बन्धसे अन्य प्रपितामहादि तीनलेपभागी हैं और उनसेपरे सातवां यजमान संज्ञक है ९४ इनसातपौरुष पितरोंकासम्बन्ध मुनियों ने कहा है और यजमानसंज्ञक सातमें से परे अनुलेपभुज् संज्ञकहैं ९५ इनसे अन्यस्वर्ग्ग तथा नरकमें रहनेवाले सर्प्पादिक योनिवाले और जो भूतादिक योनिमें हैं सो वर्णन किये हैं ९६ जो यथाविधि श्राद्धकरता है वह यजमान संज्ञक पितरसे आदि ले सब की तृप्तिकरदेताहै ९७ और जो श्राद्धसे पृथ्वीपर अन्नबिखेरता है उससे पिशाचयोनिमें जो स्थित हैं वे तृप्तहोजातेहैं ९८ हे द्विजो स्नान तथा वस्त्रसे निचोड़े

हुये जलसे कुलमें भूतयोनि को प्राप्त होनेवालों की तृप्तिहोजातीहै ९९ और पृथ्वीपर गिरेगन्ध तथा जलके किणकेसे कुलमें देवयोनिको प्राप्तहुओंकी तृप्ति होजातीहै १०० पिंडोंके विसर्जनके पश्चात् जो पृथ्वी पर जलपड़ता है तिससे कुलमें तिरश्चीयोनि को प्राप्त हुओंकी तृप्तिहोजाती है १०१ कुलमें अदन्त मरेहुये बालकों क्रियायोगमें स्थितोंबिना अधिकारवालों और शुद्धकरी वेदीपर भोजनकरनेवालों १०२ की भुक्तकिये हुये आचमनसे रहित तथा पैरधोने से शेषरहे जलसे और तैसेही ब्राह्मणों के जीमें पश्चात् शेषरहे जल से तृप्तहोतीहै १०३ ऐसे जनोंका ब्राह्मणोंके साथ योग है और कहीं२ ब्राह्मणोंके १०४ जूठे अन्नजलसे किसी योनिमें स्थितोंकी तृप्तिहोजातीहै १०५ हे विप्रो क्रिया वालोंकेलिये यह श्राद्धविधि कही है अन्यायसे इकट्ठा किये द्रव्यसे जो श्राद्ध होताहै १०६ तिससे चाण्डाल और वृक्षादि योनिमें स्थितहुओंकी तृप्तिहोतीहै १०७ श्राद्ध करनेवाले के अन्नजल का अभाव हो तो यथाविधि शाकसे पिण्डकरादे १०८ श्राद्धकरनेवालेके कुलमें कोईभी दुःख नहींपाता और श्राद्ध द्रव्य अग्निहोत्र तथा यतीके लिये देना योग्य है १०९ और ब्रह्मचारी विद्वान् तथा वेदपाठी को विशेषता से श्राद्ध द्रव्यदेना योग्य है त्रिनाचिकसंज्ञक त्रिमधुसंज्ञकत्रिसुपर्णसंज्ञक मन्त्रों तथा वेदके षडङ्गोंका पढ़ाहुआ ११० माता पिताकी टहलकरनेवाला परस्त्रीरत न होनेवाला तथा सामवेदपढ़ाहुआ यज्ञकरनेवाला अथवा पुरोहि-

त आचार्य्य तथा उपाध्यायको भोजनकरावै १११ और
मामा श्वशुर श्याल अर्थात् सालो संबंधी मूढ़ तथा जो
मूर्खहोके सब में प्रधान हो पुराणों के अर्त्थ से रहित
हो ११२ कृपण तथा असंतोषी और दानलेनेवालों को
छोड़ के श्राद्ध में पवित्र ब्राह्मण न्योतने चाहिये ११३
ऐसे ब्राह्मणों को पहिलेदिन निमन्त्रितकरके उनमें पि-
तरोंकी कल्पनाकरै ११४ इसप्रकार सावधानहोके जो
यथाविधि श्राद्धकरैगा वह वाञ्छितफलको प्राप्तहोगा
पर जो श्राद्धदेके तथा भोजन करके स्त्री से मैथुन क-
रताहै ११५ तो उस स्त्रीकेमांसमें पुरुषके वीर्य्यसे पि-
तर वासकरते हैं और जो पहिले स्त्रीसे मैथुनकरके प-
श्चात् श्राद्धकरके भोजनकरताहै ११६ उसकेपितर स्त्री
पुरुषके मांस वीर्य्यमें स्थित होके वीर्य्यमूत्र का भोजन
करते हैं ११७ इसकारण बुद्धिमान्को निमन्त्रणपूर्व्वक
पहिले श्राद्धकराना उचितहै यदि पितरोंकेदिवस श्राद्ध
न करावे तौ भी स्त्रीका संग न करे ११८ उस कालमें
भिक्षाके वास्ते आयेहुये श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन क-
रावे और शुद्धमन होके नमस्कार तथा पाद्यादिकों से
ब्राह्मणोंको प्रसन्नकरै ११९ ज्ञानवान्को श्राद्धमें यती
ब्राह्मण एकत्र करने योग्यहैं क्योंकि पितर भी योगको
धारणकरनेवालेहैं इसकारण सबकालमें योगि ब्राह्मणों
का पूजन उचितहै १२० हज़ारयोगी ब्राह्मणों का जप
यजमान तथा भोजन करनेवालों को नौका की तरह
नरकोंसे पारकरदेताहै १२१ ब्रह्मवादी ब्राह्मणोंको पितृ
मन्त्रों का उच्चारण करना योग्य है और जौनसा मन्त्र

पहिले पितरोंने कहाहै सो उच्चारणकरै १२२ वही पुत्र श्रेष्ठवाणीवाला है वही पुत्रवाला है और वही योगीहै जो पितरों के वास्ते पृथ्वीपर पिण्डदेताहै १२३ गया में खड्गसेमांसका तथा कालमें शाक तिल पक्वान्न आदि पिण्डका जो पितर तथा विश्वेदेवों के वास्ते देता है वह परम साकल्यरूप होजाता है १२४ शृंगों तथा शशाका मांस वर्ज्जित है मघानक्षत्रयुक्त त्रयोदशी को यथा विधि पिण्डदेना योग्यहै १२५ दक्षिणायन सूर्य्य में शहद तथा घृतसे युक्त खीर का पिण्ड देके भक्तिसे बिधिवत् पितरोंकापूजनकरै १२६ तो सब कामनाओं को प्राप्तहोके पापोंसे छूटजाता है जो श्राद्ध से पितरों को तृप्तकरताहै१२७ वह आठबसु ग्यारहरुद्र बारह आदित्य तथा सबनक्षत्र ग्रह और तारागणआदिको तृप्तकरता है १२८ अपने स्थानमें प्राप्तहुये ब्राह्मणों का जो स्वागतपूर्व्वक पूजन करता है वह अगले पिछले सब पितरों का पूजन करचुका १२९ हाथशुद्धकरके उन ब्राह्मणों को आसनपर बैठाके बिधानपूर्व्वक श्राद्धकरावे और फिर भोजनकराके १३० भक्तिपूर्व्वक प्रिय वचनोंसे नमस्कारकर उन्हें बिदा करे और दरवाजेतक आनन्दयुक्त उनकेपीछेजाय १३१ फिर नित्यक्रियाकरके अभ्यागतोंको भोजन करावै और उन्हेंभी वैसेही नमस्कार करके बिदाकरै १३२ हेसत्तमो नित्यक्रिया और पितृक्रियाको जानके पितृक्रियाको नित्यक्रियाकी तरह न करै बल्कि पहिले कहे अनुसार १३३ नित्यक्रिया तो पृथक् करै और श्राद्धक्रिया पृथक् करै

और फिर नौकरों सहित भोजनकरै १३४ सावधान होके धर्मज्ञ पितृश्राद्ध इसप्रकारकरै जिससे उत्तम ब्राह्मणों के संतोषहो १३५ मित्रसे द्रोहकरनेवाला मायावी नपुंसक अर्थात् हिजड़ा क्षयीरोगवाला खिन्न रोगवाला व्यवहार करनेवाला कालेदांतोंवाला गधा रखनेवाला काना अन्धा बधिर अर्थात् बहिरा जड़गूँगा पंगुल हाथोंकेरोगवाला खुरखुरे शरीरवाला व्यंगवाला बिकारनेत्रोंवाला कुष्ठी रक्तनेत्रोंवाला कुबड़ा बामन बिकट दरिद्री मित्र शत्रु खोटे कुलमें होनेवाला पशुओं कापाली बुरीआकृतिवाला परिवेत्ता अर्थात् बड़ेभाई के बिवाहे बिना अपना बिवाह करनेवाला परिवित्ती अर्थात् अपनेबिवाहको वर्जिकर छोटेका बिवाहकराने वाला परिवेदिनी का पुत्र ब्राह्मणी में चाण्डाल से उत्पन्नहुई कन्याकापति तथा ऐसीही स्त्रीकापुत्र अथवा उस स्त्रीके घरमें श्राद्धका भोजन करनेवाला पूर्वकही हुई स्त्रीके पुत्रका संस्कार करानेवाला दूसरे बिवाहीहुई स्त्रीकापति भृत्योंसेपढ़ाहुआ और भृत्योंकोपढ़ानेवाला चित्राम करनेवाला मृगका शिकार खेलनेवाला तथा मदिरा बेचनेवाला निन्दित पतित दुष्ट तथा शठ और चुगुलखोर तथा वेदका त्यागकरनेवाला दान समयमें क्रोध करनेवाला तथा कठोर राजाका पुरोहित विद्याहीन मत्सर्य्य अर्थात् पराये दुःखमें आनन्द माननेवाला क्रूर मूढ़ा देवताकीपूजाको ग्रहणकरनेवाला नक्षत्रसूचक पर्वका कारकरनेवाले निन्दित नमांगनेलायकों से मांगनेवाला निन्दित और अधम ये सब ब्राह्मण

श्राद्धमें शामिल नहीं करने चाहिये क्योंकि ये दूषित हैं१३६। १४५ जहां खोटे पुरुषोंका मान और श्रेष्ठोंका अपमान होताहै वहां दैत्यों का कराहुआ दारुणदण्ड पड़ताहै श्राद्धमें विहितपुरुषों के आगमन को त्यागके जो मूर्ख पुरुषको भोजन करावते हैं १४६ और अपने आदिधर्म्मको त्यागदेते हैं वे दाता नाशको प्राप्तहोजाते हैं अपने आश्रित ब्राह्मण को त्याग के जो और को जिमाताहै १४७ वह दाता उस पहिले ब्राह्मणके श्वास से दग्ध होजाता है वस्त्रोंके अभावमें श्राद्ध और यज्ञ इत्यादिक यथावत् नहीं होसक्तेहैं १४८ इसवास्ते श्राद्धकालमें विशेषकरके वस्त्रदेना उचितहै कसूँभे अथवा सुवर्णके रङ्गवाला और रेशमी १४९ इत्यादिक वस्त्रों को जो श्राद्धमें देता है वह उत्तम कामनाओंको प्राप्तहोता है जैसे मिलीहुई गौओं में बछड़ा अपनी माता को पहिचानलेताहै १५० तैसेही जहां जीव प्राप्तरहता है वहांही श्राद्धका अन्न पहुँचजाता है नाम गोत्र उच्चारणपूर्वक जो अन्न दियाजाताहै १५१ वह अन्न सैकड़ों योनियोंके बीचमेंभी प्राप्तहुआ जीवको मिलके तृप्ति करदेताहै १५२ (ओंदेवताभ्यःपितृभ्यश्चमहायोगिभ्यएवचनमः स्वाहायैस्वधायै नित्यमेवभवन्तु) इस मन्त्रको श्राद्धके अन्तमें सदाजपै १५३ और पिंडों के विसर्जन समय भी इसी मन्त्र को समाहित होके जपै (क्षिप्रंआयाचपितरः) इस मन्त्रसे तीनों लोकोंमें राक्षस मृत्युको प्राप्त होजाते हैं और पितरोंका उद्धार होजाता है १५४ नवीन रेशमीवस्त्र श्राद्धमें देनाचाहिये ऊनका

वस्त्र पाटकावस्त्र कसूंभी वस्त्र और सूतका वस्त्र इत्या-
दिक पुराने न देनेचाहिये १५५ पुराने वस्त्रों के देने से
पितर प्रसन्न नहींहोते और देनेवालेको कुछ फल नहीं
होता १५६ पितरोंके लिये अग्निमें सदा पिंडदान देना
चाहिये जो पुरुष मन्त्रपूर्वक अग्निमें पिंड देता है वह
उत्तम भोगोंको प्राप्तहोताहै १५७ गौओंको पिण्डदेने
वाला उत्तमकान्तिको प्राप्तहोताहै और जलमेंपिंडदान
देनेसे बुद्धि यश कीर्त्ति प्राप्तहोती है १५८ काकों को
पिंडदानदे तो दीर्घआयु होताहै और सुन्दर कौमारको
प्राप्तहोने की इच्छाहो तो श्वानको पिण्डदेना उचित
है १५९ विप्रोंकीआज्ञालेके कामनापूर्वक पिंडोंकाउद्धार
करना चाहिये इसकारण जो पहिले ऋषियोंने कहाहै
उसीविधिसे श्राद्ध करनाचाहिये १६० अन्यथाकराने
से दोषहोताहै और पितरोंको नहीं मिलता यव धान्य
तिल उड़द गेहूँ चनेसे पितरोंको तृप्तकरै १६१ काले
मूँग सरसों और बिनिवार संज्ञक अन्न कांगनीआदि
से भी पितरोंको तृप्तकरै और सब सामग्रीयुक्त शय्या
दानदे १६२ आंब लसोढ़ा बेलफल अनार बिजौरा जा-
मुन खैरकागोंद सुन्दरदूध नारियल नारंगी खजूर नीला
कैथ पाडल चिरौंजी बेर खैरकाफल कसेरू इत्यादिक
फलजाति श्राद्धमें यत्नसे देने चाहिये और गुड़ खांड़
राब कालेउड़द पंचगव्य तिलोंकातेल और सेंधा सां-
भर और सारस लवण सुन्दरगन्ध अगर कुंकुम सुन्दर
शाक तथा चौलाई और बथुआ मूली और मानकन्द
इत्यादिक शाक श्राद्धमें युक्त करनेचाहिये १६३।१६७

चमेली जाती पुष्प चम्पा लोधकेपुष्प बाणाभिंझटी शोक वृक्षके पुष्प बांशाकेपुष्प तुलसीकी मंजरी तिलोंकेपुष्प छोटी धायके पुष्प सेवती के पुष्प और सुन्दर गन्धकी वस्तु तथा तगर सूर्य्यमुखी केतकी और कस्तूरी तथा अतिमुक्त अर्थात् कहिंकटे भूर्णी इत्यादि प्रसिद्धपुष्प श्राद्धमें एकत्रकरने योग्यहैं १६८।१७० इनके सिवा कुमुद कमल पद्म पुण्डरीक संज्ञक कमल नीलेकमल रक्तकमल और कल्हार कमलोंकोभी एकत्रकरै १७१ कूट छालछलीरा कुटकी गोकर्णी जावित्री लघुदेव नल खस और सुन्दर ग्रंथिपर्णीकोभी श्राद्धमें युक्तकरै और गूगुल चन्दन श्रीवाससंज्ञक उत्तमधूप पितरोंके योग्य धूप तथा उत्तम ऋषि गूगुल उत्तमउड़द मसूर और कोदोको प्रस्तुतकरै एवम् पालक करेला मूली गाजर चूका और जीवक संज्ञक शाक एकत्रकरे पर सौंफ नालीका शाक गन्धशूकर प्याज लहसुन मानकन्द विषकन्द और बज्रकन्द इनसबोंको श्राद्धकर्म्म में त्याग दे १७२।१७४ कड़वी तरोई का शाक कोहलाशाक कटुपत्रिका शाक वार्त्ताकुशाक बालछड़ कचनार और बुसाहुआ तथा बासीपदार्थ इत्यादिक श्राद्धमें नदेनी चाहिये १७५।१७६ बच अमलतास सहोंजना अति खट्टा तथा झागोंवाला पदार्थ जिस वस्तुकारस चला गयाहो और जो मदिरा १७७ अथवा हींगके गन्धसे युक्तहो राब और कलिंग देश में उपजाहुआ धनियां इत्यादिक श्राद्धमें एकत्र न करै१७८अनारदाना पीपरि सोंठि अदरक अमिली लसोढ़ा जीवकशाक ध-

नियां १७९ और जो बस्तु भोजनकरनेमें स्वादु चिकनी कछुकखट्टी और चर्चरीवस्तुहैं वेसब श्राद्धकर्ममें देनी चाहिये १८० अतिखट्टी अति नमकवाली तथा कड़वी वस्तु राक्षसोंके भोजनलायक हैं इसवास्ते इनको दूरसे त्यागदे १८१ और मीठे स्निग्ध और कुछ खट्टे और देवभोज्य इत्यादिक पदार्थोंको श्राद्धमें युक्त करै १८२ भेड़िया हिरण शैवतारक और राजक संज्ञक जलचर जीवों के मांसको श्राद्ध में युक्तकरै १८३ और लोहा तलवार इत्यादिकभी श्राद्धमेंकहे हैं हव्यकव्योंमें कही कपिल और रक्तवर्ण सब बस्तु को भी युक्तकरै १८४ हेविप्रो बाराहजीने पहिले श्राद्धकर्मके वास्ते इसप्रकार कहाहै कि इन निषिद्ध वस्तुओं को भक्षण करनेवाला पुरुष रौरव नरकमें जाताहै १८५ हे द्विजोत्तमो श्राद्ध में पितरों के लिये १८६ रक्तवर्णवाले मृग शूकर गोह हंस चकवा चकवी और मद्गुरसंज्ञक जलचर जीवोंका मांस वर्जितहै १८७ कुंज मुरगा राजहंस भारद्वाज संज्ञक पक्षी सारंगपक्षी नकुल उल्लू बिलाव बतक तित्तिर गीदड़ १८८ और अन्य दूषितजीवोंका मांस जो खोटी मतिवाला पुरुष भक्षण करताहै वह महापापोंसे युक्तहो नरकोंमें चलाजाताहै १८९ इन निन्दित मांसों को जो पापीपुरुष पितरोंके लिये देताहै वह स्वस्थ पितरोंको भी नरकमें गेर देता है १९० श्राद्धमें कुसुम्भ शाक जंबीर नींबू अमलतास खल मसूर गाजर कोदू धान्य तालमखाना चूका पद्माख और चकोर एवम् सिकरे का मांस तालफल और तृण का भोजन करने से

पुरुष नरकमें चलाजाताहै १९१।१९२ और जो श्राद्ध में इनका दान देताहै वह पितरों के संग नरकमें बास करताहै इसवास्ते सब यत्नकरके १९३ बुद्धिमान् पुरुष पितरोंके लिये श्राद्धकरावै मुनियोंने श्रेष्ठ जीवोंके मांस का भक्षण आत्मा की रक्षाके वास्ते कहा है पर १९४ अज्ञानसे मनुष्योंका मांस ग्रहण न करनाचाहिये और निषिद्ध भक्षण को बर्ज कर प्रायश्चित्त कराना योग्य है १९५ निषिद्ध आचरणमें यह प्रायश्चित्तहै कि सात दिन पर्यंत फल मूल दही दूध तक्र गोमूत्र आदि सब पवित्र वस्तुओंका सेवनकरै १९६ एकबार भी निषिद्ध आचरणका प्रायश्चित्त करनेसे शरीरकी शुद्धि होजाती है और विष्णुमें भक्तिहोती है १९७ हेद्विजोत्तमो श्राद्ध में निषिद्ध द्रव्योंको वर्जदे और अपनी कमाईसे यथा प्राप्त वस्तु श्राद्धमें लगानी उचितहै १९८ ऐसे द्रव्यसे जैसा ऐश्वर्य्य हो तैसा श्राद्ध कराना योग्य है क्योंकि ऐसा कराने से ब्रह्माकी उत्पत्तिसे लेके प्रलयकाल पर्यंतके सब पितर तृप्त रहते हैं १९९ मुनिजनोंने पूँछा कि जिसका पिता जीवता हो परदादा और दादी मर गयेहों वह उनका श्राद्ध क्योंकरकरे यह आप विस्तार से कहो २०० व्यासजीने कहा कि जिसके लिये पिता श्राद्ध देता उसीके लिये पुत्रकोभी देना उचितहै ऐसा करनेसे लौकिक तथा वैदिकधर्म नष्ट नहीं होता २०१ मुनिजनों ने पूँछा कि हे ब्रह्मन् जिसका पिता मरगया हो और दादा जीताहो वह पुरुष कैसे श्राद्धकरावै २०२ व्यासजीने कहा कि पिता और प्रपितामहके लिये पिंड-

दानदे और दादाको भोजन करावे यह श्राद्धकी नीति बर्णनकीहै २०३ मरेहुयेको पिंडदानदेना और जीतेहुये को भोजनकराना यह कुछ सपिंडश्राद्ध नहीं है और न कुछ पार्व्वणश्राद्धहै २०४ जो आचारकरके पितरों के श्राद्धमें बुद्धीको लगाताहै वह आयु धन और पुत्रकी वृद्धिको प्राप्तहोताहै इसमें संशय नहीं २०५ हे द्विजो जो पितरोंमें बुद्धि लगानेवाला इस अध्यायको श्राद्ध कालमें पढ़ताहै उसके अन्नको पितर तीनयुग पर्यन्त खातेहैं २०६ पापोंको नाशकरने और पुण्योंको बढ़ाने वाला यह जो पितृयज्ञकल्प मैंने कहाहै सो सावधान होके नरों को सुनना योग्य है और उन्हें श्राद्ध करना अथवा कीर्त्तनकरना योग्यहै २०७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसम्वादेश्राद्धकल्पे षष्ठाधिकशततमोऽध्यायः १०६॥

एकसौसातका अध्याय॥

व्यासजीनेकहा कि गृहस्थीपुरुषको इसप्रकार अच्छी तरह हव्यकव्यादिकोंसे पितर पूजनेयोग्यहैं और अन्ना-दिकोंसे बान्धव तथा अभ्यागत पूजनेयोग्यहैं १ नित्य नैमित्तिकक्रियासे हीन नौकर पशु पक्षी चींटी भिक्षुक सदा आचारसेनिरत ब्राह्मण और घरमेंबुद्धिवाले श्रेष्ठ पुरुष ये सब पापोंको भोगते हैं २।३ मुनिजनोंने पूँछा कि हे विप्र नित्यनैमित्तिक तथा काम्य ये तीनोंप्रकार के पुरुषोंके कर्म्म तो आपने कहे४पर हे मुने अब हम आपकी कृपासे सत् आचारके सुनने की इच्छा करते हैं जिसके करने से मनुष्य इसलोक तथा परलोक में

सुख को प्राप्तहोजाते हैं ५ व्यासजी बोले कि गृहस्थ को सदाचार कर्म्मकी रक्षा करनीचाहिये क्योंकि आचारसे हीन पुरुष को इसलोक तथा परलोकमें सुख नहीं है ६ जो सदाचारको छोड़के यज्ञ तप और दान करताहै उन दानोंसे उसकाकल्याण नहींहोता ७ खोटे आचारमें जो आसक्तरहताहै वह इसलोकमें बहुतसी आयुको नहीं प्राप्तहोता सदा धर्मकाआचार खोटे लक्षणोंका नाशकरताहै ८ हे द्विजो सदाचारका लक्षण मैं कहताहूँ आत्माको एक मनसे सदाचारकी पालना करनी योग्यहै ९ जिसप्रकार धर्म्म अर्थ और कामकी साधनहो तैसेही गृहस्थको करनाउचितहै क्योंकि इन के सिद्धहोनेसेही यह लोक तथा परलोकभी सिद्ध हो जाताहै १० जो परलोक का साधन नहीं करता वह नित्य नैमित्तिकादिकों से आत्माही का पोषण करता है ११ और जो इनसाधनोंमें युक्तहै उसके मूल भूत पैर वृद्धिको प्राप्तहोते हैं हे विप्रो ऐसे आचरण करनेवाला पुरुष सफलताको प्राप्तहोताहै १२ ज्ञानवान् पुरुषको आत्माके उद्धार के वास्ते धर्म्मकरना और परलोकके वास्ते काम्यकर्मकरना यहांभी फलको देनेवालाहै १३ दोषोंके भयसे काम तथा अन्य विरोधवाला दोप्रकार का काम रचाहै और त्रिबर्ग में बिरोध नहींहोता १४ धर्म अर्थ और कामका परस्पर सम्बन्ध होनेसे इन सबोंका चिंतवनकरै हे द्विजोत्तमो ये बिपरीत सम्बन्ध वालेभी हैं १५ धर्म अधर्मका सम्बन्धीहै और अर्थ धर्मका सम्बन्धी है पर आत्माकेसंग अर्थका सम्बन्ध

नहींहै १६ धर्म तथा अर्थसे काम्यकर्म दोप्रकार का होताहै जो दो प्रकारका होताहै ब्राह्म्यमुहूर्त्तमें उठके मनुष्यको धर्म और अर्थका चिन्तवनकरनाचाहिये १७ प्रथम उठके आचमनकर पूर्वदिशाको मुखकरकेदांतन करे फिर स्नानकरके प्रातःकाल नक्षत्रयुक्त संध्याकोकरै और दूसरी सन्ध्या सूर्य्यसेयुक्त सायङ्काल में करै १८ निदान यथा न्याय सन्ध्याकी उपासना करै और आपत्कालमेंभी सन्ध्याको न त्यागकरै १९ झूठबोलना तथा पीठपीछे मिथ्यावादकरना छोड़दे और खोटेशास्त्र खोटेवाद तथा खोटेपुरुष की सेवाको त्यागदे २० शुद्धात्माहोके सायङ्काल तथा प्रातःकालमें हवनकरै और उदय तथा अस्तकालमें सूर्य्यको न देखै २१ केशोंका सम्हारना सीसेका देखना दांतनकरनी नेत्रोंमें अंजन लगाना देवतोंका तर्पणकरना ये सब पहिलेही प्रहरमें करनेयोग्यहैं २२ ग्रामकेमध्यमें घरोंमें तीर्थक्षेत्रके मार्ग में खेतमें तथा गौओं के स्थानमें विष्ठा और मूत्र का त्याग न करनाचाहिये २३ परस्त्रीको न देखे और न परस्त्रीसे वचनकहै अपने विष्ठाको न देखे तथा जलमेंभी अपनेशरीरको नहींदेखे २४ जलमें विष्ठा और मूत्रका त्याग न करे और परस्त्रीसे मैथुनभी न करे जहां विष्ठा मूत्र केशभस्मी और ठेकरेपड़ेहों तहां स्थिति न करे २५ और जहां फूस अग्नि रस्से तथा वस्त्रादिक पड़ेहों वहां बुद्धिमान्पुरुषको बैठना न चाहिये २६ गृहस्थमनुष्यको पितृ देव मनुष्य आदि सबभूतोंका पूजनकरके भोजन करना उचितहै २७ मनुष्यको मौनहोके शुद्धभावसे गुप्त

स्थानमें पूर्व तथा उत्तर मुखकरके एकाग्रमनसे भोजन करनाउचितहै २८ बुद्धिमान्पुरुष शुद्धकियेहुये अन्नको ग्रहण करै और लवण तथा उच्छिष्ट अन्नको भक्षण न करै २९ विष्ठा और मूत्रका त्यागकरते गमन न करना चाहिये और जबतक हाथधोके कुल्ला न करै कछुभक्षण न करनाचाहिये ३० उच्छिष्टकालमें न गमन करनाचाहिये और न पढ़ना पढ़ाना चाहिये कामातुरहोके सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रादिकोंको न देखै ३१ और फटेहुये आसन शय्या तथा भोजनपात्र को नवर्ते अभ्युत्थानादि सत्कार पूर्वक गुरूको आसन देना उचितहै ३२ और नमस्कार पूर्वक गुरूके अनुकूल वचन कहनाचाहिये गुरूके सङ्ग गमनकरना और प्रतिकूल वचन न कहनाचाहिये ३३ बुद्धिमान् पुरुष एकही वस्त्रसे भोजन देवता का पूजन ब्राह्मणों का आवाहन और अग्नि में हवन न करै ३४ और नग्नहोके स्नान तथा शयन न करै दोनोंहाथोंसे खुजलाना तथा शिरकामलना मनाहै ३५ बुद्धिमान् पुरुषको बारम्बार शिरडुबोकेस्नान न करना चाहिये शिर तथा अङ्गमें किञ्चित् तैललगाके स्नान करना उचितहै ३६ अनध्यायों में पठन पाठन न करै और ब्राह्मण अग्नि गौ और सूर्य्यकेसन्मुख कदाचित् भी मूत्रका त्याग न करै ३७ दिनमें उत्तरको और रात्रि में दक्षिण को मुखकरके मल मूत्र का त्यागकरे और जब मलमूत्रकीबाधाहो तभी त्यागकरै ३८ गुरूको खोटा वचन न कहे और जो गुरू क्रुद्धहो तो उसे प्रसन्नकरै और कोई गुरूकी निन्दाकररहाहो तो न सुनै ३९ ब्रा-

ह्मणों और राजाओंको मार्गदेना और देवस्थान तथा चौराहेमें वृक्षलगाना उचितहै ४० गुरूकी बुद्धिमान् को परिक्रमाकरनीयोग्यहै और दूसरेकीजूती वस्त्र सुगंधकी वस्तु न धारण करनाचाहिये ४१ चतुर्दशी तथा अष्टमी वा पूर्णिमा अथवा दूसरेपर्वको तेलकामर्दन तथा स्त्रीसे भोग न करै ४२ बुद्धिमान्पुरुषको पाखण्ड तथा अभिमान वा दीनता न करनाचाहिये और मूर्खता तथा व्यसनोंसेयुक्त खोटेरूपकोभी न करना चाहिये ४३ हीन अङ्गवाले तथा निर्धनपुरुषको देखके हँसना न चाहिये और परपुरुषका अपराध न करनाचाहिये शिष्य तथा पुत्र में प्रीति रखनी चाहिये ४४ जिस दिन बुद्धिमान् पुरुष व्रतीरहै तिसदिन आसनको पैरसे न खैंचे और लपसी मालपुआ तथा मांसकोत्यागदे ४५ प्रातःकाल तथा सायङ्काल अभ्यागतके दर्शनकरके भोजन करना चाहिये ४६ हे विप्रो वर्ज्जनीय वस्तु को मनुष्य निरन्तर त्यागदे किसी समयमेंभी जलके तरफ वा पश्चिम के तरफ शिरकरके न सोवे ४७ पर दक्षिण वा पूर्वकी तरफ शिरकरकेसोवे नवीनगन्धयुक्तजलमें स्नाननकरै प्रातःकाल स्नानकरना उचितहै ४८ उपराग अर्थात् ग्रहण समयमें स्नानकरना मृतदिवस में स्नानकरना स्नानसे बचेहुयेजलसे मार्जन न करना और गीलेगात्र पर वस्त्र न धारण करनाचाहिये ४९ केशों और वस्त्रको हिलाना न चाहिये और चन्दनलगाके बुद्धिमान्पुरुष को स्नान न करनाचाहिये ५० रक्त और कालापीला वस्त्र धारण न करनाचाहिये और गहने तथा वस्त्रको

विपरीत न पहननाचाहिये ५१ बर्जनीय तथा अत्यन्त फटेहुये वस्त्रको धारण न करै और कीट और केशयुक्त अन्न तथा बाणी से दुष्ट अन्न ५२ और पीठ के मांस तथा शङ्कित और बर्जनीयमांसको त्यागदे प्रीतिरहित अन्न तथा लवणादिकोंकोभी भक्षण न करे ५३ हेविप्रो बर्जनीय शुष्क तथा बासीअन्नको त्यागदे और हेद्विजो खोटाशाक ईख दूध आदि बिकारवालोंको बर्जिदे ५४ मांसयुक्त विकार वस्तुको त्यागदे और सूर्य्यके उदय अस्त समयमें शयन न करै ५५ उदयास्त समयमें स्नान और जलमें प्रवेश न करे और ईश्वरसे अन्य में बुद्धिको न करे ५६ शयन समयमें पृथ्वी पर बैठके शब्द न करै एक वस्त्रसे न रहे और अन्नको देखनेवाले पुरुषोंको अन्न दिये बिना भोजन न करै ५७ सायंकाल तथा प्रातःकाल स्नानकरके भोजनकरे और बुद्धिमान् पुरुष पराई स्त्रीसे गमन न करे ५८ परस्त्रीगमन वापी कूप और तड़ाग बनवानेवालोंकी भी आयुको नष्टकर देताहै और कोई परस्त्रीगामी लोकमें बहुत आयुवाला नहीं दीखता ५९ परस्त्रीगमन पुरुषों का इस लोकमें ऐसा अपमान करनेवालाहै ६० देवतोंका कार्य्य तथा गुरूको नमस्कार करके और शुद्ध हो आचमन करके अन्नको भोजनकरै ६१ झागरहित स्वच्छ तथा गन्ध युक्त जलसे आदरसे पूर्वको तथा उत्तर को मुख करके आचमन करै ६२ और जलके भीतरकी रस्तेकी बंबी की मूसेके बिलकी और गीदड़की घूस्की मट्टीको न ग्रहणकरै ६३ हाथधोके समाहितहोके और गोड़ोंपर्य्यंत

पैरोंको धोके तीन अथवा चारबार कुल्लेकरै ६४ और शुद्धहोके दोबार आचमनकरै और मस्तकपर्य्यंत मुख को धोके पवित्र जलसे आचमन करके सम्पूर्ण क्रिया करै ६५ नाक सफा करने कोई वस्तुके चाटने उलटी करने तथा थूकनेके बाद आचमन करना योग्यहै और गौकी पीठ तथा सूर्य्यके दर्शन करनेयोग्य हैं ६६ दाहिने कर्णसे श्रवण करना और यथा ऐश्वर्य्य दानादिक करना मनुष्यकोचाहिये६७ जो ये कहीहुई वस्तु न बनै तो अगाड़ी कही वस्तुको ग्रहणकरै और हास्य न करे तथा आत्माको देहसे ताड़ना न करे ६८ स्वप्नके स्मरण में अन्न तथा पठनपाठन त्याग और संधियों में स्त्री संग और मार्गगमन न करे ६९ बुद्धिमान् को पहिले प्रहरमें देवतोंका और मध्याह्नमें मनुष्योंका और पिछलेपहरमें पितरोंका तर्पण करनाचाहिये ७० दैव तथा पितृकर्म में पश्चिम और उत्तरके तर्फ मुखकरके शिर तक स्नान करे और दाढ़ीसहित हजामत बनवावै ७१ रोगी तथा हीन अंगवाली कन्या को न विवाहै माता पिताको पांच तथा सातवर्षकी कन्याका विवाह करना चाहिये ७२ बैरभावको त्यागके स्त्रीकी रक्षाकरनी और जिसदिन स्वप्नआवै तिसदिन स्त्रीसंग न करे ७३ दूसरे के सकाशसे कष्टकी प्राप्ति होनी तथा सर्वकालमें पीड़ा का सहन करना चाहिये ७४ सब वर्णोंकी स्त्रियोंको रजस्वला होनेपर चार रात्री संगकरना वर्जनीयहै और कन्या के जन्मसे बचनेके लिये पांचवींरात्रीभी वर्जित है ७५ छठी रात्रीमें स्त्रीसंगकरै क्योंकि युग्मा रात्रियों

में श्रेष्ठ पुत्रकी उत्पत्ति होती है ७६ हे द्विजो धर्मात्मा पुरुषको सायंसन्ध्यामें तथा प्रातःसन्ध्यामें स्त्रीसंग तथा हजामत करानी न चाहिये ७७ कष्टकाकारण तथा अति कष्टकी वार्त्ता ईश्वरके ध्यान करतेहुये न श्रवणकरै ७८ वस्त्रसहित स्नान और खंडभूमिका लंघन न करै देव-देवका पूजनकरै और ब्राह्मणोंसे सत्य वचन बोलै ७९ हे द्विजो शुद्धहोके पतिव्रता स्त्री ब्राह्मण यज्ञकर्त्ता और तपस्वीकी परिक्रमा करके नमस्कारकरै ८० और आ-नन्दपूर्वक भूषण युक्त होके सफेदवस्त्र धारण करै ८१ द्रव्य बढ़ी हुई ऋद्धि और देवपूजन का अभिमान न करै सुन्दर दृष्टी से युक्त होकर भूपाल देवतों की तरह स्नान करै ८२ गृहस्थ को निन्दित वस्तु वर्ज्जनीय हैं हे विप्रो यथा प्राप्ति ऐश्वर्य्य को पाकर प्रति दिन प्रा-तःकाल उठना योग्य है ८३ हे विप्रो अच्छे प्रकार से गृहमार्ज्जनकरके और स्थानकोलीपके अग्निकापूजन कर आहुती देना योग्यहै ८४ पहिले ब्रह्माको पश्चात् प्रजापतिको फिर गृह्योंको और फिर कश्यपजीको आ-हुतीदेनी योग्य है ८५ फिर अनुमती को आहुतीदेके पश्चात् गृहबलिदे और पहिले कही बिधिसे क्रियाकरै ८६ हे द्विजो वैश्वदेव का पूजन और बलिकैसे दे सो सुनो यथा बिभाग देवतों को पृथक् पृथक् स्थान तथा बलिदे ८७ पर्जन्य पृथिवी यातुधान मर्मादिकों और पूर्वदिशासेलेके वायव्य पर्यन्त दशोंदिशाओं ८८ और ब्रह्मा विष्णु और सूर्य्य तथा विश्वेदेवा और विश्वभूत देवोंको यथाक्रम बलिदानदे ८९ उत्तरकेतरफ ऊषा

तथा भूतोंकेलिये और स्वधा कहके दक्षिणकेतरफ पि-
तरोंकेलिये बलिदे ९० अपसव्यहोके यक्षोंकेलिये भो-
जनदे और अन्नसहित जलकादान यथा ऐश्वर्य्य९१
तीर्थ तीर्थकेप्रति यथा विभवसे कर्मकरै और आचमन
करके ब्रह्मादिकदेवोंका पूजनकरै९२दाहिनेहाथकेअँगूठे
के ऊपर जो रेखाहै उसे ब्राह्मसंज्ञकतीर्थ कहते हैं और
उसीसे आचमन करनायोग्यहै ९३तर्जनी तथा अँगूठे
के मध्यमें पितृतीर्थ कहाता है उससे पितरों को अन्न
तथा जल दानदे पर नांदीमुखश्राद्धमें तिससे न दे९४
अँगुलियों के अग्रभागमें देवतेबासकरते हैं इसलिये
उनसे देवतों की दिव्यक्रियाकरै ९५ और कनिष्ठिकाके
मूलमें तीर्थ बासकरते हैं इसलिये उससे प्रजापतिको
अन्नजलदे ९६ ऐसे तीर्थरूपी हाथसे सब देवतों को
अन्नजलका दान और सब कार्य्य करने योग्य हैं ९७
ब्राह्मतीर्थ से आचमन करना और पित्रतीर्थसे पितरों
को और देवतीर्थ से देवतों को अन्नजलदेना उचित
है ९८ पण्डित को प्रजापति से लेके नांदीमुखादिकों
को पिण्ड तथा जलक्रिया करनी उचितहै ९९ प्राजा-
पत्यतीर्थसे जो कुछहोताहै सो एकबार जल तथा अग्नि
हवनकेवास्ते धारणकरनाचाहिये १००गुरु तथा देवता
के अगाड़ी पैर न पसारे अन्यथा बाणी न बोले और
अञ्जलिबांधके जलको न पीवे१०१सब शौचकालोंमें
तथा गुरूकेकर्ममें बुद्धिमान्पुरुष देर न करे और मुखसे
जुवाबभी नदे१०२जहांपढ़ाहुआब्राह्मण करजदेनेवाला
वैद्य वेदपाठी तथा जलवाली नदी न होवें वहां मनुष्य

को बास न करनाचाहिये १०३ जहांबलवान् धर्ममेंतत्पर नौकरों को दण्डदेनेवाला और बुद्धिमान् राजाहो वहां बास करना चाहिये क्योंकि जहां खोटा राजा हो वहां सुखकी प्राप्ति कैसे होगी १०४ जहां पुरके मनुष्य यत्न से रहतेहों नीतियुक्तहों और क्रोधी न हों वहां का बास सुखको देनेवाला होताहै १०५ जिस देशमें खेतीकरने वालेहों प्रायः बहुत भोगी न हों और जहां तृण धान्य और ओषधी होते हों वहां बुद्धिमानों को बासकरना योग्य है १०६ हे विप्रो जहां सदालेने देनेका व्यवहार हो जहां जीतनेकी इच्छावालेजनहों और जहां पहिले बैर करनेवाले और परायेउत्सवमें दुःखी हों वहां बास न करना चाहिये १०७ जहां सुन्दर शीलता का आचारहो पण्डितहों और दण्डदेनेवाला धर्म्मात्मा राजा हो वहां बासकरना योग्य है १०८ हे विप्रो हितकी कामना से मैंने तुम से यह कहा है और इसके उपरान्त अब भक्ष्यभोज्य वस्तुओंकी प्रतिक्रिया कहताहूँ १०९ स्नेहमिश्रित बहुत काल का तथा बासी अन्न भोगना योग्य है और बिनास्नेह गेहूँ यव गोरस बिक्रिय वस्तु ११० शूशा मच्छ गोह शेहजीव और यवभक्षण करनेवाले जीव भक्षणकरने योग्यहैं १११ ग्राम शूकर और मुर्गा वर्जनीयहैं और पितृदेवादिकों से शेषरहा अन्न तथा श्राद्धमें ब्राह्मण से बचा अन्न आदिखाना योग्य है ११२ प्राप्तहुये स्वादु अन्न तथा मांस और में दोष नहीं है और स्वर्गरूप आभूषणों की तथा रज्जु तथा बस्त्रों की ११३ तथा शाक मूल फल दाल मणि बस्त्र

मूंग मोती ११४ और मनुष्यके गात्रकी शुद्धि जलसे होती है ११५ लोहकी शुद्धि निशान आदिपर घिसने से होती है स्नेहयुक्त अर्थात् चिकने पात्रकी शुद्धि गरम जलसे होती है ११६ और छाज तथा अन्यपात्र चर्म मूशल ऊखल फटेहुये वस्त्रोंकी शुद्धि धोनेसे होती है ११७कणकोंवाले अन्नकी जलसे धोनेमें शुद्धि होती है और सब अंग तथा केशोंकीशुद्धि धोनेसे होतीहै ११८ सिद्धहुये अन्नके कल्क दूर करनेसे अथवा शोधने से और उपघात किये हुये अन्न की जलसे शुद्धि होती है ११९ कपासके वस्त्रोंकी शुद्धिभस्मलगे जलसे धोने से होती है और हाथीदांत तथा सींगकी शुद्धि केवल जलसे धोनेसे होती है १२० मिट्टीके बरतनोंकी शुद्धि फिर पकानेसे होतीहै और स्त्रीके मुखकी शुद्धि जलसे होतीहै बिनाजाने रस्तामेंपड़े अथवा किसीके डाले श्रेष्ठ अन्नकी शुद्धिभी जलसे होतीहै १२१ पढ़ाहुआ तथा समर्थ बालक वृद्ध कष्टवाला चेष्टारहित अति बालक और स्त्री १२२ ये सब जलमें गोतालगानेसे शुद्धहोते हैं और पृथ्वी की शुद्धि गोबर से लीपने तथा खोदने से होतीहै १२३ लेपन चित्ररेखा अथवा मार्ज्जनकरने से घरशुद्धहोताहै १२४ और केश कीटयुक्त गौकेरोम और मक्षिका युक्त अन्नकी जलसे शुद्धिहोतीहै १२५ और मृत्तिका तथा भस्म और जलकेछींटोंसेभी होतीहै सब अन्नोंकी शुद्धिजलसे होतीहै १२६ कांसेकेपात्रकी शुद्धिभस्म अथवा तपानेसे होतीहै और गीलीबस्तुकी शुद्धि मृत्तिका तथा जल से अथवा गन्ध दूरकराने से

होतीहै १२७ द्रव्यादिकों की शुद्धि वर्ण तथा गन्ध के दूरकरानेसे होतीहै और चांडाल तथा राक्षस आदिकों से फाड़ाहुआ मांसशुद्धहोताहै १२८ देखनेकी बस्तु पत्थर तथा गौकी तृप्तीहोनेलायक जलशुद्धहै और धूली अग्नि रथ गो छाया किरण और पवन से पृथिवी की शुद्धिहोतीहै १२९ खोटेसंगवाले मनुष्यकी जल स्नान करनेसे शुद्धि है और बकरी और घोड़े का मुखशुद्ध है गौ तथा बछड़ेका मुखशुद्ध नहींहै १३० गौकी दूध देने से शुद्धीहै और पक्षीका गिरायाहुआ फलशुद्धहै और आसन शय्या पानकीबस्तु नौका चौराहा तृणादि येसब सदा शुद्धरहते हैं १३१ चन्द्रमा सूर्य्य अग्नि और वायु भी आपही शुद्धहैं और रस्ता चलने स्नान आतुरसमय और दूसरे कर्म्मोंमें १३२ आचमन करना श्रेष्ठहै आचमनकरके वस्त्रधारण करना योग्यहै १३३ नीच तथा गलीकी कीचके स्पर्श होने और गलीके जलकी छींट लगने १३४ तथा पकाई ईंटों से स्पर्शहोने में वायुके लगनेसे शुद्धि होती है १३५ अग्नि से पकाया हुआ अन्न खोटी जगह गिरपड़े तो त्यागदेने योग्य होताहै और बाकीरहा अन्न जलसे प्रोक्षण करनेसे शुद्ध होता है १३६ उसे मिट्टी लगाके तथा आचमन करके ग्रहण करना योग्यहै जो खोटीवस्तु भक्षणकरले तो तीनदिन व्रतकरना योग्यहै १३७ जानके अथवा अनजान यदि रजस्वला नग्न सूतिका तथा शयन करतीहुई स्त्री को १३८ देखले तो उस दोषकी शांति तथा सूतककी निवृत्तिके लिये स्नान करना चाहिये १३९ स्नेहसे हाड़ों

को स्पर्श करनेवाला मनुष्य स्नानसे शुद्ध होताहै और सूखे हाड़को स्पर्श करले तो गौको छूके सूर्य्यके दर्शन करनेसे शुद्ध होता है १४० रुधिरके निकसने में तथा तृणके उठाने में अथवा घरसे विष्ठा मूत्र उच्छिष्ट जल के गेरनेमें पैरोंका तथा हाथोंका धोना उचितहै १४१ और पांच पिंडलेके स्नानकर देवखात अर्थात् तलाव सर तथा गंगा आदि नदियोंमें डालना योग्यहै १४२ बुद्धिमान् पुरुषको शंकायुक्त होके बनमें न ठहरना चाहिये और बैरी पुरुषसे बोलनाभी न चाहिये १४३पति हीन स्त्रीके स्पर्श तथा देवता पितृ सत्शास्त्र और यज्ञ की निन्दा करनेवालोंसे स्पर्श तथा सम्भाषण करनेमें सूर्य्य के दर्शनसे शुद्धि होती है १४४ और रजस्वला स्त्री चाण्डाल मुरदे खोटेपुरुष सूतिका हीजड़े तथा वस्त्ररहित स्त्री को शय्यापर देखने तथा मरेहुये को कांधे पर लेजाने से और पराई स्त्री से संगकरनेसे बुद्धिमान् पुरुषको आत्माका शोधनकरना उचित है १४५।१४७ अभोज्य भक्षण सूतिका स्त्रीके स्पर्श शठसे बोलने बिलाव कुत्ता मूसा और मुर्गेके छूनेसे १४८ जाति पतित अशुद्ध चांडाल और मरेहुयेको लेजानेवालोंसे संभाषण तथा १४९ रजस्वला स्त्री और ग्रामशूकरके स्पर्श से मनुष्यकी शुद्धि स्नानकरनेसे होती है १५० वैसेही सूतिका का अशौच दोष पुरुषोंके लिये कहा है और जिसके घरमें नित्यकर्म्म की हानिहोती है और जिसने ब्राह्मणों को त्याग दियाहो वह पापी मनुष्यों में अधम है १५१ बुद्धिमान् पुरुषको नित्यकर्म्मकी हानि न करनी

श्रम धर्मको सुननेकी हमारी इच्छाहै सो आप कहो १
व्यासजी बोले कि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र इन
चारवर्णोंके आश्रमधर्मको मुझसे सुनो २ ब्राह्मण को
दान दया तप देवयज्ञ पठन पाठन नित्य उदकक्रिया
और अग्निकी परिक्रमा येसब करनेचाहिये ३ जीविका
के लिये अन्यघरोंमें मांगनाचाहिये और अन्योंको प-
ढ़ानाचाहिये हेद्विजो क्रोधसे कियेहुये दानको न लेना
चाहिये और नीतियुक्तरहनाचाहिये ४ सब मनुष्योंपर
हित रखनाचाहिये और क्रोध किसीपर नहींकरनाचा-
हिये सबलोकोंसे मैत्रीकरना ब्राह्मणका उत्तमधन है ५
अपने तथा परपुरुषोंमें समबुद्धि रखनीचाहिये क्योंकि
सब लोकोंमें हितकरनेवाला ब्राह्मण श्रेष्ठहोताहै ६ हे
द्विजो जिनको भिक्षा प्रियहै वे ब्राह्मण श्रेष्ठहैं ब्राह्मण
को ऋतुदानके सिवा स्त्रीसङ्ग न करनाचाहिये ७ शस्त्र
की जीविका तथा पृथिवीकी रक्षा क्षत्रीकी श्रेष्ठवृत्तिहै
और क्षत्रीका पहिलाधर्म पृथिवीका पालनकरनाहै ८
पृथिवीकी पालनाकरनेसे वह मनुष्योंका राजाहोताहै
और राजाहोके देवतोंकेलिये यज्ञकराना उचितहै ९
दुष्टपुरुषोंको दण्ड और अच्छेपुरुषोंकी पालनाकरनेसे
राजा बांछित लोकोंकी प्राप्ति तथा बर्णकी स्थिति को
प्राप्त होता है १० हे मुनिसत्तमो पशुओं की पालना
बणिज तथा खेतीकरना वैश्योंकीजीविका लोककेपिता-
महरूप ब्रह्माने नियतकीहै ११ वैश्यको ब्राह्मणके आ-
श्रयहोके पढ़ना यज्ञदानकरना तथा नित्यनैमित्तिककर्म
करनाश्रेष्ठहै १२ और ब्राह्मणकी पालना करना भोजन

कराना और लेनेदेने के व्यापार से सब जीवोंको तृप्त
करना वैश्यका धर्म्म कहाहै १३ शूद्रभी पक्वान्नसे पि-
त्रादिकोंका पूजनकरै पर सब कर्म शूद्रको वर्जितहैं १४
सब देवमूर्त्तियोंकी परिक्रमाकरनी ऋतुकाल में स्त्रीसङ्ग
करना सब भूतोंमें दयाकरना वचनका सहनकरना १५
सत्य बोलना शुद्धरहना नम्ररहना झूठ न बोलना और
किसीकी निन्दा न करना १६ ये सामान्यतासे सब वर्णों
केगुण और सब आश्रमोंके सामान्य लक्षणकहे हैं १७
अपने अपने धर्ममें ब्राह्मणसे आदिले सबको युक्तर-
हना अपनाही कर्मकरना और खोटेकर्म न करना १८
ये वर्णोंकेधर्म तुम्हारे अगाड़ी मैंनेकहे हैं हे सभ्यो अब
आश्रमोंके धर्मसुनो १९ ब्राह्मण बालकपने में लड़के
का जनेऊका संस्कारकरावे वेदपढ़नेमें तत्पररहै गुरूके
घरमें बासकरे ब्रह्मचर्य वृत्तीमें युक्तरहै २० और शुद्ध
आचारसे युक्तहो गुरूकी टहलकरै हेद्विजो वह शिष्य
गुरूकी आज्ञा को उल्लंघन न करे २१ गुरूके कहेहुये
वेदको पढ़ै अन्यजगह चित्तको न लगावे और गुरूकी
आज्ञालेके भिक्षाको भोजनकरे २२ जलमें बड़केजल
को अवलोकन न करे स्नानादिक नित्यप्रति करे और
वेदको पढ़के गुरूकी आज्ञानुसार गृहस्थमें आके बसै
और खिन्नपुरुषकी तरह गुरूकी आज्ञा का अवलंघन
न करै २३।२४ धनकी प्राप्तिसे उदारहोके कर्मकरनेसे
अपनेकर्मोंसे प्राप्तहुये लोकोंको मनुष्य प्राप्तहोते हैं २५
जो ब्राह्मण संन्यासी तथा ब्रह्मचारीहोके भिक्षाका भो-
जनकरते हैं उनका गृहस्थधर्म यहीं सिद्धहोजाताहै २६

हेद्विजो वेदपढ़तेहुये जो तीर्थ का स्नान करते हैं और
पृथिवीके पर्यटन के लिये फिरते हैं २७ एक स्थानपर
नहीं ठहरते एवम् उदय अस्तकालमें जो नारायणमें
तत्पर हैं उनकी गृहस्थयोनि निरन्तर श्रेष्ठरूप है २८
और उनका आगमन गृहस्थियोंको सदा प्रियका देने-
वालाहै घर आयेहुओं को आसन और भोजन देना
उचितहै २९ अभ्यागत जिसके घरसे निराश चला-
जाताहै उस गृहस्थको वह दुःखोंमें प्राप्तकरके उसके
पुण्योंकोलेके चलाजाताहै ३० ज्ञानरहित तथा अहं-
कारीभी यदि घरमें आयेहुये को अन्नादि देदेताहै तो
वह कष्टादिक उपघातों तथा कठोरता को नहींप्राप्तहोता
३१ और जोकोईगृहस्थ परमधर्मको धारणकरताहै वह
सब बन्धनोंसे छुटके उत्तम लोकोंको प्राप्तहोताहै ३२ हे
विप्रो गृहस्थीसे कृतकृत्यहो और पुत्र भार्या सहोदरादि
को गृहस्थीमें युक्तकरके आप अवस्था व्यतीत करने
को वनमें चलाजाय ३३ और वहां जायकेपत्ते कन्दमूल
तथा फलका भोजनकरै केश डाढ़ी और जटाको धारण
करै ३४ पृथ्वीमें शयनकरै मुनियों की वृत्तिको धारण
करै सदा अतिथिरूपरहै और मृगचर्म तथा कुश कांश
का परिधान तथा उत्तरीय वस्त्रकरै ३५ हे विप्रो वैसेही
पर्वकालमें स्नानकरना देवता और अभ्यागतोंका पूज-
नकरना भिक्षा तथा बलीदान देना और वनकेस्नेहसे
गात्रोंकामलनाभी श्रेष्ठहै ३६।३७हेविप्रेंद्रो जाड़ा गरमी
सहके वनमेंतपकरना श्रेष्ठहै ऐसेनियमोंको ग्रहणकरके
मुनि वानप्रस्थका आचरणकरै ३८ लोकों में निरन्तर

गमनकरतेहुये वानप्रस्थके पापादिक अग्नि में तृणा-
दिककी तरह दग्धहोजातेहैं ३९ चौथा आश्रम बुद्धि-
मान् मुनियों ने भिक्षाका कहा है हे द्विजसत्तमो तीनों
वर्णोंके सब आरम्भोंको त्यागके भिक्षावृत्ति श्रेष्ठहै ४०
उस आश्रम में मित्रादिकों तथा जरायुज से अण्डज
पर्यंत सबजीवोंमें वाणी मन और कर्मसे मैत्रीरक्खे ४१
और किसीसे बैरसंग नकरे वह एक रात्रि अथवा पंच-
रात्रि ग्राममें स्थितिकरै ४२ यज्ञोंमेंप्रीतिकरै दैवमेंबुद्धि
रक्खे और प्राणोंकी यात्राके निमित्त अर्थात् भोजन
कालकेसिवा किसीके घरमें नठहरे ४३ कालपाके वहश्रे-
ष्ठग्रामोंमें भिक्षाकेलियेगमनकरै और भिक्षाकाअलाभ
होनेपर दुःखित नहो जितनी मिले उतनीही में आन-
न्दित होजावे ४४ प्राणयात्राकेनिमित्त जो जनोंकेसंग
को प्राप्तहोजाताहै और यतिहोके पूजनादिक लाभको
जो प्राप्तहोता है वह कैसाही यतिहो तबभी बन्धन में
आजाता है ४५ काम क्रोध पाखण्ड लोभ मोहादिक
इनदोषोंको त्यागके परब्रह्ममें मनयुक्तकरनाचाहिये ४६
हे विप्रो यथा लाभ भिक्षा ग्रहणकरना और अग्नि में
शाकल्य होमना आदि वानप्रस्थीय धर्म्म हैं ४७ इस
प्रकार लोकों में गमन करताहुआ वह यथोक्त मोक्ष-
स्थानमें प्राप्तहोजाताहै जो शुद्धहोके बुद्धीकी कल्पनामें
युक्तहो ४८ जैसे इन्धन बिना अग्नि शांतरहता है तै-
सेहीशान्तरहैवहब्राह्मण ब्रह्मलोककाजयकरताहै ४९॥
इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासात्सायन्सम्वादेवर्णाश्रमवर्ण
नोनामअष्टाधिकशततमोऽध्यायः १०८॥

एकसौनौका अध्याय ॥

मुनियों ने पूछा कि हे महाभाग हे मुने आप सर्व्वज्ञ हैं और भूत भविष्यत् और बर्त्तमान कालको जानते हैं १ हे महामते मनुष्योंकी खोटीगति किसकर्मसे होती है और उत्तमगति किसकर्मसे होतीहै सो कहो २ शूद्र किसकर्म से ब्राह्मण होजाताहै और ब्राह्मण किसकर्म्म से शूद्रहोजाता है यह हमारी सुननेकीइच्छाहै ३ व्यास जी बोले कि हे विप्रो एकसमय नानाप्रकारकी धातुओं से भूषित ४ और नानाप्रकारके वृक्षों बेलों तथा आश्चर्य्योंसे युक्त रमणीक हिमवान् पर्वतपर ५ बैठेहुये त्रिपुरासुरके मारनेवाले त्रिनेत्र महादेवजीसे पर्व्वतराजकी पुत्री सुन्दरनेत्रोंवाली देवीपार्वतीने भी नमस्कार करके यही प्रश्न किया था और सदाशिव जी ने उसका जो उत्तरदियाथा सो मैं कहताहूँ पार्व्वतीजी ने कहा कि हे भगवन् हे दक्षयज्ञ विशातन हेदक्षक्रतुहर हे त्र्यक्ष मुझे एक महान् सन्देह है कि चारोवर्णों को पहिले ब्रह्माजी ने रचाहै पर वे किसकर्म्म से वैश्य शूद्रआदि होजाते हैं ६।९ वैश्य क्षत्रियभावको अथवा ब्राह्मण क्षत्रियताको किसकर्मसे प्राप्त होजाताहै १० यह बिपरीत कर्मधर्म से वर्ज्जित कैसे होताहै और किसकर्म्मसे ब्राह्मण शूद्र योनिको प्राप्तहोजाताहै ११ हे विभो हे देव हे भूतपते क्षत्रिय किसकर्मसे शूद्रहोजाता है यह मेरे संदेह है सो आपकहो १२ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनोंवर्ण अन्यथा स्वरूपको कैसे प्राप्तहोजाते हैं १३ महादेवजी बोले कि हे देवि ब्राह्मणत्व बड़ी कठिनतासे प्राप्तहोताहै हे शुभे

ब्राह्मणत्व स्वभावसेही होजाताहै १४ और क्षत्रिय वैश्य शूद्रयोनिभी स्वभावसेहीहोती हैं मेरीबुद्धिमेंऐसानिश्चय है १५ खोटेकर्मकरनेसे ब्राह्मण स्थान से भ्रष्टहोजाता है तथा श्रेष्ठवर्णको प्राप्तहोके फिर ब्राह्मणत्वको प्राप्तहोता है १६ ब्रह्मधर्ममें स्थितहुआ ब्राह्मण ब्राह्मणत्वको प्राप्त होताहै और क्षत्रिय तथा वैश्यभी ब्रह्मत्वकोप्राप्तहोजाते हैं १७ जो ब्राह्मण अपने धर्मको त्यागके क्षत्रीकेधर्म्मको सेवताहै वह क्षत्रियहोजाताहै १८ और जोब्राह्मण लोभ और मोहके आश्रयहोके वैश्यकर्मकरता है तथा सदा वैश्य बुद्धिरखताहै १९ वह ब्राह्मण वैश्ययोनिको प्राप्त होताहै जो ब्राह्मण मैत्रीसेरहित रहताहै वह अपने धर्म से भ्रष्टहोके शूद्रताको प्राप्तहोजाताहै २० और शूद्रतामें खोटेकर्म करने से नरकगामी होता है तथा वर्णसे भ्रष्ट होके नरकसे बाहिर होजाता है २१ और ब्रह्मलोकसे भ्रष्टहोके वर्णसङ्कर होजाताहै ऐसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रता को प्राप्तहोजाते हैं २२ जो शूद्र शुद्धहोके ज्ञान तथा विज्ञानधर्मसे धर्ममेंयुक्तहोताहै वह धर्मकेफलको भोगकर २३ ब्राह्मणत्वकोप्राप्तहोताहै वेदपढ़ना ब्रह्मचर्य वृत्तिधारण करना धर्म्मकी कामनासे मन्त्रकीसिद्धि २४ कठोर निन्दित देवगणोंका श्राद्ध का सूतकी का और शिष्टपुरुषका अन्न २५ शूद्रमनुष्य को न भक्षणकरना चाहिये शूद्रकाअन्न मुनिजनों को सदानिन्दित है २६ ब्रह्मा के मुखका तथा मेराभी यहीकथन है कि शूद्रान्न भक्षणकरनेसे ब्राह्मण पतितहोजाताहै २७ अग्निहोत्री ब्राह्मण जो शूद्रकाअन्न भक्षणकरले तो समुद्रमें स्नान

करने से शुद्धि को प्राप्त होता है २८ क्योंकि शूद्र का अन्न भक्षणकरनेसे ब्राह्मण अपने धर्मसे छूटके शूद्रता को प्राप्तहोजाताहै इसमें सन्देह नहीं २९ यदि शूद्रके अन्नकोखाके ब्राह्मण मरजावे तो वह ब्राह्मण उसीशूद्र कीयोनिको प्राप्तहोके शूद्रकेही अन्नसे जियाकरताहै ३० जो दुर्लभ ब्राह्मणत्वको प्राप्तहोके दूसरेभोज्य वस्तुओं को खाताहै वह उस ब्राह्मणपनेसे पतितहोजाताहै ३१ जो ब्राह्मणहोके मदिरापान अथवा चोरी करताहै वा शूरवीरता तथा खोटीवृत्ति रखताहै अशुद्ध ३२ तथा पठन पाठनसे रहित रहताहै एवम् पाप तथा लोभयुक्त रहताहै और अपने कर्म न करके शठता ३३ खोटीजीविका तथा वेश्यागमनकरताहै और क्रूररहता तथा दूध बेचताहै तो ऐसेकर्मों के करनेसे वहब्राह्मण अपने ब्राह्मणपनेसे पतितहोजाताहै ३४ गुरूकी शय्यापर चढ़ने वाला गुरूसे बैर करनेवाला गुरूकी निन्दाकरनेवाला और ब्राह्मणसे बैरकरनेवाला ३५ ब्राह्मण ब्रह्मयोनिसे भ्रष्ट होजाताहै ३६ हे देवि इन शुभ अशुभ कर्म्मों से शूद्र ब्राह्मणपने को और बैश्य क्षत्रियपनेको प्राप्त होजाते हैं ३७ शूद्रको तीनोंवर्णोंकी टहल और शूद्रपने के विधानकिये कर्म यथा न्यायकरने चाहिये ३८ निरन्तर श्रेष्ठकर्म करना देव ब्राह्मण और अभ्यागत का सत्कार और व्रतादि करना ३९ ऋतुकाल में स्त्रीसङ्ग नियमकरना प्रमाणका भोजन और दुष्टजनोंसेबैर और ब्राह्मणसेशेषबचाअन्न भोजनकरना ४० और वृथामांस का भोजन न करना इन कर्मोंके करनेसे शूद्र बैश्ययोनि

को प्राप्तहोजाताहै ४१ सत्य बोलने और झूठ को त्यागनेवाला पाखण्ड रहित सबजीवोंमें समबुद्धिरखने और नित्य यज्ञों का पूजन करनेवाला एवम् पढ़ने पढ़ाने में प्रीतिकरने सदाशुद्धरहने इन्द्रिय दमनकरने और ब्राह्मणका सत्कार करनेवाला और सबवर्णों में भूषणयुक्त गृहस्थ व्रतमें स्थित दोकाल भोजन करने ब्राह्मणसेशेषबचेअन्नको भोजनकरने और भूखकोजीतनेवाला तथा कामनासे रहित अहङ्कार रहित वचन बोलने अग्निहोत्र की उपासना करने यथाविधि यज्ञ करनेसबअभ्यागतोंमें श्रद्धारखने अभ्यागतोंसे शेषरहे अन्नको भक्षण करने और मन्त्रविहित तीनों अग्नियों का सेवन करनेवाला ४२।४६ वैश्य ब्राह्मणयोनि को प्राप्तहोताहै ऐसे कर्मोंवाला वैश्य शुद्धियुक्तरहै तो क्षत्रिययोनिकोभी प्राप्तहोताहै ४७ वहीवैश्य क्षत्रियहोके और जन्मसेआदि यज्ञोपवीतादि संस्कारको प्राप्तहोके यदि व्रत धारण करन में तत्पर रहै तो वहभी ब्राह्मण योनिको प्राप्तहोताहै ४८ यज्ञोंसे देवतोंका पूजनकरने धनकी प्राप्तिसे दक्षिणादेने स्वर्गकी इच्छाकेवास्ते अध्ययन करने तीनों अग्नियोंके शरणमें रहने ४९ शस्त्रों को धारणकर धर्म्म से प्रजाकी पालनाकरने सत्यसत्य कर्मकरने और नित्य शुद्धदर्शनोंमें तत्पररहने ५० धर्म से दण्ड देने पापयुक्तको दग्धकरने सदाशान्ति रखने और जहां तहां कार्य्यमें तत्पररहने छः लक्षणोंको धारणकरने ५१ और ग्राम्य धर्मोंका न सेवनकरने अपने वेदके अनुसार अर्थ को जानने और धर्म्म में युक्तहोके

ऋतुकालमें अपनी पत्नीका सेवनकरने ५२ सदा व्रत करने तथा नियमरखने और पढ़नेमें रतरहने बाहिरसे फिरके सदाघरमेंशयनकरने ५३ त्रिवर्गकी सदाआतिथ्य करने सदाप्रसन्नमन ५४ तथा अर्थ कामकी इच्छावाले शूद्रको क्षत्रिययोनिकी प्राप्तिहोतीहै स्वार्थ अथवा काम से कभीकछु न जाने ५५ पितृ देव और अतिथिकेवास्ते साधनकरै अपनेघरके बीचमें यथान्याय भिक्षाकी उपासना करे ५६ दोकाल अग्निमें हवनकरै यथाविधि यज्ञकरै जो गौ ब्राह्मणके वास्ते अपनेप्राण देदेवे ५७ और तीन अग्निमन्त्रोंसे पवित्रहो तो ऐसेकर्म करनेसे वैश्य ब्राह्मणयोनिमें होजाताहै ५८ ज्ञान विज्ञानमें सम्पन्न संस्कारसेयुक्त वेदको पार करनेवाला शूद्रभी संस्कारको प्राप्तहो वेदसेयुक्त ब्राह्मणयोनिको प्राप्तहोता है ५९ और ब्राह्मण खोटेकर्मोंसेयुक्त सर्वथा चाण्डालों काभोजन करने से ब्राह्मणपने को त्यागके तादृश शूद्र योनिको प्राप्तहोजाता है ६० हेदेवि सुन्दर कर्मोंसे शुद्धात्मा तथा जितेन्द्रिय शूद्रभी ब्राह्मणकीतरह सेवना योग्यहै यह ब्रह्माजीने कहाहै ६१ स्वभावसे शुभकर्म में स्थित शूद्रशुद्धरहे तो वहभी द्विजातिमें गणनाहोने केयोग्य है मेरीभी यही मति है ६२ योनिसंस्कार वेद और न शुद्धसंततिसे रहित ब्राह्मणको व्रतकरना कहा है ६३ व्रतकरने से ब्राह्मणके सब कारण सिद्ध होजाते हैं और व्रतमें स्थितहोके शूद्रभी ब्राह्मणपने को प्राप्त होजाता है ६४ ब्राह्मणपना स्वभावसेही होताहै ऐसा सुनते हैं और यही हमाराभी मतहै अज निर्गुण और

निर्मलब्रह्ममें ब्राह्मणत्व स्थितहै ६५ हेदेवि हेवरदे इन सुन्दर स्थानों का भाव मैंने तेरे अगाड़ी कहाहै और प्रजाके रचनेसमय ब्रह्माजीनेभी कहाहै ६६ हेभामिनि ब्रह्माजी ने सबक्षेत्र तथा संसार आदरसे रचाहै और जहां जहां बीजपड़ा है तहां तहां खेती होतीभई ६७ प्रसन्न मनवाले तथा भूषणयुक्त को श्रेष्ठमार्गमें गमन करना और ब्रह्ममार्ग में स्थितहोके रहनाचाहिये ६८ गृहमेधी पुरुष तथा संहिता पढ़नेवालेको घरही श्रेष्ठहै पढ़नेका जीविका करनेवाले पुरुषोंको नित्यपढ़नेपढ़ाने में युक्तरहनाचाहिये ६९ ऐसेकर्मोंको करने और निरंतर अच्छेमार्ग में रहने तथा नित्य अग्निमें हवन करने ७० और नित्य वेद पढ़ने वाला ब्राह्मण ब्रह्मरूप कल्पना कियाजाताहै ७१ हेदेवि ब्राह्मणत्वको प्राप्तहोके सदा आत्माकीरक्षा करनीयोग्यहै और जन्ममरण की निवृत्तिकेलिये शुद्धहोकेदान तथा कर्म्मादिककरना योग्य है ७२ मैंने यह सब गोप्यकर्म तेरे अगाड़ी कहे जैसेशूद्र ब्राह्मणत्वको प्राप्तहोजाताहै ७३ और ब्राह्मण धर्मसे पतितहोके शूद्रताको प्राप्तहोताहै ७४॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांउमामहेश्वरसंवादेनवाधिकशततमोऽध्यायः १०९॥

एकसौ दशका अध्याय॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे भगवन् सब भूतोंमें सुर असुर आदि सबको नमस्कार करने योग्य आपने धर्म्म तथा अधर्मकानिर्णय कहा पर मुझे एकऔर सन्देहहै १ कि कर्म्म मन और वाणी इन तीनप्रकारकी बांधवरूपी

फांसी से बँधेहुयेजीव यहांसे छूटके २ किस सुन्दर कर्म और किन आचारयुक्त गुणोंद्वारा स्वर्गकोजातेहैं ३ महादेवजीने कहा कि हे देवि हे धर्मार्थतत्वज्ञे हे धर्मनित्ये हे उमे सब प्राणियों के कल्याणकारी तथा बुद्धिकेबढ़ाने वाले प्रश्नकेउत्तरको आपसुनो ४ जो सत्यधर्ममेंरतहैं शान्तरूपहैं सब लिंगोंसे वर्जित हैं धर्म अधर्म में नहीं बँधेहैं जिनका सन्देह दूरहोरहाहै ५ जो जन्ममरणकी उत्पत्ति को जानते हैं और जो सर्व्वज्ञ सर्व्वदर्शी और रागोंसे रहित हैं ऐसे पुरुष कर्म्मोंके बन्धनसे छूटजाते हैं ६ जो कर्म मन और वाणीसे हिंसाकरते हैं और इस कारणसे कहींडूबतेहैं वे बन्धनमें आजातेहैं ७ प्राणोंके उपतापमेंरत शीलवन्त तथा दयासेयुक्त और द्वेष तथा प्रीतिमें तुल्यब्रह्मचर्य्यवाले पुरुष कर्म्मोंके बन्धनसे छूटजातेहैं ८ और सब भूतोंमें दयारखनेवाले तथा सब जीवोंमें विश्वास न करनेवाले और हिंसाकोत्यागनेवाले तथा शुद्धआचारवाले नरस्वर्गमें गमनकरनेवाले होते हैं ९ परायेद्रव्यको त्यागनेवाले तथा परस्त्री संगसे रहित धर्मकीलब्धीकेवास्ते भोजनकरनेवाले मनुष्यस्वर्ग में जातेहैं १० और पराई स्त्रीमें जो माता बहन तथा पुत्रीकी बुद्धिरखतेहैं वे पुरुष स्वर्गमेंजातेहैं ११ अपनी स्त्री से संगकरनेवाले तथा ऋतुकालमें गमनकरनेवाले और ग्रामरहित सुखको भोगनेवाले पुरुष स्वर्गमेंजाते हैं १२ और पराईस्त्री को देख नीचेको दृष्टिकरनेवाला जितेन्द्रिय और शीलमें तत्परपुरुष स्वर्गमेंजाताहै १३ यह देवोंका कराहुआ मार्ग्ग बुद्धिमान् पुरुषों को सदा

सेव्यहै क्योंकि खोटे कर्मोंसेरहित मार्ग्ग बुद्धिमानों को सदा सेवनीय है १४ तथा झूठको त्यागनेवाला मार्ग बुद्धिमान् पुरुषोंको सेवना योग्यहै १५ और स्वर्ग्गकी इच्छा करनेवालेको दान कर्म्म तप शीलता शुद्धि और दयासे अन्य सेवना न चाहिये १६ पार्वतीजी बोलीं कि हे देव हे भूतपते हे अनघ जिससे मनुष्य बन्धनमें पड़ताहै तथा जिससे छूटजाताहै वह कर्म्म आप मुझसे कहो १७ महादेवजी ने कहा कि आत्मा तथा और के वास्ते जो माहात्म्य श्रवण करता है और झूठी बाणी नहीं बोलता वह स्वर्ग्ग में जाताहै १८ और जीविका तथा धर्मके वास्ते जो कर्म करते हैं और झूठ नहीं बोलते वे नर स्वर्गमें जाते हैं १९ जो आयेहुये मनुष्यसे कपटरहित श्रेष्ठ मीठी तथा पापरहित बाणी कहते हैं वे नर स्वर्गमें जाते हैं २० और जो पुरुष कठोर और पैना वचन नहीं कहते और चुगलीसे रहित रहते हैं वे स्वर्ग में जातेहैं २१ जो मनुष्य चुगली नहींकरते और सदा सम रहतेहैं वे स्वर्गमें गमन करनेवाले होते हैं २२ और जो किसी पुरुषसे बैर नहीं करते कठोर वचन नहीं बोलते सब भूतोंमें समबुद्धि रखते हैं और ब्रह्मचर्य्य वृत्ती रखते हैं वे नर स्वर्गमें जाते हैं २३ जो क्रोधमें हृदयको भेदन करनेवाला वचन नहीं बोलते बल्कि क्रोधमेंभी शान्ति वचनही कहते हैं वे नर स्वर्गमें जाते हैं २४ हे देवि यह बाणीका धर्म बुद्धिमान् पुरुषको सदा सेवना योग्यहै २५ उमा बोलीं हे महाभाग हे देव हे पिनाकधृक् मनसे कैसे पुरुष बन्धनमें होजाता और छूटजाता

है सो कहो २६ महेश्वर बोले कि जो मनुष्य मानस धर्ममें सदा युक्त रहताहै वह स्वर्ग में जाता है २७ हे कल्याणि मैं उसे कथन करताहूं सुनो हे शुभानने जो मनुष्य मनमेंभी यह नहींलाता कि हूं २८ उसपुरुषकी आत्मा बन्धनमें नहीं पड़ती मनुष्य रहित बनमें पराया धराहुआ द्रव्य देखके २९ जो मनसे भी लेनेकी इच्छा नहीं करता वह मनुष्य स्वर्गका अधिकारी होताहै ३० और जो मनसे शत्रु तथा मित्रको तुल्य देखताहै और जो मित्रताको प्राप्त होताहै वह स्वर्ग में जाता है ३१ वेदपाठी दयावाले शुद्ध तथा सत्यका संग्रहकरनेवाले और अपनेही अर्थोंमें प्रसन्ननर स्वर्ग्गमें जातेहैं ३२ और जो किसी से बैर नहीं रखते पराई आशा नहीं करते सदा प्यारमें रतरहते हैं और सब भूतों में दया रखते हैं वे नर स्वर्ग्गमें जाते हैं ३३ जो श्रद्धाकरते हैं दयारखते हैं सुखकी बस्तुमें प्यारकरते हैं और नित्य धर्म अधर्मका कथनकरतेहैं वे नर स्वर्ग्गमें जातेहैं ३४ और शुभ तथा अशुभ कर्म्मोंके फलका संचय करने वाला और देवताका भोगलगानेवाला मनुष्य स्वर्ग्ग में गमनकरता है ३५ जो पापोंसे बचकरके देव तथा ब्राह्मण का पूजन करतेहैं और उन्हें देखकर खड़ेहोतेहैं वे नर स्वर्ग्गमें गमनकरते हैं ३६ हे देवि यहतो शुभ कर्म्मोंके फल मैंने तुमसे कहे अब स्वर्गमार्गको जानके और क्या इच्छा करती है ३७ उमाबोलीं हे महेश्वर मनुष्योंकी लीला कैसीहै यह सन्देहहै सो आप निपुणतासे कहिये ३८ हे प्रभो किसकर्म्म से मनुष्य दीर्घ

आयुको प्राप्तहोताहै हे देवेश तपकरकेभी मनुष्य दीर्घ आयुको प्राप्तहोताहै ३९ और महाभाग्य मन्दभाग्य तथा खोटीदशाकोभी पीड़ितहुये प्राप्तहोतेहैं ४० हेमहाप्राज्ञ वैसेही ज्ञान विज्ञानमें युक्तहोकेभी मनुष्य अल्प तथा महत् पीड़ा को ४१ प्राप्तहुये दीखते हैं इसलिये इनका उपाय कर्म्म आपकहें ४२ महादेवजी बोले कि हेदेवि मनुष्योंके कर्म्मोंका फल मैं तेरेलिये कहूँगा ४३ प्राणोंके पातनके लिये हाथमें सदा दण्ड धारणकरनेवाला नित्य शस्त्र का उद्योग करनेवाला तथा भूतगणोंको मारनेवाला दयारहित सब भूतोंमें नित्य उद्वेग करनेवाला और शरणआये कीट पतङ्गोंमेंभी दया न रखनेवाला मनुष्य ४४।४५ नरकमें जायाकरताहै और इन कर्मोंसे रहित धर्म्मात्मा पुरुष अपने रूपको प्राप्त होताहै ४६ जो मनुष्य हिंसा कियाकरता है वह नरक में जाता है तथा हिंसा न करनेवाला स्वर्ग्ग में जाता है ४७ पापकर्मसे कठोरनरककी पीड़ाको मनुष्यदुःखसे प्राप्त होताहै और कोई किसीकालमें नरकोंको तिरजाय तो ४८ मनुष्ययोनिको प्राप्तहोकेभी हीनआयुको प्राप्त होताहै जो शुद्धजातिमें पैदाहोके प्राणियों की हिंसासे रहितहो ४९ शस्त्र न चलावे पाखण्ड न करे और किसी कालमें भी हिंसा न करे और न घातकरे न हननकरे न मारतेको देखके आनन्दहो ५० बल्कि सब भूतोंमें सुन्दरस्नेहकरे और अपने तथा परायेकी आत्मा में समता देखे और सब भूतोंमें सदृशरहै वह मनुष्य देवपनेको प्राप्तहोजाता है ५१ प्राप्तहुये सुख तथा भोगादिकों

को आनन्दहोके भोगनेवाला मनुष्य किसीकालमें मनुष्यलोकमें उत्पन्नहोके ५२ बड़ीआयुको प्राप्तहो सुन्दरव्रत तथा सुन्दर कर्म्मोंके करनेसे देहकोत्याग ब्रह्मा के लोकमें जाके आनन्दयुक्त रहताहै ५३ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांउमामहेश्वरसंवादेदशाधिक शततमोऽध्यायः ११० ॥

एकसौ ग्यारहका अध्याय ॥

उमाने पूछा कि शील क्याहै सम्यक् आचार क्या है और पुरुष किस कर्म अथवा किस दानसे स्वर्गको प्राप्त होता है १ महेश्वर बोले कि दानदाता ब्राह्मण का सत्कार करनेवाला दुःखी तथा कृपणों पर दीनता करनेवाला भक्ष्य भोज्य अन्नको खानेवाला तथा वस्त्र का दान देनेवाला बुद्धिमान् पुरुष तथा सभाके वास्ते स्थान बनानेवाला पौशाला बिठानेवाला तथा नदियों में स्नान करनेवाला और नित्य नैमित्तिक कर्म्म की इच्छावाली सब वस्तु आसन शयन पान गृह रत्न धन घास उत्पन्न होनेवाले सब खेत तथा स्त्री सुन्दर मन हो ब्राह्मणकेलिये दानकरके देदेता है वह मनुष्य देवलोकमें जाताहै २।५ और वहां बहुत काल वासकरके उत्तमभोगोंको भोग अप्सराओं सहित आनन्द हुआ नन्दनादिक वनों अर्थात् इन्द्रकेबगीचोंमें रमणकरता है ६ फिर तिसस्वर्गसे आके मनुष्यलोकमें जन्मता है और हेदेवि वहमहाभाग ७वहांभी इच्छापूर्वक गुणोंको प्राप्तहोके महाकायावाला महाभोगों से युक्त तथा धनवान् होताहै ८ हे देवि ये सब महाभागवाले प्राणी देव

शीलको धारणकरनेवाले हैं पहिले ब्रह्माजीनेभी प्रिय दर्शनवाले यही कहेहैं ९ जो मनुष्य दानदेनेमें कृपणता करतेहैं घरमें विद्यमान अन्नको जो कुबुद्धिपुरुष दान नहीं करते १० और जिह्वाकेलोभमें युक्तहोके दीन कृपण तथा निर्धन भिक्षुकों और मांगनेवालोंको निवर्त्तन करदेतेहैं ११ तथा जो धनादिक वस्त्रादिक वा भोगादिक अथवा सुवर्ण और गौकादान नहींकरते १२ और जो अन्नको बेचाकरतेहैं वे दुष्ट नास्तिक तथा दानसे हीन पुरुष १३ नरककोजातेहैं और जब पापकाकाल पूरा होलेताहै तब वे मनुष्यताको १४ प्राप्तहोके धनसेरहित थोड़ी बुद्धिवाले और लोकोंसे निन्दितहुये भूखसे पीड़ित रहतेहैं १५ और सब भोगोंसे रहित रहतेहैं आसनकेयोग्य पुरुषको जो आसन नहींदेते १६ और जो गुरुसे बैरकरतेहैं वे पुरुष नीचकुलमें जन्मलेतेहैं और जो नगर्वकरतेहैं न मानकरतेहैं और देवता और अतिथी को पूजतेहैं १७ ऐसे नर हे देवि स्वर्ग को प्राप्त होतेहैं और वहां का सुख भोगके फिर मनुष्यता को प्राप्तहोके लोभ तथा ममतासे रहित रहतेहैं और श्रेष्ठ पुरुषोंमें मानको प्राप्तहोते हैं १८ जो पुरुष मान्य और वृद्धपुरुषोंका तिरस्कार करतेहैं वे नरकमें प्राप्तहोते हैं और बहुतादिन पीछे नरकसे निकसके कुत्सित कुलमें जन्मतेहैं १९ वे अल्पबुद्धि अपनेपापोंसे चाण्डाल कुत्सित तथा दुष्टचित्तवालों के मार्गमें अपनी अवस्था को व्यतीत करतेहैं २० यदि वे अल्पबुद्धिवाले पुरुष अन्नदान अभ्यागतोंकोदेके प्रेमसे शुभका आचरण

करें तथा गुरूको अन्न दें २१ तो अच्छे पुरुषोंको भो-
जन करानेसे मनुष्यता को प्राप्तहोते हैं यह सब धर्म्म
ब्रह्माजी ने आप कहा है २२ जो महादेव का तो सम
आचार करतेहैं पर सब जीवोंको भयदेतेहैं और हाथों
तथा पैरोंसेरस्से दण्ड२३लोहे तथा थंभे अथवा अन्य
उपायोंसे शोभन पुरुषको बांधदेतेहैं हिंसाका कर्म्मक-
रतेहैं और जीवों को कँपाते हैं २४ तथा उद्वेग देते हैं वे
मनुष्य नरकको प्राप्तहोते हैं २५ और जो वे कालपाके
कदापि नरकसे निकसकर मनुष्यता को प्राप्त होते हैं
तो बुगलेके बन्धनकी तरह क्लेशको प्राप्तहोके नीचकुल
में पैदा होते हैं २६ हाथोंके बांधने पैरोंके दाबने और
दण्ड लोष्ठ तथा शस्त्रोंसे मारनेसे २७ जो भूतोंको उ-
द्वेजन अर्थात् भयको नहीं प्राप्तकरते और सदा शुभ
कर्म्मकरते हैं वे शील सदाचारसंयुक्त २८ मनुष्य स्वर्ग
का वास करते हैं और दिव्य भवनोंमें जाके देवतोंकी
तरह आनन्द भोगते हैं २९ जो ईर्षा नहीं रखता और
थोड़ा परिश्रम करताहै तथा आनन्दयुक्त रहताहै वह
मनुष्य सुखको प्राप्त होता है ३० सुखके भोगनेवाला
किसीकीआशा न करनेवाला और उद्वेगोंसे सदारहित
रहनेवाला जहां कोई बाधा नहीं है ऐसा सत्पुरुषोंका
मार्ग है ३१ उमा बोलीं कि हे देव ये मनुष्य तो कोई
महा उत्साह तथा सुन्दररूपवाले दीखते हैं और कोई
खोटी बुद्धिवाले तथा ज्ञान विज्ञानसे रहित होतेहैं ३२
तो किस कर्म्मके फलसे कोई बुद्धिवाले होजाते हैं और
कोई थोड़ी बुद्धि तथा खोटेरूपवाले होतेहैं ३३ हे सर्ब्ब-

धर्मभृताम्बर यह मेरा संदेह दूरकरो और यहभी कहो कि किसकारणसे जीव जन्मसेही अंधे तथा अन्यरोगों से युक्त होते हैं ३४।३५ महेश्वर बोले कि वेदको पढ़ने वाले ब्राह्मणों सिद्धों और धर्म में रमण करनेवालों से कुशल तथा अकुशल कर्मोंको दिन प्रतिदिन पूछे ३६ और अशुभकर्मोंको त्यागकर शुभकर्मका साधन करै तो नित्य लोकका सुख तथा स्वर्गगति प्राप्त होतीहै ३७ और मनुष्यताको प्राप्तहोके बुद्धिमान् कुलमें जन्म ले वेदोंके श्रवण और यज्ञोंके करने से कल्याणको प्राप्त होता है ३८ जो पराई स्त्रीका संग करते हैं उनके नेत्र दुष्ट होजाते हैं और वे उस दुष्ट स्वभाव से अन्धे जन्मते हैं ३९ दुष्ट मनसे जो नग्न स्त्रीको देखते हैं वे इस लोकमें रोगसे पीड़ित रहते हैं और परलोकमेंभी रोग युक्त जन्मते हैं ४० जो मूढ़जन ब्रह्मा के शुभमार्ग को प्राप्त होके ग्राम्यकर्म की प्रवृत्तिसे मैथुन करने में रत रहते हैं वे खोटी योनि को प्राप्त होते हैं ४१ और जो मनुष्यों में खोटी बुद्धि रखते हैं वे नपुंसकता को प्राप्त होते हैं जो पशुको नहीं बांधते तथा गुरुकी शय्यापर चढ़ते हैं ४२ और मैथुन करनेमें युक्त हैं वेभी नपुंसकताको प्राप्त होते हैं ४३ उमाने पूँछा हे देव हे सत्तम किस कर्मसे मनुष्य निन्दित होजाताहै तथा किस कर्म से नहीं निन्दित होता और शुभकर्म करने से मनुष्य कहां प्राप्त होताहै ४४ महेश्वर बोले कि जो सदा श्रेय की इच्छाकरे और ब्राह्मणोंसे पूछे धर्मकी निन्दा नकरै और गुणोंकी बाञ्छारक्खे वह पुरुष स्वर्गको प्राप्तहोता

है ४५ और जो कदाचित् मनुष्यताको प्राप्तहो तो बुद्धिमान् धारणासे युक्त ब्राह्मणकुलमें जन्मताहै४६ हे देवि यह सदा धर्म कहा है सिद्धिकी इच्छा करनेवाले को इस मार्गमें गमन करना चाहिये ४७ यह धर्म मनुष्योंके कल्याणके वास्ते मैंने तेरे अगाड़ी कथन किया है ४८ उमाने पूछा कि थोड़े ज्ञानवाले धर्म्मसे वैरकरने वाले वेदके पढ़हुये ब्राह्मणोंको जो भिड़कनेकी इच्छा करनेवाले४९ खोटी वृत्ती तथा भ्रष्ट नियमवाले ब्रह्मराक्षस और यज्ञ दान करनेका नियम न करनेवाले तथा मोहसे युक्त ५० किस गतीको प्राप्त होते हैं ५१ महेश्वर बोले कि जो व्रतमें युक्त नहीं हैं तथा मर्यादा को तोड़नेवाले हैं वे ब्रह्मराक्षस होते हैं और लोकके धर्म को जो नहीं करते वे पूर्णहुई सिद्धिको जो नष्ट करदेते हैं ५२ वे पुरुष दृढ़से युक्तहोके प्रमादमें युक्त दीखते हैं और जो मोहके वशमें आके अधर्मको धर्म मानतेहैं ५३ वे अधम कालके उद्योगसे यदि मनुष्यताको प्राप्त होजावें तो होम तथा सत्कारसे रहित रहते हैं ५४ हेदेवि मैंने तेरे अब सब सन्देह दूर किये और कुशल तथा अकुशल कर्मों में युक्त नरोंका सागररूप धर्म तेरे अगाड़ी कहा ५५ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांउमामहेश्वरसंवादे एकादशोत्तरशततमोऽध्यायः १११ ॥

एकसौबारह का अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि हेद्विजो इसप्रकार वह जगत्की माता उमा सबप्रकारके धर्मोंको पतिके सकाशसे सुनके

प्रसन्नहुई १ हे द्विजो एक समय अनेक मुनिवर तीर्थ-यात्राके प्रसंगसे महादेवके समीप उस पर्वतपर जाके लोकके हितकी कामनासे बोले कि हेत्रिलोचन हेदक्ष-क्रतुविनाशक आपको नमस्कारहै हम अपने हृदयका एक सन्देह आपसे पूछते हैं कि महाघोर भयके देने-वाले रोमोंके उत्थानरूपी संसारमें थोड़ी बुद्धिवाले मनु-ष्य बहुतकाल भ्रमते हैं २।५ इसलिये जिसउपायसे वे संसारके जन्म तथा मरणरूपी बन्धनोंसे छूटें सो आप कहो हम सुनने की इच्छा करते हैं ६ महेश्वर बोले हे द्विजो कर्मरूपी फांसीसे बँधेहुओं तथा दुःखभागियोंका उद्धारक वासुदेवके सिवाय मैं किसीको नहीं देखता ७ शंख चक्र और गदा धारण करनेवाले देवको जो मन और बाणीसे पूजते हैं वे परमगतिको प्राप्त होते हैं ८ और जिनके चित्तमें जगन्मय विष्णु नहीं हैं उन मनुष्यों के पशुवत् चेष्टा सहित जीवनेसे क्याहै ९ ऋषिजनोंने पूछा कि हे पिनाकिन् हे भगनेत्रघ्न हे सर्व्वलोकनम-स्कृत सूर्य्यकी तरह उदित होनेवाले उस परमेश्वरको हम नहीं जानते १० शिवजीने कहा कि यह दशभुजों और महातेजवाला सब देवतों के शत्रुओं का नाशक श्रीचिह्नवाला और इन्द्रियों का ईश सब देवतों से पू-जनीय है और उसके उदरसे ब्रह्मा और शिव शिरके रोमोंसे सुर असुर ऋषि देवता और सबलोक हुये हैं इस सम्पूर्ण पृथ्वी तथा तीनों भुवनों का वही ईश्वर है ११।१२ और चराचर सबभूतोंका संहार करनेवाला भी वही है वह देवतोंमें तत्पर रहताहै और उनकोभी

परन्तपहै वहसर्वज्ञहै सबको रचनेवालाहै सबकाअङ्गहै और सबकामुखरूपहै १३ उससे परे त्रिलोकीमें कोईभी नहीं है वह सनातन है महाभाग है गोविन्दनामवाला है १४ और सब राजाओंको युद्धमें मारने तथा मान को देनेवाला है देवतोंके कार्य्यके लिये वह मनुष्य शरीरमें उत्पन्न होता है १५ और सब देवगण उस त्रिबिक्रम के बिना कोई कार्य्य करनेको समर्थनहीं हैं १६ गणों से रहित भगवान्के बिना देवताओं के गणकोई कार्य्य करनेको भुवनमें समर्थ नहीं हैं वह सब भूतोंका पतिहै और सबभूत उसको नमस्कार करते हैं १७ वह देवतोंकानाथ तथा जो देवकार्य्यपरहै तिनका और ब्रह्मभूतों तथा निरन्तर ब्रह्मर्षियोंका शरणहै १८ वह निरन्तर ब्रह्मादिकोंका तथा मेराशरीरहै और उसके शरीरमें सब देवता स्थितहैं १९ वह पुण्डरीकाक्ष श्रीगर्भ तथा श्रीसहित रहनेवाला शार्ङ्गधनुष तथा खड्गसेयुक्त सबनागोंकेशत्रुओं में ध्वजारूप उत्तमहै और शीलता शुद्धि दम पराक्रम वीर्य्य शरीर दर्शन रूपोंवाला चलनेकेप्रमाणसे धीर्य्यतावाला श्रेष्ठता और सम्पदाको धारणकरनेवाला और निःसन्देह रूपबलिष्ठ तथा आनन्द युक्त सब शस्त्रों और दिव्य तथा अद्भुत दर्शनों को धारणकरनेवाला योगमायासे सहस्राक्ष महामनसे बिरूपाक्ष तथा बाणी से मित्रजनों की रक्षा करनेवाला कांतिसे बन्धुजनोंसे प्यार और दया करनेवाला सत्य बोलनेके लिये देवरूप ब्राह्मणका बालक २०।२५ भय से पीड़ितोंके भयको हरनेवाला और मित्रोंको आनन्द

बढ़ानेवाला तथा सब भूतोंका शरण्यहै और दीन पु-
रुषोंकी पालनामें रत है २६ वह वेदके अर्थमें सम्पन्न
तथा सब भूतोंसे नमस्कार करने योग्यहै और अपने
आसरे आयेहुये को आनन्द देनेवाला तथा शत्रु को
मारनेवाला नीतिको जाननेवाला सब गुणोंमें सम्पन्न
तथा ब्रह्मका बाद करनेवाला और जितेन्द्रियहै और
जन्मके अर्थ ऋषि और देवतोंको नमस्कार करनेवाला
गोविंद मनुके वंशमें जन्म लेके अंशनामवाला मनुका
पुत्र होताहै कालसे अन्तर्द्धान होताहै अन्तर्द्धानसे ह-
विर्द्धान होताहै और निन्दासेरहित प्रजाकापति हवि-
र्द्धानके प्राचीनवर्हिहोताहै २७।३० प्राचीनवर्हिके प्रचेता
नामवाले दशपुत्र हुये और प्रचेताके पुत्र प्रजाकापति
दक्षभया ३१ दाक्षायणीके सूर्यहुआ सूर्यके मनुहुआ ३२
मनुके बैवस्वत हुआ बैवस्वतके सुद्युम्नहुआ सुद्युम्न के
नहुषहुआ नहुषके ययातिहुआ ३३ ययातिके यदु हुआ
यदुके महा शरीरवाला क्रोष्टा पुत्र हुआ और क्रोष्टाके
महान्वृजिनी नामवाला पुत्रहुआ ३४ वृजिनीके उषंगु
हुआ उषंगुके शूरवीर चित्रनर हुआ ३५ और तिससे
छोटेपुत्र शूरवीरनहींहुये उन विख्यातवीर्य तथा चरित्र
गुणोंमें शीलतावाले और शुद्ध यदुओंके वंशमें शूर-
वीर ३६ क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ महावीर्य्यवाला महायशवाला
और अपने वंशको बढ़ानेवाला वसुदेव उत्पन्नहुआ ३७
वसुदेव नाम से विख्यात आनकदुन्दुभिका पुत्र चार
भुजाओंवाला वासुदेव पुत्रहुआ ३८ और वह ब्राह्मणों
का सत्कार करनेवाला ब्रह्मभू द्विजोंमें प्यार करनेवाला

राजाओंको प्रीतिमें युक्त करनेवाला पर्वतके समीप ज-
रासन्ध राजाको जीतनेवाला सब राजाओंको वीर्य्यसे
जीत रत्नोंसे युक्त रहनेवाला पृथ्वीपर शंकारहित वि-
चरनेवाला और पराक्रमसे सब राजाओंमें श्रेष्ठ राजा
होनेवाला शूरवीरतासे राजाओंको हननकर द्वारकामें
जा बस और हे देवि मुझको जीतके फिर मेरी पालना
करनेलगा ३९।४२ जो उस स्थानको प्राप्तहोके यथा
न्याय ब्रह्मा की तरह भगवान् का पूजन करते हैं ४३
तथा शिवजी और पितामह ब्रह्माको देखने की इच्छा
करते हैं तिन पुरुषों ने प्रतापवाले वासुदेव भगवान्
को देखलिया है ४४ और तिसके देखने में मुझे भी
देखलिया है और ब्रह्मा को भी देखलिया इसमें कछु
शंका नहीं है ४५ जो अपनाद्रव्य तप तथा धन पुण्ड-
रीकाक्ष के प्रति अर्प्पण करदेते हैं और जो मनुष्यके-
शव के आश्रय होजाते हैं ४६ तिनकी कीर्त्ति और
यश स्वर्गमें होजाताहै और वे पुरुष धर्म्मोंके दिखाने
वाले तथा धर्मके कथनकरनेवाले होजातेहैं ४७ धर्मके
जाननेवाले पुरुषोंको वहदेव नमस्कारकरनेको योग्यहै
और जब हरिका पूजनहो वही दिन धर्म युक्तहै ४८
वह महातेजवाला देव प्रजाकेहितकी कामनासे धर्मके
लिये सिंहरूपी पुरुषों तथा ऋषियोंकी कोटी रचताहै
४९ और भगवान् के रचेहुये सनत्कुमार आदि सब
गन्धमादन पर्वतपर तपसेयुक्त स्थित रहतेहैं ५० हे
द्विजपुंगवो इसकारण वह परमेश्वर सबकाअंगहै और
धर्मज्ञ पुरुषोंको उस परमेश्वर का नाम ५१ उच्चारण

करना तथा कराना और मानना तथा मनानाचाहिये एवम् दिनप्रतिदिन सावधानहोके उसके आश्रयहोना चाहिये ५२ हे द्विजसत्तमो उस देव का पूजन करना तथा करानाचाहिये क्योंकि ऐसाकरनेवाले पापरहित पुरुष का विष्णुही परमतपहै ५३ सज्जन पुरुषों को आदिदेव का आचरण सदा करना चाहिये और जो घरमें देवतों सहित विष्णुका नित्य पूजनकरताहै ५४ वह इसरूपको त्यागके विष्णुकेरूपको प्राप्तहोजाताहै जो कर्म मन और बाणीसे विष्णुरूप ब्राह्मणको सदा आसन देताहै ५५ और यत्नकरके देवकीसुत भगवान् को देखताहै वह विष्णुरूप होजाताहै ५६ हे मुनिसत्तमो यह मार्ग मैंने तुम्हारेप्रति कहाहै उस महाबराह रूपवाले विष्णुदेवका जो दर्शनकरते हैं तिन्होंने सब देवतोंका दर्शनकियाहै ५७ और सम्पूर्ण लोकके पितामहरूप उस देवको और मुझको देखके जो नमस्कार करताहै ५८ तिसने त्रिलोकी के दर्शन किये हैं इसमें सन्देह नहीं और हम सब देवता उसीहरिकी आज्ञामें हैं ५९ उसीहरिका अग्रजभ्राता श्रेष्ठ पर्वतोंपर गमन करनेवाला और हली तथा बल नामोंवाला पृथ्वीको धारण करनेवाला है ६० और उसके तीन एवम् अनन्तशिरहैं कश्यपजीके आत्मज बलवान् गरुड़जी ६१ उस अनन्तको वैरभावसे देखनेके वास्ते आनन्दयुक्त होके हरि के पास स्थित हैं और वह अनन्त पृथ्वी को धारणकर अंग संकोच करे जलके अंतररहता है ६२ वे राम और हृषीकेश अच्युत तथा पृथ्वी को धारण

करनेवाले ६३ दोनों पुरुष सिंह दिव्यरूप तथा पराक्रमयुक्त चक्रलांगलको धारणाकरनेवाले देखने योग्य तथा माननीय हैं ६४ यह मैंने तुमसे उनपरमेश्वरोंकी अनुग्रहसे कहा है इसकारणसे यदुश्रेष्ठ भगवान् का यत्नसे पूजनकरना योग्यहै ६५ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांमहेश्वरशासनंनाम
द्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ११२ ॥

एकसौतेरहका अध्याय ॥

मुनिजनोंने पूछा कि हे महामुने बासुदेवकी विधिपूर्वक भक्तिसे पूजनेमें रतरहनेबाला मनुष्य कौनगतिको किसमोक्षको तथा किसस्वर्ग को प्राप्तहोताहै अथवा दोनोंफल कैसे हैं १।२ हे सर्वज्ञ हमारे हृदयमेंस्थित इस सन्देह को दूरकरनेकेलिये आप योग्यहैं और हे मुनिसत्तम आपके सन्देह को दूरकरनेवाला कोई नहीं है ३ व्यासजीबोले कि हेमुनिश्रेष्ठाहो तुमने जो पूछा सो श्रेष्ठ है और जन्ममरण का उपाय तथा विष्णुभक्तोंको सुख का देनेवाला है ४ हे द्विजो कृष्णकी दीक्षामात्र से नर मोक्षको प्राप्तहोजाते हैं ५ हे मुनिसत्तमो विष्णुभक्तों को मोक्षलोभ नहीं है और वे जिस जिस दुर्लभकामों की इच्छा करतेहैं तिसही को प्राप्तहोजाते हैं६हे मुनिशार्दूलो जैसे मनुष्य पर्वतपर चढ़के रत्नोंको प्राप्तहो जाताहै तैसेही स्वेच्छासे कृष्णकी पूजाकरनेसे मनुष्य सब मनोरथों को प्राप्तहोजाताहै ७ बिधिवत् श्रद्धासे जो जगद्गुरु बासुदेव को पूजता है वह धर्म अर्थ काम और मोक्षकेफलको प्राप्तहोताहै ८ और जो शुद्धात्मा

होके जगन्नाथ भगवान् का आराधन करता है वह दे-
वतों को भी दुर्ल्लभ कामना को प्राप्त होता है ९ जो
वासुदेव नामवाले अव्यय देवका सदा भक्ति से पूजन
करताहै तिसको संसारमें कोई मनोरथ दुर्ल्लभ नहींहै
१० और उस पुरुषको धन्यहै जो सदा सब पापों के
हरनेवाले और सब कामनाओंके देनेवाले हरिका पू-
जन करता है ११ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्रीजन
और म्लेच्छादिक सब देवतोंमें श्रेष्ठदेवको पूजके परम
गतिको प्राप्तहोतेहैं १२ हे अनघो जो तुम पूँछतेहो तो
सुनो उन महात्माओं की गतिको मैं संक्षेपसे तुम्हारे
अगाड़ी कहताहूँ १३ रोगोंका स्थान अध्रुव जरामरण
संयुक्त तथा जलके बुद्बुदेकीतरह अस्थिर और मांस
रुधिरसे दुर्गन्धित एवम् बिष्ठा मूत्रादिकोंसे भरे और
हाड़ मेद आंत खाल शिरादिकों से युक्त पुरुष शरीर
दिव्य गन्धर्बोंके शब्दोंसेयुक्त मनोरथ सिद्ध करनेवाले
बिमानोंमें बैठके तरुण अवस्थाके सूर्य्यबर्णकी किरणों
से मण्डित हुये अलंकृत गन्धर्बों तथा अप्सराओं के
गानसे युक्त लोकपालों के भवन में पृथक् पृथक् जाते
हैं १४।१७ और मन्वन्तरके अन्ततक यथाकाल भोगों
को भोगतेहैं और सब भोगोंसे युक्तहुये पृथक् पृथक्
भवनोंमेंबासकरते हैं १८ आकाशमें होनेवाला वहलोक
उन्हें सबसुखोंकादेनेवालाहै जहां वह दशमन्वंतरतक
श्रेष्ठभोगोंको भोगताहै १९ हे द्विजो फिर वे नरगंधर्बों
के लोकमेंजातेहैं और एकमन्वंतर पर्य्यन्त मनकोरमण
करानेवाले भोगोंको भोगतेहैं २० फिर वहांसे सूर्य्यके

लोकमें जातेहैं और वहां उत्तमपूजनको प्राप्तहोकेतीस मन्वन्तर पर्य्यन्त देवतोंके भोगोंको भोगते हैं २१ हे विप्रो फिर वे चन्द्रमाके लोकमें जाते हैं और वहां चालीस मन्वन्तर पर्य्यन्त सुखके भोगोंको भोगते हैं २२ और वहां जरा मरण से रहित सब भोगों को भोगके फिर सब गुणोंसे अलंकृत नक्षत्रोंके लोकमें २३ जाते हैं जहांपञ्चाश मन्वन्तरपर्य्यन्त वाञ्छित भोगोंको भोगते हैं २४ फिर हे विप्रो वहांसे वे दुर्ल्लभ देवलोकमें जाते हैं जहां साठमन्वन्तर पर्य्यंत दुर्लभ भोगोंको भोगके २५ इन्द्रके लोकमें जाते हैं और सातमन्वन्तर पर्य्यन्त रहके उच्चावच तथा दिव्य और मनकी प्रीतिको बढ़ाने वाले नाना भोगोंको भोगते हैं फिर तहां से प्राजापत्य लोकमें जाते हैं तहां सब कामगुणोंसेयुक्त वांछित भोगों को भोगते हैं २६।२८ और अस्सी मन्वन्तर पर्य्यन्त रहते हैं फिर वहांसे हे द्विजो पितरोंके लोकमें जाते हैं जहां नवमन्वन्तरतक क्रीडासहित सुखको भोगते हैं २९ और फिर वहांसे ब्राह्मणोंके श्रेष्ठकुलमें जन्मते हैं और वेदशास्त्रपारङ्गत योगी होते हैं ३० ऐसे सब लोकों में वाञ्छित भोगोंको भोगके क्रमसे यहां आते हैं ३१ और हे द्विजोत्तमो जन्म जन्ममें सौवर्ष की आयुवाले होते हैं और वाञ्छित भोगोंको भोगके अन्य लोकोंको प्राप्त होते हैं ३२ ऐसे दशजन्म पर्य्यन्त क्रमणकरनेसे ब्रह्मलोकमें जाके फिर हरिके लोकमें जाते हैं ३३ और वहां सौ मन्वन्तर पर्य्यन्त जन्म मृत्युसे रहित सब गुणों से युक्त शेषरहे भोगोंको भोगते हैं ३४ फिर हे द्विजो तो

वे भगवान् बाराहजीके लोकमें जाते हैं और वहां दिव्य देह तथा महाकाया और महाबलको धारणकरते हैं ३५ हे विप्रेन्द्रो वहां वे चार भुजावाले रूपको धारण करके एकखर्ब वर्षतक क्रीड़ा करके ३६ निरन्तर भावमें स्थित सब देवतों से नमस्कृत कियेहुये वे धीरपुरुष नरसिंह के लोकमें जाते हैं ३७ वहां दशकिरोड़ वर्ष आनन्दसे रहते हैं और फिर वहांसे विष्णुलोक में जाते हैं तहां साधन करनेमें समर्थ ३८ अर्बुदकोटी देवतोंके भोगों को भोग के फिर ब्रह्ममें जाते हैं और वहांभी साधन करनेमें युक्त रहते हैं ३९ वहांभी सैकड़ोंहजारवर्ष रहके नारायणके लोकमें जाते हैं और वहांभी साधनासे युक्त रहते हैं ४० वहां कोटी अर्बुदवर्ष भोगोंको भोगके अनिरुद्धके लोकमें जातेहैं और दिव्यरूप तथा महाबल से युक्त रहते हैं ४१ वहां चौदह हजार कोटी वर्ष सुर असुरोंसे स्तूयमान साधकोंमें श्रेष्ठ रहते हैं ४२ और विष्णुकी भक्तिमें स्थित होके जरामरण से रहित वहां स्थित रहते हैं ४३ फिर वहांसे विगतज्वर रूपहुये वे सब पुरुष प्रद्युम्नके लोकमें बास करते हैं ४४ तहां हे विप्रो वे तीनसैलक्षकोटी वर्ष रहके इच्छापूर्वक गमन करनेवाले आनन्द तथा बलशक्तिसे युक्तहोके ४५ जहां संकर्षणदेव रहताहै वहां जाते हैं और बासकरके हजारहा भोगों को भोगके ४६ विरूपाख्य तथा निरंजन वासुदेवमें प्रवेश होजाते हैं तहांसे विमुक्त होके जरामरणसे रहित स्थानमें बासकरते हैं ४७ हे मुनिशार्दूलो इसप्रकार क्रमसे वे मनुष्य भक्तिको प्राप्त होते हैं और

वासुदेवके पूजनकरनेसे भक्तिप्राप्त होती है ४८।४९ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांवैष्णवानांगतिख्यापनोनाम त्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः ११३ ॥

एकसौचौदह का अध्याय ॥

व्यासजीने कहा कि दोनों पक्षोंकी एकादशीको निराहार रहै और अच्छे बिधानसे स्नानकर धोतीपहिन और जितेन्द्रिय रहके १ श्रद्धायुक्त बिधिवत् धूप दीप नैवेद्य पुष्प चन्दन २ तथा उपहार अर्थात् सारीसामग्री बहुविध जपादि होम तथा दक्षिणा और नानाप्रकार के स्तोत्रों गीतों और मनोरमबाजों ३ तथा उत्तम जय शब्दोंसे विष्णु का पूजनकरै ४ ऐसे बिधिवत् पूजनकरके रात्रीमें जागरणकरै ५ तथा कथा अथवा विष्णु का गानकरै और विष्णुमें परायणरहै तो मनुष्य विष्णुके परमस्थानको प्राप्तहोताहै इसमें सन्देह नहीं ६ मुनिजनोंने पूछा कि हे महामुने रात्रीमें जागने तथा विष्णु के गानेके फलको कहो यह कौतूहल अर्थात् आश्चर्य्य हमें सुननेकी इच्छाहै ७ व्यासजी बोले कि हे मुनिशार्दूलो विष्णुकेगान तथा रात्रीके जागरण का फल मैं कहताहूँ तुम सुनो ८ अवन्तीनाम नगरीमें एकचांडाल श्रेष्ठ वृत्तिसेधनका उत्पादनकरने और विष्णुकेअगाड़ी नृत्यकरनेमेंरतहुआ९।१० वह हरमहीनेकी एकादशीको ब्रतकरता और रात्रीको ११ गांधार नैषाद पंचम धैवत आदि स्वरोंके गानसे विष्णुको प्रसन्नकरनेकेलिये१२ जागरणकरता विष्णुकीगाथागाता और यथा लाभविष्णुको नमस्कारकर द्वादशीको अपनेघर आताथा१३

हे विप्रो घरआके वह जमाई बहनोई तथा कन्याओं और सारे परिवारको भोजन करवाके आप भोजनकरताथा १४ निदान ऐसे विष्णुको प्रसन्न करतेहुये उसकी बहुत आयु व्यतीतभई १५ तब एकसमय चैत्र के महीने में कृष्णपक्षकी एकादशी को विष्णु की पूजा करनेकेलिये एक उत्तमबनमेंगया १६ और भक्तिमें तत्परहोके बनके पुष्पोंको ग्रहणकर क्षिप्रानदीके किनारे महाअरण्य बनमें एक भयानक वृक्षकेनीचे उसने एक राक्षसकोदेखा १७ और राक्षसने भक्षणकरनेके वास्ते उसेपकड़लिया तब वह चांडाल उसराक्षससे बोला १८ कि हे कल्याण मैं तेरा भक्ष्यहूँ पर कल प्रातःकाल तू मुझको भक्षणकरिये मैं सत्य२ कहताहूँ कल प्रातःकाल इसीस्थान में आजाऊंगा १९ हे राक्षस आज मुझको एकबड़ाआवश्यक कार्य्यहै तिससे तू मुझकोछोड़दे २० हे राक्षस विष्णुकी पूजा तथा रात्रिमें जागरणके वास्ते मेरा ब्रतहै इसमें तू विघ्न मतकर २१ चाण्डालकी बातें सुन राक्षस बोला कि दशरात्रिसे मैंने भोजन नहीं किया है पर हे मातंगज आज तू मुझको मिलाहै २२ और मैं भूखसे बारम्बार पीड़ित होरहाहूं इसवास्ते तुझको न छोड़ूंगा बल्कि भक्षण करूंगा २३ निशाचरके यहवचन सुन मातंग मीठी बाणीसे राक्षसको शान्त करताहुआ निश्चय करानेवाले वचनबोला २४ कि हेब्रह्मराक्षस इस संपूर्ण जगत्का मूल सत्यहै इसालिये मैं फिर आने के वास्ते सत्यकी सौगन्द खाताहूं २५ चन्द्रमा सूर्य्य वह्नि वायु पृथ्वी आकाश जल मन तथा रात्रिदिवस प्रहर

और दोनों सन्धि ये सबनरोंके क्रीड़ारूपहैं२६यदि मैं लौटकर न आऊं तो पराईस्त्रीके गमन परद्रव्यके हरन और ब्राह्मणको मारने एवम् मदिरापान गुरुकीशय्या पर गमन२७सन्ध्यामें गमन और वेश्यागमन देवलक अर्थात् देवतोंकी पूजाकरके आजीवकाकरने मच्छी २८ तथा बराह और कछुयेआदिके मांसखानेमेंजो पापहै२९ और कृतघ्नता तथा मित्रघात वा दोबार बिवाही स्त्री के पतिहोनेमें सूतक तथा क्रूरकर्म३०कृपणता और बन्ध्या तिथी एवम् अमावास्या अष्टमी षष्ठी तथा कृष्णशुक्ल पक्षकीत्रयोदशी३१और निषिद्धाचरण तथा घातकरने और ब्राह्मणसे प्रतिज्ञाकरके न देने ३२ अथवा कन्या गौ अश्व स्त्री तथा बालकके मारने झूठबोलने३३और देवदेव ब्राह्मण तथा राजा पुत्र मित्र और श्रेष्ठा स्त्रीकी निन्दाकरनेमें जो पापहै सो मुझेहो ३४ हे राक्षस अग्नि शान्तकरने तथा अग्निकेलगानेमें जो पापहै और घर में ईंटफेंकने अधम वृत्तिमें चलने ३५ और परिवेता होनेमें अर्थात् छोटे भाई के बिवाहहोने और बड़ेके न होने में छोटा परिवेता तथा बड़ा परिवेता होने में जो पाप है ३६ एवम् उनदोनोंके काष्ठग्रहणकरने और बालकके मारनेमें जो पाप है सो मुझेहो निदान बहुतसी सौगंदें खानेसे क्याहै ३७ हे राक्षस दुर्वाच्यभयका देनेवाला सौगन्दमें तेरेअगाड़ीखाताहूं कि अपनी कन्या के द्वाराजीविका करने झूठबोलने और खोटे पुरुषकी साक्षिदेनेसे जो पाप है ३८ एवम् बिनामांगने योग्य वस्तु के मांगने अधमनरको सेवने और संन्यासीहोके

घरबसाने तथा ब्रह्मचारी होके भोग करने में जो पाप हैं ३९ सो मुझेहों यदि मैं तेरे समीप न आऊं बधिक के यह वचनसुनके ब्रह्मराक्षस आश्चर्य्ययुक्त होके४० बोला कि अच्छा जा पर अपने सत्यसे समयपरचला आइयो राक्षसने जब ऐसे कहा तब वह चांडालपुष्पों को लेकर ४१ विष्णुके स्थानमेंगया और तपसे शोधनकरनेवाले विष्णुका पूजनकर अपने स्थानकोआया और रात्रिमें ब्रत और भगवान् का गान तथा जागरणकरके ४२।४३ जब रात्रिव्यतीत होगई तब स्नान करके देवको नमस्कारकर नियमित समयपर प्रतिज्ञा को सत्यकरने के वास्ते राक्षसके पासचला४४ रास्तेमें एकमनुष्य पूछनेलगा कि हे भद्र तू कहां जाताहै ४५ चाण्डालने अपना सबवृत्तान्त उसे कहसुनाया तबवह बोला४६ कि हेव्याध धर्म अर्थ काम और मोक्षके साधनकरनेवाले शरीर को बहुत यत्न से पालना चाहिये४७ जीताहुआ शरीर धर्म अर्थ के सुखको प्राप्तहोके मोक्षको प्राप्तहोताहै इसलिये ४८ हेमातङ्ग तेरे मरनेसे लोकमें क्याहोगा जब उस मनुष्यने ऐसा वचन कहा तब हेतु का जाननेवाला मातंग उसके वचन सुनके बोला४९ कि हेभद्र मैंने सत्यताको अगाड़ीकरके सौगंद कीथी इससे जाताहूँ वह मनुष्य बोला कि ऐसा क्यों तू मूढ़ बुद्धि है ५० हे साधो मनु ने जो कहा है सो क्या तूने नहींसुना कि गौ स्त्री और ब्राह्मणकी रक्षाकरने ५१ बिवाहकाल प्यारोंके धर्म और प्राणों तथा सबजनोंके नाश इन पांचजगहमें झूठबोलने में पातक नहींलग-

ता५२ स्त्रियोंमें बिवाहमें शत्रु तथा चुगली करनेवाले
के अगाड़ी और अर्थकीहानी तथा अपने नाशहोनेमें
धर्म्मयुक्त वचन न कहे५३ उसमनुष्यके यह वचनसुनके
मातङ्गबोला ५४ कि हे मित्र ऐसा मतकह तेराकल्याण
हो लोकमें सत्यकाही पूजन होता है५५ और जो कुछ
जगत्‌में स्थित है सो सत्यसेही मनुष्यों को प्राप्तहोता
है सत्यसेही लोकमें सूर्य्य तपताहै सत्यसेही जलरसा-
त्मक होताहै ५६ सत्यसेही अग्नि प्रज्वलित होताहै
और सत्यसेही पवन चलताहै धर्म्म अर्थ काम और
मोक्ष दुर्लभहैं पर सत्यसे इनकीभी ५७ पुरुषोंको प्राप्ति
होती है तिस कारण सत्यको न त्यागे लोकमें सत्यता
परब्रह्महै सत्यता उत्तमयज्ञहै५८और सत्यताही स्वर्ग
रूपहै तिस कारणसे सत्यको नत्यागे ऐसे कहके तथा
उस नरोत्तमको शान्तकरके ५९ वह बधिक ब्रह्मराक्षस
के पासगया और ब्रह्मराक्षस उस चाण्डालको आया
देख आश्चर्य्य से खिलेहुये नेत्रों सहित शिरको हिला
के बोला ६० कि हे महाभाग हे सत्यवाक्यानुपालक हे
मातङ्ग तू श्रेष्ठहै २ और मैं तुझको सत्यलक्षणोंवाला
मानता हूँ ६१ इस कर्म्म से मैं तुझे पवित्ररूप तथा
अव्यय ब्राह्मण मानता हूँ और सब तुझको कल्याण
वालोंके बीचमें मुख्य मानेंगे ६२ तूने रात्रिमें विष्णुके
मन्दिरमें क्या कियाहै सो कह मातङ्ग बोला कि विष्णु
मन्दिरमें मैंने जो कराहै सोतूसुन ६३ विष्णुके अगाड़ी
नम्रआत्माहोके मैंने रात्रीमें जागरणकिया और विष्णु
गुणगाये ब्रह्मराक्षसबोला६४भक्तिसहित तूने विष्णुके

घर में कितने काल जागरण किया तब राक्षस हँसके त्रिशंकु राक्षससे अपने कर्म्मादिक कहनेलगा ६५।६६ कि प्रतिमासकी एकादशी को मैंने जागरण किया है मातंगके यह वचन सुनके ब्रह्मराक्षस कहनेलगा ६७ कि हेसाधो एकरात्रिके जागरणका फल मुझको देदे ६८ तो मैं तुझको छोड़दूं नहीं तो कभीभी न छोड़ूंगा हेमहाभाग तेरे तीनों वचन सत्य होने से मैं तुझे छोड़ता हूं ऐसे कहके जब ब्रह्मराक्षस चुपका होगया ६९ तब मातंग उससे बोले कि हे निशाचर मैंने अपना आत्मा तेरे लिये निवेदन करदिया है बहुत कहने से क्या है तू इच्छापूर्वक मुझको भक्षणकर ७० फिर वह राक्षस मातंगसे बोला कि अच्छा दो प्रहर रात्रि के जागरण व गानका फल मुझको देदे ७१ क्योंकि मेरे ऊपर कृपा करनेको तू योग्यहै मातंग बोला कि तू क्या कहताहै ७२ मैं तुझको रात्रिके जागरण का फल कदापि न देऊंगा इच्छापूर्वक मुझको भलेही खाले मातंगके यह वचन सुन निशाचर बोला ७३ कि धर्म कर्मसे रक्षित तुझको झिड़कने तथा पीड़ा देनेके वास्ते ऐसा कौन दुष्टमति तथा मन्दपुरुषहै जो देखनेको भी समर्थ हो ७४ दीन पापग्रस्त विषयोंसे मोहित नरकों से पीड़ित तथा मूढ़ पुरुषोंपर श्रेष्ठ जन दयायुक्त होते हैं ७५ इसकारण हे महाभाग मुझको एक प्रहरके शुद्ध जागरणका फल तू दे और अपने स्थानको चलाजा ७६ मातंग बोला कि मैं अपने घर न जाऊंगा मैं तुझको जागरण का फल कैसे देदूं ७७ ब्रह्मराक्षस हँसके बोला कि अच्छा रात्रि

के अन्तमें कौशिकीनदी के आश्रय जो तूने गान किया था ७८ तिसीका फल देदे और पापसे मेरी रक्षा कर मातंग बोला ७९ कि तूने पूर्व क्या खोटा कर्म कियाहै जिसके दोषसे तू ब्रह्मराक्षस हुआ ८० ब्रह्मराक्षस दुःख से दग्धहुआ और अपने कियेहुये कर्मोंका स्मरण करता हुआ बोला कि पहिले मैं सोमशर्म्मा नामसे विख्यात ब्राह्मणहुआ और अध्ययन शील यज्ञोंके कर्त्ता देवशर्म्माको यज्ञ करातेहुये ८१।८३ सूत्रमन्त्रोंसे बाहिरहो ऐश्वर्य्ययुक्त नृपके यज्ञकर्ममें स्थित होके और लोभ मोहसे युक्त होके अग्निमें हवन करानेलगा ८४ और उस महायज्ञके बारहदिनकी समाप्ति पर्य्यन्त मैं यज्ञहोमनेकाआरम्भ करतारहा ८५ निदान जब मैं यज्ञ कर्ममें प्रवर्त्त हुआ तब मेरी कुक्षिमें शूलरोग उठा ८६ और दशरात्री भी न पूर्णहुईथीं कि उस दोषसे मैं मरगया और ब्रह्मराक्षस हुआ ८७ अपने मूर्खपने तथा मन्त्रहीन होनेसे मैं सूत्रस्वरसे रहित होगया और यज्ञ विद्याको न जानके यज्ञ करने से ८८ जो कर्म्म हुआ तिससे मैं ब्रह्मराक्षस हुआ इस पापरूपी समुद्रमें पड़े हुये मुझको आप तारो ८९ क्योंकि जागरणके अन्त के गानका फल आप मुझको देने योग्यहैं ९० चांडाल बोला कि जो तू प्राणियोंके बधसे निवृत्त होजावे तो मैं तुझको जागरणके अन्तके गानका फल देदूं और ९१ राक्षसने प्रतिज्ञाकी कि मैं प्राणियों के बधसे निवृत्तहो जाऊंगा तब मातंगने ब्रह्मराक्षसको एकघड़ीके जागने और गानका फल देदिया ९२ गानका फल पाने पर

ब्रह्मराक्षस मातङ्गको नमस्कारकर और प्रसन्नमनहोके
तीर्थोंमें श्रेष्ठ पृथूदकनामक तीर्त्थ को चलागया ९३
और हे द्विजो वहां उसने अनशन व्रत धारण करके
प्राणोंको त्यागदिया और गानकेफलके प्रभावसे राक्ष-
सयोनिसे छुटगया ९४ पृथूदकके प्रभावसे उसेदुर्लभ ब्र-
ह्मलोकका बासमिला और हजारवर्ष वहांनिश्शंकबास
करतारहा ९५ हे द्विजो उसके अन्तमें वह ब्राह्मणहुआ
पर वहां भी उसे पूर्वजन्मका स्मरणरहा ९६ जब राक्षस
चलागया तब वह बुद्धिमान् बधिक अपने घरमें आ-
या ९७ और ब्राह्मणपनेके चरित्रका स्मरणकरके दया
युक्त तथा शुद्धहो पुत्रकी रक्षाकरनेके लिये स्त्रीसे निवेदन
करपृथिवीकी परिक्रमा देनेको निकला ९८ कोकानदी
सेलेके स्वामिकार्त्तिकके दर्शनपर्य्यन्त सब पृथ्वीकी प-
रिक्रमाकरताफिरा ९९ हेद्विजो फिर वह उच्चउच्च शिला-
ओंवाले पर्वतोंपरसे पापमोचन तीर्थपरजापहुँचा १००
निदान अनेक तपों के प्रभाव से वह चाण्डाल वंशसे
मुक्तहोकर पापोंका हरनेवाला ब्राह्मणहुआ १०१ जब
वह पापोंसे बिमुक्तहोगया तब अनेक पहिले जन्मों का
स्मरणकरनेलगा १०२ पहिले जन्ममें तो वह रुकीहुई
बाणी तथा मनवाला भिक्षुहुआ और फिर शुद्धशरीर
होके उसने वेदवेदाङ्गोंको पढ़ा १०३ एक समय उस
भिक्षुकको रस्तामें चोरमिले और वह भिक्षुक धूलीसे
युक्त भिक्षाको भोगकरतारहा १०४ तिसअधर्मके दोष
से चाण्डालयोनिको प्राप्तहुआ फिर उसने पापप्रमो-
चनतीर्थ और नर्म्मदामें स्नानकिया १०५ निदान हे

द्विजो वह मूर्ख ब्राह्मणहुआ और संयोगसे काशीजीमें गया और वहां तीसबर्षतक बासकरतारहा १०६ एक दिन उसे एक सिद्धपुरुष मिला जो विरूपरूपसे भ्राजमान तथा योगमायाके बलसे युक्तथा और इसको देख के वह मूर्ख हँसी पूर्वक उससे बोला १०७ कि तू कहां जाताहै जब उसने ऐसे पूछा तब वह सिद्धबोला कि मैं सब जानताहूँ और स्वर्गलोकसे आयाहूँ १०८ तब वह मूर्खबोला कि तू स्वर्ग में नारायणकी जांघसे होनेवाली उर्बशी तथा दूसरी अप्सराओं को जानता है १०९ सिद्धबोला कि हां उनको मैं जानताहूँ वे इन्द्रके चवँर को धारण करनेवालीहैं और साध्योंसे उत्पन्न होनेवाली उर्बशी स्वर्गका आभूषणहै ११० सिद्धका यह उत्तरसुन ब्राह्मणबोला कि हे मित्र उनउर्बशीआदिकोंकी वार्त्ताकहो कि वे कहांसेहुईहैं क्योंकि उनका बर्णनकरने को आप समर्थहो १११ सिद्धबोला कि सत्यकहतेहो तब वह विप्र आनन्दसे युक्तहुआ ११२ और वहसिद्ध भी मेरुपर्वत के शिखरपर देवतोंके स्थानमें जाके जो उस द्विजने कहाथा उसके अनुसार उर्बशी आदिकों से पूँछा कि तुम कहांसे हुईहो ११३ उर्बशी बोली कि हे द्विज हम सिद्धोंकी जांघसे हुईहैं और काशीपुरीको नहीं जानती सिद्धबोला कि सत्यहै ११४ ऐसेकहके बहुत कालतक वहांरह फिर वह काशीपुरीमें आया और उस मूर्खब्राह्मणने उसे ११५ देखके पूछा कि कह उर्बशी कहां सेहुईहै तब सिद्धबोला कि मैं जानताहूँ मुझसे आपही उर्बशीने कहाहै ११६ सिद्धके यह वचन सुनके हँसी

पूर्वक ओष्ठपुटवाला वहमूर्ख फिर बोला कि तू क्या जानताहै उर्वशीने तुझसे क्याकहा ११७उसवचनकोअङ्गीकारकरके सिद्ध फिर स्वर्गमेंगया और इन्द्रके भवन में जाकर ११८उर्वशीसे सब वृत्तान्त कहा और उर्वशी सिद्धसे बोली ११९ कि हे द्विजसत्तम जो थोड़ासा भी नियम करताहै उसको हम सिद्ध जानती हैं अन्यथा नहीं१२०सिद्धनेआके उसमूर्खब्राह्मणसे उर्वशीकाकहा हुआ नियम वर्णन किया १२१ तब वह मूर्ख ब्राह्मण बोला कि हे सिद्ध पुरुष तेरेअगाड़ी मैं नियम करताहूँ कि अबसेलेके शङ्कटाके दिनतक मैं भोजननकरूँगा १२२ उसके यह वचनसुन सिद्ध स्वर्गमें जाके उर्वशी को देख कहनेलगा कि हे उर्वशी यह ब्राह्मण अबसे लेके शङ्कटाके दिनतक भोजन न करेगा १२३तब उस सिद्धसे उर्वशीबोली कि मैंने पहिलेही जानलिया कि मेरे उपहास करनेकेलिये उसमूर्खने नियम ग्रहणकिया है१२४ऐसेकहकर नारायणकी आत्मजा उर्वशी जल्दी से चलीगई और वहकामचारी सिद्धभी पृथ्वीपरविचरनेलगा१२५निदानउर्वशीकाशीपुरीमेंजाके और दिव्य शरीरधारणकरके मत्स्योदरीमें स्नान करनेलगी १२६ और संयोगवश वह मूर्खविप्र भी उसी नदीमें स्नान करनेके लिये आया और स्नान करतीहुई उर्वशी को देख १२७ दृढ़कामदेवकेवशहो अनेक चेष्टाकरनेलगा १२८सिद्धकेकहेअनुसार उसको मूर्खजानके उर्वशीहास्यपूर्वक उससे बोली कि हेमहाभाग मुझसे तूक्याइच्छा करताहै सो कह १२९ जो कहेगा मैं वही करूँगी वह

मूर्खबोला कि हे शुचिस्मिते मैं ब्राह्मणहूँ मेरे लिये तू शुद्धहोके आत्माका दानकर १३० उर्वशी बोली कि हे विप्र मुझे इससमय कुछ कामहै आप क्षणमात्र यहीं स्थितरहो मैं कुछकालमें आजाऊँगी १३१ उसके यह वचनसुन विप्रबोला कि अच्छा मैं यहीं स्थितहूँ तू आ-जाइये निदान यह प्रतिज्ञाकर उर्वशीस्वर्गको चलीगई और तीनमहीने पीछे वहां आई १३२ तो उसमूर्खविप्र को अति कृशित उसी नदी के तीरपर निराहार स्थित देखा १३३ निदान खांड़ घृत तथा शहदसेयुक्त पीठीले और मत्स्योदरी नदीमें स्नानकर १३४ वह सुलोचना उस ब्राह्मणको बुलाके बोली कि हे विप्र मैंने भोगसे युक्त सतीकाव्रत बहुत काल तक किया है १३५ और व्रतके अन्तमें तुझे देनेके वास्ते यह लाईहूँ सो ग्रहण कर ब्राह्मणबोला कि हे भद्रे लोकमें इस शर्कराव्रत को क्याकहते हैं १३६ मैं शुष्क कण्ठवाला तुझसे इसका वृत्तान्त सुनाचाहताहूँ उर्वशी बोली कि हे विप्र खांड़ से युक्त यह शकटहै १३७ सो इसको आप ग्रहणकरो और प्राणों की तृप्तिकर चिरकाल संतुष्टरहो ब्राह्मण उसके यह वचन सुनके और स्मरणकरके यदि भूखसे पीड़ितथा १३८ परन्तु बोला कि हेभद्रे मैं इसे न ग्रहण करूँगा क्योंकि एक सिद्धवर्ग के अगाड़ी मैंने नियम करलिया है १३९ कि मैं शकटतक भोजन न करूँगा उर्व्वशी बोली कि किसी अन्यको देने के वास्ते ग्रहण करले १४० हे भद्र मैंने तेरेवास्ते काष्ठमय शकटबनाया है और तू भूखसे पीड़ित है इस काष्ठमयको क्यों नहीं

भक्षणकरता १४१ ब्राह्मण बोला कि मैंने कुछ विशेष नहीं कियाहै हे भद्रे सामान्यतासे मैंने यह नियम ग्रहण कियाहै १४२ फिर वह तन्वी अर्थात् सूक्ष्म अङ्गोंवाली बोली कि हेब्राह्मण जो आप नहीं भक्षणकरते तो इसको अपने घरलेजाओ आपका कुटुम्ब भक्षणकरेगा १४३ वह बोला कि हे सुदन्ती अर्थात् सुन्दर दांतोंवाली मदसेमत्तहोके मैंने त्रिकोकी के गुणों से अधिक गुणों वाली १४४ वरारोहा तथा शिवारूपाकी प्रार्थना की थी सो वह जबतक नआवेगी तबतक मैं घरको नजाऊँगा १४५ वह कहगईहै कि क्षणमात्र स्थितरह मैं आजाऊँगी सो उसके आगमन को देखते मुझे एक मास व्यतीत होगयाहै १४६ मैं धृतव्रत उससे मिलापकरने के वास्ते स्थितहूँ भावगम्भीरा उर्वशी उसके वचन सुन के तथा १४७ उत्तम रूपको बनाके उससे बोली १४८ कि हे विप्र तूने निश्चित चित्तहोके व्रत कियाहै हे विप्र मैं उर्वशी हूं तेरी बांछाके लिये आईहूं और तू निश्चय परीक्षा कर तथा सत्यता करके ऋषि होजा १४९ कुरुक्षेत्रमें रूपतीर्थ विख्यातहै वहां तू चलाजा हेविप्रेंद्र तब तू सिद्धि को प्राप्त होजावेगा और मैं तुझको प्राप्त हूंगी १५० हेद्विजो ऐसे कहके उर्वशी स्वर्गको चलीगई और वहविप्रसत्यतासेरूपतीर्थकोचलागया १५१ और वहां परम शांतिकोप्राप्तहो नियम तथा व्रतकरके शुद्ध देहवालाहो उत्तमगन्धर्वोंकेलोकमें प्राप्तहोगया १५२ वहांसे फिर स्वर्गलोकमें उत्तमभोगोंको भोग और श्रेष्ठ कुलमेंजन्मले राजाहोके प्रजाको आनन्ददेनेलगा १५३

वहां उसने नानाप्रकार की दक्षिणा से यज्ञों का यजन किया और पुत्रको राज्यदे कुरुक्षेत्र में १५४ रूपतीर्थ पर मृत्युको प्राप्तहो इन्द्रलोकमेंगया जहां सौमन्वन्तर पर्यंन्त भोगों को भोगके फिर १५५ सब पुरोंमेंश्रेष्ठ ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोके सरस्वती का पुत्र पुरूरवाहो उर्वशी को प्राप्तहुआ १५६ऐसे सत्यताकरके वह ब्राह्मण तीर्थोंमें सिद्धिको प्राप्तहो १५७और उससत्यरूपवाली उर्वशी के आराधन करनेसे विष्णुको प्राप्तहो और अनेक भोगों को भोगके मुक्तिको प्राप्तहुआ १५८॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांविष्णोप्रजागरेगीतिकाप्रशंसा नामचतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४॥

एकसौ पन्द्रह का अध्याय॥

मुनिजनोंनेपूंछा कि बड़ाआश्चर्य्यहै जागरणमेंगान काफल हमनेसुना जिस से चाण्डालभी परमगति को प्राप्तहुआ १ व्यासजी बोले कि सब भूतोंको भयके देनेवाले इस महाघोर संसार में बड़ीकठिनतासे पुरुष की महाफल वालीभक्ति विष्णुमें होती है२ महा भयके देनेवाले संसारमें नित्य दुःखसे आकुल मनुष्योंको हजारहां निन्दितयोनि बारम्बार प्राप्तहोती हैं ३ और बड़ेकष्टसे मनुष्य देहमें जन्महोता है मनुष्यदेह मेंभी ब्राह्मणका जन्म विप्रमेंभी विवेकता ४ विवेकतासेधर्म और धर्मबुद्धिसे श्रेयकाउपाय करना इतने जन्मपाके भी जबतक पापोंका क्षयनहो ५ तबतक वासुदेव जगन्मयमें भक्ति नहींहोती है हे विप्रो जैसे कृष्ण ६ और अन्यदेवमें मन और बाणीसे भक्तिहोतीहै कर्मके तद्गत

को कहताहूं ७ हेमुनिसत्तमो जिससे जिसकी दुर्बलतामें भक्तिहोती है तिसको अग्निहोत्रमेंसमाहितहोके भक्ति करनी चाहिये ८ क्योंकि जिसपर अग्नि प्रसन्नहोजाता है तिसपर सूर्यदेवता प्रसन्नहोजाते हैं इसलिये हेद्विजो उसपुरुषको निरन्तर आदित्यकी पूजाकरनी चाहिये ९ जिसपर सूर्य्य प्रसन्न होजाते हैं तिसकी महादेव में भक्तिहोतीहै और जो विधिवत् जतनसे शम्भुकीपूजा करताहै १० और त्रिलोचन जिसपर प्रसन्न होजाते हैं तिसकी केशवमें भक्तिहोती है ११ हेद्विजो जब मनुष्य अव्यय बासुदेव नामवाले जगन्नाथ का पूजन करताहै तब भक्तिको प्राप्तहोताहै १२ मुनिजनोंनेपूंछा कि हे महामुने जो विष्णुभक्तिसे रहितहैं वे कौनहैं और जो बिष्णुका पूजन करते हैं वे कौनहैं १३ व्यासजी ने कहा कि हे मुनिसत्तमो इस लोक में दो प्रकारके जन ब्रह्मा ने रचे हैं आसुर तथा दैव १४ दैवी स्वरूप को प्राप्तहोनेवाले अच्युतका पूजनकरते हैं और आसुरी योनिको प्राप्तहोनेवाले हरीका द्वेषकरते हैं १५ विष्णुकीमायासे हतबिज्ञानवाले अधमनर हरिकी आशासे हरिको नहींप्राप्तहोते १६ उस भगवान्की आसुर सुर रूपीमाया बड़ीगह्वरहै और पापकृतआत्मावाले पुरुषों को महामोह करनेवाली वह माया दुस्तरहै १७ मुनिजनोंने पूंछा कि हेसर्वज्ञ विष्णुभगवान्की उस दुस्तर मायाको जाननेकी हम इच्छाकरतेहैं १८ हमें बड़ा आश्चर्य्य है इस लिये आप हमारे अगाड़ी उस मायाको कहो १९ व्यासजीबोले कि स्वप्नेके जालकीतरह लोक

को आकर्षण करनेवाली हरिकीमाया है और उस को जाननेको भगवान्के सिवा कौनसमर्थहै २० ब्रह्माजी और नारदकेलिये जो युक्तिभईथी हेविप्रो तिसका विस्तारमैं कहताहूं तुमसुनो २१ निघ्नीघ्न नामसेविख्यात नामक एक श्रीमान् राजा कामद्रुमन नगर में हुआ और उसके २२ धर्म और क्षमाशील रामनामक एक पुत्रहुआ और वह पिताकी टहलमेंरत प्रजाको आनंद करने वाला और श्रुति स्मृति शास्त्रको जानने वाला हुआ २३ निदान उसकापिता उसके बिवाहका यत्नकरनेलगा पर वहइच्छाभी न करताथा उसकापिताबोला कि क्यातू रसग्रहणकरनेकी इच्छा नहींकरता २४ सब मनुष्य सुखकेवास्ते बिवाहकीइच्छाकरते हैं पर तू सुख केमूलरूपी स्त्रीको क्योंनहीं चाहता २५ पिता के वचन सुनकर वह बहुतकाल चुपकारहा और पिता बारम्बार वैष्णव परिपालिनीबार्त्ता कहतारहा २६ पिताबोला कि विद्वान् पुरुषको पुत्रधर्मकेवास्ते स्त्रीग्रहणकरनी योग्य है २७ तू मेरे वचनको ग्रहणकर मैं तेराप्रभुहूं और पिता हूं और जो मेरावचन न मानेगा तो संततिका क्षयहोने से मुझको नरकबास होवेगा २८ पिताकेवचनोंके बशीभतहो उसने उन्हें अंगीकारकिया और संसारमें पौराणिकबार्त्ताका स्मरणकरके २९ बोला कि हेतात मेरेलिये आपकावचन हेतुको देनेवालाहै मैंने हजारों वर्षोंतक ३० स्त्रियोंके संयोग पहिलेजन्मोंमेंकिये हैं और तृण गुल्म लता बल्ली सर्प मृग पक्षी ३१ पशु स्त्री पुरुषआदि सैकड़ोंमेरेजन्महुये और किन्नर गंधर्व विद्याधर महोरग ३२

यक्ष गुह्यक राक्षस देव दानव अप्सरा दासत्व और ई-
श्वरत्व बारम्बार मुझको प्राप्तहुआ ३३ निदान बहुत
से मैंनेरचे और बहुतसेनष्टहोगये और पापके अवल-
म्बनसे मैं स्त्रियोंकेसंयोगमें रतरहा३४अब यहांसे मेरे
तीसरेजन्ममें जो हुआ सो सुनो संक्षेपसे कहताहूं३५
हेतात मनुष्य देव गन्धर्व और महोरग जन्मोंकोभोगके
मैं एकउत्तम महर्षियोंकेबंशमेंउत्पन्नहुआ३६और वहां
लोककेपति मधुदैत्यके हननकरनेवाले जनार्द्दनमें मेरी
अचलभक्ति हुई निदान व्रतों तथा अनेक प्रकार की
भक्तिकरके मैंने भगवान्को प्रसन्नकिया ३७ औरचक्र
गदा को धारणकरने वाले वह पक्षिपति महात्मा मुझ
परप्रसन्नहो ३८ सम्यक्प्रकारसे प्राप्तहोके मुझसेबोला
कि हेद्विज ऊँचेशब्दसे वरमांग ३९ मैं तुझको बांछित
वरदूंगा क्योंकि व्रतोंके करनेसे मैं तेरेऊपर प्रसन्नहुआ
हूं ४० तबमैं बोला हेहरे हेईश जो मुझपर आप प्र-
सन्नहुयेहो तो मैं इस बरकी इच्छाकरताहूं ४१ कि आप
के माया मय रूपके बारम्बार दर्शनकर इसके सिवा
अन्यवरकी इच्छा मैं नहींकरता ४२ जब मैंने ऐसेकहा
तब वह प्रसन्नमनवाला सुरेश्वर नारायण आदर स-
हित मुझसे बोला ४३ कि हे द्विज एकाग्रचित्त होके
मेरेवचनसुन पहिले नारदनेभी मूढ़भाव से तेरी तरह
मुझको वराथा ४४ तब मैंने कहा कि हे नारद तू मेरी
माया को जानता है और तू उस मायामें मग्न है ४५
फिर नारदने जलमें मग्नहोके देखा कि काशीके राजा
के सुशीलानाम्नी कन्या उत्पन्नहुई ४६ और उससुशी-

लानाम्नी कन्याको काशिराजने विदर्भराजके पुत्र नारद मुनिको दिया ४७ फिर महर्षि नारदने अपने धर्म्म में उसके साथ अतुल कामोंकी सेवना की ४८ और जब नारदका पिता विदर्भ मरगया तब आनन्दहोके राज्य कर्मपर आपस्थितहुआ ४९ निदान विदर्भदेशकीपालना करते वह बेटे पोतोंसे युक्तहुआ एकसमय उससुधर्मा भूपतिका युद्ध काशिराज के साथ हुआ ५० और उस युद्धमें विदर्भराज के पुत्रके बेटे और पोते तथा काशिराज सब क्षयको प्राप्तहोगये ५१ सुशीलाने अपने पिता भ्राता पति तथा पुत्र पौत्रों का मरणसुनके ५२ पुरसे बाहर निकल रणभूमिमें आ सबके कदनको देखा ५३ और पति तथा पिताकी सेनाको देख दुःख से युक्तहो और बहुतकालतक विलाप करके ५४ जहां भ्राता पिता पति पुत्र पौत्र पड़े थे वहां गई ५५ उस महाश्मशान भूमिमें सुशीलाने एक महाचिता बनाके उसमें अग्नि लगाई और जब अग्नि प्रज्वलितहुई तब उसने बेगसे उसमें प्रवेशकिया ५६ और हापुत्र हापुत्र कहनेलगी उसे सतीहुईदेख नारदमुनिभी अपनेसत्यसे उस उज्वलित अग्निमें प्रवेश होनेलगा ५७ तब देवतों में बर केशवभगवान् देवर्षि नारदसे बोले कि हे महर्षे हे नष्टबुद्धे यहां तेरा कौन पुत्र है और कौन मरा है ५८ तब वह नारद लज्जा से युक्तहुआ फिर मैं उस नारद से कहनेलगा ५९ कि नारदको कष्टदेनेवाली माया ब्रह्मा आदिकों को भी अशक्यरूपा तथा रुद्रादिकों को भी दुर्विभाव्य है सो तू कैसे जानलेगा ६० इस वचनको

सुनके महर्षि बोला कि हे विष्णो मुझको भक्तिदे और जब कालआकेप्राप्तहो तब हेईश आपकास्मरणरहे६१ और हे अच्युत जहां मैं स्थितहूँ तहां पापोंकेहननकरनेवाला तीर्थहोजावे ६२ हे केशव हे कमलोद्भव आप सहित मैं सदा स्थितरहूँ ६३ ऐसे कहके हे द्विज वह नारद शीतोद तीर्थमें चित्त लगाके स्थितहुआ ६४ और कहनेलगा कि मैं यहां स्थितहूँगा विष्णुभी सदा यहीं स्थितरहेंगे और उत्तरकेतर्फ महेश स्थितरहेंगे६५ जब त्रिनेत्र महादेव ब्रह्माके पांचवें शिरको छेदन करेंगे तब महेशके हाथमें कपाली लगजावेगी ६६ और उस कपालीके छुटाने के वास्ते वह इसतीर्थमें आके स्नान करेगा तब कपाली भूतलपर स्थित होजावेगी६७और इसतीर्थ को कपालमोचन तीर्थ कहेंगे अबसे इसतीर्थ वरको इन्द्रभी न छोड़ेगा अर्थात् इन्द्रभी यहांहीं वास करेगा ६८ हे द्विज जब इन्द्रभी वहां रहेगा तब ब्रह्म कपाली उग्रक्षेत्र होजावेगा ६९ और जब उस महत्पुण्यको देनेवालेक्षेत्र मुख्यको इन्द्र न छोड़ेगा तब देवता भी इन्द्रको न छोड़ेंगे ७० और इन्द्रसहित देवतों के बाससे स्तुति करनेके योग्य पुण्यको देनेवाला अव्ययनामसे युक्त वह तीर्थ होजावेगा ७१ यदि मनुष्य बहुत से पापोंको करके भी इसतीर्थ में प्रवेशकरेगा तो वह चाहे प्रमादीभीहो ७२ पर मेरा चिन्तवनकरके शुद्ध हो मोक्षको प्राप्तहोजावेगा७३ जो कठोर पिशाचयोनि तथा दूसरी खोटीयोनियोंमें जन्मलेके और अनेकदुःखोंको प्राप्तहोके इसमें प्रवेशकरेगा ७४ वह सब पापों

से रहित होके विप्रके घर जन्मलेगा और बड़ी आयु वाला होगा ७५ इस तीर्थका जो कीर्त्तन करेगा उसका तारनेवाला महादेवही है ७६ हेद्विज नारदसे ऐसे कहके विष्णु क्षीरसमुद्रमें प्रवेश करगया ७७ और वह नारदभी स्वर्ग में विचरता हुआ गन्धर्वराजसे पूजित हुआ ७८ यह मैंने तेरे बोधके लिये कहाहै मेरी माया के जाननेको कोईभी समर्थ नहीं हुआ ७९ जो तू मेरी मायाके जानने की इच्छा करता है तो नारद की तरह जलमें प्रवेशकर ८० ऐसे भगवान् द्वारा बोधित होके मैंने भावीके योगसे जलमें गोता मारा ८१ और वह विप्र कोकानदीके समीप एक चाण्डालकी कन्याहो ८२ रूप तथा शील आदिसे युक्त युवान अवस्थाको प्राप्त हुई ८३ निदान वह सुन्दर बाहुवाली किसी चाण्डाल के पुत्रको बिवाहीगई पर वह चाण्डाल रूपवान् नहीं था ८४ इसलिये वह उसे बांछित पति न हुआ पर वह पतिको बांछितभई ८५ कालपाके उसके नेत्रों से हीन दो पुत्र और एक बहरीकन्याहुई और उसका पति दरिद्री होगया ८६ निदान वह मूढ़ा नदीपर जाके नित्य प्रति रोदन करती एक दिन कलशालेके जलके लिये वह नदीके तीरगई और कलशा रखकर नदीमें स्नान करने के लिये प्रवेश किया और प्रवेश करतेही जैसा विप्रथा तैसाही क्रियायोगमें रत सुशीलवाला विप्र होगया ८७।८९ निदान जब उसे गये बहुतकाल बीतगया और वह लौटकर न आई तब उसकापति उसे देखनेके लिये नदीके तीरगया पर जब नदीके तटपर कलशेको दे

खा उसे नदेखा तब दुःखितहो रोदनकरनेलगा ९०।९१
और वे दोनोंअन्धे पुत्र और बहरी कन्याभी पिताको
रोते देख रोनेलगे और अतिपीड़ित हो तटपर स्थित
मनुष्योंसे पूछनेलगे ९२।९३ कि हे द्विजो एक स्त्री जल
के लिये यहां आईथी आप सबोंने उसे कहीं देखा है
वे बोले कि हां वह इस नदीमें स्नानको गईथी ९४ पर
नदीसे बाहर आवते हमने उसे नहींदेखा ९५ ब्राह्मणों
का यह घोरवचन सुनके वह अश्रुओंसे पूर्ण नेत्रोंवाला
रोदन करनेलगा और पुत्रों और कन्या को रोते देख
निरन्तर पीड़ित हो और सती का स्मरण करके कहने
लगा कि मुझको बड़ी पीड़ाहुई तब वह द्विज अति दुः-
खितहो उसचाण्डालसे बोला कि तू क्यों वृथा रोताहै
तुझको अब उस स्त्रीका लाभ न होगा९८।९९ बधिक
बोला कि हेद्विज इन अन्धपुत्रों और बहरी कन्याको मैं
कैसे आश्वासनकरूं १०० और कैसे इनकी पालनाकरूं
ऐसे कहके उनबालकों सहित वह ढाढ़मारमारके रोने
लगा १०१ जैसे जैसे वह चाण्डाल रोदनकरताथा तै-
सेही तैसे मूर्त्ति प्रकट होतीथी १०२ निदान दुःखसे नि-
वृत्तहोके उसने आपही सबवृत्तांतजाना १०३ और दुः-
खरूपीआत्मा और आर्त्तरूप होके कोकानदीके मुखमें
प्रवेशकिया १०४ जब संगरहितहोके उसने जलमेंप्रवेश
किया तब तीर्थकेप्रभावसे पापोंसे विमुक्तहोगया १०५
फिर वह दुःखसेपीड़ितहो वैश्यकुलमें जन्मा और तीर्थ
केप्रसादसे वहां उसे पूर्व्वजातिका स्मरणरहा १०६ इस
कारण वह खिन्नमनवाला अहंकारसे रहित हो कोका

नदीकेसमीप बाक्रुद्धचित्तहो १०७ और स्नानकरके व्रत
में स्थित शरीरका शोषणकरके स्वर्गलोकमेंगया १०८
और फिर वहां से आ सुन्दर कुलमेंजन्मलेके हरिके प्र-
सादसे जातिस्मरणकरके और विष्णुभगवान्का १०९
आराधनकरके कोकाकेसमीप शुभ अशुभकर्मोंसे रहित
हुआ फिर वह पितरोंको नमस्कार करके कोकामुखसे
आदि उग्रतीर्थको गया ११०।१११ और वहां बराह
रूप विष्णु का आराधन करके वह मनुष्यों में ऋषभ
सब सिद्धिको प्राप्तहुआ ११२ इसप्रकार वह कामदेव
को दमनकरनेवाला बेटे पोतों सहित कोकामुख तीर्थों
में श्रेष्ठ पवित्रतीर्थ शरीर को त्याग के दोषों से रहित
हो ११३ पवित्र स्वर्गलोकमें चन्द्रमाकी कांतिकेसमान
कांतिवाले विमानमें बैठकेगया ११४ ऐसी परमेश्वर
की माया सुरोंकोभी दुर्विचिन्त्यरूपा है हे विप्रो स्वप्ने
के जालकीतरह ११५ मुरारीकी माया जगत् को मोह
करानेवाली है सो मैंने तुम्हारेलिये कही ११६॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांविष्णुधर्मानुकीर्त्तनंनामपंच
दशाधिकशततमोऽध्यायः ११५॥

एकसौसोलह का अध्याय॥

मुनिजनोंने पूछा कि हे मुनिश्रेष्ठो जो आपनेकहा सो
हमने सुना और जाना कि दुर्मद विष्णुभगवान्कीमाया
पुण्य के विना नहीं जानी जाती १ हे महामुने आपके
सकाशसे कल्पके अन्त में महाप्रलय संज्ञक संहारका
वृत्तान्त सुननेकी हम इच्छा करते हैं २ व्यासजी बोले
कि हे मुनिश्रेष्ठो जैसे कल्पकेअन्तमें प्राकृत प्रलय में

संहार होताहै सो मैं कहताहूँ सुनो ३ इसलोकका एक मासपितरों का एक दिवसहोता है और एकवर्ष देवतों का एकदिवस होता है ४ हे द्विजोत्तमो चारहजारयुगों का ब्रह्माका एकदिवस होताहै और सत्ययुग त्रेता द्वापर और कलियुग ये चारयुगहैं ५ देवतोंके बारह हजारवर्ष कहेहैं और शेषरहे चारोंयुग स्वरूप से सदृश हैं ६ मुनिजनोंने आद्यमें सत्ययुग फिर त्रेतायुग फिर द्वापरयुग और फिर कलियुग कहाहै ७ और इसी कारण आदिमें ब्रह्माको कृतयुग कियाहै और तैसेही संहारहोताहै जैसे अन्तमें कलियुगमें ८ मुनिजनोंने पूछा कि हे भगवन् आप कलिकास्वरूप विस्तारसे कहें क्योंकि आप उसे कहने को योग्यहैं जिसकलिमें चार पैरवाला अधर्म स्थित है ९ व्यासजी बोले कि हे विप्रो हे अनघो कलियुगका स्वरूप जो तुम पूछतेहो तो मैं बहुत संक्षेप से कहता हूँ सुनो १० वर्ण आश्रम आचारवाली प्रवृत्ति कलियुगमें न होगी और सामऋक् और यजुर्वेदमें कहीहुई भक्तिको लोगनकरेंगे ११ धर्म विवाह न होंगे और शिष्य गुरूकेपास स्थित नहोंगे १२ स्त्री पुरुषका कर्म न रहेगा न अग्निक्रिया रहेगी और सर्वेश्वर बलवान् पुरुष कहीं कहीं कुल में जन्म लेवेगा १३ वही बलवान् पुरुष सबवर्णोंमें युक्तरहेगा वही कन्याका बरहोगा और वही धनवान् होवेगा १४ चारोंवर्णोंमें द्विजाति दीक्षाकेयोग्य कोई भी न होगा सब की दीक्षारहित जैसी तैसी क्रिया होगी १५ हे द्विजो कलियुगमें जिसने जो वचन कहदिया वहीशास्त्रमाना

जावेगा १६ और सब क्रिया सब देवताओं का पूजन और सब आश्रमों को सभीमनुष्य सेवन करने लगजावेंगे अर्थात् कुछनेम न रहजावेगा १७ द्रव्य के संचय करने में मनुष्य तत्परहोवेंगे धर्ममें किसीकी रुची न होवेगी और अनुष्ठानसे कोई अनुष्ठित न रहेंगे १८ थोड़ेही धनसे लोग मदयुक्तहोजावेंगे और स्त्रियां रूप तथा मदके बेचनेमेंमग्न रहेंगी १९ सुवर्ण मणि रत्नादिक और सुवर्णमयवस्त्र नाशको प्राप्तहोजावेंगे स्त्रियां भगसे अलंकृतहोजावेंगी और धनहीन पतिको त्याग देवेंगी २० और पति स्त्रियोंकी द्रव्यसे प्रसन्नता करेंगे २१ जो अधिक द्रव्यदेगा और स्त्रियोंको आनन्द करेगा वही उनका स्वामीहोवेगा २२ और सब लोग द्रव्यको घरमेंही लगावेंगे द्रव्यमेंही बुद्धिरक्खेंगे और द्रव्यसेही द्रव्यका उपायकरेंगे २३ कोमल बाञ्छारखने वाली स्त्रियां इच्छापूर्वक विचरेंगी २४ और सबलोग अन्यायसे द्रव्यसंचयमें बांछारक्खेंगे २५ मित्रोंकी याचनाकोभी लोगस्वार्थ से हननकरदेवेंगे और ब्राह्मण क्रय विक्रय अर्थात् खरीदना और बेचना करेंगे २६ हे विप्रो कलियुगमें भावीकेबशसे पुरुषार्थमेंहीं लोगों का चित्त रहेगा और गौओंमें दूध बहुतहोवेगा २७ अनावृष्टिके भयसे प्रजा क्षुद्रहोजावेगी और भयसेयुक्त होगी और आकाशमार्गमेंही सब की दृष्टिरहेगी २८ मूलफलके भोजन करनेवाले तथा तपस्वी मनुष्य वृष्टी के भयसेदुःखितहुये आत्माको हननकरदेवेंगे २९ और निरन्तर दुर्भिक्षके क्लेशको सहनकरनेमें समर्थ न होके

कलिमें मनुष्य थोड़ेसुखको प्राप्तहोवेंगे ३० बिनास्नान करे लोग भोजनकरेंगे अग्निदेवता और अभ्यागतका पूजन ३१ और उदकदान तथा पिण्डक्रियाभी न करेंगे लोभमेंयुक्त मनुष्य छोटे शरीरवाले और बहुत अन्नको भक्षण करनेवाले होवेंगे ३२ और स्त्रियां बहुत सन्तान उत्पन्नकरनेवाली पर थोड़ेभाग्यवाली होंगी ३३ स्त्रियां दोनोंहाथोंसे शिरको खुजावेंगी गुरु तथा पतिकी आज्ञा को उलंघन करेंगी ३४ देहकी पालना में तत्पर रहेंगी पर संस्कारसे रहितहोंगी ३५ कठोरवचन कहनेवाली होवेंगी और दुःशील तथा दुष्टशील पुरुषोंसे निरन्तर बांछारक्खेंगी ३६ अच्छेकुलकी स्त्रियां खोटेमार्गमें प्रवृत्तहोवेंगी ब्राह्मण बाल अवस्थामेंही वेदपढ़ाने लगजावेंगे ३७ गृहस्थ होम न करेंगे और उचितदान न देंगे बनबासीजन ग्रामबास करनेलगेंगे ३८ भिक्षुजन मित्रसम्बन्धी भिक्षा ग्रहणकरेंगे और राजालोग शुल्क मिससे पृथ्वी की रक्षा न करेंगे ३९ जब कलियुग का प्रवेशहोगा तब लोग द्वारपर स्थितहोके द्रव्यकी रक्षा करेंगे ४० जो मनुष्य घोड़े रथ तथा हस्तीपर चढ़ेंगे वे राजाकहावेंगे जिनमें कमबलहै वे नौकरकहावेंगे ४१ वैश्यलोग कृषि बाणिज्यादि निजकर्मों को त्यागके शूद्र वृत्तीमें स्थितहोवेंगे ४२ शूद्रजन भिक्षावृत्तिको धारण करेंगे संन्यासी अधमचिह्नको धारणकरेंगे ४३ ब्राह्मण पाखण्ड के आश्रय जीविका करेंगे दुर्भिक्षकी पीड़ा से लोग अत्यन्त उपद्रवोंसे युक्तहोवेंगे ४४ और दुःखित होके गोधूम और यवसेयुक्त देशों में चलेजावेंगे और

वेदमार्ग्ग लीनहोजावेगा ४५ अधर्म्म की वृद्धीहोने से लोकोंकी थोड़ीआयु होजावेगी और शास्त्ररहित घोर तपकोतपैंगे४६मनुष्य बालअवस्थामेंही मृत्युकोप्राप्त होंगे पांच छः अथवा सप्तबर्षकी स्त्रियोंके सन्तानहोवेगी ४७ और आठ दशबर्ष में मनुष्योंको बुढ़ापा होजावेगा बारहबर्षतक कोईभी न जीवेगा ४८।४९ कलि में थोड़ीबुद्धिवाले थोड़ीचेष्टा करनेवाले और चोरी के करने वाले जन होवेंगे ५० और काल वश जहां तहां मनुष्य नाशको प्राप्तहोजावेंगे जब मनुष्य पाखण्डवृत्ति से युक्तहोंगे ५१ तब लक्षणोंसे कालकी वृद्धीका अनुमानहोगा ५२ और जब वेदमार्ग के अनुगामी श्रेष्ठपुरुषोंकी हानिहोगी तब कालकृतवृद्धी लक्षणोंसे अनुमान कीजावेगी ५३ हेविप्रो जब धर्मकरनेवाले नरोंका प्रारम्भ न पूरा होवेगा तब विचक्षणों से प्रधान कलिका अनुमान कियाजावेगा ५४ और जब जब यज्ञोंकाप्रभु ईश्वर यज्ञोंद्वारा पुरुषों से न पूजाजावेगा तब कलिकृत बलजानना योग्यहै ५५ हे द्विजोत्तमो वेदवाद में जब प्रीति न हो और पाखण्डमेंप्रीतिहो तब बुद्धिमानोंको कलियुगकी वृद्धिका अनुमान करना चाहिये ५६ कलियुग में जगत्‌के पति और सबके रचनेवाले समर्थ ईश्वरका पूजन जो मनुष्य नहीं करते उन्हें पाखण्ड से नष्ट जानना ५७ जब मेघ थोड़ीबर्षा करैं खेतीमें थोड़ा फल हो और वृक्षों मेंभी थोड़ेही फल होवें तब कलि प्रवृत्तजानना ५८ कलियुगमें शनप्रायवस्त्र जांटीप्राय वृक्ष और शूद्रप्राय वर्ण ५९ अणुप्राय अन्न तथा अजा

प्राय अर्थात् बकरीकाहीदूध और खसप्राय चंदन कलि युगमें होजावेंगे ६० सासु तथा श्वशुरेकोही लोग गुरु मानेंगे और सुहृदजन शिलादिक भार्य्याको हरनेवाले होवेंगे ६१ लोगकहेंगे कि कौनमाताहै और कौनपिता है और श्वशुरेकी अनुगतरहेंगे ६२ वाक् मन और काया केकरे दोषोंमें बारम्बारयुक्तरहेंगे और थोड़ीबुद्धिवाले नर दिन प्रतिदिन पापकर्म्मों को करेंगे ६३ हे द्विजो सत्य रहित अशुद्ध तथा लज्जारहित पुरुषोंको जो जो दुःख होतेहैं सो सब कलियुग में होवेंगे ६४ हे विप्रो पठन पाठन वषट्कार और स्वधा स्वाहासेरहित लोकमें कोई विप्र स्वाहा स्वधा आदि करनेवाला भी होगा ६५ और थोड़ेईकालमें उत्तमपुण्यको प्राप्तहोके तपसे सत्ययुगकी प्रवृत्तीकरेगा ६६ मुनिजनोंने पूछा कि किसकालमें वह अल्पधर्म महाफलको देनेवाला होवेगा सो आपकहो हमारी सुननेकी इच्छाहै ६७ व्यासजी बोले कि हे विप्रो कलिकोधन्यहै जिसमें थोड़ाक्लेश बहुतफलका देनेवाला होताहै जिसमें विवाह तथा यज्ञोपवीतकर्महों तिसकोतुम धन्यजानो ६८ जोकर्म सत्ययुगमें दशवर्ष में त्रेतामें एक वर्षमें और द्वापरमें एकमहीने में होताहै सो कर्मकलि- युगमें एकरात्रि दिवसमें प्राप्तहोताहै ६९ हे द्विजो तप और ब्रह्मचर्य्यका तथा जपादिकाफल कलयुगमें एक ही रात्रि दिनमें प्राप्तहोताहै यह श्रेष्ठप्रकारसे कहाहै ७० सत्ययुगमें ध्यानसे त्रेतामें यज्ञोंकेपूजनेसे द्वापरमें पूजन करनेसे मनुष्य जिस फलको प्राप्तहोता है सो कलिमें केशवके कीर्त्तनसे होताहै ७१ धर्मसे कलियुगमें पुरुष

उत्कृष्टताको प्राप्तहोतेहैं और थोड़ेही परिश्रमसे धर्मज्ञ होजातेहैं तिससे उनपर विष्णुप्रसन्नहोजाताहै ७२ पहिले ब्राह्मण व्रतादि चर्य्या तथा वेदको ग्रहणकरतेथे तब धर्म्मकी प्राप्ति होतीथी और धनकी प्राप्तिसे विष्णुकी पूजाकरतेथे ७३ अब कथाको मिथ्यामानना भोजनाक्रियाको वृथा मानना जन्मको वृथामानना वासकेलिये स्त्री का यतन ७४ सब वस्तुओंमें पुरुषोंका नहींकरनेमें दोष भोजनमेंही इच्छाकरना और सबकर्मोंमें भोजनमेंही परतन्त्ररहना साधारणहै ७५ हेद्विजो ब्राह्मण बहुतक्लेशसे लोकोंमें पूजनकरेंगे दूसरेजन ब्राह्मणकी टहलके बिना ही पाकक्रिया बनावेंगे ७६ शूद्रको धन्यतर कहेंगे निज युक्तिसे शूद्र लोकको जीतलेवेगा ७७ और भक्ष्य तथा अभक्ष्यमें शूद्रोंका पेयपानमें परिश्रम नहीं रहेगा ७८ हे मुनि शार्दूलो यही कलिके नियम श्रेष्ठ पुरुषोंने कहे हैं कि अपने धर्मके विरोधकरकेही नर धनको प्राप्तहोवेंगे ७९ और पात्रको दानदेने विधि यज्ञकरने और विष्णुका पूजन करनेमें अति क्लेशको प्राप्तहोवेंगे ८० उन पुरुषोंको अच्छी क्रियामें युक्तहोना बहुत परिश्रम से होगा ८१ हे द्विजसत्तमो इन तथा अन्य क्लेशों से प्राजापत्यादिक क्रमवाले निजलोकों को पुरुष जीतलेताहै ८२ हे द्विजो स्त्रियां मन कर्म और बाणीसे पतिकी टहलकरके एकदिनमें पतिके लोकको प्राप्तहोवेंगी ८३ हे विप्रो जिसनिमित्त मैंयहां आयाहूँ सो तुमसे कहचुका और यथाकाम जोतुम पूछोगे सोमैं तुम्हारेलिये कहूँगा ८४।८५ कलियुगमें थोड़ेही यत्नसे धर्मकी सिद्धिहोगी

और मनुष्य अपनेगुणोंसे पापोंसे छूटजावेंगे ८५ हे मुनिसत्तमो ब्राह्मणोंकीटहलमें तत्परहोनेसे शूद्र पापोंसे छूटजावेंगे औरतैसेही स्त्रियां पतिकी टहलकरनेसे पतिके लोकमें प्राप्तहोवेंगी ८६ फिर स्त्री पुरुष विष्णु को धन्यतम मानैंगे ब्राह्मणोंको सत्यादिक युगोंमें धर्म्मके आराधनमें बड़ाक्लेशहै पर कलिको धन्यहै८७कि उसमें थोड़ेही तप से मनुष्य सिद्धिको प्राप्तहोजावेंगे ८८ हे मुनिसत्तमो जो युगकेअन्तमें धर्मका आचरणकरते हैं उनको धन्यहै ८९ हे द्विजो जो तुमने पूछा सो तो सब मैंने कहा हे धर्मज्ञो अब अन्य क्या क्रियमाण है सोभी कहो ९० ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेषोडशाधिकशततमोऽध्यायः ११६ ॥

एकसौ सत्रहका अध्याय ॥

मुनिजनोंने कहा कि समीपमें प्राप्त होनेवाले कष्टरूप कालको हम नहीं जानते पर द्वापरसंज्ञक युग के अन्तकी कथा सुननेकी वांछाकरतेहैं १ धर्मकी तृष्णा से उसकालको प्राप्तहोवेंगे तिससे थोड़ेही कर्मसे धर्मके सुखको धारण करलेवें सो कहो २ हे धर्मज्ञ युग के अन्तमें मनुष्योंको त्रासहोगा और धर्मनष्टहोजावेगा तिसकाकारण हमें सुनावो ३ व्यासजी बोले कि हे मुनियो युगके अन्तमें राजा बलिभागको लेलेवेंगे और प्रजाकी रक्षा न करेंगे अपनीही रक्षामें तत्पर रहेंगे ४ राजा क्षत्रियपने से रहित होजावेंगे विप्र शूद्रों से जीविका करेंगे शूद्र ब्राह्मणों का आचार करेंगे ५ वेदपढ़े

हुये ब्राह्मण शस्त्रधारणकरेंगे और बिना कामना हवन करेंगे और हे मुनिसत्तमो एक पंक्ति में भोजन करेंगे शिष्ट आचार से रहित रहेंगे पर द्रव्य में तत्पररहेंगे और माया धारण करने में प्रिय रहेंगे६।७ और युगके अन्तमें स्त्रियों से मित्रता करनेवाले अधमपुरुष होंगे चौरजन राजवृत्तिमें स्थित होंगे और राजा चोरवृत्ती में शीलरहेंगे८।९ युगक्षयमें नौकर समीपतासे दूरहोके भोजनकरेंगे श्लाघनीय धनही रहजावेगा अच्छेपुरुषों का वृत्तान्त खोटालगेगा निन्दित जाति पतितमनुष्य रहेंगे और नष्ट चित्त तथा पाखण्ड को धारण करनेवाले होंगे१०।११ सोलहवर्षकी आयुके भीतरही लोग मृत्युको प्राप्तहोंगे १२ मनुष्य अन्नको बेचने लगजावेंगे ब्राह्मण वेदको बेचेंगे और स्त्रियाँ योनिको बेचेंगी १३ हे द्विजो सब बाजसनेयि संहिताके ब्रह्मकाकथन करेंगे शूद्रभी भोकहके बोलेंगे और ब्राह्मण चाण्डालका कर्म करेंगे १४ रक्तवस्त्र धारण करनेवाले जन सफेद दन्त नेत्रोंमें अंजन करेंगे शूद्रजन शाठ्य बुद्धिसे जीविका करके धर्मका आचरण करेंगे श्वापदजीव तथा गौ क्षयको प्राप्त होजावेंगे और श्रेष्ठपुरुषों की निवृत्ती होजावेगी १५।१६ चाण्डालग्रामके मध्यमें बासकरेंगे मध्यबास करनेवाले बाहर रहेंगे १७ और युगक्षयमें सबप्रजा निरन्तर त्रासको प्राप्तहोके नष्टहोजावेगी १८ ब्राह्मण तप और यज्ञोंके फल को बेचेंगे विपरीत यज्ञ होने लगजावेंगे १९ दो वर्षका बालक हलवृत्ती करने लगजावेगा मेघ चित्र विचित्र वर्षाकरेंगे सबजन चोरी

प्राय होजावेंगे और थोड़ेही द्रव्यसे ऐश्वर्य्ययुक्त होजा-
वेंगे २०।२१ सब प्रजा अभिमति को धारण करलेगी
मनुष्य धर्मका आचरण न करेंगे २२ पृथ्वी उखराजा-
वेगी रस्ता चोरों से रुकजावेगा और सब जन बणिज
करने लगजावेंगे २३ पुत्रादिक लोभादिकोंसे पिताकी
दीहुई वस्तुको हरलेवेंगे पितासे विरोध रक्खेंगे २४ सु-
कुमारता तथा रूपनाश होजावेगा और स्त्री वस्त्रों से
रहित होके अलंकारसे युक्त होजावेंगी २५ गृहस्थी को
वीर्य्यके भोगनेमें प्रीति न रहेगी अन्यभार्य्यामेंही लोग
प्रीतिरक्खेंगे कुशीलनारी बहुतसी होजावेंगी और वृथा
रूपकोधारण करेंगी पुरुषथोड़ेहोंगे स्त्री बहुत होवेंगी
मांगनेवाले जन बहुत होजावेंगे और परस्पर न देंगे
और राज चोर अग्नि और दण्डसे क्षयको प्राप्तहोवें-
गे २६।२८खेतीमें फलथोड़ाहोगा पुरुष युवावस्थामेंही
वृद्धहोजावेंगे सुखमें शील न होंगे राजाओंसे जीविका
करनेवालों का धन वैश्य वृत्तीमें लगजावेगा बान्धव
कर्ममें कोई न रहेगा खोटीप्रवृत्ती होवेगी झूठीसौगन्द
खावेंगे और ऋणअन्यायसेयुक्तहोजावेगा२९।३१सर्व-
जनोंका आनन्दनष्ट होजावेगा क्रोधसफलरहेगा दूधके
लिये बकरी की पालना करेंगे ३२ अशास्त्रविहितयज्ञों
की प्रवृत्तीहोवेगी सबजन सब वस्तुको जानेंगे और
वृद्धोंकी टहल न करेंगे ३३ युगक्षयमें कोई कविनाम
वाला न होगा ज्योतिषशास्त्रके जाननेवाले ब्राह्मणभी
न रहेंगे राजा सब चोरप्राय होजावेंगे ब्रह्मचारीगृहस्थी
होजावेंगे ब्रह्मवादी मदिरापानकरनेलगेंगे३४।३५और

हे द्विजो अन्तमें अश्वमेधयज्ञ न होवेंगी लोग पूजनको न जानके पूजनकरेंगे अभक्ष्य वस्तुको भक्षण करेंगे ३६ और ब्राह्मण धनकीतृष्णासे पीड़ितरहेंगे और पाखण्ड से भोशब्द को धारणकरेंगे ३७ नारी गौ नक्षत्रोंके बिवर्ण तथा दशोंदिशा विपरीत होजावेंगे गायदूधको न देंगी दिशाओं में दाहहोजावेगी और स्त्री पिता और पुत्र को श्वश्रू अर्थात् टहलकराने के कर्ममें प्रेरणाकरेंगी ३८।३९ मनुष्य मदसे युक्तहोजावेंगे अग्निहोतृ ब्राह्मण बिनाहवनकरे भोजन करनेलगजावेंगे ४० भिक्षा भोजन को आपमदमें आके भक्षणकरेंगे और सोतेहुये पतिको त्यागके स्त्री अन्यपुरुषकेपास चलीजावेंगी ४१ बिना दुःख और बिनाप्रयोजन लोग निन्दाकरेंगे और निन्दाहीकरनेमें तत्पररहेंगे ४२ मुनिजनों ने पूछा कि हे भगवन् जब ऐसे धर्मचलाजावेगा तब मनुष्य पीड़ित हुये किसदेशमें बासकरेंगे क्या भोजन करेंगे क्या कर्म करेंगे कैसी उनकी चेष्टाहोवेगी मनुष्योंका क्या प्रमाण होगा कितनीआयुहोगी ४३।४४ और कौनसे दुःखोंको प्राप्तहोके वे सत्ययुगको प्राप्तहोवेंगे सोकहो ४५ व्यास जी बोले कि हेविप्रो इसके उपरान्त धर्मके नष्टहोनेपर सब प्रजा गुणसेहीन होजावेंगी और कुशीलताके ब्यसनोंको प्राप्तहोके आसुरी आयुको प्राप्तहोवेंगे आसुरतासे बलकी ग्लानिहोगी बलकी ग्लानिसे बिवर्णता होगी बिवर्णतासे व्याधिको प्राप्तहोंगे व्याधिसे पीड़ा को प्राप्तहोवेंगे और ब्याधिपीड़ासे दुःखको प्राप्तहोवेंगे ४६।४८ फिर दुःखसे आत्माका संरोधहोगा और संरोध

से धर्म्मकी शीलताको प्राप्तहोवेंगे ४९ ऐसे परमकाष्ठा को प्राप्तहोके वे सब सत्ययुग को प्राप्तहोवेंगे कोई कथनकरने से धर्म शीलहोवेंगे कोई मध्यस्थताको प्राप्त होवेगा ५० कोई कुत्सितधर्ममें शीलहोवेंगे कोई आश्चर्य्यसेयुक्त होवेंगे और कोई प्रमाणके अनुमान का निश्चयकरेंगे ५१ सब जन अप्रमाणकारी होवेंगे कोई नास्तिकमत को धारण करेंगे कोई पाखण्डयुक्त होंगे और कोई ज्ञानसे रहितहोवेंगे ५२ जब धर्म्म विलोप को प्राप्तहोजावेगा तब शेषरहे जन शुभकथन करेंगे व दान शीलमें परायणरहेंगे ५३ और सर्व्वभक्षी आप गुप्त तथा दया व लज्जारहित जन होजावेंगे५४कलि में कषायवस्त्र धारणकरने वालों के यह लक्षणहोंगे कि जब काल प्राप्त होता है तब कषायवस्त्री पुरुष ज्ञानमें निष्ठा करके और निस्संग होके थोड़ेही कालमें सिद्धि को प्राप्त होते हैं और अन्यवर्णके जन विप्रोंकी वृत्ती को धारण करते हैं ५५।५६ और सर्वथा कषायका लक्षण ग्रहण करते हैं और महायुद्ध महावर्ष महाबात और महाभय युगके अन्तमें होताहै यह कषायका लक्षणहै ५७ युगके अन्तमें राक्षसादिक विप्ररूप होवेंगे कर्मबन्दि पुरुष राजकर्मकरेंगे ५८ और निःस्वाध्याय वषट्कारको अभिमानसे युक्तहोके नकरनेवाला क्रव्यादजीव ब्रह्मरूपहोके सर्वभक्षी होजावेंगे ५९ मूर्ख अर्थ पर लोभी क्षुद्र तथा क्षुद्र सामग्रीवाले और व्यवहार से जीविका करनेवाले होवेंगे ६० निरन्तर धर्मसे रहित रहेंगे पर रत्नको हरनेवाले तथा पराई स्त्रीको धारण क-

रनेवाले ६१ और कामात्मा दुरात्मा तथा प्रियहास करनेवाले और इनमें सब जनोंमें जो ऐश्वर्य्य मानते हैं ६२ और नहीं कथन करनेवाले बहुतसे रूपवाले मुनिजन होजावेंगे कलियुगमें ऐसे प्रधान पुरुष उत्पन्न होवेंगे और कथाके योगसे तिन सबको मनुष्य पूजेंगे घासकी चोरी करनेवाले वस्त्रकी चोरी करनेवाले और भक्ष्य भोज्य अन्नकी चोरी करनेवाले तथा करण्डसंज्ञक और चोरोंके चोरी करनेवाले ६३।६५ और मारनेवाले को मारनेवाले होवेंगे चोरों से चोर जब क्षय होजावेंगे तब प्रजाकल्याणको प्राप्तहोवेगी ६६ परसार रहित लोकमें क्षुधासे पीड़ित तथा क्रयविक्रय स्थिति से रहित राजाके करसे पीड़ितहो बनमें चलेजावेंगे६७ यज्ञकर्म के प्रारम्भमें राक्षस श्वापद संज्ञक जीव कीट मूषिक सर्पादि मनुष्योंको भय दिखावेंगे ६८ और क्षेम सुभिक्ष आरोग्य आदिका समग्र बन्धुओं में उपदेश देनेवाले नर होंगे ६९ नौकारूप गाड़ेके आश्रय होके लोग आपही पालना करेंगे और आपही चोरी करेंगे देशदेशमें मण्डलीसहित पृथक्२ बासकरेंगे और अपने देशसे परिभ्रष्ट तथा साररहित होके बन्धुओं सहित चलेजावेंगे ७०।७१ कालके क्षय होनेपर सबनर भयसे पीड़ित बालकोंको ग्रहणकर ७२ कौशिकी नदी के आश्रय होजावेंगे और क्षुधारूपी भयसे पीड़ितहुये जन अंग बंग कलिंग काश्मीर अथवा कौशल ७३ तथा पर्वतकी गुफाओंके आश्रय होजावेंगे हिमवान् पर्वतके तीर२ सब कनारा लवणके जलकाहै ७४ और अनेक

प्रकारके प्राचीनपत्र तथा बल्कल मृगचर्मादिकके विस्तारसे युगक्षयमें मनुष्य वहां बासकरते हैं ७५ म्लेच्छ गणों सहित लोग बनमेंबासकरेंगे और पृथिवी शून्य बनवाली और जनोंसेरहित होवेगी ७६ लोग पृथ्वीकी रक्षाभी करेंगे और नहींभी करेंगे और मृग मच्छ पक्षी श्वापद जीव सर्प कीट मधु शाक फल मूलसे मनुष्य तृप्ति करेंगे और टूटेहुयेपत्ते और फलोंका आहारकरेंगे ७७। ७८ बल्कल तथा मृगचर्मको धारणकरेंगे आपही मुनि जनों की तरह विचरेंगे ७९ बीजके वास्ते खेती करेंगे तथा काष्ठ हाथमें लेके ऊंट घोड़ा बकरी गधा आदिकी पालना करेंगे ८० कनारेपर स्थितहोके जलकेलिये नदी के स्रोतोंको रोकलेवेंगे और पक्वान्नके व्यवहारसे परस्पर लेनादेना करेंगे ८१ बहुतसी प्रजा मूर्ख सन्तानकेहोने से हीन और कुलशीलसे वर्जित प्रजाहोजावेंगी ८२ ऐसे अधर्मजीवी नर होजावेंगे और प्रजाहीन अहीन धर्म्म में प्राप्तहोवेगी ८३ मनुष्यों की परमआयु तीस वर्षकीहोगी और दुर्बलता तथा विषयों की ग्लानी से शोकसे परिप्लुतहोजावेगी ८४ हौले२ ऋद्धिकीवांछा से आयुके निश्चयकेलिये विषयोंमें प्राप्तहोंगे ८५ और साधुओं के दर्शन तथा टहलमें रतरहेंगे एवम् व्यवहार के क्षयहोनेपर सत्यको प्राप्तहोंगे कामोंकेअलाभ में धर्मशीलहोजावेंगे और आपही क्षयसे पीड़ितहुये संकोचभी न करेंगे ८६। ८७ ऐसे टहलकरनेमें प्राणों की रक्षामें वे सत्यबोलेंगे और जब धर्म्मचारपैरवाला होगा तब प्रजाश्रेयको प्राप्तहोगी ८८ और गुणोंके

पारमें बर्त्तमान लब्धार्थ पुरुषों को किंचित्स्वाद होगा धर्म्महीं दीखेगा और जैसीहानी होवेगी तैसीही ऋद्धि होगी जब धर्मग्रहणकियाजावेगा तब सत्ययुगकी प्रवृत्तीहोगी सत्ययुगमें साधुवृत्तीश्रेष्ठहै और कषायधारणमें हानिहै कालएकही है जैसे हीनवर्णवाला चन्द्रमा ८९।९१ अँधेरेसेयुक्त चन्द्रमावत् कलियुग है और अँधेरेसे रहित चन्द्रमावत् सत्ययुग है ९२ अर्थवाद परब्रह्म तथा वेदार्थ जिसको कहते हैं तिसको बिना विवेक और बिनाजाने भागकीतरह लोगधारणकरेंगे बांछितवादको तपमानैंगे उसीतपको श्रेष्ठ कहैंगे और गुणोंसे कर्म्मोंकी निवृत्ती करदेंगे ९३।९४ झूठेकर्मवाले गुणोंसहित पुरुषको देखके देशकालानुवर्त्तिनी आशीर्वाद युग युग में यथाकालऋषियों को युक्तकरतेहैं ९५ यह ऋषियोंका कथनहै और यहां धर्म अर्थ काम और वेदकी निवृत्ती करेंगे ९६ युग युग में तैसेही पुरुषको पवित्र आशीर्वादोंमें युक्तकरेंगे ९७ और बिधिस्वभाव से युगोंमें प्रवृत्तहोनेवाली बहुतकाल परिचर्य्यामें जीव एकक्षणमात्र बासकरके तैसेही क्षय तथा उत्पत्ति से परिवर्त्तमान रहता है ९८॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेभविष्यं नामसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ११७॥

एकसौ अठारहका अध्याय॥

व्यासजीबोले कि सबभूतोंमें तीनप्रकारकासंचारहै नैमित्तिक प्राकृतिक और आत्यंतिक तिनमेंसे ब्राह्मसंज्ञकनैमित्तिकमानाहै और कल्पकेअंतमें उसका संचार

होताहै मोक्ष आत्यंतिक संचार है और द्विपरार्द्ध संज्ञा वाला प्राकृतिक संचारमानाहै १।२ मुनिजनोंने पूछा कि हेभगवन् परार्द्धसंज्ञाका आपबिस्तारसेबर्णनकरोजिसी को द्विगुणीकरके प्राकृतका संचारहोता है ३ ब्यासजी बोले कि एकसे स्थान स्थान दशगुणा करके जितने हों उसके अठारहवें भागको परार्द्ध कहते हैं ४ परार्द्ध के द्विगुणे मानको प्राकृतलय कहते हैं और जब सम्पूर्ण प्रपंचव्यक्तमें लीनहोजाता है उसे कारणरूपलय कहते हैं ५ मनुष्यके निमिषमात्रके पन्द्रहगुणेको काष्ठा कहते हैं ६ तीस काष्ठाको कला कहते हैं पन्द्रह कलाको नाड़िका कहते हैं ७ और तिसीके मानसे पलसंज्ञाहै चार अंगुलकी सुवर्णकी छिद्रयुक्त शलाकासे जलप्रस्रवीको घटीकहते हैं हे द्विजसत्तमो दो २ नाड़िकाओंके प्रमाण को मुहूर्त्त कहते हैं तीसमुहूर्त्तको अहोरात्र अर्थात् दिन रात्रि कहते हैं तीस अहोरात्रको मास कहते हैं द्वादश मासको वर्ष कहते हैं और वह वर्ष देवतोंका अहोरात्र होताहै तीनसौसाठ वर्षोंका देवतों का एक वर्ष होता है ८।१० और देवतोंके बारहहजारवर्षका चारयुगका प्रमाण कहाहै चारहजार युगोंका ब्रह्माका दिवस होता है और चौदह मनुओंकी कल्पना युग प्रतियुग कहीहै और उसके अन्त में ब्राह्मसंज्ञक नैमित्तिक लय होता है ११ हे द्विजेन्द्रो उस प्राकृतलयका स्वरूप फिर मुझसे सुनो १२ कि चारहजार युगोंके अन्तमें जब पृथिवीतल क्षीणप्राय होजाता है तब सौ वर्षों तक वर्षा नहींहोती १३ और स्वर्गमें अनेकप्रकारके राजाओंको

पीड़ा होनेसे वे क्षयको प्राप्त होते हैं १४ फिर कृष्ण भगवान् रुद्ररूपी तथा अव्यय सम्पूर्णप्रजाको क्षयकरके अपने आत्मामें स्थित करनेकेलिये यत्नकरतेहैं १५।१६ और शम्भु भगवान् सूर्य्यकी सप्त किरणोंमें स्थित हो सब प्राणिभूत गुणों और पृथ्वीके सब जलों को शोषतेहैं १७ और समुद्र नदी पर्वत पर्वतोंके भिरनें और पाताल में स्थित जल सबक्षयको प्राप्तहोजाते हैं १८ फिर भगवान् उसजलके आहारके प्रभावसेबढ़जातेहैं और उनसातकिरणों से सप्तसूर्य्य होजाते हैं १९ तब नीचे ऊपर सप्तदिवाकर प्रकाशहोते हैं और वे पातालतल सहित त्रिलोकी को दग्धकरदेते हैं२० प्रकाशमानभास्करद्वारा दह्यमान त्रिलोकी तथा नदी और समुद्रों सहित पर्वतों का ऐश्वर्य्य स्नेहरहित होजाता है २१ हे द्विजो सम्पूर्ण त्रिलोकी वृक्षों तथा जलसेरहित होजातीहै और पृथ्वीकी आकृती कछुवेकीपीठकेसमान होजातीहै२२फिर हरिभगवान् कालरूपी कठोरअग्नि के रूपको धारणकरके तथा शेषरूपहोके श्वासरूपीकष्ट से नीचेके पाताल लोकोंको दग्धकरतेहैं २३ और सब पातालों को दग्धकरके महान् प्रकाशहोता है फिर वह अग्नि वसुधातलपर प्राप्तहोके२४ भुवलोक तथा सब स्वर्ग्गलोकको दारुणज्वालासे व्याप्तकर वहांही स्थित होताहै २५ और त्रिलोकी की ज्वालाके परिवर्त्तन से क्षीणहुआ महाप्रकाशमान होताहै २६ हे द्विजो तब पृथ्वी सहित अग्नि से हृताधिकारहुये सब लोक महर्लोकमें चलेजातेहैं २७ और उससेभी अधिक ताप

से तपायमानलोक अन्यलोकमें चलेजातेहैं२८हे मुनि-
सत्तमो फिर जनार्द्दनभगवान् सब जगत्को दग्धकरके
अपने श्वाससे मेघोंको उत्पन्न करता है २९ और ह-
स्तियों के समूहकी तरह बिजली से युक्तहोके मेघ म-
हाघोर शब्दकरनेलगते हैं ३० फिर घोररूपको धारण
कर मेघआकाशमें प्रवर्त्तहोजाते हैं ३१ कोई अंजन
केसेरूपवाले कोई कमोदनीकेसेरूपवाले कोई धूयेंकेसे
वर्णवाले ३२ कितनेक पानी को धारण करने वाले
कितनेक हरिद्राके वर्णकी कांति को धारणकरने वाले
कितनेक लाक्षाके रसकी कान्ति को धारणकरनेवाले
कितने मणियोंकेसे तेजको धारणकरनेवाले कोई इन्द्र
नीलमणीकेसे तेजको धारण करनेवाले कितने सफेद
शंखकीसी कान्तिको धारण करनेवाले कितने जाति
कुलकीसी कान्तिको धारणकरनेवाले कितने तीजनाम
वाले जीवकीसी लालकान्तिको धारणकरनेवाले कितने
मनशिल औषधी कीसी कान्तिको धारण करनेवाले
कोई बंशकेपत्रकीसी कान्तिको धारणकरनेवाले कितने
श्रेष्ठ पुरोंकेसे आकारवाले कितने पर्ब्बतोंकेसे आका-
रवाले कितने लोहेके अङ्गारके सदृश कांतिवाले और
कितने स्तम्भकेसे मुख और बड़ी कायावाले महाघोर
शब्द करते सब आकाश को पूरलेते हैं और मूसल
धार वर्षाकरके त्रिलोकीमें फैलीहुई अग्निको शांतकर-
देतेहैं ३३।४१ जब अग्नि नष्टहोजातीहै तब वे घनरूप
बादल अपनी पैनीधारोंसे सब जगत् को तृप्तकरतेहैं
४२ और तैसेही भुवर्लोक ऊर्ध्वलोक और स्वर्गलोक

कोभी तृप्तकरतेहैं ४३ अन्धकार युक्त लोक जब स्था-
वर जंगम जीवोंसे रहित होजाताहै तबभी येमहाभाग
वाले मेघ सैकड़ों बर्षोंतक बर्षाकरनेमें युक्तरहते हैं ४४॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेब्राह्म्यनैमि-
त्तिकोनामअष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ११८॥

एकसौउन्नीस का अध्याय ॥

व्यासजीने कहा कि हे द्विजो सप्तर्षियोंके स्थानका
आक्रमण करके तब सम्पूर्ण जगत् एकार्णव जल में
स्थितहोजाताहै १ और विष्णुकेश्वाससे निकलाहुआ
बायु सैकड़ों बर्षोंतक मेघों को नाशकरताहै २ फिर
सर्बभूतमय अचिन्त्य भूतभावन विश्वकाअनादि तथा
आदि भगवान् सम्पूर्ण वायुको पानकरके ३ एकार्णव
समुद्रमें शेषशय्यापर स्थितहोके शयनकरतेहैं ४ और
जनलोक में प्राप्त होनेवाले सनकादिक सिद्धों द्वारा
स्तुत कियाहुआ और ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोनेवाले मुमु-
क्षुओंसे चिन्त्यमान ५ अपनी मायामयी दिव्य योग-
निद्रामें स्थित होतेहैं ६ हे विप्रो जब वासुदेवभगवान्
ऐसे चिन्तवन करतेहैं यह नैमित्तिक नामवाला प्रलय
का संचारहै ७ जब वह जागताहै तभी जगत्भी चेष्टा
करताहै ८ और जब निमीलन करताहै तब शय्याशय
कहावताहै ९ एकार्णवलोकमें चारहजार युगोंका ब्रह्मा
का एकदिवसहोताहै और इतनीही प्रमाणवाली रात्री
है १० रात्रीके अन्तमें जागाहुआ अजपरमात्मा सृष्टि
को करताहै जैसे ब्रह्मरूपको धारणकर विष्णुने पहिले
सृष्टिको रचा ११ हे द्विजसत्तमो यह कल्पद्वार पर्यन्त

आवान्तरनैमित्तिकप्रलयहै और इसकेउपरान्त प्राकृत प्रलयकरतेहैं १२ जब वृष्टि और अग्निसम्यक् काल में लीनहोजातेहैं तब सबलोकों तथा सब पातालादि-कोंमें १३ महदादिक विकारोंकाभी विशेषतासे क्षयहो-जाताहै और जब कृष्ण फिर इच्छाकरताहै तब उनका सञ्चार होता है १४ पहिले भूमी के गन्धादिक रसको जल ग्रसलेताहै १५ और जब गन्धादि तन्मात्रा नष्ट होजाते हैं तब पृथ्वी जलात्मक होजाती है १६ और वेगसे संयुक्त महाशब्दवाले जलकी प्रवृत्ती होजातीहै और वहसर्वत्र ग्रसनकरता और आप रमणकरताहुआ स्थित होता है १७ तब जलके तरंगों से चारों तर्फ से लोक आवृत होजाता है और जलमय गुणको ज्योती पानकरजाती है १८ और अग्नि में स्थितहोके जल चारोंतर्फ से तेजसे आवृत होजाताहै १९ जब अग्नि सर्व्वव्यापी जलको ग्रहण करलेता है तब यह जगत् हौले हौले उस अग्निमें पूर्णहोजाता है २० और उस अग्नि की लटाओं से ऊपर नीचे भीतर से सब लोक व्याप्तहोजाता है २१ फिर ज्योतिकी परमकान्तिका क-रनेवाला वायु होताहै और वह वायु जब उस वायुभूत अखिलात्मामें लीनहोजाताहै २२ तब रूपतन्मात्रा नष्ट होजाती हैं सूर्य्य अपने रूपको प्राप्त होजाता है और ज्योति आपही शांतहोजाती है तब महान्वायुसे लोक कम्पायमान होजाता है २३ जब लोकमें कुछ भी नहीं रहता और वायुतेज में स्थित होजाता है २४ तब वह अपनेवेगसे प्रलयकोप्राप्तहोके ऊपर नीचे तिर्यक्लोकमें

दशों दिशाओं को कम्पाता है २५ और आकाश के स्पर्श होनेवाले गुणोंका ग्रसनकरता है तब अनावृत वायुका वेगशान्तिको प्राप्तहोजाताहै २६ और बिना रूप स्पर्श गन्ध और मूर्त्तिके सबलोकमें पूरितहोके महत्प्रकाशवाला होताहै २७ तब छिद्रयुक्त समस्त आकाशमण्डल शब्दलक्षणसे युक्तहोजाता है २८ फिर उसआकाशके शब्द आदि गुण भूतादिकोंको ग्रसलेते हैं २९ और उनकीस्थितिमें एकबार अभिमानात्मक यह भूतादितामस रूपकहेहैं ३० प्रलयमें पृथ्वीआदिक पंच महाभूत परस्पर प्रवेशहोजाते हैं और जिसके यह सब आवृत होरहा है तिसकेद्वारा सब जलमें लीनहोजाते हैं निदान सप्तद्वीप समुद्रपर्य्यन्त सप्तलोक और सप्त पर्वत जितना कुछ जलसे आवृत है सब ज्योतीद्वारा पानकियाजाता है ३१।३२ ज्योति और वायुभी लयको प्राप्तहोजातेहैं और आकाशमें वायुलयहोजाताहै ३४ आकाश को महानूरूपवाले भूतादि ग्रसलेते हैं और इनके सहित महदादिकों को प्रकृती ग्रसलेती है ३५ हे द्विजोत्तमो अब हम गुणोंकीसमता उत्कृष्टता तथा न्यूनता और प्रधानप्रकृतिका परमकारण कहतेहैं ३६ जब व्यक्तस्वरूप अव्यक्तमें लीनहोजाताहै ३७ और एकशुद्ध अक्षर नित्य सर्वव्यापी सर्वभूत परमात्माका अंश ३८ नहीं रहता एवम् नामजात्यादि कल्पना भी नहीं रहती तब सत्तामात्र ज्ञानात्मक स्वरूपवाला परब्रह्म कहाताहै ३९ और वही परमात्मा परमेश्वर विष्णु इस सब को लयको प्राप्तकरता है जहां से फिर आगमन

नहीं होसक्ता ४० वह पुरुषरूप परमात्मा अपनी व्यक्ता-व्यक्तरूपवाली मायाको अपनेहीमें लीनकरलेताहै ४१ वह परमेश्वर सबका आधाररूप है और विष्णुनामसे सब वेदोंमें व्याप्तहै ४२ प्रवृत्ति तथा निवृत्ति विधान से वैदिककर्म दो प्रकारके हैं और उनदोनों से यज्ञमूर्त्तिभगवान् का यजन कियाजाताहै ४३ ऋक् यजु और सामके मार्गसे उसभगवान् की पूजाहोती है ४४ और यज्ञेश्वरों यज्ञपुरुषों और ज्ञानमूर्त्ति पुरुषोंद्वारा ज्ञानात्मक योगसे वह देव पूजाजाताहै ४५ योगियोंको मार्ग जब निवृत्तहोजाताहै तब विष्णु मुक्तिफलको देताहै ४६ थोड़ा बहुत कुछ जो विधान यहां करतेहैं और जो कुछ वाणीसे उच्चार होताहै सो सब अव्यय विष्णुहै ४७ वह प्रकट है नहीं प्रकट है पुरुष है अव्यय है परमात्मा है विश्वहै और विश्वरूपको धारणकरनेवाला है ४८ व्यक्त अव्यक्तरूपवाली प्रकृति उसमें लीनहोजाती है और अव्याहतात्मा परमेश्वरही पुरुषरूप लीनहोजाताहै ४९ हे द्विजो यह द्विपरार्द्धात्मककाल मैंने कहा है जो विष्णु का दिवस है ५० और उसदिनके अन्तमें व्यक्तप्रकृति तथा पुरुष परमात्मा उतने प्रमाण स्थित रहते हैं ५१ हे तपोधनो उस नित्यपरमात्मा के दिनका जितना प्रमाण है तितनीही रात्री है ५२ और उस ईशका उपचार भी ऐसेही कहाजाता है हे मुनिशार्दूलो यह प्राकृतलय है ५३ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांयथानामएकोनविंशाधिक शततमोऽध्यायः ११९ ॥

एकसौबीस का अध्याय॥

व्यासजी बोले कि हे विप्रो अध्यात्मविद्याको जानके ज्ञान वैराग्ययुक्त पुरुष आत्यन्तिक लयकोप्राप्तहोतेहैं १ और अपने शरीरमेंही आध्यात्मिक दोप्रकारकाहै शिर का रोग प्रतिश्याय ज्वर भगन्दर गुल्म अर्श छर्दि नेत्र रोग अतीसार और आमसंज्ञक अनेकरोगों और देहज और मानस तापोंद्वारा यहशरीर भेदनहोताहै २।४ काम क्रोध लोभ मोह भय विषाद शोक निन्दा बमन ईर्षा तिरस्कारआदि मानस तापभी अनेकप्रकारकेहैं गर्भमें जन्तु सुकुमार शरीरमें स्थितहोके बासकरताहुआ भग्नपृष्ठ और ग्रीवाआदि अंगोंकी चेष्टाकरता है५।७ और चर्चरा खट्टा तीक्ष्ण उष्ण लवणआदि माताके भोजन करनेसे गर्भमें बध्यमानहो अति दुःखको सहताहै ८ अंगके पसारने और सङ्कोच करनेसे तथा अंगकी रक्षाकरनेकी वहां सामर्थ्य नहींहोती है ९ और विष्ठा मूत्र मलादि से सर्बथा पीड़ाको प्राप्तरहताहै पर वहां ईश्वरसे रक्षाको प्राप्तहोताहै १० निजकर्मोंके संचय से दुःखको प्राप्तहो जीव गर्भमें आताहै और विष्ठा मूत्र वीर्य आदिसे लेपित मुख ११ और प्राजापत्य वायुसे पीड्यमान अस्थि बन्धनोंवाला प्रबलासूति बायुद्वारा अधोमुख कियाजाताहै १२ और माताकेजठरसे आतुर हुआ क्लेशकरके निकसनेको प्राप्तहोताहै १३ और महतीमूर्च्छाको प्राप्तहो पीठसे युक्तहुआ उत्पन्न होताहुआ विज्ञानरूपी वंशको प्राप्तहोताहै १४।१५ हेमुनिसत्तमो उत्पन्नहोनेपर कटिसे घिसताहुआ योनिद्वारपर स्थित

होताहै और हाथपैरचलने और खुजलानेमेंभी असमर्थ रहताहै १६ परिवर्त्तनहोनेमेंभी असमर्थ रहताहै दूसरे की इच्छासे स्नान पान आहारादिकमें युक्तहोताहै १७ और दंशादि जीवोंके निवारणकरनेमें युक्त नहींहोसक्ता निदान जन्ममें अनेक दुःखहैं और जन्मसे उत्तर भी अनेक दुःखहैं १८ बालभावमें पढ़नेमें ताड़नादि को सहताहै और अज्ञानरूपी अँधेरेसे मोहमेंप्राप्तहुआ १९ इस बातको नहींजानता कि मैं कहांसे आयाहूँ कौनहूँ कहां जाऊँगा कौन आत्माहै २० किसबंधनसे बँधाहुआ हूँ कारण अकारण कौनहै क्या कृत्यहै क्याअकर्त्तव्यहै क्या गुणहैं और क्यादोषहैं २१ इसप्रकार पशुकेतुल्य मूढ़ शिश्न तथा उदरपरायण जन अज्ञानसे होनेवाले तमजनित दुःखको प्राप्तहोते हैं २२ हे द्विजो तामस भावको अज्ञानकहतेहैं अज्ञानी कार्य्यके आरंभमें कर्मों के दूरकरने के वास्ते प्रवृत्तहोते हैं २३ और कर्मों के लोपकाफल महर्षियोंने नरककहाहै इसकारण अज्ञान जनित दुःखोंसे दुःखित २४ तथा जरावस्थामें जर्जरदेह से शिथिल अवयववाला पुरुष विचरता है २५ और सबअंगोंके विपर्यय तथा नासाके विपर्ययको प्राप्तहोके सब स्थानोंमें पृष्ठको निवाके दुःखको प्राप्तरहताहै २६ जठराग्नि से छिन्नहुआ थोड़ा भोजन करताहै थोड़ी चेष्टाकरताहै २७ कान नाक नेत्र स्वर बर्ण मुख विवर मंद रहते हैं और मरणके समयमें सब रोधको प्राप्तहोजाते हैं २८ मरते समय एकबारभी हरि का नाम उच्चारण करनेसे महादुःख दूरहोजातेहैं २९ और श्वास कास

आदि वृद्धावस्थाको दुःखदेनेवाले सब दूरहोजातेहैं ३०
जराअवस्था में जीव नौकर पुत्र और स्त्रीके मानसे प-
रिप्लुत तथा क्षीणबल और आहार विहार एवम् प्रिय
वचनोंसे रहित होजाताहै ३१ और परिजनों से हास्य
को प्राप्तहोता है सब बान्धवों और उसीजन्म के अपने
चेष्टितकर्मों युवाअवस्था३२और कष्टादि सब वस्तुओं
का जराअवस्थामें स्मरणकरताहै ३३ मरणसमय शरीर
पीला और परवश तथा ३४ शिथिलग्रीवा और शि-
थिलहस्त होजाताहै ३५ और गृहादिकों में नानाभृत्यों
की प्रेरणासे चेष्टाकरताहै और अति ममतासे आकुल
रहताहै ३६ मर्मके भेदन करनेवालोंद्वारा दारुण क्रकच
शस्त्रों ३७ तथा शरोंसे छेदाजाता है और प्राण खैंचे
जाते हैं ३८ तब हाथ पैरोंको बारम्बार फेंकताहै और
ओष्ठ सूखजाते हैं तथा कंठमें घुरघुर शब्द होनेलगता
है ३९ ऐसे२ घोर दोषोंसे पीड़ितहोके श्वास निकसता
है और अनेकदुःखोंकी प्राप्तिहोतीहै ४० निदान महा-
भयसे व्याप्त और तृषा क्षुधासेपीड़ित बड़ेक्लेशोंसे मार्ग
चलताहै ४१ और यमके किंकरोंकी फांसीमें बँधा दंडों
की ताड़ना को सहता है और फिर उग्रलोक को प्राप्त
होके ४२ यमके दर्शन करनेके वास्ते चलता है और
वह मार्ग हस्तियों तपायमान बालू ४३ तथा वह्नि सर्प
और श्वान आदि जीवोंसे व्याप्त है हे द्विजो उस मार्ग
में जीव कहीं शस्त्रोंसे पीड़ित होताहै कहीं व्याघ्रके मुख
में प्रवेश होताहै कहीं गृध्र जीवोंसे भक्षण कियाजाता
है कहीं हस्तियोंसे दबायाजाताहै कहीं बिलके मध्यमें

प्रवेश होताहै और कहीं सर्पादिकोंसे डसाजाताहै इसी प्रकार बहुतसे दुःखमार्गमें जीवको प्राप्तहोतेहैं४४।४८ हे विप्रो नरकोंमें भी बहुतसे दुःख प्राप्तहोते हैं जिनकी संख्या वर्णननहींहोसक्ती४९हे द्विजो केवल नरकोंमेंही दुःख नहीं होता किन्तु स्वर्गमें भी पापोंसे भयभीतका पापदूरकरनेकी निवृत्तीनहीं है५०प्रथम गर्भमें प्रवृत्ति होती है फिर जन्म होताहै फिर मरण होता है इसीप्रकार बारम्बार जन्म मरणको प्राप्त होता है ५१ कहीं उत्पन्न होतेही बालभावमें तथा कहीं युवावस्थामें मृत्यु को प्राप्त होजाता है ५२ और जहां २ जीवकी प्रीती होती है तहां २ दुःखरूपी वृक्षके बीजको बोताहै ५३ सुखकी इच्छावाले पुरुषोंको स्त्री पुत्रादिकोंकेलिये गृह क्षेत्र बनादि बनानाचाहिये जैसेधूपसे तपेप्राणीको वृक्ष की छायासे रहित सुख नहींहोता तैसेही संसाररूपी दुष्ट अग्निसेतापित चित्तवाले पुरुषको सुखकीप्राप्ति नहीं प्राप्तहोतीहै५४।५५ इसीकारण तीनप्रकारकी दुःखकी गतिको मनुष्य गर्भ जन्म जरादि स्थानोंमें प्राप्तहोता है ५६ अतिआह्लाद तथा स्वभावसे एकांतभक्तिकरनेसे भगवान्‌की प्राप्ति कहीहै ५७ इसकारण बुद्धिमान्‌को भगवान्‌की प्राप्तिके लिये यत्न करना योग्यहै ५८ हे द्विजोत्तमो उस भगवान्‌की प्राप्तिका कारणज्ञानहै और कर्म्मभी है ५९ आगमोक्त तथा विवेकोक्त ज्ञान दो प्रकारका है शब्द ब्रह्म तो आगमजहै और परब्रह्म विवेकजहै ६० अज्ञान अन्ध तमकी तरह बड़ा है और इन्द्रियोंसे उत्पन्न होता है ६१ और ज्ञान सूर्य्यवत् है

और विवेकसे उत्पन्न होताहै ६२ हे मुनिसत्तमो जिस ज्ञानका स्मरण करके मनुने वेदार्थको कहा ६३ सो सब मैं कहताहूं सुनो दो ब्रह्म कहेहैं शब्दब्रह्म तथा परब्रह्म और शब्दब्रह्म में युक्त होके जीव परब्रह्मको प्राप्त होजाता है विद्याभी दो प्रकारकी हैं अथर्वण स्मृतीवाली परविद्याहै औरऋग्वेदमयवाली अपरविद्याहै६४।६६ जिस अव्यक्त अजर अचिन्त्य अज अव्यय अनिर्देश्य अरूप तथा हाथपैरोंसेयुक्त ६७वित्तरूप सर्वगत नित्य भूतयोनिका कारण व्याप्य व्याप्तरूप ६८ को सूरिजन देखते हैं वह परमधामरूप ब्रह्म मोक्षकी आकांक्षावाले पुरुषोंको जानना योग्यहै ६९ जो श्रुतियों के वाक्यसे सूक्ष्म कथन कियाहुआहै वह विष्णुका परम स्थानहै७० और भूतोंकी उत्पत्ति तथा लय और विद्या अविद्या को जो जानता है वह भगवान् है ७१ ज्ञान शक्ति बल ऐश्वर्य्य वीर्य्य और तेज ये सब भगवत् शब्दसे युक्त हैं और भगवान्के गुणोंकी चेष्टाके बिना नहीं जानेजाते ७२ उस परमात्मामें सब भूत बसतेहैं और भूतों में सर्वात्मा वासुदेव का स्मरण होताहै ७३ महर्षियों के पूँछनेपर प्रजापति ने अनन्तरूप वासुदेव के नामों की संख्या कहीहै ७४ कि वह वासुदेव सब भूतोंके अन्तरबसताहै जगत्काधाताहै विधाताहै औरप्रभुहै७५ वह परमात्मा सब भूतों की मायाके विकारवाले गुणों तथा दोषोंका विस्तार करताहै सर्वावरण रहित अखिलात्मा से भुवनान्तर को विस्तारित करताहै समस्त कल्याणवाले गुणोंसे युक्तहै और अपनी शक्तिके लेश

से भूतसर्गको आवृतकरता है ७६।७८ इच्छासे गृहीत किया है अभिमती युक्त बड़ा देह जिसने और साधन कियाहै सब जगत्का कारण जिसने ७९ वह भगवान् तेज बल ऐश्वर्य्य शक्ति आदि गुणोंका एक समूह रूपहै और परोंकाभी परहै ८० जहां कोई क्लेशादिक नहीं है और जिसकेद्वारा परावरब्रह्ममें समष्टि व्यष्टिरूपईश्वर तथा व्यक्त और प्रकटरूप ८१ सर्वेश्वर एवम् सर्वदृक् सर्व्ववेत्ता तथा समस्त शक्तिरूप परमेश्वर जानाजाता है वह ज्ञानहै ८२ परमनिर्मल और एकरूप जिससे दीखताहै और जिसके द्वारा ऐसे रूपकी प्राप्तिहोती है वह ज्ञानहै इनसे भिन्न अज्ञानहै ८३ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेआत्यन्तिकोलयनामविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२० ॥

एकसौइकइसका अध्याय ॥

मुनिजनोंने पूछा कि हे पुरुषोत्तम अब संयोग तथा दुःख संयोगको कहो जिसकोजानके हम ज्ञानयुक्तहों १ तब योगबिदों में श्रेष्ठ वेदव्यासजीने उनके प्रश्न को सुनके परम प्रसन्नहो कहनेलगे २ कि हेबिप्रो अब मैं भवनाशन योगकेभेदको कहताहूं जिसका अभ्यासकरके योगिजन दुर्लभमोक्षको प्राप्तहोते हैं ३ पहिले योग शास्त्र तथा इतिहास पुराण वेदको सुनके और भक्तिसे गुरूका आराधनकरके ४ एवम् आहार और योगदोषों तथादेशकालकोजानके बुद्धिमान्जन योगाभ्यासकरै ५ द्वंद्वसेरहितहोकेरहना यवकेसत्तुओं तक्र मूल फल और दूधकोभक्षणकरना ६ एवम् कूटेहुयेतिल्लोंका कणकामात्र

आहार योगसाधनमें पवित्रहै ७ क्लेश तथा दुःखयुक्तहोके वा क्षुधाकालमें योग नकरनाचाहिये पाखण्डयुक्त देश में तथा जाड़ा उष्ण पवन शब्द वा जलयुक्त स्थानमें एवम् जीर्णस्थान चौराहे तथा सर्प्पादि युक्त स्थानमें श्मशान अग्निके समीप यज्ञस्थान बंबी तथा भययुक्त स्थानमें अथवा कूपकेसमीप वा शुष्कपत्तोंके समूहपर योगमें युक्त न होनाचाहिये ८। ११ इतने स्थानों को त्यागके मूढ़कीतरह जो योगमें युक्तहोताहै वही योगी है १२ योगमें इतने विघ्नकारी दोषहैं कि शुद्धज्ञानवाले योगिजनके योगयुक्त होनेमें बधिरता जड़ता स्मरणमें हानि तथा मूकता अन्धता और ज्वर तत्कालहोजाते हैं इसकारण योगको जाननेवाले पुरुष को सर्व्वथा शरीरकी रक्षाकरनी योग्यहै १३।१५ क्योंकि धर्म अर्थ काम और मोक्षका साधन करनेवाला शरीरही है १६ निर्जन गुह्य शब्दरहित निर्भय पर्वत हवनस्थान अथवा शुद्ध रमणीक एकान्त वा देवस्थान आदि उत्तम आश्रमोंमें रात्रीके पिछले अथवा पहिलेप्रहरमें और दिन के पूर्व अथवा मध्यभागमें सावधान और जितेन्द्रियहो आसनबांध और पूर्व तथा पश्चिमकी ओर मुखकरके समस्थानपर स्थितहो १७।२१ किसीकी वांछा नकरे सत्यबोले शुद्धरहे निद्राकोत्यागे क्रोधकोजीते सबभूतों में हितरक्खै कठोरवचनोंको सहै धीररहै कायाको समकरै पैरोंको मस्तकपर तथा हाथोंको नाभिपर स्थितकरै २२ अथवा शांतहोके पद्मासनपर स्थितहो नासाके अगाड़ी दृष्टीका स्थापनकरै २३।२४ और श्वासकोरोकके प्राणा-

यामकरै मुनिरूपहोके हृदयमें मनसे इन्द्रियोंके समूहको रोकै दीर्घप्राणायामकरै अधोमुखरहै और बुद्धिको चला-यमान न करै २५ योगमेंयुक्त सोमपानकरनेवालेपुरुषको परमपद प्राप्तहोताहै जो बाह्यात्मासे परित्यागकरै २६ और अन्तरात्मासे आरामकरै वहपुरुष निश्चय मोक्ष कोप्राप्तहोजाताहै २७ जाग्रत् स्वप्न और सुषुप्ति इनतीन अवस्थाओंकोत्याग जो चौथेपदमेंस्थितहो और शोक और वांछाका त्यागकरके २८ चंचलमनको परमात्मामें लगावे निदान विषयोंको त्यागके योगसिद्धिको प्रकाश करै २९ और जब विषयोंसे रहित चित्त परब्रह्ममें लीन होजावे तब समाधिमें योगयुक्तको परमपद प्राप्तहोजा-ताहै ३० योगीका चित्त यदि कर्म्मोंमें असक्त होजावे तो वह आनन्दको प्राप्तहोके दुःखको प्राप्तहोताहै ३१ तीनोंधामों से न्यारे चौथे पुरुषोत्तम नामवाले पद को योगी प्राप्तहोके मोक्षको प्राप्तहोजाताहै इसमें संशय नहींहै ३२ योगीपुरुष चाहे पद्मासनकरै वा नकरै अथवा नासाग्रसे दृष्टीकरके देखे वा नदेखे पर मन और इन्द्रि-योंके संयोगसे योग करै ३३ हे मुनिश्रेष्ठो यह तो मैंने मुक्तिका देनेवाला योगकहाहै ३४ अब संसारकी मुक्ति के हेतु और क्या सुननेकी इच्छाकरतेहो लोमहर्षणजी बोले कि वे विप्र इस वचनको सुनके साधु साधु कहने लगे और व्यासजी का पूजनकर तथा सराहके फिर पूछनेके वास्ते उद्यतहुये ३५।३६॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेयोगाध्यायोनाम एकविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२१॥

एकसौबाईस का अध्याय॥

मुनिजनोंने कहा कि हे मुनिश्रेष्ठ आपके समुद्ररूपी मुखसे उत्पन्न बाणीरूपी अमृत को पानकरते हमको तृप्तिनहींहोती १ इसकारण हेमुनि मुक्तिके देनेवाले योग को बिस्तार करकेकहो दोप्रकारके सांख्ययोगकोभी हम सुनने की इच्छाकरते हैं २ हे ब्रह्मन् बुद्धिमान् बेदपाठी यज्ञ करनेवाला यज्ञों में बिख्यात तथानिंदा रहित पुरुष गतिको जानेबिना कैसे ब्रह्मको प्राप्तहोताहै ३ तप ब्रह्मचर्य्य तथा सर्वत्यागवाली बुद्धिसेपूछाहुआ सांख्य अथवा योगहमसेकहो ४ किजिसउपायसे पुरुष मन तथा इन्द्रियों को एकाग्रकरसक्ताहै सो कहनेको आप योग्य हो ५ व्यासजीबोले कि विद्या इन्द्रियग्रह तप तथा सर्व त्याग से अन्यत्रकोई भी सिद्धिको प्राप्त नहीं होसक्ता ६ पहिले ब्रह्मासे रचेहुये सब महाभूत प्राणोंकोधारण कर बहुतसे शरीरोंमें दीखते हैं ७ भूमीसे देहहोता है जलसे स्नेहहोताहै ज्योतिसे चक्षुहोतेहैं और प्राण अपान के आश्रय वायुरहताहै शरीरों का कोष्ठ आकाश है ८ बलमें विष्णुरहताहै कोष्ठमें अग्नि भोगनेकी इच्छा करताहै कानोंमेंदिशाहैं ९ तथा जिह्वामें वाणीरूप सरस्वतीहै कान त्वचा नेत्र जिह्वा और नासिका यह पांचों ज्ञानइन्द्रिय कहाती हैं १० और येही द्वार की सिद्धि केलिये द्वारकहेहैं शब्द स्पर्श रूप रस और गंध येपांच इन्द्रियों के पृथक् पृथक् विषयहैं ११ और इन्द्रियमन के आधीन होतीहैं मन सदाभूतात्मा परमेश्वरके हृदय में स्थितहै १२ और मनही सब इन्द्रियों का ईश्वर है

नियम में तथा विसर्गमें भूतात्मारूप मन है १३ और इन्द्रिय इन्द्रियोंके विषय तथा मन स्वभावसेही चेतन रहते हैं प्राण तथा अपानरूपी वायुदेहमें स्थितरहता है १४ सत्वगुण किसी के आश्रय नहीं है सत्व तेजकी रचनाकरता है और अन्य गुणोंकी रचना नहीं करता १५इसप्रकार षोड़शगुण तथा सत्रहवां देहयुक्त रहताहै हे विप्रो मनसे आत्मारूपमनमें आत्माकोदेखताहै१६ और नेत्रों तथा सब इन्द्रियों से कुछ देखने को योग्य नहीं है १७ मनके प्रकाशहोनेपर महान् आत्माका प्रकाशहोता है शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध १८ शरीर से रहित हैं शरीरोंमें इन्द्रियों को देखतेहैं पर सब देहोंमें ये कान्तिवाले प्रकट नहीं हैं १९ जो पुरुष शरीरमें इन को देखताहै वह ब्रह्मरूप होजाताहै २० सम्यक् विद्या भजनमें युक्त ब्राह्मण गौ हस्ती श्वान तथा चाण्डाल में जो समदर्शी है वही पण्डितहै२१और वही सबभूतों में बसताहै जो एकहै और महान् आत्मावालाहै और उससे यह जगत् विस्तृत होरहा है २२ जो सब भूतों में अपने आत्मा को तथा सब भूतोंकी आत्माको सम देखता है वही सर्वात्मा ब्रह्मको प्राप्तहोताहै २३ और जबतक आत्माको आत्मामें न जाने तबतक ब्रह्मकी प्राप्तिनहीं होती२४जो ऐसे निरंतर जानताहै वहपुरुष अमृतपानकेलिये कल्पित कियाजाताहै२५परमात्माके पदकी इच्छाकरनेवालों तथा सर्वभूतोंके आत्माभूत२६ और सबभूतोंमें हितकरनेवाले पुरुषोंके मार्गको देखके देवता भी मोह को प्राप्त होते हैं २७ जैसे आकाश में

पक्षियों और जलमें मच्छोंकीगति नहींदीखती तैसेही ज्ञानविदोंकी गतिभी नहींजानीजाती २८ कालहीआ-त्मामें आत्मासे सबभूतोंको पकाताहै और जिसआत्मा रूपी ब्रह्ममें काल पकताहै उसको कोईभी नहीं जान-ता२९वह ब्रह्म न ऊपरहै न तिरछाहै और न नीचाहै उ-सको कोईभी ग्रहणनहीं करसक्ता ३० पर उसब्रह्ममें सब लोकस्थितहैं उससे बाहर कुछभीनहींहै३१ ब्रह्मकेका-रणको मनकावेगभी नहीं पहुँचसक्ता ३२ और वहसू-क्ष्मसेभी सूक्ष्महै और स्थूलसेभी स्थूलहै उस ब्रह्मरूप परमात्माके सबकहीं हाथपैरहैं ३३ और सबकहीं नेत्र शिर और मुख और कर्णहैं और वह सबको आवर्त्तन करके स्थितरहताहै ३४। ३५ वह सबभूतोंके अन्तः-करणमें बहुतकाल स्थितरहताहै पर दीखतानहीं ३६ वह क्षर तथा अक्षररूप दोप्रकारकी आत्मावालाहै क्षर रूपसे सबभूतोंमें स्थितहै और मोक्षरूपसे अक्षरहै३७ वहहंसरूपब्रह्म परमद्वारमें जाकेसबस्थावर जङ्गमभूतों में स्थित रहताहै और अवशहै ३८ ऋषिकल्पितशरीर धारीनरोंके संचयसे उसेऋषिजन हंसकहते हैं ३९वह हंसनामवाला क्षरहै और कूटस्थ अक्षरहै वह क्षररूप विद्वान् अक्षरको प्राप्तहोके जन्ममें प्राणोंको त्यागदेता है ४० व्यासजीबोले कि हेविप्रो तुम्हारा पूछाहुआ सां-ख्य ज्ञानसे युक्तयोग मैंने कहा ४१ और अब इससे उपरान्त योगकृत्य औरबुद्धिमन एवम् सब इन्द्रियोंके एकत्वको कहूंगा ४२ आत्माको व्याप्त होनेवाले ज्ञान को उत्तम ज्ञानकहते हैं वह उपशान्त ब्रह्मचर्य्य और

अध्यात्मशील तथा आत्माराम से युक्त होके तथा प-
वित्र कर्मवाली बुद्धिसे जाननेयोग्य है ४३। ४४ काम
क्रोध लोभ मोह और स्वप्न इन पांच योग दोषों को
त्याग दे क्रोधको शान्ति से जीते कामको व संकल्पों
को बर्जके जीते ४५।४६ सत्के सेवनेसे निद्राको जीते
धारणासे शिश्न अर्थात् लिंगकी रक्षाकरै ४७ नेत्रों से
हाथ पैर की रक्षाकरै नेत्र और कानोंकी मनसेरक्षाकरै
मनको वाणीके कर्षणसे रक्षाकरै प्रमाद रहितहोके भय
को त्यागदे और बुद्धिमानों के संग पाखण्ड का वर्त्ताव
नकरे४८।४९ इसप्रकार इनयोगदोषोंकोतंद्रारहितहोके
जीतै और गौ देवता ब्राह्मणको नमस्कारकरै तथा हिंसा
में मनको युक्त न करै ५० तब शुद्ध तेजमय तथा सर्व्व
रसवाले ब्रह्मको प्राप्तहोके स्थावर जंगमभूतोंको देखै
५१ ध्यान अध्ययन ग्रहणकरना सत्य लज्जा कोमलता
क्षमा शौचता आत्माकी शुद्धि और इन्द्रियों के रोकने
से तेजबढ़ता है ५२ और मनकेपापों को दूरकरता है
और सब भूतोंमें लब्धि तथा अलब्धिसे समरहता है
५३ फिर वह पापोंसे रहित तेजवाला लब्धाहार जि-
तेन्द्रिय पुरुष काम क्रोधको बशीकरके ब्रह्मपद को से-
वताहै ५४ सावधानहोके इन्द्रियों तथा मनको एकाग्र
करै और पहिली तथा पिछिली रात्रीमें मनको आत्मा
में धारणकरै ५५ पंचइन्द्रियोंसेयुक्त जीवकी यदि एक
इन्द्रियभी खण्डित होजाय तो बुद्धिभी इसप्रकार स्ख-
लितहोजाती है जैसे चर्मकी मसकसे जलझिरता है
इसवास्ते पहिलेकुछ आजीवकी तरह संकोचयुक्त मन

को धारणकरै ५६ योगको जाननेवाला पुरुष श्रोत्र चक्षु जिह्वा और घ्राणको रोकके मनमें स्थापनकरै ५७ और सब कर्मादिक संकल्पोंको दूरकरके पांचोंइन्द्रियां और मनको हृदयमें धारणकरै ५८ जब पांचों इन्द्रिय श्रोत्र चक्षु जिह्वा घ्राण त्वक् और छठा मन आत्मामें धारण होजावे तब योगकीस्थापनाकोप्राप्तहोके ब्रह्मकाप्रकाश होताहै ५९ और तभी धूमारहितअग्नि सूर्यके प्रकाश एवम् आकाश में बिजलीकी तरह आत्मा में प्रकाश दिखता है ६० और सब संसारको आत्मासे व्याप्तहुआ देखताहै ऐसा देखनेवाला महात्मा तथा सबभूतों का हित चाहनेवाला ६१ ब्रह्मासे परिमाणकियाहुआ कालपर्य्यन्त सन्देह रहितहोके उस ब्रह्मका आचरण करताहै ६२ एकान्त में स्थितरहके अकेलाही अक्षर की समताको प्राप्तहो ६३ मोहसे पान श्रवण दर्शनादिकोंमेंप्रवृत्त न रक्खे और अपराधोंसेरहित शीत उष्ण वायु६४ और सूर्यकृत उपतापको योगसेसहनकरै ऐसा करनेसे समताद्वारा तत्त्वज्ञानकी प्राप्तिहोतीहै ६५ ऐसे जो लोकमें परिचारकरै और पर्वतके शिखरपर अथवा देवतासे अधिष्ठित वृक्षकेनीचे युक्तहोके योगकरै ६६ और इन्द्रियोंके समूहको कोष्ठ में रोकके तथा मनको रोकके एकान्तमें योगका चिन्तवनकरै वह सब पापोंको जीतलेताहै ६७ जिस किसी उपायसे मनको जीतके योगको सेवे वही उसका बिमलतपहै ६८ एकाग्रहोके बासकरनेके लिये शून्यस्थानको देखे और कर्मोंमें मन को युक्तकरै ६९ कोपादिकोंको त्यागके धर्मकी लब्धीमें

युक्तरहै निंदा तथा नमस्कारादिकोंमें समरहै७० अर्थात्
न तो निन्दामें दुःखकरे और न स्तुति में आनन्दमाने
और शुभ अशुभ कर्मोंमेंभी युक्तनहो सबकाल में सम
रहै ७१ लाभहोनेमें आनन्दनहो और अलाभमें चिं-
तानकरे और सब भूतोंमें समरहै यही धर्म ईश्वरपरहै
७२ ऐसे स्वस्थ आत्मावाले सर्वत्र समदर्शि साधुको
छःमहीनोंमें शब्द ब्रह्म प्राप्तहोजाताहै ७३ वेदमार्गमें
युक्तहोके लोहा पत्थर और सुवर्णको समजाने और मोह
से युक्त वाक्यको उच्चारण न करै ७४ तो मनुष्य ऋषियों
तथा श्रेष्ठ पुरुषों के मार्ग से परमगतिको प्राप्तहोजाता
है ७५ जो बुद्धिमान् पुराण तथा अजररूप परमात्मा
का मनसे बँधीहुईइन्द्रियों से इसलोकमें विचार करते
हैं ७६ वे उस ब्रह्म की अनावृत गति अर्थात् जहांसे
फिर आगमन न होसके उसलोकको प्राप्तहोतेहैं७७॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांव्यासऋषिसंवादेसांख्ययोगो
नामद्वाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२२॥

एकसौतेईसका अध्याय॥

मुनिजनोंनेपूछा कि वेदके वचनकोकरो और कर्मों
को त्यागो यह जो वचनहै उसकोआप विस्तारसेकहो
कि आत्मविद्या से लोग किस दिशाको जाते हैं तथा
कर्मोंसे किसदिशाको जाते हैं १ और जब विद्याकर्मके
प्रतिकूल वर्त्तते हैं तब कहांजाते हैं व्यासजी बोले कि
हे मुनिशार्दूलो जो तुमने पूछाहै सो मैं संक्षेपसे क्षर अ-
क्षरयुक्तकर्म तथा विद्याको कहताहूं२ हेविप्रो कर्म तथा
विद्यागहन हैं उत्तमहैं अस्ति ऐसावचन धर्मकहाता है

तैसेही नास्ति ऐसावचन नास्तिककहाताहै दो और
येही दो पन्थाकहाते हैं पर वहांभी वेद प्रतिष्ठितरहते
हैं ३ धर्मप्रवृत्ति लक्षणवालाहै तथा अधर्म निवृत्ति ल-
क्षणवालाहै ४ कर्मोंसेजीव बँधजाताहै और ब्रह्मविद्या
से मुक्तहोजाताहै ५ इसीकारण पारदर्शि यतिजनकर्मों
को नहीं करते ६ कर्मोंही से मूर्त्तिवाला जीव षोड़शा-
त्मक उत्पन्नहोताहै ७ और ब्रह्मविद्यासे नित्य अव्यक्त
परमात्मक भगवान् प्राप्तहोताहै ८ अबुद्धिरतनर कर्मही
की सराहना करतेहैं और उसी करके देहजालमें रमण
द्वारा कर्महीकी उपासना करतेहैं ९ जिस धर्म कर्ममेंसे
नैपुण्यदर्शि परमबुद्धिको प्राप्तहोतेहैं उस कर्मको वे स-
राहतेहैं अर्थात् कूप नद्यादिकोंसे होनेवाले स्वर्गादिक
की सराहना करतेहैं १० और वे कर्मसे होनेवाले सुख
दुःख फलको प्राप्तहोते हैं ११ ब्रह्मविद्याको जो प्राप्त
होतेहैं वे शोच नहींकरते और न जीर्णहोतेहैं न वृद्धि
को प्राप्तहोते हैं १२ वह अखिल अव्यक्त पर अचल
ध्रुव ब्रह्महै जहां मानसकर्म से अव्यक्त मनवाला सुख
दुःखों से वध्यमान नहींहोता १३ और सब भूतों में
मित्रता सहित रहताहै हे द्विजो ब्रह्मविद्यामय परपुरुष
मैंने कहा १४ हे विप्रो वह पुरुष चन्द्रमाके सूक्ष्मलोक
को प्राप्तहोताहै यह ऋषियोंका कथनहै आकाश में
चन्द्रमा को देखके वह चलायमान नहींहोता और न
चन्द्रलोककी परिक्रमा करताहै १५।१६ दशइन्द्रियां
और ग्यारहवां जीव कलाओं के भार से संभृतहुआ
कर्म गुणों से युक्त मूर्त्तिवालाहै १७ और आकाश में

चन्द्रमाकी तरह वहां देवरूपहै उसी की योगसे जीते हुये आत्मावाला क्षेत्रज्ञ जाननाचाहिये १८ और वही चैतन्य गुणवाला जीवहै और सब गुणोंकी चेष्टाकरता है १९ जोकुछ सप्तभुवनोंमें कल्पित कियाजाताहै तिससे भी बड़ाहै यह क्षेत्रको जाननेवाले कहते हैं २० व्यास जी बोले कि जो कुछ प्रकृतीके विकारहैं वे क्षेत्रज्ञ कहाते हैं और जो इनको नहीं जानते वे तिससे बाहिरहैं २१ वे क्षेत्र मन तथा इन्द्रियों से ऐसे कार्य्य करते हैं जैसे अच्छे सजे हुये घोड़े पर दृढ़ असवार २२ इन्द्रियों से बड़ाअर्त्थ है अर्त्थों से बड़ा मनहै मनसे बड़ी बुद्धि है बुद्धिसे बड़ा महान् आत्मा है २३ महत् आत्मा से बड़ा अव्यक्तरूपहै अव्यक्त से बड़ा अमृतरूपहै और अमृतसेबड़ा कुछभीनहींहै यह परमगतिवाली दिशा है २४ ऐसे सब भूतों में वह गूढ़ात्मा भगवान् नहीं दीखता पर सूक्ष्मदर्शी पुरुषों को अग्रणी सूक्ष्मबुद्धि से दीखताहै २५ पांचो इन्द्रियें और छठे मनको अन्तरात्मामें लीनकरके इन्द्रियोंसे चित्तमें चिन्तवनकरे २६ और विद्यासम्पादित मनको ध्यानकरके शान्तकरै तब अनीश्वर प्रशान्तात्मा उस अमृतपद को प्राप्त होता है २७ फिर सबइंद्रियोंके वश आत्मा चलित स्मृतिवाले आत्मा के प्रदान से मृत्युको प्राप्त होता हैं २८ पर जो विरुद्ध सिद्धसंकल्पोंसे चित्तको सत्वमें युक्तकरै तो चित्त सत्वमें स्थितहोके कालको व्यतीत करदेता है २९ चित्त के प्रसादसे यतिपुरुष इसलोकमें होनेवाले शुभाऽशुभ को त्यागदेते हैं ३० और प्रसन्नहुये आत्मामें स्थितहो-

के सुख को प्राप्त होते हैं प्रसाद का लक्षण यह है ३१ जैसे स्वप्नमें निद्राका सुख अथवा जैसे वायुरहित स्थानमें प्रकाशमान दीपक कम्पायमान नहींहोता ३२ ऐसे रात्रि के पूर्व्वा परभाग में आत्मा से आत्मा को युक्त करनेवाला तथा लब्ध हुये आहार और विशुद्धात्मा पुरुष आत्मा में आत्मा को देखताहुआ ३३ सब वेदोंके उस रहस्य को प्राप्त होता है जहांसे फिर जन्म मरण में आगमन नहीं होसक्ता३४ यह आत्मा को निश्चय करनेवाला शास्त्र पुत्रको शिक्षादेने की तरह शिक्षादेनेवाला है और जैसे सब धर्म्माख्यान सब प्रत्याख्यान सब बसु हजार अमावास्या समुद्र मथने में अमृत दधि मन्थन से नवीन घृत तथा काष्ठ से अग्नि तैसेही विद्वान् पुरुषोंका ज्ञान मुक्तिका हेतुहै३५।३७ब्रह्मचर्यमें युक्त पुरुषों को यह पुत्रानुशासन शास्त्र वाच्यहै और शांति रहित दांत अथवा तपस्वी को देना योग्य नहीं ३८ प्यारे पुत्र शिष्य और टहलकरनेवालेको यहशिक्षा देना योग्यहै पर निन्दक शठ आज्ञा न करनेवाले ३९ और न्यायशास्त्रसे दग्धहुये तथा चुगलीकरनेवालेको नदेनाचाहिये४० श्लाघाकरनेवाले श्लाघनीयतथाशांत और तपस्वीको४१ यह धर्मरूप तथा अव्यक्त रहस्य देना योग्यहै अन्यको नहीं ४२ इस रहस्यशास्त्रका दान रत्न और पूर्णा पृथ्वी के दानोंसे भी अधिकहै तत्त्वके जाननेवालेको यही बड़ा मानना योग्यहै ४३ आध्यात्मवालोंके वास्ते महर्षियोंने इसे कहाहै ४४ और सब वेदान्तों में गायाहै हे सत्तमो जो तुमने पूँछा सो मैंने

तुम्हारेलियेकहा४५अब और तुम्हारी क्याइच्छाहै सो कहो मुनिजनोंने पूछा कि अध्यात्मविद्याको विस्तारसे फिर हमसे कहो जिसमें अच्छीतरह जानलें ४६।४९ व्यासजीबोले कि हेविप्रो जोपुरुष यहां अध्यात्मविद्या कोपढ़ते हैं उनका मैं कथनकरताहूँ आलस्यरहितहोके सुनो५० भूमि जल ज्योति वायु आकाश ये पंचमहा-भूत सब भूतोंमें रहनेवाले हैं ५१ मुनिजनोंने पूछा कि हे तात जिसके अथवा जिसमें आकारदेहनहीं देखता उस में आकार कैसे वर्णन कियाजाताहै५२ और इन्द्रियोंके गुणकी वहां कैसे उपलक्षणा करलेते हैं सो कहनाचाहिये ५३व्यासजीबोले कि जैसे यहआकारहै सो मैं तुम्हें दि-खाताहूँ और इसको तुम अग्रबुद्धिहोके सुनो५४ शब्द होना सुनना तथा कथन ये तीन आकाश के लक्षण हैं और प्राणचेष्टा और स्पर्श ये तीन वायुकेगुण हैं५५हे देवतो यहपञ्चभौतिक इन्द्रियग्राम कहा है वायुकारस स्पर्श है ज्योतिकारूप है आकाश से शब्द होताहै५६ भूमिसे गन्धहोताहै और मन बुद्धि भूमि और तप ये आपही उत्पन्नहोते हैं ५७ दूसरेगुणों में वर्त्तमान नहीं होते जैसे पसारेहुये अङ्ग को कछु संकुचित करलेता है५८ तैसेही ये गुणोंका संकोचन करलेते हैं ऐसे श्रेष्ठ बुद्धि इन्द्रियों के समूह को प्राप्तहोता है और ऐसेही ऊर्ध्व तथा पाताललोक कहाहै ५९ जो इसकर्त्तव्यको वर्त्ते है वह बुद्धि उत्तम कहाती है ६० और दूसरेगुण आपही बुद्धिको प्राप्तहोजाते हैं तब इन्द्रियभी प्राप्त होजाती हैं और छठा मन ये सब बुद्धिके अभावमें नष्ट-

प्रायरहतेहैं६१ पञ्चइन्द्रिय छठामन सप्तमी बुद्धि और अष्टमाक्षेत्रज्ञ ये कहे हैं और ये सब नेत्रोंसे देखने के लिये संशयकरते हैं ६२ बुद्धिके निश्चय करने के लिये साक्षीक्षेत्रज्ञ कहा है रजोगुण तमोगुण और सत्वगुण ये तीन आपसे नहीं होतेहैं ६३ और सब भूतोंमें सम रहते हैं जब तीनों प्रीतियुक्तहोतेहैं तब कुछ आत्मामें दीखते हैं ६४ प्रयतन की तरह युक्तहुआ मनुष्य सत्व गुणको धारणकरता है ६५ जो कोई मनमें संतापयुक्त हो उसे रजोगुण में प्रवृत्तहुआ जानना ६६ और काया तथा मनमें मोह से युक्तहो तो अतर्कणीय और न जानने योग्य तमोगुण की धारणा जानिये ६७ संहर्ष प्रीति आनन्द स्थापना उष्णता प्रवेश बिनाकारण रक्षादि स्वयंप्राप्तगुण६८ अभिमान लोभ मोह क्षमा ये सब रजोगुणके चिह्नहैं और निश्चय करके रजोगुण के कारण हैं ६९ मोह प्रमाद निद्रा और तन्द्रा ये तमोगुण के चिह्न हैं और येही कारण हैं ७० मनकी प्रसन्नता बुद्धिका निश्चय और प्रीतियुक्त हृदा ये तीनप्रकारकी कर्मों की प्रेरणा हैं ७१ इन्द्रियों का पृथग्भान होने से बुद्धि परमआत्मा कहाती है मनुष्य की बुद्धि आत्मासे आत्मावाली है ७२ और वाणी रूप पद के उच्चारण करने से वही बुद्धिमनवाली है ७३ इन्द्रियोंके पृथक्भानसे फिर बुद्धिक्रमणसे सुननेको प्राप्तहोतीहै और आप स्पर्शरूपहोके स्पर्शकरतीहै ७४ वही बुद्धि दृष्टीरूपहोके देखती है जिह्वारूपहोके रसको ग्रहणकरतीहै ७५ विघ्नरूपहोके विघ्नको करतीहै और इन्द्रिय

रूप होके इन्द्रियों को देखती है मनुष्य में स्थित बुद्धि विध्यभाव से स्थित रहके कभी प्रीतिको प्राप्तहोती है और कभी शोक को प्राप्त होती है ७६।७७ पर सुख दुःख में कभी मोह को नहीं प्राप्त होती अपने भावों में आपही प्रवृत्त रहती है ७८ जैसे नदियों का पति समुद्र है वैसेही महान्लहरोंवाली बुद्धि सम्पूर्ण इन्द्रि-यादिकोंके प्रति समुद्ररूपहै ७९ जिससमय यह बुद्धि कछु प्रार्थनाकरतीहै वहीचेष्टा सब इन्द्रियांकरनेलग-ती हैं ८० ऐसे समुद्ररूपी बुद्धिकोजानो सम्पूर्ण इन्द्रियों में बुद्धि जो कुछ बिधान करतीहै वहीहोताहै ८१ और बुद्धिही सबके मनमें सत्व रजो और तमोगुण यथार्थ क्रमसे वर्त्ततीहै ८२ जैसे रथमें चक्रहै तैसेही इन्द्रिया-दिकोंमें बुद्धि जानना बुद्धिमान् श्रेष्ठमनुष्योंकी बुद्धिसदा दीपक रूप होती है ८३ और यथायोगसे इच्छापूर्वक विचरतेहुयों की बुद्धि स्वभाव में कभी किसी प्रकार से मोहको नहींप्राप्तहोती ८४ कुटिलबुद्धिसे बढ़ेहुये मनुष्य नाम गोचर इन्द्रियोंका विचारकरतेहुये और आत्माके विचारसे रहित अनेक तुच्छ कर्मोंसे डूबजाते हैं ८५ और अच्छेमनवाले पुरुषोंकी श्रेष्ठ बुद्धि जब विचारमें युक्तहोतीहै तब आत्मा इसप्रकार प्रकाशमान होताहै जैसे दीपकसे वस्तु ८६ सब मनुष्योंके मार्गमें चलने वाला मनुष्य सम्पूर्ण वस्तुओंको प्रकाशमान देखताहै ८७ जैसे जलमें विचरनेवाला जीव जलमें विचरता-हुआ किसी प्रकारसे नहीं डूबता तैसेही उस महान् ब्रह्ममें यहां जो कर्महोताहै ८८ उसको त्यागके सम्पूर्ण

भूतोंका भूतात्मा ब्रह्मगुण साम्यतासे सत्यआत्माद्वारा गुणोंमें बसताहुआ किसीप्रकार से लेपको नहीं प्राप्त होता ८९ सब कालमें सगुणमें वर्त्ततेहुये आत्मा को गुणवाला न जाननाचाहिये ९० और सम्पूर्ण गुणोंसे रहित सत्व और सूक्ष्मरूपसे विचरताहुआ अक्षररूप ९१ वह एक आत्मा सम्पूर्ण गुणोंको रचताहै ये सब गुण मायामें युक्तरहतेहैं और आत्मा इनके कर्त्तव्यमें लीननहींहोता९२जैसे शुद्धसुवर्णम रूपकाभान होताहै और जैसे गूलरके फलमें जीवोंका बासहै तैसेही उस ब्रह्ममें सब जीवोंकी स्थिति है ९३॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांत्रयविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३॥

एकसौचौबीस का अध्याय॥

व्यासजीबोले कि वह परमात्माईश्वर सम्पूर्णगुणों को रचताहै और आप क्षेत्रज्ञ अर्थात् अधिष्ठातारूप सम्पूर्णगुणों के विकार को प्राप्तकरताहुआ उदासीन तथा अनीश्वरकीतरह रहताहै १ इस सम्पूर्णजगत्को वह स्वभावसेयुक्त रचताहै और उनकेगुणोंको रचता है जैसे उनमें स्थित होनेवाले गुणोंसे ऊनकावस्त्र बुना जाताहै २ और प्रवृत्तहुयेको उसीतरह प्रवृत्तकरदेता है जो इन्द्रियादिकोंके बशमेंनहीं हैं वे निवृत्तकी तरह हैं ३ ऐसेदोनों प्रकारके मनुष्योंमें वह आत्मा इसीविधानसे स्थित रहताहै ४ जीवके अज्ञानका महान् सन्देहरहताहै आदि अंतसेरहित उस आत्माका जोहृदय में बुद्धिसे ५ चिन्तवनकरते हैं वे सुखकोप्राप्तहो सन्देह

से रहितहुये पारहोजाते हैं ६ और जो चंचलरहते हैं और किसीप्रकारसे इन्द्रियादिकोंसे तृप्तनहींहोते एवम् छलमें विचरतेहैं वे उस आत्मा को नहींप्राप्तहोते ७ जो शुद्धप्रकारसे केवल आत्माके ज्ञान और अपनीबुद्धिसे सबभूतोंकी गतिको जानते हैं ८ वे उस ब्रह्ममें अपना आवेशकरके उत्तमपदको प्राप्तहोते हैं ९ जन्म को छुटानेवाला ब्रह्मज्ञान परसेभी परायण ब्राह्मण को विशेषकरके धारणकरनाचाहिये १० इसको जानके मनुष्य बुध अर्थात् पण्डितहोजाताहै ११ श्रेष्ठबुद्धिवाले ज्ञानवान् मनुष्य इस ज्ञान को जानके समस्तझगड़ों से छूटजाते हैं जैसे मूर्खजनों को महान्भय होता है तैसे विद्वान्पुरुषको नहींहोता १२ विद्वानोंकी श्रेष्ठबुद्धि जो आत्माको पहिचानतीहै वैसे अन्यबुद्धिनहींहै १३ संसारमें निन्दाकरनेवाली बुद्धितो बहुतसे मनुष्योंकी है परन्तु आत्माको जाननेवाली बुद्धि पण्डितजनोंकीही है १४ जो किञ्चित्मात्रभी ज्ञानको प्राप्तहोजाताहै पहिलेकरेहुये कर्मों को श्रेष्ठकर्मों से दग्धकरदेता है १५ और प्रिय तथा अप्रियकर्म की कुछइच्छा नहींरखता वह परमपदको प्राप्तहोताहै १६ मुनिजनोंने कहा कि हेभगवन् जिसधर्मसेपरे धर्म तुम न देखतेहो और जो सम्पूर्णभूतों में अतिश्रेष्ठहो उस को आप हमारेलिये कहो १७ व्यासजीबोले कि हेमुनिसत्तमो तुम्हारेलिये मैं पुरातन और ऋषियोंसे स्तुत धर्मको कहताहूं उस सम्पूर्णधर्मोंसे युक्तधर्मको तुमसुनो १८ बलकरनेवाली इन्द्रियों को तत्त्वसहित बुद्धिसे बशमेंकरै जैसे अपने

पुत्रोंको पिताबशमें करताहै १९ मनसे परमतपवाला ज्ञानी जो इन्द्रियोंको एकाग्रकरताहै वहीसम्पूर्ण धर्मों से श्रेष्ठ पर धर्म्म कहाता है २० पांचो इन्द्रियों और छठेमनको ब्रह्मविद्यासे जो रोकताहै वह आत्मामेंतृप्त हुआ ज्ञानी कहाताहै २१ और गोचर इन्द्रियोंसे निवृत्तहुआ अपने मकानमें स्थितहोता है वह आत्मासे परमअचल आत्मा को जानता है २२ ऐसे श्रेष्ठबुद्धि वाले जो ब्राह्मणहैं वे उस सर्वात्मा और महान्आत्मा को धूमासे रहित प्रकाशमान अग्निकीतरह प्राप्तहोते हैं २३ जैसे फल और पुष्पोंसेयुक्त और महान् शाखाओंवाला महान्वृक्ष नहींजानताहै किमेरे पुष्पकहां हैं और फलकहां हैं२४ ऐसेही यह जीव रूपआत्माको नहींजानताहै कि मैं कहां जाऊंगा और कहांहूं इसवास्ते यहब्रह्मविद्या जरूर जाननीचाहिये२५ पर अभक्त दुष्टब्राह्मण और श्रद्धारहितकोकभी न देनीचाहिये२६

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांसांख्यसंवादेचतुर्विंशत्यधिक शततमोऽध्यायः १२४॥

एकसौपचीसका अध्याय॥

लोमहर्षणजीबोले कि हेद्विजो इसप्रकारपहिले व्यासमुनिने शुद्ध अठारहदोषों से रहित सारतर अर्थात् अत्यन्त सारवाला पवित्र मलरहित नानाशास्त्र सम्बन्धीवाणी तथा शुद्धपदों और शान्तशब्दोंसेयुक्त पूर्ण पक्षकी उक्तिवाले और सिद्धान्तसे युक्त पुराण को यथा न्याय सुनाकरके विश्रामकिया १।२ और वे मुनिवरवेद सम्मित आद्यरूप ब्रह्मके कथनकरनेवाले तथा सबबां-

छितफलकोदेनेवाले पुराणकोसुनके४और आनंदपूर्वक प्रसन्नहोकेबारम्बारआश्चर्ययुक्तहो व्यासजीकोसराहने लगे और आनन्दहोके बोले कि ५ हे मुनिश्रेष्ठ आप ने श्रुति सम्मित तथा सबप्रकार से फलको देनेवाले और सब पापोंके हरनेवाले परमपुराण को कहा और सब विद्यास्थानोंमें आपसे कुछअविदित नहींहै ६।७ हेमहाभाग आप सर्वज्ञ और देवतोंमें वृहस्पतिवत् हैं और हम आपको महाबुद्धिवालाब्राह्मण तथा महामुनि मानते हैं ८ आपने वेदोंकेअर्थ भारतमें प्रकटकिये हैं और हे महामुने आपके गुणोंको कहनेको यहां कौन समर्थ है ९ आपने चारोंवेद तथा सांख्य व्याकरणादि अध्ययनकरके भारतशास्त्रकिया इसलिये ज्ञानात्मरूप आपको नमस्कार है १० हे व्यास हे विशालबुद्धिवाले हे खिलेहुये कमलकेपत्तों केसे नेत्रोंवाले आपने भारत रूपी तैलसे ज्ञानमयदीपक प्रकाशकिया आपको नमस्कार है ११ आपने अज्ञानरूपी अँधेरेसेयुक्त पुरुषके चक्षुओंको ज्ञानरूपी अंजनशलाकासे उन्मीलितकिया इसलिये श्रीगुरुरूप आपकोनमस्कारहै१२निदान जैसे वे सब आयेथे तैसेही कृतकृत्यहोके अपने२ आश्रमोंको गये हेमुनिश्रेष्ठो मैंने वह सब तुमसे कहा१३हेद्विजसत्तमो जो २ तुमने प्रश्नपूछा सो सब व्यासजीकी कृपासे मैंने तुमसेकहा १४ सबपापों को नाशकरनेवाले इसपुराण को गृहस्थीयति तथा ब्रह्मचारीको सुनके धारणकरना योग्यहै १५ धर्मपरवर्णों ब्राह्मणादिकों संहितावालों तथा कल्याणकी इच्छा करनेवालोंकोभी यत्नसे यहपु-

राण श्रवणकरनायोग्यहै १६ इसपुराणके श्रवणसे ब्राह्मणविद्याको प्राप्त होताहै क्षत्रिय रणमें जयको प्राप्त होताहै वैश्य अक्षयधन को प्राप्तहोताहै और शूद्रजन सुखको प्राप्तहोताहै १७ मनुष्य इसे श्रवणकरके जिस जिस कामनाका ध्यानकरताहै उस २ कामनाको प्राप्त होता है इसमें संशयनहीं १८ यहपापों को नाशकरनेवाला वैष्णवपुराण सब शास्त्रोंमें श्रेष्ठहै और पुरुषार्थ को उपपादन करनेवालाहै १९ यह वेदसम्मित पुराण मैंने तुमसे कहा और इसके सुननेसे दोष तथा पापोंके समूह नाशको प्राप्तहोते हैं २० प्रयाग पुष्कर कुरुक्षेत्र आदिकेव्रत तथा स्नानसे जो फल प्राप्तहोताहै सोइस पुराणके श्रवणसे होताहै २१ इसके हवनसे एकहीवर्ष में फलकी प्राप्तिहोतीहै यह महाब्रह्महै इससे एकबार श्रवणसेही फलकी प्राप्तिहोतीहै २२ माघशुक्लाद्वादशी को यमुनाजलमें स्नानकरके और मथुरामें हरिकोदेख के जो फल प्राप्तहोताहै सो सावधानहोके इसपुराणको कीर्त्तन करनेसे होताहै २३ हेविप्रो इसपुराणको सुनके जो उसके फलको केशवके अर्प्पण करते हैं वे मोक्षको पाते हैं और जो किसीफल को देखके कर्मकरते हैं २४ वे उसीफलको प्राप्तहोते हैं जो पढ़ते हैं तथा श्रवणकरते हैं वेभी फलको प्राप्तहोते हैं २५ और जो श्रद्धासहितनित्य वेदसम्मित इसपुराणकोपढ़ते अथवा श्रवण करते हैं वे हरिके भुवनको प्राप्तहोते हैं २६ जोब्राह्मण श्रद्धासहित पर्वतपर स्थितहोके एकादशी अथवा द्वादशीको इसपुराणको सुनतेहैं वे विष्णुके लोककोप्राप्त

होते हैं २७ इस आयु तथा सुखकेदेनेवाले व कीर्त्ति तथा बलबढ़ानेवाले और पुष्टिकेदेने वाले पुराण को सुनके नरसबमें प्रधानहोजाताहै २८ जो विद्वान्पुरुष इसीको श्रेष्ठजानके तथा श्रद्धाकरके त्रिकालपढ़ते हैं वे सबबांछितफल को प्राप्तहोजाते हैं २९ रोगसेपीड़ित रोगसे छूटजाताहै बँधाहुआपुरुष बन्धनसे छूटजाता है और भयभीत पुरुष भयसे छूटजाताहै तथा घोर रूपवाले घोररूपसे छूटजाते हैं ३० जातिकास्मरण विद्या पुत्रादिक बुद्धि पशू आदि धारणा तथा धर्म अर्थ काम और मोक्षको पुरुष प्राप्तहोताहै ३१ निदान जिसजिस कामनाका ध्यानकरके कोई यजनकरताहै तिसतिस कामना को प्राप्तहोताहै इसमें संशय नहीं ३२ जो मनुष्य शुद्ध होके और स्वर्ग तथा मोक्ष के देनेवाले विष्णु तथा लोकगुरुको भक्तिसे नमस्कारकरके इसपुराणको श्रवण करताहै वह इसलोकमें सुखोंको भोगके और पापोंको दूरकरके दिव्य सुखकी प्राप्तिवाले स्वर्गलोकमें जाता है ३३ और पीछे हरिके विमलपदको प्राप्तहो प्राकृत गुणोंसे मुक्तहोजाताहै ३४ इसकारण विप्रबर तथा धर्म में रत और मुक्तिके मार्गकी इच्छावाले तथा क्षत्रिय जनोंको सब कालमें ३५ वैश्यजनों को दिन प्रतिदिन तथा श्रेष्ठकुलमें होनेवाले शूद्रजनों और धार्मिकपुरुषों को ३६ धर्मार्थ काम मोक्षकोदेनेवाला यह शास्त्र श्रवण करना योग्यहै ३७ यह धर्म में बुद्धि देनेवालाहै और परलोकमें गयेहुये उत्तमोंका यह बन्धुरूपहै जो अर्त्थ स्त्रीजनोंमें सेव्यमान तथा निपुणहैं वे इसके प्रभावको

नहीं प्राप्तहोते हैं और न स्थिरताको प्राप्तहोते हैं ३८ धर्मसे मनुष्य राज्य को प्राप्तहोते हैं धर्मसेही स्वर्गको प्राप्तहोते हैं धर्मसेही आयु तथा कीर्त्तिको प्राप्तहोते हैं और धर्मसेही सब सुखकी प्राप्तिको प्राप्तहोते हैं ३९ धर्मही मनुष्यका माता पिताहै और परलोकमें धर्मही मनुष्य का सखा अर्थात् मित्रहै यह श्रेष्ठरहस्य पुराण वेदोंसे सम्मितहै इसलिये पापमतिवाले तथा नास्तिक को विशेषकरके यह न देनाचाहिये ४० ऐसे परमपुराने तथा पापोंको नष्टकरनेवाले और धर्मकी वृद्धिकरनेवाले पुराणको मैंने कहा और यह परमरहस्य तुमने सुना हे मुनिजनो मुझे अब आज्ञादो मैं जाताहूं ४१ ॥

इतिश्रीआदिब्रह्मपुराणभाषायांस्वयम्भूऋषिसंवादे पुराणप्रशंसा नामपञ्चविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२५ ॥

इतिबेरीनिवासिरविदत्तअनुवादितआदिब्रह्मपुराण भाषा समाप्तः ॥

मुन्शी नवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखाने में छपा
माह जनवरी सन् १८९१ ई० ॥